सरल
तुलसीकृत रामायण
१९३४

B. Shyam Bihari Lal
Munsif & Special Judge
Muttra

"सरल"

"तुलसीकृत रामायण"

सातौं काण्ड

लेखक

बाबू दयाशंकरजी, वकील, फ़तेहगढ़
रचयिता 'दयासागर', व 'दयासिन्धु'

प्रकाशक
चिन्तामणि शिवचरणलाल बुकसेलर
फ़र्रुख़ाबाद

प्रथमवार १०००]   १९३४

मुद्रक—पं० राजराजेश्वरप्रसाद भार्गव

अध्यक्ष— अवध-प्रिंटिंग-वर्क्स,

लखनऊ.

तुलसी-कृत-रामायण, भारत के नगर-नगर, ग्राम-ग्राम, घर-घर में, जिस भाव से पढ़ी, और, चाही जाती है, उसको हर कोई जानता है। उसका महत्त्व, केवल, इसी बात से ज़ाहिर है कि रामायण की मांग, दिन-दूनी, बढ़ती जाती है, और, आज तक, उसके, सैकड़ों टीका लिखे जा चुके हैं।

परंतु, तुलसी-कृत-रामायण की भाषा, ऐसी नहीं है कि जिसको, पढ़कर, हर हिन्दू, समझ जावे। उसमें, बहुत जगह, देसी, पुराने, और, कठिन शब्द मिलते हैं, जिनको विना टीका की सहायता के, साधारण मनुष्य, नहीं समझ पाता।

इस कठिनता के कारण, देखा, गया है, कि लोग रामायण पढ़ना चाहते हैं, लेकिन, थोड़ा पढ़कर छोड़ देते हैं, उनके पास इतना अवसर नहीं कि पहिले चौपाई पढ़ें, फिर, टीका से, उसको समझने का परिश्रम करें। इसका परिणाम यह होता है कि उनको रामायण से अरुचि पैदा हो जाती है और वह उन किताबों की तरफ़ झुकने लगते हैं, जिन में रामायण की कथा, तवारीख़ की तरह, टूटी-फूटी उर्दू में लिखी है, लेकिन, न जिन में कविता का रस है, न उस प्रेम व भक्ति की धार है, जिस से, तुलसी-कृत-रामायण एक सिद्ध-ग्रंथ, गिनी जाती है।

इस कारण, मैंने, चौपाई, छंद, दोहा की कठिनता को उसी के अंदर, दूर करने का यत्न किया है। पूरी रामायण उसी अवध-भाषा में,

जैसी-की-तैसी, लिखी गई है, सिर्फ़ कठिन शब्द को निकाल दिया गया है, और, उस जगह, ऐसा शब्द मिला दिया गया है, जो हर हिन्दू भाषा-न-पढ़ा-हो, भी समझ सकता है। फिर, जहां तक हो सका है, रामायण के शब्द, रूप, रचना-की-रीति, और भाव को बदस्तूर क़ायम रक्खा गया है; और, अंग्रेज़ी क़ायदे से, कुल किताब में punctuation कर दिया गया है, जिससे, इधर-का-अर्थ, उधर, न जा सके; और, कुल किताब में, बक्ता का नाम का भी दिया गया है, जिससे, साफ़, मालूम हो कि जिस चौपाई में, जो कुछ लिखा है, वहु कौन कहि रहा है।

रामायण का सहल करना, इस किताब का, मुख्य उद्देश्य है, और, यों कहिना चाहिये कि यह 'तुलसी-कृत-रामायण'-'टीका-सहित' है, लेकिन टीका उस-का-उसी में है। इसको पढ़कर साधारण-भाषा-जाननेवाले मनुष्य, बालक, लड़कियां, स्त्रियां बहुत लाभ उठा सकती हैं। चौपाई पढ़ते या गाते जाइये, और, अर्थ, अपने-आप समझते जाइये, और तुलसी-कृत-रामायण से मिलाकर देखते जाइये, कि आप वही किताब पढ़ रहे हैं, या कोई दूसरी। इसी कारण, इस का नाम 'सरल तुलसी-कृत-रामायण' रक्खा गया है।

मैं आशा करता हूँ कि, यह एक बिलकुल नया काम है, जो किसी टीकाकार ने नहीं किया, इसलिये, इस काम की कठिनता को देखकर, सज्जन पुरुष इसके दोषों को क्षमा करेंगे, और, इसके रचना के कारण को समझकर, इसकी सराहना करेंगे।

फ़तेहगढ़	}	दयाशंकर
१५-७-१९३३.		बी.ए., एल-एल. बी., वकील

विषय-सूची

बाल-काण्ड

अयोध्या-कागड

अरण्य-काण्ड

किष्किंधा-काण्ड

सुन्दर-काण्ड

लंका-काण्ड

❀ श्री ❀

बाल काण्ड

श्रीगनेसायनमः

मंगलाचरन

सोरठः—अर्थं, अक्षर, रस, छंद, मंगल,—दाता, सरस्वती।
दोउ कर जोरे, बंदि, सहित गनेस, विनायकहु ॥ १ ॥
श्रद्धा, और बिस्वास, बंदउँ, गौरी - सिव - मनहु।
करत, ईस, उर, बास, सिद्धहु, लषत न, जासु-बिंन ॥ २ ॥
संकर - सम - गुरु बंदि, भरे बोध, और, नित्य जो।
जिन ते, टेढ़हु - चंद्र, पूजन - लाइक, होत, जग ॥ ३ ॥
'बालमीकि', 'हनुमान', सुभ, ज्ञानी, बंदउं दोऊ।
सिय - राम - गुन - ग्राम, पुण्य-के-बन, जो, रमि रहे ॥ ४ ॥

पालन, पोषन, हाथ, प्रिय, राम की बल्लभा ।
बंदउं सीता - मात, हरत दुःख कल्यान, करि ॥ ५ ॥
जग, सुर, असुर, जहान, जेहि की माया-बस - बँधे ।
रस्सी, सर्प - समान, लगत सत्य जग, भ्रम - भये ॥ ६ ॥
चरन, जहाज - समान, जेहि, भव-सागर, तरन कहँ ।
बंदउं, सोइ, भगवान्, 'राम' - नाम, ईश्वर जोइं ॥ ७ ॥
वेद - पुरानन - सार, 'बालमीकि', जस, कहि गये ।
तेही, मति - अनुसार, औरहु ग्रंथन ते, लिये ॥ ८ ॥
रघुपति - चरित अपार, तुलसी, मन के सुःख हित ।
गावत, है विसतारि, सुन्दर भाषा महँ रचे ॥ ९ ॥

वक्ताः— जेहि सुमिरत सिधि होय, नायक गुन के, गज सो मुख ।
करहु कृपा, अब, सोइ, बुद्धि-खान, सुभ-गुनन-घर ॥
बोलइ गुँगहु हाल, लंग चढ़इ, परवत अगम ।
जिन की कृपा, दयालु ! रीझउ, जारत-पाप-सब ॥
नील कमल, तन श्याम, नयो-कमल-खिलि, नयन, ज्यों ।
करहु, मोर उर, धाम, रहत, क्षीर-सागर, सदा ॥
कुंद, चंद्र-सम, देह, उमा - पती, घर, दया के ।
करत, दुखिन पर नेह, करहु कृपा, कामहिं-नसत ॥
बंदउं गुरु-पद कंज, मानहु, हरि, नर-तन-धरे ।
१. मोह को आँधर-गंज, करत उजेरो, सूर्य-सम ॥

कविः—बंदौं, गुरु-चरनन की धूरी ❋ महकत रुची, प्रेम-रस पूरी ।
अमरित - जर, जनु, सुंदर चूरन ❋ हरत रोग भव के समपूरन ॥
पुण्य - रूप - संकर, तन धारे ❋ जनमत आंनद, मंगल सारे ।
भक्तन - मन - दर्पन - मल - हरनी ❋ धरि माथे, सब गुन, वस करनी ॥
गुरु-पद - नख, जनु, हीरा चमकत ❋ सुमिरे, ज्ञान-दृष्टि, मन, उपजत ।
मोह-अँधेरी, हरत, सूर्य, बनि ❋ बड़े भाग, चमकइ, जेहिं के मन ! ॥

चमकत, हृदय नेत्र,खुलि जाहीं * भव के दुःख, दोष, मिटि जाहीं ।
सूझत राम-चरित, फिर, हीरा * खुला, मुँदा, सब-खानन तीरा ॥
दोहाः—चतुर साधु, जस, सिद्धि को, अंजन, नैन लगाइ ।
२. देखत जल, पृथ्वी, सबहि, आसन, ठौर-जमाइ ॥
अंजन, सुघर, महीन, चरन-रज * नयनाम्रत, सब दोष, जाततजि ।
ज्ञान-नयन दइ के, सोइ अंजन * राम-चरित कहुं, भव-दुख-भंजन ॥
पहिले नवउँ, विप्र के चरना * मोह - भये - संसय के, हरना ।
नवउँ सुजन, फिर, जो गुन-खानी * करहुं प्रनाम, प्रेम, मिठ-बानी ॥
जाने, साधू-चरित कपासू * बिनु-रस, गुन-अनेक, फलजासू ।
सहि दुख, दुसरन्ह-छेद छिपावत * जग महँ, मानन-जोग कहावत ॥

(संत—समाज)

आनँद - मँगल, संत - समाजा * जनु, प्रयाग, जो, तीरथ-राजा ।
राम-भक्ति, जँह, गंग की धारा * सरस्वती, जँह, ब्रह्म-विचारा ॥
बुरे, भले, सब कर्म - कहानी * पाप-हरन, जमुना लहरानी ।
"विधि-"विष्णु-'शिव-कथा,त्रिवेनी * सुनतहि, आँनद मँगल-देनी ॥
अचल, धर्म पर, निज विश्वासा * तहाँ, अक्षय-वट, करम है साजा ।
सब दिन, सबहिं, सहज, सब देसा * मानत, सेवत, हरत कलेसा ॥
कहा न जात, न दीसत, भाई * फल-दाता, महिमा अधिकाई ।
दोहाः—मन प्रसन्न, समुझहिं, सुनत, करहि प्रेम-स्नान ।
३. 'धर्म', 'अर्थ', और 'मोक्ष', तेहि, मिलत 'काम',फल, आनि ॥
करत, नहाये, पूरन मंसा * काग, कुयल,हुइ,बकुला, हंसा ॥

(सत-संग-महिमा)

करइ न, सुनि, अचरज, मन, कोई * सत-सँग महिमा, छिपी न होई ॥
वालमीकि, नारद, घटजोनी * मुखन, कही सब, आपुन-होनी ।

कह धरती, कह जल, असमाना * सब, जड़, चेतन, जीव, जहाना ॥
पुण्य, सिद्धि, शुभ-कर्म, भलाई * जहाँ, जहाँ, जग मां, जेहि, पाई ।
सत-सँगत ही ते, तिन्ह पाई * वेद, शास्त्र, नाहिं और उपाई ॥
बिन सत-संग, ज्ञान, नहिं होई * सोऊ, राम - कृपा ते, कोई ।
संगत, आनंद - मँगल - मूला * लगत, सिद्धि- फल, साधन-फूला ॥
सुधरहिं दुष्ट, संत-सँग पाई * छुइ पारस, जस, लोहा, भाई ।
भावी-बस, जो, परहिं कुसँगत * सर्प समान, मनी-गुन, त्यागत ॥

(साधू-की-महिमा)

बृह्मा, शिव, कवि, पण्डित-बानी * कहत, साधु-महिमा, सकुचानी ।
सो, मो सन, कहि जात, न, कैसे * कुँजरा, हीरा के गुन, जैसे ॥
दोहाः—समदरसी-संतन, नवऊं, जिन्ह, कोउ, शत्रु, न, मित्र ।
महक, बराबर, हाथ दोउ, देत फूल को इत्र ॥
दोहाः—सरल चित्त, जग के हितू ! जानि सुभाउ सनेहु ।
बिनवत बालक, करि कृपा, प्रीति-राम पद देहु ॥

४. (दुष्ट की बंदना)

फिर, विनवत, उन दुष्टन, भाई * मलिन संग, जो करत बुराई ।
समुझत, मिला, जो, दूसर खोवहिं * उजरे हँसहिं बसे पर, रोवहिं ॥
हरि-गुन-गान-चन्द्र, कहँ, राहू * पर-अकाज कहँ, जनु सहसबाहू ।
देखत दोस-जगत, सौ आंखी * दुसरन-घृत कहँ. जिन्ह मन माखी ॥
जम-सम, क्रोध, तेज, जनु, आगी * पाप के धन, कुबेर, बड़-भागी ।
बढ़े, तौ, केत भये, सबही के * सोये, कुँभ - करन - सम नीके ॥
हानि पराई, नाक कटावहिं * जस, ओरे, नसाइ, नसि जावहिं ।
विनवउँ दुष्टन, समुझे शेषा * कहत, हजारन मुख, इक दोषा ॥
बंदौं, पृथ्वी राजा, जाना * दुसरन, पाप सुनत, सौ काना ।

समुझि इन्द्र, फिर विनवत तिनका॥ * नित, मदिरा, प्यारी है जिनका ॥
बात कठोर, जिनहिं, अति प्यारी * पर-दोषन कहँ, नयन, हजारी ।
दोहा:—रीति, दुष्ट की, जरति, सुनि, शत्रु-मित्र-हित, कान ।
५. प्रीति सहित, विनती करत, छमहु, अपन जन जानि ॥
कहा मैं, आपन-ओर निहोरे * चूकन-हारे, सो, कहुँ, थोरे ।
पालहु कागहिं, करि, करि प्यारा * कबहुँ, न, तजिहइ मास-अहारा ॥

(साधू, असाधू की बंदना)

संत, असंत, दोउन, सिर नाई * एक - संग, दोऊ, दुख - दाई ।
बिछुरत, एक, प्रान हरि लेहीं * दूसर, मिलत, दुःख अति देहीं ॥
संग, संग, उपजत, जग माहीं * दुष्ट, जोंक, मुनि, कमल कहाहीं ।
अमरित, मदिरा, संत, असंता * सागर, इक, दोउन-कर - अंता ॥
बुरे, भले, पावत, संसारा * अपजस, सुजस, कर्म-अनुसारा ।
"गंग"-चंद्र-अमरित-सम, संता * 'करमनास,' विष, अग्नि, असंता॥
गुन, अवगुन, जानत सब कोई * जो, जेहि भावे, तेहि, भल, सोई ।
दोहा:—सोहत भले, भलाइ ते, नीच, निचाइहि, ठीक ।
६. ज्यावहि, सोइ, अमरित भलो, मारहि,सोइ विप,नीक ॥
शठ, अवगुन, साधू, गुन-आगर * शठ, साधू, अपार, दुइ सागर ॥
थोर, दोस-गुन, तासु-बखाने * पकरि,न,छोंड़ि,सकत, बिनु जाने ॥

प्रपंच

खल, भल, सब, ब्रह्मा उपजाये * गुन, और, दोस,वेद कहि गाये ।
कहत वेद, इतहास, पुराना * गुन, अवगुन, जग, दोउन-साना॥
दुख-सुख, पाप-पुण्य, दिन-राती * संत-असंता जाति-कुजाती ।
राक्षस-देव, ऊँच, और, नीचा * अमरित-विष, संजीवन-मीचा ॥

माया - ब्रह्म, जीव - जगदीसा * धन - दरिद्र, नादार - रईसा।
'मगध' 'कासि' 'क्रमनस्सि' गँग-धारा * 'मरु,' 'मालव' ब्रह्मण, हत्यारा॥
सरग, नरक, अनुराग, विरागा * कीन्ह, वेद, गुन-दोसन भागा।

दोहाः—जड़, चेतत, गुन-दोस-भरि, दीन्ही सृष्टि बनाइ।
७. हंस-संत गुन—दूध पी, तजत दोस-जल भाइ॥

ऐस ज्ञान, जब, देत, विधाता * मन, अवगुनतजि, गुनलगिजाता।
समय, सुभाउ, करम, ते, भाई * दे, माया, भलिनहु, भुलाई॥
भूल सुधारि, भक्त, जन, लेहीं * मेटि दोष दुख, जग, जस, देहीं।

संगत का फल

तस, सुसंग ते, खलहु भलाई * करत, न जात सुभाउ-बुराई।
संत-वेष धारि, जो, जग लूटत * वेष-प्रताप, उनहिं-जग, पूजत॥
खुलि छद्म, अंत, होत, पछिताऊ * 'कालनेम', 'रावन', जस, राहू'।
जग, कुवेष महँ; साधुन, माना * देखहु, 'जामवंत,' 'हनुमाना'॥
भल-सँग, लाभ, बुरे-सँग, हानी * लिखा वेद, और, सब जग जानी।
चढ़त, पवन सँग, धूरि, अकासा * गिरि, जल, कीचर होत, तमासा॥
संत-असंत - घर-तोता, मयना * रटत राम, इक, गारिन-पैना।
धुँवा, कुसँग ते, कारिख जाना * भले संग परि, लिखत पुराना॥
मिलि जल, अग्नि, अकासहिं जाता * जग-जीवन, बादर कहिलाता।

दोहाः—पवन, बस्त्र, जल, घर, दवा, पाइ, बुरा, भल, जोग।
बुरे, भले, हुइ जात, जग, जानत, चातुर-लोग॥
जड़, चेतन, जग-जीव, जो, राम-रूप, सब, जानि।
बंदौं, सबके पद कमल, जोरि हाथ, भगवान॥

बंदना

दोहाः—देव, दैत्य, नर, नाग, खग, पितर, प्रेत, गंधर्व।
८. बंदौं किन्नर, राक्षसन, कृपा करहु, अब, सर्व॥

चार प्रकार, लाख-चौरासी ❋ जल, जमीन, और, जीव, अकासी।
रूप-राम-सिय, सब कहँ, जानी ❋ जोरे हाथ, प्रनाम, भवानी !!
जानि, कृपा करु, सेवक, मोहू ❋ सबमिलि, करहु, छाँड़िछल, छोहू।
बल-बुद्धी-भरोस, मोहि, नाहीं ❋ याते, विनय, करहुँ सब पाहीं॥
चाहत, कथा, कहन, रघुवर-गुन ❋ कथा, अथाह, समुझि मोरी, घुन।
सूझि उपाउ न. अस, बढ़, काजा ❋ मति कँगाल, और इच्छा, राजा॥
मति नीची, रुचि, ऊँच बढ़ावत ❋ छाछ जुरत नहिं, अमरित ताकत।
छमिहहिं सज्जन, मोर ढिठाई ❋ सुनिहहिं, बाल-बचन मन लाई।
जब, बालक तोतरावत बाता ❋ सुनत, खुसी-मन, पितुऔर माता॥
बुरे-विचार, कुटिल नर, नारी ❋ हँसिहँहिं, पर-दोषन-के-धारी।
सब कहँ, अपनी कविता नीकी ❋ होइ रसीली, होइ कि फीकी॥
दुसरन-कविता, सुनि, हर्षाहीं ❋ ऐसे नर, थोरे, जल माहीं।
गंगा से, नर, बहुतक, भाई ❋ अपनी बाढ़ि, बढ़त, जल पाई॥
पुण्य-सिंधु-सम, जन, कोइ कोई ❋ बढ़त, चंद्र-पूरन लखि, जोई।

दोहाः—भाग छोट, इच्छा बड़ी, मन, धीरज, अस लाइ।
६. पैहहिं सुख, सुनि, सुजन सब, दें, खल हँसी उड़ाइ॥

हँसे-दुष्ट, हुइ है, हित मोरा ❋ काग, कहइं, कोयलहिं, कठोरा।
बकुला, हंसन, मेडक, पपिहन ❋ हँसत दुष्ट, तस, निर्मल-बचनन॥
राम न, जिह, यक कविता, प्यारी ❋ हँसहिं लोग, हँसि, होहिं सुखारी।
भाषा बोली, इक, मति थिर ना ❋ हँसिबे जोग, हँसहि, कछु, डर ना॥
राम, न प्रीत, न, समुझहि नीकी ❋ लगइ कथा, तिह कहँ, यह, फीकी।
प्रीति-विष्णु-शिव, मति, न-कुतरकी ❋ लगइ, कथा, मीठी, रघुवर-की॥
राम-भक्ति, यह मैं, पहिचानी ❋ सुनिहैं, सुजन, सराहि, बखानी।
कवि, न होउँ मैं, ना कव्वाली ❋ विद्या, हुनर दोउन ते, खाली॥
अलँकार, बहु, अर्थ, और अक्षर ❋ आनि-आनि-भाँती, छंद, मनोहर।
भाव, भेद कर रस, अपार है ❋ कबित-दोस-गुन, बहु, प्रकार है॥

कविता-ज्ञान, एक नाहिं मोरे * कहौं सत्य, लिखि, कागद्-कोरे ।

दोहाः—कविता, सब गुन-रहित, यह, जग-जाना, गुन, एक ।
१०. जिनहिं, ज्ञान, मति-नीक, ते, सुनिहहिं,सोइगुन देखि ॥

यह मां रघुपति-नाम, उदारा * वेद, पुरानन कर, सुभ, सारा ।
घर-अनन्द-कर, सब-दुख-टारत * गौरी, संकर, ध्यान लगावत ॥
अच्छी कविता, बड़े कवी की * राम-नाम बिनु, लगत न नीकी ।
चंद्र-मुखी, सब - भाँति-सँवारी * बिना बस्त्र, कहुँ,लागत प्यारी ॥
बुरे कवी की, बेगुन, बानी * राम-नाम, तेहि मां, पहिचानी ।
कहत, सुनत,आदर करि, चाहत * संत, भये-भँवरा, गुन-गाहक ॥
कविता मोर, कोउ रस नाहीं * राम-प्रताप, प्रगट, यह माहीं ।
सोइ भरोस, मोरे मन, आवा * को न सुसंग, बड़प्पन पावा ॥
तजत, धुआँ अपनी करुआई * जात, अगर सँग, महक-बसाई ।
विषय तौ उत्तम, कविता भद्दी * राम-कथा, (जग-मँगल)-नद्दी ॥

छंदः—तुलसी, कथा, रघुनाथ की, सुख देत, पापन, हरत हइ ।
कविता-नदी, गंगा - सी, टेढ़ी-चाल, मानी, चलत हइ ॥
पर, राम-जस के संग मँह, हुइ है सुजन-मन-भावनी ।
जस, भष्म, शिव-के-अँग, भजि,करि देत शुद्ध सुहावनी ॥

दोहाः—यह कविता, प्यारी लगइ, सबहिं, राम-जस-संग ।
काठहु, चंदन, होत है, "मलया-गिरि" के संग ॥
स्यामा - गौ कर दूध, सब, करत, समुझि गुन, पान ।
११. जीभ गँवारू, राम - जस, गावहिं, सुनहिं सुजान ॥

मनी, रतन, मोती-छबि जैसी * गज, गिरि सर्प के सिर,नहिं तैसी ।
भूप—मुकुट, नारी—तन, पाई * जात, सभन-सोभा, अधिकाई ॥
तैसेहि, रसिक, कवी की, बानी * इक मुख, भनी, एक, लहरानी ।
सुमिरत, सरस्वती, घर त्यागे * खड़ी होत, आ, कवि के आगे ॥
बिना, राम - नद्दी अन्हवाये * तेहि की थकन, न, जात सिराये ।

कवि,हरि-जस,अस,हृदय विचारी * गावत, पापहिं - मेटन-हारी ॥
साधारन - पुरुषन - गुन गावत * सिर धुनि,सरस्वती,पछितावत ।
{ 'हृदय,'सिंधु, 'मति,' सीप,समाना *स्वांति,'सरस्वती,'कहत,सुजाना॥
जो, 'विचार', बरसावहि पानी * मोती बनइ, कवी की 'बानी' ।

दोहाः—राम - चरित - रेसम, पुहइं, मोती, बिंधे, बिधान ।
१२. सुद्ध - हृदय - प्रेमी पहिरि, सोभा, लखहिं सुजान ॥

जे, कलिजुग-आये, जग, देखा * करनी-काग, हंस कर वेषा ।
चलत, कुराह, सो, वेद-बिसारा * कपट-की-पुरिया, पाप-पिटहरा॥
ठगिया-भगत, कहाय, राम के * सेवक, सोना-क्रोध-काम के ।
धिग ! तेहि बैलन, गिनती मोरी * लादि पखंड, फिरत, चहुं ओरी॥
जो, अपने अवगुन बतलाऊँ * बढ़इ कथा, महुँ, पार न पाऊँ ।
तेहि ते, मैं, संक्षेप बखाने * ज्ञानी· जाहिं, थोर माँ, जाने ॥
समुझि,बिबिधिबिधि,बिनती मोरी * जनहहिं कथा, दोस ते कोरी ॥
एते पर हू, संका करिहाहिं * महुं ते जड़, मति-हीन,कहैहहिं।
कवि न होउं, ना, चतुर कहावउं * मति-अनुसार,राम-गुन गावहुं ॥
कहँ रघुपति के चरित अपारा * कहँ, मति मोर फँसी-संसारा ।
जे, पहाड़ कहँ, फूँकि उड़ाहीं * तिनाहिं रुई, केहि लेखे माहीं ॥
देखि, अपार, राम-प्रभुताई * लिखत,मोर मन, अति सकुचाई॥

दोहाः—शेष, सारदा, विष्णु, शिव, ब्रह्मा, वेद, पुरान ।
१३. कहेः "अंत तुम्हरा नहीं", करत राम-गुन-गान ॥

जानत सब, प्रभु-महिमा, सोई * बिना कहे, तहुं, रहा, न कोई ।
कहा वेद, समुझहु, सब कोई * भगवत-भजन,बहुत विधि, होई ॥
एक, न-जन्म, न-रूप, न-नामा * धाम, सच्चिदानंद, निकामा ।
आप-मैं-जग, जग-मैं-भगवाना * चरित करत, धरि देही, नाना ॥
भगतन हित ही, लें अवतारा * अति कृपालु,भगतन पर,प्यारा ।
ममता, दया, रहत, भगतन पर * नाहीं क्रोध करत,करुना करि ॥

फेरत-गई, गरीब-निवाजू * समरथ, सीध,स्वामि,रघुराजू ।
यह समुझे, हरि-जस, अस जानी *बरनहिं,सुफल करहिं,कवि,बानी॥
याही बल, मैं, गुन-रघुनाथा * कहिहौं, नाइ, राम-पद, माथा ।
"बालमीकि," जस, पहिले गाई * सहज राह, मोहिं,दीन्ह बताई ॥

दोहाः—जस, अपार नदी, कोऊ, राजा, पुल बँधवाय ।
१४. तनिक सी चीटी हू, चढ़े, पुल पर, पारहि जाय ॥

अस, मन मां, बल धारे, भाई * कहिहउँ, रघुपति कथा सुहाई ।
"व्यास"-आदि,कवि-राजा, जाना * जिन, आदर ते,सुजस,बखाना ॥
चरन-कमल, बंदौं, तिन्ह केरे * पूरन करहु, मनोरथ, मोर ! ।
कलिजुग-कवि,फिर,करहु प्रनामा *कीन्हा,जिन्ह,रघुपति-गुन-गाना ॥
जनमहिं ते, जे, कवी, सयाने * भाषा मां, जिन्ह,चरित,बखाने ।
भये, जो हैं, और, हुइहैं, आगे * सबहिं,नवौं मैं,सब-छल-त्यागे ॥
होहु प्रसन्न, देहु बरदाना ! * साधू, करहिं कथा-सनमाना ! ।
करहि न पंडित, ग्रंथ को आदर * (मूरख-कवि)-अस,गूदर-गादर ॥
सोइ करनी, कविता,और संपति * नीकी, जहिमां, गंगा-सम,हित ।
राम-सी-कीरति कविता भद्दी * असमंजस, कहुँ, लागइ रद्दी ? ॥
मांगहुं कृपा, साधु, जग-जीवन * सोहइ, टाटहु, रेसम-सीवन ।

दोहाः—सीधी कविता जस-बिमल, सोइ, आदरहिं, सुजान ।
शत्रहु, जेहि कर, बैर तजि, सुनि, सुनि, करहिं बखान ॥
बनी न सो, बिनु शुद्ध बुधि, मोरा मति—बल थोर ।
करहु कृपा, हरि-जस कहउँ, फिर फिर, करहुं निहोर ॥
राम-चरित के झील के, हंसौ ! कबी, कमाल ! ।
बाल-विनय सुनि,देखि,रुचि, मों पर, होहु दयाल !! ॥

सो०—मुनि-पद बंदि, बहोरि, रामायन, रचि दीन्ह, जिन ।
कमल, तौ होत, कठोर, दोष-भरा, (बिन-दोष)-पद ॥
बंदउं, चारहु वेद, भव-सागर कहँ, नाव, जे ।

होत न, सपनेहु, खेद, कहत, राम-सुभ-जस, जिन्हिं ॥
भव-सागर, रचि दीन्ह, बंदउं बृह्मा-चरन-रज ।
साधू, कोउ, खल, कीन्ह, चंद्र-धेनु, विष-सुरा सम ॥
दोहाः—देव, पितर, पंडित, ग्रह, बंदउं सब, कर जोरि ।
१५ मन-प्रसन्न, सब, सब, करहु, सुफल मनोरथ मोर ॥
सारद, गँगे, बंदउं, मन ते * चरित, पवित्र, मनोहर, जिनके।
पियत, छुअत, इक, पापहिं जारहि * कहत, सुनत, इक, कुमति निकारहि
गुरु-पितु-मात, मोर, सिव गौरा * करत प्रनाम, देत, दिन, बहुरा ।
सेवक, स्वामि, सखा, सिय-पी के * साँच हितकारी, तुलसी के ॥
कलिजुग देखि, जगत के हित कहँ * साबर-मंत्र, बनायो, जग महँ ।
अनमिल, बिना-अर्थ, सब अच्छर * भरा प्रभाउ, कूटि के, संकर ॥
सो महेस, मो पर अनुकूला ! * कहत कथा, जो, मँगल-मूला ।
सुमिरि उमा-शिव, पाइ प्रसादा * कहउं, चाउ-ते, चरित, अगाधा ॥
सोहइ, कृपा ! कथन, अस मेरी * चंदा, तारिन-रैन-अँधेरी ।
प्रेम सहित, जो कथा, ये, कहिहहिं * सुनिहहिं, चित्त लगाइ, समुझिहहिं
हुइ हैं, राम-चरन-अनुरागी * छुटे-पाप, मँगल के भागी ॥
दोहाः—गौरी-शंकर की कृपा, सपनेहु सांची मोहि !
१६ तौ, यह-कथन-प्रभाउ, सब, कहउं, सो, फुर ही होहि !!
बंदउँ अवध-पुरी, अति पावनि * सरजू, कलिजुग-दोस-नसावनि ।
फिर, नर, नारिन, करहुँ प्रनामा * जिनपर, अति, अति, ममता-रामा ॥
सिय-निन्दक-के-पाप, नसाये * हरे सोक, बैकुंठ पठाये ।
बंदउँ कौसल्या, कर जोरी * कीरति, फैली, जग, चहुँ ओरी ॥
राम-चंद्र, जहँ, भा, उजियारा * सुख-दाता, खल-कमल, तुसारा ।
दसरथ-राउ, सहित-सब-रानी * मँगल, पुण्य की, मूरति, जानी ॥
करउँ प्रनाम, करम, मन, बानी * करहु कृपा, सुत-सेवक जानी ! ।
जिन-कहँ-रचि, बढ़ भयो, विधाता * महिमा-हद, राम-पितु-माता ॥

सो०:—बंदउ अवध - भुआल, सत्य प्रेम, जिन्ह, राम-पद ।
१७. बिछुरत - दीन - दयाल, प्रिय-तन, तिनका-सम, तजेउ ॥

करुं प्रनाम, कुल-सहित, 'विदेहू' * जिनर्हि, राम-पद, गूढ़ सनेहू ।
जोग-भोग-महँ, गुप, रखि लीन्हा * देखत राम, प्रगट, सो कीन्हा ॥
मोर प्रनाम, 'भरत' - के-चरना * जासु नेम, वृत, जाइ न बरना ।
राम-चरनं-कमलन महँ, जिन्ह मन * भौंरा, तजत, लुभानि, न, इक छुन ॥
बंदउं लछिमन - पद - जलजाता * सीतल, सुघर, भगत-सुख-दाता ।
रघुवर - कीरति, उज्जल झंडी * 'लछिमन'-जस, झंडी-की-डंडी ।
शेष, हजार - सीस, जग-कारन * लीन्हअवतार,(भूमिभय)-टारन॥
रहउ सदा, प्रसन्न, सो, मो, पर * कृपा-सिंधु सौमित्र, गुनागर !।
नवत 'सत्रुहन'-पद, बलिहारी ! * सील, सूर, भरताज्ञाकारी !॥
'महावीर', विनवउं हनुमाना * राम, जासु जस, आप बखाना ।

सो०:—बंदउं श्री 'हनुमान', खल-कहँ अग्नी, ज्ञान-घन ।
१८. जासु-हृदय, धनु-बान-लिये, प्रभु, नित ही, बसत ॥

रीछन, कापिन, निसाचर-राजा * 'अंगद', औरसबकपिन-समाजा ।
बंदउं, सबके चरन, सुहाये * धरे-नीच-तन-हू, प्रभु, पाये ॥
रघुवर - चरन - उपासक जेते * नर, सुर, पच्छी, असुर समेते ।
बंदउं चरन - कमल, सब केरे * जो, बिन-काम राम-के-चेरे ॥
'नारद', 'भक्तहु', 'सुक', 'संकादिक' * सब मुनि, बड़े, ज्ञान-के-नायक ।
बंदउं, सबहिं, भूमि, धरि सीसा * सेवक पर, करु दया, मुनीसा ! ॥
जनक-सुता, जग-मात, 'जानकी' * अति-प्यारी, कृपा-निधान-की ।
तेहिके, दोउ, पद-कमल, मनाऊं * जासु कृपा, निरमल मति पाऊँ ॥
फिर-मन-वचन-करम, 'रघुनायक' * बंदउं, चरन-कमल, सब-लाइक ।
कमल-नयन, धनु-बाना-हाथा * (भक्त-बिपति)-भंजन, सुख-दाता ॥

दोहाः—अर्थ बचन, जल-और लहर, नाम-तो'दुइ, नहिं न्यार ।
बंदउं सीता-राम-पद, जिनहिं, दुखी, अति-प्यार ॥

१६. राम-नाम-महिमा

'र', 'आ', 'मा', प्रभु-नाम, सुहावन * अगिन, सूर्य, चंदा कर, कारन ।
तीन-देव-राम, वेदन-प्राना * निरगुन, गुन-कारन नहिं-नाना ॥
महा-मंत्र, जो, जपत, महेसा * कासी, मुक्ति देत, उपदेसा ।
जानत नाम-प्रभाउ, गनेसा * जेहि ते, पहिले-पुजत, हमेसा ॥
जानत बालमीकि हू, भाई ! * 'मरा', 'मरा', जपि, सुद्धी पाई ।
"सहस्र"-नाम-सम, सुनि, सिव वानी * खायो, जपि, सिव-संग, भवानी ।
देखि प्रेम, अस, पारबती कर * कीन्हा, नारि-सिरोमनि उर-धरि ॥
जानत सिव हू, नाम-प्रभावा * विष ते, जिन, अमरित, फल पावा ।

दोहाः—राम - भक्ति, वर्षा-रितू, धानी, तुलसीदास ।
२०. "रा" "म", सुभ-अक्षर, दोऊ, सावन, भादों मास ॥

'रा', 'म', अच्छर, मधुर, मनोहर * नयन-अच्छरन और-भगतन-उर ।
सुमिरत-सहज, और, सुख पावत * लोक, देत, परलोक, निबाहत ॥
कहत, सुनत, सुमिरत, अति-नीके * राम-लखन-से, प्रिय-तुलसी-के ।
अलग-अलग बरनउं, केहि भांती * बृह्म-जीव-से, दोउ, सँघाती ॥
जनु, नर-नारायन, दुइ भाई * पालहिं जग, भगतन, अधिकाई ॥
'भक्ति' नारि-के, करन-फूल, जनु * चंदा, सूरज, जग-के-हित, मनु ।
मोच्छ-अमरित के स्वाद, तृप्ति सम * कछुआ, सेष, किये-धरती-थम ॥
भगतन-के-मन - कमल - भँवर - से * जसुमत-जीभ, कृष्ण, हलधर से ।

दोहाः—एक छत्र, इक, मुकुट-मनि, सब - अक्षर - के सीस ।
२१. रा, मा, राजत दोउ, जनु, नाम कौसलाधीस ॥

समुझत, एक, 'नाम' और 'नामी' * इक, सेवक, इक अच्छर, स्वामी ।
दोऊ, ईश्वर-की गति, लागत * ज्ञानी समुझत, कहि नाहिं पावत ॥
को बढ़, छोट, कहत अपराधू * सुनि गुन-भेद, समुझिहैं साधू ।
रूप, नाम - के - ही - आधीना * बिना नाम, कोउ, रूप न चीन्हा ॥

खाली रूप, नाम-बिनु-जाने * जात न, हाथ-धरे, पहिचाने।
सुमिरत नाम, रूप-बिन देखे * उपजत, जी मां, प्रीति, अलेखे॥
नाम-रूप की कठिन कहानी * समुझे सुख नहिं,जात,बखानी।
नामहिं, निरगुन-सगुन-गवाही * देत, बीच परि, दोउ, समुझाई॥

दोहाः—राम-नाम-दीपक धरहु, जीभ की देहरी वारि।
२२. तुलसी, भीतर, बाहिरहु, जो, चाहत उजियार॥

जपे नाम, आखैं, खुलि जाहीं * छुटत, न-जग-जंजाल सुहाई।
बृह्म सःख, सो, तब, तेहि पावत * नाम-न-रूप,जो,कहि नहिं आवत॥
जाना चहहिं, गुप्त गाति, जेऊ * नाम, जीभ,जपि, जानिहईं, तेऊ।
साधू, नाम जपत, लउ लाये * होत सिद्ध, आठहु सिधि पाये॥
जपत 'नाम, जे, दुखिया-भारी * मिटत कलेस, औ होत सुखारी।
चारि प्रकार, भक्ति-के; जाना * 'इच्छा'दुख',मतलब' औरज्ञाना'॥
पर, सब कर, इक, नाम-अधारा * ज्ञानी, रामहिं सब-ते-प्यारा।
बेद-चारि-जुग, नाम-प्रभाऊ * कलिजुग मँह, नाहिं, आन उपाऊ॥

दोहाः—सब इच्छा तजि, जग भये, भगति के रस, जो, लीन।
२३. राम-प्रेम के कुंड कहँ, मन, मछरी करि दीन॥

'अगुन' 'सगुन', दोउ,बृह्म-के-रूपा * अकथ, अथाहा, नित्य, अनूपा।
समुझत,मैं,बढ़,"नाम" दोउन ते * कीन्हे बस महँ, दोउ, निज-बूते॥
सजन, न समझहिं झूँठी, जन की * कहउं प्रतीति,प्रीति,रुचि,मन की।
अग्नि, काठ के भीतर, बाहिर * छिपी'अगुन'है,'सगुन'है जाहिर॥
कठिन, दोउ, पर, सहज नाम ते * कहौं, 'नाम' बढ़, बृह्म, राम, ते।
बृह्म,'एक','व्यापक','अविनासी' * पूरन, सत-चित-(आनंद-रासी)॥
सुद्ध बृह्म, अस, हृदय धारी * होत दुखी, तहु, नर-संसारी।
खुलत"नाम",जपि,औौर,किये ते * खुलत रतन, जस, मोल दिये ते॥

दोहाः—"निरगुन ते, यह भाँति बढ़, 'नाम'-प्रभाउ अपार।
२४. कहउ 'नाम' बढ़ राम ते, मैं विचार-अनुसार॥

राम, भक्त-हित, नर-तन धारी ※ सहि संकट, किये साधु सुखारी।
प्रेम-सहित, पर, 'नाम' जपे उर ※ होत भक्त, आनँद-मँगल-घर॥
राम, तौ, एक, 'अहिल्या' तारी ※ कोटि-दुष्ट-मति, 'नाम' सुधारी।
विस्वामित्र, दीख, प्रभु, आरी ※ सैना - पुत्र - ताड़िका मारी॥
भक्तन के दुख, दोस, दुरासा ※ "नाम"-सूर्य, रात्री-सम, नासा।
सिव कर धनुष, राम, इक, टारा ※ मिटत, 'नाम'-बल, भय-संसारा॥
'दंडक-बन' प्रभु, कीन्ह सुहावन ※ 'नाम', बहुत भगतन-मन पावन।
राम एक राक्षस-दल, मारत ※ यह, कलियुग-के-पाप, नसावत॥
दोहाः—'सवरी', 'गीध', औ सेवकन्ह, दीन्ह, राम, निज धाम।
२५. लाखन, तारे, 'नाम' खल, कहे, वेद, गुन-'नाम'॥
कपि-पति, एक, बिभीषन, दोई ※ राखे सरन, जान सब कोई।
'नाम', अनेक, गरीबन राखी ※ वेद सराहा, सोई साखी॥
राम, भालु, कपि कर, दल, जोरा ※ बांधा पुल, भा, दुःख-न-थोरा।
लेत 'नाम', भव-सिंधु सुखाहीं ※ करहु विचार, सुजन, मन माहीं॥
राम, सहित-कुल 'रावन', मारा ※ सीय-सहित, निज-पुर, पगधारा।
राजा, राम,-अवध, रजधानी ※ गावत गुन, सुर, मुनि, मृदु-बानी॥
सेवक, सुमिरे 'नाम' प्रीति-सन ※ लेत, मोह-दल, जीति, सहज, मन।
बिचरत, प्रेम-मगन, सुख अपने ※ 'नाम' प्रसाद, सोच नहिं सपने॥
दोहाः—बृह्म, राम, ते, 'नाम' बड़, वेत, बड़िन, बरदान।
२६. राम-चरित, सौ-कोटि महँ, लीन्हा, शिव, पहिचान॥
राम - प्रताप, शंभु, अविनासी ※ बुरा - बेष, भे मंगल - रासी।
'सुक' सँकादि, सिद्ध, मुनि, जोगी ※ 'नाम' ते, भये, बृह्म-सुख-भोगी॥
जाना नारद 'नाम'-प्रतापू ※ (जग-प्रिय-विष्णू)-शिव-प्रिय आपू
'नाम' जपे हीं, मिला प्रसादा ※ भगतन-नायक, भा, 'प्रहलादा'
'ध्रुव', सकुचत, जपि, विशनू-'नामा' ※ पाया, अचल, औ, सुंदर, धामा
जपि, पवित्र 'नामा', 'हनुमानू' ※ अपने-बस, करि लीन्हे रामू॥

दुष्टः'अजामिल'गजऔर'गनिका' * नामहिं,मुक्ति,सुलभ भइ,तिनका ।
कहौं, कहाँ लगि, 'नाम'-बड़ाई * राम न सकत,'नाम'-गुन गाई ॥

दोहाः—कल्प-वृक्ष, इक, 'नाम' ही, कलिजुग, सःख-निवास ।
२७. जेहि, जपि कर,भे, भाग ते, तुलसी, तुलसी-दास ॥

वेद, पुरान, संत-मति, एही * सकल पुण्य, भय-राम-सनेही ।
त्रेता, यज्ञ, ध्यान, सतजुग मां * द्वापर, पूजा, रही, जगत मां ॥
कलि-जुग जहँ,पापन-जर सचरी * पाप-सिंधु,सब-कर मन, मछरी ।
"नामहि" कल्प'-वृक्ष, यह काला * सुमिरत,नसत, जगत-जंजाला ॥
यह जुग, "नाम', मनोरथ-दाता * मरे, हितू, जीवत, पितु-माता ।
होत, न, करम, न, धर्म-विचारा * राम 'नाम', ही, एक सहारा ॥
'कालनेमि'-सम, कलिजुग जाना * जीति सकल,'नाम'हि-हनुमाना ।

दोहाः—हिरणाकशि, कलि-जुग, मनहु, "नामहि," 'नरसिंह'मित्र ।
२८. जपइ, सोइ, प्रहलाद, जनु, पालहि, हति "सुर-सत्रु" ॥

भाउ, कुभाउ, अनखि, अलसाये * जपे नाम',दसु दिसि, सुख पाये ।
सुमिरि,सो-'नाम',नाइ,पद,माथा * बरनत,अब, मैं, गुन-रघुनाथा ॥
मोर, सुधारहिं, सोइ, सब भाँती * जा की कृपा, न, कृपा, अघाती ।
स्वामी, राम, कुसेवक, मो सा * अपनि ओर,मोहिं पालि भरोसा॥
कहत, वेद, स्वामी की रीती * विनय सुनत, पहिचानत प्रीती ।
धनी, गरीब, गँवार, और चातुर * पंडित, मूढ़, कुकर्म, उजागर ॥
बुरे, भले, कवि, मति-अनुसारी * भूप, सराहत, सब, नर, नारी ।
चतुर, शील, साधू, जग-राजा * जिन्ह माँ, ईश्वर-अंश विराजा ॥
करत, मान, सब कर, मिठ-बानी * कविता,प्रेम, नई, पहिचानी ।
यह, साधारन - राज - स्वभाऊ * सब-राजन-अफ़सर, रघुराऊ ॥
रीझत, सुद्ध प्रेम, देखे ते * मंद, पाप-मति, को,जग,मो से ।

दोहाः—सेवक दुष्टहु प्रीति,रुचि, रखिहहिं, राम, कृपालु ।
२९. पाथर लगि, तैराइ,जिन, करि मंत्री, कपि, भालु ॥

दोहाः—भगत कहावत, महुँ, कहत, सहत, सुनत, प्रभु, कान।
राम सो साहिब जग कहां !, सेवक, मोहि समान ! ॥

सुनत, दुष्टता, ढ़िठई मोरी * पाप, नर्क, हू, नाक सिकोरी।
मैं तौ कांपत, डर, मन अपने * राम, विचारत नहिं, कछु, सपने ॥
सुना, दीख, मोरेहु मति आवत * सुद्ध भक्ति कहँ, राम सराहत।
कहि न आइ, हृदय हो, नीका * रीझहिं राम, जानि सब जीका ॥
चूक भुलावत, प्रभु की रीती * सुमिरत, भक्त-हृदय-की-प्रीती।
जौन पाप लगि 'बाल'हिं मारा * सोइ पाप, 'सुग्रीव'हु धारा ॥
सोइ करतूति, 'विभीषण' केरी * सपनेहु, ताहि, राम, नहिं हेरी।
मिलत-'भरत', सब कँह सनमाना * सभा-बीच, गुन, आप, बखाना ॥

दोहाः—प्रभु, नीचे, कपि, डार पर, सो, किये, अपुन-समान।
तुलसी, कहूँ न, राम-से, साहिब, सील-की-खान ॥
राम ! भलाई, आपु की, है, सब जग कहँ नीक।
जो, यह, सांची बात, तौ, लगिहहि तुलसी-ठीक ॥
यह विधि, आपुन-दोस, कहि, सबहिं, फेर, सिर नाइ।
३०. बरनउँ, रघुबर-बिमल-जस, कलि-जुग-पाप नसाइ ॥

'जागबलिक', जो, कथा सुहाई * 'भरद्वाज', मुनिवरहिं, सुनाई।
कहउं, सोइ संवाद, बखानी * सुनहु, सकलसज्जन, सुखमानी ! ॥
रचा शंभु, यह, चरित सुहावा * पार्वती कहँ, आप, सुनावा।
सोइ, सो, कागभुशुंडहिं, दीन्हा * देखि भक्ति, अधिकारी-चीन्हा ॥
तेहि सन, 'जागबलिक', फिर, पावा * 'भरद्वाज'-आगे तिन गावा।
कहा, सुना, जिन्ह, दोउ, सम-सीला * समदरसी, जानत हरि-लीला ॥
तीन्हु काल, ज्ञान-बल, जानत * औंरा-सम, मुट्ठी मँह, राखत।
औरहु, जे, हरि-भगत, सुजाना * कहत, सुनत, समुझत, बिधिनाना ॥

दोहाः—मैं, फिर, गुरु-मुख-ते, सुनी, कथा, सो, "सूकर-खेत"।
समुझी नहिं, तब बालपन, मैं, अति, रहा, अचेत ॥

कहइ, सुनइ, ज्ञानी कोउ, कथा, राम की गूढ़।
२१. कस, समुझत मैं जीव, जड़, पापन - पकरा - मूढ़ ॥

कही, गुरू, फिर, बारंबारा ❊ समझिपरी, कछु, मति-अनुसारा।
भाषा - छंद, कहत मैं, सोई ❊ मन मोरा, समुझा जस होई ॥
बल-विवेक-भरि, जोर, लगइहउं ❊ जस, बैठइ, हृदय, तस, कहिहउँ।
जो, संदेह, मोह, भ्रम-हरनी ❊ कहउँ कथा, भव-सागर-तरनी ॥
पंडित, सांति, सकल, सुख पावहिं ❊ राम-कथा, कलि-पाप नसावहिं।
पाप-सर्प कहँ, मानहु "मोरा" ❊ ज्ञान-अग्नि कहँ, गंधक-सोरा ॥
काम-धेनु, जनु, कथा, सुहाई ❊ सुजन - हेतु, संजीवन, भाई।
पृथ्वी पर, अमरित-'मंदाकिनि' ❊ भय-मेडक-नासक, जनु नागिनि ॥
असुर-सैन-सम, नर्क नसावत ❊ दुर्गाः साधु-देव-कुल, पालत।
संत-सिंधु-लछमी, सुख सारे ❊ पृथ्वी, अचल, जगत-सिर-धारे ॥
जम-मुख कहँ, कारिख जमुना-सी ❊ जीवन-मुकुति-हेत, जनु, कासी।
तुलसी सी, वह, रामहिं प्यारी ❊ मोर हितू, "हुलसी", महतारी ॥
शिव जी कहँ, नर्मदा-सी प्यारी ❊ संपति-सिधि-दाता, सुखकारी।
शुभ-गुन-सुरन-मातु, 'अदिति'-सी ❊ रघुवर-भक्ति-प्रेम-मूरति सी ॥

दोहाः—राम-कथा, 'मंदाकिनी', निरमल चित्त, पहार।
३२. तुलसी, सुघर-सनेह-बन, सिय - रघुवीर - विहार ॥

राम-चरित, चिंतामनि, पाथर ❊ संत-बुद्धि - नारी - की - खातिर।
मंगल-दाता, चरित राम के ❊ देत मुकुति, धन, धरम, धाम, जे ॥
जोगहु, ज्ञान, बिराग, सिखावत ❊ बने वैद, भव-रोग, नसावत।
मातु-पिता, सिय-राम-प्रेम के ❊ बीज सकल वृत, धरम नेम के ॥
पाप, सोक, संताप, नसावत ❊ यह लोकहु, पर-लोकहु, पालत।
जनु, 'सुमंत्र', भूपति-विचार के ❊ लोभ-सिंधु कहँ, मुनि-'अगस्त्य' से ॥
काम-क्रोध-कलि-मल-हाथिन के ❊ बाल-सिंह, संतन-मन-बन के।
जनु, गरीब, प्रिय-महादेव - के ❊ आग-दरिद्रहिं, मनहु, मेघ-से ॥

"छूमनतुर",जनु, विषय-नाग के * मटत, अच्छर, लिखे-भाग के।
मोह-अँधेरी कहँ, जनु भानू * कथा, मेघ, और, सेवक, धानू॥
इच्छा-सिद्ध, कल्प-तरुवर - से * दें सुख, सेवत, विषनू - हर - से।
कवि-के-मन-अकास के तारे * जीवन-धन, भगतन के, सारे॥
सकल-पुण्य-फल, सकल-भोग-से * जग-हित, सांचे-साधु-लोग-से।
सेवक - मानसरोवर - हंसा * करत सुद्ध, गंगा-लहरन-सा॥

दोहाः—संसय, कुरह, कुचाल, छल, कपट, और पाखंड।
जारत, राम-कथा, मनहु, इंधन, अग्नि- प्रचंड॥
चन्द्र-किरिन सा, राम-गुन, सुख-दाता, सब काहु।
३३. सज्जन - कुमुद - चकोर-चित, हितकारी, बढ़ लाहु॥

पूँछा, जोहि विधि, शिवहिं भवानी * जेहि विधि,शंकर,कहा,बखानी।
सो सब कारन, कहब, मैं, गाई * कथा-रूप, सुनदर, मिठ, भाई॥
जे, यह कथा, सुनी नहिं होई * कराहिनअचरज,अवसुनि,कोई।
कथा, विचित्र, सुनहिं, जे ज्ञानी * करत न अचरज,सो,असजानी॥
राम-कथा-सम, जग, कछु नाहीं * अस-विश्वास-करे, मन माहीं।
भाँति-अनेक, राम-अवतारा * रामायण, सौ-कोटि, अपारा॥
समय, समय, हरि-चरित, सुहाये * बहु विधि, मुनी लोग, हैं गाये।
करिये न संसय, अस, जिय जानी * सुनिये कथा, प्रेम, सनमानी॥

दोहाः—अंत-न, राम, न, गुनन कर, प्रभु की कथा, अपार।
३४. सुनि, अचरज, ना मानिहंइं, जिन के सुद्ध विचार॥

यह विधि, सब संशय करि दूरी * धरिसिर,गुरु-पद-कमलन-धूरी।
फिर, सब कहँ,विनवत, कर जोरे * कथा पै, दोष, धरहिं, ना, मोरे॥
शिवहिं, नाइ, आदर सों, माथा * कथा कहत, सुनदर रघुनाथा।
संबत, सोरह - सौ - इकतीसा * रचउँ कथा,हरि-पद,धरि,सीसा॥
चैत्र-नौमि, और, मँगल-बारा * चरित-प्रकास अवध भा, सारा।
राम-जन्म -दिन, वेद अस गावहिं * तीरथसकल,तहाँ,चलि,आवहिं॥

असुर,नाग, खग, नर, मुनि,देवा * आइ, करत, रघुबर-की-सेवा ।
चतुर, जन्म-दिन-राम, मनावत * सुनदर कीरति, मुख ते,गावत ॥
दोहाः— करत सजन, असनान, सब, पावन, सरजू-नीर ।
३५. जपत राम, धरि ध्यान, उर, सुन्दर स्याम सरीर ॥
नदी, पुनीति, भरी महिमा-अति * बनत न, सरस्वती हू, बरनत ।
राम-धाम, दे, पुरी - सुहावन * सब जग मानत,अति ही पावन ॥
चारि - प्रकार-के - जीव, अपारा * मरे अवध, न फिरत, संसारा ।
सब विधि, पुरी, मनोहर जानी * देत सिद्धि, और, मँगल खानी ॥
कीन्ह सुरू, यह कथा राम की * नासन हारी, मद,औ,काम की ।
"राम-चरित-मानस" है नामा * सुनत कान, पावत बिस्रामा ॥
मन-गज, विषय-अग्नि, जो, जरई *कथा के जल,बुझि,सुख,सो,करई।
"राम-चरित-मानस," मुनि-भावा * सुखी-हित, रचि,'शंभु' बनावा ॥
नयन-दोष, दुख, दरिद, नसावत * बुरी-चालि कलि-पापहिं-मारत ।
रचि, शंकर, अपने मन राखा * फिर, यह, पारवती-सन भाखा ॥
ता ते "राम-चरित-मानस" कर * धरि, सुभ-नाम हिय-हर्षे 'हर' ।
सुख-दाता, सोइ कथा, सुहाई * कहउँ,सुनहु, आदर, मन लाई ॥
दोहाः— कस 'मानस', केहि विधि, भयो, क्यों प्रचरा, संसार ।
सो सब, आगू, कहत मैं, सुमिरि उमा, त्रिपुरार ॥

३६. ("राम-चरित-मानस")

शिव-की-कृपा, ऐस, मति हुलसी * भा,'मानस'का कवि,मैं,'तुलसी' ।
कहत मनोहर, मति-अनुसारी * सुनि, बिगरी-कहँ, लेहु, सुधारी ॥
मति-पृथ्वी - बिच, हृदय-तराई * वेदः सिंधु, साधूः घन-छाई ।
बरषहि राम-सुजस - जल-धारा * मधुर, मनोहर, मँगल-कारा ॥
लीला-सगुन, जो, कहत बखानी * पाप-हरन,सोइ,जनु, गुन-पानी ।
प्रेम, भक्ति, जो, कही न जाई * सोइ मिठास, और, सीतलताई ॥

पुण्य - धान - हितकारी, पानी * राम-भगत-कर-जीवन जानी।
बुद्धि-भूमि परि, यह, जल-पावन * सरकि, कान-मग, चला सुहावन॥
हृदय-ताल-भरि, गयो थिराना * रुचि-की-ठंडक, सुखी सिराना॥

दोहाः—जगह, जगह, संवाद, फिर, बुद्धी, रचे, विचारि।
३७. सोइ, यह, पावन-ताल-के, घाट, मनोहर-चारि॥

सीढ़ी,'सातो काण्ड,' ताल की * ज्ञानी परखत,कहि,'कमाल-की'।
'रघुपति-महिमा', वे-गुन-बाधा * तालहिं, जल, जनु, भरा, अगाधा॥
'प्रभु-जस',जनु,अमरित-जल-चादर*'उपमा': लहर-विलास-मनोहर।
कमल - वेल, फैली, चौपाई * 'वंदिस', मानहु, सीप सुहाई॥
'छंद', 'सोरठा', सुंदर, 'दोहा' * लागत, कमल-मनोहर-सोहा।
'अर्थ','भाउ', और,सुनदर-भाषा * कमलनकीरजि, छबि,औरबासा॥
सुधे-'पुराय'. जनु, भौंरा गूँजत * 'ज्ञान', 'विराग', हंसहुइबिचरत।
'गुन','ध्वनि',टेढ़ चाल,कविताकी * बहु-रँग, मछरी मानहु, ता की॥
चारि पदारथ, जो, सुखकारी * वरनउँ, ज्ञान, विराग - विचारी।
नौ-रस, जप, तप, जोग कहउँ, जो * ताल के,हैं,जल जीव,मनहु, सो॥
सुन्दर-साधु - नाम - गुन - गाना * जल-पक्षी, सुन्दर, जनु, नाना।
संत-सभा, जनु, आमन-पाँती * श्रद्धाः रितु-वसंत - लहिलाती॥
दया, छमा, लच्छन, भगतन-उर * छाइ वेल, जनु, संत-वृक्ष-पर।
फूलः'नियम'-'सम'जम',फलः'ज्ञाना'* हरि-पद-प्रेम, भरा,रस-खाना॥
मानस महँ, जो, और-कथाई * सुआ-कुयल-सम, जीव, सुहाहीं।

दोहा—'पुलक': वाटिका, बाग, जनु, 'सुख': पक्षिनन-विहार।
३८. मन-माली, जल-प्रेम-लइ, सींचत, लोचन द्वार॥

जो, गावहिं, यह चरित, सँभारे * तेः यह-ताल - चतुर - रखवारे।
सुनहिं जि, आदर ते, नर नारी * सोइ, देव, मानस-अधिकारी॥
'विषई' 'खल': बकुला-और-कागा * मानस तीर, न जाहिं, अभागा।
घोंघा - मेडक - घास - समाना * विषय-कथा-रस, इहां, न नाना॥

तेहि कारन, आवत, हिय हारे * कामी, बकुला - काग - बिचारे।
पहुँचब - ताल, बहुत - कठिनाई * राम-कृपा-बिनु, सकत, न जाई॥
मारग-कठिन, 'खलन-संग',जानहु* सर्प,सिंह,"खल-वचनन",मानहु।
'काम', गृहस्ती के, 'जंजाला' * लागत, कठिन-पहार-बिसाला॥
'मद','अभिमान','मोह',वन-भारी*'भ्रम','संसय', नदियाँ, जहँ,जारी।

दोहाः—ना, श्रद्धा ही, संग मा, ना, संतन - कर - साथ।
३९. तिन्ह कहँ,'मानस',अति-अगम, जिनहिं, न प्रिय,रघुनाथ॥

जो, करि कष्ट, जाइ, तहं, कोई * जूड़ी चढ़इ, 'नींद' की, सोई।
लगइ, मूर्खता-कर, तेहि, जाड़ा * सकइ, नहाइ, न, ओढ़े-आड़ा॥
ना, जल-पान, नाहिं, अस्नाना * आवइ, लौटि, लिये-अभिमाना।
जो, फिर, वा ते, कोई पूँछी * 'मानस'-नदी, बतावहि, छूँछी॥
व्यापत विघ्न, न, कोई, तेही * राम, कृपा करि, देखइ जेही।
आदर सों, अस्नान, सो करई * कबहुँ न, तीन ताप ते जरई॥
ते नर, मानस, तजहिं न, काऊ * जिन्ह के राम-चरन-भल-भाऊ।
यह, नहाइ-चाहइ, जो, भाई ! * सो, सत-संग,करहि, मन-लाई॥
हृदय-द्रष्टि, मानस कहँ, चाहीं * कवि की मति, भइ, सुद्ध, नहाई।
मन, अनन्द, उतसाहू जागा * परमानंद, उमड़ि, बहि लागा॥

(कविता-नदी)

सुंदर-कविता, बही, नदी-सी * राम-विमल-जस,मनहु,भरी-सी।
सरजू, मनहु, बहत-सुख-सारे * वेद, शास्त्रः दुइ, सुघर-किनारे॥
सुघर-नदी, 'मानस' ते, आवत * पाप-वृक्ष-और-घास, उखारत।

दोहाः—ग्राम, नगर, पुर, नदी-तटः 'स्रोता - तीन - प्रकार।
४०. 'संत-सभा': नगरी अवध, जो, सब-सुख - की-सार॥

सुन्दर-जस, यह नदी, सुहाई * राम-भक्ति-गंगाहिं मिलि जाई।
राम-लखन-कर युद्ध-समर-जस *मिले"सोन"-"सरजू"लागतअस॥

सरजू-सोन-बीच, गंगा, अस * ज्ञान-विराग-बीच, भगती, जस ।
त्रिमुखी, तीन-ताप, जनु, हरिके * चली, राम-सिंधू, मुख करि-के ॥
गंगाहिं मिली, निकसि, 'मानस'ते * करहिपवित्र,सुजन-मन, सुनि के।
बिच-बिच-कथा,कथा-सुभ-भागा * नदी तीर, जनु, बन और बागा ॥
उमा - महेश - विवाह, बराती * जल के जीव, मनहु, बहु भांती।
रघुवर - जन्म, आनंद - बधाई * भँवर, लहर की सुन्दरताई ॥
दोहाः—लरिकाई, भाइन - चरित, मनहु, कमल, बहु-रंग ।
४१. भँवरा, जल-पक्षी, मनहु, राजा - रानि - प्रसंग ॥
सिय - स्वयंबर - कथा, सुहाई * लगत, नदी, सोई, छबि, छाई ।
चतुर प्रश्न, नौका-से, खेवत * उत्तरः ज्ञान-भरा, बनि केवट ॥
जो बातें, सुनि, पाछे, होहीं * पार जवैया, सो, जनु सोहीं ।
परसुराम-कर-रिस, जनु धारा * बचन-राम-के, घाट, अपारा ॥
लखन, औ, राम विवाह-उछाहू * उमग-नदी, सुख दे, सब काहू ।
कहत, सुनत, पुलकित हर्षाहीं * पुण्यवान, सोइ, नदी नहाहीं ॥
राम-तिलक-हित, मँगल-साजा * परे परब, जनु, जुरा समाजा ।
काई, कुमति, केकई - केरी * परी, जासु-फल, विपति-घनेरी ॥
दोहाः—नसत - महा - उतपात-सब, भरत - चरित; जप - यज्ञ ।
४२ पाप - और - अवगुन - कथनः बकुला, कागा, सर्व ॥
रहत, सबहि-रितु, नदी, सुहावन * समय पै, औरहु संदर, पावन ।
रितु 'हेमंत', शिव-उमा-विबाहू *'सिसिर'-रितू,प्रभु-जन्म-उछाहू ॥
बरनउँ राम - विवाह - समाजा * सोइ,'बसंत' ,मानहु,रितु-राजा ।
रितु 'गरमी', प्रभु कर,बन जाना * राह - कथा, लू-घाम-समाना ॥
युद्ध निसाचर, वर्षा प्यारी * देवन-धानी कहँ, हितकारी ।
राम-राज-सुख, विनय, बड़ाई * सुख-दाता, सोइ,शरद, सुहाई ॥
सती - सिरोमनि, सीता-के-गुन * उज्जल,कसकहुँ, नदी-जल, जनु ।
भरत-सुभाउ, है सीतल - ताई * सदा, एक-रस, कही न जाई ॥

दोहाः—प्रेम, मिलन, बोलन, हँसन, आपुस-कर, इतहास ।
४३. चारहु - भाई - भाइपन, जनु, जल-वास - मिठास ॥

आरति, विनय, दीनता कवि की * हलकाई-सुभ, निर्मल-जल की ।
अद्भुत जल,सुनताहि, सुख लावत * आस-प्यास,मन-मैल, नसावत ॥
राम-प्रेम कहँ, पालत, पानी * हरत, पाप सब, और गलानी ।
आवागवन-थकन, जल, नासत * सकलपाप,दुख,दोस मिटावत ॥
काम, क्रोध, मद, मोह नासत * सुंदर ज्ञान, विराग बढ़ावत ।
कीन्हे मज्जन, और, पिये ते * मिटत,पाप, और दुःख,हिये ते ॥
जिन्ह, जल,धोइ,न,मनहिं सँभारा * जानहु,कलियुग,तिनहिं,बिगारा ।
पी, रेती कर जल, संसारी * रहिहहिं,ते,जनु,मिरग,दुखारी ॥

दोहाः—कहि गुन,जल के,बुद्धि-भरिं, मन, अस्नान कराइ ।
पार्वती, और शिव,सुमिरि, कहुं मैं, कथा सुहाइ ॥
श्री रघुवर के पद-कमल, धरि हिय, पाइ प्रसाद ।
४४. जागबलिक - भरद्वाज कर, कहउं मिलन - संवाद ॥

भरद्वाज, मुनि बसहिं प्रयागा * जिनहिं,राम-पद,अतिअनुरागा ।
तपस्वी, सम, और, दया-निधाना * परमारथ, जिन, नीके जाना ॥
सूरज, मकर-रासि, जब आवत * माघ-मास, जब, मेला लागत ।
देव, दैत्य, किन्नर, नर, नारी * न्हाइ "त्रिबेनी", होत सुखारी ॥
बेनीमाधव-पद, फिर, पूजत *छुअतअक्षय-बट,मन,सुख होवत ।
भरद्वाज-आस्रम, अति पावन * अति-रमनीक,मुनिन-मन-भावन॥
रिषी, मुनिन कर, जुरत,समाजा * जात, नहान, जो, तीरथ-राजा ।
प्रात, उछाह, करत अस्नाना * आपुस,हरि-गुन,करत बखाना ॥

दोहाः—बृह्म-रूप, और, धर्म-विधि, कहत, तत्व के भाग ।
४५. भक्ति, कहत, भगवान की, सहित - ज्ञान - वैराग ॥

यह प्रकार भरि-माघ, नहाईं * फिर,निज-निज-आश्रम,सबजाहीं।
होत अनंद, पेस, सब बरसन * मकर नहाइ, जात मुनि,झुंडन ॥

एक बार, भरि-मकर नहाये * लौटे,मुनि, घर, अपन, सिधाये ।
'जागवलिक',मुनि,जो,अति ज्ञानी * 'भरद्वाज' राखा, हठ ठानी ॥
आदर ते, पद कमल पखारे * अति-पवित्र-आसन बैठारे ।
पूजा, मुनि-जस, कहा, बखानी * बोले, अति पवित्र,मिठ बानी ॥
भरद्वाजः—नाथ!एकसंसय बढ़,मोरे * वेद-सार, सब, छँगुली तोरे ।
कहत,लगत डर हू, औंर, लाजा * जो न कहत, बढ़ होत अकाजा ॥

दोहाः—सुनत, कही अस नीति, प्रभु ! वेद, पुरानन, गाइ ।
४६. सुंदर-ज्ञान न ऊपजइ, गुरु ते बात - छिपाइ ॥

अस विचारि कहुं, आपन मोहा * हरहु, नाथ ! करि,दासपै, छोहा ।
राम-नाम, अति महिमा, भारी * संत,पुरान, सभन,कहि डारी ॥
जपत, सदा, शंभू, अविनासी * जो, भगवान, ज्ञान-गुन-रासी ।
चारि-प्रकार जीव, जग माहीं * कासी मरे, मुक्ति सो पाहीं ॥
रामहिं की महिमा, मुनि-राया * शिव, उपदेस देत, करि दाया ।
राम, कौन ? प्रभु, पूछहुं, तोही * कहु समुझाइ कृपाकरि, मोही ॥
एक राम, दसरथ घर जन्मा * तिन्हकरचरित,फइल,सबजगमा।
नारि-विरह, दुख सहेउ, अपारा * कीन्ह क्रोध, जा, रावन-मारा ॥

दोहाः—सेइ राम, कै, औंर कोउ, जपत रहत शिव जाहि ।
४७. सत्य - धाम, ज्ञानी गुरू, मोका देहु बताहि ॥

भ्रम, भारी, मिटि, फिर ना होई * कहउ कथा, फैलाइ के सोई ।
जागवालिक 'जागवलिक',बोले,मुसुकाई * तुम जानत, रघुवर - प्रभुताई !
राम-भगत, तुम, मन, बानी, ते * समुझत चतुराई, मैं, नीके !
चाहत सुना, राम - गुन - गाना * पूँछत अस, जस,कोउ, नादाना ।
तात, सुनहु, आदर, मन लाई * कहउं, राम की कथा, सुहाई ॥
मोह-के-"महिषासुर"-कहँ मारत * कथा, कराल-"कालिका" ,लागत।
चंद्र-किरिन-सम, कथा राम की * संत-चकोरन ही के काम की ॥

दोहाः—कहउं, सो, मति - अनुसार, अब, उमा - शँभु - संबाद ।
४८. जेहि कारन, जेहि समय, भा, सुनि, मुनि ! मिटइ बिषाद ॥

एक वार, त्रेता-जुग माहीं * गये शँभु, 'कुम्भुज-रिषि' पाहीं ।
संग 'सती', जग-मात, भवानी * पूजे रिषि, जग-ईश्वर जानी ॥
राम-कथा, विस्तारि बखानी * संकर सुनी, परम सुख मानी ।
पूंछी, रिषि, हरि-भक्ति सुहाई * कहीं शंभु, तेहि-लाइक पाई ॥
कहत, सुनत, अस,गुन-रघुनाथा * कछु दिन रहि,कैलास-के-नाथा ।
मांगी विदा, अपन घर आये * सती का, अपने साथ, लिवाये ॥
तेहि अवसर, जग-भार उतारन * हरि जन्मे, रघु-वंस-सुहावन ।
राज, पिता-के - बचनन, त्यागे * विचरत, 'दंडक-बन', मन मारे ॥

दोहाः—हृदय, विचारत जात; शिव, केहि विधि, दरसन होइ ।
छिपि, लीन्हा अवतार प्रभु, गये, जानि, सब कोइ ॥

सोरठः—शिव-हृदय, अति छोभ, 'सती', न जाना, मरम सो ।
४६. तुलसी, दरसन-लोभ, मन-डर, लोचन-लालची ॥

शिवः—नर-हाथन-मृत्यु,माँगी रावन* विधि,अवतार कीन्ह, यह कारन ।
जो नहिं जाउँ, रहइ पछितावा * करत विचार, न बनत बनावा ॥

कविः—शिवकेमन,अससोच-विचारा* तेहि समय दस-सीस पधारा ।
लीन्ह, नीच, मारीचहिं, संगा * भयो, तुरत, सोइ, कपट-कुरंगा॥
करि छल, मूढ़, हरी बैदेही * प्रभु-प्रताप, जाना नहिं तेहीं ।
मारि हिरन, लछिमन-सँग, आये * आस्रम देखि, नयन, जल छाये ॥
भये विकल, जस-नर, रघुराई * खोजत, फिरत, बनन, दोउ भाई।
मिलन-छुटन-दुख, रहा न जाके * विरह-दुःख, देखा, हिय ताके ॥

कविः—दोहाः—अति विचित्र, रघुपति-चरित, जानत, चतुर सुजान ।
५०. थोरी-मति, और मोह-बस, समुझि बात कछु आन ॥

शिव, तेहिसमय, राम कहँ देखा * उपजा, हिय, अति हर्षविसेखा ।
भरि-आखिन, छवि-सिंधु निहारी * कुसमय जानि,नकीन्हाचिन्हारी॥

"जय ! सच्चिदानंद, जग पावन" * चले, शंभु, कहि काम-नसावन।
सती संग, शिव, जात, उजागर *पुलकित,फिरिफिरिदयाकेसागर॥
संकर-दसा, 'सती' यह देखी * उपजी मन संदेह बिसेखी।
सतीः—जग के-ईश्वर!सबजगाविनवत *सुर,नर,मुनि,सब,सीस नवावत॥
करत, राज-पुत्रन, परनामा * कहि "सच्चिदानन्द, परधामा"।
भये मगन, छवि-तासु, विलोकी * रुकत, जिय की प्रीति,न, रोकी॥
दोहाः—बृह्म, जो, जन्म, इच्छा, कला, माया, भेद ते दूरि।
५१. कैसे, तन धरि, नर भयो, वेद, न पाईं धूरि॥
'बिशनु'जोनर-तन,सुर-हितधारी * सोउ सर्वज्ञ, जैस त्रिपुरारी।
खोजा, मूरख-सम, नहिं नारी * ज्ञानी, लक्ष्मी-पति, असुरारी॥
शिव कर बचन, झूँठ नहिं होई * जानहिं-सब, जानत सब कोई।
कविः—असमंसय,मन,भयो,अपारा * जमत न हृदय, कोउ विचारा॥
कहा, न, कीन्हा प्रगट, भवानी * शिव, अंतरजामी, सब जानी।
शिवः—सुनुहु,सती!तुम,नारि-सुभाऊ * संसय,अस, उर, करइ न काऊ॥
जासु कथा,'कुम्भुज रिषि', गाई * जासु भक्ति, मैं, रिषिहिं, सुनाई।
सोइ, मम इष्ट-देव, रघुवीरा * सेवत, जाहि,सदा, मुनि-धीरा॥
छंदः—जिन्ह ध्यान, मुनि, और, धीर, जोगी, सुद्ध, चित ते, करत हइं।
"नहिं थाह तुम्हरी" वेद कहि, अस, जासु-पाइन, परत हइं॥
सोइ बृह्म, जो, जग-रमेउ, जग-पति, राम भा, माया-धनी।
इच्छा-ते-अपने, भक्त हित, अवतरेउ, आ, रघुकुल-मनी॥
कविः—सो०ः—बृथा, दीन्ह उपदेस, बार, बार, शिव, मुख कहा।
५२. तब, हँसि कहा महेश, जानि प्रबल माया, जिय॥
शिवः—जो, तुम्हरे-मन, अति-संदेहू * क्यों नहिं, जाइ, परीक्षा लेहू।
तब लागि, मैं, बैठा, बर-छाहीं * जब लागि, तुम, ऐहउ मोपाहीं॥
जेहि विधि, जाइ,मोह,भ्रम, भारी *(समुझ ते)कीन्हेउ,जतन-विचारी।
कविः—चली सती, शिव-आज्ञा पाई * सोचत जात, करहुँ का, भाई॥

इहां, संभु, मन महँ, अस जाना * सती केर, अब, नहिं कल्याना।
मोरेहु कहे, न, संसय जाहीं ! * रूठा देव, भलाई नाहीं ! ॥
होइ सोइ, जो, लिखा विधाता * को, करि तरक, बढ़ावहिबाता।
असकहि, लागि जपन,हरि-नामा * गई 'सती', जहँ, प्रभु सुख-धामा॥
दोहाः—फिर, फिर, हृदय, विचार करि, धरि सीता कर रूप।
५३ सोइ मग, बैठी जाइ के, जेहि आवत, नर-भूप॥
कपट-रूप, सब, लषन, निहारा * भा, हृदय, संदेह अपारा।
कहि न सकत कछु, अति गंभीरा * प्रभु-प्रताप, जानत, मति-धीरा॥
सती-कपट, जाना, सुर-स्वामी * सब-देखत, जो, अंतर-जामी।
सुमिरे जाहि, मिटत अज्ञाना * सोइ सर्वज्ञ, राम, भगवाना॥
सती, कीन्ह चह, तहूँ, छिपाऊ * देखहु, नारि-सुभाउ-प्रभाऊ।
माया-बल, निज, हृदय, विचारी * हँसे, कहा अस, बानी-प्यारी॥
जोरि हाथ, प्रभु, कीन्ह प्रनामू * पिता कर, अपना, कहि नामू।
रामः—छांड़े शम्भू, कहां भवानी ? * फिरत, अकेली, बन, कह ठानी॥
कविः—दोहा—गूढ़, और, कोमल बचन, सुनि, उपजा सँकोच।
५४. मन मँह, डर, सोचत-भई, चली, (शिव पहँ जिय-सोच)॥
सतीः—मैं, संकर कर कहा, न माना * निज अज्ञान, न, प्रभु, पहिचाना।
काहिहउँ कहा, जाइ, सिव पाहीं * भारी-जरन, जरत, मन, माहीं॥
कविः—जाना, राम, सती-दुख-पावा * निज-प्रभाउ, कछु, खोलि, दिखावा।
देखा, सती, खेल, मग जाता * आगे, सिय, राम, और भ्राता॥
पाछे, चितवत हू, प्रभु-देखा * सहित, लषन सिय, सुंदर वेषा।
जँह चितवत, देखत रघुवरहीं * चतुर, सिद्ध, मुनि, पूजा करहीं॥
सिव, बृह्मा, और, विष्णु, अनेका * देख बड़े, एक ते, एका।
बंदहिं चरन, करत प्रभु-सेवा * वेष-अनेक, दीख, सब देवा॥
दोहाः—'सरस्वती', और, 'लक्ष्मी', देखीं, 'सती', अनेक।
५५. जेहि की, जो स्त्री रही, धरे, तेहि-कर-वेष॥

जहँ, जहँ, रघुपति, देखे जेते * सुर देखे, शक्तिन -संग, तेते ।
चर, और, अचर, जीव, संसारा * देखे, सबहिं, अनेक प्रकारा ॥
पूजत राम, देव, बहु - बेषा * राम-रूप, पर, एकहिं, देखा ।
देखे, तौ, रघुपति बहुतेरे * रूप-राम-सिय, दुइ नहिं, हेरे ॥
सोइ राम, सोइ लषन, जानकी * डरी सती, सब-एक-सान-की ।
मन कांपा, तन की सुधि नाहीं * मूंदि नयन, बैठीं मग माहीं ॥
फिर, जब देखा, नयन उघारी * कछू न देखा, सती, विचारी ।
फिर, फिर, नाइ सीस, पद-रामा * चली, सती, सकुचत, सिव-धामा ॥

दोहाः—पहुंची, सिव के तीर, जब, हँसि पूँछी कुसलात ।
५६. लीन्ह परीक्षा, कौन विधि, सती ! सत्य कहु बात ??

कविः—सती, समुझि, रघुवीर-प्रभाऊ * डर-बस, सिवसन, कीन्हछिपाऊ ।
सतीः—कछुन परीछा, लीन्ह गोसांई * कीन्ह प्रनाम, तुम्हारिहि-नाईं ॥
जो, तुम कहा, सो, झूँठ न होई * मन, विस्वास, मोर, अस होई ।
कविः—तब, संकर, देखा, धरि ध्याना * कीन्हा-चरित, सती, सब जाना ॥
'राम की माया', कहि, सिर नावा * लीन्ह, सती, जेहि, झूँठ-कहावा ।
हरि-इच्छा, भावी बलवाना ! * हृदय, बिचारत, सँभु, सुजाना ॥
"धरेउ सती, सीता कर वेखा" * भा, सिव-हृदय, बिषाद, विसेखा ।
सिवः—जो, अब करउँ, सतीसनप्रीती * मिटइ भक्ति, और, होय अनीती ॥

दोहाः—सती पवित्र, न जात तजि, करहुँ प्रेम, तौ पाप ।
५७. मुख ते, कहत न, सिव, कछू, हृदय, अधिक - संताप ॥

कविः—तब, संकर, प्रभु-पद, सिरनावा * सुमिरतराम, हृदय, अस आवा ।
"यह तन, भेंट, सती-सँग, नाहीं" * अस संकल्प, कीन्ह, मन माहीं ॥
अस विचारि, सँकर, मति-धीरा * चले भवन, सुमिरत रघुवीरा ।
बानीः—चलत, अकास, भई, अस, बानी * "जयसिव" "एकीभगतीजानी" ॥
"असप्रन, तुम्ह बिन, करइकोआना * भगती-समरथ, तुम भगवाना" ।
कविः—सती, हृदय, सुनिबानी, सोचा * पूँछा, सिवहिं, किये सँकोचा ॥

सतीः—कहप्रनकीन्हा?कहउकृपाला * सत्य-धाम, तुम दीन-दयाला।
कविः—बहुत,बहुत,पूछा, सिव काहीं * कीन्ह न सिव,कछु,हां,कै,नाहीं॥
दोहाः—गईं, सती, हृदय समुझि, "सब-जानत, गे जानि।
"कीन्ह कपट, मैं, सँभु-सन, नारि - जन्म - नादान"॥
कविः—सो०:-जल, मिलि-दूध, बिकाइ, प्रीति-रीति, देखहु, भला!
५८. अलग होइ, रस जाइ, कपट-खटाई, परत ही!!
हृदय, सोच,समुझत निज-करनी * चिंता-बहुत, जात नहिं बरनी।
कृपा-सिंधु सिव, अति-गँभीरा * कही, खुलासा,नहिं, तकसीरा॥
देखा, सिव-रुख-फिरा, भवानी *"तजापती मोहिं",जियअकुलानी।
अपन खता, कछु, कहा न जाई * जरत, अवा, जनु, उर,दुख-दाई॥
सती-सोच-बस, जब,सिव जाना * कथा, सुनावत,सुख-हित,नाना।
कहत, राह भरि, अस, इतिहासा * विस्व-नाथ, पहुँचे, कैलासा॥
तहँ,फिर,सँभु,समुझि, प्रनआपन * बैठे, बर-तट, करि पद्मासन।
धरेउ, सुभाविक-रूप, सँभारा * लागि समाधि, अखंड,अपारा॥
दोहाः—सती, बसत - कैलास, तब, अधिक सोच,मनमाहिं।
५९. मरम,न,दुखकर,चीन्ह कोउ, जुग-सम, सब दिन जाहिं॥
दिन, दिन, भयो-शोच, मन भारी * 'कब, जैहउँ, दुख-सागर-पारी!'
सतीः—कीन्ह निरादर, मैं, भगवाना * वचन-पती, फिर, झूँठा जाना॥
सो फल, मोहिं, विधाता दीन्हा * जो कछु उचित रहा, सो कीन्हा।
बिधिना! पर, अब, उचित न तोही * संकर-रूठि, जियावइ मोही॥
कहि न जात, कछु, हृदय-गलानी * सुमिरि राम, अस कहा सयानी।
तुम, प्रभु, दीन-दयाल, कहावत * मटत दुख, श्रम, वेद बतावत॥
तौ, मैं, विनय करऊँ, कर जोरी * छूटइ, बेग, देह, यह, मोरी।
शिव-कर चरन, जो, होइ सनेहू * होइ सत्य, मन ते, वृत एहू॥
दोहाः—तौ, सब-दरसी! सुनिय, प्रभू! करहु, सो, बेग, उपाइ।
६० विन-श्रम-के, होवइ मरन, बिपति औ दुःख नसाइ॥

कविः-दुखितहोत,अस,दक्ष-कुमारी ❋ कहि न जात, दारुन दुख भारी।
बीते, बरस, हजार-सतासी ❋ तजी समाधी, शिव, अविनासी ॥
राम-नाम, सिव, सुमिरन लागे ❋ जाना सती, जगत-पति-जागे।
जाय, संभु-पद-वंदन कीन्हा ❋ तिन्ह,सनमुख,सुभ-आसन दीन्हा॥
लगे कहन, हरि-कथा रसाला ❋ 'दक्ष' प्रजापति भे तेहि—काला।
देखा, बृह्मा, जब, सब-लाइक ❋ कीन्हा, 'दक्ष', प्रजापति, नाइक॥
पदवी, बड़ी, 'दक्ष', जब पाई ❋ भा अभिमान, न हृदय समाई।
नहिं,कोउ,अस जन्मा,जग माहीं ❋ प्रभुता पाइ, जाहि, मद नाहीं॥

दोहाः—'दक्ष', मुनिन, बुलवाइ, तब, यज्ञ करावन लागि।
६१. न्योते सब सुर, जे रहे, अधिकारी-यग-भाग ॥

किन्नर, नाग, सिद्ध, गंधर्वा ❋ त्रिन-सहित, चले, सुर, सर्वा।
बृह्मा-विष्णू ,सिव - कहं - छांड़ि ❋ सजे विमान, गये, सुर, सारे॥
देखेउ, सतीं, अकाश, विमाना ❋ चले जात, सुंदर, विधि नाना।
चलीं जात, सुर-नारी, गावत ❋ कोयल-सम,मुनि-ध्यान छुटावत॥
सती पूंछि, सो, कहा, बखानी ❋ पिता-जज्ञ, सुनि, कछु हर्षानी।
आज्ञा देहिं, नाथ, जो काहि के ❋ यही बहाने, रहुं, कछु, मयके॥
पति-कर-त्याग,हृदय,दुख भारी ❋ कहत न, आपन - दोस विचारी।
बोली, सती, मनोहर- बानी ❋ उर, संकोच - प्रेम-रस - सानी॥

सतीः—दोहाः—पिता के घर, उतसव बड़ा, जो, प्रभु ! आज्ञा होइ।
६२. दया-के-सागर ! जाउं, मैं, सादर, देखन सोइ॥

सिवः—ठीक कहा, मोरेहु-मन-भावा ❋ बुरा कीन्ह, नहिं न्योत पठावा।
सब, बहिनी-तुम, 'दक्ष' बुलाई ❋ हमरे बैर, तुमहिं बिसराई॥
ब्रह्म-सभा, हम सन, दुख माना ❋ अबलगि,करत निरादर, जाना।
बिन बुलाये, जो, जाउ, भवानी ❋ रहइ न सील, सनेह, न कानी॥
मित्र, प्रभू, और, गुरू पिता-घर ❋ विन बुलाये, जाये हूँ, नहिं - डर।
बैर, जहाँ, पर, मानइ कोई ❋ तहाँ, गये, कल्यान-न-होई॥

कविः—बहुत भाँति, संकर समुझावा * भावी-बस, कछु ज्ञान न आवा ।
सिवः—कह सिव, जाहु जो, विना बुलाये * भला नाहिं, औरु, मोहि न भाये ॥
कविः—दोहाः—करि देखा, सो, जतन, बहु, रहत न 'दक्ष-कुमारि' ।
६३. कीन्हे, सेवक संग, भल, विदा कीन्ह, त्रिपुरार ॥
पिता-भवन, जब गई भवानी * डरत-दच्छ', नहिं, कोउ, सनमानी ।
आदर ते, भेंटी, इक, माता * बहिनी, सकल, मिलीं मुसुकाता ॥
बाप, न कछु पूँछी कुसलाता * देखि-सती, सब, जरिगे, गाता ।
देखा भाग-सभन, यग, लागा * दीखि न, कहूं, संभु-कर-भागा ॥
तब, चित्त-चढ़ेउ, जो, सँकर कहेऊ * पती-निरादर लखि, उर जरेऊ ।
पती-विरह-दुख, अस, नहिं व्यापा * जस, यह, घोर, भयो संतापा ॥
अनि-अनि-भांति, दुःख, जग, नाना * जाति-निरादर-दुख बलवाना ।
समुझिसो, सतीहिं, भयो अतिक्रोधा * सती-मात, बहु-भांति, प्रबोधा ॥
दोहाः—शिव निंदा, नहिं जात सहि, हृदय, न होत, प्रबोध ।
६४. सकल सभा कहँ, झड़कि कर, कहे बचन, भरि क्रोध ॥
सतीः-सुनहु, सभा के, सकल मुनिंदा * कीन्ह, सुनी, जिन जिन शिव-निंदा ।
तेहि कर फल, मिलिहइ, सब काहू * भल, पछितइहै, मोर-पिताहू ॥
निंदा, शिव, विष्णू, संतन की * सुनइ, तहां, करतूति-सज्जन-की ।
काटइ जीभ-तासु, बनि आवइ * मूंदि कान नाहिं तौ, उठि जावइ ॥
संभू, जग - आतमा, पुरारी * जगत-पिता, सबके हितकारी ।
मूढ़ पिता, निंदत हैं, तेही ! * तिन-के - अंस - ते, जन्मी-देही ॥
तजहुं, तुरत, अस, मनमहँ जाना * धरि उर, चन्द्र - दिये-भगवाना ।
कविः-जोग-अग्नि, अस कहि, तनजारा * परा, यज्ञ महँ, हाहाकारा ॥
दोहा—सती-मरन, सुनि, संभु-गण, यज्ञ, विगारन, लागि ।
६५ यज्ञ बिगारत, देखि 'भृगु', रक्षा कीन्ह, तड़ाग ॥
समाचार, जब, सँकर पाये * 'वीर-भद्र', करि क्रोध, पठाये ।
यज्ञ-विध्वंस, जाइ, तिन कीन्हा * सब देवतन, उचित फल दीन्हा ॥

भई दच्छ-गति जग मँह सोई * सिव वैरी की जस कछु होई ।
यह इतहास, सकल जग जाना * ताते, मैं, संछेप, बखाना ॥
सती, मरत, हरि सन, वर मांगा * जनम,जनम, शिव-पद-अनुरागा ।
तेहि कारन, 'हिमवान्',के घर जा * पायो, 'पार्वती'-तन, गिरिजा ॥
जब ते, 'उमा', नये-घर, आई * सकल, सिद्धि, संपति, तहँ छाई ।
कीन्ह, मुनिन, गिरि पर स्थाना * उचित वास,दीन्हा, 'हिमवाना' ॥

दोहाः—रहे, फूलि, फलि, वृक्ष सब, सदा, अनेक प्रकार ।
६६. रतन - जवाहिर - खानि हू, प्रगटीं, गिरि - पर, भार ॥

नदियां, लइ-पवित्र-जल, बहहीं * मृग, पच्छी, भंवरा, सुख, रहहीं ।
बैर - सुभाविक, जीवन त्यागा * गिरिपर,सकल,करहिं अनुरागा॥
गिरि सोहत, गिरिजा-घर-आये * जस, नर, राम-भक्ति-कहँ-पाये ।
नित-नये-मंगल, भे, घर तासू * गावत, वृह्मा-अस, जस जासू ॥
'नारद', समाचार, सब पाये * साधारन,गिरि पर,चलि आये ।
गिरि-राजा, बहु आदर कीन्हा * पाउँ धोइ, सुभ आसन, दीन्हा ॥
नारि-सहित,मुनि-पद, सिर नावा * चरनन-जल, घर माँ, छिरकावा ।
अपन सुभाग, बहुत, 'हिम'बरना * गिरिजहिं टेरि गिरायो, चरना ॥

'हिम':—दोहाः—तीन-काल, सब-जानि, तुम, गति सब जगह तुम्हार ।
६७. गिरिजा के, सब, दोष, गुन, हे मुनि ! कहउ, बिचारि ॥

नारदः—कही,गूढ़,हँसि,मुनि,मिठबानी* कन्या तुम्हरी, सब-गुन-खानी !
सुंदर, और, सुसील, सयानी*नाम,"उमा","अंबिका","भवानी"
सब - लच्छन - ते-भरी, कुमारी * सदा, होइ, अपने-पति-प्यारी ।
सदा, अचल, यह कर अहिवाता * यह ते, जस पैहहिं, पितु,माता ॥
सब पूजहिं, यह कां, जग माहीं * मिलइ-न,फल,सेवत,कोउ,नाहीं ।
यह कर नाम, सुमिरि, संसारा * चढ़हिं नारि,पतिवृत-तलवारा ॥
(नीके-लच्छन)-(सुता-तुम्हारी) * सुनहु, दोस, जो कछु, दुइ चारी ।
गुन-ते-रहित, पिता, ना, माता * उदासीन, भ्रम-पास-न-आता ॥

दोहाः—काम - रहित, जोगी, जटा - धारी, नंगे - वेष।
६८. अस दूलह, यह कहँ, मिली, परी, हाथ, अस रेख॥

कविः—मुनि की बानी, साँची जानी * दुख, पितु, मात, उमा, हर्षानी।
मुनि-माति, भेद न जानि, विचारी * एक दसा थी, सभुफ थी न्यारी॥
सकलसखी, गिरिजा, गिरि, "मयना" * पुलकित भये, भरे, जल, नयना।
देव-रिषी की, झूँठ न, भाखा * उमा, सोबचन, हृदय, धरिराखा॥
उपजा, शिव-पद-कमल-सनेहू * कस मिलिहइं, भा, मन, सँदेहू।
जानि कुअवसर, प्रीति छिपाई * सखिन-गोद, बैठी, फिर, जाई॥
झूँठ न होइ, देव - रिषि - बानी * सखी, मात, पितु, सोच, गलानी॥
हिमः-धरि, उर, धीर, कहा 'गिरिराऊ' * नाथ ! बतावहु, कछु, उपाऊ॥

नारदः—दोहाः—कहा मुनी, 'हिमवंत'! सुनु, जो, विधि लिखा, लिलार।
६६. दानव, सुर, नर, नाग, मुनि, कोउ न मेटन हार॥

तहूँ, कहत, मैं, एक-उपाई * होइ, करइ जो, दैव, सहाई!।
जस बर, मैं बरना, तुम पाहीं * मिलइ, तैस, कछु संसय नाहीं॥
जे, जे, बर के, दोस बखाने * शिव मां, सो मैं, सब पहिचाने।
जो, विवाह संकर-सँग होई * कहइ, दोस-हू, गुन, सब कोई॥
सेष-सेज, विषनू, जस, सोवत * तिन कहँ, दोस, न पंडित रोवत।
सूरज, अग्नि, सबहिं-रस, खाहीं * बुरा कहत, तिन्हकहँ, कोउ, नाहीं॥
छूत, पवित्र, सबहिं-जल, बहहीं * गंगा, कोउ, अशुद्ध, नाहिं, कहहीं।
समरथ-कहँ, नाहिं-दोस, गोसाईं! * सूरज, अग्नी, गंगा नाईं!॥

दोहाः—करइ, सरीखत - तिन्ह, भला, नर, गरबी, नादान।
७०. परइ, कल्प भरि नरक-मां, जीव, कहां, भगवान!!॥

मदिरा, गंगा - जल - ते - खींची * संत, जभि, कबहूँ-नहिं, सींची।
मिलि, सो, गंग, सुद्ध हुइ जाई * यही भेद, जीव - ईश्वर, भाई!॥
है, सुभाउ-ते, समरथ, शिव जी * उन्ह ब्याहे, कल्यानहि उपजी।
है, आराधन, कठिन, महेसू * रीझत, पर, जप, किये, कलेसू॥

जो, तप करइ, कुमारि तुम्हारी * सकत, मेटि भावी, त्रिपुरारी।
हैं तौ, बर, अनेक, जग माहीं * यह के जोग, और-बर-नाहीं॥
बर-दाता, भगतन-दुख-नासक * दया-सिंधु, आनद-सुख-दाइक।
चाहा-फल, बिनु-शिव-आराधे * मिलत न,जोग-किये,जप-साधे॥

दोहाः—अस कहि नारद,सुमिरि हरि, गिरिजहिं, दीन्ह असीस।
७१. यह कर, अब, कल्यान हो, संसय तजहु गिरीस!!॥

कविः—ब्रह्म-लोक,अस कहि,मुनि गयऊ * आगे चरित,सुनहु, जस भयेऊ।
मयनाः—कह,'मयना',तब,अवसर जानी * समुझि न पाई,कछु,मुनि-बानी॥
बेटी-जोग, होइ, कुल, घर, वर * करहु विवाह,मोहिं,नहिं, कछु डर।
जो, न होइ, यह, रहइ कुँआरी * कंत! उमा,मोहिं,प्रानन-प्यारी॥
जो न मिला, वर, गिरिजा-जोगू * मूरख, तुमहिं, बतइहहिं लोगू।
करिये, सोचि, विचारि, विवाहू * होइ न, फिर, जी महँ,पछिताऊ॥
कविः—अस कहि,गिरी चरन,धरि सीसा * प्रेम सहित,तब कहा,'गिरीसा'।
हिमः—निकसइ अग्नी चंदा माहीं * नारद-वचन, टरइ,पर, नाहीं!॥

दोहाः—प्रिय! सोच सब,त्यागि कर, सुमिरहु श्री भगवान।
७२. दीन्ह जन्म,जिन, उमहिं,सो, सोइ, करिहैं कल्यान॥

अब जो, तुमहिं, उमा पर, नेहू * तौ, अस, जाइ, सिखावन देहू।
करइ सो तप, जेहि मिलइं महेसू * और-उपाइ, न मिटइ कलेसू॥
कारन-सार-भरे, मुनि-वचना! * गुनन-खानि,शिवजी,कछु डर ना।
अस विचारि, त्यागहु मन-संका * लगइ न संकर, कोउ कलंका॥
कविः—सुनि पति-वचन,हर्षि,मन माहीं * गई, तुरत, उठि, गिरिजा पाहीं।
उमहिं-विलोकि, नयन, जल छायो * प्रेम-सहित, गोदी, बैठायो॥
बारंबार, लेत, उर लाई * गद-गद-कंठ, न, कछु,कहि जाई।
जगत-मात, सर्वज्ञ, भवानी * कहि कोमल, सुखदाता बानी॥

उमाः—दोहाः—सुनहु मात! मैं, दीख अस, सपन, सुनाऊँ, तोहि।
७३. गोरे, सुंदर विप्र, कोउ, अस उपदेसत मोहिं॥

सपनाः—"करहु जाय, तप, 'सैल-कुमारी'! ❋ नारद कहा, सो, सत्य विचारी ।
यह मत, मात-पितहु-कहँ, भावइ ❋ दइ सुख, तप, दुख-दोस-मिटावइ ॥
तप-बल, 'बिधि', संसार रचावत ❋ तप-बल, 'विष्णू', जग कहँ पालत ।
तप - बल शँभू, सबहिं सँहारत ❋ तप-बल, पृथ्वी, 'सेष' उठावत ॥
तप - बल, सृष्टी थमी, भवानी ❋ करहु जाय तप, अस जिय जानी।।"
कविः—सुनत बचन, डरपी महतारी ❋ सपन सुनायो 'हिमहिं', पुकारी ॥
उमा, मात, पितु कहँ, समुझाई ❋ चली, करन तप मन हर्षाई ।
कुल के लोग, पिता, और माता ❋ भये बिकल, निकसत-नहिं-बाता ॥
दोहाः—"वेदसिरा" मुनि, आइ, तब, सबहिं, कहा, समुझाइ ।
७४. पारवती - महिमा सुनत, गये समुझि सब भाइ ॥
धरि, उर, उमा, प्रान-पति-चरना ❋ बन महँ जाइ, लागि, तप करना ।
अति-कोमल-तन, नहिं-तप-जोगू ❋ पति-पद सुमिरि, तजेउ सब भोगू ॥
उपजत, नित्य-नयो, अनुरागा ❋ तन भुलानि, तप महँ, मन लागा ।
बरस हजार, रही फल खाये ❋ साग खाइ, सौ बरस गँवाये ॥
खाइ हवा, पी जल, कछु दिन रहि ❋ कठिन उपास, कछु कदिन, सो लहि ।
बेल - पात, भुइं - डारे, सूखे ❋ तीन-हजार - बरस, खा, रूखे ॥
छाँड़ि दिये, फिर, सूखेहु परना ❋ उमा-नाम, तब परेउ "अपरना" ।
देखि, उमा - तप - छीन-सरीरा ❋ भइ अकास - बानी गँभीरा ॥
बानीः—दोहाः—"भयो, मनोरथ, सुफल, तुम, सुनु गिरिराज-कुमारि" ।
७५. छाँड़हु दुःख, कलेस, तुम, अब मिलिहइँ त्रिपुरारि" ॥
"अस तप, काहु न कीन्ह भवानी! ❋ भये, अनेक धीर, मुनि, ज्ञानी ।
"हृदय धरेहु, बृह्म की बानी ! ❋ सदा पवित्र, सत्य, सो जानी ॥
"आवहिं पिता, बुलावन, जब हीं ❋ छाँडे हठ, घर जायो, तब हीं ।
"सात रिषी, जब, तुम कहँ, मिलिहीं ❋ तब, अकास-बानी सिधि करिहीं" ॥
कविः—सुनि, अकास, अस-बृह्मा-बानी ❋ तन पुलकेउ, गिरिजा हर्षानी ।
उमा-चरित, सुंदर, मैं गावा ❋ सुनहु, शँभु कर, चरित, सुहावा ॥

जय ते, सती, जाइ, तन त्यागा ❊ तब ते,शिव-मन भयो विरागा ।
जपत, सदा, रघुनायक-नामा ❊ जहँ,तहँ,सुनहिं राम-गुन-ग्रामा ॥
दोहाः—काम-मोह - मद - रहित जे, चित - अनंद, सुख-धाम ।
७६. पृथ्वी, विचरत, हरि हिय, सकल - लोक - विस्राम ॥
कहुँ मुनिन्ह, उपदेसहिं, ज्ञानी ❊ कहुँ, राम-गुन, करत बखानी ।
काम-रहित - होतहु, भगवाना ❊ भगत - सती - छूटे, अकुलाना ॥
यह विधि, काल,बहुत, गा,बीती ❊ नित नइ, होत, राम-पद-प्रीती ।
नेम, प्रेम, सँकर कर, देखा ❊ अमिट, हृदय, भगती की रेखा ॥
प्रगटे राम, समर्थ, कृपाला ❊ रूप, सील, और, तेज-बिसाला ।
बहु प्रकार, सँकरहिं सराहा❊ तुम-बिन,अस,प्रन,कौननिबाहा"!॥
बहु विधि,राम,शिवहिं समुझावा ❊ पारबती - कर - जनम, सुनावा ।
अति पवित्र, गिरजा की करनी ❊ एक, एक, कहि,रघुपति बरनी ॥
रामः—दोहाः—अब, बिनती मोरी, सुनहु, जो मो पर, शिव ! नेहु ।
७७. जाइ, बियाहउ, उमा कहँ, यह मोहिं, मांगे, देहु ॥
शिवः—कह,अस,उचित,मोहिं तौ,नाहीं ❊ नाथ-बचन, मेटे, नहिं जाहीं ! ।
करइ, धरे सिर, कहा - तुम्हारा ❊ परम धरम,यहि,नाथ ! हमारा ॥
मात, पिता, गुरु, प्रभु की बानी ❊ बिन विचार, मानइ,सुभ जानी ।
तुम, सब भांति, परम हितकारी ❊ आज्ञा,सिर पर,नाथ ! तुम्हारी ॥
भा सनतोष, राम, सुनि बचना ❊ भक्ति,ज्ञान,जनु,धरम की रचना ।
रामः—कह प्रभु,सिव ! तुम्हार प्रन रहेऊ❊अब,उर राखेउ,जो,हम कहेऊ! ॥
कविः—अंतर-धान भये,अस कहि के ❊ सो मूरति, शिव-उर रही बनि के।
सप्त रिषी, तेहि अवसर, आये ❊ बोले, शिव,अस बचन सुहाये ॥
शिवः—दोहाः—पारवती पहँ, जाइ, तुम, प्रेम - परीछा लेहु ।
७८. 'हिम' कहँ,लौटायो, भवन, दूर करेउ, संदेहु ॥
कविः—तब,रिषि,तुरत,गौरपहँ,आये ❊ देखि दसा,मन महँ,दुख पाये ।
रिषिन, उमा, देखी, तहँ, कैसी ❊ मनहु, तपस्या - मूरति, जैसी ॥

सप्त-रिषिः–बोले,मुनि,सुनु,सैल-कुमारी* करहु, कौन कारन, तप भारी ?
केहि कर आराधन, कह चहहू, * साँच भेद, क्यों नाहीं कहहू ?
कविः–सुनत,रिषिनके बचन,भवानी * बोली, गूढ़, मनोहर, बानी।
उमाः–कहतमरम.मन,अतिसकुचाई * हँसिहउ, तुम, सुनि-मूरखताई॥
विचला मन, नाहिं मनत, मनावा * जल पर, चहत, दिवाल उठावा।
नारद-कहा, सत्य सोइ जाना * बिन पँखन, मैं. चहत, उड़ाना॥
विना-समुझि-की, बात हमारी * चाहत पती, मिलइं त्रिपुरारी !
सप्त-रिषिः-दोहाः–मुनिन कहा, हँसि, कौन हौ, आखिर, देह - पहार।
७६. नारद - कर - उपदेस, घर, कौन, न दीन्ह उजारि॥
नारद, दच्छ - सुतन्ह, उपदेसा * लौटे, घर, नाहिं, बन-ही, देखा।
"चित्र-केत" कर घर, उन घाला * "हिरनकशिप"कर हू,सोइहाला॥
नारद-सीख, सुने, नर नारी * अवसि,छुटत-घर, होत-भिखारी।
मन-कपटी, तन, सजन-समाना * चाहत, 'नारद'-सबहिं-बनाना॥
नारद - बचन मानि, तुम, बाई ! * पति-मलीन, चाहत,वर, ब्याही।
कुल, घर, लाज, न,गुन, तन-ब्याला * नगिन, भयंकर, खपरिन-माला॥
कहहु, कौन सुख, अस बर पाये ! * भल भुलानि, ठग-के - बौराये।
कहे - पंच - तौ, 'सती' बियाही * छांड़ि, दीन्ह,तेहि कहँ,मरिवाई॥
दोहाः–अब, सुख सोवत, बे-फिकिर, भीख-मांगि, तौ, खाहिं।
८०. रहत अकेल, सुभाउ - ते, तेहि, कस नारि सुहाइं !!॥
अजहूँ, मानहु, कहा - हमारा * हम, तुम कहँ,वर नीक. विचारा!।
सुख-दायक, सुभ, सुन्दर सीला * गावत वेद, जासु जस-लीला॥
दोस - रहित, सब-गुनन-निधाना * लछमी-पति, बैकुंठ, ठिकाना।
अस वर, तुमहिं, मिलाउब,आनी! * सुनत हँसी, अस, कहा, भवानी॥
उमाः-कहा,सत्य,"पत्थर-उपजा-मन"* पत्थर-हठ, न छुटइ, छूटइ तन!
सोना हू, पाथर ते उपजत * जरत, परंतु, सुभाउ न छाँड़त॥
नारद-बचन, न, कबहूं, तजऊं * बसइ भवन, उजरइ नाहिं, डरऊँ।

गुरु के वचन,जो, सांच न मानइ * नहिंसुख-सिद्धि,सपनसोपावइ ॥

दोहाः—शिव, अवगुन-के घर सही, विष्णु, सकल - गुन-धाम ।

८१. जेहि-कर-मन,रम, जाहि-सन, तेहि, ताहि सन काम ॥

मिलते. पहिले, तुमहिं, मुनीसा ! * मनतेउं सिख-तुम्हार, धरिसीसा ।
अब, मैं, जन्म, सँभु-हित, हारा * करइ कौन, गुन-दोस-विचारा ॥
जो, हठ ही, तुम्हरे मन, भाये * रहि न सकत, विनब्याह-लगाये ।
खिलवारिन, चही, आलस, नाहीं * वर,कन्या, अनेक, जग माहीं ॥
कोटि-जनम, यही रगरि हमारी * बरउं,तो, शिव,नहिं,रहौंकुआँरी ।
तजउं न, नारद - कर उपदेसू * कहइं, आय, सौ-बार, 'महेसू' ॥
परत पाउं, मैं, कह, जगदँबा * जाहु घरइ, अब, होत बिलँबा ।
कविः—देखि प्रेम,बोले,मुनि, ज्ञानी * "जय,जय,जगदंबिका भवानी" ॥

रिषिः—दोहाः—तूः माया, भगवानः शिव, शिवः जग-पिता, तुः मात ।

८२. नाइ चरन सिर, मुनि चले, फिर,फिर, हर्षत जात ॥

कविः—जाइ,मुनिन, हिमवंत पठाये * करि विनती,गिरिजहिं, घर लाये ।
सप्त-रिषी, फिर, शिव पहँ, जाई * उमा-कथा, सब, गाइ, सुनाई ॥
सुनत प्रेम, सो मग्न भये, मन * भवन गये, अपने, सब मुनि जन ।

(मदन-दहन)

करि,मन,थिर,फिर,शँभु, सुजाना * लगे करन, रघुनायक - ध्याना ।
"तारक"असुर, भयो, तेहि काला * भुज-प्रताप, वल, तेज बिसाला ॥
लोक, लोक-पति, तेहि, सब जीते * देवन-सुख, संपति, सब बीते ।
अजर, अमर, वह, जीति न जाई * हारे सुर, सब, करे - लराई ॥
गे बृह्मा पहँ, कीन्ह पुकारा * दुखी - देव, भगवान, निहारा ।

बृह्माः-दोहाः—सब सन कहा बुझाइ अस, "दैत्य - मरन तब होइ ।

८३. शिव-के अंस-ते, सुत भयो, जीतहि, रन महँ, सोइ ॥"

मोर-कहा, सुनि, करहु उपाई * बनइ काम, हो ईस सहाई ।

सती, यज्ञ महँ, तन, तजि दीन्हा * जनम, हिमांचल-घर, जा, लीन्हा ॥
शिव-कारन, कीन्हा तप, गाढ़ा * लीन्ही, शिव, समाधि, सब-छांड़ा।
यह मां, गड़-बड़, दीखत भारी * तहूँ, बात इक, सुनहु, हमारी ॥
जाइ, 'काम', शिव-पास, पठावइ * सो, शिवकरमन, पहुँचि, डिगावइ।
तब, हम, जाइ, शिवहिं सिर नाउब * ठेलि ठालि के, व्याह कराउब ॥
यह विधि, भले, देव-हित होई * मति; यह नीक, कहा सब कोई।
'काम-देव', करि-विनय, पुकारी * मीन-ध्वजा; पँच-बाना-धारी ॥

दोहा:—देवन, दुख, अपना-कहा, सुनि, मन, कीन्ह विचार।
८४. हँसे, कहा, शिव-ते-भिरे, "कुसल न होइ हमार" ॥

काम:—तहूं, करउं, मैं, काज तुम्हारा * परम-धरम है, पर-उपकारा।
पर-हित-कारन, तजइ जो देही * संत प्रसंसहिं, नित ही, तेही ॥
कवि:-चलेउ, प्रनाम, सभनकहँ, कीन्हे * फूल-धनुष, सँगी, सँग-लीन्हे।
चलत, काम, अस हृदय, विचारा * अवसि-बैर-शिव, "मरन-हमारा" ॥
तब, आपन-प्रभाउ, फैलावा * सब जग कहँ, अपने-बस लावा।
कामदेव, जब, क्रोधहिं लाधा * वेद-धर्म की गइ मर्यादा ॥
{ बृह्मचर्य; बृत, संजम, नाना * धीरज, धर्म, ज्ञान, विज्ञाना।
सदाचार, जप, जोग, विरागा * कटक-विवेक, डरा, और भागा ॥

छंद:—लै, ज्ञान, साथिन, भागि, जब, रन, 'काम'-के-जोधा, सुरे।
सदग्रंथ, जनु, परवत, की खोहन, जाइ, तेहि अवसर दुरे ॥
कह होइ, अब, करतार ! को रखवार ! जग, हलचल परा।
दुइ-मूड़ केहि के हेत, करि-रिसि, 'काम', धनु, हाथन, धरा !!

दोहा:—जीव, जगत के, चर, अचर, नर, नारिहु, जिन्ह नाम।
८५. सब, आपन-मर्याद-तजि, भये, तुरत, बस-काम ॥

भई, 'काम-इच्छा, मन-माहीं * बेल-मिलन, साखा झुकि जाहीं।
नदीं, उमड़ि, चलि, सागर-ओरी * मिलि गइ, ताल-तलैया-जोरी ॥
जड़ की दसा, जहां अस बरनी * कहइ कौन, चेतन की करनी।

पसु, पच्छी, जल-थल-आकासी ❋ समय-भूलि, भे काम-के-दासी ॥
अँधराना जग, काम-सुहाती ❋ गिनहिं-न; चक-चकवा, दिनराती।
देव, दैत्य, नर, किन्नर, ब्याला ❋ प्रेत, पिसाच, भूत, बेताला ॥
इनकी दसा, न कहउं, बखानी ❋ सदा - काम - के - चेरे - जानी ।
सिद्ध, बिरागी, जोगी, मुनिवर ❋ छुटा, जोग, सब, काम-के-बस-परि ॥

छंदः—भये काम-बस, तपसी, औ जोगी, जीव, कोटिन, को कहे ।
जिन्ह, जगत, देखा, ब्रह्म-जनु, सो, नारी-जनु, देखत-भये ॥
नारिन, पुरुप, पुरुपनहिं, नारी-रूप, सब जग, मन, जँचा ।
ब्रह्मांड-भीतर, दुइ-घरी-महँ, काम, अस कौ तुकरचा ॥

सो०ः—धरा न, काहू, धीर, लीन्ह, 'काम', मन - सभन - हरि ।
८६. जिन्ह, रक्षा रघुबीर, रहे, बचे, तेहि काल, सोइ ॥

रहा, घरी दुइ, इही तमासा ❋ जबलागि, काम, पहुँचि, शिव-पासा ।
कामदेव, लखि शिव, सकुचावा ❋ रहा जैस जग, तस, हुइ आवा ॥
भये, तुरत, जग-जीव सुखारे ❋ उतरा नसा, मनहु, मतवारे ।
देखि शंभु, डरपेउ, मन मारे ❋ पक्के, नहिं, बस - आवन-हारे ॥
लौटे, लाज, कही नहिं जाई ❋ मरन ठानि, अस रचा उपाई ।
दीन्हो, रितु-बसंत, जग, छाई ❋ फले वृच्छ, नइ कोंपल आई ॥
झील, नदी, बन, बाग, सुहाई ❋ सब दिस, जनु, सुन्दरता छाई ।
प्रेम, जहां, तहां, उमडन लागा ❋ काम, मरिन-के-हू-मन, जागा ॥

छंदः— जागत, मरिन-हू, काम, मन तौ, बन की सोभा, कस कही ।
सीतल, सुगंधित, पवन, संगिनि-काम-अगिनी, चलि बही ॥
तालन, कमल खिलि, बैठि भँवरा, झुंड, गूँजहिं भन्न भन्न ।
बोलत, सुआ, कोयल, औ हंसा, अपछरा, नाचिं छुन्न छुन्न ॥

दोहाः— करि उपाइ कोटिन, गयो, काम, सैन - लिये, हारि ।
८७. डिगी, समाधि न, शंभु की, दीन्ह, क्रोध, तन जारि ॥

देखे आम-की - साख, सयाना ❋ चढ़ा 'काम', तहिपर, खिसिआना ।

पुष्प-धनुष पर, बान चढ़ावा *रिस-करि, तानि, कान-तक, लावा ॥
छाँड़े, कठिन, बान, उर, लागे * छूटि-समाधि, शंभु, तब, जागे ।
शिव के मन, भा, क्रोध, विसेषी * खोलि नयन, चारहु दिस देखी ॥
देखा 'काम' आम-की-पातिन * रिस-ते, तीन लोक, लगे कांपन ।
तब, शिव, तीसर-नयन, उघारा * चितवत, काम', भस्म भा, सारा ॥
हाहाकार, भयो, जग, भारी * डरपे सुर, भे, असुर, सुखारी ।
भोगी, काम-के-सुख-कहँ, रोवत * जोगी, बेखटका-भये, डोलत ॥

छंदः—जोगी, भये बे-फिकिर, "रति", पति-मरन-सुनि मुरछितभई ।
चिल्लात, रोवत, और विलपत, भांति बहु, शिव पहँ गई ॥
करि, प्रेम ते, बिनती, बहुत विधि, जोरि-कर, आगे-भई ।
शिव, शीघ्र-होत-प्रसन्न, दायावान, देखत, अस कही ॥

शिवः—दोहाः—'काम'-की-नारीः'रति', सुनहु, अब पति-नाम "अनंग" ॥
८८. बिनु-तन-के, सब कहँ लगइ, हुइ है, फिर, तुम-संग ॥

जब हुइ है कृष्णा-अवतारा * जादव-बंस, हरन-जग-भारा ।
कृष्ण - पुत्र, हुइ है पति तोरा * मिथ्या, वचन, न जानहु, मोरा ॥
कविः—गई भवन, 'रति', सुनि शिव-वानी* भा जस आगे, कहउं, बखानी ।
देवन, समाचार, सब, पाये * लइ - बृह्मा, वैकुंठ, सिधाये ॥
बृह्मा, विष्णू, सुरन समेता * गये, जहां शिव, कृपा-निकेता ।
अलग, अलग, करि शँभु-बड़ाई * भे प्रसन्न, शिव, अति हर्षाई ॥
शिवः—कृपा-सिंधु कह, वचन-सुहाये * कहउ, देव ! केहि-कारन, आये ?
बृह्माः—बृह्मा कह; तुम, अंतरजामी ! * तहूं, भक्ति-वस, विनवहुं, स्वामी ! ॥

दोहाः—सकल सुरन के हृदय, अस, हे; शिव ! परम उछाहु ।
८९. आंखिन ते, देखा चहीं, नाथ ! तुम्हार-विवाहु ॥

जेहि, देखहिं, उत्सव, भरि लोचन * सोई करहु, 'काम'-मद-मोचन ! ।
जारि'काम' रति'कहँ बर दीन्हा * कृपा-सिंधु, यह, अतिभलकीन्हा ॥
होत,-प्रसन्न, देत - शिक्षा - हू * स्वामी-कर, यह, सहज-सुभाऊ ! ।

पार्वती, तप कीन्ह, अपारा * करहु ताहि, अब, अँगीकारा ॥
सुमिरि,राम-की,सुनि,विधि-बानी * "ऐसहि-होइ",कहा सुख मानी ।
कवि:—लागि बजन, देवतन, नगारे * बरसि फूल, "जय देव" पुकारे ॥
अवसर जानि, सप्त-रिषि, आये * बृह्मा, 'हिम'-के-भवन, पठाये ।
गये, प्रथम, जहँ, रही भवानी * बोले, मधुर-बचन, छल-सानी ॥

रिषि:—दोहा:—कहा हमार, न सुनेउ, तब, नारद - के - उपदेस ।
६० अब, भा झूँठ, तुम्हार-प्रन, जारा - 'काम', 'महेस' ॥

उमा:—सुनि,बोली, मुसुकाय, भवानी * बहुतठीक,मुनि!तुम,अति-ज्ञानी ।
'काम'-जारि, मे,अब,शिव, जोगी * जनु,यह-के-पहिले, रहे भोगी ॥
हमरे-ज्ञान, सदा, शिव, जोगी * का,निंदइ, बिन-जनम, अभोगी ।
जो, सेवा शिव, मैं, अस जानी * प्रीति-समेत,करम, मन, बानी ॥
तौ, जो कछु,मुनि!हम, मन-ठानी * करहिं सत्य, कृपानिधि जानी ।
कहत, शंभु, तुम,'कामहिं' जारा * बड़ी भूल, अस-कहब-तुम्हारा ॥
अग्नि-सुभाउ, आपु, अस जरई * जाड़ा, पास-जाइ - नहिं - सकई ।
जाइ निकट, तौ, अवसि नसावे * कह अचरज,जो,काम,जरिजावे ॥

कवि:—दोहा:—हिय-हर्षे, मुनि, बचन सुनि, देखि प्रीति - विस्वास ।
६१. चले, उमा कहँ, नाइ सिर, गये, हिमाचल-पास ॥

सब बातें, मुनि, दीन्ह सुनाई * जरा काम, सुनि दुख'हिम',काई ।
फेरि, कहेउ, 'रति'-कर-बरदाना * सुनि,'हिमवंत, बहुत सुख माना ॥
हृदय, बिचारि, शंभु - प्रभुताई * पंडित कहँ, 'हिम', लीन्ह बुलाई ।
घरी, नखत,दिन, सुभ, निकसाई * लगन, वेद-विधि, तुरत, धराई ॥
लगन-पत्र, मुनियन कहँ दीन्ही * गहि पद,विनय,'हिमाचल'कीन्ही।
दीन्ही, जा, बृह्मा - कहँ, पाती * बांचत, प्रीति,न,हृदय, समाती ॥
आप बांचि, फिर, सबहिं,सुनाई * सब देवता, रहे हर्षाई ।
बरसत फूल, बजावत बाजा * मंगल-कलस,दसहुं दिस,साजा ॥

दोहाः—लागि सँवारन, सबहि सुर, बाहन और विमान।
६२. सुख - कारी, मंगल - सगुन, करत अपछरा, गान॥

शँभू कर, सब कीन्ह सिंगारा * सांप-मौर, लट-मुकुट सँवारा।
सर्पन-के - कँगन, और बाला * भस्म, अँग, तन, चीता-खाला॥
माथे, चंद्रमा, सिर गंगा * लोचन, तीन, जनेउ, भुजँगा।
मुँह-मँह-विष, खपरिन-की-माला * शिव-कृपालु-कर, वेष कराला॥
डमरू, और त्रिसूल, दोउ हाथन * बैल चढ़े, बाजे लागि बाजन।
सुर-नारीं देखत, मुसुकाहीं * बरलायक-दुलहिनिजग,नाहीं॥
विष्णु, वृह्मा, सब, सुर-भ्राता * चढ़ि असवारी, चले बराता।
देवन - पंगति, रहीं मनोहर * तस, बरात, नाहीं, जैसा-बर॥

विष्णुः—दोहाः—विष्णु हंसे, औ, अस कहा, देखहु ! सब - दिगपाल।
६३. अलग, अलग, टोली करहु, अपनी - अपनी - चाल॥

बर-अनुसार, बरात न, भाई ! * हँसी करइहौ, पर - घर-जाई।
बिष्णु-वचन सुनि, सुर मुसुकाने * करि टोली, भे अलग, सयाने॥
मन-हीं - मन, शँभू, मुसुकाहीं * हरि के बचन हँसी, कछु, नाहीं।
अति-प्रिय-वचन, सुनत, प्रिय-केरे * 'भृगी' भेजि, दूत सब, टेरे॥
शिव-की-आज्ञा-सुनि, गन आये * चरन-कमल-शिव, सीस नवाये।
तरह - तरह-के, वेष, सवारी * हँसे,देखि, तिन कहँ, त्रिपुरारी॥
कोउ, बिन-मुख, कोऊ, बहुतेरे * हाथ - पाउं - बिन, कोउ, घनेरे।
बिना-नयन, बहु-नयन, औ, आँधर * हृष्टि-पुष्टि, कोउ, दूबरि-पातर॥

छंदः—तन-छीन, कोउ, जनु-तोप, कोउ, सुभ-रूप, रूप-असुभ, कोऊ।
भूषन-भयानक, कोउ, खपरी, खून - टपकत, कर धरेऊ॥
गदहा-सुअर - कुत्ता - औ - गीदड़ - मुख, अलेखन-गन चले।
बहु प्रेत, और,पिसाच, जोगिन, जिन, कहइ को, आ, मिले॥

सोरठः—नाचत, गावत, भूत, जस, मन आवत, तस करत।
६४. उलटी, सब-करतूति, बानी, भाखा, कछु अजब॥

जस दूलह, तस, बनी बराता * राह, राह महँ, होत तमासा।
इधर, हिमाचल, मंडफ छायो * कस्म विचित्र,नहिं जात बतायो॥
सब 'परबत', जहँ,जहँ, जग माहीं * छोटे, बड़े,जो, कहि नहिं जाहीं।
वन, सागर, नद्दी, तालाबा * सबहिं,'हिमाचल'न्योतिपठावा॥
जस-इच्छा, तस-ही-तन-धारी * लीन्हें, सँग, परिवार औ नारी।
आये, सकल, 'हिमाचल'-के-घर * गावत मँगल, हृदय-भरि-भरि॥
राखे, 'हिम', बहु घर सँवराये * जथा-जोग, सव-जन, ठहराये।
पुर-की - सोभा, देखि, सुहाई * लागि छोट, बृह्मा - चतुराई॥

छंदः—लगि छोट, बृह्मा चतुरता, अवलोकि पुर-सोभा सही।
वन, बाग,कूप,औ, ताल,नदी, सोहिं कस,कोउ,कस,कही॥
अन-भांति झंडी, और, वन्दनवार, घर, घर, सोहहीं।
नारी, पुरुष, सुन्दर, चतुर, छवि देखि, मुनि-मन मोहहीं॥

दोहाः—जगदंबा - अवतार, जहँ, सो पुर कहा न जाय।
६५. रिद्धि, सिद्धि, संपति, तहां, दिन-दूनी-अधिकाइ॥

नगर-निकट, बरात, सुनि,आई * हलचल हुइ, सोभा अधिकाई।
असवारी, सब, साजि, मन-मानी * चले, करन आदर अगवानी॥
हर्षे, देव - समाज निहारी * देखि, विष्णु कहँ, भये सुखारी।
शिव-समाज, जब, देखन लागे * हाथी रथ-घोड़ा, डरि भागे॥
बड़े, खड़े, धीरज-धरि, भाई! * भाजत बालक, प्रान-बचाई!।
लौटे कस ? पूँछत, पितु, माता * थर-थर-कांपि, कहत अस बाता॥
बालकः—बात,कहन की नाहीं,माता!* जम की धार, कि आइ बराता!
पगला-वर, और, बैल-सवारी * खपरी, सर्प, धूरि, तन, धारी॥

छंदः—तन भस्म, खपरी-सर्प - भूखन, सिर-जटा, हौआ! मनहु!।
सँग भूत, प्रेत, पिसाच, जोगिन,मुख, लगत,राक्षस जनहु!॥
जो, रहहिं जीवत देखि, यह बारात, तिन्ह के, पुण्य बढ़।
दिखिहईं, उमा-कर-ब्याह, सोई, कहत, बालक, बात गढ़ि॥

दोहाः—समुझि महेस-समाज, सब, पिता, मात, मुसुकाहिं ।
९६. समुझावत, सब बालकन्ह, "रहउ निडर, डर नाहिं" ॥

अगवाने, बरात लइ आये * दीन्ह, सबहिं, जनवास, सुहाये ।
'मयना', सुभ - आरती सँवारी * सँग-महँ, मंगल गावत नारी ॥
कनक-थार, सोहत-सुभ-हाथन * हर्षि, चली, आरती - उतारन ।
रूप-भयंकर-शिव, जब, देखा * नारिन-उर, भय, भयो, बिसेखा ॥
घुसीं, घरन-माँ, मन, डर लाये * जनवासा, तब, संकर आये ।
'मयना'-हृदय भयो, दुख-भारी * लीन्ह, बुलाय, गिरीस-कुमारी ॥
मयनाः–जे विधि, तुमहिं, रूप अस, दीन्हा * क्यों, मूरख ! वर, बौरा-कीन्हा !

छंदः—कह कीन्ह ! सुन्दरता, तुमहिं, वर-तोर, अस-पागल, दई !
जो-फूल, कल्प-के-वृक्ष, चाही, सो, बबूर, घुसेरही ॥
लइ तोहि, गिरि-ते-गिरऊं, अग्नी-जरउं, सागर-महँ-परउं ।
घर-जाइ, अपजस-होइ, जग, पर, यह विवाह, न, मैं, करउं ॥

कविः—दोहाः—विकल भईं नारी सबहिं देखि, दुखित - अस - मात ।
९७. उमा-प्रेम-सुधि-करे, सब, रोवत, और, विकलात ॥

मयनाः–नारद, कर मैं, कहा, बिगारा * बसत-मोर - घर, आय, उजारा ।
अस-उपदेस, उमा कहँ, दीन्हा * बौरे - बर-कारन, तप कीन्हा ॥
उन कहँ, केहु-न, मोह-न-माया * उदासीन, घर, नारि, न, दाया ।
घर-घालक, डर, लाज न जियरा * बाँझ न जानत, जनत की पीरा ॥
कवि–माता-विकल जो दीख भवानी * ज्ञान-भरी, कहि कोमल-वानी ।
उमा-सोच न करहु, सोचि अस, माता * टरत न जो, रचि-दीन्ह, विधाता ! ॥
बौरा-बर-ही, करम- लिखा, जो * काहे, दोष-लगावइ, फिर, को ! ।
तुम सन, मिटहिं न, विधि के अंका * लेहु वृथा, क्यों, मात कलंका ! ॥

छंदः—मत लेहु, मात, कलंक, छाँड़हु मोह, दुख-अवसर-नहीं ।
दुख, सुख, जो, लिखा-ललार हमरे, जाब-जँह, पाउब, तहीं ॥

बिनती-भरे, कोमल वचन, सुनि, सकल - नारी सोचहीं ।
बहु-भाँति, विधिना, दोस-दइ-दइ, नयन-जल ते सींचहीं ॥

कविः—दोहाः—तेहि अवसर, 'नारद', मुनी, सप्त-रिषी हू साथ ।
९८. समाचार-सब-सुने, 'हिम', लइ, घर, सब कहँ, जात ॥

तब, 'नारद', सब कहँ, समुझावा * पूर्व - जन्म - की - कथा सुनावा ।
नारदः—मयना ! सत्यसुनहुममबानी * कन्या, जग-की-मात, भवानी ॥
आदि, अंत, नहिं, नास,सो-सक्ती * सदा, संभु - आधे - अँग-बसती ।
जनमत-जग, पालत, और मारत * आपन-इच्छा - ते, तन-धारत ॥
प्रथम, 'दक्ष'-घर, जनमी जाई * 'सतीः'नाम, सुन्दर - तन - पाई ।
तहां, शंभु-सँग, गई बिवाही * जानत जग, यह कथा, सुहाई ॥
एक-वार, आवत, शिव - साथा * देखा रघुवर, रघु - कुल-नाथा ।
भयो मोह, शिव-कहा न कीन्हा * भ्रम-वस,वेष-सिय,धरि लीन्हा ॥

छन्दः—धरि वेप, सीता कर, 'सती', यह-दोस-दइ,संकर तजी ।
सिव विरह-मँह, घर जाय, पितु के. जोग अग्नी गिरि,जरी ॥
अब, जनमि तुम्हरे-भवन, अपने, पति-के-कारन, तप किया ।
अस जानि, संसय तजहु, गिरजा, है, सदा, संकर-प्रिया ॥

कविः—दोहाः—सुनि, नारद के वचन, तब, सब कर, मिटा विषाद ।
९९ जाना, घर-घर, लोग सब, छन मँह, यह संबाद ॥

'मयना'-'हिम', तब, अति-आनंद * फिर, फिर, पार्वती-पद वंदे ।
बालक, बूढ़, ज्वान, नर नारी * नगर-लोग, सब, भये सुखारी ॥
लागि होन, पुर, मँगल-गाना * सोने-कलस, सजाये, नाना ।
दीन्हीं, भाँति - अनेक, बढ़ारा * जस रसोई कर, है ब्योहारा ॥
सो बढ़ार, कस जाइ बखानी * जेहिघर,गिरिजा,बसत,भवानी ! ।
सादर, सकल, बुलाय, बराती * विष्णु, बृह्मा, सुर-सब-जाती ॥
बाँधे, पंगत, बैठि खवैया * लगे परोसन, चतुर रसोइया ।
सुर, जेवत, जब, नारिन-जानी * लागि देन गारी, मृदु-बानी ॥

छंदः—गारी, मधुर-सुर, देहिं, ठट्ठा, और. मजाख, उड़ावहीं ।
सुर, खाइ, धीरे - धीरे, आनंद-पाइ, अति सुख पावहीं ॥
जेवत-समय, आनंद, जो, मुख-कोटि-हू, नहिं, कहि सके ।
धुलवाइ हाथन, पान दइ, जनवास गे, जहँ, जे रहें ॥

दोहाः—तुरत, मुनिन, 'हिमवंत' कहँ, लगन बताई आय ! ।
१००. समय, विलोकि, विवाह-का, लीन्हे, देव, बुलाय ॥

करि आदर, देवन कहँ लीन्हा ❋ जथा-जोग, सुभ-आसन दीन्हा ।
वेदी, वेद - अनुसार, सँवारी ❋ सुंदर - मँगल, गावत, नारी ॥
सिंहासन, अति-नीक, सुहावा ❋ जो, ब्रह्मा, निज-हाथ बनावा ।
बैठे शिव, विप्रन, सिर नाई ❋ स्वामी-अपन-सुमिरि, रघुराई ॥
फिर, मुनियन, जा, उमा बुलाई ❋ करि सिंगार, सखी लै आई ॥
देखत रूप, सकल सुर मोहे ❋ सो छवि बरनइ,अस कवि, को, है॥
शिव-पतिनी, जग - माता, जानी ❋ कीन्ह प्रनाम, सुरन, [illegible] ।
सुन्दरता - कर - रूप, भवानी ❋ कोटिन-मुख, नहिं जात [illegible] ॥

छन्दः—कोटिन मुखहु, नहिं कहि सकत, जग मात की शोभा महा ।
सकुचाहिं सारद, वेद, सेषहु, मंद-मति, तुलसी, कहा ॥
छवि-खानि, मात, भवानि, आई, बीच-मंडफ, शिव-जहां ।
सकुचात, देखत पद-कमल-शिव, मन-भँवर पठयो तहां ॥

दोहाः—मुनिन-कहा-जस गनपतिहिं, पूजा 'शंभु' - 'भवानि' ।
१०१. कोऊ संका ना करइ, सुर, अनादि, सब, जानि ॥

ब्याह - रीति, जो वेद बताई ❋ महा-मुनिन, सो, सब करिवाई ।
कन्या-कर, हिम, गहि,कुस -सँगा ❋ शँभू कहँ, सौंपी जगदँबा ॥
'पानि-ग्रहन', जब, कीन्ह महेसा ❋ हर्षे सुर, सब मिटे कलेसा ।
वेद-मंत्र, मुनि-जन, उच्चारइं ❋ 'जयसँकर'-कहि, देव पुकारइं ॥
बाजत बाजे, विविध विधाना ❋ फूलन-वर्षा, भइ, विधि नाना ।
हर-गिरिजा-कर, भयो विबाहू ❋ सब लोकन, भरि रहेउ उछाहू ॥

दास, दासि, गौ, घोरा, हाथी * रथ,मनि, वस्त्र, वस्तु, बहु-भाँती॥
कलसन-कनक, अन्न, पकवाना * दाइज दीन्ह, न जात बखाना।
छंदः—दाइजदियो,बहु भाँति,फिर,करजोरि,'हिम', अस, नाव,कहा !
गहि-शिव-कमल-पद "देउंकह ! तुम,आप,परि-पूरन,अहा" !!
शिव,कृपा-सागर, ससुर कहँ, सनतोष, सब भांतहि, कियो।
फिर, कमल-चरनन-पकरि,'मयना', प्रेम-भरि-हृदय,कहेउ॥
मैनाः-दोहाः—मोर-प्रान-सम, यह, उमा, दासी, लेहु बनाइ।
१०२. छमहु, मोर अपराध, सब, पाऊं बर हर्षाइ॥
कविः—बहु-विधि,शँभु,माससमुझाई * गई भवन, सिर, चरनन नाई।
माता, उमहिं गोद बैठारी * दीन्हींसिख,सुन्दर,अति प्यारी॥
मैनाः—कीन्हेउ, सदा,शँभु-करपूजा * नारि-धर्म, पति, देव, न दूजा।
कविः—कहतबचन,नयननजल लाई * भरि भरि छाती उमहिं लगाई॥
मैनाः-कथोंविधि,नारि, रचीजगमाहीं * पराधीन, सपनेहु, सुख नाहीं।
कविः-भइ अति,प्रेम,बिकल महतारी * समय समुझि,फिर,धीरजधारी॥
फिर,फिर,मिलतपरतगहि,चरना * अधिक प्रेम,कछु, जाइ न बरना।
सब नारिन, मिलि,भेंटि, भवानी * माता - के - चरनन लपटानी॥
छंदः—मिलि मात, फिर, गिरिजा चली, नारिन, असीस, उचित, दई।
फिरि,फिरि विलोकत मात, कहँ,लइ, तब, सखी, शिव पहँ गई॥
मँगता, सबहिं, सनतोषि, संकर, लइ उमा, घर, कहँ चले।
सब देव हर्षे, फूल बरषे, बाजि बाजा, अति - भले॥
दोहाः—चले संग, हिमवंत, तब, पहुँचावन, अति - प्रीति।
१०३. बहुत-भांति, समुझाइ शिव, लौटायो, जस रीति॥
तुरत, भवन, आये, 'गिरि-राई' * नदी, सकल, गिरि,लीन्ह बुलाई।
आदर, दान, विनय, सन्माना * बिदाकीन्ह,सब कहँ, 'हिमवाना'॥
जबहिं शंभु, कैलासहिं, आये *सबसुर, निज-निज लोक, सिधाये।
पिता-शँभु, जग-मात भवानी * सकचऊं, कस श्रृंगार बखानी॥

करहिं विविध-बिधि,भोग-विलासा ❋ गनन समेत, बसत, 'कैलासा'।
दोउन-कर - विहार, नित-नयेऊ ❋ यहबिधि,बहुतकालचलिगयेऊ॥
तब जनमा, छह-मुखी कुमारा ❋ 'तारक' राच्छस कँह,जिन्ह मारा।
लिखी कथा, यह, बेद-पुराना ❋'कार्तिक'-जन्म,सबहिं,जग,जाना॥

छंदः—जग जान 'षट-मुख'-जन्म-बल, कस कर्म, कस प्रताप भा।
तेहि हेत, मैं, संकर-के-सुत-कर-चरित, संछेपहि, कहा॥
यह, उमा-शँभु-विवाह, जे, नर,नारि, कहहिं, जे गावहीं।
कल्यान-काज, विवाह-मँगल, ते, सदा, सुख पावहीं॥

दोहाः—सागर, गिरिजा-पति-चरित, वेद न पावत पार।
१०४. बरनइ, तुलसीदास कस, अति मति - मंद, गँवार॥

शँभु-चरित सुनि, रसिक सुहावा ❋ 'भरद्वाज'-मुनि,अति सुख पावा।
हृदय, उछाह, कथा पर, बाढ़े ❋ आँसू, नयन, रोम, तन, ठाढ़े॥
प्रेम-विवस, मुख, आव न बानी ❋ दसा देखि, हर्षे, मुनि-ज्ञानी।
याग्यवल्किः—कहा,धन्य तुम-जनम, मुनीसा !❋प्रान-ठौर,राखत गौरीसा !
जिनहिं, प्रीति,शिव-चरनन नाहीं ❋ सपनेहु ते, रामहिं, न सुहाहीं।
बिन-छल, शिव-पद, होइ सनेही ❋ राम-भक्ति-कर-लच्छन, एही॥
राम-भक्ति, शिव-सम, को धारी ❋ तजी सती, निरदोस-सि-नारी।
करि प्रन, राम-भक्ति, मन, लाई ❋ को शिव-सम,रामहिं-प्रिय,भाई!

दोहाः—पहिले, मैं, शिव-चरित कहि, देखा मरम - तुम्हार।
१०५. सुभ-सेवक, तुम, राम-के, तुम ते, दूर, विकार॥

मैं, जाना, तुम्हार गुन सीला ❋ कहउँ,सुनहु,अब,रघुपति-लीला।
हे, मुनि ! आज, मिलन ते, तोरे ❋ कहि न जात,जस,सुख,मन मोरे॥
राम-चरित, हे मुनी ! अपारा ❋ पावत, 'सेष'-कड़ोर, न पारा।
तहूँ सुना, जस, कहत बखानी ❋ सुमिरि राम, सारदा-भवानी॥
{ सरस्वती, कठ-पुतली, स्वामी ! ❋ राम नचावत, अंतरजामी।
जानि-भगत, नचवावहिं, लाई ❋ कवि-के-हृदय, समुझि अँगनाई॥

तिन्ह कृपालु, रघुपतिहिं, नवत मैं ❋ तिन्ह, सुन्दर गुन-कथा, कहत मैं ।
अत रमनीक, सैल कैलासू ❋ उमा-शँभु कर, जहँ, नित, बासू ॥
दोहाः—जोगी, तपसी, सिद्ध, सुर, किन्नर मुनि हर्षानि ।
१०६. बसत जहां पुण्यात्मा, सेवत शिव, सुख-खानि ॥
धर्म, विष्णु, शिव, जो, नहिं चाहत ❋ नहिं, ते, तहँ, सपने, पग धारत ।
तहि-परवत, बर - वृक्ष - बिसाला ❋ सुन्दर, रहत नयो, सब काला ॥
भीनी - ब्यारी, सीतल - छाया ❋ शिव विश्राम, वेद कहि, गाया ।
एक बार, शिव, बर - तट, गयेऊ ❋ देखि वृक्ष, हृदय, सुख भयेऊ ॥
बाघँबर, प्रभु, हाथ, बिछावा ❋ बैठि, स्वभाविक, दीनदयाला ।
सँख, चंद्र, जनु, कुंद से गोरे ❋ दिये लँगोट, मुनिन-से, कोरे ॥
नख, लाल, कमलन सम, चरना ❋ नख-चम, अँधकार-मन-हरना ।
भस्म - सर्प - भूषन, त्रिपुरारी ❋ सोभा-चंद्र, देखि मुख, हारी ॥
दोहाः—जटा-मुकुट, सिर, गंग धरि, लोचन, कमल विसाल ।
१०७. नील-कंठ, जनु सिंधु-छवि, द्वज्य - चंद्र - दिये - भाल ॥
काम-शत्रु, सोहत शिव, कैसे ❋ धरि तन, बैठि, सांति-रस जैसे ।
पारवती, भल अवसर जानी ❋ गई, शंभु पहँ, मात, भवानी ॥
जानि प्रिया, आदर, अति, कीन्हा ❋ बाँये-अंग, सुभ-आसन दीन्हा ।
बैठी, शिव - संपाति, हर्षाई ❋ पूरब-जन्म-कथा, चित आई ॥
पति-प्रसन्न, मन महँ, निज, जानी ❋ हँसि, तब, उमा, कही मृदुबानी ।
उमाः—कथा जो सकल-लोक-हितकारी ❋ पूँछन चाहत, सैल - कुमारी ॥
विस्व - नाथ - मोरे, त्रिपुरारी ! ❋ त्रिभुवन, महिमा फैलि तुम्हारी ।
चर, और अचर, नाग, नर देवा ❋ सबहि करत, पद-कमलन-सेवा ॥
दोहाः—जानत-सब, सब-बल, तुमहिं, कला - औ - गुन - स्थान ।
१०८. ज्ञान, विराग, औ जोग-घर, 'कल्प - वृक्ष - जनः' - नाम ॥
जो, मो पर, प्रसन्न, सुख-रासी ! ❋ जानत साँची, आपन-दासी !
तौ, प्रभु ! हरहु, मोर अज्ञाना ❋ कहि रघुनाथ-कथा, विधि नाना ॥

कल्प-वृक्ष-तट, जेहि-घर, होई * दुख-दरिद्र, कैसे, लहि, सोई ।
अस विचारि, प्रभु ! चंदा-धारी * हरहु,नाथ ! मति-कर-भ्रमभारी॥
प्रभु ! परमारथ - जानन - हारे * राम, बृह्म-नित, कहत पुकारे ।
सेष, सारदा, वेद, पुराना * सबहिकरत,रघुपति-गुनगाना ॥
तुम, जो, कामदेव संघारत * 'राम' 'राम'दिन,रात, पुकारत ।
कौन राम, दसरथ-सुत, सोई ? * निरगुन, जन्म-न, दूसर कोई ?॥

दोहाः—राज-पुत्र, जो, बृह्म कस, नारि - विरह - दुख घोर ।
१०९. चरित देखि, महिमा सुनत, भ्रम-सा, फांसि, मति-मोर ॥

बिन-इच्छा, सब-महँ, जो होई * तौ, समुझाइ, नाथ ! कहु मोही ।
समुझि मूढ़, मन, रिसि ना धरहू * जेहि बिधि मिटइ मोहसो करहू ॥
देखि चुकी, बन महँ प्रभुताई * डर ते, पूरब-जन्म, छिपाई ।
मन मैला, तहुँ, ज्ञान न आवा * भली भांति, तेहि कर फल पावा ॥
अब लागि, कछु संसय, मन मोरे * करहु कृपा, बिनवउं, कर जोरे ।
नहिं समुझी, इतना समुझाये *अस-समुझे,कहु,बिन-रिसि-लाये॥
जस, अज्ञान रहा, अब नाहीं * राम-कथा पर, रुचि, मनमाहीं ।
गुन-पुनीत, बरनउ, रघुनाथा * सर्पराज-भूषन ! सुर नाथा ! ॥

दोहाः—बंदउं पद, धरती धरे, सिर, बिनवउं कर जोरि ।
११०. बरनउ निरमल राम-जस, वेदन कर - निचोरि ॥

कही, नारि नहिं वेद अधिकारी * दासी, मन-क्रम-बचन, तुम्हारी ।
गूढ़हु तत्त्व, न, साधु, छिपावहिं * कोउ, दुखी, अधिकारी, पावहिं ॥
भरे दुःख, पूँछत, सुर - राया * रघुपति-कथा, कहउ, करि दाया ।
पहिले, कारन, कहहु, विचारी * निरगुन-बृह्म, देह, कस, धारी ॥
फिर, प्रभु ! कहउ, राम-अवतारा * लरिकाई-कर - चरित - पिआरा ।
कैस, गई, जानकी, बियाही * राज तजा, काहे, रघुराई ॥
रहि बन, कीन्हे, चरित, अपारा * कहउ, नाथ ! कस, रावन मारा।
राज पाइ, कीन्हीं बहु लीला * कहउ, सबहि, संकर-सुख-सीला॥

दोहा—कृपा-सिंधु, फिर, सो कहऊ, कीन्ह, जो अचरज, राम।
१११. प्रजा सहित, रघुवंस-मनि, कस गे, आपन-धाम॥

फिर, प्रभु! कहउ, सो तत्व बखानी ❋ जेहि मा भूलि, मगन, मुनि, ज्ञानी।
भक्ति, ज्ञान, विज्ञान, विरागा ❋ कहि, फिर, कहु, इन कर, सब, भागा॥
और-राम-के-खेल, अनेका ❋ कहउ, जो उपजइ, नीक विवेका।
और-न-जो-पूँछा-मैं-तुम-ते ❋ करेउ दया, न छिपायो, हम ते॥
तीन-लोक-गुरु, वेद बतावत ❋ नीच-जीव, तुम कहँ, कह जानत।
कवि:—उमा जो पूंछा, सहज, सुहाई ❋ सुनि, शँभू कहँ, अति, मन, भाई॥
राम-चरित, हर-उर, सब, जागे ❋ फूले, आंसू-निकसन-लागे।
श्री-रघुनाथ-रूप, उर, आवा ❋ प्रेमानंद, अथाह-सुख, पावा॥

दोहा:—ध्यान, घरी दुइ, डूबि रहि, फिर, मन ते, सो त्यागि।
रघुपति-चरित, महेस, तब, हर्षित, बरनन लागि॥

११२. (राम-कथा, शिव-जी-के-मुख से)

शिव:—झूँठहु, सत्य लगत, बिन-जाने ❋ रसरी, साँप, न, जो, पहिचाने।
जेहि का जानि, जगत, अस भागे ❋ जात, सपन-कर-भ्रम, जस, जागे॥
वंदउं बाल-रूप, सोइ, रामा ❋ करत सहज, सिद्धी, जिन्हनामा।
करहिं दया, दुख-नाशन हार ❋ दशरथ-आंगन-खेलन-वांर॥
कवि:-करि प्रनाम, रामहिं, त्रिपुरारी ❋ अमरित-सम, बानी, उच्चारी॥
शिव:-धन्य, धन्य, गिरि-राजकुमारी! ❋ तुम्ह-समान नहिं कोउ उपकारी।
राम-कथा, जो, पूँछा चाहत ❋ सबहिं, गंग-सम, सुद्ध करावत॥
तुमहिं प्रेम, रघुवर-के चरनन ❋ जग-हित, चाहत, शिव-मुख-बरनन॥

दोहा:—राम-कृपा-ते, हे, उमा!, सपने हू, मन मांहि।
११३. सोक, मोह, संदेह, भ्रम, तुम कहं, जानत, नांहि॥

जो संका कीन्हीं, तुम, सोई ❋ कहत, सुनत, जग-कर-हित होई।
जिन, हरि-कथा, सुनी नहिं, काना ❋ कान-छेद, बिल-सर्प-समाना॥

कहु आंखी, नाहिं-संतन-दरसन * समभहु,लिखी-मोर-के-पर,सन ।
व्यर्थ मूढ़, जनु, करुई तोमर * जोनझुकत,गुरु-पद,औरपद-हरि ॥
जो, हरि-भक्ति, हृदय, नहिं पाये * मरे-समान, जिअत, जग-आये ।
जो, नहिं करइ, राम - गुन-गाना * तासु-जीभ, जनु, मेंडक जाना ॥
निठुर, कठोर, वज्र - सी - छाती * सुनि, हरि-चरित, न जो हर्षाती ।
उमा ! राम की लीला सोहत * करत सुरन-हित, दैत्यन मोहत ॥

दोहाः—काम-धेनु, जनु, कथा यह, सेवत, सब सुख देत ।
११४. देव, संत, सब ही सुनत, जानि, न को, सुख लेत ॥

राम-कथा, जस, हाथ-की-ताली * संसय-चिड़ी, उड़ावन हारी ।
कलि-जुग वृक्ष और कथा,कुल्हारी * आदर ते, सुनु, सैल - कुमारी ॥
राम-नाम - गुन - चरित सुहाये * जन्म, कर्म, बहु, वेद बताये ।
अंत न राम - नाम - भगवाना * तस,विनु-अंत,कीर्ति,गुन,नाना ॥
सुना, जैस, और,जस-मति मोरी * कहिहउं,देखि,प्रीति-अति,तोरी ।
प्रस्न तुम्हार, उमा ! सुख-दाई * सुन्दर, संतन-मत, मोहिं भाई ॥
एक बात, नहिं, मोहिं सुहानी * मोह के वस,तुम,कहा,भवानी ! ।
तुम जो कहा, राम कोउ दूसर * गायो वेद,ध्यान,जिन्ह,मुनि धरि॥

दोहाः—कहत, सुनत, अस, नीच-नर, मोह-भूत, जिन्ह लागि ।
११५. सांच, झूंठ, समुझत नहीं, हरि - पद - ब्रोधी-काग ॥

अंधे, ज्ञान-न, मति-न, अभागी * विषय-काइ, मन-सीसा, लागी ।
गुण्डा, कपटी, मन-नहिं-दाया * सपनेहु,संत-दरस, नाहिं पाया ॥
वेद-विरोध, कहत, सोइ, बानी * हानि,लाभ,जिन्ह, अपन,न जानी ।
मन - सीसा - मैला, नयनाँधर * केहिविधिरूप.निहारहिं,रघुवर!॥
{ का निरगुन,का सगुन, न जानत * गाल फुलाइ, वचन, जे ढालत ।
माया-बस, करि-भ्रम,जग,डोलत * कछु-नाहिं-अनुचित,उनकहँरोवत॥
सन्न-भूत - बस, और मतवारे * नहिं, विचार - ते, बोलन-वारे ।
मोह-करी-मदिरा, जिन चाखी * चहीं वचन-तिन्ह,कान न राखी ॥

सो०ः—अस, मन माहिं विचारि, संसय तजि, भजु राम-पद।
११६. सुनु, गिरि-राज-कुमारि, रैन-मोह, सूरज-बचन॥

सगुन, अगुन, कछु, अंतर नाहीं * पंडित, वेद, पुरान बताहीं।
रूप-जन्म-बिनु, ब्रह्म,जो निरगुन * सगुनहोत,भगतनहित धरितन॥
गुन-ते-अलग, सगुन भा, कैसे * ओरे, बनत हैं, जल ते, जैसे।
मोह-तिमिर, इइ-सूर्य, नसत जो * सकत,मोह ते,दुखित,कबहुं,सो!॥
राम, सच्चदानँद, रबि, खासा * मोह-रैन, तहँ, नहिं,यक माशा।
राम-सुभाउ-ते, रूप-उजेरा * मोह-रैन, ना, ज्ञान-सवेरा॥
सुख, दुख, और, ज्ञान, अज्ञाना * जीवकेगुन,सब,मद, अभिमाना।
राम, ब्रह्म-व्यापक, जग-भरे * परमानंद, औ, सब-ते-परे॥

दोहाः—हैं प्रकास-घर, नर बजत, सुरन - नरन के-नाथ।
११७. रघुकुल-दीपक, मोर-प्रभु, अस कहि, नायो माथ॥

भ्रम ते, नहिं समुझत, अज्ञानी * दोसहिं ईश्वर, मूरख-प्रानी।
छाये-बादर, देखि, अकासहिं * मूरख, सूरज-छिपा, बतावहिं॥
नयनन-आगू, अँगुली लाये * दुइ, दुइ, चंदा, परत, दिखाये।
मोह-दोस, जो, राम, लगावत * धुँआ, धूरि, आकास,छिपावत॥
{भोग, इन्द्री, और, जीव, देवता * होत एक, दूसर-ते, सचेता।
करहिं, सभन कहँ चेतन, जोई * नित्य ब्रह्म, रघुपति, है सोई॥
जग, प्रकास, इक, राम-बनाया * जिन-के-बस,गुन,ज्ञान,औमाया।
जिन्ह की सच्चाई ते, माया * लगत सत्य, मन, मोह-समाया॥

दोहाः—चांदी सा, कछु, सीप महँ, रवि-किरनन, कछु जल।
११८. झूँठा! तीनहु काल, पर, सकत न, यह भ्रम, टल॥

{यह विधि, जग,भगवान-सहारा * झूँठ भयेहु, दुख देत अपारा।
जस सपने, सिर काटइ, कोई * बिन जागे, न दूरि दुख होई॥
जासु,कृपा,अस, भ्रम मिटि जाई * गिरिजा! सोइ, कृपालु-रघुराई।
कब-ते, कब-लगि,कोउ न जानत * वेदहु, मति-अनुसार, बखानत॥

बिनु-पद, चलइ, सुनइ, बिनु-काना * करत करम, बिनु-हाथन, नाना ।
मुँह के बिना, सबहि रस चाखत * विना-जीभ, जनु, जोगी भाखत ॥
बिनु-तन, छुअत, नयन-बिनु, देखत * बास, अनेक, नाक-बिनु, सूघत ।
यह प्रकार, सब, अद्‌भुत करनी * जेहि की महिमा, जात न बरनी ॥

दोहाः—गावत, पंडित, वेद, और, धरहिं, मुनी, जेहि ध्यान ।
११६. दसरथ-सुत, सोइ, बृह्म, भा, भगत हेतु, भगवान ॥

देखे कासी · मरत - कोउ - नर * लेत, सोक, मैं, जिन्ह-के-बल, हरि ।
सोई, मोर - चराचर - स्वामी * रघुवर, सब-महँ, अंतरजामी ॥
बेबसहू, मुख, 'राम' निकासत * जनम-जनम-के-पाप, नसावत ।
आदर ते, जो, रामहिं, सुमिरहिं * गौ-पद-सम, भव-सागर, तरहीं ॥
रघुवर, परमातमा, भवानी ! * ठीक नहीं, तुम्हरी-भ्रम-बानी ।
अस संसय, लाये, उर माहीं * ज्ञान, विराग, सबहि गुन जाहीं ॥
कविः—सुनि, शिवके, भ्रम-नासकवचंना * मिटी, उमा-मन, तर्क-की-रचना ।
भयो, राम-चरनन - बिस्वासा * कठिन-कुफर मनकर, सबनासा ॥

दोहाः—फिर, फिर, शिव के चरन गहि, हाथ, कमल-से, जोरि ।
१२०. बोली, गिरिजा, बचन, तव, मनहु, प्रेम-रस, बोरि ॥

उमा—बानी, चंद्र-किरन-सी, तुम्हरी * शरद-धूप-संसय, मिटि, हमरी ।
तुम, कृपालु, सब संसय, हरेऊ * राम-स्वरूप, जानि, मोहिं, परेऊ ॥
गयो, आप की कृपा, विषादा * भई सुखी, प्रभु - चरन - प्रसादा ।
दासि, अपन, मोहिं, अब, जानी * नारि, स्वभाविक-ही, अज्ञानी ॥
पहले जो पूछा, सो कहऊ * जो प्रसन्न, मो पर, प्रभु ! होऊ ।
राम, बृह्म, चेतन, अविनासी * अलग, और, सब-हृदय-बासी ॥
केहि कारन, तिन्ह, नर-तन धारा * कहउ, नाथ ! समुझाइ, सँभारा ।
कवि-उमा-वचन, अस, विनय-के-साने * रघुवर - कथा - प्रेम पहिचाने ॥

दोहाः—"काम-शत्रु" हर्षे, तबहिं, संकर, चतुर सुजान ।
उमा-बड़ाई, करि, अधिक, बोले कृपा - निधान ॥

शिव—सो०:—सुनु, सुभ-कथा, भवानि !; "राम-चरित-मानस" कहत ।
कही, "भसुंडि"बखानि; पक्षिन-स्वामी -"गरुड़"-हित ॥
सो संवाद, उदार; जेहि विधि भा, आगे. कहब ।
सुनहु, राम - अवतार; पाप - रहित, सुन्दर चरितं ॥
हरि- गुन - नाम अपार; कथा, बहुत-विधि-विधि कहीं ।
मैं, निज-मति - अनुसार; कहत, उमा ! सुनु, प्रेम ते ॥

१२१. राम-अवतार-कारन

गिरिजा ! हरिके चरित सुहाये * वेद, पुरान, बहुत, कहि गाये ।
हरि - अवतार, हेत जेहि, होई * ठीक, ठीक, कहि सकइ, न कोई ॥
राम, बुद्धि - मन - बानी - ऊपर * मत हमार, अस, जानहु, चातुर ।
जैस, संत, मुनि, वेद, पुराना * आपन-मति-अनुसार, बखाना ॥
तस, सुन्दरी ! सुनावहुँ, तोही * समुझि परा, जस, कारन मोही ।
जब जब होइ धरम की हानी * राक्षस, नीच, बढ़हिं, अभिमानी॥
करहिं अनीति कठिन जेहि बरनन * जग, सुर, गऊ, सतावहिं विप्रन ।
तब, तब, धरि, बहु भाँति सरीरा * हरत, कृपानिधि सज्जन - पीरा ॥

दोहा:—सुरन, राज, असुरन, हतइं, रखत वेद - कर - मान ।
१२२. फैलावत जस-सुभ, यही, हेतु - जनम - कर जानु ॥

सोइ जस गाइ, भक्त, भव तरहीं * भगतन-हित, कृपालु, तन धरहीं ।
जनम-के-कारन, कहे अनेका * अति विचित्र, सब, एक-ते-एका ॥
जनम, एक दुइ, कहत बखानी * सावधान, सुनु, चतुर-भवानी !
हरि के प्रिय, रहि दुइ दरबाना *'जय', और'विजय', सबहिजगजाना॥
विप्र - स्राप - ते, दोऊ भाई * नीच - निसाचर - देही पाई ।
"हिरण्यकशिप", और"हिरण्याक्ष",भे * इन्द्रहु-मदकहँ, चूरिकरइं, जेहि ॥
नामी, विजई, वीर, अपारा * हुइ 'बराह', प्रभु, एकहिं मारा ।
हुइ-'नरसिंह', दूसरहु मारा * जस-प्रहलाद, फैलि, संसारा ॥

दोहाः—दोऊ, मरि, राक्षस भये, वीर - बड़े - बलवान।
१२३. 'कुंभकरन', 'रावन', सुभट, जीते सुर, जिन्ह, आनि॥

भे, न मुक्त, मारेहु - भगवाना * तीन-जनम-कर, रह बरदाना।
एक बार, तिन के हित-कारन * भगतन-प्रेमी, भे तन-धारन॥
'कस्यप', पिता, और, आदिति माता * दसरथ, कौसल्या, भे, ख्याता।
एक कल्प भरि, रह अवतारा * चरित कीन्ह, सुभ, आ, संसारा॥
एक कल्प, सुर, देखि दुखारे * गये, 'जलन्धर'-ते, सब, हारे।
वह सँग, शंभू, कीन्ह लराई * दैत्य, महा-बल, मरा न, भाई!
नारि-'जलन्धर', पति-वृत-नारी * तेहि-बल, जीति न सकि, त्रिपुरारी॥

दोहाः—सुर-हित, कीन्हा, भंग वृत, छल ते, नारी केर।
१२४. जब जाना; प्रभु का मरम, कोसा, नारी, टेरि॥

कीन्ह, स्राप, प्रभु, अंगीकारा * अति दयालु, और खेलन-हारा।
सोइ 'जलन्धर', 'रावन' भयेऊ * मारि, लराई, निज-पद दयेऊ॥
एक जनम कर कारन, एही * जेहि ते, धरी, राम, नर-देही।
बहुत अवतार, कथा, प्रभु, केरी * सुनि, मुनि-ते, कवि कही, घनेरी॥
'नारद', स्राप दीन्ह, एक बारा * तेहि ते, एक कल्प, अवतारा।
उमाः—भा अचरज, गिरिजहिं, सुनि बानी * नारद, कस मुनि, भगत औ ज्ञानी!॥
कारन कौन, स्राप, मुनि दीन्हा * का अपराध, रमा-पति कीन्हा।
यह कर कथा, कहहु, त्रिपुरारी! * मोह, औ, नारद, अचरज भारी!॥

शिवः—दोहाः—हँसे शँभु, और, अस कहा, ज्ञानी, मूर्ख न कोइ।
जेहि, जस, रघुवर करहिं, जब सो तस, तेहि छन होइ॥

सोः—कहत राम - गुन गाइ, भरद्वाज! सादर सुनहु।
भव-दुख, देत नसाइ, भजु, तुलसी, मद, मान तजि॥

१२५. (नारद-मोह)

'हिम-गिरि' पर, इक गुफा सुहावन * बहत तहां, गँगा, अति पावन।

अति पवित्र, देखे स्थाना * नारद-मुनि-मन, लगा सुहाना ॥
दीख, नदी, परबत, और, सब, बन * राम - चरन, लागा नारद-मन ।
सुमिरत, मिटा, स्राप, नारद कर * निरमल मन, लागा, समाधि पर॥
तेहि गति देखे, इन्द्र डराने * टेरा कामदेव, सनमाने ।
इन्द्रः–लइ साथिनि, करु भंग समाधी * चला, हर्षि, उठि करन उपाधी ॥
कविः–इन्द्र के मन महँ, यह डर आवत * स्वर्ग-राज, नारद-मुनि, चाहत ।
लोभी, कामी, जे, जग माहीं * सब कहँ, काग-समान, डराहीं ॥
दोहाः—कुत्ता, सूखा - हाड़ - लइ, सिंह - देखि, जनु, भाजि ।
१२६. हाड़ न छीनइ, डर, जिया, तसहि, इन्द्र, नहिं लाज ॥
कामदेव, तेहि आस्रम, आई * रितु-बसंत, निज-माया, छाई ।
रंग - बिरंगे - फूल खिलाये * कूकि कुयल भँवरा, भौंराये ॥
सुन्दर, तीन-तरह-की, ब्यारी * काम-अग्नी - उचकावन हारी ।
देव-नारि, नइ, जोवन-वारी * काम-के-तीर चलावन हारी ॥
तान, तरंगन - भरि - भरि, गावत * कमल-से-हाथन, भाउ बतावत ।
साथिनि देखि, काम हर्षाना * रचे ढँग, औरहु, फिर, नाना ॥
काम, न माया, मुनि कहँ, ब्यापी * डरा काम, अपने हित, पापी !
तेहि की मर्यादा, कस, मिटई * लक्ष्मी-पति, रच्छा, जेहि करई ॥
दोहाः—काम, औ सँगी, सब डरे, मन महँ, माने हारि ।
१२७. पकरे, मुनि के चरन, जा, बोले, कहि बलिहार ॥
नारद के मन, क्रोध, न आवा * कहि, प्रिय बचन काम, समुझावा ।
नाइ, चरन सिर आज्ञा पाई * गयो काम, सँग लिये सहाई ॥
मुनि कर सील औ, आपन करनी * इन्द्र ते जाइ, काम, सब बरनी ।
सुनि, सब के मन, अचरज आवा * मुनहिं प्रसंसि हरिहिं, सिर नावा॥
तब, नारद, आये, शिव पाहीं * जीति काम, सेखी, मन माहीं ।
काम, चरित निज, शिवहिं सुनाये * जानि प्रिय, शँभू, समुझाये ॥
शिवः–बार, बार, बिनवहुं, मुनि! तोही * जस, यह कथा, सुनाई मोही ।

तस, मत, हरिहिं, सुनायो, कबहूँ * बातहु चले, छिपायो, तबहूँ ॥
जागवलिकः—दोहाः—हितकारी, उपदेस-शिव, नहिं, नारदहिं, सुहानि।
१२८. भरद्वाज! लीला सुनहु, हरि - इच्छा बलवान ॥
राम, कीन्ह चाहइं, सोइ होई * मेटि सकत, उहि कहँ, नहिं, कोई।
शंभु-बचन, मुनि, मन, नहिं भाये * तब, बृह्मा के लोक, सिधाये ॥
लिये हाथ महँ, बीन, बजावत * चतुर गवैया, हरि-गुन गावत।
क्षीर - सिंधु, नारद - मुनि, आये * पूजत-वेद, विष्णु, जहँ छाये ॥
उठि, आनंद, मिले, भगवाना * नारद बैठे आसन, जाना।
विष्णुः—हँसि बोले, अस, जग-के-राजा * बहुत दिनन महँ, कीन्ही दाया ॥
कविः-कहि गाये, मुनि, 'काम'-चरित, ते * हटकि दीन्ह, पहिले ही शिव, ज।
प्रवल बड़ी, रघुपति-की-माया * भा न बेस, जेहि, मोह न आया ॥
विष्णुः—दोहाः—रूखे - मुख, मीठे बचन, बोले, श्री भगवान।
१२९. तुम्हरे सुमिरन ते मिटत, काम, मोह, मद, मान ॥
सुनु, मुनि! मोह होय मन, ताके * ज्ञान, विराग, हृदय, नहिं जाके।
बृह्म-चर्य, राखत, मति-धीरा! * तुमहिं, काम, दइ सकत, न पीरा॥
नारदः—नारद कहा, करे अभिमाना * कृपा तुम्हार, सकल, भगवाना!।
विष्णुः—मन महँ, तब, भगवानें बिचारी * गर्ब-वृक्ष, उपजा, मन, भारी ॥
डारहुं तेहि का, तुरत, उखारी * प्रन मोरा, सेवक-हितकारी।
मोरं, खेल, मुनि, होइ भलाई * अवसि, उपाउ, करउं, सोभाई ॥
कविः—तव, नारद, हरि-पद, सिर नाई * चले, हृदय, अभिमान वढ़ाई।
लक्ष्मी-पति, तब, माया फेरी * सुनहु, कठिन करनी, तेहि केरी ॥
दोहाः—नारद-मग, नगरी रची, सौ - जोजन विस्तार।
१३०. बैकुंठहु ते, नीक सो, रचना बहुत प्रकार ॥
बसहिं नगर, सुन्दर नर, नारी * मनहु 'काम', 'रति', दोउ, तनधारी।
बसत "सील-निधि", नगरी, राजा * हाथी, घोरा, सैन, समाजा ॥
सौ - इन्द्रन - सम, ठाठ बनाये * तेज, रूप, बल, जनु, रहि छाये।

कन्या, तेहि की, "बिस्व-मोहनी" * लच्छमी हू कहँ, लगइ सोहनी ॥
सो, हरि-माया, गुन-की-खानी * सोभा, तासु, न जात बखानी ।
होत स्वयंबर - तेहि, तेहि - काला * जुरे, तहाँ, बहुतक महिपाला ॥
मुनि, खिलवार, नगर महँ गयेऊ * पुरबासिन्ह, सब पूँछुत भयेऊ ।
सुनि सब चरित, भूप-घर, आये * करि पूजा, नृप, मुनि बैठाये ॥

राजाः—दोहाः—लाइ, दिखाई नारदहिं, भूपति, राज-कुमारि ।
१३१. कहउ, नाथ, सब दोस-गुन, यह के, हृदय, बिचारि ॥

कविः—रूप देखि, बैरागहिं त्यागे * बहुत देर लगि, देखन लागे ।
लच्छन तेहि कर, देखि, भुलाने * मन हर्षा, नहिं प्रगट बखाने ॥
जो, यह बरइ, अमर, सो, होई * रन महँ, जीति न पावइ, कोई ।
सेवा करइ, जगत, सब, ताही * बरइ, 'सील-निधि'-कन्या, जाही ॥
लच्छन, सब बिचारि, मन, झाँपे * निज-बनाइ, लच्छन कहि, ताके ।
"नीके-लच्छन" कहि, नृप पाहीं * नारद चले, सोच, मन माहीं ॥
नारदः—करउँ जाइ, सोइ जतन, बिचारी * जेहि प्रकार, मोहि, बरइ, कुमारी ।
सका न हुइ, जप तप, तेहि काला * केहि बिधि, मोहिं, परइ जयमाला ॥

दोहाः—यह अवसर, चाहीं, बहुत, सोभा, रूप - बिसाल ।
१३२. कन्या, रीझइ, देखि के, पहिरावइ जयमाल ॥

सुन्दरता, मागउँ, हरि, जाई * होइ बिलँब बहुत, तौ, भाई ।
हरि-सम, हितकारी, नहिं, कोऊ * हे हरि ! सो, सहाय, अब, होहू ॥
कविः-बहुबिधि, बिनय, कीन्ह, तेहि काला * प्रगटि खिलारी - दीनदयाला ।
देखे - हरि, मुनि - नयन जुड़ाने * "बना काम अब", मुनि हर्षाने ॥
नारदः—दीन भये, सब कथा सुनाई * करहु कृपा, और, होहु सहाई ।
आपन - रूप, देहु, प्रभु, मोही * और तरह, पावहुँ नाहिं ओही ॥
जेहि बिधि, नाथ ! होइ, हित मोरा * करहु सो, बेग, दास, मैं तोरा ।
कविः—माया-कर-बल, दीख, बिसाला * हिय, हँसि, बोले, दीन-दयाला ॥

विष्णुः—दोहाः—जेहि विधि, होइ परम हित, नारद ! सुनहु तुम्हार ।
१३३. सोइ, हम करब, न, और कछु, झूंठ न, बचन, हमार ॥

बिन पथ, भोजन मांगत रोगी * वैद, देत नहिं, सुनु, मुनि-जोगी ! ।
तेहि विधि, हित तुम्हार, मैं जाना * अन्तर-धान, भये भगवाना ॥
कविः—मोहित, माया-के-बस, भयेऊ * समुझि न, गूढ़, कहा, हरि कहेऊ ।
गये, तहीं, नाहिं देर लगाई * रहा स्वयँबर, जहां, रचाई ॥
निज-निज - आसन, बैठे, राजा * ठाठ - बनाये, लिये समाजा ।
आपन-रूप, समुझि मुनि फूले * "कन्या, औरहिं, बरइ, न, भूले" ॥
मुनि के हित कारन, भगवाना * दीन्ह कुरूप, न जात बखाना ।
सो चरित्र, लखि, काहु न पावा * नारद-जानि सभन, सिर नावा ॥

दोहाः—रहे तहां, शिव-दूत, दुइ, भेद रहा मालूम ।
१३४. बड़े-खिलारी, रूप, धरि, विप्रन - कल, रहि घूमि ॥

जेहि समाज, बैठे, मुनि, जाई * रूप-गर्व, मन महँ अधिकाई ।
तहँ, बैठे शिव-के - गन दोऊ * विप्र-वेष, पहिचानि न कोऊ ॥
गनः—करि ठट्ठा, अस बात बनाई * दीन्हीं हरि, कस सुन्दरताई !
देखे छवि, कन्या, तरि जाई * समुझे - हरि, माला पहिराई !
कविः—रहा, मोह, माया के बस, मन * ठट्ठा दइ दइ, हँसत शंभु-गन ।
सुनत तौ, नारद, अट-पटि-बानी * समुझि न परत, बुद्धि, भ्रम-सानी ॥
जो कछु चरित, कीन्ह, भगवाना * कन्या छाँड़ि, केहु नहिं जाना ।
रूप भयंकर, मुख, जनु बन्दर * क्रोधित भइ, कन्या, अति-सुन्दर ॥

दोहाः—सखी, सँग लइ, कुँअरि, तब, राज - हंसिनी - चाल ।
१३५. सब राजा देखत फिरत, कर कमलन, जयमाल ॥

जौन ओर, नारद, रहे फूले * तौन ओर, देखा, नहिं, भूले ।
फिर, फिर, मुनि, उकसहिं, अकुलाहीं * शँभू-गन, देखहिं, मुसुकाहीं ॥
राज-रूप, धारि, हरि, तहँ, आये * मेली माल, हर्षि, मन भाये ।
गे दुलहिनि लइ, लक्ष्मी-निवासा * सब महिपालन, टूटी आसा ॥

नष्ट-भये-मति, मुनि, तन-बाहर * जनु, गांठी, छुटि, गिरे जवाहर ।
गनः—तब, शिव-गन, बोले, मुसुकाई * मुँह तौ, ऐना, देखहु जाई ! ॥
अस कहि, डरि, भागे दोऊ गन * जल महँ, मुनि देखा, मुख-आपन ।
मुख-विलोकि, मुनि, अतिरिसकीन्हा * घोर स्राप, दोऊ गन, दीन्हा ॥
नारदः दोहाः—होहु निसाचर जाइ तुम, कपटी, पापी, दोउ ! ।
१३६. कीन्ह हँसी, सो लेहु फल, हँसेउ, फेर, मुनि कोउ !! ॥
फिर, जल देखि, रूप निज पावा * तहुँ, हृदय, सनतोष न आवा ।
कविः—कांपत ओंठ, क्रोध, मन माहीं * चले, झपटि, लछमी-पति पाहीं ॥
नारद—देहुं स्राप, कै, जा, मरि जाई * सब जग, मोरी हंसी कराई ! ।
कविः—बीच-राह, नारद, हरि चीन्हे * दुलहिनि, औरलछमीसँगलीन्हे ॥
हरिः—बोले, मधुर बचन, भगवाना * कहां जात, मुनि! मन-अकुलाना ।
कविः—सुनतबचन, बोले, रिसभारी * माया-वस, मति-हरि-गई-सारी ॥
नारदः—देखिनसकत, दूसरन-संपाति * राखत कपट, डाह, मन, सुर-पति! ।
सिंधु मथत, शिव कहँ बौरायो * भेजि देवता, विष पिलवायो ! ॥
दोहाः—दैत्यन, मदिरा, शिवहिं, विष, रतन - लक्ष्मी - आप ।
१३७. कपटी, कुटिल, औ, मतलबी, सदा, बाप - रे - बाप ॥
बिन-लगाम, नाहिं, सिर पर, कोई ! * करत, जैस मन आवत, सोई ! ।
बुरा बनावत, भला बिगारत * जी महँ, हर्ष सोक, नहिं लावत ॥
ठगि, ठगि, भेद सभन के, गांठे * विना-फिकिर, पागत-मन-माठे ।
तुमहिं, असुभ-सुभ, डर नहिं होई * अब लगि, ठीक किया नहिं, कोई ॥
अच्छे घर, अब, दीन्ह ब्याना ! * करे-को-फल, पइहउ, भगवाना! ।
ठगेउ मोहिं, जेहि-तन, भगवाना! * सो तन धरेउ, स्राप अस जाना! ॥
कपि की सूरति, मोर, बनाई * कपि ही हुइहैं, तोर सहाई ! ।
मो सँग कीन्ही, बहुत बुराई * नारि विरह-दुख, पैहउ, जाई ! ॥
कविः—दोहाः—स्राप, सीस-धरि, हर्षि-हिय, बहु बिधि, विनती कीन्ह ।
१३८. माया, अपनी, केर बल, खींचि, कृपा-निधि लीन्ह ॥

हरि-माया, जब, खिंचि गई सारी * नाहिं लछमी, ना, राजकुमारी।
नारदः—तब,मुनि डरे,गिरे,हरि-चरना* रछहु, दीनन - के-दुख-हरना !
झूँठ होय, यह स्राप कृपाला * अस चाहत अब दीनदयाला !।
दुष्ट-बचन, मैं, कहि बहुतेरे * छम,प्रभु!पाप,मिटाहिं यह मोरे !
हरिः—जपहु,जाय,अब,संकर-नामा * या ही ते, मिलिहइ बिस्रामा।
कोउ नहिं,शिव-समान,प्रिय मोरे * अस विस्वास, बनइ ना, छोड़े॥
जेहि, नहिं, कृपा, करइ, त्रिपुरारी * नर, न पाय सो, भक्ति हमारी।
अस जानि, धरती पर जाई * विचरहु, माया, पास न आई॥
कविः—दोहाः—वहु विधि, नारद सीख दइ, भे हरि अंतरधान।
१३९. सत्य - लोक, नारद चले, करत, राम-गुन - गान॥
शिव-गन, मुनी, जात, मग, देखी * छूटि - मोह, मन, हर्ष बिसेखी।
डरत, डरत, नारद पहँ आये * दीन बचन, पद पकरि, सुनाये॥
गनः-हम,शिव-गन,न विप्र,मुनि-राया!* कीन्ह अपराध, तैस फल पाया।
लौटावहु, अब, स्राप, कृपाला * बोले नारद, दीन - दयाला॥
नारदः-निसिचर,जाय,होहु,तुम,दोऊ!* तेज प्रतापी, जोधा होऊ!।
भुज-बल, जीतेउ पृथ्वी, जबहीं * नर-तन, विष्णू, धारहिं तबहीं॥
हरि के हाथन, मरन तुम्हारा * मिलिहइ मुक्ति, तुमहिं, संसारा।
कविः-चले जोरि कर,दोउ,सिर नाई * कलिजुग, भये, निशाचर आई॥
दोहाः—एक कल्प, यह हेत ते, लीन्हा प्रभु अवतार।
१४०. सज्जन, देवन, देत सुख, हरि पृथ्वी - कर - भार॥
इक-इक-कल्प, प्रभू, अवतरिहीं*वहु-बिधि,चरित,नीक-अति,करहीं।
होत चरित,जब,जब,मुनि गावत * कवि,पवित्र रचना महँ, लावत॥
ऐस कथायें, बहुत, अनोखी * कराहिंन अचरज, मन, सनतोषी।
अंत-न, हरि को, कथा-न-अंता * कहत,सुनत,बहुविधि,सबसंता॥
राम - चंद्र के चरित, सुहाये * चुकइं न, कल्प-कोटि हू, गाये।
या ते, मैं, यह कथा बखानी * हरि-माया, मोहत मुनि, ज्ञानी॥

प्रभु,भगतन हित, बनत खिलारी * सेवत, मिलत, हरत दुख,भारी ॥
सो०ः—सुर, नर, मुनि, कोउ नाँहि, माया प्रबल, न, मोहि जेहि ।
१४१. अस विचारि, मन मांहि, माया-पति कहँ, नित भजहु ॥
शिवः—और-हेतु,सुनु सैल-कुमारी! * कहउं कथा, सुन्दर, बिसतारी ।
जेहि ते, जन्म-रूप-और-गुन-बिनु * अवध के राजा कर, धारेउ,तन ॥
जिन्ह प्रभु,तुम,वन विचरत,देखा * लछिमन सहित, धरे मुनि-वेषा ।
देखे जेहिकर चरित, भवानी! * सती - देह, तुम, गइ बौरानी ॥
अब लगि है, संसय की छाया * सुनहु,न फिर भ्रम-रोगसताया ।
कीन्ह भला, जो, लइ-अवतारा * सो,सब,कहिहौं,मति-अनुसारा ॥
यागवल्किः--भरद्वाज!सुनिसंकर-बानी * सकुचि, प्रेम-भरि, हँसी भवानी ।
फेर, लगे बरनन, 'वृष-केतू' * सो अवतार, भयो, जं हेतू ॥
दोहाः —सो, मैं, तुम सन, कहुँ कथा, सुनु, मुनीस! मन लाय ।
१४२. कलिजुग के सब दुख हरत, मंगल - करन, सहाय ॥
"सत-रूपा", और "स्वायंभूमनु" * जगत-नरन,पायो, जिन्ह ते तन ।
धरमी रहे, दोउ, पति - पत्नी * लिखी, वेद, मर्यादा, कितनी ॥
भा "उत्तानपाद", सुत, तेहि कर *जनमासुत"ध्रुव",जेहिभगतीहारि।
"प्रिय-वृत" 'ध्रुव' कर छोटा-भाई * कीन्ह पुरान, औ वेद बड़ाई ॥
"देवहूति" भइ, तासु कुमारी * जो, "कर्दम" रिषि-कीभइनारी ।
आदि देव, प्रभु, दीन - दयाला *जिन्हजनमा,फिरि,"कपिल"कृपाला॥
'सांख्यसास्त्र' जिन्ह'कपिल'बखाना* जानत-तत्व, चतुर, भगवाना ।
'भूमनु', राज कीन्ह, बहु काला * आज्ञा,नित, ईश्वर की पाला ॥
सो०ः—विषय, न मन ते भागि, रहि घर, तन बूढ़ा भयो ।
१४३. हृदय, बहुत दुख लागि, जन्म गयो,हरि-भक्त बिनु ॥
राज, ठेलि, सब, सुत कहँ, दीन्हा * नारि समेत, गवन, वन, कीन्हा ।
तीरथ, 'नैमिखार', जेहि नामा * साधुन, देत सिद्धि,सुभ, कामा ॥
रहत, तहाँ, मुनि-सिद्ध-समाजा * हर्षित, गा, तहँ, 'भूमनु' राजा ।

सोहत 'भूमनु' और 'सत-रूपा' * ज्ञान, भक्ति, जनु, धरे-सरूपा ॥
पहुँचे दोउ, 'गोमती' - तीरा * हरषि, नहाने, निरमल नीरा।
आये मिलन, सिद्ध, मुनि, ज्ञानी * धरम-धारी, राजहिं, पहिचानी ॥
जहँ, जहँ, तीरथ रहे सुहाये * आदर ते, सब, मुनिन कराये।
दूबर - तन, मुनियन - कर - जामा * सुनत, मुनिन-बिच, वेद, पुराना ॥

दोहाः—बारह - अक्षर - मंत्र जो, जपत, किये, अनुराग।
१४४. राजा, रानी, दोउन-मन, वासुदेव - पद, लाग ॥

भोजन करत, साक, फल, कंदा * सुमिरत बृह्म, सच्चिदानंदा।
फिर, हरि हेत, करन तप लागे * जल-पर-गुजर, मूल-फल-त्यागे ॥
यह इच्छा, नित नित, मन होई * परम-प्रभू, कस, दरसन होई !।
निरगुन, आदि, न-अंत, न-भागा * वेदान्ती-मन, जेहि पर लागा ॥
'या - हू - ते - बढ़' वेद पुकारा * 'देह-रूप-बिन,' बिना-बिकारा।
शिव, बृह्मा, विष्णू-भगवाना * जेहि-के-अंग-ते, उपजत, नाना ॥
अस-प्रभुहू, सेवक-के-बस परि * लीला करत, भक्त हित, तन-धरि।
राजाः—जो यह सांचि, वेद की भाषा * हुइ है पूरन, मन-अभिलाषा ॥

कविः—दोहाः—छह-हजार बरसैं कटीं, खाली जल-आधार।
१४५. बायू के बल, फिर, रहे, बरसन, सात-हजार ॥

दस-हजार-बरसन, तजि सोऊ * एक-पाउँ, ठाढ़े रह, दोऊ।
बृह्मा, हरि, शिव, तपहिं निहारा * आये 'मनू' - पास, कई-बारा ॥
"मांगहु बर", अस कह, लुभाया * धीर, दोउ, मन, नांहिं डिगाया।
हाड़हि, हाड़, बदन, रहि गयेऊ * तहुं, मन, पीर, तनिक, नहिंभयेऊ ॥
परमातमा, जो, अंतर - जामी * समुझि दास, नहिं-चाहत-आनी।
कीन्ह, अकास, "मांगु", असबानी * अति गँभीर, दया - की - सानी ॥
मरिन-जिआवत, अस, जब, बानी * कानन महँ परि, हृदय, समानी।
हृष्टि - पुष्ट, तन, भये सुहाये * मांनहु, अबहीं, घर-ते- आये ॥

दोहाः—अमरित-से, अस वचन, सुनि, पुलकि उठे, सब गात।
१४६. कीन्ही, राजा, दंडवत, प्रेम न, हृदय, समात॥
राजारानीः काम-धेनु, और कल्प-वृक्ष-'मनु' * वंदत-चरन-धूरि - शिव-बिष्णू।
सेवत-मिलत, सबहिं - सुख-दाता * भगतन-हितकारी, जग-नाथा॥
नाथ-अनाथन! जो हित मो पर * मन-प्रसन्न, दीन्हेउ, मोहिं, यह वर।
रहत, स्वरूप, जौन, शिव-के-मन * जतन करत, मुनि, जेहि केकारन॥
जो, 'भुसुंडि' - मन-मानस-हंसा * अगुन, सगुन, कहि, वेद प्रसंसा।
सोइ रूप, देखहुँ, भरि - नैना * कृपा करहु, दीनन-दुख-हरना॥
कविः—दोउन-वचन, परम प्रिय लागे * कोमल, प्रेम - विनय-के-पागे।
कृपा-भगत-पर, दया - निधाना * प्रगटे, जगत - भरे-भगवाना॥
दोहाः—नील-कमल, नीलम-मनी, घटा - मेघ - की स्याम।
१४७. सरमावत, सोभा निरखि, सौ करोड़ हू काम॥
मुख-छवि, शरद् - चंद्र-ते-आला * मुख - गुदी, सुभ-ठोड़ी-गाला।
नाक, दाँत, सुभ, ओंठ की लाली * हँसनि, किरिन चंदा-कहे, गाली॥
नयन, छबीले, नये-कमल-सन * भावत-जी-की, प्यारी, चितवन।
काम-धनुष-ते, भौं-सोभा बढ़ * झलकत, तिलक-रेख माथे पर॥
सिरपर, मुकुट, कान, महँ, कुण्डल * केस-घूमि, भँवरा-किये-मंडल।
उर-श्री-वत्स, गरे-वन-माला * जड़े-हार, भूषन, मनि-जाला॥
सिंह-कँधन-पर, नीक जनेऊ * भुज के भूषन, सुन्दर, तेऊ।
भुज, जनु, गज-की-सूँड़-समाना * तरकस-कमर, करन-धनु-बाना॥
दोहाः—पीतांबर, बिजुली-लजइ, पेटहिं, रेखा-तीन।
१४८. नाभी, सुन्दर, लेत, जनु, जमुन-भँवर-छवि-छीनि॥
चरन - कमल, कस, वरने जाहीं * मुनि-मन-भौंरा, जेहि लिपटाहीं।
लीन्हें, संग, अपन - बायें - कर * आदि-शक्ति, छबि-सिंधु, जगत-जर॥
जासु-अंस, उपजत गुन-खानी * बहुत उमा - लक्ष्मी - ब्रह्मानी।
उपजत जग, जेहि भवैं चलाये * सोई सीता, राम - के - बायें॥

छबि - समुद्र, हरि - रूप, निहारे * रहे देखि दोउ, पलक न मारे ।
देखत, आदर, रूप अनूपा * छकत न देखे,'मनु','सतरूपा' ॥
भा आनँद, कि, तन-सुधि भूलेउ * पकरि पाउं,धरती, सिर मेलेउ ।
कमल-से-कर, प्रभु, सिर पर फेरे * लीन्ह उठाय, दया - के - चेरे ॥
दोहाः—बोले कृपा-निधान, तब, "अति प्रसन्न, मोहिं जान" ।
१४६. "माँगहु बर, जो भाय मन, जग-दाता पहिचानि" ॥
सुनि, प्रभु-वचन, जोरि दोऊ कर * वचन कहे, कोमल, धीरज धरि ।
मनुः—नाथ!देखि,पद-कमलतुम्हारे * अब, पूरे सब, काम हमारे ॥
एक लालसा. बढ़, मन माहीं * कठिन,सहज,कहिआत,सो,नाहीं ।
तुम, दइ सकत, सहज,प्रभु ! जाने * मो कहँ, कठिन, दीनता माने ॥
कल्प-वृक्ष, जस पाय, भिखारी * बहु धनमांगत, सकुचत, भारी ।
वृक्ष-प्रभाउ, न मन मां जानत * तस, मांगत, मोहूँ सकुचावत ॥
सो, तुम जानत, अंतर-जामी * करहु, मनोरथ, पूरन, स्वामी ! ।
प्रभुः—छांड़िसोच, मांगहु,नृप,मोही* अस न कछू, दइसकउं न तोही ॥
मनुः दोहाः – दानिन महँ, सबते बड़े, कहउं, नाथ ! सत-भाउ ।
१५०. चाहत, तुम-सम, एक-सुत, प्रभु ते, कवन छिपाउ ॥
देखि प्रीति, सुनि, बचन अमोले * "ऐसा ही हो" स्वामी बोले ।
प्रभुः—आपन-सम,खोजहुंकहँ,जाई, * सुत तम्हरा, मैं, हुइहौं, आई ! ॥
सत-रूपहिं, देखा कर जोरे * मांगहु देबी, जो, मन, तोरे ।
सतरूपाःजोबर,चतुरभूप,तुम्ह,मांगा *सोइ,कृपालुमोहिं, अतिप्रियलागा॥
मांगि ऐस बर, कीन्ह ढिठाई * सोउ, भगत-हित, तुमहिं, सुहाई ।
बृह्मा, और देव, तुम जनमे * बृह्म, रहत-जो-सब-के-मन-में ॥
अस समुझत, मन, संसय होई * कहा आप जो, ठीकहि होई ।
जौन, तुम्हारे, भक्त कहावहिं * सुख उठांहि, औरजो गतिपावहिं॥
दोहाः—सोइ सुख, सोइ गति सोइ भगति, सोई चरन—स्नेहु ।
१५१. ज्ञान सोइ, सोई रहनि, हमहिं, कृपा करि, देहु ॥

सुनि, अस, गूढ़ वचन की रचना * कृपा-सिंधु, बोले, मिठ-वचना ।
प्रभुः—जो कछु रुचि, तुम्हरे मन माहीं * मैं, सो, दीन्ह सब, संसय, नाहीं ॥
ज्ञान, अनोखा, माता, तोरे * कबहुँ न मिटइ, दया ते मोरे ।
मनुः—चरन लागि, 'मनु' कहा, बहोरी * एक और बिनती है, मोरी ॥
चाहउं तुमहिं, पुत्र की नाईं ! * जग, चहुँ, मूरख, मोहिं बताईं !
मनि-बिनु, सर्प, पानी-बिनु मछरी * जियउँ न, तस, मैं, तुमते बिछुरी ॥
कविः—अस बर माँगि, चरन गहि रहेऊ * "ऐसइ होहि" कृपा-निधि कहेऊ ।
प्रभुः—लेहु, कहा, अब, मोरा, मानी * बसहु जाइ, इन्द्रहिं-रज-धानी ॥

सो०:—तहं, करि भोग, बिसाल, कछुक समय बीते, प्रिय ।
१५२. हुइ हौ, आ, महिपाल, अवध के तुम, मैं, तोर-सुत ॥

नर-तन, इच्छा-ते, सिर, धारे * प्रगट होउँ, मैं, भवन तुम्हारे ।
अंसन-सहित, देह धरि, ताता ! * करउँ चरित, भगतन-सुख-दाता ॥
आदर, सुने, चरित, बड़-भागी * तरिहइं नर, ममता, मद, त्यागी ।
नित्य-सक्ति जेहि, जग, उपजाया * धरइ देह, मोरी, सोइ-माया ॥
सुफल, मनोरथ, करउँ तुम्हारा * सत्य, सत्य प्रन, सत्य हमारा ।
कविः—फिर-फिर, अस कहि कृपा-निधाना * अंतर-धान, भये, भगवाना ॥
भूप, रानि, धरि भक्ति-कृपाला * तेहि आश्रम महँ, रहि कछु काला ।
बसे जाइ, फिर, बिन-ही-पीरा * इन्द्र - लोक मां तजे - सरीरा ॥

जागवलिकः—दोहाः—अति पवित्र, कही यह कथा, उमा के हित वृष-केतु ।
१५३. भरद्वाज ! औरहु सुनहु, राम-जन्म कर हेतु ॥

सुनु, मुनि ! कथा, पवित्र, पुरानी * जो, गिरिजा-हित शंभु, बखानी ।
जानत है जग, "केकय" देसू * "सत्य-केत", जह, रहत नरेसू ॥
अति धर्मी, नीती - स्थानां * तेज, प्रताप, सील, बलवाना ।
तेहि के, भये, पूत, दुइ, बीरा * सब गुन भरे, महा रन-धीरा ॥
जेठ-पुत्र, जे, राजहिं पावा * सो, "प्रताप-भानू" कहिलावा ।
दूसर सुत, "अरि-मर्दन" नामा * हटइ न रन ते, अस बलवाना ॥

भाइन महँ, रही, बहुत मिताई * प्रीति, बिना-छल-दोस, लगाई ।
भूप, राज, जेठे सुत, दीन्हा * चाहे-भक्ति, गवन, बन, कीन्हा ॥
दोहाः—जेठ पुत्र, राजा भयो, फिरी दुहाई, देस ।
१५४. वेद-रीति, पालत प्रजा, पाप, न, कहूँ, कलेस ॥
मंत्रा, हितकारी, अति, स्याना * नाम, 'धरम-रुचि' 'शुक्र'-समाना ।
तहिकर भाई, अति बल-बीरा * दोऊ भाई, अति रन-धीरा ॥
सैना, चार-रंग, सँग माहीं * बीरन की कछु गिनती नाहीं ।
देखि सैन, राजा हर्षाना * बाजे बजन लागि, विधि नाना ॥
विजय हेत, सब सैन सजाई * चला, नीक दिन, धौंस बजाई ।
बहुत जग्हन, फिर, भई लराई * राजन पर, बल ते, जय पाई ॥
बल ते, सात दीप, बस-कीन्हे * दीन्ह छांड़ि, जुरमाना लीन्हे ।
सकल, जगत-मंडल, तेहि काला * इक 'प्रताप-भानू,' महि-पाला ॥
दोहाः—बल ते, जग कहँ, जीति कर, नगरी कीन्ह प्रवेस ।
१५५. धरम, अर्थ, और काम की, सेवा, करत नरेस ॥
भूप-'प्रताप-भानु'-बल पाई * काम-धेनु भइ भूमि, सुहाई ।
दुःख-रहित-जग, प्रजा सुखारी * धरम, सील, सुन्दर, नर, नारी ॥
हरि-पद महँ, मंत्री की प्रीती * राजाहिं, रहा, सिखावत, नीती ।
बृह्मण, पितर, संत, गुरु, देवा * करइ, सदा, नृप, सबकी सेवा ॥
राज - धरम, जे, वेद बखाने * आदर ते, करि करि, सुख माने ।
दिन दिन, देत, बहुत विधि, दाना * सुनत सास्त्र, और वेद, पुराना ॥
कुआँ, तलाउ, बावड़ी प्यारी * बाग, और, सुन्दर फुलवारी ।
विप्र, सुरन, हित, भवन सुहाये * अदभुत, सब तीरथन, बनाये ॥
दोहाः—यज्ञ, बताये - वेद - जे, जेते, सबहि - प्रकार ।
१५६. हुइ प्रसन्न, कीन्हें, सबहिं, मन-ते, दस - सौ - बार ॥
कीन्ह यज्ञ, बिन - इच्छा नाना * राजा - ज्ञानी, परम - सुजाना ।
कीन्ह जो धरम, करम-मन-बानी * कृष्ण-अरपन, करि दीन्हा, ज्ञानी ॥

एक बार, घोड़ा असवारी * राजा, लै सँग, साज - सिकारी।
'विंध्याचल' - गँभीर-बन गयेऊ * सुन्दर हरना, मारत भयेऊ॥
बन महँ दीख, सुअर, इक नाहू * जनु, बन छिपेउ, चँद्र गहि, राहू।
दांत, चंद्र-जनु, मुख न समाहीं * लगत, क्रोध करि उगिलत नाहीं॥
दांत, भयानक, की छबि गाई * बदन बड़ा, मोटा अधिकाई।
घुर - घुरात घोड़ा की आहट * भौंचक, देखत, कान उठावत॥

दोहाः—चोटी नील - पहार की, सुअर बड़ैला जानि।
१५७. हांकेउ घोड़ा, सांट दइ, बिन हांके अति हानि।

सुने टाप, ढिग-आवत जाना * भागि सुअर, जनु,पवन-समाना।
राजा, तीर, धनुष-धरि, ताना * धरती, मिलि गयउ देखत वाना॥
तकि. तकि, तीर. महीस, चलावा * करि छल, सुअर, सरीर बचावा।
प्रगटत, छिपत, गयो, सो भागा * रिस कीन्हे, भूपहु, सँग लागा॥
दूरि गयो लइ, घन-बन जाई * जहँ गज-घोड़ा-गति नहिं, भाई।
भूप, अकेला, अधिक कलेसू * छांड़ि न पीछा, तहूं, नरेसू॥
देखि, सुअर, राजा कर धीरा * घुसा, पहाड़ी-गुफा, गँभीरा।
सका न घुसि, नृप, अति पछिताई * लौटत, बन, मग, गयो भुलाई॥

दोहाः—भूखा, प्यासा, थकि, दुखित, राजा, घोड़ समेत।
१५८. नदी, ताल, ढूँड़त फिरत, बिनु-जल, विकल, अचेत॥

विचरत बन, आश्रम, इक देखा * बैठा, इक नृप, कपटी-वेषा।
रहा, राज-जेहि, लीन्ह छिनाई * छांड़ि सैन, रन ते, भाजि आई॥
जय,'प्रताप - भानू' की, जानी * 'कुदिन मोर',अस,जी महँ ठानी।
गयो न घर, मन, बहुत गलानी * भेंटि न'भानू'अति-अभिमानी॥
मारि क्रोध, जनु, भूप, भिखारी * बनि तपसी,बन, समय गुजारी।
तेहि के तीर, गवन, नृप, कीन्हा * मुनि 'प्रतापभानू' कहँ, चीन्हा॥
भूप, न, प्यास-विकल, पहिचाना * सुन्दर वेष, महा - मुनि जाना।
उतरि सवारी, कीन्ह प्रनामा * मुनि,बतायो नहिं, आपन नामा॥

दोहाः—राजहिं, प्यासा देखिकर, दीन्ह, तलाउ, बताइ।
१५६. पी जल, नृप, हर्षित भयो, घोड़ा सहित, नहाइ॥

मिटी थकन, भूपति, सुख पावा * मुनि, आस्रम कहँ, राजहिं लावा।
आसन दीन्ह, सांझ भइ, जानी * बोला, तपसी, कोमल बानी॥
मुनिः–को तुम बन,महँ,फिरत,अकेले* काहे, ज्वानी अपन ढकेले।
चक्र-वर्त्ति के लच्छन तोरे * दया लागि, देखत, अति, मोरे॥
राजाः–है प्रताप-भानू, इक राजा * मोरे सिर, मंत्री कर काजा।
मैं, सिकार महँ, गयो भुलाई * बड़े भाग, देखेउं पद, आई!॥
हम कहँ दुर्लभ दरस तुम्हारा * होनिहार, कछु भला हमारा।
मुनिः–कह मुनि तात!भयो अँध्यारा * सत्तर जोजन, नगर तुम्हारा॥

दोहाः—रात अँधेरी, बन विकट, राह को, ओर न छोर।
रहउ, आज की रात, तुम, उठि जायो, भये भोर॥

कविः— तुलसी, जस होतव्यता, तैसी मिलत सहाइ।
१६०. आप, न आवत, पास जो, ताहि, तहाँ, लइ जाइ॥

कविः-"बहुत भला",आज्ञा,धरि सीसा * पेड़ ते, घोड़ा, बांधि, महीसा॥
नृप, बहु भाँति, प्रसंसेउ ताही * वंदि चरन, निज भाग सराही।
राजाः–कहे बचन कोमल, फिर,भाई !* जानि पिता,मुनि!करुब ढिठाई॥
हे मुनि! मो का, सेवक जानी * कहा नाम सुभ, कहउ,बखानी?।
कविः–भूप-न-मुनि,मुनि,राजहिं जाना * भूप सीध, मुनि कपट-सयाना॥
बैरी, फिर छत्री, फिर राजा * छल ते,कीन्हचहत, निज-काजा।
सुमिरि राज-सुख,शत्रुहिं,दुख भा * सुलगत छाती, मानहु, आँवा॥
भूप-बचन-भोले, सुनि काना * सुमिरि बैर, मन महँ, हर्षाना।

दोहाः—कपट-सनी, बानी कही, कोमल, जुगिति विचारि।
१६१. नाम,'भिखारी,' मोर अब, ना धन, ना घर-बार॥

मुनिः { कह नृप,जो नर,ज्ञान-निधाना*जिनकहँ,तुम-सम, नहिंअभिमाना॥
अपने कहँ, सो, रहत छिपाये * धरे कुबेष, कुसल सब पाये॥

कहत टेरि, तेहिते,वेद और मुनि * भगवानहिं, अति-प्यार, भक्तजन।
विन-घर-धन, तुम, जैस भिखारी * बृह्मा, शिव हू, संसय, भारी॥
जो कछु होहु, मोर प्रनामा * मो पर, कृपा करहु, भगवाना!।
कविः—प्रीति-सुभाउ भूप कर, देखा * अपने महँ, विस्वास बिसेखा॥
सब प्रकार, मुट्ठी करि राजहि * अस बोलत, वहु प्रेम जनावहि।
मुनिः— सत्य कहउँ, मैं,हे,महिपाला! * यहां, रहत, बीता, बहु काला॥

दोहाः—मिलेउ न केहु न, भेद, मैं, अपन, जनायो भाइ!।
मान,-जगत-कर, अग्नि-सम, तप-बल देत जराइ॥

सो०ः—मूरख, रहत भुलाइ, देखि, बेप-भल, नहिं चतुर।
१६२. 'मोर', सर्प-नित खाय, बोली बोलत मीठ कस॥

तेहिते, गुप्त रहेउं, जग माहीं * हरि-ते, केहु-ते-मतलब नाहीं।
प्रभु तौ जानत, विना जनाये * कौन सिद्धि, संसार-रिझायें!॥
तुम, पवित्र, अति-प्यारे मोरे * मो पर, प्रीति, प्रतीतिहु, तोरे।
जो छिपाउँ, अबहूं, मैं, तोही * लगत दोस, अति भारी, मोही॥
कविः—जस,जस,मुनि,वैराग,वखानत * तस, विश्वास, भूप-मन, बाढ़त।
देखि, करम-मन-वानी, निजवस * तपसी बगुल-भगत,बोला अस॥
मुनिः—नाम हमार 'एक-तन' भाई * बोला राजा, सुनि, सिरनाई।
राजाः—अर्थ, नामकर, देहु बखानी * अतिसेवक,मोहिं,आपन,जानी॥

मुनिः—दोहाः—पहिले, जब सृष्टी रची, तब, मैं, जनमा आय।
१६३. नाम, 'एक-तन' अस परेउ, दूसर तन नहिं पाय॥

करहु न अचरज,सुनि,मन माहीं * बेटा! तप ते, दुर्लभ नाहीं।
रचेउ, तपहिं, बृह्मा, संसारा * विष्णु,तपहिं, भा पालन-हारा॥
तपहि ते, संकर, करत सँहारा * तप, दुर्लभ, नहिं कछु, संसारा।
कविः—राजहिं,भा,सुनि अस,अनुरागा * कथा पुरानी,मुनि,कहि लागा॥
करम, धरम, वहु, कहीं कहानी * करत विराग, छाँड़ि रति,ज्ञानी।
जग कर पालन-प्रलय औ, रचना * अचरज-भरे, कहे, बहु बचना॥

सुनि, राजा, तपसी-बस भयेऊ * आपन नाम लीन्ह, मुख कहेऊ ।
मुनिः—कह मुनि, राजा ! जानउं तोही * नाम छिपावा, तहुं प्रिय मोही ॥
सो०:—राजा ! ऐसिहि नीति, जहँ तहँ, नाम न कहत, नृप ।
१६४. तुम पर मोरी प्रीति, ऐस चतुरता, मन समुझि ॥
जानत, नाम, बनावन आये * "राजा-सत्य-केतु" के ज्याये ।
गुरु की कृपा, जानुं, सब-राजा * अपन-सिद्धि कहि, होत अकाजा ॥
राजा ! दीख, तुम्हार सुधाई * प्रीति, प्रतीति, नीति-चतुराई ।
टूटि परी, ममता, मन मोरे * अपन-कथा कहुं, पूँछे तोरे ॥
भा प्रसन्न, मैं, संसय नाहीं * मांगहु, जो कछु, हो मन, माहीं ! ।
कविः—सुनि अस वचन, भूप हर्षाना * गहि पद, विनय कीन्ह विधि नाना ॥
राजाः—कृपासिंधु, मुनि ! दरसन तोरे * चारि पदारथ, मुट्ठी मोरे ।
तहूँ, प्रसन्न, तुमहिं जब पावत * मांगि, कठिन बर, सोक नसावत ॥
दोहाः—मरन बुढ़ापा-दुख न हो, रन, मोहिं, जीत न कोइ ।
१६५. बिनु शत्रू, जग-राज मोहिं, कल्प, एक-सौ, होइ ॥
मुनिः—कह तपसी, नृप ! ऐसहि होई * कठिन बात, इक, सुनि ले, सोई ।
धरिहैं, कालहु, तुम-पद, सीसा * बृह्मण-कुल, इक, छांड़ि, महीसा ! ॥
ब्रह्मण, तप-बल ते, बलवाना * विप्र-क्रोध, है कठिन बचाना ।
जो, विप्रन, बस करहु, नरेसा ! * हो बस, बृह्मा, विष्णु, महेसा ॥
बृह्मण ते, कोउ, जीति न पावत * कहत सत्य, दोउ भुजा उठावत ।
विप्र-स्राप-विनु, सुनु, महिपाला * नास न होइ, तोर, केहु काला ॥
कविः—हर्षेउ राउ, बचन सुनि, तासू * "होइ, मोर, अब, नाहीं, नासू" ।
राजाः—कृपा तुम्हारी, कृपा-निधाना ! * सबहिं काल, मो कहँ, कल्याना ॥
मुनीः-दोहाः—कहा मुनी, "ऐसहि हो", फिर, कहि कपट की बात ।
१६६. 'भूलेहु, बन, मोहिं मुनि मिला' कहेउ, न, मुख, केहु, तात ॥
मना कीन्ह, मैं, ता ते, राजा ! * मुँह ते कहा, तौ, होइ अकाजा ।
छुटे कान, जो, परी बात यह * सत्य, नास, करि देहि, तात, यह ॥

कही जो तुम, तौ, विप्र-स्राप ते * नास तोर, हुइ जाय, आपु ते ।
तोरा नास, और - विधि, नाहीं * केर क्रोध, शिवहु, मन माहीं ॥
राजाः—ठीक कहा, जब, कोप बढ़ावत * बृह्मण,गुरु,फिर, कौन बचावत! ।
बृह्मण-कोप, सकत, गुरु, टारा * रूठे गुरु, को राखन-हारा ! ॥
जो, न चलब, मैं, कहे तुम्हारे * नास होइ, नहिं सोच हमारे ।
एकहि डर, डरपत, मन मोरा * विप्र-स्राप, जग महँ, अति घोरा ॥

दोहाः—होंहि, विप्र, वस, कौन विधि, कहउ, कृपा करि, सोउ ।
१६७. मुनिः—दीन-दयालू, छांड़ि तुम, हितू, न दीखत, कोउ ॥

बहुतक जतन, भूप, जग माहीं * साधन कठिन, होइ, और,नाहीं ।
भूप, सहज, पर, एक उपाई * है, तेहू, पर, इक कठिनाई ॥
बस मँह मोर, जुगुति है सोई * गवन मोर, तुम-नगर न होई ।
आज तलक, जब ते, मैं, भयेऊ * काहू के घर, गाँव, न गयेऊ ॥
जो न जाउँ, बिगरइ तुम-काजा * असमंजस, मोहिं,लागत,आजा ।
राजाः—सुनि,राजा कह, कोमल बानी * वेद्न, मुनि, अस,नीति,बखानी॥
बड़े, प्रीति, छोटिन पर करई * घासहु, सिर पर, परबत धरई ।
सागर अगम, फेन, सिर राखत * धरती, सदा, धूरि, सिर धारत ॥

दोहाः—अस कहि, गहे, प्रसन्न, पद, स्वामी ! होहु कृपाल ।
१६८. मोरे दुख, तुम, दुख सहऊ, सज्जन, दीन दयाल ॥

कविः—राजहिं, अपने बस महँ जाने * कपट - चतुर, बोला, हर्षाने ।
मुनिःसत्य कहऊं, भूपति!सुनु,तोही * जग, नाहीं, कछु, दुर्लभ, मोही ॥
अवसि, काज, मैं, करिहौं तोरा * मन-तन-बचन, भगत, तू, मोरा ।
जोग - जुगुति - तप-मंत्र - प्रभाऊ * होत, तबहिं, जब, करइ छिपाऊ ॥
जो, नरेस, मैं, करउं रसोई * तुम परसौ,मोहिं,जानि न कोई ।
अन्न, सो,जोइ-जोइ, भोजन करई * तुम-आज्ञा,सोइसोइ,सिरधरई ॥
फिर, उनके घर, जो, जो खावे * राजा ! तोरे, बस हुइ जावे ।
जाय, उपाउ, भूप यह कीन्हेउ * एक बरस, संकलपहिं दीन्हेउ ॥

दोहाः—सौ - हजार, विप्रन, नये, न्योतेउ, सँग - परिवार ।
१६९. करउं रसोई, आय मैं, भरि - संकल्प, तुम्हार ॥

यह विधि, भूए, कष्ट तौ थोरे * होहिं, विप्र सब, वस महँ, तोरे ।
होम, यज्ञ, करिहैं, जव, सेवा * विप्र, तवहिं, वस हुइ हैं देवा ॥
देउं, और-इक-बात, सुनाई * यह-जामा, ऐहउं, नहिं, भाई ! ।
तोर पुरोहित कहँ, करि दाया । * लेऊं हरि, मैं, अपनी-माया ॥
तप-बल,तेहि,करि अपन-समाना * एक वरस, रखि, यह स्थाना ।
मैं,धरि, तासु बेष, सुनु, राजा ! * करिहउं,सब विधि तुम्हरा काजा॥
गई रात, अब, सोवहु, भाई ! * तम्सिर दिन, फिर,मिलिहौं, आई ।
घोड़ा-सहित,तुमहिं, तप के वल * सोवत, घर पहुंचइहौं, इक पल ॥

दोहाः—आउब मैं, सोइ बेप धरि, पहिचानेउ, तव, मोंहि ।
१७०. जब, एकांत बुलाइ, सव, कथा, सुनइहौं, तोंहि ।

कविः-सोवा राजा, आज्ञा मानी * बैठा आसन, कपटी - ज्ञानी ।
राजा थकित, नींद, बहु, आई * सोवत, मुनि न,सोच अधिकाई॥
'काल-केतु'-निसिचर, तहँ, आवा * वने-सुअर, जेहि, भूप-भुलावा ।
रहा, मित्र, सो, तपसी-केरा * जानत, भाँति कपट-बहुतेरा ॥
तेहि के सौ सुत, और, दस भाई * जितइ-न, दुष्ट, सुरन-दुख-दाई ।
पाहिले भूप, लराई, मारे * विप्र, संत, सुर, देखि दुखारे ॥
पाछिल सुधि, जब, दुष्टहिं आई * मुनि त मिलि, सो, राय मिलाई ।
नासइ रिपु, सोइ होइ उपाई * भूप, भावी-वस, जानि न, भाई ॥

दोहाः—रिपु तेजसी, अकेल चहुं, छोट न समुझइ, ताहु ।
१७१. सूरज, चंद्रहिं, देत दुख, सिर-कटि, अबहूँ, राहु ॥

तपसी, आपन मित्र, निहारी * मिलेउ, हर्षि, उठि, भये सुखारी ।
मित्रहिं, कहि, सब कथा सुनाई * तव, राक्षस, बोला, सुखपाई ॥
काल-केतु करउँ ठीक शत्रू, अब जाना * मोरा कहा, मित्र ! जो माना ।
लेहु, सोच तजि, अब, कछु सोई * बिधि, बिनु दवा, रोग दइखोई ॥

कुल-समेत, जर-शत्रु नसाई * चौथे दिन, मिलिहौं, मैं, आई ।
कविः-मुनि कहँराक्षसुबहुसमुझावा * क्रोधी राक्षस, तब, चलि आवा ॥
राजा, और घोड़हिं लइ, धावा * इक छन महँ, घर पर पहुँचावा ।
भूप, रानि-सँग, दीन्ह पराई * घोड़ा, घुड़-साला, बँधवाई ॥
दोहाः—राजा के, फिर, प्रोहिताहिं, हरि लै, गयो सँभारि ।
१७२. राखा, गिरि की खोह मां, तेहि की बुद्धि बिगारि ॥
रूप पुरोहित का, निज, धारे * सेज पुरोहित, पांउ पसारे ।
जागा भूप, भोर भा जाना * घर महँ आवा अचरज माना ॥
मुनि की महिमा, मन महँ जानी * रानि-ओट, निकसा, हर्षानी ।
चढ़ि घोड़ा, फिर, बन महँ गयेऊ * जाना, नर, नारी, नहिं केऊ ॥
कुछ दिन बीते, राजा आवा * घर घर, आनँद बजत बधावा ।
उपरोहितहिं, दीख जब राजा * आई, हुइ, सुधि, मोई काजा ॥
कटे तीन दिन, नृप, जुग जानी * कपटी-मुनि-पद, मति लपटानी ।
जानि समय, उपरोहित आवा * पहिले-कस, राजहिं समुझावा ॥
दोहाः—नृप हर्षेउ, पहिचानि गुरु, भ्रम ते, रहा न ज्ञान ।
१७३. सौ हजार, विप्रन, नये, न्योति देइ सनमानि ॥
कपटी-मुनि जेवनार बनाई * छरस, चारि-विधि, वेद-बताई ।
माया-बस, तेहि, रची रसोई * अस भोजन, गिनि पाव न कोई ॥
तेहि महँ, पसु-कर-मांस, पकायो * बृह्मण हू का मांस, मिलायो ।
भोजन कहँ, सब विप्र बुलाये * धोइ चरन, सादर, बैठाये ॥
परसन कहँ, कीन्हा, महिपाला * भइ अकास-बानी, तेहि काला ।
बानीः—"हे विप्रहु ! उठिउठि घरजाहू * बड़ी हानि, भोजन ना खाहू" ॥
"मिला, रसोई, विप्रन - मांसू" * बृह्मण उठे, करे विस्वासू ।
कविः—भूप, सकल, मति, मोह भुलानी * भावी-बस, निकसत नहिं बानी ॥
दोहाः—विप्रन कह, अस, रिस करे, कीन्हें बिना विचार ।
१७४. "जाइ निसाचर होहु, नृप !, मूढ़, सहित परिवार" ॥

विप्रः-सब विप्रन, लीन्हा बुलवाई * सब कहँ भ्रष्ट कीन्ह तू चाही ! ।
ईश्वर राखा, धरम, हमारा * नास होइ तोरा परिवारा ! ॥
बरस बीच नासहि सब खेवा ! * रहइ न कुल, कोउ, पानी-देवा ।
कविः-सुनं स्राप, राजा, डर मानी * फिर, अकास ते, भइ असवानी ॥
ठीक स्राप, विप्रन, नाहिं दीन्हा * भूप, कोउ अपराध, न कीन्हा ।
भा अचरज, विप्रन, सुनि, बानी * गयो भूप, जहँ भोजन-खानी ॥
ना भोजन, न पकावन-हारा * फिरा देखि, मन, सोच अपारा ।
विप्रन कहँ, सब कथा, सुनाई * परेउ भूमि, डरते, अकुलाई ॥
विप्रः—दोहाः -भूपति ! भावी मिटत नाहिं, साला, दोस न तोर ।
१७५. उलटि सकत, अब, स्राप, नहिं, विप्र-स्राप, अति घोर ॥
कविः—असकहि,बृह्मण,भवनसिधाये * समाचार, पुर लोगन पाये ।
सोचत, विधि कहँ दोस लगावत * फिरत-हंस, कस, कागबनावत! ॥
उपरोहिताहिं, घरहिं, पहुँचाई * राक्षस, मुनि कहँ, खबर सुनाई ।
सो मुनि, जहँ-तहँ, पत्र पठाये * साजि सजि सैन भूप सब धाये ॥
घेरी नगरी, ढोल, बजाई * लागि होन, बहु भाँति लराई ।
जोधन, अपन, दिखाई, करनी * राजा, लइ-कुल गा, वैतरनी ॥
सत्य कहत, कुल, बचा न कोई * विप्र-स्राप, कहुं, झूँठ न होई ।
नीति नगर, फिरि, दीन्ह बसाई * लौटे राजा, जय-जस पाई ॥
जागबलिकः—दोहाः—भरद्वाज ! सुनु, जेहि, जब, चहइ विधाता, हानि ।
१७६. होत, पिता, जम, धूरि, गिरि, रसरी, सांप-समान ॥
हे मुनि ! समय पाइ, सोइ राजा * भयो निसाचर, सहित समाजा ।
भुजा बीस, पाये, दस मूड़ा * 'रावन' नाम, बली अति, सूरा ॥
छोट-भाइ, "अरिमर्दन" नामा * "कुँभ-करन" भा अति बल-धामा ।
मंत्री रहा "धरम - रुचि" जासू * सौतेला, छुट - भाई, तासू ॥
नाम'विभीखण', जेहि,जग जाना * ज्ञान-निधान, भगत-भगवाना ।
सुत, सेवक, सब, राजा - केरे * भये, निसाचर घोर, घनेरे ॥

कुटिल, चहत-मन-रूप-बनावत * ज्ञान-रहित, देखे डर लागत।
निरदइ, पापी, और हत्यारा * कह दुख,नहिं,दीन्हा,संसारा ! ॥

दोहाः—उपजे जाइ, "पुलस्य"—कुल, उज्जल-जस-संसार।
१७७. मे, विप्रन के श्राप ते, पापन-कर-अवतार ॥

कीन्ह, बहुत, तप, तीनहु भाई * अस्मअसकठिन,किकहिनहिंजाई।
हरिः—लखितप, चलि,आये,भगवाना * मांगहु बर, प्रसन्न,मोहिं,जाना ॥
कविः—गहिपदविनय कीन्हदस-सीसा * वोला बचन, सुनहु जगदीसा!।
रावनः—हम, काहु के, मरहिं न, मारे * नर, बानर, दोउन-कहँ-छांड़े ॥
हरिः—'हो ऐसा,' तुम बढ़-तप कीन्हा * शिव, बृह्मा, दोऊ, बर दीन्हा।
कविः—फिर,प्रभु,कुंभ-करनपहँ,गयेऊ * ताहि देखि, मन,अचरज भयेऊ ॥
जो, यह दुष्ट, करइ, नित, भोजन * लागइ, धरती, यह ते, उजरन।
सरस्वती, आ, तेहि-मति फेरी * मांगी नींद, मास छः केरी ॥

दोहाः—गये, विभीषण-पास फिर, कहा, "पुत्र ! बर मांगु"।
१७८. तेहि मांगा, भगवान-पद, निरमल, मन-अनुराग ॥

कविः—दीन्हे बर, भगवान सिधाये * हर्षित, ते, आपन-घर, आये।
'मय'-राक्षस-कन्या, "मन्दोदरि" * रूप-वती, नारी, अति सुन्दरि ॥
सोइ, 'मय' दीन्ह,'रावनहिं' आनी * जानि, होइ राक्षस-पति रानी।
भा प्रसन्न नारी-भलि, पाई * दोउ भाइ, फिर, ब्याहे जाई ॥
सागर-बिच, 'त्रिकूट,-पहारा * भारी,दुर्गम, 'विधि'-ही-बनावा।
सो, 'मय'-राक्षस, आइ, सँवारा * सोने कर, इक किला, उठावा ॥
नागन केरी पुरी, सुहावन * इन्द्र-पुरी, जो, अति मन-भावन।
तिन्ह ते,अधिक,चमन और बंका * रची पुरी, जग-जानत, "लंका"॥

दोहाः—खाई खींचि, समुद्र की, गहिरी, चारहु-ओर।
कनक-कोट, रतनन-जड़ा, बरनत, मिलत न छोर ॥
हरि-इच्छा, जेहि कल्प कहँ,जो, राक्षस-पति होइ।
१७९. सूर, प्रतापी, अति बली, बसहि, सैन लइ, सोइ ॥

रहे, तहां, जोधा, जो, मारे * ते, देवन ते, गे सब मारे।
इन्द्र की इच्छा ते, बहुतेरे * कीन्ह, 'कुबेर' - के रत्तक, डेरे॥
दस-मुख, कहूँ, खबर, अस, पाई * साजे सैन, गढ़, घेरा जाई।
देखे, जोधन की बहुताई * भागे रत्तक, प्रान बचाई॥
फिरि, सब नगर, 'दसानन' देखा * गयो सोच, सुख भयो बिसेषा।
मिली सहज, जग-दुर्लभ-जानी * कीन्ह, तहाँ, 'रावन', रजधानी॥
जेहि जस जोग, बांट, करि दीन्हे * सुखी, सकलनिसिचर, करिदीन्हे।
कीन्हा, फिर, 'कुबेर' पर धावा * पुष्प-बिमान छीनि, लेहि, सावा॥

दोहाः—खेलहिं माँ, कैलाश, फिर, लीन्हा, जाइ, उठाय।
१८०. मनहुँ, तौलि निज बांह-बल, चला, बहुत सुख पाय॥

सुख, संपाति, सुत, सैन, सहाई * जय, प्रताप, बल, बुद्धि, बड़ाई।
रोज, नये, सब, बाढ़त, भाई! * भये लाभ, जस, लोभ अधिकाई॥
अति-बल, कुँभ-करन-अस, भाई * भा, न ऐस जोधा, जग, आई।
मदिरा पिअत, मांस छः, सोवत * जागत, तीन-लोक ·जिय-डरपत॥
भोजन करत, नित्य, कहुं, सोई! * तुरत, जगत सब, चौपट होई!।
अति रन-धीर, न जाइ बखाना * औरहु वीर, तहां, बलवाना॥
'मेघनाद', जेठा सुत, तासू * पहिल नाम, जोधन मँह, जासू।
होत न सनमुख, रन मँह कोई * सुर-पुर मँह, हल-चल, नित होई॥

दोहाः—'कुमुख', 'अकंपिन', 'कुलि-सरद', 'धूम-केतु', 'अतिकाइ'।
१८१. एक, एक जग जीति सक, वीर, बहुत, रहि छाय॥

इच्छा-रूप, धरत, करि माया * सपनेहु, जिनके, धरम न, दाया।
'दसमुख', बैठि, सभा, इक-बारा * कुल, अपार, जब, अपननिहारा॥
अपन कुटुंभी, बेटा, नाती * नहिं गिनिती, सबनिसिचरजाती।
सैन देखि, जन्मा-अभिमानी * बोला वचन, क्रोध-मद-सानी॥
रावनः—सुनहु, निसाचरि! सबदइकाना * देवन कहँ, मम-बैरी जाना!।
ते, सन्मुख, नहिं करहिं लराई * भाजहिं, लखि बल, प्रान बचाई॥

तिन्ह कर मरन, एक विधि, होई * समुझावत, जानहु, सब कोई ॥
वृह्म-भोज, यग, होमहु, स्राधा * डारहु,सब महँ,जाइ के, बाधा ॥

दोहाः—फिर, भूखे - बल-हीन हुइ, आपहि, मिलिहैं आय ।
१८२. तब, मरिहौं, कै, छांड़िहौं, आपन - दास बनाय ॥

कविः—'रावन','मेघनाद' बुलवावा * सुत सिखाय, बल बैर बढ़ावा ।
रावनः- { रन के वीर, देव, बलवाना * लरिवे कर,जिन्ह कहँअभिमाना॥
तिनहिंजीति,रन लायोबांधी * मोरी आज्ञा, बेटा ! साधी ।}
यह विधि, सब कहँ,आज्ञा दीन्ही * आपहु चला, गदा, इक,लीन्ही ॥
चाल, कि, पृथ्वी, बोझल, हालत * गरज, कि,नारिन-गर्भ गिरावत ।
आवत देखा, क्रोधित - रावन * लगे, गुफन, जा, प्रान बचावन ॥
दिगपालन के लोक, सुहाये * इक, इक, 'रावन', सूने पाये ।
सिंह, मनहु, फिर, गरजन लागा * देवन, गारी, दीन्ह, अभागा ॥
रन - मतवार, कीन्ह, जग, धावा * आपन सम, जोधा, नहिं पावा ।
{ बरुन, कुवेर, पवन, रबि, चंदा * काल,अग्नि,जम,औरमुनि-वृंदा ॥
सिद्ध, देव, नर, किन्नर, नागा * करि हठ, सब के पाछे लागा ।}
जीते जग के सब तन - धारी * भे, सब, रावन - आज्ञाकारी ॥
पालत आज्ञा, डर ते प्रानी * करत प्रनाम,चरन गहि, आनी ।

दोहाः—भुज-बल,जग कहँ,कीन्ह वस, छूटि न कोउ, संसार ।
चक्र - विर्त्ति राजा बने, राज इच्छा - अनुसार ॥
देव, यक्ष, गंधर्व, नर, किन्नर, नाग, - कुमारि ।
१८८. ब्याहीं, बल ते जीति, सब, अति अति सुन्दर नारि ॥

'मेघनाद' सन, जो कछु, कहेऊ * सो,जनु, पहिले ही, करि रहेऊ ।
पहिले, जिन कहँ, आज्ञा दीन्हीं * तिन्हकरचरित,सुनहु,जोकीन्हीं॥
पापी, रूप - देखि - डर - आई * निसिचर - झुंड, देव-दुख-दाई ।
करत, उपद्रव, राक्षस आई * माया ते, बहु रूप बनाई ॥
जेहि विधि,कटइ धरम-जर,भाई! * कराहिं, वेद कह, लात उठाई ।

गऊ, विप्र, जेहि देसहिं, पावहिं * नगर, गाँव, पुर, आग लगावहिं ॥
पूजा, यश, कहूँ, नहिं होई * देव, विप्र, गुरु, मान न कोई ।
नहिं हरि-भगति, न जप, नहिं दाना * सपनेहु, सुनत न वेद पुराना ॥

छंदः—जप, जोग, विरागा, तप, यग कोऊ, कान सुनइ, जेहि, रावन ।
आपुइ, उठि धावइ, रहइ न पावइ, लागइ, सबहि, नसावन ॥
अस बिगरि अचारा, सब संसारा, धरम, सुनिय, नहिं काना ।
तेहि डरपावइ, देस निकासइ, जो कह वेद पुराना ॥

सो०ः—कही न जात अनीति, घोर - निसाचर, जो करत ।
१८९. हत्या पर, अति प्रीति, पापन कर, कछु थाह नहिं ॥

दुष्ट, चोर, और बढ़े जुआरी * गुण्डा, चोरत धन और नारी ।
मानत, मात - पिता, ना, देवा * साधुन ते, करवावहिं सेवा ॥
जिनके रहिं असकाम, भवानी ! * तिनहिन्ह, समुझहु, निसिचर-प्रानी ।
देखे, अस बढ़, धरम की हानी * धरती-माता, अति अकुलानी ॥
नदी, सिंधु, गिरि, लगहिं न भारी * जस, इक प्रानी, नर दुखकारी ।
सकल धरम, रहि गये पलटि कर * कहि न सकत, कछु, रावनकेडर ॥
गऊ - रूप धरि, हृदय विचारी * गई, जहां सुर-मुनि - हितकारी ।
आपन - दुःख सुनावा, रोई * काहू ते, कछु काज न होइ ॥

छंदः—सुर, मुनि, गंधर्वा, मिलिकर, सर्वा, गये, बृह्मा के लोका ।
सँग, गउ-तन-धारी, भूमि, विचारी, वहुत बिकल, डर, सोका ॥
बृह्माः— बृह्मा सब जाना, मन महँ ठाना, मोर कछू न बसाई ।
१९०. जेहिकर तू दासी, सो अबिनासी, मोरहु, तोर सहाई ॥

सो०ः—धरती ! धरु, अब धीर, कह बृह्मा, हरि कहँ भजहु ।
जानत भगतन - पीर, कराहिं दूरि, सब, विपति यह ॥

कविः—बैठे सुर, सब, करत विचारा * कहँ प्रभु मिलइं, जो करइं पुकारा ।
जान कहा, बैकुंठहिं, कोई * कहा, क्षीर - सागर, हरि होई ॥
जा के हृदय, भगति, जस, प्रीती * प्रभु कहँ प्रगट, सदा, तेहि रीती ।

शिवः—गिरिजा ! महूँ, सभा महँ, रहेऊँ * अवसर पाय, वचन इक कहेऊँ ॥
एक - रूप, सब महँ, भगवाना * प्रेम ते, प्रगट, होत मैं जाना ।
अलग, दूरहू, चर, औ अचर महँ * प्रेम ते प्रगट, अग्नि सम, घर महँ ॥
बचन मोर, सब के मन भावा * वाह! वाह ! कहि, सबहि सराहा ।

दोहाः—बृह्मा, मन महँ, हर्षि, तब, लाये, लोचन, नीर ।
कीन्ही अस्तुति, जोरि कर, सावधान, मति - धीर ॥

बृह्माः—छंदः—जय सुर-नायक, भगतन-सुखदायक, भगतन-पालन-हारे ।
जय लक्ष्मी-पति, निसिचर-संहारत, गौ-बृह्मण-रखवारे ॥
पालत सुर धरती, अद्भुत करनी, मरम न जाने कोई ।
हौ, आप, कृपाला, दीनदयाला, करहु कृपा, अब, सोई ॥१॥
जय-जय अविनासी, सब-घट-बासी, सब-महँ, परमानंदा ।
चरित पुनीत, न-जानत-इन्द्री, जेहि, माया-रहित मकुंदा ॥
जेहि काज, विरागी, अति अनुरागी, छाँडि-मोह, मुनि-बृंदा ।
रैन दिना गावहिं गुन-गन, ध्यावहिं, जे सत, चित, आनंदा ॥२॥
जेहि सृष्टि रचाई, तीन तरह की, सँग सहाय, न दूजा ।
करु, पाप-के-नासक, चिंता मोरी, जानत भगति न पूजा ॥
जो भव-भय-टारत, मुनि-आनंदत, विपति के खंडन-हारे ।
बचन करम मन ते, छाँड़ि चतुरता, सुर, जेहि सरन निहारे ॥३॥
वेद, सारदाहू, रिषी, सेषहू, जेहि का, कोउ नहिं जाना ।
जेहि, दीनदयाला, वेद पुकारा, रीझउ श्रीभगवाना ॥
भव के तुम सेतू, सब विधि सुन्दर, गुन-खाना, सुख-धामा ।
मुनि, सिद्धि, सकल, सुर, लगे अधिक डर, करत, चरन, प्रनामा ॥४॥

दोहाः—जानि डरे, सुर, भूमि, मुनि, वचन, समेत - सनेह ।
१६१. भइ अकास - बानी, गहिर, हरन - सोक - संदेह ॥

"बानी":—मतडरपहु, मुनि, सिद्ध, देवता! * तुम-हित, हुइनर, जगत, आवता ।
मैं, और, मोर, लिये अवतारा * सूरज-बंस, करहिं उजिआरा ॥

"कस्यप","अदिति",महातपकीन्हा* पहिले,मैं, उन कहँ, बर दीन्हा।
ते, 'दसरथ', 'कौसल्या' रूपा * 'कौसल-पुर', आ,भे, नर-भूपा॥
तिनके घर, हम, चारहु भाई * रघुकुल-तिलक के, जनमहिंजाई।
नारद-वचन सत्य सब करिहऊँ *परम-शक्ति-लइ,जग,अवतरिहऊँ॥
पृथ्वी कर, सब भार, उतारहुँ * डरहु न देव! राक्षसन मारहुँ।
कविः—बृह्म-बानी,देवन,सुनि, काना * तुरत, फिरे सुर, हृदय जुड़ाना॥
धरती कहँ, तब, विधि समुझावा * छूटा डर, भरोस, जिय, आवा।

दोहाः—बृह्मा, आपन लोक गे, देवन, ऐस सिखाय।
१६२. पृथ्वी, वानर-तन-धरे, "हरि-पद, सेवहु जाय॥"

गये देव सब, निज निज धामा * धरती, देव, पाइ बिस्रामा।
जो कछु आज्ञा, बृह्मा दीन्हा * हर्षे देव, बिलंब न कीन्हा॥
बानर-देह, धरी, पृथ्वी पर * बल,प्रताप दीन्हा,तिन्ह कहँ हरि।
परबत, वृक्ष, किये हथियारा * वानर,'हरि' की राह, निहारा॥
बन, परबत पहँ, मन-मन-फूली * लगे रहन, बानर, करि टोली।
यह सब सुन्दर चरित मैं भाखा * अबसो,सुनहु,जो,बीचहिं राखा॥

(राम-अवतार)

अवध के राजा, रघुकुल-भूषन * दसरथ-नामी, वेदन-रोसन।
धरम-धारि, ज्ञानी, गुन-नायक * (धनु-धारी-भगवान)-उपासक॥

दोहाः—कौसल्या, और रानि सब, सबके करम पुनीत।
१६३. पति की आज्ञा महँ चलत, हरि-पद महँ, अति प्रीति॥

एक बार, राजा, मन माहीं * सोचा,"मोरे, सुत, कोउ नाहीं"।
गुरु-घर गयो, तुरत, महिपाला * गहिपद,विनती कीन्ह,बिस्माला॥
आपन दुख सुख, गुरुहिं,सुनायो*कहि,'वसिष्ठ',बहु-विधि,समुझायो।
वसिष्ठः—धरहु धीर, हुइ हैं, सुत चारी* लोक-सरावहिं, भक्त-सुखारी॥
कविः—'श्रृंगीरिषिहिं','वसिष्ठ'बुलावा * पुत्र-हेत, सुभ-जज्ञ करावा।

दीन्ह आहुती, मुनि, अनुरागी * यज्ञ-भाग लइ, निकसी आगी ॥
अग्नि देवः-जो वशिष्ट!तुम,हृदय,बिचारा*सकल काज,भा सिद्ध,तुम्हारा!।
रानिन्ह, देहु, खीर, यह, जाई * उचित बाँट, यह केर, कराई ॥
कविः—दोहाः—अग्नि-देव, चलते भये, सभा, सकल समुझाय।
१६४. भूप, मगन, आनंद महँ, हर्ष, न, हृदय, समाय ॥

तब राजा, सब रानि बुलाई * कौसल्या, औरहु, चलि आई ॥
आधा 'कौसल्या' कहँ, दीन्हा * आधा बचा,सो,दुइ करि लीन्हा ।
एक, 'केकई' कहँ, नृप दयेऊ * बचा एक, तेहि के,दुइ भयेऊ ॥
कौसल्या - केकई - हाथ, धरि * दीन्ह,'सुमित्रहिं',दोऊ,हँसिकर ।
धरेऊ गर्भ, यह विधि, सब रानी * सोभा, सील, तेज की खानी ॥
सुख ते, कछुक काल, तब गयेऊ * हरि के जन्म को अवसर भयेऊ॥

दोहाः—जोग, लगन, ग्रह, तिथि, औ दिन,मिले,सबहि,सुभ,आइ ।
१६५. सुख-दाता, हरि-जन्म जो, सब जग रह हरषाइ ॥

नौमी, उतर - चैत, पवित्तर *'अभिजित',हरि-कहँ-प्रिय,नछत्तर।
ठीक दुपहरी, सीत, न, घामा * सब-संसार - करत - बिस्रामा ॥
सीतल, मंद, सुगंधित ब्यारी * हरषि संत, सब देव सुखारी ।
फूला बन, गिरि, रत्न निकारा * छांड़ी नदियन, अमरित-धारा ॥
बृह्मा, सो अवसर, जब जाना * चले,सकल सुर, साजि बिमाना ।
मिलि, सब देव, अकासहिं,छाये * गंधर्वहु,हिलि-मिलि, गुन गाये ॥
बरसहिं फूल, देव, भरि-उँजारिन * फोरे-कान, अकास. नगारिन ।
नाग, देव, मुनि, अस्तुति करहीं * भेंट लाइ, सब, आपन, धरहीं ॥

दोहाः—बिनती करि करि,देव सब, लौटे, आपन धाम ।
जगत, आय,प्रभु, भे प्रगट, लोक - लोक - बिस्राम ॥
छंदः—भये प्रगट, कृपाला, परम दयाला, कौसल्या - हितकारी ।
हरषित महतारी, रूप निहारी, अदभुत, मुनि - मन - हारी ॥

स्याम - घटा - सम तन; सुन्दर, लोचन, शंख - चक्र, भुज धारे ।
चरनन - लगि-माला, नयन बिसाला, राक्षस - मारन - हारे ॥
छंदः—केहि विधि, महतारी, विनय तुम्हारी, करइ, न छोर, तुम्हारा ।
वेदहु सरमाया, ईश्वर, माया - गुन - और - ज्ञान - ते न्यारा ॥
सःख - दया सागर, सब - गुन - आगर, कहत वेद और संता ।
मोरे हित कारन, भगतन - चाहत, भये प्रगट, श्री - कंता ॥
छंदः—बृहमांड हैं जेते, माया, तेते, बसहिं रोम महं तोरे ।
धीरन्ह - मति नाचत, हँसी है लागत, रहे कोख महँ मोरे ॥
माता, अस जाना, प्रभु मुसुकाना, चरित, बहुत विधि, कीन्ह चहै ।
कहि कथा सुहाई, प्रभु समुझाई, जेहि ते प्रेम, सुत-मानि करै ॥
छंदः—माता, तब बोली, बुद्धी डोली, तजहु, तात ! यह रूपा ।
करु बालक-लीला, अति-प्रिय-सीला, यह सुख, अधिक अनूपा ॥
सुनि अस, प्रभु, काना, रोवन ठाना, बालक - सम, सुर - साईं ।
यह चरित, जो गावहिं, हरि-पद पावहिं, भव - दुख व्यापइ नाहीं ॥
दोहाः— विप्र, धेनु, सुर, संत हित, लीन्हा नर - अवतार ।
१६६. इच्छा - तन - रवि, इन्द्री - माया - गुन - ते पार ॥

रोवत बालक, सुनि, प्रिय बानी ※ आईं, तुरत, तहाँ, सब रानी ।
इहाँ, उहाँ, दौरहिं, सब दासी ※ आनद-मगन, सकल पुर-वासी ॥
'दसरथ', पुत्र-जन्म, सुनि, काना ※ बृह्म - मिले - कर-आनद जाना ।
भयो प्रेम, मन, फूलि सरीरा ※ उठि न सकत, अस भये अधीरा ॥
जेहि कर नाम, सुनत, कल्याना ※ जानहिं, घर आवा, भगवाना ।
परम आनंद भरेउ, राजा-मन ※ कहा बुलाइ, बजावहिं बाजन ॥
गुरु 'बसिष्ठ' कहँ, बोलि पठावा ※ राज-द्वार, विप्रन संग, आवा ।
नहिं-उपमा, सोइ, देखा, आई ※ रूप-खानि, गुन, कहि न चुकाई ॥
दोहाः—तब "नंदी-मुख-स्रात्र" करि, संसकार, सब, कीन्ह ।
१६७. सोना, कपड़ा, गाय, मनि, सब, विप्रन कहँ, दीन्ह ॥

झंडी, बेलन, वन्दन वारिन * कहि न जात, जस, नगर सँवारिन ।
फूलन - वर्ष, गगन ते होई * बृह्मानंद - मगन, सब कोई ॥
झुंड झुंड मिलि, चलीं लुगाई * सहज सिंगार किये, उठि धाई ।
मंगल - सामिग्री, भरि थारा * कनक-कलस लइ, आवहिं, द्वारा ॥
करि आरती, निछावर करहीं * फिरफिर, बालक-चरनन परहीं ।
सेवक, भाट, वंदि-जन, गाइक * गावत गुन-पवित्र - रघुनायक ॥
सब कछु, दीन्ह, भूप, सब काहू * जेहि पावा, राखा नाहिं, ताहू ।
केसर, कस्तूरी, और चंदन * भईकींच, सबगलियन, गलियन ॥

दोहाः—बजत बधावा, सब घरन, जन्मे सोभा - धाम ।
१९८. भये, नगर, नारी औ नर, हर्षित, आये-राम ॥

रानि-'सुमित्रा', 'केकई' - रानी * जन्मे, सुन्दर पूत, भवानी ! ।
जस, सुख संपति, तब, रह छाई * सेष, सारदहु, बरनि न जाई ॥
अवध-पुरी, सोहत यह भांती * मिलन आइ प्रभु कहँ जनु राती ।
सूरज देखि, मनहु, सकुचानी * बनि के रहि गई, सांझ-समानी ॥
अगर-धुआं, जनु, सांझ-अँधेरी * अबिर-उड़ा, लाली-तेहि-केरी ।
मनियन - ढेर, चमकि, जनु, तारा * महल-कलस, जनु, चंदा-प्यारा ॥
होत, भवन, जो, वेद की बानी * भये सांझ, चिड़ियां चहचानी ।
देखि तमासा, सूर्य भुलाना * एक मास लग, रह, ठहराना ॥

दोहाः—एक-मास-कर, दिन भयो, मरम, न जाना कोइ ।
१९९. सूरज, लइ रथ, रह ठहरि, रात, कौन बिधि, होइ ॥

रहा भेद, यह, काहु न जाना * सूरज चले, करत गुन गाना ।
देखि महा-उत्सव, मुनि, नागा * चले देव, बरनत निज भागा ॥
शिवः—कहहुं, एक, मैं, आपनचोरी * सुनु, गिरिजा, मतिपोढ़ी, तोरी ।
'काकभुसुंडि' संग, हम, दोऊ * नरतन धरा, जानि नहिं कोऊ ॥
परम आनंद, प्रेम-सुख फूले * गलियन फिरे, मगन मन, भूले ।
यह सुभ चरित, जान, पै, सोई * कृपा, राम की. जेहिपर होई ॥

कविः तेहि अव-सर, जोजेहि विधि आवा * दीन्ह भूप, जो, जेहि, मन भावा।
हाथी, घोड़ा, रथ, गौ, हीरा * दीन्हे नृप, नाना-विधि-चीरा ॥
दोहाः—भये, पाय, संतुष्ट, सब, भरि भरि दीन्ह असीस।
२००. "चिरंजीव, सब पुत्र, यह, तुलसीदास के ईस ॥"
दिन दस, एक, बीति यह भाँती * जानि न परत, जात, दिन राती।
नाम - धरन - कर, अवसर आवा * राजा, गुरु-'वसिष्ट', बुलवावा ॥
दशरथः—करि पूजा, भूपति, सिर नाये * बोले, धरिये नाम, सुहाये!।
गुरुः—नाम बहुत, इक-इक-बढ़, राजन! * मति-अनुसार, कहतु सुनु, कानन॥
जे, आनंद-सिंधु, सुख-खाना * तीन-लोक-सुख, कृपानिधाना।
जिन्ह ते, सब लोकन्ह, विस्रामा * तिनकर नाम, कहऊँ, सुभ, "रामा"॥
जग के पालन-पोषन-हारे * तिन्हकर नाम, "भरत" रखवारे।
नासत शत्रू, जेहि के सुमिरिन * जानत वेद, नाम तिन्ह, "शत्रुहन"॥
कविः—दोहाः—राम-प्रिय, लच्छन बहुत, जगत-खँभ-आधार।
२०१. धरेउ नाम "लछिमन", गुरू, कह राजाः "वलिहार"॥
गुरुः—धरे नाम, गुरु, हृदय, विचारी * ज्ञानी-महा, भूप! सुत चारी।
कविः-मुनि-भगतन-के, धन, शिव-प्राना * प्रभु, बालक-लीला सुख साना ॥
छोटेहि ते, हितकारी जानी * राम-चरन, रति, लछिमन मानी।
भरत-शत्रुहन, दोऊ भाई * प्रभु-सेवक-सम, प्रीति बढ़ाई ॥
गोरे-श्याम, मनोहर जोरी * देखि, मात, छवि, तिनका तारी।
चारहु, सील-रूप, -गुन-धामा * बढ़े-चढ़े, सुख-सागर, 'रामा ॥
कृपा-चंद्र, जिन्ह हृदय बिराजत * हँसी-किरन, मन-हरन जनावत।
कबहूँ, गोदी, कबहूं, पलना * मात, दुलारहिं, कहिः प्रियललना ॥
दोहाः—निरगुन, व्यापक ब्रह्म जो, जनम-न, हर्ष-न - सोक।
२०२. खेलत, भगतन-प्रेम - बस, कौसल्या के गोद ॥
कोटि-काम-छवि, स्याम सरीरा * नील-कमल, कै, घटा गँभीरा।
कमल लाल, चरनन-नख-जोती * कमल के दल, जनु, लागे मोती ॥

बज्र, ध्वजा, तलवन महँ रेखा * घुँघुरू, मुनिमन हरत, विसेषा ।
कमर करधनी, पेटहिं रेखा * गहिर नाभि,जानइ,जिन्ह देखा ॥
पहिरे, भूषन, भुज-विशालभरि * सिंह-नखन-सोभा, हृदय पर ।
हृदय, जड़ाऊ हार की सोभा * बिप्र-चरन, देखत, मन लोभा ॥
संख कंठ, ठोड़ीहु सुहावनि * मुख-छबि, काम केहु मनभावनि ।
चमकत दांत, लाल ओंठन, दुइ *बरनत तिलक,जात,कवि-मनखुइ ॥
सुन्दर कान, चीकने गाला * मधुर - तोतरा - बोल - कृपाला ।
केस, चीकने, घूँघर - वारे * भांति-भांति - ते, मात संवारे ॥
पियर-झिगुलिया, तनु पहिराई * हाथन-घुटनन-चाल, सुहाई ।
सकत न कहि, वेदहु, और सेषा * सो जानहि,सपनेहु,जिन्ह देखा ॥

दोहाः—ज्ञान, इन्द्रिनि, जहँ, गम्य नहिं, मोह-रहित, सुख-धाम ।
२०३. मात-पिता के प्रेम फँसि, बाल-चरित, करि राम ॥

यह विधि,राम,जगत-पितु-माता * भये, अवध-वासिन-सुख-दाता ।
शिवः—जेहि,रघुनाथ-चरन,रति मानी*तिन की यह गति, प्रगट,भवानी ॥
त्यागे रघुपति, कोरे जतनन * सकत छोरि, को, भव के बंधन ।
जग के जीव, मुठी महँ राखत * सोउ माया, प्रभु ते, भय मानत ॥
माया, भौं चलाय,नचिवाही *अस प्रभु छांड़ि,भजइ,कहु,काही ।
मन, क्रम, बचन, छांडि,-चतुराई * भजे, कृपा करि हैं, रघुराई ॥
कविः—यह विधि, बालक-लीला कीन्हा * सुख, अनन्द,पुरवासिन्ह दीन्हा ।
कबहुँ, मात, लइ गोद, हलावइ * कबहुँ, पालना डारि, झुलावइ ॥

दोहाः—मगन प्रेम महँ, मात रहि, निसिदिन, जात न जान ।
२०४. सुत-सनेह-बस, मात, हुइ, बालहि-चरित बखानि ॥

एक बार, माता, अन्हवाये * करि सिंगार, पलना, पौढ़ाये ।
निज कुल - इष्ट - देव - भगवाना * पूजन कहँ, कीन्हे असनाना ॥
करि पूजा, नैवेद्य चढ़ावा * गई, जहँ पकवान बनावा ।
माता, लौटि, तहाँ ते, आई * बालक, जेवत, परा दिखाई ॥

गई मात, बालक पहँ, डरपत ❋ पायो, आपन - बालक - सोवत ।
देखा आइ, रसोई, सोई ❋ कांपी, मन महँ, धीर न होई ॥
इहाँ, जौन बालक, तहँ, सोई ❋ मति कर भ्रम, कै, दूसर कोई ।
देखि - राम, माता - अकुलानी ❋ प्रभु हँसि दीन्ह, मधुर मुसुकानी ॥

दोहाः—दिखरावा, मातहिं, अपन, अदभुत रूप, अखंड ।
२०५.　　रोम रोम महँ, लागि रहे, कोटि कोटि, बृह्मंड ॥

{ नदी' सिंधु, गिरि, वन, शिव, बृह्मा ❋ कोटिन भूमि सूर्य, चंद्रमा ।
{ काल, करम, गुन, ज्ञान, सुभाऊ ❋ सोउ देखा, जो, सुना न काऊ ॥
देखी माया, सब बिधि, गाढ़ी ❋ जोरे-कर, डरपत है, ठाढ़ी ।
दीख जीव, माया-वस - नाचत ❋ दीख भगति, जो, जीव छुड़ावत ॥
तन पुलकित, मुख, बचन न आवा ❋ मूँदि नयन, चरनन, सिर नावा ।
अचरज - भरी, दीख महतारी ❋ बालक-रूप, लीन्ह, प्रभु, धारी ॥
असतुति, करि न जाइ, भय माना ❋ जगत-पिता, 'मैं, सुतकरि जाना'।
समुझायो, मातहिं, भगवाना ❋ "परहि, चरित यह कहु न काना" ॥

दोहाः—बार वार कौसल्या, विनय करइ, कर जोरि ।
२०६.　　व्यापइ, प्रभु ! अब, ना, कवहुं, मों का, माया तोरि ॥

बाल-चरित, हरि, बहु विधि, कीन्हा ❋ अति अनंद, दासन कहँ, दीन्हा ।
कछुक काल बीते, सब भाई ❋ भये बड़े, कुल - के - सुखदाई ॥
मूडन कीन्ह, गुरूजी, जाई ❋ विप्रन, फिर, दछिना बहु पाई ।
परम मनोहर, चरित, अपारा ❋ करत फिरत, सब, राज-कुमारा ॥
मन, और, इन्द्रिन के, जे, ऊपर ❋ खेलत दसरथ-आँगन, सो, हरि ।
भोजन-समय, बुलावत राजा ❋ आवत नाहिं, तजि बाल-समाजा ॥
जब, कौसल्या, टेरन जाई ❋ ठुमुकिठुमुकि, भाजहिं, मुसुकाई ।
वेद हारि, शिव, अंत न पावत ❋ दौरि, मात, हठ-करे, उठावत ॥
धूरि-भरे, मैले-तन, आये ❋ दसरथ, हँसि-हँसि, गोद बिठाये ।

दोहाः—खात कहूँ, देखत कहूँ, ज्यों अवसर मिलि जात।
२०७. किलकि-किलकि, भाजत, उठत, सने, दही, कहुँ, भात॥

बाल चरित, अति सहज सुहाये * सेष, वेद, शिव, सारद गाये।
जिनहिं, न, बालक-लीला प्यारी * ते जग महँ, जनु ठग, नर-नारी॥
भये कुमार, जबहिं, सब भ्राता * दीन्ह जनेऊ, गुरु, पितु, माता।
गुरु-घर, गये, पढ़न, रघुराई * थोर काल, विद्या सब आई॥
चारहु-वेद राम-की-स्वासा * पढ़इ जाय सो, लगत तमासा।
सील, विनय, गुन, विद्या पाई * खेलहिं राज-खेल, लरिकाई॥
हाथन, धनुष-बान अति सोहा * देखत रूप, जगत सब, मोहा।
जिन गलियन, विचरत सब भाई * लखि छवि, हक-बक लोग-लुगाई॥

दोहाः—अवध-के-बासी, नारि नर, कइ बूढ़े, कह बाल।
२०८. सब कहँ, प्रानहु-ते-अधिक, लागत राम-कृपाल॥

भाइन, सखन, लेहिं, बुलवाई * बन, सिकार, नित, खेलहिं जाई।
खोजि खोजि, पावन-मृग, मारहिं * लाइ, रोज, भूपतिहिं, दिखावहिं॥
जे मृग, राम-बान के मारे * ते, तन तजि, सुर-लोक सिधारे।
सखा-भाइ-सँग, भोजन करहीं * मात-पिता-आज्ञा, सिर धरहीं॥
जेहि विधि, सुखी होहिं, पुर-लोगा * करहिं, कृपानिधि, सोइ संजोगा।
वेद, पुरान, सुनहिं मन लाई * आप कहहिं, भाइन-समुझाई॥
प्रात-काल, उठि कर, रघुनाथा * मात-पिता-गुरु, नावहिं माथा।
आज्ञा-मांगि, करहिं पुर-काजा * देखि चरित, हर्षित, मन राजा॥

दोहाः—सब-महँ-व्यापक, बिन-कला, निरगुन, नाम-न-रूप।
२०९. भगतन के हित, बहुत विधि, कीन्हे, चरित, अनूप॥

यह सब चरित, कहा, मैं गाई * आगिल कथा, सुनहु, मन लाई।
'विस्वामित्र', महा मुनि ज्ञानी * बसहिं, बनहिं, सुभ आस्रम जानी॥
जहँ जप, जज्ञ, जोग, मुनि करहीं * अति, 'मारीच', 'सुबाहु', डरहीं।
देखत जज्ञ, निसाचर धावहिं * करत उपद्रव मुनि, दुख पावहिं॥

चिंता, मुनि के मन, अस ब्यापी * हरिबिन,मरहिं न,निसिचर पापी।
विस्वामित्रः-मनमहँ,फिरि,मुनिकीन्हविचारा*प्रभु,अवतरेउहरनजग-भारा॥
यह बहाने, देखउँ पद, जाई * करि विनती, लावहुँ दोउ भाई।
ज्ञान, विराग, औ गुन - स्थाना * भरि नयनन, देखहुँ भगवाना॥
कविः—दोहाः—करत मनोरथ, भांति-बहु, जात न लागी वार।
२१०. 'सरजू' महँ असनान करि, गये भूप - दरवार॥
मुनि-आये - सुनि, दशरथ, राजा * चलेउ, मिलन,लइ विप्र-समाजा।
करि दंडवत, मुनिहिं सनमानी * सिंहासन, बैठारा, आनी॥
राजाः—धोइ चरन,कीन्हीं अति पूजा * मो-सम, आज. धन्य नहिं दूजा।
कविः—बहुत भांति,भोजन करवावा * विस्वा-मित्र, हर्ष, अति, पावा॥
डारे, चरनन, ला, सुत चारी * देखि 'राम', मुनि, देहबिसारी।
भये मगन, देख मुख-सोभा * पूरन-चंद्र, चकोरहिं मोहा॥
राजाः—हुइ प्रसन्न,बोले,अस,राजा * कबहुं न कृपा कीन्ह,जस,आजा!।
केहि कारन, पग, धारे, देहरी * जो आज्ञा-हो, करउं, न देरी॥
विस्वामित्रः-राक्षस-झुंड,सतावत,मोही * कछु मांगन, मैं, आयों, तोही।
देहु मोहिं, लछिमन, रघुनाथा * मारि राक्षस, मैं, होउं सनाथा॥
दोहाः—हुइ प्रसन्न, मन, देहु, नृप ! तजहु मोह, अज्ञान।
२११. धरम आप कर, जस बढ़इ, होइ दोउन-कल्यान॥
कविः—राजहिं, सुनि, भाई नाहिं, बानी * मन कांपा,मुख-छवि कुम्हलानी।
राजाः-मिले बुढ़ापे महँ, सुत चारी * हे मुनि ! कही न बात बिचारी॥
मांगहु पृथ्वी, गऊ, खजाना * सरबस देउँ, न डर, भगवाना।
देह-प्रान-ते-प्रिय, कछु, नाहीं * सोउ, मुनि ! दउँ, एक पल माहीं॥
सब सुत, प्यारे, प्रानन-नाई * देत 'राम', नाहिं बनत, गोसाई।
कहँ राक्षस, जो, बज्र, भयंकर * कहँ बालक, कोमल और, सुन्दर॥
कविः—बानी-भूप, प्रेम की सानी * हृदय, हर्ष, माना, मुनि, ज्ञानी।
तब,बसिष्ठि, बहु विधि, समुझाई * दसरथ - कर - संदेह मिटाई॥

आदर-ते, दोउ पूत बुलाये * हृदय लाइ, बहु भांति, सिखाये।
राजाः—प्रान-अधार, मोरसुत दोऊ * अब, तुम पिता, मुनी नहिं कोऊ॥
कविः–दोहाः—सौंपि, भूप, मुनि, दोउ सुत, बहु विधि, दीन्ह असीस।
माता के मन्दिर गये, चले, नाइ पद, सीस॥
सो०ः—पुरुष, सिंह-सम, वीर, हर्षि चले मुनि-भय-हरन।
२१२. कृपा-सिंधु, मति-धीर, सब जग-कारण-के-करन॥
चौड़ी छाती, लाली नयनन * लांबे भुज, तन-नीले-कमलन।
पीतांबर कसि तरकस बांधे * धनुष-बान, दोउ हाथन, साधे॥
स्याम-गौर, सुन्दर, दोउ भाई * मानहु, मुनि, सब संपति पाई।
विस्वामित्रः-बृह्मण-देव, रामकहँ चीन्हा * बृह्मण-हित, पितुकहं, तजिदीन्हा॥
कविः--राह-चलत, मुनि, प्रभुहिं दिखाई * दौरि 'ताड़का', क्रोधित, आई।
एकहि बान, प्रान, हरि लीन्हा * निज-बैकुंठ, गरीबिनि, दीन्हा॥
तब, मुनि आपन-स्वामी चीन्हीं * बिद्या कहं, सो बिद्या दीन्हीं।
जेहि ते, प्यासहु, भूख, न लागइ * तन मंह, अतिबल, तेज, बिराजइ॥
दोहाः—शस्त्र-अस्त्र, सब दइ, सिखइ, निज आस्रम, प्रभु आनि।
२१३. कंद-मूल, भोजन दिये, भक्त-हितकारी जानि॥
रामः—कहा, भोर, मुनि सन, रघुराई * बे-डर, जज्ञ, करहु, तुम, जाई।
कविः—करे होम, सब रिषिन, संवारी * कीन्ह, आप, यग-की-रखवारी॥
सुनि 'मारीच', निसाचर, क्रोधी * लइ साथिन, आवा, मुनि-बोधी।
बान, नोक-बिन, प्रभु, तेहि, मारा * सौ जोजन, गा, सागर-पारा॥
अग्नि-बान, प्रभु, हतेउ 'सुबाहू' * 'लषन', सैन मँह, रखेउ न काहू।
मारे असुर, बृह्मण-हितकारी * अस्तुति कीन्ह, देव, मुनि, भारी॥
तहँ, फिर, कछुक दिना, रघुराया * रहे, कीन्ह, विप्रन पर, दाया।
भगति हेत, बहु कथा पुराना * बांचत विप्र, राम, सब जाना॥
विस्वामित्र, कहा समुझाई * चलहिं, चरित इक, देखहिं, जाई।
धनुष-जज्ञ सुनि, रघुकुल-नाथा * चले, लषन लइ, मुनि के साथा॥

(अहिल्या-तारन)

आस्रम, एक, देखि मग माहीं * जहाँ, जीव, पसु, पच्छी नाहीं ।
पूँछा, मुनिहिं, देखि इक पाथर * तेहि की कथा, कही, मुनिचातुर ॥

दोहाः—गौतम-नारी स्राप, लगि, भइ पाथर, धरि धीर ।
प्रभु-चरनन - धूरी तकत, करहु कृपा, रघुवीर ! ॥

छंदः—लागत पद-पावन, सोक-नसावन, नारी, इक, तप रूप, भई ।
देखत रघुनायक, भक्त-सहायक, सनमुख हुइ, कर जोरि रही ॥
अति, प्रेम न-धीरा, पुलकि सरीरा, मुख, नहिं आवत बचन कही ।
बहुतहि बड़-भागी, चरनन लागी, दोउ नयनन, जल-धार बही ॥

छंदः—धीरज, मन कीन्हा, प्रभु, कहँ चीन्हा, प्रभु-की-दया, भगति पाई ।
अति निरमल-बानी, अस्तुति, ठानी, लखत-ज्ञान, जय रघुराई ! ॥
छूत, इक, मैं नारी, प्रभु बलिहारी, रावन-रिपु, जन-सुखदाई ।
हे ! कमल-से-लोचन, भव-भय-मोचन, रक्षहु, नाथ ! सरन आई ॥

छंदः—मुनि स्राप जो दीन्हा, अति भल कीन्हा, कीन्ह, दया अति, मैं माना ।
देखेउं, भरि लोचन, हरि भव - मोचन, परम लाभ, संकर-जाना ॥
विनती, प्रभु, मोरी, मैं, मति-भोरी, मांगि, और वर, कहा करइ ।
चरन-कमल-रज-रस, मन-भँवरा फंसि, सदा, प्रेम चखि, भान भरइ ॥

छंदः—जेहि पद, तें, आई, गंग सुहाई, सँभू, आपन, सीस धरी ।
पूजत-ब्रह्मा-जो, चरन-कमल सो, मोरे सिर, धरि दीन्ह, हरी ॥
यह भांति, सिधारी, "गौतम"-नारी, बार बार, हरि-चरन परी ।
जो, अति-मन-भावा, सो बर पावा, गइ, पति-लोक, अनंद-भरी ॥

दोहाः—दीनन - हितकारी हरी, बिनु - कारन, जे दयाल ।
२१४ रे, सठ, तुलसी ! ताहि भजु, छांड़ि कपट जंजाल ॥

कविः—चले राम, लछमण, मुनि-संगा * गये, जहाँ, जग - पावन - गंगा ।
विस्वामित्र, कथा कहि गाई * कस, पृथ्वी पर, गंगा आई ॥

तब, प्रभु, रिषिन समेत, नहाये * विप्रन, दान, वहुत कछु, पाये ।
मुनियन संग, चले रघुराई * जनक-पुरी तट, पहुँचे आई ॥
जनक-पुरी-सोभा, प्रभु देखी * हर्षे प्रभू, लषनहू, विसेषी ।
कुआँ, बावली, नदी, सरोवर * रतन-जड़ी-सीढ़ी, जल सुन्दर ॥
मदमाते भँवरा, गुंजारत * रँग-रँग-पछी बोल सुनावत ।
वहु प्रकार-कमलन-छवि न्यारी * सीतल, भीनी, मंद वियारी ॥

दोहाः—फुलवारी, और बागु, वन, सुन्दर चिड़िया ठौर ।
२१५. नये-पात लइ, फूलि, फलि, सोहत, चारहु ओर ॥

कहि न जात, पुर-सुन्दरताई * जहाँ, जाइ मन, तहाँ लुभाई ।
सुन्दर हाट, विचित्र अटारी * बृह्मा, आपन हाथ, सँवारी ॥
बने - कुंवर, वनिक, व्योहारी * बैठे, वस्तु - लिये, बाजारी ।
चौराहे, और गली सुहाई * सदा,गुलावन्ह,छिरिकी जाहीं ॥
मंगल-रूप, बने, सव के घर * 'काम', चित्र-कारी कीन्हीं,कर ।
नर, नारी, सब, साधू - संता * धरम - सील, ज्ञानी, गुनवंता ॥
कहि न जात,जस जनक-निवासा * चकित देव,लखि भोग-विलासा ।
मति चकरात, किला कहँ देखी * जनु जगकी सोभा,रखि,रोकी ॥

दोहाः—सोने, रतनन ते, जड़े, उज्जल - महल - किवार ।
२१६. केहि विधि, सोभा, जात कहि, सिय भवन, बलिहार !॥

हीरा - जड़े - किवारन, द्वारा * जुरे भूप, नट, सेवक झारा ।
कहुँ हाथी, कहुँ घोरन - साला * भरे घोर-गज-रथ, सब काला ॥
मंत्री, सेना - पति, वहुतेरे * राज - महल-से, घर, सब केरे ।
ठहरे, नदी - सरोवर - तीरा * पुर के बाहर, राजा वीरा ॥
देखि बगीचा, आमन केरा * सब आराम जहाँ, वहुतेरा ।
विस्वामित्रःठौर, मुनी कह,यहमन-माना * इहीं रहऊ, रघुवीर ! सुजाना ॥
कविः"वहुत नीक"कहि, कृपा-निधाना * ठहरे, तहँ सब, मुनि, भगवाना ।
विस्वामित्र - महामुनि - आये * राजा जनक, खबर, अस पाये ॥

दोहाः—मंत्री, जोधा, विप्र, गुरु-कुल के लीन्हे साथ।
२१७. हुइ प्रसन्न, भेंटन चले, महामुनिहिं, यह भाँति॥

कीन्ह प्रनाम, चरन, धरि माथा * आसिरवाद दीन्ह मुनि - नाथा।
फिरि राजा सब विप्रन बंदे * जानि, भाग बढ़, भये अनंदे॥
पूँछि कुसल, मुनि बारंबारा * आदर ते, राजहिं बैठारा।
तेहि अवसर, आये, दोउ भाई * गये रहे, देखन फुलवाई॥
गोरे-स्याम, अवस्था थोरी * देत नैन सुख, जग-चित-चोरी।
उठी सभा, सब, जब, प्रभु आये * विस्वामित्र, निकट, बैठाये॥
भ सब सुखी, देखि दोउ भाई * खड़ रोम, नयनन, जल छाई।
देखे मूरति, मधुर, मनोहर * तन-सुधि हु, 'विदेह' की गइ हारि॥

दोहाः—प्रेम-मगन-मन, जानि नृप, ज्ञान ते, धीरज धारि।
२१८. बोले, मुनि-पद, नाइ सिर, भरे - कंठ, बलिहार॥

जनकः—कहउ, नाथ! सुन्दर, दोउ बालक * बृह्मण-कुल, कै नृप-कुल-पालक।
कै, जो बृह्म, वेद, कहि हारा * धरि दुइ रूप, आयो, संसारा॥
मन, सुभाउ - वैरागी, मोरा * देखि चंद्र, भा थकित, चकोरा।
तेहि ते, प्रभु पूछउं, सत-भाऊ * कहउ, नाथ!, बिन किये छिपाऊ॥
तजि, मन बृह्म - केर-सुख, सारा * फंसेउ, प्रेम, नाहिं जात सँभारा।
विस्वामित्रः कहा मुनी, नृप, ठीक बिचारा * झूँठ नहीं, यह वचन, तुम्हारा॥
ये प्रिय, सबहिं, जहां लगि प्रानी * मन, मुसकाहिं, राम, सुनि बानी।
रघुकुल-दीपक, दसरथ-जाये * मोरे हित कहँ, भूप पठाये॥

दोहाः—राम, लपन, भाई दोऊ, रूप-सील-बल-धाम।
२१९. यज्ञ केर, रक्षा करी, जीति असुर सँग्राम॥

जनकः—चरन देखि, तुम्हरे, कह राऊ * कस सराहुं, निज पुण्य-प्रभाऊ।
विश्वामित्रः सुन्दर स्याम-गौर, दोउ-भ्राता * आनंदहु के आनँद - दाता॥
प्रीति, दोउन की, भाई - भाई * कहि न जात जस, लगत सुहाई।
जनकः—कहा, जनक, इन-भाइन-रीती * मनहु, बृह्म और जीव की प्रीती॥

कवि:-फिर,फिर,रामहिं,जनकनिहारत ❋ फूलत तन, उत्साह बढ़ावत।
मुनिहिंसराहि,चरन,धरिधरिसिर ❋ गयेलिवाय, जनक, पुर-भीतर॥
सुभ अस्थान, जाय ठहरावा ❋ सब सुख, जहँ,सबकालसुहावा।
करि पूजा, सब बिधि, सेवकाई ❋ गये जनक घर, बिदा कराई॥
दोहा:—मुनि-संग, भोजन, राम करि, कीन्हा, कछु आराम।
२२०. राम, लखन, बैठे दोऊ, एक पहर मां, साम॥
लखन-हृदय, अस इच्छा होई ❋ जनक-पुरी, दिखरावहि, कोई!।
मुनि-भाई-डर, मन, सकुचाहीं ❋ मुंह, खोलहिं नहिं,मन,मुसुकाहीं॥
राम, लषन-की-मन-गति-जानी ❋ पूरत इच्छा, भगतन-ठानी॥
विनय-भाउ सकुचत, मुसुकाई ❋ बोले, गुरु की आज्ञा पाई॥
राम:—नाथ!लषन,पुर देखाचाहत ❋ डर, सकोच ते मुख, नहिंलावत।
आज्ञा आप-केर, जो पाऊं ❋ नगर दिखाय, तुरत, लइ आऊं॥
वि०:-सुनि,मुनिबचनकह,भरिप्रीती ❋ भला, राम, नहिंपालहि नीती!।
धरम की मर्यादा, तुम पालत ❋ फंसे-प्रेम, सेवक-सुख चाहत॥
दोहा:—जाइ, देखि आवहु नगर, सुख - निधान, दोउ भाइ।
२२१. करहु सुफल, सबके नयन, सुन्दर-छबि, अपन, दिखाइ॥
कवि.-मुनि-पद्-कमल,बंदिदोउभ्राता ❋ चले, जगत - लोचन-सुख-दाता।
बालक-झुंड, देखि, अति सोभा ❋ लगे संग, लोचन, मन लोभा॥
तरकस, कमर, सुघर पीतांबर ❋ धनुष-बान, धारे, दोऊ कर।
तन, राजत, चंदन की खौरी ❋ स्यामल-गौर, मनोहर जोरी॥
सिंह से कांधे, भुजा बिसाला ❋ हृदय मां, गज-मुक्ता-माला।
लाल-कमल-सम, लोचन, सुन्दर ❋ हरत ताप, तीनहु, मुख-चंदर॥
कानन, कनक-फूल, छबि देहीं ❋ चितवत, चित कहँ, चोरे लेहीं।
सुन्दर भौं, और बांकी चितवन ❋ तिलक-रेख, जनु,दमकत दामिन॥
दोहा:—टोपी, चौगोसी, चमकि, घूँघर - वारे - बार।
२२२. पाउं-ते-सिर-लगि,सोहिंदोउ, अंग - अंग, इक - तार॥

देखन नगर, भूप - सुत आये ❋ समाचार, पुर - बासिन पाये।
काम-धाम, सब, तजि, नर-नारी ❋ संपति लूटन, चले भिखारी॥
देखि, स्वभाविक - सुन्दर भाई ❋ होहिं सुखी, लोचन - फल पाई।
नारी, भवन - झरोखन, झांखहिं ❋ राम - रूप देखे, अनुरागहिं॥
स०ः—कहत एक सन,बचन,सप्रीती ❋ सखी!इन,कोट-काम-छबिजीती!।
सुर,नर,असुर, नाग,मुनि माहीं ❋ सोभा,अस, कहुँ,सुनियत नाहीं॥
'विष्णु',चार-भुज,'विधि',मुख-चारी❋विकटसकल,पच-मुख-'त्रिपुरारी'
और-देव, अस, कोउ न होई ❋ इन-छबि-की, उपमा दे, कोई!॥

दोहाः—सुन्दरता-के-खानि, दोउ, स्याम, गौर, सुकुमार।
२२३. कोट काम, अँग-अँग- पर, वार डारूँ सौ बार॥

कहउ, सखी! अस को तन-धारी ❋ जो, न मोहिं, यह रूप निहारी।
दू०स०ः—एक,प्रेम ते,कह, मृदु-बानी ❋ जो, मैं सुना,सो,सुनहु,सयानी!॥
ये दोऊ, राजा - दसरथ - सुत ❋ बाल - हंस की जोरी, अद्भुत।
'विस्वामित्र' - जज्ञ - रखवारे ❋ रन - मैदान, निसाचर मारे॥
{ स्याम सरीर, कमल - से - लोचन ❋ जो,'मारीचि-सुभुज'-मदमोचन।
नाम - 'राम', कौसल्या - ज्याये ❋ धनुष-बान, कर-कमल, सुहाये॥
{ गोर कुमार, सकल म्हँ, आछे ❋ धनुष, हाथ, जे, राम-के पाछे।
'लछिमन' नाम, राम-लघु-भ्राता ❋ सुनु,सखी!तासु,'सुमित्रा',माता॥

दोहाः—मुनी केर, दोउ, काम करि, राह "अहिल्या" तारि।
२२४. धनुष - जज्ञ, आये, लखन, सुनि, हर्षीं सब नारि॥

ती०स०ः-देखिराम-छबि,इक,असभाखत❋सियहि-जोग,सखि!यहबरलागत।
राजा, इनहिं, देखि, कहुँ, पाई ❋ प्रनतजि,करिहठ, सियहिबिवाही॥
चौ०स०ःकोउ कह,लीन्ह,भूप,पहिचाने❋ मुनि सँग,आदर करि, सनमाने।
पर, प्रन तजइ न, राजा, यह भय ❋ मूरख, रहइ बैठि,हठ कहँ लय॥
पां०स० { कोउकह,होइजोसीधविधाता❋ सबकहँहोइ, उचित-फल-दाता।
तौ, जानकी,यही बर,पाई ❋ एहि मां, कछु संदेह न, भाई!॥

विधिना ! अस कहुँ बनइ सँजोगू * तौ,तरि जाहिं, सखी!सब लोगू ।
एक और, सखि ! इच्छा मेरी * यह नाते,फिरि, आवहिं देहरी ॥
दोहाः—नाहिं, तौ,पैहहिं दरस, कस, इनकर, हम, सब, लोग ।
२२५. पूर्व-जन्म - कर पुण्य - फल, मिलइ, बनइ संजोग ॥
छ०स०ः-दूसर बोली,कहेउ, सो नीका * यह विवाह ते, हित सबही का ।
सा०स०ःकोउ कह,शँभु-धनुष,अतिभारी* कोमल राम, उमिर हू वारी ॥
सब विधि,दुविधा लगत,सयानी! * सुनि, बोली, दूसर, मृदु-बानी ।
आ०स०ः-सुना,लोग,अस,इनहिं,बतावहिं*छोट,प्रभाउ,अधिक,दिखरावहिं ॥
छुअत, जासु-पद-कमल की, धूरी * तरी 'अहिल्या', पापन - पूरी ।
भला ! सो,रहिहहिं,बिनु धनु तोरे * भूलेहु,तजउं न,दृढ़, अस,मोरे ॥
जिन्ह बृह्मा, रचि सिया सँवारी * तिन्ह,श्यामलवर,रचेउ,विचारी ।
सखी - बचन सुनि, सब हर्षानी * "ऐसइ होय", कहइं, मृदु-बानी ॥
कविः-दोहाः—फूलि, फूल, सब, डारहीं, मृग - नयनी, मुख - चंद ।
२२६. जात जहां, भाई, दोऊ, तहँ, तहँ, परमानंद ॥
नगर के पूरब, गे, दोउ भाई * धनुष - जज्ञ, जहँ, भूमि रचाई ।
लांबा, . एक चौतरा, ढारी * चिकनी, वेदी, सुघर, सँवारी ॥
चहुँ-दिस, कंचन-तखत,विसाला * लागि, जहाँ, बैठहिं महिपाला ।
तिन पाछे, तीरहिं, चहुँ - ओरा * लागा, सुन्दर, तखतन - घेरा ॥
कछु ऊँचे, ये तखत, सुहाई * बैठहिं, नगर - लोग, जहँ, आई ।
तिन्ह के निकट, बिसाल, सुहाये * मंडप, बहुत - प्रकार - रचाये ॥
जहँ, बैठे, देखहिं सब नारी * आपन - आपन - कुल-अनुसारी ।
पुर-बालक,कहि कहि मृदु बचना * आदर ते, दिखरावत रचना ॥
दोहाः—यह बहाने, बालक, छुअत, प्रेम ते, कोमल गात ।
२२७. हर्षित, मन मां, तन पुलकि, देखि देखि दोउ भ्रात ॥
जाना, बालक, राम, - प्रेम - बस * दिखरावतघर,आपन,हँसिहँसि ।
जो चाहत, लइ जात, बुलाई * जात, प्रेम ते, हँसि, दोउ भाई ॥

राम, दिखावत, लषनहिं, रचना ❋ कहि,कहि,मधुर,मनोहर बचना ।
माया, जिन्ह की आज्ञा, पाई ❋ दे, छन महँ, ब्रह्माण्ड रचाई ॥
भक्ति हेत, सोइ दीन - दयाला ❋ अचरज करत,देखि,यग-साला ।
रचना देखि, चले, गुरु पाहीं ❋ भा बिलंब, कछु डर,मन माहीं ॥
जेहि के डर, डर कहं, डर होई ❋ भजन - प्रभाउ, दिखावत सोई ।
मीठ, मनोहर, वचन सुहाये ❋ जस-तस, कहि, बालक, लौटाये ॥

दोहाः—भय, संकोच, और प्रेम ते, झुकि झुकि, दोऊ भाइ ।
२२८. गुरु-पद-कमलन नाइ सिर, बैठे, आज्ञा पाइ ॥

भये सांझ, मुनि, आज्ञा दीन्हा ❋ सब ही, संध्या - वंदन कीन्हा ।
कहत कथा, इतहास, पुरानी ❋ भली रात, दुइ पहर, बितानी ॥
विश्वामित्र, सोये, तब, जाई ❋ लगे, चरन दाबन, दोउ भाई ।
जेहि के चरन-कमल, बड़-भागी ❋ जाप,जोग करि,चहत बिरागी ॥
गये, दोउ, जनु, प्रेम ते जीते ❋ गुरु पद - कमल दबावत, प्रीते ।
बार, बार, मुनि, आज्ञा दीन्ही ❋ रघुबर, जाइ, सयन, तब, कीन्ही ॥
लछिमन, चरन,दाबि, उर लावत ❋ डरत,प्रेम महं-भरि, सकुचावत ।
फिर,फिर,कहप्रभु,'सोवहु,ताता'! ❋ पौढ़, धरि, उर, पद-रघुनाथा ॥

दोहाः—बोलहिं मुरगा, रयन गइ, उठे लषन, अस जानि ।
२२९ गुरु ते पहिले, जगत-पति, जागे, राम, सुजान ॥

कीन्ह सौच, सब, जाय नहाये ❋ नित्य-करमकरि,गुरु सिर नाये ।
समय जानि, गुरु - आज्ञा - पाई ❋ तोरन फूल, चले, दोउ भाई ॥
बाग, मनोहर, देखा जाई ❋ जहँ, बसंत - रितु रही लोभाई ।
लागे वृक्ष, मनोहर नाना ❋ बहु - रँग बेलीं, तमबू - ताना ॥
नये पात, फल फूल सुहाये ❋ कल्प - वृक्ष हू, देत लजाये ।
पपिहा, कोयल, सुआ, चकोरा ❋ बोलत बोली, नाचत मोरा ॥
बीच बाग, ताल, इक, लहरावत ❋ सीढ़ीं, रतनन - जड़ी, सुहावत ।
निर्मल जल, कमलन ते सोभित ❋ पक्षी कूँजत, भँवरा गूँजत ॥

दोहाः—देखि बाग, और, ताल, प्रभु, हर्षे, लषन समेत।
२३०. बाग, बहुत रमनीक यह, जो, रामहिं, सुख देत॥

चहुं-दिस, चितइ, पूंछि माली-गन * लगे लेन, दल, फूल, मुदित-मन।
तेहि अवसर, सीता, तहँ, आई * गिरिजा - पूजन, मात पठाई॥
संग, सुभागिन, सखी, सयानी * गावहिं गीत, मनोहर बानी।
एक ताल - तट, गिरिजा - मंदिर * मोहतमन, कस कहि, अतिसुन्दर॥
सखिन सहित, तब, सिया नहाईं * मन प्रसन्न, मन्दिर, चलि आईं।
बड़े प्रेम ते, पूजा करि करि * मांगा, अपन-समान, जोग-बर॥
एक सखी, सिय - संग तुराई * गई रही, देखन फुलवाई।
ते, दोउ भाई, देखे, जाई * भरे-प्रेम, सीता पहँ, आई॥

दोहाः—तन पुलकित, जल, नयन महं, अंग-अंग-हर्षात।
२३१. कोमल-बानी, कह सखिन, "कस, फूली न समात" ?॥

सखीः-देखन बाग, कुँअर, दुइ, आये * बयस बारी, सब भांति, सुहाये।
गौर-स्याम, दोउ, कहत बनइना * नयन, जीभ नाहिं, जीभ, न नयना॥
कविः—सुनि हर्षी, सब सखी, सयानी * बिकल, सिय-हृदय कहँ, जानी।
सखीःराज-पुत्र, सोइ, कह इक आली * सुने, जो, मुनि-संग, आये, काली॥
जिन्ह, निज-रूप-मोहनी, डारी * बस, करि लीन्हे, पुर-नर-नारी।
बरनत छबि, जहँ तहँ, सब लोगू * अवसि, देखिये, देखन-जोगू॥
कविःतासु-बचन, अति, सियहि, सुहाने * दरसन-हित, लोचन अकुलाने।
चली, करे आगू, सखि सोई * प्रीति-पाछिली, लखइ न कोई॥

दोहाः—सुमिरि, सिय, नारद - बचन, गई, प्रीति ते भरि।
२३२. सब दिसि, देखत, चकित, जनु, बालक - हिरनी डरि॥

पायजेब, कँगन की धुनि सुनि * कहत, लषनसन, राम, समुझि, मन।
रामः-कामदेव, जनु, डंका बाजत * सब जग कहँ, अब, जीतन चाहत॥
कविः-अस कहि, देखा, फिर, तेहि ओरा * सिय, चंद्र भइ, राम, चकोरा।
रहे खुले नयना, जस - के - तस * तजी, पलक मर्याद, सकुच-बस॥

देखि सिया-सोभा, सुख पावा * हृदय सराहा, वचन न आवा।
जनु, बृह्मा, सब सब चतुराई * राचि सिय, जगकहँ, प्रगट, दिखाई॥
सुन्दरता हू, सुन्दर करई * चमकत-घर, जनु, दीपक जरई।
सब उपमा, कवि दीन्ह जुठारी * कैसी, कहूं, विदेह-कुमारी॥
दोहाः—मन महँ, सिय-सोभा समुझि, प्रेम की दसा, विचारि।
२३३. मन पवित्र, बोले वचन, राम, समय-अनुसार॥
रामः-तात! जनक-कन्या, यह सोई * धनुष-जज्ञ, जेहि कारन, होई।
पूजन गौर, सखी, लइ आई * फिरत, उजेर करत, फुलवाई॥
जग-ते-न्यारी-सोभा पाई * मन पवित्र, रहि गयो, लोभाई।
यह कर कारन, जान विधाता * दाहिन-अंग, फराकि रहे, भ्राता!॥
है, यह, तन-सुभाउ, रघुवंसन * कबहूं, धरत, कुराह, न पग, मन।
अति विस्वास, मोहिं, मन केरा * नारि पराई, सपन, न हेरा॥
{ शत्रू कहँ, नहिं पींठ दिखावत * नारि पराई, दीख न चाहत।
{ मांगइ, तेहि कहँ, करइ न नाहीं * ऐसे नर, थोरे, जग माहीं॥
कबिः—दोहाः—बातें, लछिमन ते, करत, मन, सिय-कमल, लुभाय।
२३४. गूँजत, छबि-रस-पिअत-फिर, मन-भँवरा-भगवान॥
उधर, चकित भये, देखत सीता * कँह गे, नृप-किसोर, मन-चीता।
मृग-नयनी, जेहि-ओर, निहारत * कमल सपेद, मनहु, बरसावत॥
बेल-ओट, तब, सखिन दिखाये * स्यामल-गौर-किसोर, सुहाये।
देखि रूप, लोचन ललचाने * हर्षे, जनु, निज संपति जाने॥
थके नयन, छबि, मिली न थाहा * पलकन हू, तौ, लगन न चाहा।
बढ़े प्रेम, तन-सुधि हू छोड़ी * सरद-चंद्र, जस, तकत चकोरी॥
नयनन-मग, रामहिं, उर लाई * पलक किवार मूंदि, चतुराई।
प्रेम-के-बस-सिय, सखियन जाना * कहिनसकत, कछु, मनसकुचाना॥
दोहा—परे दिखाई, कुंज महँ, तेहि अवसर, दोउ भाइ।
२३५. निकसे, बादर फारि, दुइ, विमल-चंद्र, जनु, आय॥

सोभा की खानी, दोउ बीरा * नीले - पीले - कमल, सरीरा ।
मोर-पंख, सिर, सोहत नीके * गुच्छा, बिच-बिच, फूल-कली के ॥
भाल, तिलक, और बूँद - पसीना * कानन - भूषन, सुघर, नवीना ।
बांकी भवैं, केस घुँघरारे * लाल-कमल, नयना, रतनारे ॥
ठोढ़ी, नाक, गाल, अति सुन्दर * लेत, मोल मन, हँसन, मनोहर ।
मुख-छबि, कहि न जात, मोहिं पाहीं * देखि जाहि, सौ काम लजाहीं ॥
गुदी, संख-सी, रतनन - माला * भुजा-काम-गज, मनहु, बिसाला ।
भरे - फूल, बाएं - कर, दोना * कुअँर साँवरे, अधिक सलोना ॥

दोहाः—पीतांवर, पातर - कमर, सुन्दरता - के - खानि ।
२३६. सूरज - कुल - भूषन निरखि, तन-सुधि-सखिन, भुलानि ॥

धरि धीरज, इक सखी, ठठोली * पकरि हाथ, सीता सन, बोली ।
सखीः—पाछे करेउ, गौर कर ध्याना * देखि लेहु, नहिं डर, मन-माना !॥
कविः—सिय, सकुचाने, नयन उघारे * आगू, रघुकल-सिंह निहारे ।
पाउं-ते-सिर-लगि, लखिप्रभु-सोभा * सुमिरपिता-प्रन, भा, मन, छोभा ॥
देखि सिया, बस - परे - पराये * देर भई, कह, सखिन, डराये ।
सखीः—फिर आउब, यह बेरा, काली ! * असकहि मनमहँ हँसि इकआली ॥
कविः—गूढ़ बानी सुनि, सिय सकुचानी * भये देर, माता-भय मानी ।
धरि धीरज, रामहिं, उर आनी * फिरी, अपनकहँ, पितु-बस, जानी ॥

दोहाः—लौटत, देखन पेंड़, पसु, करे बहाना, कोइ ।
२३७. देखत, जस, जस, राम-छबि, प्रीति, अधिक, तस, होइ ॥

जानि कठिन, सिव-चाप, सोच करि * स्यामल मूरति, चली, धरे, उर ।
{ प्रभु, जब, जात जानकी जानी * सुख-सनेह-सोभा-गुन - खानी ॥
{ घोटि, प्रेम की, स्याही कीन्ही * जनु तसवीर, हृदय, लिखि लीन्ही ।
गिरिजा - मंदिर, गई, बहोरी * चरन बंदि, बोली, कर जोरी ॥
सीताः-जय जय गिरि-वर-राज-किसोरी * जय महेस - मुख-चंद्र-चकोरी ।
जय, "गनेस'-और 'कार्तिक' माता * जगत-मात, बिजुली-से-गाता ॥

आदि, मध्य, नहिं, अंत,तुम्हारा * वेद, प्रभाउ-न-जानन - हारा ।
तुम, जग - जन्मत-पालत-मारत * मोहत, आपन-इच्छा-विचरत ॥
दोहाः—जिन्ह, माना पति, देवता, तिन्ह-नारिन - महँ, सीर ।
२३८. माहिमा, 'सेषहु', 'सारदा', सकत न कहि, गंभीर ॥
सेवत तुमहिं, मिलत फल चारी * बर-दाता, तुम, संकर-प्यारी ! ।
देवी ! पूजे, चरन, तुम्हारे * सुर, नर, मुनि,सब, होत सुखारे ॥
मोर मनोरथ, जानहु, नीके * बसत, सदा, हृदय, सब ही के ।
ताते, नहिं, इच्छा, बखान की * गिरी चरन,अस कहे, जानकी ॥
कविः—विनय-प्रेम-बस,भई भवानी * गिरी माल, मूरति मुसकानी ।
सो प्रसाद, सीता, सिर धरेऊ * बोली गौर, हर्ष, हिय, भरेऊ ॥
गिरिजाःसुनु सिय!सत्य-असीसहमारी * पूरन, मन-कामना, तुम्हारी ! ।
नारद-बचन, पवित्रहु, सांचा *सोइवर,मिलहि,जाहि,मनरांचा ॥
छंदः—मन, रँगेउ जेहिं मां, मिलइ, सो बर, जनम-सुन्दर सांवरो ।
करुना-निधान, सुजान, सील - सनेह - जानत रावरो ॥
यह भांति,गौर-असीस,सुनि, सिय,सखिनसँग,हर्षित भई ।
तुलसी, भवानिहिं,पूजि,फिर फिर मुदित-मन, घर कहँ गई ॥
सो०:—रीझी - गिरिजा, जानि, सिय-मन-हर्ष,न जात कहि ।
२३९. मँगल की जनु खानि, बाएँ - अंग, फरकन लगे ॥
कविः—हृदय, सराहत, सुन्दरताई * सिय की, गुरु पहँ, गे दोऊ भाई ।
कहा राम, सब, जा, मुनि पाहीं * सरल सुभाउ, छुआ! छल नाहीं ॥
लीन्ह फूल, मुनि, पूजा कीन्ही * फिर,असीस,दोउभाइन्ह,दीन्ही ।
वि०ः-सुफल, मनोरथ होहिं, तुम्हारे * राम, लषन, सुनि, भये सुखारे ॥
कविः-करिभोजन,फिरमुनिअतिज्ञानी* लगे कहन, कछु, कथा,पुरानी ।
भये सांझ, गुरु - आज्ञा पाई * संध्या करन, चले, दोउ भाई ॥
निकसा, पूरब, चन्द्र सुहावा * सिय-मुख-सम जाने,सुखपावा ।
फेरि, विचार कीन्ह, मन माहीं * सिय-मुख-सम, चंदरमा, नाहीं ॥

रामः—दोहाः—सागर - जनमा, भाइ-विष, दिन - भर, रहत बेहाल।
२४०. कहां,सिया-मुख ! चंद्र, कहँ !, मन - कलँक , कँगाल ॥

घटत, बढ़त, विरिहिन-दुखदाई * पकरत 'राहू',मग महँ,पाई।
चक्रइ-दुखावत, कमलन-द्रोही * दोस बहुत, चंदरमा ! तोही ! ॥
सिय-मुख, उपमा तोरी, दीन्हे * होइ दोस, बढ़ अनुचित कीन्हे।
कविः—सिय-मुख-छबि काहि, चंद्र-बहाने * गुरु पँह गये, रात गइ, जाने ॥
चरन-कमल-मुनि, कीन्ह प्रनामा * आज्ञा पाइ, कीन्ह विस्रामा।
गये-रात, रघुनायक जागे * देखत-लषन,कहन,अस लागे ॥
रामः—देखहु, लाली छाई, ताता ! * चकवा-कमल-पुरुष-सुखदाता ।
बोले लषन, जोरि, दोऊ कर * राम-प्रभाउ, दिखावा, कहिकर ॥

लषनः—दोहाः—भये-लाली, सकुचे कुमुद, तारे, भये मलीन।
२४१. आये प्रभु, तस, खबर सुनि, राजा, मे बल-हीन ॥

नृप-तारे, करिहहिं उजिआरी * धनुष-अँधेरी, टरइ न, टारी।
{ चकवा, कमल, भँवर, पसु, नाना * गई-रात, हर्षें, अस जाना ॥
{ देखई, प्रभु, सब भगत तुम्हार * हुइ हैं, टूटे धनुष, सुखारे।
निकसत-सूरज, नसत अँधेरा * तारे छिपि, जग, होत उजेरा ॥
सूरज उदय, नहीं, रघुराया ! * राजन कहँ, प्रभु-तेज जताया।
भुज-बल-महिमा, धनुष बतइहै * हुइ-न-सकइ, प्रभु ते, करवइहै ॥
कविः—लषन-बचन सुनि,प्रभु मुसुकाने * कीन्ह सौच, फिर, जाय नहाने।
नित्य-क्रिया करि, गुरु पहँ, आये * मुनि के चरन-कमल,सिर नाये ॥
'सतानंद' कहँ, जनक बुलावा * विस्वामित्रहिं पास, पठावा।
जनक-विनय, तिन, आय, सुनाई * हर्षि, बोलाइ लीन्ह, दोउ भाई ॥

दोहाः—'सतानंद' कहँ, बंदि, प्रभु, बैठे, गुरु पहँ, जाय।
२४२. 'चलहु तात', मुनि कहा, तब, पठवा 'जनक' बुलाय ॥

विस्वामित्रः-सिया स्वयंबर,देखिये जाई * देत विधाता, केहि, बड़ाई !।
लषनः—कहा लषन,जस पइ है, सोई * जेहि पर कृपा, आप की होई ॥

कविः—सब मुनि हर्षे, सुनि प्रिय-बानी * दीन्ह असीस, सभन, सुख-मानी।
फिर, मुनियन-संग-लिये, कृपाला * देखन चले, धनुष-यग-साला॥
सभा के मंडप, दोऊ भाई * आये, खबर, नगर सब, पाई।
चले लोग, घर-काज बिसारी * बालक,जुआन,बूढ़, नर-नारी॥
देखा 'जनक', भीर भइ भारी * लीन्हे, सेवक, अपन, पुकारी।
जनकः—तुरत,सबहिं लोगन पहँ,जाहू * आसन, उचित, देहु, सब काहू॥
कविः—दोहाः—कहि, फिर, कोमल बचन, तिन्ह, बैठारे नर-नारि।
२४३. उत्तम, मध्यम, नीच, लघु, दरजा के अनुसार॥
राज-कुँअर, तेहि अवसर, आये * मानहु, सुन्दरता, तन, छाये।
गुन-सागर, चातुर, सुभ-वीरा * सुन्दर, स्यामल-गौर-सरीरा॥
सोभित,राज-सभा मां,अस हुइ * पूरन-चंदा, तारिन-विच, दुइ।
जिनकी रही, भावना, जैसी * प्रभु-मूरति, देखी, तिन, तैसी॥
जाना, राजन-अति-रन-धीरा * मनहु बीर-रस, धरे सरीरा।
डरे, कुटिल-राजा, प्रभु-देखी * सकल भयानक,मनहु, बिसेखी॥
बने, असुर, जे, छल ते, राजा * समुझे, काल-सामने, आजा।
पुर-वासी, देखे दोउ भाई * उत्तम-पुरुष, नयन-सुखदाई॥
दोहाः—देखा, नारिन, मुदित-मन, जस-भावत-तस-रूप॥
२४४. जनु, धारे, श्रृंगार, तन, बैठा, परम अनूप।
रूप विराट, लखेउ विद्वानन * मुख,कर,पग,सिर,नयन,हजारन।
जनक-वंस के, देखहिं, ऐसे * होहिं सगे, प्रिय-सज्जन, जैसे॥
दीख 'जनक', और,सब ही रानी * पिता-मात-सम, बालक जानी।
जोगी, परम-तत्व पहिचाना * साँत-सुद्ध-सम चमकत, जाना॥
हरि-भगतन, देखे दोउ भ्राता * जेहि-कर-इष्ट, सोइ, सुख-दाता।
जौन - भाउ, देखा, सिय माई * सो सनेह, मुख, कहा न जाई॥
आयो-मुख-नहिं, रहा,हृदय-राहि * सो आनंद,सकइ, कवि, को काहि।
जेहि-कर भाउ, रहा, मन, जैसा * रामहु, तेहि कहँ, देखा, तैसा॥

दोहाः—चमकत, राज - समाज महँ, बैठे, राज - किसोर।
२४५. सुन्दर, स्यामल - गौर - तन, जग - के - लोचन-चोर॥

अस, सुभाउ ते, दोउ, मनोहर! * कोटि - काम - उपमा हू फूहर!।
मुख-छबि, सरद-चन्द्र सरमावत * कमल-नयन, देखत, जी भावत॥
'कामदेव'-मद-नासक चितवनि * सुन्दर, कहि न जात, मन-भावनि।
कुंडल-चमक, गाल, लहरानी * ठोढ़ी, ओंठ, मनोहर, बानी॥
चंदहिं हँसत, विलास, हाँस का * बाँकी भौं, अति-नीक, नासिका।
तिलक - झलक, चौड़े माथे पर * केस, कि, भँवरन, करत निरादर॥
चौ-गोसी टोपी, सोहत, सिर *फूल-कली, काढ़ी बिच बिच, फिर।
रेखा तीन, सँख - सी - गरदन * तीनहुँ, सोभा-तीनहु - लोकन॥

दोहाः—गज - मोतिन - कंठा, गेर, छाती तुलसी - माल।
२४६. चाल, सिंह, ऊंचे कंधा, भुज बलवान, बिसाल॥

तरकस, कमर, पितांबर, बांधे * बान, हाथ, धनु, बाएँ - काँधे।
पहिरे, पिअर जनेउ, सुहाये * पाउँ-ते-सिर-लागि, छबि-ते-छाये॥
देखि, लोग, सब, भये सुखारे * लागि द्रष्टि अस, टरत न टारे।
हर्षे जनक, देखि दोउ भाई * मुनि-पद-कमल, गहे, तब, जाई॥
कस-कीन्हा - प्रन, दीन्ह सुनाई * रंग-भूमि, सब, घूमि, दिखाई।
जहँ जहँ जाहिं, कुअँर, सुभ दोऊ * चितवाहिं, चकित भये, सब कोऊ॥
अपने रुख, सब, रामहिं देखा * मरम न जाना, केहु, विसेषा।
मुनि, कहि "रचना भली", सराहा * भयो 'जनक', मन, सुःख अथाहा॥

दोहाः—सब तखतन ते, तखत इक, सुन्दर, ऊंच, बिसाल।
२४७. मुनि-समेत, दोउ भाइ, तहं, बैठारे, महिपाल॥

रामहिं देखि, भूप, हिय हारे * फीके, चद्र-देखि, जस, तारे।
अस बिस्वास, सभन, मन माहीं * राम धनुष तोरहिं, सक नाहीं॥
बिन तोरे हू धनुष, बिसाला * रामहि, सिय पहिरइहैं माला।
कुछ राजा लोगः लौटहु घर, अस जाने, भाई! * जस, प्रताप, बल, तेज गँवाई!॥

कविः—हँसे,कछुक राजा, सुनि बानी ※ बिना-समुझि, अंधे, अभिमानी ।
दूसरे राजाःदेखइं,तोरेहु धनुष,बिबाहीं !※ बिन तोरे, कैसे, सिय पाहीं ॥
एक बार, कालहु कहँ, जीतहिं ※ लरहिं लराई, चाहत सीतहिं ।
कविः—यह सुनि,और-भूप,मुसकाने ※ धरमी, जो,हरि-भगत, सयाने ॥
भक्त-राजाः-सो०ः—सिया, बिबाहब राम, गरब, दूरि करि, सभन कर ।
२४८. जीतइ को, संग्राम, दसरथ-सुत, रन-महं-चतुर ॥
ब्रथा, मरत क्यों, गाल बजाई ※ मन-लड्डू, कहुं, भूख बुझाई ।
सीख मोर, सुन, लेहु, पुनीता ※ जगत-मात, जानहु, जो, सीता ॥
जगत-पिता, रघुबरहिं बिचारी ※ भरि लोचन, छबि, लेहु निहारी ।
सुन्दर, सुख-दाता, गुन-खानी ※ सिव-के-हृदय - बसत, भवानी ॥
अमरित-सिन्धु,पास,और,भूलत! ※ मृग-तृष्णा-जल कहँ, तुम ऊलत ।
करहु जाइ,जो, जेहि, मन, भावा ※ हम तौ, आज,जनम-फल पावा ॥
कविः अस कहि, भले-भूप अनुरागे ※ सुन्दर रूप, बिलोकन लागे ।
लखत देवता, चढ़े बिमाना ※ बरसाहिं फूल, करत सुभ गाना ॥
दोहाः—जानि सुअवसर, 'जनक', तब, सीतहिं, लीन्ह बुलाय ।
२४९. चतुर सखी, सुन्दर, करे आदर, चलीं लिवाय ॥
सिय-सोभा, नहिं जाइ बखानी! ※ जग-माता, गुन-रूप-की-खानी! ।
देउं, कौन उपमा, बलिहारी ! ※ भई जूँठ, सब, लागि जग-नारी ॥
सिय - रूप, जो उपमा देई ※ बुरा कहइ कवि, अपजस लेई ।
उपमा देइ, कोउ, झक-मारी ! ※ धरी कहां !जग मँह,अस नारी !॥
'सारद' बकत, 'उमा' तन-आधा ※ अंग-रहित-पति-रति-कहे, बाधा ।
बिष-मदिरा, दोऊ, जिन्ह-भाई ※ "लक्ष्मी"-उपमा-हु, न' सुहाई ॥
{ 'छबि'रूपी हो, अमिरत-सागर ※ दिव्य-रूप,'कछुआ',गुन-आगर ।
{ 'सोभा'-'डोर','सिंगार'-'मथानी' ※ हाथन, मथइ, 'काम'जो आनी ॥
{ दोहाः—यह विधि, उपजइ "लक्ष्मी", सुन्दरता-सुख-खानि ।
{ २५०. तब, सिय की उपमा कहइ, कवि-मति,तहुं, सुकुचानि ॥

चलीं,संग लइ, सखी सयानी ❋ गावत गीत, मनोहर-बानी।
नये बदन पर, सोहत सारी ❋ जग-माता, छबि, तुलत-न,भारी!
सुन्दर भूषन, सकल, सुहाये ❋ अँग,अँग,रचि,सखियन,पहिराये।
रंग-भूमि, जब, सिय, पग धारी ❋ देखि रूप, मोहे नर नारी॥
हर्षे सुर, सब, ढोल बजावत ❋ बरसत फूल, अपसरा गावत।
कर-कमलन - सोहत जय-माला ❋ अंजाने देखे महिपाला॥
रामहिं, देखा चाहा, सीता ❋ लीन्ह, मोह, मन-राजन्ह, जीता।
मुनि के निकट, देखि दोउ भाई ❋ नयना दौरे, सँपति पाई॥

दोहाः—बड़िन - लाज, भारी-सभा, देखि, सिया सकुचानि।
२५१. देखन लागी, सखिन कहँ, धरि, उर, छबि-भगवान॥

देखि राम-सिय-छबि, नर नारी ❋ रहे. देखि, के नयन उघारी।
सोचत लोग, कहत सकुचाहीं ❋ विधिसन,विनय, करहिंमनमाहीं॥
नरनारी-हेविधि!जनक-कुमति,हरिलेहू❋ मति. हमार-कस, उन कहँ, देहू।
नृप, प्रन तजि, बिनु-पूछे-काहू ❋ सिया-राम-कर, कराहिं विवाहू॥
कहइभला, जग, सब कहँ भावे ❋ कीन्हें हठ, छाती जरि जावे।
कविःयह-लालसा-मगनसबलोगू ❋ बर, साँवरो, जानकी - जोगू॥
तब, भाटन कहँ, 'जनक' बुलाये ❋ आये, कवित, समय-सम गाये।
जनकःकहनृप,जाइ कहउ, प्रनमोरा ❋ चले भाट, हिय, हर्ष. न थोरा॥

भाटः—दोहा—कहे भाट, अस सुभ, बचन, सुनहु, सकल महिपाल!।
२५२. जनक-केर-प्रन, हम कहत. भुजा उठाइ, बिसाल॥

राजा, चंद्र, धनुष है, राऊ ❋ गरु, कठोर, जाना - सब - काहू।
'रावन' - 'बानासुर-से' वीरा ❋ देखि धनुष, लौटे, तजि धीरा।
{ सोइ, संभु कर, धनुष, कठोरा ❋ राज - समाज आज, जे तोरा॥
जय हो, त्रिभुवन, और"बैदेही" ❋ बिना बिचार, बरइ, हठि, तेही।
कविः-सुनि प्रन,राजन्ह,भा अरमाना ❋ क्रोधित भे,जिन्ह कहँ अभिमाना॥
बांधे - कमर, उठे, अकुलाई ❋ चले, अपन-देवन, सिर नाई।

तकि,झुँझलाय,ताकि,धनु पकरहिं * उठइ न,कोटि भाँति,बल करहीं॥
जे राजा, कछु,मन महँ, समुझहिं * तोरनधनुष,पास,नहिं फटकहिं।
दोहाः—कचकचाइ, पकरत धनुष, उठइ न, चलइं, लजाय।
२५३. बल, जोधन कर, पाय, जनु, धनुप, और - गरुआय॥
दस - हजार राजा, इक-बारा * लगे, उठावन, टरइ, न टारा।
हिला न, धनु, राजन ते कैसे * पतिवृत-नारि, कामि-नर, जैसे॥
हँसिबे - जोग, भूप भये, ऐसे * बिनु-बिराग, संन्यासी, जैसे।
कीरति, विजय, बीरता भारी * चले, धनुष के आगे, हारी॥
भये मलीन, हारि हिय, राजा * बैठे, जा, जा, अपन - समाजा।
जोधन, दीख 'जनक', अकुलाने * बोले बचन, क्रोध - के - साने॥
जनकः-देस - देस - के भूपति नाना * आये, सुनि प्रन, जो, हम ठाना।
देव, दैत्य, धरि मनुज-सरीरा * आये बली - बीर, रन - धीरा॥
दोहा!—कीरति सुभ, भारी विजय, चाप - चढ़ावन-हार!।
२५४. कह, बृह्मा, नहिं, जग, रचेउ, कन्या, बरइ, हमार॥
कहउ, काहि, यह, लाभ, न भावा * पर, केहू नहिं, धनुष चढ़ावा।
दूर, चढ़ाउब, तोरब, भाई! * तिल-भरि, भूमि, न, सके हटाई॥
बीरो! अब, कोउ, बुरा न मानेउ * धरती, बीरन - खाली जानेउ।
तजहु आस, अपने घर, जाहू * लिखा न,विधिना सीय-विवाहू॥
छांड़ौं प्रन, तौ, धरम नसाई * नहिं-छांड़त,सिय,जात न ब्याही।
जग, बिन जोधन, जनतेउँ, भाई! * करि प्रन, करवावत न हँसाई॥
कविः-जनक-बचनसुनि,सब,नर नारी * देखि जानकी, भये दुखारी।
लषन, क्रोधि, करि टेढ़ी भौंहें * फरकत ओंठ, औ, नैन रिसौंहें॥
दोहाः—कहि न सकत, रघुवीर-डर, लागि बचन जनु, बान।
२५५. नाइ, राम-पद-कमल, सिर, कहा, न-सेखी-सान॥
लषनः —रघुबंसिन्हमहँ,जहँ,कोउहोई * तेहि-समाज,अस,कहत न कोई।
कही जनक,जस, अनुचित बानी * कुल-भूषन-प्रभु, जाने ज्ञानी॥

रघुकुल-भानु ! लेहु, अब, देखी * कहउँ, सुभाउ, न मारत सेखी ।
आज्ञा, प्रभु ! जो, तुम्हरी, पाऊँ * गेंद - मनहु, ब्रह्मांड उठाऊँ ॥
कच्चे - घड़ा - समानहिं, फोरउँ *गिरि-"सुमेरु",मूरी-सम, तोरउँ ।
अति-प्रताप - महिमा - भगवाना * कहा ! विचारा, धनुष, पुराना ॥
नाथ ! जानि अस, आज्ञा दीजइ * तनिक, तमासा, देखि तौ लीजइ।
कमल-नाल-सम, चाप चढ़ाऊँ * वदि वदि,सौ-जोजन, लै जाऊँ ॥

दोहाः—'कुकुर-मुता'-सम, तोरि देउँ, तुम - प्रताप - बल, नाथ !
२५६. चरनन-सौं, जो, ना करउँ, धनुष न लेउँ, फिर, हाथ !!

कविः-वचन,क्रोध-भरि,लछिमन बोले * पृथ्वी, डगमग, दिग्गज डोले ।
सबहि लोग, सब भूप डराने * सिय हर्षी, राजा सकुचाने ॥
राम, गुरू, सब मुनि, मन माहीं * भये प्रसन्न, पुलकि, पुलकाहीं ।
दीन्ह, लषन कहँ, राम, इसारा * प्रेम - समेत, निकट, बैठारा ॥
'बिस्वामित्र', समय, सुभ जानी * बोले, प्रेम-सनी, अस बानी ।
विस्वामित्रः उठहु,राम!तोरहु,भव-चापा * मेटहु, जनक - केर, संतापा ॥
कविःसुनि गुरु-वचन,चरन,सिर नावा *दुख,सुख,कछुनहिं,मनमहँ,आवा ।
भये ठाढ, उठि, सहज सुभाये * गज-मतवारी - चाल - लजाये ॥

दोहाः—मानहु, तखत-पहाड़ पर, निकसा, भोरहिं, भान ।
२५७. संत-'कमल' लागे, खिलन, नयन-'भंवर' हर्षांनि ॥

राजन्ह - आसा - 'रैन' नसाई * गरब - बचन - 'तारे' मुरझाई ।
'कुमुद'-घमंडी, जनु, सकुचाने * 'उल्लू'-(कपटी-भूप) लुकाने ॥
मिटा सोक 'चकवन'-मुनि-देवा * बरषहिं फूल, जनावहिं सेवा ।
गुरु-पद बंदि, सहित-अनुरागा * राम, मुनिन ते, आज्ञा मांगा ॥
सहजहिं, चले सकल-जग-स्वामी * जनु, गज-श्रेष्ठ,चलइ, कोउ कामी।
नरनारीः-चलत राम, सब पुर-नर नारी * अति पुलकित-तन, भये सुखारी ॥
बंदे पितर, औ, पुण्य सँभारे * पुण्य-प्रभाउ, जो, होइ हमारे ।
तौ, सिव-धनुष, कमल की नाईं * तारहिं राम, गनेस, गोसाईं ! ॥

दोहाः—रामहिं, प्रेम - समेत. लखि, सखियन, पास - बुलाइ ।
२५८. सीता - माता, प्रेम - बस, कहे बचन, बिलखाइ ॥

सीता-माताः—सबहि.तमासा-देखन-हारे!* औरन्ह, को कहि, हितू-हमारे ! ।
कोउ न कहत,जा, अस, नृप पाहीं * एह, बालक, हठ, नीकी नाहीं ॥
{ छुआ न धनु, 'रावन','बानासुर' * राजा, अभिमानी, भागे, मुरि ।
करत, सो धनु, बालकन-हिवाला * छोट-हंस, भला,उठइ हिमाला !॥
'जनक'-चतुरता, सबहि, हिरानी * ईश्वर-गति.सखि,जात न जानी ।
सखीः—बोली चतुर-सखी, मृदु-बानी * तेज बड़ा, छोटे नाहिं, रानी ! ॥
एक 'अगस्त्य'-मुनि, सिंधु अपारा * तीन-आचमन, सोखा, सारा ।
सूरज - घेरा, छोटा लागत * तीनहुँ - लोक-अँधेरा भागत ॥

दोहाः—'बृह्मा' 'विष्णू', और, 'सिव', छोट - मंत्र - बस होत ।
२५९. मतवाला - गजराज हू, मानत, आंकुस-चोट ॥

'कामदेव', फूलन-धनु लीन्हे * सकल लोक, अपने बस कीन्हे ।
देवी ! तजु संसय, अस जानी * तोरहिं राम, राम, धनु, रानी ! ॥
कविःसखी-बचन सुनि, भइ प्रतीती * गयो सोक, बाढ़ी अति, प्रीती ? ।
तब, रामहिं, देखा बैदेही * डरत, मनावत जेही-तेही ॥
सीताःमन-ही-मन, मनाय, अकुलानी * होहु प्रसन्न. महस-भवानी ! ।
करहु सुफल, आपन सेवकाई * करि हित, हरहु चाप-गरुआई ॥
हे गनेस ! बर-दाता-देवा * आज तलक, कीन्हीं, मैं. सेवा ।
बार बार, सुनु, बिनती, मोरी * करहु चाप-गरुआई, थोरी ॥

कविः—दोहाः—देखि, देखि रघुबीर कहँ, सुर मनाये, धरि धीर ।
२६०. छायो, लोचन, प्रेम-जल, पुलकावली, सरीर ॥

देखि, नयन-भरि, प्रभु की सोभा * पितु-प्रनसुमिरि.फेरिमन खोभा ।
सीताः—अहा ! पिता टेढ़ी हठ, ठानी * समुझत नाहिं,कछु, लाभ न हानी॥
डरि, मंत्री, समुझाई न कोई * बड़िन-सभा,अनुचित, असहोई ।
बज्रहु ते, धनु, कठिन, कठोरा * स्यामल, कोमल-गात-किसोरा ॥

विधि !केहिभाँति,धरउं,उर,धीरा ॥ सिर्स-फूल-कन, विधत, न, हीरा ।
सकल सभा की मति गइ, मारी ॥ हे सिव-धनु ! मैं, सरन तुम्हारी ॥
भारीपन, लोगन्ह पर, डारी ॥ हलके होवहु, राम - निहारी ! ।
कविः-चिंता घोर, सिया-मन माहीं ॥ इक इक पल,इक-जुग-सम जाहीं ॥

दोहाः—कबहुँ, राम, धरती, कबहुँ, देखत, लोचन डोलि ।
२६१. काम-मीन, जनु, झूलि, दुइ, चंद्र-मुखी-हिनडोल ॥

'भँवरा'-वानी,'कमल'-से-मुख,फँसि॥ लज्जा-रैन-भये, निकसइ, कस!।
रुका नयन-जल, लोचन-कोना ॥ जनु, कंजूस,गाढ़ि राखि सोना ॥
सकुची, व्याकुलता, अति, जानी ॥ धरि धीरज, प्रतीति, उर, आनी ।
सीताः { तन-मन-वचन,मोर प्रन साँचा ॥ राम-चरन-कमलन, मन राँचा ॥
तौ, भगवान, हृदय-के-बासी ॥ करहिं, मोहिं, रघुवर-की-दासी । }
जेहिकर, जेहि पर, सत्य सनेहू ॥ सो,तेहि मिलइ, न कछु संदेहू ॥
कविः-रामहिं देखि, प्रेम-प्रन ठाना ॥ कृपा-निधान, राम, सब जाना ।
सियहिं देखि, देखा धनु, कैसे ॥ देखइ गरुड़, सर्प-लघु जैसे ॥

दोहाः—देखा लषन, कि राम ने, ताका, शिव - कर - चाप ।
२६२. दाबी पृथ्वी, पाउं ते, तोरत, जाइ न कांपि ॥

लषनः { 'कछुआ','शेष','वराह',औ'दिग्गज'!॥ हिलइनपृथ्वी!कहुँ,धीरजतजि।
चाहत राम, चाप कहँ, तोरी ॥ रहेउ पोढ़, सुनि, आज्ञा-मोरी !॥ }
कविःधनु के तीर, राम, जब आये ॥ देव, पुण्य, सब जानेन मनाये ।
{ सब-की-संसय, और, अज्ञाना ॥ मूरख-राजन्ह - कर - अभिमाना ॥
परशुराम केरा, अभिमाना ॥ देवन-रिषिन-केर, सकुचाना ।
सीता-सोच, जनक-पछितावा ॥ रानिन्ह,जरि,जोदुख,मन आवा ॥
यह सब, चाप-जिहाजहिं पाई ॥ चढ़े जाइ, मिलि मिलि, इकजाई ।
राम-भुजा-बल-सिंधु अपारा ॥ चहत पार, नहिं खेवन-हारा ॥ }

दोहाः—दीख, राम, सब लोग कहं, मनहु, खिची - तसवीर ।
२६३. दया-के-सागर,सियहिं लखि, जाना, बहुत - अधीर ॥

देखी सिय, विकल, हिय - हारे * जुग-सम,जात, पलक-इक-मारे ।
प्यासा, बिनु-पानी-मरि-जावइ *फिर,कह,अमरितु-सिंधुजिआवइ!॥
का वर्षा, जब, खेत सुखाने * कहा, समय-चूके, पछिताने ! ।
अस, जिय, जानि, जानकी देखी * हर्षे प्रभु, लखि प्रीति-विसेषी ॥
गुरुहिं, प्रनाम, मनहि-मन, कीन्हा * तुरतहि,धनु, उठाइ, प्रभु लीन्हा ।
इक-विजुली-चमकी, जब, लीन्हा * धनु, गोला,अकास सम, कीन्हा ॥
लेत, चढ़ावत, खींचत गाढ़े * दीख न केहु, रहे, सब, ठाढ़े ।
राम, तुरत, फिर, बीच-ते, तोरा * "ताड़" भयो, जग, सोर कठोरा ॥

छंदः—गा छाय, सोर कठोर, लोकन, बहँके सूरज-वीर, तब ।
चिंघारे दिग्गज, कांपि भूइं, भूइं साधे,सोउ घबराये, सब ॥
सुर,असुर, मुनि, सब,कान मूँदे, सकल, विकल, बिचारहीं ।
सिव-चाप, तोरेउ, राम, तुलसी, जय-के-वचन उचारहीं ॥

सो०ः—संकर-चाप, जिहाज, रघुबर-भुज-बल, सिंधु जनु ।
२६४. बूड़ी, सकल समाज, चढ़ी जो, पहिले, मोह-बस ॥

करि दुइ खंड, भूमि महँ, डारे * देखि, लोग, सब, भये सुखारे ।
विश्वामित्र, सिंधु - इक-पावन * गहिर प्रेम-जल, जहँ,मन-भावन ॥
राम-चंद्र कहँ, नयन, निहारी * उमगी लहर, खुसी कर, भारी ।
बाजा, देव, बजावत, नाना * देव-नारि, नाचहिं, करि गाना ॥
बृह्मादिक, सुर, सिद्ध, मुनीसा * वाह ! वाह ! कहि देहिं असीसा ।
बरसत, फूल रँगीले, खरखर * गावत किन्नर, गीत, मनोहर ॥
जय,जय,धुनि,भरि रही सब लोका * 'टूटि धनुषः'असधुनि कहँ रोका ।
कहइं हँसे, जहँ, तहँ, नर, नारी * "तोरउ राम, शँभु-धनु भारी" ॥

दोहाः—सेवक, भाट, औ सूत-जन, अस्तुति कीन्ह नवीन ।
२६५. रतन,वस्त्र, धन, गज, तुरँग, लोग, निछावर कीन्ह ॥

झाँझ, मृदंग, संख, सहनाई * बाजत, ढोल, नगार, सुहाई ।
नाना बाजे, बजत, सुहाये * जहँ, तह, नारिन, मंगल गाये ॥

सखिन सहित, हर्षीं सब रानी * सूखत धान, परेउ, जनु, पानी ।
जनक-सोच गयो, मन हर्षाई * पैरत, थके, थाह, जनु, पाई ॥
भये मलिन, राजा, धनु टूटे * जस, दिन महँ, दीपक, छवि-छूटे ।
सीता कर सुख, कहुँ, केहि भाँती * जनु, पपिहा, पाये जल-स्वांती ॥
रामहिं, लषन विलोकत, कैसे * बाल—चकोर, चंद्रमा, जैसे ।
'सतानंद', तब, आयुस दीन्हा * सीता, गमन, राम पहँ, कीन्हा ॥

दोहाः—संग, सखी, सुन्दर, चतुर, गावहिं मंगलचार ।
२६६. बाल-हंसिनी-चाल चलि, सोभा, अंग, अपार ॥

सखिन-बीच, सिय, सोहत, कैसी * सब-छवि-बीच, महा-छवि, जैसी ।
कर-कमलन, जय-माल सुहाई * जनु-जग-जीति, सो, सोभा छाई ॥
तन, सकोच, मन, अधिक उछाहू * गूढ़-प्रेम, लखि परइ न, काहू ।
पास, जाइ, प्रभु की छवि दीसी * रहि गईं ठाढ़ी, चित्र-लिखी-सी ॥
सखीः—चतुर सखी देखा, समुझावा * पहिरावहु, जय-माल, सुहावा ।
कविः—सुनत, दोउकर, माल उठाई * प्रेम के बस, पहिराइ न जाई ॥
नाल-सहित, दुइ कमल, मनहु, कर * देत, चंद्र कहँ, जय-माला, डरि ।
गावत, छवि कहँ, देखि, सहेली * सिय, जय-माल, राम-उर मेली ॥

दोहाः—रघुवर उर, जय-माल, देखि, देव, बरषहिं सुमन ।
२६७. सकुचे, तब महिपाल, देखे-सूरज, कुमुद, जस ॥

बाजे, पुर, अकास, सब माहीं * दुष्ट, मलिन, सज्जन हर्षाहीं ।
सुर, किन्नर, नर, नाग मुनीसा * जय! जय! जय! कहि, देत असीसा ॥
सबहि अपछरा, नाचत, गावत * फूल, भरे-डलियन, बरसावत ।
जहँ, तहँ, बिप्र, वेद-धुनि करहीं * भाट, बधाई, मुख, उच्चरहीं ॥
तीनहु लोक, रहा, जस, छाये * टूटा धनुष, राम-सिय, ब्याहे ।
करत आरती, पुर - नारी - नर * बल-ते-बाहिर, देत निछावर ॥
सोहत, सिय-राम की जोरी * छवि, श्रृंगार, बैठे यक - ठौरी ।
कहत सखी, 'सिय! चरन, लेउ छुइ' * छुअत न, सीता, मन महँ डर हुइ ॥

दोहाः—गौतम-नारी-सुधि करे, छुअत न, चरनन, हाथ ।
२६८. जग-ते-बाहिर-प्रीति लखि, हँसे, मनहिं, रघुनाथ ॥

तब, सिय-देखि, भूप ललचाये ❋ क्रूर, कपूत, मूर्ख, रिसियाये ।
कुछ राजा } उठि,उठि,बखतर-पहिर,अभागे ❋ झट, बकवाद, करन, सब, लागे ॥
लेहु छुड़ाइ, सिय कहँ, कोऊ ❋ बांधउ, राजा-पुत्रन, दोऊ ! ।
तोरे धनुष, काज, नहिं, होई ❋ हमरे जियत, बरइ सिय, कोई ॥
करहिं 'जनक', जो, राम-सहाई ❋ जीतहु, जनक-सहित, दोउ भाई! ।
भले राजाः—भले भूप, बोले, सुनि बानी ❋ राज-सभा महँ, लाज लजानी ! ॥
बल, प्रताप, बीरता, बड़ाई ❋ नाक, पिनाक के संग, सिधाई ।
नई सूरता, का, कहुँ, पाई ? ❋ कुमति न होत, लगत, मुख, स्याही ॥

दोहाः—देखहु, रामहिं, नयन भरि, तजि रिस, डाह, घमंड ।
२६९. क्यों, पतंग ! जाने, जरत, लछिमन-क्रोध-प्रचंड ॥

गरुड़-भाग, जस, कौआ चाहत ❋ 'खरहा', सिंह-देखि, ललचावत ।
चहत खैर, बिन-कारन-क्रोधी ❋ चाहइ संपति, शिव-कर ग्रोधी ॥
चाहइ जस, कोउ, लोभि-चटोरा ❋ कामी चहइ, कलंक-न, थोरा ।
तजि हरि, चाहइ पदवी बाला ❋ तस, लालच, तुम्हरा, महिपाला ॥
कविः—सुनि हल्ला, सीता सकुचानी ❋ सखी, लिवाय गईं, जहँ रानी ।
सहजहिं, राम, चले, गुरु पाहीं ❋ सिय-प्रेम, बरनत, मन माहीं ॥
रानिन सहित, सोच-बस सीता ❋ अब, धौं, विधिना, कह, मन, चीता ॥
राजन की बातें, सुनि, लछिमन ❋ कहा न, राम के डर, गे, पी, मन ॥

दोहाः—लाल-नयन, टेढी-भवैं, क्रोधित, राजन-ओर ।
२७०. जनु, मतवाले गजन कहँ, चहत, सिंघ-लघु, तोरि ॥

गुल्लू देखि, व्याकुल नर-नारी ❋ मिलि सब, दें, राजन कहँ, गारी ।
जानि, धनुष-टूटा, तब, आये ❋ "भृगु-कुल-कमल-के-सूर्य," सुहाये ॥
सब राजा, देखत, सकुचाने ❋ झपटि 'बाज', जस, 'लवा', लुकाने ।
गोरे-तन-पर, भसम रमाये ❋ माथे, तिलक, त्रिपुंड, रचाये ॥

सीस, जटा, मुख, चंद-सुहावा * रिस ते, कछुक, लाल हुइ आवा।
भौं टेढ़ी, नयना रिस-माने * चितवत, सीधे, लगत, रिसाने ॥
कँधा पोढ़, उर, भुजा, विसाला * सुघर जनेउ, माला, मृगछाला।
कोपिन पहिरे, तरकस बांधे * कर, धनु-वान, कुलहरा, कांधे ॥

दोहा:—संत-रूप, करनी कठिन, कहा न जाइ स्वरूप।
२७१. मुनि-जामा, जनु, वीर-रस, आवा, जहँ, सब भूप ॥

'परशुराम' कर रूप, भयँकर * उठे भूप, सब, देखे, मन, डरि।
कहि आपन, औंर, पितु कर नामा * लगे करन, सब, दंड-प्रनामा ॥
हिल-हू-ते, जेहि-ओरी, हेरी * समुझे उमिरि-भरी-अब-"मेरी"।
आय, 'जनक', फिर तौ, सिर नावा * सिय बुलाइ, प्रनाम करावा ॥
दीन्ह असीस, सखीं हर्षानी * जहँ-नारी, लइ गईं, सयानी।
विश्वामित्र, मिले, फिर, आई * पद-कमलन, डारे, दोउ भाई ॥
"ये दसरथ-सुत", कहा, निहोरी * दीन्ह असीस, देखि, सुभ-जोरी।
रामहिं, चितइ रहे, भरि लोचन * रूप अपार, 'काम'-मद-मोचन ॥

दोहा:—देखि 'जनक', बोले 'भृगू', कस लागी, यह भीर !।
२७२. पूँछत, जनु जानत नहीं, छायो क्रोध, सरीर ॥

समाचार, कहि, 'जनक', सुनाये * जेहि कारन ,राजा, तहँ, आये।
अस सुनि, दूसर-ओर, निहारे * धनु के टुकरा, देखे डारे ॥
परशुराम: अति रिस, बोले, बचन, कठोरा * मूरख, जनक! धनक, किन तोरा ?।
वेग, दिखावहु, मूरख ! आजू * उलटि देउं, सब, तोरा राजू ! ॥
कवि:—अति डर, उतर देत, नृप, नाहीं * दुष्ट - भूप, हर्षें, मन माहीं।
सुर, मुनि, नाग, नगर-नर-नारी * सोचत, सब कहँ, डर, मन, भारी ॥
मन, पछितात, सिया-महतारी * "बनी-बात, विधि, कैसे, बिगारी"।
'परशुराम' की रिस, सुनि, सीता * आधा-पल, इक-जुग-सम, बीता ॥

दोहा:—देखा, सब-लोगन-डरे, जानि, जानकी-डर।
२७३. हृदय, न दुख, ना, सुख, कछू, बोले, अस, रघुबर ॥

रामः—नाथ ! शँभु-धनु-तोरन-हारा * हइ है कोऊ, दास-तुम्हारा ।
का आज्ञा ? क्यों, कहत न, मोही * करि रिस, कह, मुनि-क्रोधी-सोई ॥
परशुरामः—सेवक, सो, जो, करइ सेवकाई * शत्रू-करनी ! करहुँ लराई ।
सुनहु, राम ! जेइ, शिव-धनु तोरा * 'सहसबाहु'-सम, दुसुमुन मोरा ॥
सो बैरी, ताजि देइ समाजा ! * नहिं, मारे जइहैं, सब राजा ।
कविः—सुनि, मुनि-बचन, लषन मुसुकाने * कहा, रिषी कर मान सिराने ॥
लषनः—तोरी, बहु धनुहीं, लरिकाईं ! * कबहुँ न, रिस, अस, कीन्ह गोसाईं ! ॥
यह धनु पर, ममता, क्यों मन महँ * परशुराम बोले, रिस-तन-महँ ॥
परशुरामः—दोहाः—राज-पुत्र, तू, काल-बस, कहत न बात, सँभारि ।
२७४. धनुही-सम, कह, शिव-धनुप, जो, जानत संसार ?? ॥
लषनः मोरजान, कहा 'लषन', चिढ़ाकर * सुनहु, देव ! सब धनुष बराबर ।
तोरि पुराना, लाभ, न, हानी * भूलि, राम, देखा, नयो जानी ॥
टूटि, छुअत, रघुवर यह टारन * कौन दोस ? सबरिस, बिन कारन ! ॥
परशुरामः—बोले, देखि, परसु की ओरा * रे शठ ! सुना, सुभाव न मोरा ! ॥
बालक जानि, न मारउं, तोही * खाली, मुनि ही, जानि न, मोही ।
जानत जग, मैं, क्रोधि - कुआँरा * छत्री - कुल - का-मारन-हारा ॥
बिन-राजा, पृथ्वी, मैं, कीन्ही * बहुत बार, बृह्मण कहँ, दीन्ही ।
'सहसबाहु'-भुज - काटन - हारा * देखु ! कुलहरा, राज-कुमारा ॥
दोहाः—मात, पिता कहँ, सोच महँ, डारु न, राज-कुमार ! ।
२९५. गर्भ-के-बालक तजत तन, यह परसा की धार ॥
लषनः—कहा लषन, धीरे, मुसुकावत * मुनी ! अपन कहँ, जोधा, जानत ।
फिर, फिर, मोहिं, दिखाइ कुलहरा * चाहत, फूंकि, उड़ाय पहारा ॥
छुई - मुई, हम कोऊ, नाहीं * जे, अँगुरी देखत, मुरझाईं ।
देखे परसा, और, धनु बाना * कहे बचन, मैं, भरि-अभिमाना ॥
'भृगु'-कुल जानि, औ, देखि जनेऊ * जो, तुम कहा, रोकि रिस, सहेऊ ।
मारि गऊ, बृह्मण, साधू, सुर * रघुवंसी, नहिं बनत बहादुर ॥

मारे, पाप, औ, अपजस, हारे * मारत हू, पद परइ, तुम्हारे।
कोटि बज्र, इक वचन तुम्हारा * बाँधे क्यों, धनु-बान कुलहरा !॥
दोहा:—देखि रूप, अनुचित कहा, छमउ, महा-मुनि, धीर ! ।
२७६. 'परशुराम', रिसिआइ, तव, बोले, बचन गँभीर ॥
परशुराम:—विस्वामित्र!मंद,यह बालक* टेढ़, काल बस,कुल-कर-घालक ।
चंद्र-कलंकी, सूरज-कुल कर * निडर,लगाम न,मतिअति फूहर ॥
काल-कौर हुइ है, छन माहीं * कहऊँ,पुकारि,दोस, मोहिं,नाहीं ।
हटकहु, जो, चाहउ छुटकारा * समुझावहु बल, क्रोध, हमारा ॥
लषन:—कहा लषन,जस मुनी!तुम्हारा* तुम्हरे जिअत, को वरनन-हारा ?।
अपने मुहँ, तुम, अपनी करनी * बहुत बेर,बहु-भाँति-ते, बरनी ॥
नहिं संतोष, तौ, फिर कछु कहिए * रोके रिस,क्यों,अति दुखसहिए ।
रिस नहिं, धारि, बीर-बरतावा * गारी देत, न सोभा पावा ॥
दोहा:—सूर, लरत, मैदान आ, कहि न जनावत आपु ।
२७७. डर-पोका, दुसमुन-डटे, बक-बक करहिं विलाप ॥
लिये काल, जनु, संगहिं, आवत! * बार, बार, तुम, मोहिं बुलावत! ।
कवि:—सुनत, लषन के,वचन,कठोरा * पकरा, संभरि के, परसा-घोरा ॥
परशुराम:देहिं न दोष,कोउ,अब लोगू!* कडुआ - बालक, मारन - जोगू ।
समुझि बाल, मैं बहुत बचावा * सच-मुच, मरन-किनारे, आवा ॥
कवि:—कहा गुरू, छमिये अपराधू! * बालक-दोस, गिनत नाहिं, साधू ।
परशुराम:बिन-कारन रिस,हाथ,कुलहरा* गुरु - बैरी, अपराधी ठाढ़ा !॥
{ उतर देत, छाँड़त, बिनु-मारे * कर कानि, मुनि-नाथ! तुम्हारे ।
{ नहिं तौ, काटि, कुठार की धारा * होत, सहज, गुरु-ते, उद्धारा ॥
विस्वामित्र:दोहा:-हरा - भरा सूझत, अबहुँ, बने, कैस न दान ! ।
२७८. तोरेउ, भारी, शिव-धनुष, छुटत न, तहुँ, अज्ञान !! ॥
लषन:कहा लषन,मुनि,सील तुम्हारा * को नहिं जानत, सब संसारा ।
मात, पिता ते निबटे नीके! * गुरु कर करज,सोच,यहि,जी के!॥

सो ब्योहार, मोर-सिर, काढ़ा ! * समय बहुत भा, ब्याजहु, बाढ़ा !।
लाउ, महाजन अपन, बुलाई ! * थैली खोलि, देउँ निबटाई ! ॥
कविः-सुनि कटु-वचन, कुठार,सुधारा * हाय, हाय, सब सभा, पुकारा ।
लषनः-'भृगु'!परसा दिखलावत मोही * जानि विप्र,नहिं मारत तोही !॥
मिला न जोधा,देत, तुमहिं, गाढ़ि * बृह्मन, देउता ! घर-ही-के-बड़ !
कविः-बुरा, कहा, सब लोग, पुकारा * रोका प्रभु, तब, करे - इसारा ॥
दोहाः—लषन-बचन, जनु, आहुती, 'भृगु' केरी रिसि, आग ।
२७६. रघुवर, पानी-सम-वचन, बढ़तहिं, छिरकन लाग ॥
रामः-थूकहु रिसि,करि,बालक,दाया! * दूध-दाँत, उखरन, नहिं आया ।
जो, प्रभु-कर-प्रभाउ, यह जानत * बराबरी, नहिं, मूर्ख, दिखावत ॥
जो लरिका, कछु अनुचित करहीं * गुरु,पितु,मात,हरष,उर, धरहीं ।
करहु कृपा लघु - सेवक जानी ! * सीलवान, समदरशी, ज्ञानी ! ॥
कविः-राम-बचन सुनि,कछुक,जुड़ाने * कहि कछु,लखन,फरि,मुसुकाने ।
परशुरामःसिर-ते-पाउँ-तलक,रिसि ब्यापी* भ्राता, राम ! तोर,बढ़-पापी ॥
गोरा-तन, कारिख, मन माहीं * विष-मूँहा, यह, दुध-मुख नाहीं ।
टेढ़-सुभाउ, न तोर-समाना * डरत न,मोहि,काल-सम-जाना ॥
लषनः—दोहाः—कहा लषन, हँसि, सुनहु मुनि ! क्रोध, पाप-की-जर ।
२८०. खोवत, आपन-प्रान, नर, जेहि के बस महँ, परि ॥
मैं, तुम्हार - सेवक, मुनि-राया * तजे क्रोध,करिये, अब, दाया ! ।
टूट-चाप, नहिं जुरत, रिस्माने * बैठउ, लगइ न, पाउँ, पिराने ॥
प्यारा धनु, तौ, करहु उपाई * जोरहु, कारीगर - बुलवाई ।
कविःबोलत लषनहिं, 'जनक'डराहीं *"मारहुचुप",अनुचित!भलनाहीं ॥
थर-थर काँपत, पुर - नर - नारी * "कुँअर छोट, पर,खोटा भारी" ।
निडर,लखन की,सुनि'भृगु'-वानी * रिस, जारा तन, भइ बल-हानी ॥
परशुरामःकही,राम-सिर-धरि,अस वानी* छोड़त, तुम्हरा - भाई - जानी ।
मन मैला, तन, सुन्दर ऐसा * सोने - घड़ा, भरा बिष, जैसा ॥

कविः—दोहाः—सुनि, लछिमन, फिर हू, हँसे, सैन-ते, डांटा, राम ।
२८१. बैठे, गुरु के पास, जा, टेढ़ - बचन, मुख, थांभि ॥

जोरे दोउ कर, सीतल - बानी ※ कही राम, विनती-की-सानी ।
रामःसुनहु, नाथ! तुम परम सुजाना ※ बालक-बचन, धरहु नहिं, काना ॥
बर्रे, औ, बालक, एक-सुभाऊ ※ संत, दोस, नहिं दें. इन काऊ ।
बालक, नहिं, कछु काज बिगारा ※ अपराधी, मैं, नाथ! तुम्हारा ॥
डांटहु, मारहु, बांधहु, छोरहु ※ जस मन-आवइ, दास, मैं, तोरहु !।
कहउ, वेग, जेहि विधि, रिसि जाई ※ करउं, नाथ ! सोइ, वेग उपाई ॥
परशुरामःकहमुनि, राम! जाय, रिस, कैसे ※ देखत, अबहूं, टेढ़ा, ऐसे ।
यह के गरे, कुल्हार न दीन्हा ※ कहा, क्रोध करि, तौ मैं कीन्हा ॥

दोहाः—गर्भ गिरावत, रानि, सुनि, जेहि-कुठार-गति-घोर ।
२८२. हाथ - लिये, देखत, जिअत, वैरी, भूप-किसोर ॥

चलत न हाथ, जरत, रिसि, छाती ※ मुथराना परसा, नृप-घाती !।
टेढ़ - विधाता, फेरी आदत ※ मोरे हृदय, कृपा कहुं, आवत ॥
दई, बहुत दुख, आज, सहावा ※ अससुनि, लछिमन, फिर, सिरनावा ।
लषनःसकल जैस, तस कृपा-न्यारी !※ झरत फूल, बोलत बलिहारी !॥
करे कृपा, जो तन जरि जावे ※ करे क्रोध, ईश्वरहिं, बचावे ।
परशरामःहटकहु 'जनक'! देहु समुझावन ※ जम-पुर, यह, घर, चहत बनावन ॥
वेग, करहु कि न, आँखिन-ओटा! ※ देखत छोटा, अति-ही - खोटा !।
लषनसुनिलछिमन, हँसिकह, मुनिपाहीं ※ मूँदहु आंख, कहूं, कोउ नाहीं ॥

परसुरामः—दोहाः—परसुराम. तब, राम ते, बोले, अति रिसिआइ ।
२८३. तोरा सँभू-चाप, तुम. मोहिं सिखावत आइ ॥

भाई कहत, कहाये - तोरे ※ छल-ते, विनय करत, कर जोरे ।
दइ संतोष, लरहु संग्रामा ※ नांहिं तौ छांड़ु! कहाउब 'रामा' ॥
ताजि छल, लरु, मोते, शिव-द्रोही ! ※ लषन-सहित न तौ, मारउं तोही ।
कविः-'भृगु'-पति, बकत, कुठार उठाये ※ मन, मुसुकांहि, राम, सिर नाये ॥

रामः—दोस-लषन, हम पर, रिस भारी ! * होत सिधाइहु, अवगुन भारी ! ।
टेढ़ जानि, सब करत बंदना * पकरत, 'राहु', न, टेढ़-चंद्रमा ! ॥
कहा राम, रिस थूकु मुनीसा ! * परसा तोरा, और, यह सीसा ! ।
कहहु सोइ, जेहि विधि, रिस जाई * मैं, तुम्हार सेवक की नाईं ॥
दोहाः—स्वामी-सेवकहू, लरत, तजहु, विप्र, अब क्रोध ! ।
२८४. जाने - छत्री, कह लपन, दोस, न, तुम्हरा-बोध !! ॥
देखि कुठार, बान-धनु-धारी * लखनहिं, रिस भइ, वीर विचारी ।
जानि नामहू, तुमहिं न चीन्हा * जैस बंस, तस, उत्तर दीन्हा ॥
आवत तुम, जो, मुनि-की-नाईं * चरन-धूरि, सिर, धरत, गोसाईं ! ।
छमहु चूक, अंजाने केरी * चही, विप्र कहँ, कृपा घनेरी ॥
मोर, तुम्हार, बराबरि, नाथा ! * कहां चरन भला, और कहँ, माथा ! ।
'राम', छोट कस ! नाम हमारा *'परशु', 'राम', मिलि, नाम तुम्हारा !॥
"धनु-धारी" इक गुनहि, हमारे * नौ, पवित्र गुन, साथ तुम्हारे ।
सब प्रकार, हम, तुम सन, हारे * छमहु, विप्र ! अपराध हमारे ॥
कविः—दोहाः—'विप्र' कहा, कहुं, मुनि, कहा, परशुराम, कहुँ, राम ।
२८५. भृगु-पति बोले, रिसि करे, "तुहूँ, लषन - सा बाम" ॥
परशुरामःखाली ब्रह्मण, जानत मोहीं * मैं, जस-विप्र, सुनावत, तोहीं ।
चमचा, धनुष, आहुती बाना * क्रोध मोर, जनु अग्नि समाना ॥
सामिग्री, चतुरंगी - सैना * पसू, भूप भये, कहत बनै ना ।
काटि, कुलहरा ते, बलि दीन्हे * रन के जज्ञ, बहुत, मैं, कीन्हे ॥
मोर प्रभाउ, छिपा, जनु, तोसे * करत निरादर, विप्र - भरोसे ।
तोरि चाप, गरबहु, अति बाढ़ा * लागत-जीता-जग, अस, ठाढ़ा ॥
रामः—कहा राम, मुनि! कहउ, विचारी* छोट चूक, और रिस, अस भारी ।
छुअतहिं, टूटा, चाप पुराना * केहि पर करउं, भला, अभिमाना ॥
दोहाः—करत निरादर विप्र कर, जो, मैं तौ 'भृगु-नाथ' ! ।
२८६. जोधा, अस, जग, कौन है, जेहि, हम, नावहिं माथ !! ॥

भूप, देव, और जोधा नाना * बड़ा, छोट, कैसहु बलवाना।
जो, रन, हमहिं, बुलावइ आई * 'कालहु'सँग, सुख,लरहिं,लराई ॥
हुइ छत्री, और, रन ते भाजइ * नीच, सो, आपन नाम धरावइ।
कहत सुभाव, न बंस-बड़ाई * रघुकुल, डरइ न 'काल', लराई ॥
विप्र-वंस, अस कही बड़ाई * निडर होइ, जो तुमहिं डराई।
कविः--सुनि,सिठ बचन,गूढ़,रघुपति के* खुले किवार, मुनी-के-मति के ॥
परशुरामः-जो लक्ष्मी-पति,यह धनु लेहू! * खींचहु चाप, मिटइ संदेहू !।
कविः--देत चाप, अपुहि, चलि गयेऊ * परशुराम कहँ, अचरज भयेऊ ॥

दोहाः—जाना राम-प्रभाउ, तब, गये फूलि सब गात।
२८७. जोरि हाथ, बोले बचन, प्रेम न, हृदय, समात ॥

परशुरामः-जय!रघुवंस-कमल-के-सूरज!* अग्नी-सम, जारत कुल-दानुज!।
जय! सुर, गऊ, विप्र-हितकारी! * जय, मद-मोह-क्रोध-भ्रम-हारी!॥
कृपा, सील,गुन,विनय के सागर! *जय, प्रभु!बचन रचन महँ चातुर!।
सुख-दाता, सुन्दर-अँग-वीरा! * कोटि-काम-छबि, धरे सरीरा!॥
एक मोर मुख, बहुत-प्रसंसा * जय, महेस-मन-मानस-हंसा!।
अनुचित कहा, बहुत, बिनु जानी * छमहु,भ्रात दोउ!छमा-के-खानी!॥
कविः--कहिं:'जयजयजय,रघुपतिकेरी,* गे,बन कहँ, तप-हित, मुख-फेरी।
करनी - अपन - केर - डर, कीन्हे * डरि,सब भूप,घरहि, चलि दीन्हे॥

दोहाः—दीन्ह, नगारन, चोट, सुर, प्रभु पर, बरषे फूल।
२८८. हर्षें, पुर-नर-नारि, सब, मोह - केर - दुख - भूलि ॥

खूब दनादन, बाजा, बाजे * सब लोगन, मंगल सब साजे।
सुन्दर मृग-नयनी, हुइ इकठा * गावत गीत, 'कुयल'-सम-कंठा ॥
सुख-'विदेह', नहिं जात बखाना * जनम-दरिद्री, मिला खजाना।
छूटा डर, भइ सिय सुखारी * निकसे - चंद्र, चकोर - कुमारी ॥
कीन्ह, जनक, तब मुनिहिं प्रनामा * "दया तुम्हार, तोरि,धनु,रामा"।
जनकःकीन्ह कृतारथ,मोहिं,दोउ भाई * कहा करन, आगे, अब, चाही ?॥

विश्वामित्र { कह मुनि,सुनहु,चतुर नरनाहू ❋ धनुष - आसरे, रहा विवाहू ।
सो, टूटत धनु के, हुइ गयेऊ ❋ सुर, नर, नाग, जानि सब कोऊ ॥

दोहाः—तहूं, जाइ, तुम करहु, जस, होइ वंस-व्योहार ।
२८६. बूढ़न, विप्रन, गुरुन कहँ, पूंछि, वेद - अनुसार ॥

दूत, अवध-पुर, भेजहु, जाई ❋ लावहिं 'दसरथ' - भूप बुलाई ।
कविः-हँसे 'जनक',कह "नीक" कृपाला ❋ भेजे दूत 'अवध', तेहि काला ॥
फिर, व्योपारिन, लीन्ह बुलाये ❋ सब आये, सादर, सिर-नाये ।
जनकः—सड़क, दुकानैं, देवन-के-घर ❋ चारहु ओर, सजहु,पुर,सुन्दर ॥
कविः—हर्षि, चले, अपने-घर आये ❋ आपन-सेवक, लीन्ह बुलाये ।
व्योपारीः—सुन्दर मंडप देहु, रचाई ❋ चले, करन आज्ञा, सिर लाई ॥
कविःतिन्ह बुलाये जा,फिर,कारीगर ❋ मंडप - रचना महँ, जे आतुर ।
कहि,"जय बृह्मा" काम लगावा ❋ सोनिन, केला - खँभ बनावा ॥

दोहाः—हरे - पात, रतनन - जड़े, लाल रतन-के फूल ।
२९०. 'बृह्मा', रचना देखि कर, चतुराई गे भूलि ॥

हरे, रतन-जाड़ि, बांस बनाये ❋ लगे पात, पहिचानि न जाये ।
नाग - बेल, सोने की कतरी ❋ जनु सांचे पत्ता, अति पतरी ॥
बेलन - बँधन, सुघर बनाये ❋ गुच्छा, मोतिन के, लटकाये ।
फीरोजा - ऐसे, बहु पाथर ❋ रचे कमल, रतनन-पच्ची करि ॥
तिन्ह पर, पक्षी, भँवर बिठाये ❋ हवा ते, गूँजइं, बोलि सुहाये ।
देवन-मूरति, खँभन, काढ़ी ❋ मंगल-साज - हाथ - लिये - ठाढ़ी ॥
भाँति - भाँति - के चौक पुराये ❋ रतनन, सेंधुर, ते रचवाये ।

दोहाः—डाली आमन की रचीं, छाँटि के, नीलम-कोर ।
२९१. पात, बौर, सुबरन रचे, लटकत रेसम-डोर ॥

रचे, सुघर अति, बंदन-वारे ❋ कामदेव, जनु, फंद सँवारे ।
मंगल कलस, अनेक, बनाये ❋ परदा, झंडी, चँवर, सुहाये ॥
रतन-जड़े, दीपक, सुभ, नाना ❋ मंडप, सुघर, न जात बखाना ।

जेहि मंडप, दुलहिनि - बैदेही ❋ सो, बरनइ, अस कवि को होई ॥
दूलह राम, रूप-गुन-सागर ❋ सो मंडप, तिहुँलोक, उजागर ।
जनक-भुअन की सोभा जैसी ❋ घर, घर, पुर महँ देखिय तैसी ॥
जिन्ह देखी, तब मिथिला नगरी ❋ चौदह-भुवन, लगी, छवि-बिगरी ।
जो संपति, नीचहु-घर सोहत ❋ तेहि कहँ देखे, इन्द्रहु मोहत ॥

दोहाः—बसत, जहां पर, लक्ष्मी, धरे नारि - छल - वेष ।
२६२. तेहि पुर की सोभा, कहत, डरत सारदा सेप ॥

पहुँचे दूत, राम - घर - पावन ❋ हर्षे, नगर देखि मन-भावन ।
भूप - द्वार, तिन्ह, खबर जनाई ❋ दसरथ, दूतन, लीन्ह बुलाई ॥
करि प्रनाम, तिन्ह, पाती दीन्हीं ❋ उठे, खुसी हाथन ते, लीन्हीं ।
भरेउ, नयन, जल, बांचत पाती ❋ तन पुलकेउ, भरि आई छाती ॥
हृदय, पुत्र दोउ, कर महँ चीठी ❋ रहि गे, कहत न खट्टी-मीठी ।
फिर, धरि धीरज, पाती बाँची ❋ हर्षी सभा, बात, सुनि, सांची ॥
खेलत रहे, तहाँ, सुधि पाई ❋ आये भरत, संग, लिये भाई ।
भरतः-पूँछत, प्रेम - भरे, सकुचाई ❋ तात ! कहाँ ते, पाती, आई ? ॥

दोहाः—कुसल तौ हैं, भाई दोऊ, राजन ! हैं, केहि देस ? ।
२६३. प्रेम भरे, अस बचन सुनि, बाँची, फेरि, नरेस ॥

सुनि बानी, पुलके दोउ भ्राता ❋ प्रेम, अधिक, नाहिं, हृदय समाता ।
प्रेम, पवित्र, भरत कर, जानी ❋ सबहिं सभा, अति ही हर्षानी ॥
तव, नृप, दूत, पास, बैठारे ❋ मधुर, मनोहर बचन उचारे ।
दसरथःभइया! कहहु, कुसल, दोउबारे? ❋ तुम्ह, नीके, निज नयन, निहारे ?॥
स्याम - गौर, दोऊ धनु-धारी ❋ सँग, मुनी, उमरिहु, कछु बारी ।
लीन्ह, उनहिं, कहु, तुम पहिचाना ? ❋ भरे प्रेम, पूँछत, विधि नाना ॥
जे दिन ते, मुनि, गये लिवाई ❋ तब ते, सांचु, आज, सुधि पाई ।
कहऊ, जनक-राजा, कस जाने ? ❋ सुनि, प्रिय-बचन, दूत मुसुकाने ॥

दोहाः—राजन के सिर-मौर तुम, धन्य न, तुम सन, कोउ।
२६४. राम, लखन में, पूत जिन्ह, जग-के-भूपन, दोउ॥

पूँछन-जोग, क, पूत तुम्हारे * सिंह-पुरुष, लोकन-उजिआरे।
जिन्ह के, जस, प्रताप के आगे * चन्द्र, फीक, सूरज, जल, लागे॥
पूँछत, नाथ! तिनहिं, कस चीन्हे * सूरज लखत, क, दीपक लीन्हे?।
सिय-स्वयंबर, भूप अनेका * जुरे, बहादुर, एक-ते-एका॥
शंकर-धनुष, केहु, नहिं टारा * जोधा, गरबी, गे, सब, हारा।
तीन लोक, जे, बल-अभिमानी * तिन्हकी सकती, धनुष सिरानी॥
सकत - उठाइ - सुमेरु - पहारा * देव, दैत्य, फिरि गे, सब हारा।
जे रावन, कैलास उठावा * आइ सभा, सोउ, मुँह की खावा॥

दोहाः—तहां, राम, रघुबंस-मनि, धनुष, सुनिये, महिपाल!।
२६५. तोरा, जैसे, गज कोऊ, तोरइ, कमल-को-नाल॥

भरि रिसि, परसुराम, फिर, आये * बहुत भाँति, तेहि, आंख दिखाये।
देखि राम-बल, निज-धनु, दइ के * बन कँह गे, कहि वचन, विनय के॥
जैस राम-बल, तुलि नहिं पाई * लषन - तेज, तसही, अधिकाई।
कांपत राजा, देखे जा के * केहर-बालक, जस, गज-ताके॥
जब ते बालक देखे दोऊ * आंख-तरे, नहिं आवत, कोऊ।
कविः-बात-चीत-दूतन, प्रिय लागी * प्रेम - प्रताप, बीर-रस - पागी॥
सभा, औ, दसरथ, सब अनुरागे * राजा, देन निछावर लागे।
बेटी - वारिन, मूँदे काना * कहा उचित नहिं, 'ना' 'ना' 'ना' 'ना'!॥

दोहाः—तब, उठि, भूप, 'बसिष्टि' कहँ, दीन्ह सो पांती जाइ।
२६६. कथा सुनाई, गुरुहिं, सब, सादर, दूत बोलाइ॥

वसिष्ठिः—सुनि, बोले गुरु, अति सुख पाई * पुण्य-वान, जग, सब सुख, भाई!।
आपु, नदीं, सागर, मिलि जाहीं * सागर कहँ, कछु इच्छा नाहीं॥
तस, सुख, संपति, बिनहिं बुलाये * धरमी कहँ, आपुहिं, मिलि जाये।
पुण्य-जीव, तुम-अस, जग माहीं * भयो, न, है, कोउ, हुइ है नाहीं॥

तुम ते अधिक, पुण्य, कहु, काके ❋ राम - सरीखे, सुत हैं जा के ! ।
चतुर, नीति महँ, धरम के धारी ❋ गुन के सागर, ब्रह्मचारी ॥
सबहि समय तुम कहँ, कल्याना ❋ सजहु बरात, बजाइ निसाना ।

कवि:—दोहा:—"चलहु वेग", अस सुनि वचन, कहा 'भला', सिर नाइ ।
२९७. आये भूपति, महल माँ, दूतन, ठौर - दिवाइ ॥

राजा, रानिन्ह, लीन्ह बुलाई ❋ जनक की पाती, बांचि सुनाई ।
सुनि सँदेस, रानी, हर्षानी ❋ कही, भूप, सब, दूत-कहानी ॥
भरि, अस, प्रेम ते, फूलीं रानी ❋ मोरनी, जस, सुनि, मेघ की बानी ।
हँसे, असीस देहिं, गुरु-नारी ❋ भईं, आनंद-मगन, महतारी ॥
हाथन-हाथ, फिरत प्रिय-पाती ❋ हृदय लगाइ, जुड़ावहिं छाती ।
राम, लषन, की, कीरति, करनी ❋ बार बार, सुभ, भूपति बरनी ॥
मुनि-प्रसाद कहि द्वारे, आये ❋ बृह्मन, लीन्ह, रानि, बुलवाये ।
अति आनंद, दान, बहु, दीन्हे ❋ उनते, फिर, असीस सुभ, लीन्हे ॥

सो०:—टेरे सबहिं भिखार, दीन्ह निछावर, कोटि विधि ।
२९८. "चिरंजीव ! सुत चार ! दसरथ-सुत", अस कहि चले ॥

पहिरे वस्त्र, चले, हर्षाने ❋ बाजे, लगे बजन, मन-माने ।
समाचार, सब लोगन पाये ❋ लागे, घर घर, होन, बधाये ॥
छायो, चौदह लोक, उछाहू ❋ राम-सिय कर, होइ विवाहू ।
खबरि भली, सुनि, सब अनुरागे ❋ गली, राह, घर, सँभरन लागे ॥
पुरी अवध, तौ सदा सुहावनि ❋ मंगल-रूप, राम-की, पावन ।
तहूँ, प्रीति - अनुसार, सुहाई ❋ मगंल - रचना, रची बनाई ॥
ध्वजा, पताका, चंवरी, झंडी ❋ लगीं, बजार - की - सड़कन - ठंडी ।
वंदन-वार, कलस, मनि-जाला ❋ हरद, दूब, दही, चांवर, माला ॥

दोहा:—मंगल - रूपी घर, रचे, आपन, सबहिं, बनाइ ।
२९९. गलीं, बराबर, छिरकि के, दीन्हें चौक पुराइ ॥

जहँ,तहँ,मिलिमिलि सुन्दरनारिन * चमकत, विच-सोरह-सिंघारन ।
चंन्द्रसेमुख,मृगसे,जिन्ह लोचन *काम-नारि,"राति"-की-मद्-मोचन॥
गावहिं मंगल, मीठी बानी * कोयल,सुनि सुनि, जाइ लजानी ।
राज-महल, नहिं जात बतायो * जग-मोहन मंडप, जहँ छायो ॥
मंगल-वस्तु मनोहर नाना * धरीं, औ, बाजत बहुत निसाना ।
भाट लोग, इत, कवित सुनावत * बेद-मंत्र, उत बृह्मण गावत ॥
गावत सुन्दर मंगल-गीता * लइ लइ नाम,'राम'और 'सीता' ।
बहुत - अनंद, महल, अति थोरा * मनहु,उमड़ि, फैलेउ, चहुँ ओरा ॥
दोहाः—दसरथ, घर-सोभा-कहे, पावइ, कवि, नहिं पार ।
३००. जहाँ, सिरोमनि, रामजी, लीन्ह, आइ, अवतार ॥
दसरथः—भूप, भरत, फिरलिये बुलाई * गज, घोरा, रथ, साजहु जाई ।
चलहु, वेग, रघुबीर - बराता * उछलि परे, सुनि, दोऊ भ्राता ॥
कविः—सिरदारन, तब भरत बुलाये * 'सजहु-बरात' ,सुने, उठि धाये ।
मन-माने, तिन्ह, जीन सजाये * रंग - बिरंगे - घोरा लाये ॥
सुन्दर, टाप - उठायं - नाचत * धरती, गरम-लोह, जनु, लागत ।
कहउँ, कैस, घोरा, अन-भाँतिन * पवन लजाये, चाहत भाजन ॥
तिन पर, छैला, भये सवारा * भरत-के-उमरन, राज कुमारा ।
सुन्दर, सब, सब, भूषन-धारी * कर, धनु,कमरहिं,तरकस,भारी॥
दोहाः—छैल, छबीले, चतुर, सब, वीर, छरीले जुआन ।
३०१. दुइ दुइ प्यादे, सबहिं सँग, ले तलवार - सुजान ॥
वीरन-जामा, रन के गाढ़े * निकसि, भये, पुर-बाहिर, ठाढ़े ।
फेरहिं घोरा, चालन नाना * हर्षहिं,सुनि धुनि, बजे-निसाना ॥
रथ, रथ-वान, विचित्र बनाये * ध्वज, पताक, मनि-भूषन लाये ।
लगे चँवर, कहुँ घंटी बाजत * सूरज के रथ कहँ, सरमावत ॥
स्याम-बरन, अनगिन्ती घोरा * रथ-वानन, रथ महँ, लइ, जोरा ।
सकलहिं सुन्दर, नीक-सजाये * मुनि के मनहु, लगत सुहाये ॥

चलत भूमि पर, जल की नाईं * चाल, कि, टापहु बूड़त नाहीं।
अस्त्र - सस्त्र-सब - साज - बनाई * रथवानन, लिये रथ, बैठाई॥

दोहाः—चढ़ि, चढ़ि, रथ, बाहिर नगर, लागी जुरन, बरात।
३००. होत सगुन, सुन्दर, सबहिं, जो, जेहि कारज जात॥

हाथिन पर, सुभ, परीं अँबारी * जानैं, केहि-केहि-भाँति-सँवारी।
मस्त, चले गज, घंटा बाजत * सावन महँ, बादर-अस, लागत॥
औरहु, बहुत सवारी, नाना * नाल, पालकी, और बिमाना।
चले विप्र, उन सब महँ, बैठे * वेद-छंद, मानहु, भे इकठे॥
राय, भाट, बन्दी-जन, गायक * चले, सवारिन,जो, जेहि लाइक।
बैल, ऊँट, खच्चर, बहु-भाँती * लइ असबाब, चले, धरि छाती॥
लइ लइ, बहिंगी, चले कहारा * धरे वस्तु, अन-भाँति, अपारा।
चले सकल सेवक, हर्षाई * करि टोली, निज साज सजाई॥

दोहाः—भरे-हरष, सेवक चले, पुलकित - भये - सरीर।
३०१. "कब हम देखब, नयन-भरि, राम-लषन, दोउ बीर॥"

गरजत गज-घंटा, चहुँ ओरा * घरघरात रथ, हींसत घोरा।
बाजे, घन की गरज, लजावत * अपन-पराई, सुनि नाहिं पावत॥
भारी - भीर, भूप के डियोढ़ी * पाथर, फेंके, होत है रेउड़ी।
चढ़ीं, अटारिन, देखहिं नारी * लिये, आरती, मंगल, थारी॥
गावत गीत, मनोहर, नाना * अति अनंद, नहिं जात बखाना।
तब, 'सुमंत' द्वइ रथ सजवाये * तेज, तेज, घोरा, जुतवाये॥
सुन्दर रथ, दसरथ ढिंग लाये * 'सारद' हू, बरनत, सकुचाये।
इक रथ, राज-ठाठ-ते साजा * दूसर, तेज-ते, जनु, रथ-राजा॥

दोहाः—यह रथ, सुघर, 'बसिष्टि' कहँ, हर्षि, चढ़ाय, नरेस।
३०२. आप चढ़े, रथ पर, सुमिरि, शिव, गुरु, उमा, गनेस॥

सोहत राजा, गुरु-सँग, कैसे * बृहस्पती सँग, इनदर जैसे।

करि कुल-रीति, वेद-विधि, सारी * देखे, सब की, सब तैआरी ॥
सुमिरि राम, गुरु-आज्ञा पाई * चले भूप, फिर, संख बजाई ।
हर्षि देवता, देखि बराता * बरसहिं फूल, जो मंगल-दाता ॥
मचा कोलाहल, गज, घोरन ते * गइ, अकास भरि, धुनि, बाजन ते ।
सुर-नर-नारि, सुमंगल गाई * बजत, रसीली धुनि, सहनाई ॥
घंटा-घंटी-धुनि, रही छाई * किलकि, किलकि, झंडी फहराई ।
भांड दिखावत नकलहिं नाना * चतुर-हँसी-महँ, आनन्द-गाना ॥

दोहाः—कुअँर नचावत, घोरनहिं, सुनि सुनि ढोलन-ताल ।
३०३. रहे चतुर नट, देखि के, छूटइ ताल, अजाल !! ॥

बनइ न बरनत, बनी बराता * होत सगुन, सुन्दर, सुभ-दाता ।
'नील-कंठ', चुंगि, बाई-ओरी * सगुन बतावत, चोरा-चोरी ॥
दहिने, 'काग', मनोहर-खेतन * होत, कहूँ, 'म्योरा'-सुभ-दरसन ।
सीतल, मंद, सुगंधित ब्यारी * घड़ा-भरे-लिये - बालक नारी ॥
'लोमड़ि', फिर फिर, दरस दिखावत * गाईं, बछरन, दूध पिआवत ।
'हिरनन'-टोली, दहिने आई * जनु, सब मंगल दरस कराई ॥
'चील'-सुपेद, कुसल दरसाई * बाएँ बृछन, 'स्यामा' आई ।
दहि-मछरी, सुभ सगुन बतावत * दुइ-बृह्मण-पुस्तक-लिये-आवत ॥

दोहाः—मन - चाहा - फल देन कहँ, हित, मंगल, कल्यान ।
३०४. सत्य होन कहँ, सब सगुन, भये इकट्ठे, आनि ॥

मंगल-सगुन, सहज सब, ते का * सगुन-बृह्म, सुत भा, आ, जे का ।
राम-से-बर, जहँ, दुलहिनि-सीता * समधी, दसरथ, जनक, पुनीता ॥
सुनि अस ब्याह, सगुन सब नाचे * "आज, कीन्ह, बृह्मा, हम साँचे ।
हाथी, घोरा, चली बराता * बाजे, बजन लगे, सुखदाता ॥
आवत जानि, भानु-सूरज-कुल * दीन्ह बँधाय, जनक, नदियन पुल ।
दीन्ह पड़ाउ, बीच, बनवाई * जनु, बैकुंठ, दीन्ह धरि, लाई ॥
नीक उढ़ौना, बिस्तर, भोजन * धरि दीन्हे, तहँ, सब, भाये-मन ।

नित्य - नये - सुख, पा, अनुकूले * बाराती, घर-कर - सुख भूले ॥

दोहाः—आवत जानि, बरात, सुभ, सुनि, गहगहे निसान।

२०५. पैदल, घोरा, हाथि, रथ, आये सजि अगवानि ॥

सोने-कलसन-जल, और थारा * बरतन, ललित अनेक प्रकारा।
अमरित - भरे धरे पकवाना * भाँति भाँति, नहिं जात बखाना ॥
नीक नीक चीजें. फल नाना * भेजीं. भेंट. जनक - भगवाना।
गहने, कपरा, रतन, जवाहिर * हाथी, घोरा, हिरन, मनोहर ॥
सगुन-वस्तु सब, अतर-फुलेला * भांति भांति भेजीं भरि ठेला।
बूरा, दही, भेंट के कारन * बाहिंगिन, वस्तू, लदीं कहारन ॥
अगवानिन, जब, दीख बराता * उर आनंद, पुलक भरि गाता।
देखि ठाठ, अगवानिन केरे * दीन्ह चोट, धौंसनन घनेरे ॥

दोहाः—चले, मिलन हित, आपुसहिं, ढीले किये लगाम।

२०६. दुइ, आनंद के सिंधु, जनु. मिलन चले, तजि धाम ॥

बरसत फूल, अपसरा गावत * हँसि, हँसि, देव, नगार बजावत।
सकल वस्तु, धरि दसरथ-आगे * कीन्ह विनय, लोगन, अनुरागे ॥
प्रेम सहित. राजा, सब लीन्हीं * मँगतन, बहुत निछावर दीन्हीं।
परत पांवडे, वस्त्रन, नाना * देखि, 'कुबेर' छूटि अभिमाना ॥
अति सुन्दर, दीन्हा जनवासा * जहँ सबकहँ, सब भांति सुपासा।
सिय, जानी, बरात, पुर, आई * अपनी महिमा, कछुक, दिखाई ॥
हृदय, सुमिरि, सब सिद्धि बुलाईं * महिमानी-हित, दीन्ह पठाई।

दोहाः—सब सिद्धीं, सिय-हुकुम-बस, पहुचीं, जहँ जनवास।

२०७. सो सुख-संपति, संग लै, मिलि जो स्वर्ग के बास ॥

देखि बास, सब, अपन, बराती * मिले देव-सुख, तहँ, सब भांती।
रचना-भेद, कोउ नहिं जाना * जनक केर, सब करत, बखाना ॥
सिय-महिमा, रघुनायक जानी * हर्षें, मन महँ, कारन आनी।
आये पिता, सुना, दोउ भाई * हृदय, न, अति-आनंद, समाई ॥

सकुचत, कहि न सकत गुरु पाहीं * पितु-दरसन-लालच, मन माहीं ।
अस नम्रता, मुनी, जब देखा * भा, हृदय, संतोष, बिसेखी ॥
हर्षि, भाइ दोउ, अंग लगाये * फूलेउ तन, आंखिन, जल छाये ।
चले, जहाँ, दसरथ - जनवासे * तके ताल, जस, कोऊ पियासे ॥

दोहाः—देखे दसरथ, जब, मुनी, आवत - सुतन - समेत ।
३०८. उठे, चले, सुख - सिंधु की, मनहु, थाह - सी - लेत ॥

मुनिहिं, दंडवत कीन्ह महीसा * चरन धूरि, धरि लीन्हीं सीसा ।
लीनह राउ कहँ, मुनि, उर लाई * दइ असीस, पूँछी कुसलाई ॥
फिर, दंडवत करत, दोउ भाई * देखत, दसरथ-सुख न समाई ।
दइ, छाती-तें, सब दुख मेटे * गये-प्रान, मानहु, फिरि, भेंटे ॥
फिरि, 'बसिष्ठ' कहँ, माथ नवाये * प्रेम प्रसन्न, गुरू, उर लाये ।
बंदे विप्र, फेरि, दोउ भाई * मन - भावती असीसैं पाई ॥
'भरत'-'शत्रुहन', कीन्ह प्रनामा * छाती तें, दइ लीन्हे, रामा ।
हर्षे लषन, देखि दोउ भ्राता * मिले, प्रेम-परि - पूरन - गाता ॥

दोहाः—प्रजा, कुटुंभी, जाति-के, मँगता, मंत्री, मित्र ।
३०९. जथा-जोग, सब सन मिले, 'राम' - कृपालु - 'सुमित्र' ॥

रामहिं देखि, बरात जुड़ानी * प्रीति की रीति, न जात बखानी ।
भूप-पुत्र, सब भाई, रामा * 'मोक्ष', 'धर्म', जनु, 'अर्थ', और, 'कामा' ॥
लरिकन-साहित, भूप कहँ देखी * भये सुखी, नर-नारि, बिसेखी ।
बरसहिं फूल, औ, बजइं निसाना * नचत अपसरा, करि करि गाना ॥
सतानंद, मंत्री, और वृह्मन * मँगता, राय, भाट, बंदी-जन ।
किये बरातिन-कर - सनमाना * लौटे अगवानी, हर्षाना ॥
आइ बरात, लगन ते - पहिले * देखि, अनंद, नगर-बिच, फैले ।
वृह्म-मिले - कर - आनँद पावत * बढ़इ रात, दिन अस बर मांगत ॥

नर-नारीः-दोहाः—पुण्य-की-खानी, भूप, दोउ, सोभा-की, सिय-राम ।
३१०. कहत नगर के नारि-नर, सबहि, खास, और, आम ॥

जनक - पुण्य - मूरति वैदेही * दशरथ-पुण्य, राम, धरे-देही ।
इन-सम, नहिं कोउ, शिवहिं मनावा * ना, इन सम, कोऊ, फल पावा ॥
इन-सम, कोउ, न भा, जग माहीं * है न कहूँ, और, हुइ है नाहीं ।
पुण्य-वान, हम-सम, को भाई ! * जनक-पुरी महँ, जनमे आई ! ॥
आये, राम - सिय - छवि देखी * को मारइ, अस पुण्य की सेखी ।
देखब, फिर, रघुवीर - विवाहू * होइ नयन-सुख, मिलत न काहू ॥
आपुस महँ कह, कोयल-बयनी ! * बहुतलाभ, यह ब्याह ते बहिनी! ।
बड़े - भाग, विधि, वात बनाई * लोचन-महिमाना, दोउ भाई ॥

दोहाः—जनक बुलइहैं, सिय कहँ, मैके बाँरवार ।
३११. विदा करावन, आय दोउ, कोटि - काम - छवि - हारि ॥

हुइ है, वार वार, महिमानी * अस-ससुरार, न काहि सुहानी ।
तब, तब, राम औ लखन निहारी * हुइ हैं, हम, सब लोग सुखारी ॥
राम, लषन लखि, जस, मन छोटा * तस, दुइ और, भूप सँग ढोटा ।
स्याम-गौर, सब - अंग - सुहाये * कहत लोग, जो देखिके आये ॥
कहा एक, मैं, अबहिं निहारे * हाँ ! सखि, बृह्मा, हाथ, सँवारे ।
रूप, राम-कस, भरतहिं दीन्हा * देखि, इकाइक, परत न चीन्हा ॥
लगत 'शत्रुहन,' लषन-रूप धरि * पाउं ते-चोटी-लागि, अति सुन्दर ।
मन भावहिं, मुख, कहे न जाहीं * तीन लोक, उपमा, कहुँ, नाहीं ॥

छंदः—कस बनइ, उपमा देत, तुलसी, कवि ते, कवि -, के बाप ते ।
बल, विनय, विद्या, सील, सोभा-सिंधु, आपु हैं, आप ते ॥
पुर-नारि, भरि भरि गोद, बृह्मा ते, यही वर, मांगहीं ।
पुर, ब्याहें, याही, चारों भाई, "हम हीं, मंगल गावहीं"

सो०:—लाये, लोचन, नीर, कहत नारि तन पुलकि कर ।
३१२. सिव, सब करहीं, धीर ! पुण्य-सिंधु हैं, भूप-दोउ ॥

यह बिधि, सब, मन, इच्छा करहीं * आनद, उमगि उमगि, मन भरहीं ।
जे नृप, सिय-स्वयंबर, आये * देखि भाइ सब, तन-सुख पाये ॥

गये वीति, कछु दिन, यह भांती * सुखी, अवध के, सवहि बराती।
मँगल-मूल, लग्न-दिन आवा * जाड़ा, अगहिन माम्न, सुहावा॥
ग्रह, तिथि,नखत,जोग, सुखकारी * वृह्मा, आपुहि, लग्न विचारी।
नारद - हाथन, सो, पठवाई * जनक - जोतिषन, स्रोइ बताई॥
सुनी, सकल लोगन, यह बाता * कहत, जोतिषी, होत विधाता।

दोहाः—गौ - लौटन - बेरा कही, सबहि - सुखन - की - जर।
३१३. बिप्र बताई, जनक कहँ, जाने सगुन सुघर॥

कहा, पुरोहित ते, फिर, राजा * करहु देर, अब कवने काजा !।
मंत्री, 'सतानंद' बुलवाये * मंगल वस्तु, साजि सब, लाये॥
संख, निसान, औ, राजसी-बाजा * मँगल-कलस,सगुन-सुभ-साजा।
नारि, सुहागिनि, गावत गीता * करत,वेद-धुनि, विप्र, पुनीता॥
लेन चले, सादर, यह भाँती * गये, जहाँ, जनवास, बराती।
कौसल-पति कर, देखि समाजा * 'इन्द्र'-ठाठ - हु, छूँछा लागा॥
"ब्याह-घरीं, पग धारिये अब घर" * सुनत, परा, डंका, धौंसन पर।
कुल-विधि-पूँछी, गुरु ते, राजा * चले संग मुनि-साधु-समाजा॥

दोहाः—बृह्मा, औरहु - देवता, देखि भूप - सुभ - भाग।
३१४. "बृथा जनम, हम सभन कर", कहन, सुखन, अस लाग॥

देवन, मंगल - अवसर जाना * बरषहिं फूल, बजाइ निसाना।
शिव, वृह्मा, और, और - देवगन * पंगति-बाँधे, चढ़े - विमानन॥
प्रेम, पुलकि तन, हृदय, उछाहू * देखन चले, राम कर ब्याहू।
देखि जनक-पुर, सुर, अनुरागे * आपन लोकहु, छोटे लागे॥
देखे मंडप, अदभुत, सुन्दर * पुर-की-रचना, जग-ते-बाहर।
नगर-नारि, नर - रूप - निधाना * सुघर, सुधर्म, सुसील, सुजाना॥
तिनहिं देखि, सुर, और सुर-नारी * तारे, मनहु, चंद्र-उजिआरी।
'वृह्मा', अचरज भयो विसेषी * आपन कारीगरी, न देखी॥

शिवः-दोहाः—शिव समुझाये, देव सब, काहे, रहे भुलाय।
२१५. धरहु धीर, सोचहु, सबहि, राम बिआहन आय॥
जिन कर नाम, लेत, जग माहीं * दुख-कारन, सब, जाइं नसाहीं।
मोक्ष, अर्थ, धरमहु और कामा * कह शिव, देत जो, सोइ सिय-रामा॥
कविः—यह विधि, देवन, शिव समुझावा * आगु, नादिया अपन बढ़ावा।
देखा देवन, दसरथ जाता * अति प्रसन्न-मन, पुलकित-गाता॥
संग, संत-वृह्मण, कह देवा * मनहु करत, धरि-तनु, सुख, सेवा।
सोहत, सँग, सुन्दर सुत, चारी * मनहु, मोक्ष, चारहु, तन-धारी॥
'राम'-'भरत', और, 'लषन'-'शत्रुहन' * जोरी, नीलम-की, इक, सुवरन।
फिर, रामहिं देखा, और हर्षे * 'दसरथ धन्य', फूल, कहि, बरषे॥
दोहाः—सुन्दर, पाउं-ते-सिर-तलक, रघुबर-रूप निहारि।
२१६. उमा-शँभु-तन पुलकि उठि, नयन, प्रम-जल-धार॥
मोर-कंठ की चमक, सब अंगन * बिजुली लजत, वस्त्र के रंगन।
बने, ब्याह-हित, जो जो भूषन * सब बिधि नीके, सुघर, सुहावनि॥
शरद-चंद्र-सम मुख, जनु ऐना * नयो-कमल, सरमावत नयना।
सुन्दरताई, जग - ते - बाहर * कहि न जात, लागत, मन, सुन्दर॥
संग महँ, सुन्दर भाइ विराजत * चंचल-घोरा, चलत, नचावत।
कुँअरन, घोरन-कदम निकारे * भाट कहत, कुल-कवित, पुकारे॥
जेहि घोरा पर, 'राम' बिराजे * चाल, देखि करि, 'गरुड़हु' लाजे।
कहि न जात, सब-भाँति सुहावा * 'कामदेव', बनि घोरा, आवा॥
छंदः—जनु, धारि देह-तुरंग, आयो, काम-देवहि, सोहहीं।
आपुन-अवस्था-रूप-बल-गुन-चाल ते, जग-मोहहीं॥
जगमगत-जीन-जड़ाउ, चमकत, मोती, मनि, मानिक लगे।
लगि, जनु, लगाम मा, सुघर घुँघुरू, देव-नर-मुनि-मन ठगे॥
दोहाः—चलत, राम-ते-मन-मिले, घोरा, टाप उठाइ।
२१७. तारे-बिजुली-सहित घन, रहे, कि, मोर नचाइ॥

जेहि घोरा पर, राम सवारा ❋ 'सरस्वती', कहि, पाइ न, पारा ।
प्रेम-मगन, शिव कहत बनइ ना ❋ तीन, तीन, पाँचहु-मुख, नयना ॥
'विष्णू', हित सों राम निहारे ❋ लक्ष्मी, आप, दोउ बलिहारे ।
निरखि राम - छवि तौ हर्षाने ❋ आठइ नैन, समुझि पछिताने ॥
'स्वामिकार्तिक', मन, उतसाहू ❋ बारहु नयन, उठावा लाहू ।
नयन हजार, 'इन्द्र' लखि रामहिं ❋ 'गौतम'-स्राप आइगा, कामहिं ॥
करहिं, 'इन्द्र', सब देव, बड़ाई ❋ कहउ, आज को, इन सम, भाई ! ।
खुसी, देवगन, रामहिं देखी ❋ राज-समाजन, हर्ष विशेषी ॥

छंदः—हर्षे बराती, और घराती, चोट, नक्कारन, दई ।
बरषाहिं देवा, फूल, हँसि, कहि, "होइ जय रघुबर सही" ॥
यहि भाँति, जानि, बरात आवत, बाजने, बहु, बाजहीं ।
रानी, सुहागिन नारि, परिछन - हेत, मंगल साजहीं ॥

दोहाः—सजि आरती, अनेक - विधि, मंगल-वस्तु सँभारि ।
२१८. चलीं, खुसी, परिछन करन, झूमत, सुन्दर - नारि ॥

चंद्र-से-मुख, और, मृग-से-नयना ❋ नाहक देखत, "रति', सुख ऐना ।
बरन - बरन - की, पहिरे सारी ❋ तन महँ, भूषन, सजे, सँवारी ॥
मंगल - साजन, अंग रचाये ❋ करहिं गान, 'कोइल'-सरमाये ।
पाइजेब, और कँगन बाजत ❋ चाल, कि, मतवाले-गज, लाजत ॥
बाजत बाजे, विविधि प्रकारा ❋ पुर, अकास, महँ, मँगल-चारा ।
'इन्द्रानि', 'सारद', 'रमा', 'भवानी' ❋ और-देवतन - नारि सयानी ॥
जग - नारी - कर - रूप बनाई ❋ 'जनक' की रानिन महँ मिलि जाई ।
गावहिं, सुन्दर, मंगल - बानी ❋ भूलि, फूल महँ, काहु न जानी ॥

छंदः—पहिचाने को, आनंद - बस, सब, ब्रह्म-बर, परिछन चलीं ।
करि गान, मधुर, निसान, बरषत सुमन, सुर, सोभा, भली ॥
आनंद-कन्द, विलोकि दूलह, सकल, हिय, हर्षित भईं ।
जल, उमगि, चलि, कमलन-से-नयनन, देह, पुलकावलि छईं ॥

दोहाः—भा, जो, सुख, सिय - मातु - मन, देखि राम-कर-चेप ।
३१९. सो न सकइं, कहि, कल्प-सौ, लाख- सारदा'-'सेप' ॥

रोकि, नयन-जल, मंगल जानी ※ परिछन कराहिं,खुसी,सब रानी ।
वेद-कहे, और, कुल-आचारू ※ सब-विधि,भये, सबहि ब्योहारू ॥
पाँच-सब्द, सुनि, मंगल-गाना ※ बिछ्न, पाँवड़, लागे, नाना ।
करि आरती, अरघ, तिन दीन्हा ※ राम, गवन, मंडप, तब, कीन्हा॥
दसरथ, सहित-समाज-विराजे ※ संपति देखि, 'लोक-पति' लाजे ।
समय-समय, सुर, बरषहिं फूला ※ 'सांति' पढ़त, बृह्मन, अनुकूला॥
पुर, अकास, कोलाहल होई ※ अपन-बिराना, सुनइ न कोई ।
यह विधि, राम, मंडपहिं, आये ※ दीन्ह अरघ, आसन, बैठाये ॥

छंदः—बैठारि, आसन, आरती करि, हरषि, वर, सुख पावहीं ।
मनि, वस्त्र, भूषन, वार-वारहिं, नारि, मंगल गावहीं ॥
धरि रूप - बृह्मण, देव, जो - बृह्मा - से, कौतुक देखहीं ।
और, देखि रघुकुल-कमल-सूरज, सुफल जीवन, लेखहीं ॥

दोहाः—नाऊ, बारी, भाट, नट, राम-निछावर पाय ।
३२०. खुसी, असीसहिं, नाय सिर, हर्ष न, हृदय समाय ॥

मिले, जनक-दसरथ, अति प्रीती ※ करि, वेदन-और-जग की रीती ।
मिलत दोउ, जस, राउ विराजे ※ उपमा, खोजि-खोजि, कवि लाजे ॥
मिलि-उपमा-न, हार, हिय, मानी ※ आपु-आपु-सम, उपमा जानी ।
समधी-मिलत, देव अनुरागे ※ बरषि फूल, जस गावन लागे ॥
देवः—कीन्हा, यह जग, बृह्मा, जब ते ※ देखे, सुने, ब्याह, बहु तब ते ।
सब विधि, एक से, साज समाजू ※ एक-से-समधी, देखे, आजू ! ॥
देव-बानी, सुनि, सांची, भाई ! ※ दोउ ओर, अति प्रीती छाई ।
देत, पाँवड़े, अरघ, सुहाये ※ मंडप - नीचे, दसरथ - लाये ॥

छंदः—अद्भुत रही, मंडप की रचना, देखि, मुनिहू - मन हरे ।
निज हाथ, जनक-सुजान, सब कहँ, लाइ, सिंहासन, धरे ॥

कुल-देव, जानि, 'बसिष्टि'-पूजे, बहु-असीसहिं, तेहि, दई।
जेहि प्रीति, 'विस्वामित्र' पूजे, रीति, नहिं, जाई कही॥
दोहाः—'बामदेव', औरहु रिषी, पूजे, हरषि, महीस।
३२१. आसन-सुभ, सब कहँ दिये, सब ते, लही, असीस॥

फेरि, कीन्ह, दसरथ-पद-पूजा * माने ईश्वर, भाव, न दूजा।
कीन्ह, जोरि कर, विनय, बड़ाई * बड़े-भाग, जो दरसन पाई!॥
राजा, पूजे, सकल बराती * आदर-ते, समधी-के-भाँती।
आसन, उचित, दिये, सब काहू * कहउँ कैस, मुख-एक, उछाहू!॥
सकल बरात, 'जनक', सनमानी * दान, मान, बिनती, सुभ-बानी।
तीन देव, सूरज, दिगपाला * जानि प्रभाउ, जो, राम-कृपाला॥
विप्र-रूप, धरि धरि, जो आये * लखत तमासा, चुप्पी-लाये।
पूजा, तिनहुँ, देव-सम-जाने * आसन दिये, बिना पहिचाने॥

छंदः—को, सकइ, केहि, पहिचानि, सब कहँ, अपन-सुधि, भूली भई।
आनंद-कंद, विलोकि दूलह, दोउ दिसि, आनंद-मई॥
पहिचानि, राम-सुजान, देवन, मनहि-मन, आसन दिये।
अस सील, और, सुभाउ, देखि के, देव, सब हर्षित भये॥

दोहाः—राम-की-मुख-छवि चंद्र भइ, लोचन, भये चकोर।
३२२. भरे-प्रेम, खींचत, सबहि, मानहु, आपन-ओर॥

अवसर जानि, 'बसिष्टि' बोलाये * 'सतानंद', सुनि, वेगहिं आये।
"बेग, कुँअरि, अब लाउ बुलाई" * चले, हर्षि-मन, आज्ञा पाई॥
प्रोहित की वानी, सुनि, रानी * फुलीं, सखी समेत, सयानी।
वृद्धनि, कुल-वूढ़ी, बुलवाई * गा मंगल, कुल-रीति कराई॥
जग-नारी-सी, जो सुर-नारी * सुन्दर, सोरह-बरसन-वारी।
तिनहिं देखि, सुख पावहिं नारी * बिन-पहिचान, प्रान-ते-प्यारी॥
बार-वार, आदर, करि रानी * 'लछमी'-'उमा'-'सारदा'-जानी।
मिलि,मिलि,सबहिं,सियहि,सजवाई * मंडप पहँ, सब, चलीं, लिवाई॥

छंदः—चलि, लाइं, सीतहिं, सखी, सादर, साजि-सुमंगल-नारियां।
करि सोरहू श्रंगार, सुन्दर, गज - सी-चालन-वारियां॥
सुनि गान, मुनिहू-ध्यान छूटत, 'काम', 'कोयल', लाजहीं।
पाजेब, कँगन, चलत, ताल-पे, जनु, मंजीरा बाजहीं॥
दोहाः—सुन्दर, सीता, रूप महँ, सोहत, नारिन-बीच।
३२३. 'सोभा', तन-धारे, मनहु, नारि-'छबिन' के बीच॥

सिय - सुन्दरता, कही न जाई * मति छोटी, बढ़ सुन्दरताई।
आवत दीख, बरातिन्ह, सीता * रूप-खानि, सब भांति, पुनीता॥
सबहिं, मनहि-मन, कीन्ह प्रनामा * जाना सिद्धि - मनोरथ, रामा।
हर्षे दसरथ, सुतन समेता * कहि न जाय, उर, आनद जेता॥
सुर, प्रनाम करि, बरषहिं फूला * दइ असीस, रिषि, मँगल मूला।
बाजन, गान, कोलाहल भारी * सुख -आनंद - भरे, नर - नारी॥
यह विधि, सीता, मंडप, आई * कीन्हा 'सांति-पाठ', मुनि-राई।
समय-केर, जो कछु, ब्योहारू * दोउ-कुल-गुरु, सब कीन्ह अचारू॥

छंदः—आचार करि, गुरु - गौर - गनपति, विप्र, हर्षि, पुजावहीं।
सुर, खड़े, पूजा लेत, देत असीस, अति सुख, पावहीं॥
'मधुपर्क', मंगल-वस्तु, जो, जेहि समय, मुनि, मन महँ चहीं।
भरि, सोने थारन-कलस, सो, तब, लिये, सेवक, सब रहीं॥
छंदः—जो, सूर्य - नारायण - कही कुल-रीति, सब, सादर, कियो।
यह भांति, देव पुजाइ, सीतहिं, नीक - सिंहासन दियो॥
सिय-राम, देखत, आपुसहिं, सो प्रम, काहु न लखि परइ।
मन, बुद्धि, और, बानी से ऊपर, प्रगट, को, कैसे करइ॥
दोहाः—होमं की अग्निी, तन धरे, सुख ते, आहुति लेत।
३२४. वेद, विप्र - कर - रूप धरि, ब्याह पढ़ाये देत॥

राजा - जनक केर पट - रानी * सिय-मात, जो सब-जग-जानी।
सुःख, पुण्य, जस, सुन्दरताई * सब मिलाइ, विधि, हाथ, बनाई॥

अवसर जाना, मुनिन बुलाई ॥ संग-सुहागिनि, रानी आई।
जनक के बाएँ, सोहि "सुनयना" ॥ मनहु,'हिमाचल'-के-संग-'मयना'
सोन-कलस, मनि - जड़ीं -परातीं ॥ इतर-गुलाब - जलन - लहरातीं।
भूप, प्रसन्न, हाथ तें लीन्हीं ॥ सिय - राम-आगे, धरि दीन्हीं ॥
पढ़त वेद, मुनि, मंगल - बानी ॥ फूलन-झरी, सो अवसर जानी।
दूलह देखि, दोउ, अनुरागे ॥ राम-चरन - सुभ, धोवन लागे ॥

छंदः—लागे, चरन - कमलन को धोवन, प्रेम, तन, पुलकावली।
पुर, गान-बाज, अकास-जय-धुनि, उमड़ि, जनु, चहुँ दिसि चली ॥
जे-पद कमल, शिव, उर-सरोवर-महँ, रहत, नित - नित भ्रमत।
मन, सुमिरि, जो उज्जल करत, औंर पाप, कलिजुग सब हरत ॥

२. जे, छुअत, मुनि - पतनी - 'अहिल्या' पाप मूरति, तरि गईं।
रज, जिन की, मानों, पवित्रता की खानि, शिव-तन, सुर कहीं ॥
मन-मुनिन - जोगिन-भँवर सेवत, चरन-कमलन, गति लही।
ते चरन, धोवत, भाग्य-बस, 'मिथिलेस', 'जय-जय', सब कही ॥

३. बर-कुअँरि - हाथन जोरि, 'साखोचार', दोउ कुल-गुरु करहिं।
सिय - हाथ, हाथन-राम दइ, लखि, सुर, मुनी, नर हर्षहीं ॥
सुख - मूल दूलह, देखि, राजा, रानि कर, हुलसत हियो।
करि वेद-जग - की - रीति, 'कन्यादान', 'मिथिला - पति' दियो ॥

४. 'हिम' दीन्ह,'गिरिजा','शिवहिं'.'विष्णू','सिंधु', जस,'लक्ष्मी दई।
तस, जनक, रामहिं, सौंपि, सीता, फैलि, जग, कीरति नई ॥
कस करहिं विनति, 'वदेह', क्यो - विन - देह, मूरति सांवरी।
करि होम, विधि-सों, गांठ जोरी, परन लागीं भावँरी ॥

दोहाः—जय-बंदी - औंर - वेद - धुनि, सुनि, बाजा औंर गान।
३२५. बरषे, देवन, फूल, हँसि, कल्प - वृक्ष - ते, आनि ॥

परत दुलह-औंर-दुलहिनि-भाँवर ॥ नयन-लाभ, लूटत सब, सादर।
जाइ न बरनि, मनोहर-जोरी ॥ जो-कछु-उपमा-कहुँ, सो थोरी ॥

राम-सिय की सुन्दर छाहीं * चमकत, खँभन के मनि माहीं।
लगत,'काम'-'रति',बहुत-से-तन-धरि* देखत राम-विवाह, मनोहर॥
देखन चाहत, पर, सकुचाहीं *प्रगट होत,फिर,फिर,छिपि जाहीं।
भये मगन, सब देखन-हारे *तन-सुधि,'जनक'-समान,बिसारे॥
मुनिन, खुसी, भांवरईं फिराईं * दीन्ह नेग, रीतीं निबटाईं।
राम, सिय-सिर, सेंधुर दीन्हा * सोभा,कहि न जात,मति-हीना॥
कमल-हतेली, धरि रज - सेंधुर * देत सर्प, अमरित-तकि, चंदर।
पा, 'बसिष्ठि'-आज्ञा, इक-आसन * बैठे, दोऊ, दूलह - दुलहिनि॥

छंदः—बैठे, सुभ - आसन, राम - सीता, हर्ष, मन - 'दसरथ', भये।
तन-पुलकि, देखे, कल्प-वृक्ष-सा, पुण्य-अदने, फल-नये॥
भरि भवन, रहा, उछाहु, "राम-विवाह-भा", सब ही कहा !।
केहि भांति, एते, चुकत मंगल, कहत, जीभ, एकहि, अहा !!॥

२. तब, 'जनक', पाइ, 'बसिष्ठि'-आज्ञा, ब्याह-साज, सजाइ के।
'स्रुतिकीर्ति', 'मांडवी', उर्मिला, सब कुँअरि, पास, बुलाइ के॥
'कुस-केत-कन्या', प्रथम, जो, गुन-सील-सुख-सागर रही।
सब रीति, प्रीति-समेत, करि, सो, ब्याहि, नृप, 'भरत'हिं दई॥

३. सिय की बहिन, छोटी, सकल-सुन्दर, सिरोमनि, जानिके।
सो, भूप दीन्हीं, ब्याहि, 'लछिमन' सकल-विधि, सनमानि के॥
जेहि नाम'स्रुतिकीरत', सुलोचन, सुमुख, सब - गुन - आगरी।
सो, दीन्ह, 'रिपुसूदनहिं' भूपति, रूप - सील - उजागरी॥

४. सब, देखि जोरी, अपन - अपनी, सकुचि करि, मन, हर्षहीं।
और, लोग, सुन्दरता, सराहत, देव, फूलन बरषहीं॥
सब, दूलह-दुलहिन, साथ, इक मंडप माँ ऐसे राजहीं।
जनु, जीव-उर, चारहु अवस्था, सहित-स्वामि, विराजहीं॥

दोहाः—खुसी अवध-पति सकल सुत, बहुअन-संग, निहारि।
३२६. सेवा, श्रद्धा, भक्ति, तप करि, पाये फल-चारि॥

जस, रघुबर-विवाह-विधि बरनी ✻ सकल कुअँर, ब्याहे,तेहि करनी।
कस कहिये, दाइज, दियो कितना ✻ मनि, सोना, भरि-मंडप,जितना॥
रेसामि - कपड़ा, साल - दुसाला ✻ अनगिनिती, बहु-मोल,निराला।
गज, घोरा, रथ, दास, औ दासी ✻ गौवैं, 'काम-धेनु'-सी-खासी॥
वस्तु अनेक, करिये, कस लेखा ! ✻ कहि न जाइ,जानहिं,जिन देखा।
देखे-दाइज, 'विष्णु' सिहाने ✻ दसरथ लीन्ह,सबहि सुख-माने॥
मगतन, दीन्ह सोइ, जो, भावा ✻ बचा, सो, जनवासे-आ, पावा।
तब, कर जोरि, जनक,मृदु-बानी ✻ बोले, सब-बरात - सनमानी॥

छंदः—सन्मानि, सकल बरात, आदर, दान, नवि, औ, बड़ाइ-करि।
अति - मन - खुसी, सब मुनिन बंदे, पूजि, प्रेम, गड़ाइ करि॥
सिर नाइ, देव-से-जानि, सब सन अस कहा, बिनती-किये।
"तुम, देव, सिंधु-से, भाव-चाहत, हम, जल-इक-उँजरी-दिये"॥

२. कर जोरि, 'जनक' बहोरि भाई-संग, कौसल-राय से।
बोले, मनोहर बचन, साने - प्रेम - और - सुभाय-से॥
"अब, आप - के-संबंध-ते; हम, आज, बड़, सब विधि, भये"।
"मोहिं, राज - पाट - समेत, सेवक जानो, बिन-दामन-दिये॥"

३. करि टहलनी, इन सब कुँअरि कहं, अपनि-दाया, पालिये।
घर पहँ, बोलायो, छमहु ढिठई, आप कहँ, हम दुख दिये॥
फिर, सूर्य-कुल-भूपन ते समधी, लौटि, सनमानहिं - भरे।
कहि जात, नहिं, इक-इक - की - बिनती, प्रेम - परि-पूरन-खरे॥

३. देवन करी, फूलन की वर्षा, 'राउ' जनवासे चले।
जय-वेद - बाजन - धुनि, नगर, आकास, छाये, सुख भले॥
तब, गाइ, सखियां, गीत, गुरु-देवन की आज्ञा, पाइ के।
दूलह-दुलहिनिन्हि-सहित, आईं "कोह-बर" हर्षाइ के॥

दोहाः—फिरि,फिरि, रामहिं,देखि,सिय, सकुचत,मन, नहिं चैन।
३२७. चचंल, मछरी - ते - अधिक, प्रेम - पिआसे - नैन॥

श्याम-अंग, जो जनम-सुहावनि * सोभा, कोटन 'काम'-लजावनि ।
चरनन, मेंहँदी, और महावर * मुनि-मन-भँवरा, मोहित, जापर ॥
पियर, पवित्र, सुघर एक, धोती * हरत, सूर्य-और-दामिन - जोती ।
घुघुँरू-लागि, करधनी मनोहर * भुज-विसाल-महँ, भूषन-सुन्दर ॥
पिअर - जनेउ, महाछबि - देई * कर, मुद्रिका, चोरि - चित-लेई ।
सोहत ब्याह - साज सब साजे * उर विसाल, सब भूषन राजे ॥
पिअर दुपट्टा, कांधे - डारे * मनि-मोती-लगि, दोउ-किनारे ।
कमल-नयन, कुण्डल, कानन्ह पर * मुख-छबि, मानहु, सुन्दरता-घर ॥
सुन्दर भौंहैं, नाक, मनोहर * भाल-तिलक, लीन्ही, सबछबि, धरि।
सिर पर मौर, मनोहर दीन्हे * सुख-स्वरूप, मोती-मनि-लीन्हे ॥

छंद:—अनमोल - रतनन - ते - गुँथे, सिर-मौर, अँग, चित चोरिहीं ।
पुर-नारि, सुर-की-नारि, बर कहँ, देखि, तिनका तोरिहीं ॥
मनि, वस्त्र, भूषन, वारि, आरति करहिं, मंगल गावहीं ।
सुर, फूल, बरषहिं, भाट, बंदी, सुद्ध कीर्ति, सुनावहीं ॥

२. 'कूबरहिं'-लाइ, सुहागिलिन, बर कुँअरि कहँ, सुख पाय के ।
अति प्रीति, जग-की रीति, लागीं, करन, मंगल, गाइ के ॥
'लहकौर', 'गौर', सिखाइ, रामहिं, सीय-सन, 'सारद' कहहिं ।
रनिवास, ठट्ठा देत, चखि-रस, जन्म-कर-फल पावहीं ॥

३. निज - हाथ - भूषन - के - मनिन, लखि मूर्ति-रूप-निधान-की ।
भुज, नहिं हिलावत, "कहुं, छुटइ ना दरस" डरपत जानकी ॥
वह प्रेम - कर - ठट्ठा - हँसी, कहुँ, कस सखीं, जानत भलीं ।
वर - कुँअरि - सुन्दर, संग, सखियां, लइ के, जनवासे चलीं ॥

४. तेहि समय, पुर, आकास, आनद, झरी - असीसन - की - लगी ।
"जुग-जुग, जिऐं, यह-चारों-जोरी, सुभ", मुदित-मन, सब, कही ॥
जोगी, मुनीसन, सिद्ध, देवन, देखि प्रभु, डँका हने ।
चले, हर्षि, फूलन वर्षि, आपन-लोक, जय-जय-जय भने ॥

दोहाः—सब दूलह, दुलहिन-सहित, आये, पितु - के - पास ।
३२८. सोभा, मंगल, हर्ष, भरि, उमड़ि रहेउ जनवास ॥

फिर, जेवनार, भई, बहु-भाँती * पठये, 'जनक' बुलाय, बराती ।
परत पांवड़े वस्त्र अनूपा * आये, सुतन-सँग-लिये, भूपा ॥
सादर सब के पाँउ पखारे * जथा - जोग, आसन, बैठारे ।
धोये,'जनक','अवध-पति'-चरना * प्रेम, सील, कछु, जाय न बरना ॥
चरन-कमल, प्रभु के, धोये, फिर * रहत छिपे, जो, महादेव-उर ।
तीनहु भाइ, राम - सम - जानी * धोये पद, हाथन, लइ पानी ॥
'जनक', सबहिं,सुभ आसन,दीन्हे * बोलि, रसुइन्ह, फिर, सब, लीन्हें ।
लागे, पतरी, आगे, ढीलन * रतन-पात, गुथे, सोने-कीलन ॥

दोहाः—दाल, भात, घी-गऊ कर, स्वादिष्ट, और, पुनीति ।
३२९. चतुर रसुइआ, परसि गे, सब कहँ, तुरत, बिनीति ॥

पांच कौर, धरि, जेवन लागे * नारिन, गारी-सुनि, अनुरागे ।
भाँति - अनेक रहे, पकवाना * अमरित-सम,नाहिं जात बखाना ।
परसि, बनावन-हार-सुजाना * भाजी-साक, नाम, को जाना ! ॥
चावन - चूसन - चाटन - भोजन * जात,कहे नाहिं एकहु, मुख सन ।
मीठा, खट्टा, कडुआ, खारी * तीत, कसीला, गिनती-भारी ! ॥
जेवत, देत, मधुर-धुनि-गारी * लइ लइ नाम-'अवध'-नरनारी ।
ब्याह-समय, गारी हू सोहत * हँसत 'राउ',औरहु सब,मोहत ॥
यह विधि,सब ही,भोजन कीन्हा * आदर-सहित, आचमन दीन्हा ।

दोहाः—पान-दिये, पूजा, 'जनक', 'दसरथ' सहित-समाज ।
३३०. जनवासे गे, मुदित - मन, सकल - भूप - सरताज ॥

होत, नये मंगल, पुर माहीं * पल-समान, दिन, रातीं, जाहीं ।
बड़े-भोर, जब, 'दसरथ' जागे * मँगता, गुन-गन, गावन लागे ॥
देखि कुँअर, सब, बहुन समेता * कस कहि जाय,हर्ष,मन, जेता! ।
प्रात-क्रिया-करि, गे, गुर पाहीं * अति-आनंद, प्रेम, मन माहीं ॥

कीन्ह प्रनाम, दोउ कर जोरी * बोले बानी, अमरित - बोरी ।
दसरथः-तुम्हरी कृपा, सुनहु, मुनि-राजा ! * भयो, आज, मैं, पूरन-काजा ! ॥
अब, सब विप्र बुलाइ, गोसाईं ! * देहु दान, गौवँ, सजवाईं ! ।
कविः-सुनि, गुरु, करि महिपाल-बड़ाई * रिषी, मुनी, लीन्हे, बुलवाई ॥

दोहाः—'बामदेव', 'नारद', रिषी, 'वालमीकि', 'जावालि' ।
३३१. मुनि-समाज, आवा, सबहि 'विस्वमित्र', 'तपसालि' ॥

दंड-प्रनाम सबहिं, नृप कीन्हे * पूजा, और, सुभ-आसन दीन्हे ।
चारि-लाख, फिर, गऊ, मगाईं * सब ही, 'काम-धेनु'-सम, आईं ॥
भांति, भांति, भूषन, पहिराये * विप्रन, दीन्ह भूप, हर्षाये ।
बिनती कीन्ह, बहुत विधि, राजा * "जीवन-लाभ, मिलेउ, मोंहि, आजा" ॥
भा, असीस पा, मन, सुख भारी * लीन्हे, सबहि, बोलाइ, भिखारी ।
सोना, रत्न, वस्त्र, असवारी * गज, घोरा दिये, रुचि-अनुसारी ॥
चले, पढ़त, गावत गुन - गाथा * "जय हो, जय ! सूरज-कुल-नाथा" ।
भा, अस, उत्सव-राम-विवाहू * कहि पावा नहिं, सो, सुख, काहू ॥

दोहाः—'विस्वामित्रहिं', नाइ सिर, बार बार, कह 'राउ' ।
३३२. कृपा-दृष्टि की, आप का, यह, मुनि - राज ! प्रभाउ ॥

सील, सनेह, 'जनक' कर, गाईं * मान, बड़ाई, सबहि सराही ।
विदा, जनक ते, रोजहि, माँगत * प्रेम-सहित, औरहु, ठहरावत ॥
नित्य - नये - आदर अधिकाई * रोज, रोज, नइ खातिर भाई ! ।
नगर, अनंद, नयो - उत्साहू * दसरथ - बिदा, भाय नहिं, काहू ॥
बहुत दिना, बीते, यह भांती * प्रेम - के - रसरी - बंधे बराती ।
'विस्वामित्र', पुरोहित, जाई * 'जनकहिं' कहा जाय, समुझाई ॥
"राजन ! दसरथ, आज्ञा मांगत * छांड़ि न सकत प्रेम हम जानत" ।
मंत्री सब, कहि 'भला' बुलाये * कहि 'जय जनक' सीस सब नाये ॥

दोहाः—अवध - नाथ, चाहत चलन, भीतर, खबरि कराउ ।
३३३. भये, प्रेम - बस, मंत्री, विप्र, सभा, खुद - 'राउ' ॥

पुरबासी, सुनि 'जात - बराता' ❋ पूँछत, एक, एक ते, बाता ।
निश्चय, जात - सुना, बिलखाने ❋ कमल, जैम, संध्या मुरझाने ॥
जहँ, जहँ, ठहरे रहे बराती ❋ दीन्हे सीधे, अन - अन - भांती ।
विविधि - भांति, मेवा, पकवाना ❋ भोजन-वस्तु, न जात बखाना ॥
भरि - भरि - बैल, अपार, कहारा ❋ कीन्हे सँग, पकान्न - हारा ।
घोड़, लाख, और, रथ, चौथाई ❋ पाउँ-ते-चोटी लागि, सजिवाई ॥
दस-हजार - गज, झूल - सजाये ❋ जिनहिं देखि, दिग्गज सरमाये ।
सोना, रत्न, दिया भरि गाड़ी ❋ गाय, भैंस, कपड़ा, और साड़ी ॥

दोहाः—दाइज दीन्हा, 'जनक', अस, जेहिंकर नहीं ठिकान ।
३३४. 'इन्द्र', 'कुवेरहु', संपदा, आपन, छोटी जानि ॥

सब सामान, 'जनक', सजिवाई ❋ दीन्हा, 'अवध' - पुरी, पठवाई ।
जात बरात, सुना जब, रानी ❋ विकल-मीन, जस, निघटत-पानी ॥
फिरि फिरि, सियहिं, गोद, करि लेहीं ❋ देंहिं असीस, सिखावन देहीं ।
रानीः—हुइहौ रामहिं, सदा, पियारी ❋ रहि अहिवात, असीस-हमारी ! ॥
सास, ससुर, गुरु - सेवा कीन्हेउ ❋ पति-रुखदेखि, हुकुम, सिर लीन्हेउ ।
कविः—अति सनेह-बस, सखी, सयानी ❋ नारि-धरम, सिखवत, सुभ-बानी ॥
सब कुँअरिनि, सादर, समुझाई ❋ रानिन्ह, बार, बार उर लाई ।
फेरि, फेरि, भेंटहिं महतारी ❋ कहत, "रची, विधिना, क्यों, नारी" ! ॥

दोहाः—तेहि अवसर, भाइन-सहित, राम, सूर्य - कुल - केतु ।
३३५. पहुँचे, 'जनक'-के-घर, खुसी, बिदा - करावन - हेतु ॥

चारहु भाइ, सुभाय सुहाये ❋ नगर - नारि - नर देखन आये ।
सखीः—कहत एक, ये, जैहहिं आजा ❋ है तैयार, विदा - कर - साजा ॥
लेहु, नयन भरि, रूप, निहारी ❋ प्रिय महिमान, भूप-सुत, चारी ।
उदय, पुण्य, सखि, को, हुइ आवा ❋ इनहिं, नयन-महिमान बनावा ॥
अमरित, मरती - बेरा, आवहि ❋ कल्प - वृक्ष, भूखा कोउ पावहि ।
नर्की, पावहिं, हरि - पद, जैसे ❋ इन कर दरसन, हम कहँ, तैसे ॥

देखि, राम - सोभा, उर, धरहू * करि मन, सर्प,मूर्ति-मनि-करहू ।
कविः-नयनन-फल,यहविधि,दइदइकरि * पहुँचे कुँअर, महल के भीतर ॥
दोहाः—रूप-सिंधु, लखि, भाइ सब, हर्षि उठा रनिवासु ।
३३६. करहिं निछावर आरती, अति - प्रसन्न - मन, सासु ॥
देखि राम-छवि, अति अनुरागहिं * प्रेम-विवस,फिरि फिरि,पद लागहिं ।
रही न लाज, प्रीति, उर छाई * प्रेम स्वभाविक,कस कह जाई ॥
करि उबटन, सब कहँ अन्हवाये * छः - प्रकार - भोजन करिवाये ।
बोले राम, सुअवसर जानी * सील-सनेह सकुचि-भरी, बानी ॥
रामः—राउ'अवध'-पुर,चहत सिधाये * बिदा-होन - हित, हमहिं पठाये ।
मात ! हर्षि, अब, आज्ञा देहू * बालक जानि, करेउ, नित, नेहू ॥
कविः-सुनत वचन, बिलखेउ रनिवासू * बोलि न सकहिं, प्रेम-बस,सासू ।
हृदय, लगाय,कुँअरि, सब लीन्ही * पतिन,सौंपि,विनती,अति,कीन्ही॥
छंदः—करि विनय,रामहिं,सौंपि सीता,जोरि कर,फिर-फिर, कही ।
रानीः— बलि जाउं,तात ! सुजान,तुम कहं,प्रगट, गति,सबकी,सही ॥
सब कुल कहँ पुर कहँ,मोहिं,राजहिं,प्रान-प्रिय-सिय,जानिये ।
तुलसी,सो सील सनेह लखि,निज दासि करिके,मानिये ॥
सो०ः—बिन - इच्छा, निष्काम, अति-ज्ञानी, भावहि-चहत ।
३३७. गुन - के - गाहक राम, छमत दोस सब, करि दया ॥
कविः-कहि अस,पकरे प्रभु-पद,रानी * प्रेम-कीचि-महँ-फँसी-सी बानी ।
सुनि बानी, अस प्रेम-की-सानी * बहु विधि,राम,सासु-सनमानी ॥
मांगी बिदा, राम, कर जोरी * कीन्ह प्रनाम, बहोरि - बहोरी ।
पाय असीस, फेर, सिर नाई * भाइन - सहित, चले रघुराई ॥
मूरति - मधुर, हृदय महँ, आनी * प्रेम-ते-ढ़ीली, परि गई, रानी ।
फिर, धीरज धरि कुँअरि पुकारी * बार, बार, भेटहिं महतारी ॥
पहुँचावहिं,फिर, मिलहिं, बहोरी * बढ़ी, परस्पर-प्रीति, न थोरी ।
मिलितीं, फिर फिर, सखी हटाई * बछरहिं, जस, गौ-हाल - ब्याई ॥

दोहाः—प्रेम-विवस, नर - नारि-सब, सखिन - सहित, रनिवास ॥
३३८. जनक-पुरी, जनु, कीन्ह आ, दुख, और विरह, निवास ॥

तोता - मैना, जानकी - ब्याये * कनक - पींजरन, राखि, पढ़ाये ।
ब्याकुल, कहत, कहाँ ? वैदेही * कस, छांडहिं धीरज,नहिं,कोई!॥
दुखित, पसू, पच्छी, यह भांती * मनुष-दसा, कैसे, कहि जाती ।
भाई सहित, जनक, तव आये * उमगि प्रेम, नयनन, जल छाये ॥
देखि सिय, धीरज गा भागी * जो, कहिलावत, परम-विरागी ।
लीन्ह राय, उर लाय जानकी * मिटी, कही - मर्याद ज्ञान की ॥
समुझावत, सव मंत्रि - सयाने * धारा धीर, समय-सुभ - जाने ।
बारंबार, सियहि उर लाई * सजि, सुन्दर पालकी, मंगाई ॥

दोहाः—प्रेम - विवस, परिवार सव, सायत जानि, नरेस ।
३३९. कुँअरि, चढ़ाई, पालकिन्हि, सुमिरे सिद्ध गनेस ॥

बहु-बिधि, भूप, सभन समुझाई * नारि-धर्म, कुल-रीति सिखाई ।
दासी, दास, दिये, बहुतेरे * सांचे सेवक, जो प्रिय, केरे ॥
चलत-सिया, ब्याकुल पुर-वासी * होत सगुन, सुभ, मंगल-रासी ।
बृह्मण - मंत्री - सहित, समाजा * संग चले, पहुँचावन, राजा ॥
समय देखि के, बाजने बाजे * गज, घोरा, रथ, लोगन, साजे ।
दसरथ, विप्र बुला, सब, लीन्हें * सब कहँ,दान, मान,भरि दीन्हे ॥
चरन - धूरि - विप्रन,धरि सीसा * हर्षे दसरथ, पाय असीसा ।
सुमिरि गनेसहिं, भये रवाना * मंगल - मूल, सगुन भे, नाना ॥

दोहाः—बरसावत, सुर, फूल, हँसि, करत अपछरा गान ।
३४०. चले अवध-पति, अवध-पुर, हर्षि, बजाइ निसान ॥

करि बिनती, बहु - मनई फेरे * फिर, सब मांगन - हारे टेरे ।
घोरा, कपड़ा, भूषन दीन्हे * करि सन्तुष्ट, ठाढ़ सब कीन्हे ॥
बार, बार, करि बंस - बड़ाई * फिरे, सकल, रामहिं, उर लाई ।
बार, बार, दसरथ, हठि, कहहीं * जनक,प्रेम-बस,फिरन न चहहीं ॥

फिर, कहि दसरथ, बचन सुहाये * "अब तौ, फिरहु, बहुतचलि आये"।
उतरि, फेरि, दसरथ भे ठाढ़े * प्रेम के आंसू, नयनन, बाढ़े ॥
तब, विदेह बोले कर जोरी * बचन, मनहु, अमरित-महँ-बोरी।
जनकः-करउं, कौन विधि, विनय, बनाई * महाराज ! मोंहि, दीन्ह बड़ाई ॥
कविः—दोहाः—कौसल-पति, समधी-सजन, सनमाने, सब भांति।
३४१. मिलत झुकत, इक, एक-सन, प्रीति, न हृदय, समाति ॥
फेरि, जनक, मुनियन्ह, सिर नावा * आसिरवाद सबहि सन, पावा।
फिर, भेंटे, सादर, दामादन * सील-रूप-गुन-की, जनु, खानन ॥
जोरि कमल - कर, दोउ, सुहाये * अमरित बचन, कहे बिलखाये।
जनकः—करउं, राम! किहि भांति, प्रसंसा * मुनि, शिव के 'मन-मानस-हंसा' ॥
करहिं जोग, जोगी, जेहि लागे * क्रोध मोह, ममता, मद, त्यागे।
अलख ब्रह्म, 'सब-महँ' अविनासी * निरगुन, रूप-अनंद, गुन-रासी ॥
जानत मन नहिं, जाति न, बानी * पाय विचार, न, पावत, ध्यानी।
वेदहु, महिमा, कहि जिन्ह, हारा * जस-का-तस रहि, तीनहु-काला ॥
दोहाः—उनहीं-दरसन, पायो मैं, जो सब सुख के मूल।
३४२. पावत सब सुख, जीव, जब, होत 'राम' अनुकूल ॥
सबहि-भांति, मोंहि दीन्ह बड़ाई * सेवक जानि, लीन्ह अपनाई।
{ दस - हजार, सारद और सेषा * करहिं, कल्प कोटिन, चहें, लेखा ॥
{ मोरे भाग्य, ! आपके, सब गुन * चुकइं न, कहि, उनहूँ के मुख सन।
कहत, मैं समुझि, एक बल, मोरे * रीझ जात, तुम, प्रेम-अति-थोरे ॥
बार - बार, मागउं, कर जोरे * सदा, रहइ, मन चरनन - बोरे।
कविः सुनि सुभ बचन, प्रेम-ते-सींचे * भे सन्तुष्ट राम, उर - खींचे ॥
सुभ, करि, विनय, ससुर सनमाने * पिता-मुनी-गुरु-सम, पहिचाने।
बिनती, फेरि, भरत सन कीन्हा * आसिरबाद, प्रेम, मिलि, दीन्हा ॥
दोहाः—मिले, लषन-'रिपुसूदनहिं', दीन्ह असीस, महीस।
३४३. एक, एक, भे, प्रेम-बस, फिर, फिर, नावहिं सीस ॥

बार, बार, करि, विनय, बड़ाई * रघुपति चले, संग सब भाई।
जनक, गहे 'कौसिक-पद, जाई * चरनन-रज, नयनन-ते, लाई॥
जनकः-सुनहु,मुनी।पा, दरसन-तोरे * मुस्किल-कछुनाहिं,अस,मनमोरे।
लोकन - राजा, जो सुख चाहत * जस-इच्छा-कीन्हे, सकुचावत॥
सो,जस सुख, मिलिगा मोहिं आछे * लागि सिद्धि, तुम-दरसन-पाछे।
कावि:-कीन्ह विनय,फिर-फिर सिरनाई * पाइ असीस, फिरे, हर्षाई॥
चली बरात, निसान बजाई * बड़,छोट,सब, खुस-खुस, भाई।
रामहिं देखि, नगर - नर - नारी * पाइ नयन-फल, होहिं सुखारी॥

दोहाः—बीच, बीच, सुभ बास करि, रहगीरन, सुखदेत।
३४४. दिन पुनीत, पहुँचे अवध, रहिगा, कोउ, दुइ खेत॥

डंका, लागा, परन, नगारन * भयो सोरः गज,संख,औ घोरन।
झांझ, ढ़ोल, डुग-डुगी सुहाई * रसिक धुनन बाजत सहनाई॥
आवत देखी, लोग बराता * भे प्रसन्न, फूले सब गाता।
सुन्दर, आपन भवन सँवारे * हाट, सड़क, चौराह, दुआरे॥
जल-गुलाब ते, गलीं सिचाई * जहँ तहँ, सुन्दर चौक पुराई।
बना बजार, न जाय बखाना * मंडप, ध्वजा, पताका, नाना॥
कदम, मौलश्री, आम, औ केला * पान, पुंग, सब, गाड़े, पेला।
गंय, वृक्ष, लागि, धरती, गाड़त * मनि-थाल, अति-चतुर बनावत॥

दोहाः—भांति, भांति मंगल - कलस, घर-घर, रचे, सँवारि।
३४५. करत बड़ाई, देव सब, रघुबर - पुरी निहारि॥

राज-महल, तेहि अवसर सोहत * रचना देखि, 'काम'-मन मोहत।
मंगल - सगुन, मनोहरताई * रिधि,सिधि,संपति,सुःख सुहाई॥
जनु, उछाहिं, सब, सहज सुहाये * धरि धरितन, दसरथ-घर आये।
देखन हेत राम, वैदेही * दरसन - इच्छा,कहउ, न केही?॥
झुंड-झुंड,मिलि,चलीं सुहागिनि * 'काम'-नारि सरमात,अभागिन।
सजे आरती, मंगल - रूपी * धरे बेष, जनु, बहुत-'सरस्वती'॥

रानी, और, राम - महतारी * डूबि-प्रेम, तन-सुधिहु विसारी।
भूपति - भवन, कोलाहल होई * जाइ न कहा, भयो सुख सोई॥

दोहाः—पूजा शिव, औ,गनपतिहिं,कीन्ह दान - भरि - मार।
३४६. खुसी, दरिद्री, पाइगा, मनहु, पदारथ चारि॥

अति आनंद-विवस सब माता * उठन न पाउं, ढील सब गाता।
राम दरस की सब अनुरागी * परिछन-साज, सजन,सबलागी॥
अन-अन-भाँति वाजने वाजत * मंगल-वस्तु 'सुमित्रा' लावत।
दही, दूब, हरदी, फुल-पाती * पान, सुपारी, मंगल - भाँती॥
जौ, चांवर, गोरोचन, खीलैं * तुलसी-दल-मंगल की चीजैं।
सोने-कलस, रँगाय, 'कौसला' * बने सकुचि,जनु,'काम'-घोंसला॥
सगुन-सुगंध-वस्तु, सब आनी * मंगल-साज,सजाहिं, सब रानी॥
रची आरती, अन-अन-भांती * मधुर-सुरन सब मंगल गाती।

दोहाः—सोने-थारन वस्तु, धरि, कर कमलन, लिये पात।
३४७. मन प्रसन्न, परिछन चलीं, तन - पुलकित, सब मात॥

धूप-धुँआ, आकास, अस-कारा * सावन,घटा - छये - अंधियारा।
बरसावहिं, सुर, फूलन-माला * लागत बकुला-पंगति, आला॥
सुघर जड़ाऊ, वंदन-वारे * मनहु, इन्द्र ने, धनुष संवारे।
प्रगटैं, छिपैं, अटन पर भामिनि *धरि,धरि,मानहु,कौंधतदामिनि॥
बादर-गरज, नगारे घोरा * मँगता, पपिहा - दादुर - मोरा।
वस्तु - सुगंधित, देवन डारी * सुखी बरसि जल,जनु,नर-नारी॥
जानि समय, गुरु, आज्ञा दीन्हा * नगर, प्रवेस, राम, तब, कीन्हा।
शिव, गिरिजा,गनेस,सब सुमिरे * हर्षित भूप, सभन - लइ, उतरे॥

दोहाः—होत सगुन, बरसत सुमन, सुरन नगाड़ बजाइ।
३४८. नाचत, हर्षित, अपछरा, मंगल - गीतन गाइ॥

राय, भाट, वंदी, नट - नागर * गावत,जस-'तिहुँ-लोक उजागर'।
जय-धुनि, बेदन-की-सुभ - बानी * होत, दसहु दिसि,मंगल-सानी॥

बहुतक - बाजे, बाजन लागे * नगर, अकास,सबहि अनुरागे ।
बने - बराती, कहे न जाहीं *अधिक सुखी,सुख,मन,न समाहीं॥
पुर - बासिन, तब, 'राउ' जोहारे * देखि राम, सब, भये सुखारे ।
रतन, वस्त्र, सब, करत निछावर * फूलि,प्रेम-ते, जल, नयनन भरि ॥
करत आरती, हँसि पुर - नारी * हर्षित, देखि,कुँअर, सुभ,चारी ।
पालकी - परदा, सुघर, उघारी * देखि दुलहिनिन्ह, होत सुखारी ॥

दोहाः—यह विधि,सबकहँ,देत सुख, आये, राज - दुआर ।
३४६. मात, खुसी, परछिन करत, वहुअन - सहित, कुमार ॥

करत आरती, बारंबारा * रहा न प्रेम - सनेह को पारा ।
मनि, भूषन, कपड़ा, सब - जाती * करत निछावर, अन-अन-भांती ॥
बहुअन-सहित, देखि, सुत चारी * परमानंद - मगन, महतारी ।
फिर फिर, सिय-राम-छवि देखत * जीवन,सुफल,अपन,जग लेखत ॥
बार बार, सखी, सबहिं निहारत * गावत, आपन पुण्य सराहत ।
बरषत फूल, छुनाछुन, देवा * नाचि, गाय, दिखलावत सेवा ॥
देखि, मनोहर, चारहु जोरी * ढूँढ़ी उपमा, 'सारद', भोरी ।
देत, जो उपमा, छोटी लागत * प्रेम, रूप, रहि गई, निहारत ! ॥

दोहाः—वेद - रीति,कुल-रीति करि, अरघ, पांवड़े दइ ।
३५०. दूलह,दुलहिनि,परछि सब, चलीं, महल कहँ, लइ ॥

चारि सिंहासन, सहज सुहाये * 'कामदेव' जनु, हाथ, बनाये ।
तिन्ह पर, दुलहिनि, बर, बैठारे * पद, पवित्र, सब केर, पखारे ॥
धूप, दीप, नैवेद्य चढ़ाये * वेद - विधी,बर, कुँअरि,पुजाये ।
बारंबार, आरती करहीं * चौरी, पंखा, सिर पर हिलहीं ॥
वस्तु, अनेक, निछावर होहीं * भरि-आनंद, मात, सब सोहीं ।
परम - तत्व, जोगी, जनु, पावा *रोगिल-मुख,जस,अमरित आवा॥
जनम - दरिद्री, पारस पावा * मिला नयन-सुख,अँधहिं,भावा ।
'सरस्वती', गूँगे - मुख आई * सूर, लराई महँ, जय पाई ॥

दोहाः—सौ कड़ोर, यह ते अधिक, माता, लहेउ अनंद।
भाइन-सहित, बिआहि घर, आये रघुकुल - चंद॥
दोहाः—लोक - रीति, माता करइं, बर - दुलहिनि सकुचाहिं।
३५१. सो बिलास-आनंद लखि, प्रभु, मन महँ, मुसुकाहिं॥

देव, पितर, पूजे, विधि नीकी * जिन्ह सब इच्छा, पूरी, जी की।
सबहिं वंदि, मांगत बरदाना * भाइन-सहित, राम - कल्याना॥
रहा, छोर नाहिं, देव - असीसन * माता, गोद - पसारि, लेत, मन।
भूप, बोलाइ, बराती, लीन्हे * रतन, सवारी, भूषन, दीन्हें॥
आज्ञा पाइ, हृदय, धरि रामहिं * गये, हँसत, सब, अपने धामहिं।
दीन्ह 'खिलत', फिर, पुर-नर-नारिन * लगे, बधाये, घर-घर, बाजन॥
मांगत, मँगता, जोई, जोई * हँसि हँसि, भूपति, दें, सोइ सोई।
सेवक, बजंत्री, जे, नाना * दइ, दइ दान, सबहिं, सनमाना॥

दोहाः—देत असीस, जोहारि सब, दसरथ के गुन गाइ।
३५२. तब दशरथ, भीतर गये, गुरु, बृह्मण, सँग लाइ॥

गुरू 'बसिष्ठ', जो आज्ञा दीन्हा * वेद-लोक-विधि, सो, तस, कीन्हा।
बृह्मण-भीर देखि, सब रानी * बड़े भाग्य, अपने पहिचानी॥
धोय चरन, बृह्मण अन्हवाये * करि पूजा, फिर, भूप जेंवाये।
आदर, दान, प्रेम, सब कीन्हे * चले, असीस, सुखी, सब, दीन्हें॥
'विस्वामित्र' केरि, करि पूजा * कहा, "धन्य, मो सम, नहिं दूजा"।
कीन्ह प्रसंसा - मुनि बहुतेरी * धरी धूरि, रानिहुँ, पद-केरी॥
घर महँ, दीन्हा, मुनहिं, निवासा * रहइं, देखि-रुचि, नृप, रनिवासा।
पूजे, गुरू - पद-कमल, बहोरी * कीन्ह विनय, उर, प्रीति, न थोरी॥

दोहाः—बहुन-समेत, कुमार, सब, रानिन - सहित महीस।
३५३. फिर,-फिर, वंदत, गुरू-चरन, देत 'बसिष्ट', असीस॥

विनय कीन्ह, मन-अति-अनुरागे * राखि दीन्हें, सुत, संपति, आगे।
खाली, अपने-नेग, मुनि लीन्हा * आसिरबाद, बहुत विधि, दीन्हा॥

सीता-राम, दोउन, हृदय, धरि * गुरु'बासिष्ठ'पग धारे, निज-घर।
सब सब वृह्मनि, भूप, बुलाई * गहने, सारी, सबहिं, पिन्हाई॥
भूप, सुहागिल, फिर, बुलवाई * मन - चाही खिलतैं, पहराई।
नेगी, जोग - नेग, सब लेहीं * मन-भावत-मनि, राजा, देहीं॥
प्रिय महिमान,पूज्य, जिन्ह जाना * राजा, भली-भांति, सनमाना।
देखि, देव, रघुवीर - विवाहू * वरषाहिं फूल, सराहि उछाहू॥

दोहाः—चले, निसान - वजाय, सुर, आपन घर, सुख पाइ।
३५४. कहत, आपुसहिं, राम-जस, प्रेम, न, हृदय, समाइ॥

सब प्रकार, सब - कहँ-सनमाने * भा आनंद, हृदय, अस - जाने।
जहँ रनिवास, तहां, पग धारे * पुत्र, बहू, सब नयन, निहारे॥
लिये गोद, सब, हर्ष-समेता * को,कहि सकइ,हर्ष भयो,जेता!।
प्रेम सहित, गोदी, बैठारा * लाड़, दुलार, कीन्ह,अति प्यारा॥
भा प्रसन्न, देखे, रनिवासू * कीन्ह अनंद, सभन-उर, बासू।
कहा, भूप, सब हाल-विवाहू * सुनि सुनि,हर्ष,भयो, सब काहू॥
'जनक' केर, गुन-सील-बड़ाई * संपति, प्रीती, रीति, सुहाई।
भाट-समान, भूप, सब वरनी * भइं प्रसन्न, रानी, सुनि करनी॥

दोहाः—सुतन समेत, नहाय, नृप, बृह्मण, गुरु, बुलवाय।
३५५. पांच-घरी, जब, रैन गइ, भोजन, सभन, कराइ॥

सुन्दर नारी, मँगल गावत * रैन, देत-सुख, सुन्दर लागत।
हाथ धुवाये, पान दिवाये * इतर मले, माला पहिराये॥
देखे-रघुवर, आज्ञा पाई * निज, निज भवन, चले,सिर नाई।
खुसी, प्रेम, आनंद, - बड़ाई * वह बेरा की सुन्दरताई॥
कहि न सकइं, सौ सारद, सेषू * वृह्मा, वेद, महेस, गनेसू।
सो, मैं कहउं, भला, कस भाई! * प्रथ्वी, सकइ न, सांप, उठाई॥
सब बिधि नृप,सब कहँ सनमानी * कहे बचन, सुभ, टेरे-रानी।
दसरथः—बहुएँ,कन्न्यां, पर-घर,आईं * राखेउ, नयन-पलक की नाईं!॥

दोहाः—थकित, पूत सब, नींद-बस, इनहिं, परावहु जाय।
३५६. अस कहि, गे, आराम-घर, राम-चरन, चित लाय॥

कविः—भूप-वचन सुनि, सहज सुहाये * पलँग, जड़ाऊ, झट, बिछवाये।
दूध-फेन-सम - उज्जल, भाई ! * कोमल - तोसक, गई लगाई॥
तकिया, सुन्दर, बरनि, न जाहीं * इतर - गंध, फैली, घर माहीं।
दिया, जड़ाऊ, सुन्दर दीवट * देखा, जानइ, कहै, मुसीवत॥
रचीं सेज, फिर, राम उठाये * प्रेम समेत, पलँग, पौढ़ाये।
आज्ञा, फिर-फिर, भाइन, दीन्ही * निज-निज-सेज,सयन,तिन्ह कीन्हीं॥
देखि स्याम, सुभ, कोमल गाता * बोली, प्रेम - बचन, अस, माता।
माताः रसता चलत, भयानक-भारी * केहि विधि,तात! 'ताड़िका' मारी॥

दोहाः—घोर निसाचरि, अति बली, लरत गिनहिं नहिं काहु।
३५७. कस मारा, सैना सहित, खल, 'मारीच', 'सुबाहु' !? ॥

कृपा-मुनी, बलि जाउं, तुम्हारी * बड़ी विपति, ईश्वर ने टारी!।
जज्ञ की रच्छा, करि, दोउ भाई * कृपा - गुरू, सब, विद्या पाई॥
गौतम-नारि, धूरि लगि, तारी * लोक, लोक, भइ, कीरति भारी।
कछुआ-पीठ, कठिन, पाथर, ते * तोरा,राजन-बिच,धनु,तड़-से !॥
जीति-जगत जनु, सीता पाई * आये घर, ब्याहे-सब-भाई।
करम, मनुष-के - बल - ते-अगरे * 'विस्वामित्र' - दया - ते सुधरे॥
आज, सुफल, जग,जनम,हमारा * चंद्र-स-मुख,लखि,तात, तुम्हारा।
बीते, जो दिन, बिना - तुम्हारे * सो, नहिं, उमिरि-हिस्साब-हमारे॥

कविः—दोहाः—कीन्ह, मात सन्तुष्ट, सब, विनय - वचन, करि राम।
३५८. सुमिरि शँभु-गुरु-विप्र-पद, थमी नींद, नहिं थामि॥

सोवत,मुख, अस लगत सलोना * जैसे, संध्या, कमल, औ, सोना।
करहिं जागरन, घर, घर, नारी * देहिं, एक, इक, मंगल - गारी॥
नगर, रैन, कस सोभा पाई * रानी कहत, देखिये, भाई!।
सुन्दर बहुन, सास लइ सोई * नागिन, मानि-छिपाइ,जस, कोई।

समय - पवित्र, भोर, प्रभु, जागे * जब, सब मुरगा, बोलन लागे ॥
बंदी - जन, प्रभु के गुन, गाये * पुर के लोग, जोहारन, आये ।
बंदि विप्र, गुरु, सुर, पितु, माता * पा असीस, हर्षे, सब भ्राता ।
सब - बेटन - मुख, मात, निहारे * राजा सँग, द्वारे, पग धारे ॥
दोहाः—जन्म-पवित्र, सो,सौच करि, 'सरजू', जाइ, नहाइ ।
३५६. प्राति-क्रिया करि, बाप-ढिग, आये, चारहु - भाइ ॥
लीन्ह, भूप, छाती, चिपटाई * बैठे, हर्षित, आज्ञा पाई ।
देखि - राम, सब सभा, जुड़ानी * लोचन-लाभ की सीमा जानी ॥
गुरु 'बसिष्ठि', 'विस्वामित्र' आये * गे, आसन सुन्दर, बैठाये ।
सुतन समेत, पूजि, पद लागे * निरखि-राम, दोउ गुरु, अनुरागे ॥
कहा 'बसिष्ठि', धरम - इतिहासा * राजा सुनाहिं सुनत रनिवासा ।
'विस्वामित्र' की, दुर्लभ करनी * गुर-'बसिष्ठि', हर्षित, सुख, बरनी ॥
वामदेव, कह, 'साँची कीरति * तीनहु लोक, निकसि गई, चीरत" ।
सुनि, आनंद, भयो, सब काहू * राम, लषन, मन, बहुत उछाहू ॥
दोहाः—सुख, मंगल, उतसाह-ते, जाहिं दिवस, और रात ।
३६०. उमड़त, 'अवध', अनंद अस, रोज - रोज, अधिकात ॥
नीके - दिन, गे, कँगन, छोरे * सुख, विलास-मंगल, नाहिं थोरे ।
देखि, नये सुख, देव सराहीं * 'अवध', जनम, मांगत विधि पाहीं ॥
'विस्वामित्र', चलन, नित चाहीं * रोके-राम, प्रेम - बस, रहहीं ॥
सौ-गुन, देखि भूप कर भाऊ * 'विस्वामित्र' सराहत राऊ ।
मांगत विदा, राउ अनुरागे * सुतन-समेत, ठाढ़ भे, आगे ॥
दशरथः—नाथ! सकल संपदा, तुम्हारी * जानहु सेवक मोहिं, सुत, नारी ।
करेउ, सदा, लरिकन पर छोहू * दरसन, देत रहेउ, मुनि! मोंहू ॥
कविः—असकहि, राउ, सहित-सब-रानी * परे चरन, मुख, आइ न बानी ।
दीन्ह असीस, मुनी, बहु भाँती * चले, न, प्रीति-रीति, कहि जाती ॥
प्रेम - ते, राम, और -सब-भाई * आज्ञा पाय, फिरे, पहुँचाई ॥

दोहाः—राम-रूप, भूपति - भगति, व्याह - उछाह - अनंद।
२६१. जात, सराहत, मनहिं-मन, खुसी, "गाधि" - कुल-चंद॥

'वामदेव', रघुकुल - गुरु, ज्ञानी * फर, 'गाधि-सुत'-कथा बखानी।
सुनि,मुनि-सुजस,मनहिं-मन,राऊ * बरनत, आपन, पुण्य - प्रभाऊ॥
फिरे, लोग सब, आज्ञा पाई * सुतन - सहित राजा, घर आई।
जहँ-तहँ, राम - व्याह, सब गावा * तीन लोक, सुन्दर जस, छावा॥
आये व्याहि, राम, घर, जब ते * बसत अनंद,'अवध',सब,तबते।
प्रभु - विवाह, जस, भयो उछाहू * 'सेष','सारदा',कहि नहिं पाऊ॥
करत, पवित्र, कवी, अस जानी * सिय-राम - जस, मंगल-खानी।
ता ते, मैं, कुछ, कहा, बखानी * सुद्ध करन हित, अपनी बानी॥

छन्दः—बानी, सुधारन हेतु, अपनी, राम - जस, तुलसी कहेउ।
रघुबीर - चरित, अपार - सिंधू पार पा, को कवि, गयेउ॥
मंगल जनेउ-विबाह-कर, जो रुचि से, नर, जग, गावहीं।
सो, राम-सीता की 'दया' ते, सबहि सुख, नित, पावहीं॥

सो०:—सिय - रघुबीर - विवाह, प्रेम-सहित, गावहिं, सुनहिं।
तिन कहँ, सदा, उछाहु, मंगल - दाता, राम-जस॥

श्री

अयोध्या काण्ड

श्रीगनेसायनमः

मंगलाचरन

सो०:—राजत, बाएं - अँग, सैल - कुमारी, कंठ, विष ।
सिर ते, निकसत गंग, चंद्र - भालु, सूरज - हृदय ॥

२. गोरे, चन्द्र - समान, ईश्वर, देवन्ह, श्रेष्ट जे ।
नित्य, रूप - कल्यान, भश्म - विभूषित अंग, जिन्ह ॥

३. करत, सदा, संहार, व्यापे, चर, और, अचर महँ ।
अस संकर, त्रिपुरार, जानि दास, रक्षा करहिं ॥

४. श्री-मुख-कमल-प्रकास, बाढ़त नहिं, जो, भये तिलक ।
भयो न, जाइ. उदास, बन महँ, मंगल देहु, नित ॥

५. नीले, कमल - समान, कोमल, सोहत, बाम, सिय ।
हाथन, धनु-और - बान, नमस्कार, रघुनाथ, अस ॥
दोहाः—श्री गुरुः - चरनन - धूरिते, मन - दर्पनहिं सुधारि ।
१. सो जस वरनौं राम - कर, जो, दायक फल चारि ॥

कविः—जब ते, राम,ब्याहि, घर आये ※ नये-नये - मंगल, बजत बधाये ।
परबत, चौदह लोकन, छाई ※ पुण्य-मेघ, सुख-जल, बरसाई ॥
रिधि-सिधि-नदि,संपति-जल,लाई ※ उमड़ि, अवध-सागर जनु आई ।
अति कुलीन, पुर के नर नारी ※ जनु, मोती अनमोल, सुखारी ॥
सोभा-नगर, कही नहिं जाई ※ रचि, बृह्मा, दिये हाथ कटाई ।
सब-विधि, सब, पुर-लोग,सुखारी ※ चंद्रा - सो - मुख - राम निहारी ॥
सुखी मात, सब, सखी, सहेली ※ मानहु, फली, मनोरथ-बेली ।
राम - रूप - गुन - सील - सुभाऊ ※ देखत, सुनत, हर्षि, अति, राऊ ॥

दोहाः—सबके मन, यह लालसा, तब, पूरन सब काज ।
२. जियतहि, दसरथ देहिं, शिव ! रामहिं पद-युवराज ॥

एक समय, लिये संग समाजा ※ बैठे, राज - सभा, 'रघुराजा' ।
सकल-पुण्य - मूरति, जो रामा ※ अति प्रसन्न,सुनि,कीरति,काना ॥
दसरथ-रूपा, सबहि-नृप चाहहिं ※ लोक-पाल,नित,रुखहि निहारहिं ।
स्वर्ग, पताल, औ पृथ्वी माहीं ※ बड़-भागी, भा, है, हो, नाहीं ॥
मंगल - मूल, राम, सुत जाके ※ जो कछु कहौं, सो थोरा, ताके ।
दर्पण मँह, मुख, सहज, निहारा ※ दसरथ, आपन-मुकुट सँभारा ॥
{ बार-सुपेद, कान के तीरा ※ "भये-बूढ़",सिखवत,मति-धीराः।
अब युवराज, राम कहँ, देहू ※ लाभ, जन्म कर, जियतहि, लेहू ॥

दोहाः—अस बिचार, मन, लाय के, सुभ घरी, सुभ दिन पाय ।
३. प्रेम, पुलकि-तन, मुदित-मन, गुरुहिं सुनायो जाय ॥

दसरथःकह कर जोरि,सुनहु,मुनि-नायक!※भये,राम,सब बिधि,सब लायक।

नौकर, चाकर, पुर-नर, नारी * मंत्री, शत्रु, मित्र बलिहारी ! ॥
राम, प्रिय, सब के, जस मोही * गुरु-असीस, जनु, मूरति होही।
बृह्मण, औ परिवार, गुसाईं * आप समान, राम कहँ, चाहीं ॥
जो, गुरु-चरन-धूरि, सिर धरहीं * सब बड़ाइ, अपने बस करहीं।
यह प्रभाउ, जानत नाहिं दूजा * सबहिं पायों, करि, धूरि की पूजा ॥
अब, अभिलाख, एक, मन मोरे * पूरन होय, अनुग्रह तोरे ॥
मुनि, प्रसन्न, और जानि सनेहू * सिर नवाय, कह, आज्ञा देहू ॥

गुरूः—दोहाः—करत मनोरथ सिद्ध, यश, राजन ! नाम तुम्हार।
४. पाछे-इच्छा के, फिरत, सब सिद्धी, बलिहार ॥

कविः-सबबिधि, गुरुप्रसन्नजियजानी * बोले दसरथ, कोमल बानी।
दसरथः नाथ ! देहु रामहिं, युवराजू * आज्ञा ! जोरहुँ जाय समाजू ॥
जियतहि मोरे, उत्सव होई * नैन लाभ, पावे सब कोई।
आप कृपा, सब इच्छा, पूरी * शिव ने, यही लालसा मोरी ॥
फिर, कह, जियहुं, मरहुं कछु होई * पाछे पछितावा ना कोई।
कविः-सुनि, मुनि, दसरथ बचन सुहाये * मंगल-दाता, अति मन भाये ॥
गुरुः जासु विमुख भये, नर पछितावे * जासु भजन विनु, जरन न जावे।
सो स्वामी, सुत, भयो, तुम्हारा * प्रेम-के - पाछे - भाजन - हारा ॥

दोहाः—वेग, विलंब न करिये, नृप, साजिये सबहि समाज।
५. सुदिन सुमंगल, तबहिं, जब, होहि राम युवराज ॥

-कविः—भे प्रसन्न राजा, घर आये * झट 'सुमंत्र' कहँ बोलि पठाये।
कह 'सुमंत्र,' "जय हो', सिर नाये * भूप सुमंगल वचन सुनाये ॥
दसरथः-चित-प्रसन्न, गुरु, दीन्ही आजू * आज्ञा, होय राम - युवराजू।
जो, पंचहिं, मति लागइ नीका * करहु, हर्षि-हिय, रामहिं टीका ॥
कविः—मंत्री, सुनि प्रिय-बानी हर्षा * वृद्ध - मनोरथ - पर जल बर्षा।
मंत्रीः-मंत्री, बिनय करत कर-जोरी * जियहु, जगत-पति ! बरस कडोरी ॥
मंगल - कारी, काज, विचारा * करहु बेगि, जनि लावहु बारा।

कविः- हर्षे नृप, सुनि, मंत्रिन-भाषा * बढ़त बौर, जस, फूटै साखा ॥
दोहाः—गुरु 'बसिष्ट' की, भूप कहँ, जो जो आज्ञा होय ।
६. रामचंद्र के तिलक-हित, करहु, बेग सोइ-सोइ ॥
गुरुः—अति प्रसन्न, बोले, गुरु,बानी * लावहु सकल तीरथन-पानी ।
औषधि, मूल, फूल, फल, पाना * गिनि, गिनि,गुरू, बताये नाना ॥
मृगछाला, और, चँवर सुहाये * रेसम - ऊनी - वस्त्र बताये ।
और वस्तु, मणि, माणिक, मोती * जो, जो, राज-तिलक महँ होती ॥
वेद-लिखी, कहि, सकल विधाना * कहा, रचहु मण्डप, समियाना ।
आम, सुपारी-पेड़, बताये * सब गलियन माँ जाहिं लगाये ॥
मोतिन, चौक पुरावहु जाई * सुंदर हाट, सजावहु, भाई ! ।
पूजहु गुरु, गनेस, कुल-देवा * सब विधि, ब्रह्मण की करि सेवा ॥
दोहा—रथ, हाथी, घोड़ा, कलस, झंडी, वन्दनवार ।
७. साजहु, अस सुनि, सब चले, उठि, उठि, हुइ तैयार ॥
कविःजोआज्ञा,जेहि का, मुनि दीन्हीं * सो; जानहु, पहिले करि लीन्ही ।
विप्र, साधु, सुर, पूजत राजा * करत, राम-हित, मंगल काजा ॥
सुनत राम कर तिलक-सुहावा * गह गहे, बाजन लागे, बधावा ।
फरकत, मंगल, अंग सुहाये * राम, सिय, कहँ, सगुन जनाये ॥
रामसियपुलकिप्रेमसों,मिलिमिलिकहहीं* भरत-आगमन, सगुन बताहीं ।
गये बहुत दिन, बीतीं राती * मिलि प्रिय,अवश जुड़ैहहिं छाती॥
रामः'भरत,समान, कौन, जग,प्यारा * सगुन केर फल, यही विचारा ।
कविः रामहिं भरत-शोच,दिन-राती * कछुई, अंडन का, जेहि भांती ॥
दोहाः—खबरि गई रनिवास, जब, उठि हर्षेउ, यहि भांति ।
८. जस समुद्र, लखि चन्द्र, बढ़ि, लहरन-ते, लहलात ॥
प्रथम, जाय, जिन, बचन सुनाये * भूखन, बसन, बहुत, ते पाये ।
मन अनन्द, और पुलकि सरीरा * मंगल-कलस करत तद्बीरा ॥
पूरे चौक, 'सुमित्रा' रानी * मनि-मोतिन ते, सजे, सियानी ।

आनँद-मगन, राम-महतारी * दिये, दान बहु, विप्र पुकारी ॥
देवी, देव, नाग और नागिनि * पूजे, बोली भेंट चढ़ावन ।
रानीः जेहि-बिधि होइ राम-कल्याना * देहु दया करि सो बरदाना ॥
कविः गावहिं मंगल, कोकिल-बयनी * नारी, चंद्र-मुखी, मृग-नयनी ।
दोहाः—राज-तिलक, सुनि, राम कर, अति प्रसन्न, नर-नारि ।
९. साजत मंगल साज, सब, विधि अनकूल बिचारि ॥
तब नृप, गुरु 'वसिष्ट' बुलवाये * राम - धाम, सिख देन, पठाये ।
गुरु - आगमन सुनत, रघुनाथा * द्वार, आय, पद, नायो माथा ॥
दियो अर्घ, सादर, घर लाये * सोरह - भांति, पूजि, बैठाये ।
गहे चरन, सिय सहित, बहोरी * बोले राम, कमल - कर जोरी ॥
रामः—सेवक-गृह, जो स्वामी आये * मंगल होय, दुःख सब जाये ।
लेत, काम लागे, बुलवाई * योग पुरुष ते, नीति बताई ॥
घर पवित्र कियो, मों का चाहे * तजि अभिमान,आप चलि आये ।
करहुं जो, आज्ञा हों, मन लाये * सेवक, स्वामी - सेवा पाये ॥
गुरुः—दोहाः—सुनि सनेह - साने - बचन, मुनि रघुवरहिं प्रसंसि ! ।
१०. कहौ न काहे, राम ! अस, भूपन - सूरज - बंस !! ॥
कविः—करि बखान,गुन सील,स्वभाऊ * बोले, प्रेम पुलकि, मुनि - राऊ ।
गुरुः दसरथ साजा तिलक समाजू * चाहत देन, तुमहिं, युवराजू ॥
बृह्मचर्य, तुम, साधहु आजू * जे विधि, सकल, बनावहु काजू ।
कविः अस सिख दै,गुरु,नृपपहँगयेऊ * अस आश्चर्य, राम मन भयेऊ ॥
रामः जनमे एक संग, सब भाई * भोजन, शयन, खेल, लरिकाई ।
कन्छेदन और व्याह, जनेऊ * संग, संग, सब भाइन, भयेऊ ॥
उज्जल-बंस, पै, अनुचित बाता * छोटिन छांड़ि, तिलक,बढ़-भ्राता ॥
कविः प्रेम-के-बस,प्रभुकर पछितावा * कुटिल भक्त-मन मोम बनावा ॥
दोहाः—तेहि अवसर, आये लषन, मगन प्रेम आनंद ।
११. कीन्ह मान, प्रिय वचन कहि, रघुकुल-कुमुद - के चंद ॥

बाजन लागे, बाजे नाना * नगर-हर्ष, नहिं जात बखाना ।
'भरत'-आगमन,सकल मनावहिं * आवहिं बेग, नैन, फल पावहिं ॥
हाट, बाट, घर, गलियन माहीं * नर, नारी, पूछहिं हर्षाहीं ।
तिलक-लगन, कल, केती बेरा * पूजहिं राम मनोरथ मोरा ॥
"राम-युवराजा, सिय-युवरानी * बैठि सिंहासन, हो मन-मानी" ।
सकल कहहिं, कब हुइहै काली * बिघन मनावहिं, देव, कुचाली ॥
तिनहिं सुहाय न, अवध-वधावा * चांदनि-राति, चोर नहिं भावा ।
देवन, 'सरस्वती' बुलवाई * परि, परि, पाउँ, कहत सिरनाई॥
देवताः—दोहाः—परी, विपति भारी, हमहिं, माता ! अस कर, आज ।
१२. जायं, राम, बन, राज-ताजि, होय सकल सुर-काज ॥
अस विन्ती सुनि, मन पछितातीं * "होउं कमल-वन, पाला-राती" ।
जब, देखा, देवी पछितानी * कह,देवन,"नाहिं कुछ बदनामी" ॥
देवताः—दुख-सुख-रहित,जानु रघुराऊ * तुम जानत, सब, राम-प्रभाऊ ।
जीव, कर्म-बस, दुख-सुख-भागी * जाहु अवध, देवन हित लागी ॥
कविः—पकरि चरन, देवन सरमावा * चली, देव-भाति, नीच, बतावा ।
सरस्वतीः—रहनि,ऊँच, मन,नीच,बुराई * देखे बढ़ती, जरत, पराई ॥
आगिल, भारी - काज, विचारी * लागिहौं मैं,कविकहँ,अति प्यारी।
कविःहर्षि,हृदय, 'दसरथ-पुर', आई * जनु, गृहदसा, कोउ, दुखदाई ॥
दोहाः—नाम 'मंथरा', मंद - मति, चेरी, केकई - केरि ।
१३. सब अपजस,तेहि सिर, धरेउ, गइ, वह-कर-मति - फेरि ॥
देखि, 'मंथरा', नगर सजावा * घर, घर, मंगल, बजत वधावा ।
पूंछा लोगन, "कह यह बाती" * राम-तिलक-सुनि,गइ जरि छाती॥
करत विचार, हृदय, अकुलाती * बिगरै काज, कौन विधि राती ।
मधु - माखी, भीलिनी - कुजाती * गौं ताकत, तोरौं, केहि भांती॥
'भरत'-मात पहँ, गइ बिलखानी * 'क्यों उदास', पूंछा, तब, रानी ।
गहिरी-सांस-लेत, नहिं बोलत * नारि-चरित, बढ़-आंसू, रोवत ॥

केकईः—'केकई' कहा, गाल बढ़ तोरे! ❊ 'लषन', दीन सिख, अस मन मोरे।
कविः—तबहुँ न, बोली, चेरी, पापिन ❊ छांड़न लागि सांस, जनु सांपिन ॥
केकईः— दोहाः—डरत, कहा रानी, कहौ, कुसल-राम-महिपाल।
१४. 'लषन', 'भरत' और 'शत्रुहन' सुनि, 'मंथरा' बेहाल ॥
मंथराः—कहा सीख, देही, कोउ, माई! ❊ गाल बजाउब, केहि-बल-पाई!।
रामहिं छांडि, कुसल केहि आजू! ❊ दसरथ देत, जिनहिं युवराजू! ॥
'कोसल्या', अनुकूल विधाता ❊ गरब देखि, नहिं हृदय, समाता।
देखहु सोभा, समुझहु, थोरा! ❊ बिगरा, जाहि देखि, मन मोरा ॥
पूत, विदेस, न-सोच-तुम्हारे! ❊ जानतः 'बस महँ, राउ, हमारे'।
तुमहिं. नींद प्रिय, तोसक, तकिया ❊ भूप-कपट. नहिं जानत, दुखिया!॥
केकईः—समुझी, मन-मैली! कह रानी ❊ चुप रहु, तोर भाव, मैं जानी।
अस, फिर कहा, कबहुँ, घर-फोरी!❊ तौ, धरि, जीभ, कढ़ावहुँ तोरी ॥
दोहाः—लँगड़े, काने, कूबरे, कुटिल, कुचाली, जानि।
१५. तेहि पर, स्त्री, चेरि, फिर. कहि, रानी मुसुकानि ॥
मैं सिखवा, मिठ-वचनन-वारी! ❊ नहीं कोप कछु, तू अति प्यारी।
मंगल-दाता, सुभ दिन, सोई ❊ तुम्हरा-कहा-तिलक, जब, होई ॥
जेठ, स्वामी, सेवक, लघु-भाई ❊ हमरे कुल की रीति, सुहाई।
राम-तिलक, जो, सांचहु, काली ❊ मन-चाहा, तोहि, देउँ मैं, आली!॥
कौसल्या सम, सब महतारी ❊ रामहिं, सहज सुभाउ, पियारी।
मोपर, करहिं सनेह विसेषी ❊ मैं, करि प्रीति-परिच्छा, देखी ॥
दूसर - जन्महु, चाहौं दोऊ ❊ राम, पूत हों, सिय, पतोहू।
प्रान-ते-अधिक, राम प्रिय मोरे ❊ तिन कर तिलक, दुःख, कस तोरे ॥
दोहाः—तोहि, भरत - सौगंद, कहु. छाँड़हु कपट, छिपाउ।
१६. हर्ष - समय, कस दुख करत, कारन, मोंहि सुनाउ ॥
मंथराः—एक बार कहा, जीभ-कटाई ❊ अब, कहिहौं, दूसर लगवाई।
फोरन योग, कपारु, अभागा ❊ कहा भला, दुखदाई लागा ॥

कहत, झूँठ - सच, बात बनाई * सो, तुम्हं, प्रिय, करुई मैं, माई !।
हमहुँ कहब अब ठकुर-सुहाती * नाहीं तौ, मौन रहब, दिन-राती ॥
करि कुरूप विधि, परबस, कीन्हा * काटै बोया, पावै दीन्हा ।
कोउ नृप होइ, हमहिं, का हानी * चेरी, चेरी, रानी रानी ॥
अरे ! जरि जाय, सुभाउ हमारा * अनभल, देखि न जाय, तुम्हारा ।
ता ते, कछुक बात, अनुसारी * करहु छमा, भइ चूक हमारी ॥
कविः—दोहाः—गूढ़ - कपट - प्रिय - बचन सुनि, नारि - बुद्धि फिरि जात ।
१७. सुर - माया - बस, समुझि हितु, मानी बैरिनि - बात ॥
सादर, फिर, फिर, पूँछत, ओही * भील-गान-सुनि, हिरनी मोही ।
होनहार-जस, तस, मति डोली * लगी-घात-जानी, अस बोली ॥
मंथराः-तुम पूँछत, मैं, कहत, डराऊँ * धरेउ, मोर, 'घर-फोरी', नाऊँ! ।
कबिः—बातैं गढ़ि, प्रतीत, जब, जानी * अवध-साढ़-साती, कही बानी ॥
मंथराः—राम,सिया,तुमकहँप्रिय,रानी! * रामहिं तुम प्रिय, सत्य सो बानी ।
रहा प्रेम अस, सो दिन बीते * समय-फिरे, रिपु होइँ पिरीते ॥
सूर्य, कमल - कुल - पालनहारा * बिनु-जल, देत, वृत्त कहँ, जारा ।
चहत सौतः जर उखरै, रानी! * रोकहु, करि उपाय, दै पानी ॥
दोहाः—तुमहिं, घमंड, सुहाग कर, समुझत बस-महँ-राउ ।
१८. मन-मैले, मुख-मीठ, नृप, और तुम, सरल-सुभाउ ॥
चतुर, गँभीर, राम - महतारी * तकि अवसर,कस बात सँवारी!।
भूप, 'भरत', ननसार पठाये * राम - मात ही के भुरमाये ॥
कोसल्याकीसमुझिः'सेवतमोहिं,सुमित्रा,नीके*ककइ,अतिघमंड,बल-पी-के' ।
तुम खटकत, कांटा-सम, ताही * चतुर-कपट,नहिं परत दिखाई ॥
दसरथ, तुम पर, प्रेम विसेषी * सौत -सुभाउ,सकत नहिं देखी ।
रचेउ जाल, भूपति - अपनाई * राम-तिलक-हित, लगन धराई ॥
यह कुल-उचित, राम कहं,टीका * सबहिं नींक, महुँ,लागत नीका ।
कराहि,आगे,कह विधि,डर मोंका! * परै सहानि, जो फल दे,तोका !॥

कविः–दोहाः—रचि बातैं छल-कपट-की, दीन्हा कपट सिखाय।
१९. सौत-कहानी, सौ, कहीं, देत जो फूट कराय॥

मंथराः—भावी-वस,प्रतीति, उर आई ❋ पूँछि रानि, सौगंद दिवाई।
कह पूँछहु, तुम, अबहुँ न जाना ❋ हित, अनहित, पसु हू पहिचाना॥
एक पाख भा, सजत समाजू ❋ तुमहिं, खबरि भइ,मो सन,आजू।
ओढ़त, पहिरत, खात, तुम्हारा ❋ सत्य-कहे, नहिं दोस हमारा॥
कहौं झूठ, जो, बात-बनाई ❋ तौ, विधि दण्ड देइ, मोहिं, माई।
रामहिं, तिलक, काल, जो भयेऊ ❋विपति-बीज,तुमकहँ,'विधि'बयेऊ॥
कहौं झूँठ, तौ, फूटहि आंखी ❋ अब, तुम होत, दूध-की-माखी।
जो, सुत-सहित, करहु सेवकाई ❋ तौ, घर रहौ, न आन उपाई॥

दोहाः—'कद्रू', दुख, 'विनता', दियो, तस, 'कोसल्या', तोहि।
२०. 'भरत', कैद महँ, जायं और, लछिमन नायब होहि॥

कविःकेकइ, अस करुई, सुनि, बानी ❋कहिनसकतकछु,सहमि,सुखानी।
तन पसीज, केरा-सम, कांपी ❋ चेरी, जीभ, दांत-तरे, दाबी॥
कहि,कहि,फिर, बहु कपट-कहानी❋ कहा, न छांड़हु धीरज, रानी।
सबक-पढ़ाय, कीन्ह मन पाथर ❋ झुकै, गठील,न,फिर,जस,लाकड़॥
फूटि करम, प्रिय लागि डंकिनी ❋ बगुली सराहत, मनहु, हंसनी।

केकईः—मंथरा!सत्य बात,सब,तोरी❋ सीध-आँख,फरकत, नित,मोरी॥
देखत बुरे, रोज, मैं सपने ❋ कहा न, तोहि, मोह-वस-अपने।
कहा करौं, सखी, सीध सुभाऊ ❋ सीध, टेढ़, समुझत नाहिं काऊ॥

दोहाः—अपने-चलत, तौ, आज लगि, कीन्ह न, केहु-बिगार।
२१. कौन पाप, यकसंग, मोहिं, दीन्हा दुख, कर्तार॥

जनम गँवाऊँ, नैहर जाई ❋ जियत, न करौं, सौत-सेवकाई।
दुसमुन के बस, दैव, जियावै ❋ अस जीवन ते, मरन सुहावै॥

कविः—दीनवचन,जब, रानि सुनावा ❋ कुबरी, त्रिया-चरित्र दिखावा।
मंथराः—करिजी छोट,कही कस बानी! ❋ सुख, सुहाग, दिन-दूना,रानी!॥

तुम्हरा बुरा, रानि ! जिन ताकेउ ❋ समझहु, यह करफल, सोइ चाखेउ।
सुने तिलक, मोहिं परत न चैना ❋ दिन नाहिं भूख, नींद नहिं रैना ॥
रेख-खींचि, पण्डित, अस बाँचा ❋ भरत होहिं राजा, सो साँचा।
भामिनि ! करहु, तौ, कहौं उपाऊ ❋ तुम्हरी सेवा के बस, राऊ ॥
केकई:-दोहा:—सकल पूत, पति, त्याग, कहु, गिरौं, कुआँ महँ, जाय।
२२. करौं, सखी ! जो कछु कहौ, देखे दुख, हित लाय ॥

कवि:—बलि-बकरा, कीन्हा कैकेई ❋ कपट - छूरी, उर-पाथर, टेई।
आवत दुःख, न समुझत, कैसे ❋ चरत, खुसी, बलि-बकरा जैसे ॥
सुनत, बात-मिठ, अंत बुराई ❋ मधु, विष-सँग, जनु देति पियाई।
मंथरा:-कहत दासि, तुम कहँ सुधि नाहीं ❋ कहेउ रहा कह, तुम, मो पाहीं ? ॥
धरी धरोहर, क्यों बिलखाती ❋ दोउ बर माँगि, जुड़ावहु छाती।
भरत राज, रामहिं बनवासू ❋ देहु, लेहु सब सौत-हुलासू ॥
भूप, राम - सौंगंद - दिवाई ❋ माँगेउ, कहा जो, टरि नहिं पाई।
गये रैन, बिगरै सब काजू ❋ वचन मोर प्रिय ! मानहु आजू ॥
दोहा:—पापिन, घात-लगाय, कह, कोप-भवन महँ जाहु।
२३. करेउ काज सब, सँभरि के, भूपहिं जनि पतियाहु ॥
कवि: रानी, ताहि, प्रान-प्रिय जानी ❋ कीन्ह बड़ाई, बुद्धि बखानी।
केकई:-तो समान, को हितु, संसारा ! ❋ बहत, बांह कर, दीन्ह सहारा ॥
पूरन होय मनोरथ, काली ! ❋ आंखिन, करहुं पुतरिया, आली !।
कवि:-आदर-चेरी, बहु-विधि, कीन्हा ! ❋ कोप-भवन महँ, गई, मति-हीना ॥
बिपति-बीज, जनु, बर्षा-चेरी ❋ धरती, कर्मांत, केकई केरी।
लगत-कपट-जल, अंकुर जामा ❋ दुइ बर, पात, औ, फल, दुख-नाना ॥
कोप-साज करि, पौढ़ी जाई ❋ करत राज, दियो कुमति नसाई।
मचेउ कोलाहल, नगरी माहीं ❋ यह कुचाल, कोउ, जानी नाहीं ॥
दोहा:—हर्षि, हर्षि नर नारि, सब, सजहिं सुमंगल-चार।
२४. यक आवत, यक जात है, भीर, भूप-दरबार ॥

राम-सखा, सुनि सुनि, हर्षाहीं * मिलि,दस-पाँच, राम पहँ,जाहीं।
आदर करत, प्रेम पहिचानी * राम, कुशल पूँछत, मृदु-बानी ॥
फिरत भवन, प्रिय आज्ञा पाई * करत एक, इक राम-बड़ाई।
सखाः-राम-समान कौन, संसारा ! * सील, स्नेह, निभावन-हारा ॥
{ करम-बिवस,जहँ-जहँ,हम जन्महिं * हे विधि! दीन्हेउ,तहँ-तहँ,हमहीं!।
{ हम, सेवक, स्वामी, रघुनाथा * निभै, अंत-लगि,या ही नाता ! ॥
कवि:-अस अभिलाष,नगर,सब काहू * कैकई के हृदय, अति दाहू।
को न, कुसंगति पाय नसाई ! * नीच-सलाह, हरत चतुराई ! ॥

दोहाः—गये, साँझ, आनन्द सों, भूप, केकई तीर।
२५. इधर सनेह की मूर्ती, उधर निठुर, बेपीर ॥

कोप-भवन सुनि, नृप सकुचाहीं * डरत, परत, आगे, पद नाहीं।
{ बसत इन्द्र, भुज के बल, जाके * राजा सकल, रहत, रुख-ताके ॥
{ सुनि त्रिय-रिस,सो गयो सुखाई * देखहु, काम - प्रताप - बड़ाई।
बज्र की चोट उठावन - हारे * फूल-बान, ते, 'काम' ने मारे ॥
डरत, नरेसु, प्रिय पहँ, गयेऊ * देखि दसा, अति-अति-दुखभयेऊ।
बस्त्र मैल, धरती महँ, डारी * कीन्हे भूखन छीरा - छारी ॥
सो कुवेष, कुमतिहिं, अस,सोही * कहत भावी,जनु; 'विधवा होई'!।
दसरथः-निकटजाय,नृपकह,मृदु-बानी* कहौ,प्रान-प्रिय ! काहे रिसानी ? ॥

छंदः—रिस काहे, पूँछत, छुअत, हाथ पती को, झटकि, हटावही।
करि क्रोध, मानहु, कोउ नागिन द्रष्टि टेढ़, दिखावही ॥
दुइ दाँतः वर, और, जभिः इच्छा, ठौर, काटन - हित, तकै।
वस-होनहार - के, भूप, तुलसी, 'काम' - को - कौतुक लखै ॥

सो०:—बार-बार, कह राउ : मृगी ! कोयल ! हे, चंद्र-मुख !।
२६. रिस-कारन समुझाउ, मतवारी, गज-चाल, प्रिय !! ॥

अनहित तोर,प्रिय! केहि कीन्हा ? * दुइ-सिर,कौन,चहत नहिं जीना ?।
देहुं राज, कहु, कौन भिखारी ? * कवन भूप,देउं,देस, निकारी ? ॥

सकत, देवता-तक, मैं मारी * शत्रु तुम्हारा, कह नर नारी।
जानत प्रेम, सुन्दरी ! मोरा * चंद्र-मुखी ! मन मोर, चकोरा॥
पुत्र,प्रान,प्रिय !सरबस मोरे। * प्रजा, कुटुंभी, सब बस तोरे।
होय कपट, जो, कहा-हमारा ! * तौ, सौगंद-राम, सौ-बारा ! ॥
माँगहु, हंसि, मन-भावन-बाता * भूषन -पहिर, मनोहर-गाता।
चाहिए समय,औ, कुसमय देखा * करहु दूरि, वेगहि, यह बेषा॥
कबिः-दोहाः—मन रांची-सौगंद सुनि, खिल-खिलानि मति-मंद।
२७. पहिरत भूषन, भीलनी, कि फांसत, मृग कहँ, फंद॥
जाना, राउ, खुसी, अब, रानी * भरे-प्रेम, बोले, मिठ-बानी।
दशरथःभामिनि!भयेउ,तोरमन-भावा* घर-घर, नगर, अनंद-बधावा॥
रामहिं देउं, काल्ह, युवराजू * सजहु, प्रान-प्रिय, मंगल-साजू।
कविः दहलि उठेउ, सुनि हृदय कठोरा * जनु, कोउ,छुआ, पका बरतोरा॥
हँसि के, ऐसी पीर, छिपाई * चोर-नारि, छिपि, रोवत, भाई।
लखी न, भूप, कपट-चतुराई * कुटिल-गुरू - 'मंथरा' - पढ़ाई॥
चतुर, नीति महँ, भूपति, भाई * स्त्री-चरित, थाह नहिं पाई।
कपट - सनेह - बढ़ाये पोली ! * नैन, औ, मुँह मटकाये बोली॥
केकई-दोहाः—'मांगु', 'मांगु', नित, कहत तुम, कबहूं, देहु, न लेहु।
२८. कहेउ देन, बरदान दुइ, तिन हू महँ, संदेहु॥
दसरथः तुम्हरा मर्म,राउ, कह,जाना * तुम कहँ, रूठब, लगत सुहाना।
धरी धरोहर, कबहुं न मांगी * भूल-सुभाउ, महँ, सुधि त्यागी॥
झूँठा दोस, हमहिं, जानि देहू * दुइ-के-चारि, मांगि, कि, न लेहू।
रघुकुल-रीति, सदा, चलि आई * जाय प्रान, पर, बचन न जाई॥
मिलि-सब-पाप, न, झूंठ-बराबर * लाखन-घुँघुँची, और, यक पाथर।
भले काम की, सत्य, एक जर * लिखा वेद,और, कहत मुनीस्वर॥
ता पर, राम - कसम, मैं खाई * सकल-पुण्य - मूरति - रघुराई।
कविःकरि पक्का, फिर, अस हँसि बोली * जनु,'सिकरा',कोउ, टोपी खोली॥

दोहाः—भूप - मनोरथ, बन भयो, सुख भा पक्षी, आज।
२९. छाड़न चाहत, भीलनी, वचन - भयंकर - बाज॥
केकई:—सुनहु प्रान-प्रिय! भावत जीका * वर यक मांगत, 'भरतहिं', टीका!।
दूसर वर मांगत, कर जोरी * पूरहु, नाथ! मनोरथ मोरी॥
हुइ तपसी, तजि राज - बिलासा * चौदह बरस, राम, बन-बासा।
कविः सुनत वचन, भूपति, भयो दुखवा * चंद्र-किरन-छुइ, जस, दुख, चकवा॥
गये सहमि, नहिं कछु कहि आवा * जनु 'बटेर'-बन, झपटा 'बाजा'।
गयो सूख, मुख, छावि अस बिगरेऊ * ताल-पेड़, बिजुली, जनु, गिरेऊ॥
माथे - हाथ, मूंदि दोउ लोचन * सोच मूर्त्ति हुइ, लागे सोचन।
दशरथः—वृच्छ-मनोरथ, फरती बारा * जर-से, हथिनी, दीन्ह उखारा॥
सकल 'अवध', केकई उजारी * अचल बिपति की, हा! न्यों डारी।
दोहाः—कौन समय, और, कह भयो, गयो नारि-विश्वास।
३०. सिद्धि-योग-फल मिलत, पर, कीन्ह अविद्या नास॥
कविः—झींकत रहे राउ, अस, बोली * बुरी - भांति-देखे, मुहँ-खोली।
केकईः—राउ! 'भरत, कह, पुत्र न होईं? * लाये, जीति, मोल, कह, मोहीं? ॥
लागि, बात, जो, बान हमारी! * काहे न, बोलत वचन, सँभारी!।
देहु उतर, कै, कहौ, कि, नाहीं * सत्य, विदित, तुम्हरा, कुल माहीं॥
देन कहा, तुम, अब, मत देहू * तजहु सत्य, जग अपजस लेहू।
सत्य सराहि, कहा, "वर दीन्हा" * समुझा, मांगहि, कहा, चबेना॥
'सिवि' 'दधीच', 'बलि' जो कछु भाषा * तन, धन, तजा, वचन, पर, राखा।
कवि—करुवे-वचन, कहत, कैकेई * मानहु, नोन, जरे-पर, देही॥
दोहाः—धर्म-धुरन्धर, धीर धरि, नैन उघारे, राउ।
३१. धुनि - सिर, गहिरी-सांस-लै, कुठौर, दीन्हा घाउ॥
आगे दीख, जरत-रिस-भारी * मनहु, क्रोध-तरवार, उघारी।
मूठ - कुबुद्धि, धार - निठुराई * सान-'मंथरा', गई बनाई॥
दीख, कठोर, भूप, तरवारा * सत्य, लेइ, कह प्रान निकारा!।

बोले, राउ, कठिन-करि-छाती * अति कोमल, केकई-सुहाती ॥
दसरथ:कहे बचन, कस, बुरी-भांति-से * भय, विस्वास, प्रीति, सब, नासे ।
'भरत', 'राम', मोरे, दुइ-आंखी * सत्य कहौं, करि 'संकर' साखी ॥
अबलि, दूत, मैं, पठवौं, प्राता * आवहिं, वेग, सुनत, दोउ भ्राता ।
सुदिन, सोधि, सब साज सजाई * देहुँ, 'भरत' कहँ, तिलक कराई ॥

दोहा:—राम, न लोभी, राज के, करत, भरत पर, प्रीति ।
३२. मैं, बड़-छोट, विचारि, जिय, करत रहेउँ, जस नीति ॥

कहौं, राम - सौगंद, मैं, खाई * राम-मात, कछु, कहा न, आई ।
मैं, सब कीन्ह, तोहि बिनु - पूँछे * तेहि ते, गये मनोरथ छूछे ॥
थूकहु रिस, अब मंगल साजू * कछु दिन गये, भरत, युवराजू ।
एकहि बात, मोहि दुख लागा * असमंजस, दूसर बर मांगा ! ॥
अबहूँ, हृदय, जरत तेहि आंचा * रिस, कै हँसी, कि, सचमुच, सांचा।
तजि-रिस, कहहु राम - अपराधू * रामचंद्र, जानत सब, साधू ॥
करत बड़ाई, तुमहु, सनेहू * अब सुनि, मोहिं, भयो संदेहू ।
जासु सुभाउ, शत्रु लागि, भावे * माता - आगे, मूड़ - उठावे ! ॥

दोहा:—तजहु हँसी, रिस थूकि के, मांगहु सोचि, विचारि !
३३. 'भरत'-राज, देखहु, जिअत, भर - नैनन, सुकुमारि ॥

जिये, मीन, रानी ! जल-हीना * मनि-बिन, सर्प जिये, दुख-दीना ! ।
कहौं सुभाउ, न छल, मन माहीं * जीवन-मोर, राम-बिनु, नाहीं ॥
चतुर-प्रिया ! समुझौ, कह कीन्हा * जीवन, राम-दरस-आधीना ।
कवि:-सुनि मिठ-बचन कुमति, अस जरई * जरत-अग्नि, घी-आहुति परही ॥
केकई:—कोट उपाय करौ, सुनु मेरी * चलइ न, बात, बनावट-केरी ।
देहु, कि, लेहु अजस, करि: 'नाहीं' * मोहिं, न, बहुत-प्रपंच, सुहाहीं ॥
राम, साधु, तुम, साधु, स्याने * राम-मात भलि, सब पहिचाने ।
जस, 'कौसिला', मोर-भल ताका * करहि याद, दिन-दिन, फलचाखा ॥

दोहाः—भोर होत, मुनि-वेष-धरि, जो, न, राम, बन जाहिं।
३४. मोर-मरन, अपजस, तुमहिं, नृप ! समुझहु, मन माहिं॥

कविः—असकहि,कुटिल,भईउठिठाढ़ी * मानो, नदी, क्रोध-की, बाढ़ी।
पाप- पहाड़ - ते - निकसी आई * भरा क्रोध-जल, दीख न जाई॥
कूबरी - बचनःभँवर, हठः, धारा * दोऊ बर : दुइ-(नदी-किनारा)।
भूप - वृत्त, जर-सहित, उखारत * दुख-सागर महँ, जाय के डारत॥
लखी नरेसु, बात, सब साँची * यह-बहाने, मृतु, सिर पर नाची।
दसरथः-गहि पद, विनय कीन्ह बैठारी * सूरज-कुल, क्यों बनत कुल्हारी॥
माँगहु साथ, अबहिं, देउँ, तोही * राम'विरह',जनि मारसि मोही।
राखौ 'राम', चाहो जेहि भाँती * नाहीं, जरै, जन्म-भरि, छाती ! ॥

कविः-दोहाः—देखा रोग - असाधि, नृप, गिरेउ भूमि, धुनि माथ।
३५. दीन-वचन, अस, कहत भे, "हाय, राम, रघुनाथ"॥

भये विकल, नृप, अँग-अँग-हारा * कल्प-वृत्त, जनु, हथिनि उखारा।
सूख कंठ, मुख, आवे न बानी * दुखी मीन, जैसे, बिनु-पानी॥
बोली, फिर, कठोर-कैकेई * मानहु, जहर, घाउ, भरि देई।
केकईः-अस करतब अंतहि,मन रहेऊ *'मांगु','मांगु',केहि-बलपर,कहेऊ?॥
नहीं, दोउ, इक - सँग, हुइ पावें * ठट्ठहु - मारें, गाल - फुलावें।
दानी होइ, दाम ना जाये * बीरहु होइ, कुसलहु चाहे॥
छाँड़हु वचन, कि, धीरज धरहू * नारिन-सम, रोदन, मत करहू।
तन,धन, पुत्र, नारि, घर, धरती * सत्य पुरुष-कहँ, तिनका-लगती॥

दसरथः-दोहाः—चुभत- वचन सुनि, राउ कह, कछु कहु, दोस न, तोर।
३६. लगेउ भूत, तो कहँ, मनहु, 'काल' कहावत, मोर॥

'भरत', राज नहिं, चाहत मोरे * होनहार, अस-मति बसि, तोरे।
खायो, समय, पाप-बस, पलटा * कुसमय ! भयउ,विधाता,उलटा॥
{ होइ-औ-होइ, राम - प्रभुताई ! * बसहि,सुहावन-'अवध', सुहाई।
करहिं,भाइ सब, मिलि सेवकाई * तीनि - लोक, छा राम - बड़ाई॥

पर, कलंक, तोरा, मन - भावा * मिटै न, मोर, मरे, पछितावा ।
लगै नीक,अब,जो,करु पापिन ! * करु मुँह,उघर,ओट-इन-आंखिन ॥
जब-लगि,जियौं,विनय हैं,तो सन* खवरदार ! कछु, कहेउ न मोसन ।
आखिर, पछितैहहि हत्यारी ! * चाहत 'बाज', गऊ का मारी ॥
कविः—दोहाः—गिरे राउ, कहि कोट-विधि, "कुल नासत, नादान" !
३७. कपट-चतुर, चुप साधि, जनु, रही जगाय मसान ॥
लगी-राम-रट, बिकल भुआलू * पक्षी, पंख-कटे, बेहालू ।
हृदय, मनावत, 'भोर न होई' * 'कहहि न जाय, राम ते, कोई' ॥
दसरथः-रघुकुल-गुरू,सूर्य!मतनिकसहु* अवध देखि, दुख हुइ है, वकसहु ।
कविः-भूप - प्रीति, केकइ - कठिनाई * वृक्षा, वल-भरि, रची बनाई ॥
करत विलाप, अस, भयो सवेरा * मचेउ सोर, घन - बाजन-केरा ।
भाट पढ़त गुन, गायक गाना * सुनत भूप, लागत, जस, वाना ॥
मंगल, नृपहिं, सुहाहिं न कैसे * सँभोगी - त्रिय, भूषन जैसे ।
तेहि निस, नींद परी नहिं काऊ * राम - दरस - लालसा, उछाहू ॥
दोहाः—मंत्री, सेवक, द्वार, जुरि, उदय, सूर्य कहँ, देखि ।
३८. कहत : "न जागे अवधपति, कारन, कौन, विसेप ॥"
लोगः—भूप,रहत,नित प्रातहि, जागे * जगे न अब लागि, अचरज लागे ।
जाहु 'सुमंत्र', ! जगावहु, जाई * करहिं काज, सव, आज्ञा पाई ॥
कविः-गे 'सुमंत्र', तव, राउर पाहीं * द्रश्य भियानक, जात, डराहीं ।
दौड़त काटन, दीख न जाई * विपति-बसेरा, अति दुखदाई ॥
पूँछत, कोउ न उत्तर देई * गे, जहँ, रहे भूप, कैकेई ।
कहिः'जय हो', बैठा, सिर नाई * देखि भूप-गति, गयो सुखाई ॥
विकल, उदास, राउ, अस डारे * मलिन-कमल,जर-सहित,उखारे ।
डरपेउ मंत्री, सका न पूँछी * बोली असुभ-भरी, सुभ-छूँछी ॥
केकईः-दोहाः —सोये नृप नहिं, रात - भरि, विधि जानै, कह बात ।
३९. कियो, राम - रटि, भोर, सुख, कहा न, कारन, तात ॥

लावहु रामहिं, बेग, बुलाई * समाचार, फिरि, पूँछेउ आई ।
कविः-चले 'सुमंत्र', भूप-रुख-जानी * करि कुचाल, जाना, कछु रानी ॥
सोच-विकल, मग, परइ न पाऊ * राम-बुलाय, कहइ कह राऊ ! ।
धरि उर धीरज, गये दुआरे * पूँछहिं सकल, देखि, मन मारे ॥
समाधान करि सो, सबही का * गयो जहाँ सूरज - कुल-टीका ।
'राम','सुमंत्रहिं', आवत देखा * आदर कीन्ह, पिता-सम-लेखा ॥
राउर - आज्ञा, राम सुनाई * रघुकुल-दीपक, चलेउ लिवाई ।
अट-पट-भांति, जात जब. देखा * लोगन के मन, सोच-विसेषा ॥

दोहाः—जाय, दीख रघुवंस-मनि, बिगरा भूपति-साज ।
४०. मानहु, देखे सिंहनी, गिरा वृद्ध गजराज ॥

सूखत ओंठ, अंग सब पजरत * दुखी,सर्प,जस, मनि-के-बिछुरत ।
क्रोधित, तीर, दीख कैकेई * ठाढ़ी मृत्यु,जनु,घरी गिनि रहई ॥
अति दयालु,और कोमल रामा * पहिला-दुख,दुख,सुना न काना ।
तहूं, धीर धरि, समय बिचारी * पूँछा, मधुर-बचन, महतारी ॥
रामःमाता ! कहौ,भूप-दुख-कारन ? * यतन करहुं,झट, दुःख निवारन ।
कैकेई { सुनहु, राम बस,बात तौ,एती * भूपहिं, तुम पर बहुतहि प्रीती ॥
{ कहा देन, मोहिं, दुइ बरदाना * मांगा, जो कछु, मोहिं सुहाना ।
सो सुनि, भूप, भयो उर सोचू * छांड़ि न सकत तुम्हार-सँकोचू ॥

दोहाः—तुम-सनेह, इत, उत, वचन, संकट परा, नरेसु ।
४१. सकहु तौ, आज्ञा, सिर धरहु, काटहु कठिन कलेसु ॥

कविःकहत,निडर,अस वचन बनाये * सुनि कठोरताहू अकुलाये ।
{ जीभ -कमान, बचन करि बाना * कोमल भूपति, बने निसाना ॥
{ जनु, कठोरपन, धरे - सरीरा * सीखत धनु - विद्या, बल-बीरा ।
बात, खुलासा, राम, सुनाई * बैठि, धरे - तन, जनु, निठुराई ॥
मन मुसुका, कुल - भूषन, रामा * जो, सहजहि, आनंद-के-धामा ।
दोस - रहित, कह बचन, सुहाये * सरस्वती, भूषन पहिराये ॥

राम:सुनु जननी ! सोइ सुत बड़-भागी * जो, पितु-मात-बचन-अनुरागी ।
मात, पितहिं, सन्तुष्टन - हारा * मुसिकिल, पूत, नहीं संसारा ॥
दोहाः—संत मिलन, बन महँ,बहुत, सबहिं-भांति, हित - मोर ।
४२. तेहिं पर, आज्ञा, बाप-की, सब पर, स्वाद है तोर ॥
'भरत', प्रान-प्रिय, पावहिं राजू * सीधा भयो, विधाता, आजू ।
ऐसेहु काज न, जो, बन जाऊँ * अति-मूरख मूरखन, कहाऊं ॥
पूजै अरण्ड, कल्प - तरु त्यागै * छांडै अमरित, औ विष मांगै ।
सोउ, अस-अवसर, हाथ, न देई * समुझहु, तौ, माता कैकेई ॥
एकहि दुख, मोहिं, मात ! विसेषी * अति-व्याकुल राजा कहँ देखी ।
थोरी बात, पितहि दुख भारी * नहिं बिस्वास,मोहि महतारी !॥
भूपति, धीर, और, गुन-सागर * भा अपराध, मोते,कछु आगर ।
ताते, मोहि, कहत नहिं, राऊ * तोहि, सौगंद, कहौ, सतभाऊ !॥
कबिः—दोहाः—सीध, सांच, प्रभु-के-बचन, तिनहिं कुटिल ही जानि ।
४३. जोंक, चाल टेढ़ी चलै, हो जल एक-समान ॥
हर्षी रानि, राम - रुख - पाई * बोली कपट - सनेह जनाई ।
केकईः—भरत-राम-सौगंद, मैं खाई * दूसर कारन, समुझि न आई ॥
तुम, अपराध-योग, नहिं,ताता ! * मात - पिता - बंधू - सुख-दाता ।
सत्य बात, सब, कही तुम्हारी * मात, पिता, तुम आज्ञाकारी ॥
जाय, कहौ समुझावा, सोई * चौथेपन, अपजस ना होई ।
जौन सुकृत, तुम-से-सुत दीन्हे * उचित न,तिनहिं निरादर कीन्हे॥
कविः-कुमुख-वचन, लागत सुभ कैसे * मगध-देस, 'गया'-तीरथ, जैसे ।
रामहिं, मातु - बचन, सब भाये * जल-मैला, मिलि-'गंग', सुहाये ॥
दोहाः—गइ, मुरछा,रामहिं सुमिरि, राजा, करवट लीन्ह ।
४४. कह 'सुमंत्र',राम-आगमन, विनय, समय - सम,कीन्ह ॥
सुनत-कान, रामू - पग - धारे * धरि धीरज, नृप नयन उघारे ।
संभरि राउ, मंत्री बैठारे * गिरत चरन, नृप, राम निहारे ॥

विकल-सनेह, लीन्ह, उर-लाई * सर्प, गई-मनि, जनु, फिरि पाई।
रहे चितै, नृप, राजकुमारा * बहत नैन, आंसु-जल-धारा॥
सोक-बिवस, कछु कहा न जाई * बार-बार, रामहिं चिपिटाई।
'बिधिना', मन- मन भूप मनाहीं * 'करहु,राम, जेहि,बन,ना जाहीं'॥
सुमिरि 'महेसहिं', कहत निहोरी * सुनहु नाथ, बिनती अस मोरी।
राजाःचट - प्रसन्न, मन - मौजी दानी * हरहु दुःख, दुखिया, मोहिं जानी॥
दोहाः—तुम्हरे बस, सब के हृदय, अस - मति, रामहिं देहु।
४५. रहहिं राम, तजि पितु-वचन, औ तजि सील, सनेहु॥
{ अपजस देहु, चाहो, जस नासहु * डारहु नर्क, स्वर्ग, कै, राखहु !।
{ सहि न जायं,सो-दुख, देहु मोहीं * नैन-ओट, पर, राम, न होंहीं॥
सोचत मन, निकसत नाहिं बोला * पीपर - पात - तरह, मन डोला।
पितहिं, प्रेम-वस, रघुवर जानी * फिर कछु कहिहैं, माता रानी॥
समय, देस, अवसर अनुसारी * कहे वचन अस, नीति विचारी।
रामःबात कहौं, कछु करौं ढिठाई * अनुचित छमहु, जानि लरिकाई॥
छोट बात, भारी दुख पावा * पहिले, मोहिं, न, काहु, जनावा।
अबहीं पूँछा, कह भयो राती * सुनि सब बात, जुड़ानी छाती॥
दोहाः—मंगल-समय, सनेह-वस, तजहु सोच सब, तात !।
४६. कहउ जान बन, हर्षि-हिय, कहि, पुलके प्रभु-गात !!॥
धन्य भाग, जग मैं, हैं, वा के * पितु-आनंद, चरित, सुनि, जाके।
धर्महु, अर्थहु, मोक्षहु, कामा * तेहि बस,पिता-मातु,जेहि,प्राना॥
आज्ञा पालि, जन्म-फल पाई * आवहुं जल्दी, होहु, रजाई।
आवत, विदा, मात सन माँगी * जाऊँ,फिर,बन, तुम्ह-पद-लागी॥
कविः—असकहि,राम गवन,तब,कीन्हा * भूप, सोक-बस, उतरु न दीन्हा।
नगर, बात घूमी, अस तीछी * छुअत,चढ़त,जस,यकटक,बीछी॥
भे, सुनि विकल, सकल नरनारी * वेल वृक्ष, जस आगी, जारी।
जो,जहँ,सुनहि,धुनहि सिर,सोई * अति बिषाद, नहिं धीरज होई॥

दोहा:—सूखत मुख आंसू चलत, सोक न हृदय समाय।
४७. दुख - सैना, डंका - लिये, जनु, पुर, उतरी आय॥

बनी-बात, बीचहीं, बिगारी * देत, लोग, 'केकई' कहँ, गारी।
कह समुझा, पापिन, अस करेऊ * छाये-छप्पर, अगिनी धरेऊ॥
देखत, अपन-आँख, निकसाई * चीखत अमरितु, जहर-मिलाई।
कुटिल, कठोर, कुबुद्धि, अभागी * भइ, रघुबंस-बांस-बन, आगी॥
बैठि-डार, और, वृक्षहिं काटा * ठाठ, दुःख कर, सुख महँ, ठाटा।
रहे राम, तेहु, प्रान-समाना * कारन कौन, कुटिलपन ठाना! ॥
जानि जात नहिं नारि-सुभाऊ * थाह मिलै नहिं!, सदा छिपाऊ।
अपन-छाँउँ, पकरे, मिलि जाई! * जानि न जात, नारि-गति,भाई!॥

दोहा:—कहा न, अगिनी, जरि सकै, कहा न, सिंधु समाय!।
४८. तस, का नहिं, नारी करै, केहि, जग, काल न खाय !!॥

कह सुनाय, विधि, कहा सुनावा! * कह्न दिखाय, अब, कहा दिखावा!।
एक कहत, भल, भूप न, कीन्हा * करि विचार, बरदान न दीन्हा॥
जो, दुख-पात्र, भयो, बरदाना * नारि-अधीन, गयो गुन ज्ञाना।
जानत, चतुर, धर्म-मर्यादा * कहत "भूप,कछु दोस न जादा"॥
'सिवि' 'दधीचि' 'हरिचन्द्र'-कहानी * एक, एक-सन, कहत, बखानी।
एक, 'भरत' कर काम बतावे * सुनि, उदास, कोऊ, रहि जावे॥
मूंदि कान, और, जीभ-दवाये * कहत,कोउः "विस्वास न आये"।
"जायँ पुराय, अस-कहे, तुम्हारे * राम, भरत कहँ, प्रान-ते-प्यारे"॥

दोहा:—चुवै अग्नि, चहुँ, चन्द्र सों, हो अमरित विप-तूल।
४६. करैं न, राम-विरोध, कछु, भरत, सपन-महँ, भूलि॥

एक, विधातहिं, दोस लगावत *देत,तो,विष,और,अम्रित दिखावत।
खलबली, और सोच, सब काई * गा उत्साह, दाह, उर छाई॥
स्त्री, घर - और - बृह्मण - केरी * केकई - प्रिय, बैठि आ, घेरी।
लगीं सिखावन, सील - सराहे * बचन, बान-सम, लागत, ताहे॥

सखीः"भरत प्रिय नहिं राम-समाना" * तुम्हरा कहा, जगत सब जाना।
करत राम पर, सहज, सनेहू * केहि अपराध, आज, बन देहू ? ॥
कबहुँ सौत-कर-डाह, न कीन्हा * अटल-प्रीति, तुम्हरी, सब चीन्हा।
अब, कौसल्या, कहा बिगारा ? * वज्र-उठाय, 'अवध', दै मारा !॥

दोहाः—पिय-सँग, सिया, न छांड़िहैं, 'लपन', का, घर रहि जायँ!।
५०. भरत, राज, कब भोगिहैं, दसरथ, प्रान गवाँय !!॥

छाँड़हु क्रोध, समुझि अस, भामिन! * बनत, कलंक-सोक-अगवानिन।
हठ करि, देहु, 'भरत', युवराजू * पर, बन, भला ! राम, कह काजू?॥
नाहीं, राम, राज-के-भूखे * वीर, धर्म-के, भोग-के-रूखे।
वर छुड़वाय, गुरू-घर देहू * नृप सन, अस, दूसर वर लेहू॥
जो न माने, प्रिय ! वचन हमारे * लगहि हाथ, नाहिं कछु, तुम्हारे!।
जो कछु हँसी, कीन्ह, प्रिय ! होई * मुख ते कहौ, जनावहु सोई॥
राम-से-पुत्र, भला ! बन-योगू * कह कहिहैं, सुनि, तुम कहँ, लोगू।
उठहु, वेग, सोइ करहु उपाई * जेहि विधि, सोक, कलंक नसाई॥

छन्दः—जेहि भांति, सोक कलंक जाय, उपाय करि कुल पालहू।
हठ करहु, फेरहु, अपन दूसर वर, न, राम, निकासहू॥
जस, सूर्य, विनु-दिन, प्रान, विनु-तन, चन्द्र-विन, जस, रात्री।
अँधियार, तुलसीदास, प्रभु-विनु, 'अवध' छायो जात री॥

सो०:—सखिन, सिखावन दीन्ह, हितकारी, और, मधुर-अति।
५१. फल, तेहि, कछू न कीन्ह, कुटिल, पढ़ाई-कूबरी॥

बोलत नाहिं, अस देखत जरनी * जस, बाघिन-भूखी, कोउ, हरनी।
औषधि-लायक, रोग, न जाना * गईं, अभागिन्हि, देती-ताना॥
राज-करत, सुख-आपन खोई * कीन्हा अस, जस करहि न कोई।
यह-विधि, विलखहिं, पुर-नर-नारी * देत, रानि कहँ, लाखन गारी॥
चढ़ा विषम ज्वर, ऊँची सांसा! * कौन, राम-बिनु, जीवन-आसा!।
समुझि वियोग, प्रजा अकुलानी * ज्यों, जल-जीव, सुखाने-पानी॥

इत, विषाद-बस, लोग लुगाई * उत, माता ढिग, गे रघुराई।
अति-प्रसन्न-चित, चौगुन चाऊ * समुझत, बन, रोकत नहिं राऊ॥

दोहाः—राम केर मन, गज-नयो, राज-तिलक, जनजीर।
५२. समुझि, छूटि, वन जाउँ, अब, आनन्दित रघुवीर॥

रघुकुल-तिलक, जोरि दोउ हाथा * हर्षि, मात-पद, नायो माथा।
दीन्ह असीस, लाय उर लीन्हे * भूषन बसन, निछावर कीन्हे॥
बार, बार, मुख चूमत, माता * भरे, नयन, जल, पुलकित गाता।
राम, गोद-लै, हृदय लगावा * दूध, प्रेम-ते, टपकन लागा॥
प्रेमानन्द, न कछु, कहि जाई * निर्धन, जनु 'कुबेर'-पद पाई।
सादर, सुनदर मुखहिं निहारी * बोली, मधुर बचन, महतारी॥
कौशल्याः { कहो, तात! जननी, वलि जाई * कब है, तिलक-लग्न सुखदाई?।
पुण्य, सील, सुख-खानि सुहाई * जन्म-लाभ, जब, मिलिहै, माई॥

दोहाः—कब ऐहहि, सो सुभ-घरी, हेरत मग, दिन-रात।
५३. स्वांति नक्षत्र के बूँद कहँ, जस, पपिहा तरसात॥

तात! जाउं बलि, उठौ, नहाऊ * कछु मीठा, मन भावे, खाऊ।
पिता पास, तब, जायो भैया! * पूत, बेर भइ, बलि-बलि-मैया!॥
कविः—मात-बचन, रामहिं, बहु भाये * वचन, कि, प्रेम-के-फूल-सुहाये।
तिन फूलन मँह, सुख-रस पाई * मन-भँवरा, नहिं रहेउ लुभाई॥
सुमिरा धर्म, राम, अति-ज्ञानी * कहेउ, मात सन, अति मृदु बानी।
रामः-पितादीन्ह, मोहिं, वनकर, राजू * जहँ, सब भाँति, मोर, बड़-काजू॥
आज्ञा देहु, मोहिं हरषाई * हौं अनन्द - मंगल, वन - जाई।
मत डरपेउ, सनेह - वस - मोरे * बंन, आनन्द, अनुग्रह-तोरे!॥

दोहाः—रहि बन मा, चौदह-बरस, पिता - बचन कहँ पालि।
५४. माता! सोचु न, मैं, चरन, देखत, लौटे, हालि॥

कविः-कोमल, मीठ, बचन रघुबर के * मातहिं, बान लगे, और करके।
सहमि, सूखि, सुनि सीतल बानी * गिरा जवासा, वर्षा - पानी॥

कहि न जाय, उर भा, दुख ऐसा * सिंह-गरज - सुनि, हरनी, जैसा ।
थर-थर, कांपी, तन-सुधि बिछुरी * मांजा रोग सतायो मछुरी ॥
धरि धीरज, मुख-राम निहारी * गद-गद-बचन कहत, महतारी ॥
कौसल्याः-तात! पितहिं, तुम, प्रानन-प्यारे * हँसि, हँसि, देखे, चरित तुम्हारे ।
राज देन कहँ, सुभ - दिन साधा * अब, बन दीन्ह, कौन अपराधा ?
तात ! बतावहु तत्व, अभागी ! * केहि दीन्ही, सूरज-कुल, आगी ?
कविः—दोहाः—तब, मंत्री, रुख पाइ के, कारन कहा बुझाय ।
५५. रहि गइ, सुनि, चुप साधि के, दसा, कही ना जाय ॥
कौसल्याः-सकत न राखि, न कहिसक 'जाऊ' * दोऊ विधि, कठोर, उर, दाहू ।
लिखत चंद्रमा, लिखिगा राहू * विधि-गति, सदा, टेढ़, सब काहू ॥
धर्म, प्रेम, दोउन, मति, घेरी * भइ गति 'साँप - छछूँदरि-केरी' ।
सोचहुँ, घर राखहुँ, रघुराई * धर्म जाय, बंधू, छुटि जाई ॥
कहौं, जान बन, तौ, अति हानी * संकट-सोच बिवस, भइ रानी ।
कविः-नारि-धर्म, फिरि, समुझि, सयानी * राम, भरत, सुत, एक-से-जानी ॥
सरल - सुभाउ, राम - महतारी * बोली अस, धरि धीरज भारी ।
कौसल्याः-तात! जाउं बलि, कीन्हा नीका * पितु-आज्ञा, सब-धर्म-को-टीका ॥
दोहाः—राज-देन-कहि, दीन्ह बन, यह कर दुख ना, मोंहि ।
५६. भरत, प्रजा, महराज कहँ, अति कलेस बिनु तोहि ॥
जो, खाली, पितु-आज्ञा, ताता ! * बन न जाहु, जानहु बड़ि माता ।
कहा, मात-पितु, दोउ, बन जाना * तौ, यक-बन, सौ-अवध-समाना ! ॥
मात-पिता, बन-देवी-देवा * करिहैं खग, मृग, चरनन-सेवा ।
करत, बूढ़-राजा, बन-बासू * तुम, बालक, हिय, होत हिरासू ॥
बन बढ़-भागी, अवध, अभागी * रघुकुल-तिलक, दीन्ह जो त्यागी ।
जो, सुत! कहौं, संग, मोंहि, लेहू * तुम्हरे-हृदय, होय संदेहू ॥
पूत ! परम प्रिय, तुम, सबही के * प्रान, प्रान-के, जीवन, जी-के ।
सो तुम, कहत: 'मात बन जाऊँ' * और, मैं, सुनि, बैठे, पछिताऊं ॥

दोहाः—यह विचारि, नहिं करहुं हठ, झूँठ सनेह बढ़ाय।
५७. माता-पदवी अति बड़ी, सुधि, कहुं, बिसरि न जाय॥

तुम का देव, पितर, अस राखहिं * रहत-रहत, पलक, जस, आँखहिं।
चौदह बरस रहैं जल-हीना * दया-सिंधु, तुम, हम सब मीना॥
अस बिचारि सो करेउ उपाई * सबहि, जियत, जेहि, भेंटहु आई।
जाहु, तात! बन, मैं बलि जाऊँ * करि अनाथ, सब घर, बन, गाऊँ॥
सकल पुण्य-फल, आज, सिराना * गयो, भयंकर, उलटि जमाना।
कविः-बिलखि, मात, चरनन लपटानी * अपुनहिं, परम-अभागिन जानी॥
जरन, कठिन, जो, सही न जाई * ब्यापी उर, कथि को कहि पाई।
राम, उठायँ मात, उर लाई * मधुर-वचन, बोले समुझाई॥

दोहाः—समाचार, तेहि समय, सुनि, सिय, उठी अकुलाय।
५८. जाय, सासु पहँ, लागि पद, बैठि, चरन, सिर नाय॥

दीन्ह असीस, सास, मृदु-बानी * अति सुकुमारि, देखि अकुलानी।
करि-नीचा-मुख, सोचत सीता * रूप-रासि, पति-प्रेम-पुनीता॥
चलन चहत बन, प्रानन-नाथा * कौन पुण्य, जाऊँ, महुं, साथा!।
जैहौं संग, कि, पठउब प्राना * बिधि-करतब, कछु, जाय न जाना॥
बैठी, नखन, करोदत धरती * नूपर बजत मधुर, अस, फबती।
मनहु, प्रेम-बस बिनती करहीं * सिय-पद, हमकहँ, कबहुँ न तजहीं॥
सुनदर नैन, गिरत, जल-धारा * राम-मात, अस कहा, विचारा।
कौसल्याः-तात! सुनहु, सिय, अतिसुकुमारी! * ससुर, सास, सबकुलकीप्यारी॥

दोहाः—राजन्ह-राजा, जेहि पिता, ससुर, सूर्य-कुल-भानु।
५९. कुल-कुमोदिनी-चन्द्र, तुम, पति, गुन-रूप-निधानु॥

फिर, मैं, पुत्र-वधू प्रिय पाई * रूपवती, गुन, सील, सुहाई।
प्रीति, नयन-पुतरी-समान, की * राखी, प्रान-लगाय, जानकी॥
कल्प-बेल सिय, मैं, बनि माली * दै सनेह-जल, बहु-विधि, पाली।
फूलत, फलत, कि, रूठ विधाता * अंत, होय कह, जानि न जाता॥

झूला, गोद, पीढ़ी, चरपाई * उतरि, कठिन-धरती, नहिं, आई।
'संजीवन'-सम, राखत रहेऊं * दीप-वाती, नहिं, टारन कहेऊं॥
सोइ सिय, जान चहत, बन, साथा * कहा कहत, बोलहु, रघुनाथा ?।
चंद्र-किरन-रस, चाखन-हारी * कस, रबि-सन्मुख, नयन उघारी!॥

दोहाः—सिंह, हाथी, राक्षस, फिरत, बन महँ, जीव अनेक !
६०. जड़ीः 'सजीवन', जानकी, बिष-के-बाग-की-टेक !!

कोल, भील-कन्या, बन-जोगू * जानत नहिं, कछु सुख, कह भोगू।
जो, सुभाउ ते, पाथर-कीड़ा * जिनहिं, रहे बन, कछू न पीढ़ा॥
कै, से तपसिन, हैं बन-जोगू * जिन, तप-हेतु, तजा सब भोगू।
रहहिं सिया, सो, बन, केहि भांती * कागद-पर-कपि-लिखे, डराती॥
कमलन के बन बिचरन - हारी * कांटिन - जोग न, हंस-कुमारी।
अस बिचारि, जस आज्ञा होई * मैं, सिख देहुँ, जानकी, सोई॥
रहहिं, सिया, घर, सोचि बिचारा * पूत ! मोहिं, हुइ जाय सहारा।
कविः-सुनि रघुवीर, मात - प्रिय-बानी * अमरित, सील, सनेह की सानी॥

दोहाः—ज्ञान भरे, प्रिय - वचन कहि, कीन्ह मात - परितोष।
६१. लगे पढ़ावन जानकी, कहि बन के गुन - दोस॥

सनमुख-मात, कहत सकुचाई ! * आपत - काल, लीन्ह कहवाई।
रामः-सिक्षा, अस, सुनु, राजकुमारी ! * मन, कछु-और न समुझेउ, प्यारी॥
आपन, मोर, नीक, जो चहऊ * बचन हमार, मानि, घर रहऊ।
आज्ञा मोर, सासु - सेवकाई * प्रिय! सब-विधि, घर-रहे, भलाई॥
सासु, ससुर - पद की करु पूजा * यह ते अधिक, धर्म-नहिं, दूजा।
जब, जब, प्रिय! करहिं सुधि मोरी * प्रेम-बिकल - हुइ, माता मोरी॥
तब, तब, तुम, कहि कथा पुरानी * समुझायो, सुन्दरि ! मृदु-बानी।
तुम - सौगंद, न कारन, आनी * मातु - हेतु, घर - राखत, रानी॥

दोहाः—कहे-वेद - गुरु, धर्म-फल, घर - बैठे, मिलि जायं।
६२. हठ - कीन्हे, संकट परहिं, अस, जो, सहे न जायं॥

पितु - आज्ञा, मैं, पूरि, सयानी ! ❋ आवत, हालहि, लौटे, रानी ! ।
बीतत दिन, कछु देर न होई ❋समुझहु,मन प्रिय!सिखवहुँतोहीं॥
परे - प्रेम - बस, जो हठ करहू ❋ होय घोर दुख,अस,चित धरहू ।
बन,अति कठिन, भयानक भारी ❋ सीत, घाम,अति वर्षा, व्यारी ॥
कांटे, और कँकर, मग माहीं ❋ नँगे - पाउं - चले, छिद जाहीं ।
इन कोमल - पद, चला न जाई ❋ ऊँच - पहारन, कठिन चढ़ाई ॥
खोह, गुफा, नद्दी और, नारे ❋ गहिरे, अगम, न जात निहारे ।
चीता, रीछ, भिढ़ा, बन, लागत ❋ 'सेर'-गरज-सुनि,धीरज भाजत॥

दोहाः—सोवन कहँ, धरती मिलै, पहिरन, वक्कल - छाल ।
६३. बन-फल, यक-भोजन, मिलत, सोउ, आज, कहुँ, काल ॥

मारि खाहिं, राक्षस, बन फिरहीं ❋ तरह-तरह, छल - बाना धरहीं ।
पी, पी, लगत पहारन - पानी ❋ वन-दुख बहुत, न जात बखानी ॥
सांप, भयंकर, पक्षी घोरा ❋निसिचर,मिलत,नारि-नर-चोरा ।
बन - सुमिरत, धीरहु मुरझाई ❋ तुम कोमल, डरपत-परिछाईं ! ॥
हंस-गमनि ! तुम नहिं बन-जोगू ❋ सुनि अपजस, मोहिं दीहैं लोगू ।
मान-सरोवर - अमरित - जल-पी ❋ सकत हंसिनी, जल-समुद्र, जी ॥
आंब - बगीचन, बिचरन - हारी ❋ वन-करील, कोयल नहिं प्यारी! ।
रहउ, घरहि, अस हृदय विचारी ❋ चंद्र-मुखी ! बन महँ, दुख भारी ॥

दोहाः— सुभ-चिन्तक-गुरु, स्वामि-सिख, सुनत, न ले, जो मानि ।
६४. मन - अघाय, पछितात, सो, जग, उठाय नुकसान ॥

कविः—सुनि मिठ-वचन,मनोहर,पियके ❋ सुंदर नैन, भरे जल, सिय के ।
सुनि सीतल सिख,सियअस जरई ❋ चांदिन-रात,शरद, जस चकई ॥
चुप, व्याकुल, सोचत वैदेही ❋तजन चहत,'मोहि,स्वामि सनेही'।
ज्यों, त्यों, रोकि, नैन-जल साधा ❋ पृथ्वी - कन्या, धीरज बांधा ॥
सीताःचरन-सासु गहि,कह,कर जोरी ❋ देवी ! छमहु, ढिठाई मोरी ।
दीन्ह,प्रान-पति,मोहिं सिख सोई ❋ जेहि-विधि,मोर,परम-हित होई॥

पर मैं, समुझि दीख, मन माहीं * पिय-वियोग-सम,दुख,जग,नाहीं।

दोहाः—दया-के - सागर, प्रान - पति, चतुर, सुखन -की खानि।

६५. रघुकुल - चंदा, तुम - बिना, स्वर्गहु, नरक - समान॥

मात, पिता, भगिनी और, भाई * मित्र, कुटुंभी, प्रिय सुखदाई।
सास, ससुर, हित-चाहन - हारा * गुरू, सपूत, प्रान ते प्यारा॥
जहं लगि, नाथ ! नेह, और नाते * पिय-बिन, लगत, सूर्य-ते, ताते।
तन, धन, ठौर, गाउं, और राजू * बिना-पती सब, सोक-समाजू॥
संसारी - सुख, रोग - समाना * भूषन, बोझ, जगत, जम-थाना।
प्रान-नाथ ! तुम-बिनु, जग मांहीं * सुख-देवन-हारा, कछु, नाहीं !॥
बिना-जीव, तन, जल-बिन, नदी * पती - बिना, तस, नारी रही।
नाथ ! सबहि सुख, साथ-तुम्हारे * विमल-चंद्र-मुख,स्याम,निहारे॥

दोहाः—जीव, कुटुंभी, बन, अवध, वक्कल, रेशम - थान।

६६. तुम-संग, पातिन-की-कुटी, मोंहिं, वैकुंठ - समान॥

बन - देवी, बन - देव, हमारे * सास-ससुर-से, चाहन - हारे !।
नरम-पात, और, घास - बिछाई * तोसक, मानहु, 'काम' - बनाई॥
चुइ हैं अमरित, बन के फल ते * परवत, लगिहैं, राज-महल-से।
छिन.छिन प्रभु-पद-कमल निहारी * रहिहौं,जस, दिन,चकइ,सुखारी॥
बन - दुख, नाथ ! कहे बहुतेरे * भय, कलेस, और, दुःख, घनेरे।
पति-वियोग, यक,और,दुखनाना * कहँ धरती, प्रभु ! कहँ असमाना॥
परौं पाउं, अस जाने, नाथा ! * तजहु न, चलत लेहु,मोंहिं,साथा।
बिनती, बहुत करहुँ का स्वामी ! * तुम दयालु, और अंतरजामी॥

दोहाः—रहैं बने समुझौ, तजहु, बरस - चार - दस, प्रान।

६७. दीनबंधु ! सुनदर, सहज, सील - सनेह - निधान॥

चलत राह, जैहौं का हारी * चरन-कमल, घरी-घरी, निहारी।
सबहि-भाँति, पिय ! सेवा करिहौं * राह-चलन - पीढ़ा, सब हरिहौं॥
चरन पखारि, वृक्ष - की - छाईं * करहुँ पवन, बैठारि, गोसाईं।

श्याम, कमल-मुख, बूँद-पसीना * देखे प्रभु कहँ, मरनहु जीना ॥
घास बिछाय, बराबर-धरती * पाउँ दबाय, रहौं श्रम हरती ।
देखे छबि-मुख-कमल, प्रभू के * सीतल हृदय, मरौं नहिं, लू ते ॥
तुम-सँग, सिंहनि-चितवन-हारा * करहि कहा, खरगोस. सियारा ।
तुम, बन-योग, सिया, सुकुमारी! * पति, तप-करै, मजा-करै, नारी! ॥

दोहाः—सुनि, न, बचन कठोर अस, फाटि हृदय, भगवान ! ।
६८. पति-वियोग-दुख, सहनि-हित, अवसि नीच, रहें प्रान ॥

कविः कहतहि, सिया, विकल भइ भारी * बचन-वियोग, न सकी सँभारी ।
देखि दसा, रघुवर, जिय, जाना * जो, हठ करौं, न राखहि प्राना ॥
रामः—कहा, दयालु, रघुकुल-नाथा * छांड़हु सोच, चलहु बन, साथा ।
आज, दुःख-अवसर, नहिं, प्यारी! * करहु, वेग, बन-की-तैयारी ॥
कविः-कहिप्रिय-वचन सियहि समुझाई * गिरि पद, भल असीस, प्रभु पाई ।
कौसल्याः—वेग, प्रजा-दुख, मेटेउ, आई * निठुर-मात, जानि भूलेउ, जाई ॥
दसा फिरहि, बिधिना! कब मोरी * देखौं, नयन, मनोहर-जोरी! ।
शुभ-दिन, घरी, तात! कब पैहै * जिअत, मातु, मुख-दरसन पैहै ॥

दोहाः—कहि बछरा, और, लाल कहि, कहि रघुपति, रघुवीर ।
६९. टेरि, लगाऊँ छाति, कब, हर्षित, निरखि शरीर ॥

कविः—लखि, सनेह-डूबी महतारी * बोल न सकत, विकल अति भारी ।
समुझायो रघुबर, विधि नाना * समय-सनेह, न जात बखाना ॥
सीताः-सीता कहा, सासु-पद लागी * सुनहु, मात ! मैं परम अभागी ।
सेवा - समय, दैव, बन दीन्हा * मोर-मनोरथ, सुफल न कीन्हा ॥
तजहु सोच, पर, प्रेम न छांडेउ * करम कठिन, कछु दोष न मानेउ ।
कविः-सुनिसिय-बचन, सासु अकुलानी * उमा ! दसा नहिं जात बखानी ॥
बारंबार, लाय उर लीन्ही * बहू पढ़ाय, असीस-अस दीन्ही ।
कौसल्याः-होयअचल, अहिबात तुम्हारा ! जबलागि, 'गंग' 'जमुन', जलधारा ॥

कविः—दोहाः—सीतहिं, सासु, असीस, सिख, दीन्ही, बहुत - प्रकार ।
७०. चली. नाय सिर, सासु - पद, हित-सों, बारंबार ॥
समाचार, जब, 'लछिमन' पाये * विकल, उदास, दौरि-के, आये ।
काँपत, तन-पुलकित, जल, नैना * प्रेम - अधीर, गहे प्रभु-चरना ॥
चितवत ठाढ़, न निकसत बानी * मछरी, दीन, छुटे जस पानी ।
लषनः-सोचत, कह, धौं, होवन-हारा ! सब सुख पुण्य सिरान हमारा ॥
जानैं, कहा कहहिं रघुनाथा * देखहु, घर राखैं, लें, साथा ।
कविः-दीख, नाथ, भाई - कर-जोरे * देह - और - घर - नाता तोरे ॥
बोले राम, नीति के आगर * सील, सनेह और-सुख-सागर ।
रामः-तात! दुखी ना होहु प्रेम बस * होय, अंत, आनंद, समुझि अस ॥
दोहाः—मातु, पिता, गुरु, स्वामि की, आज्ञा, जिन्ह, मन भाय ।
७१. जनम, सुफल करि लीन्ह, सो, टारत, जनम नसाय ॥
अस, जिय, जानि, सुनहु सिख भाई! * करहु मात-पितु,-पद-सेवकाई! ।
'रिपुसूदन,' 'भरतहु,' घर, नाहीं * बूढ़-पितहिं, यह दुखः हम जाहीं ॥
जो, बन जाउँ, तुमहिं लै साथा * होय 'अवध,' सब-तरह, अनाथा ।
गुरु, पितु, मातु, प्रजा परिवारा * भाई ! सबहि, होय दुख, भारा ॥
धीरज, सबहि, बंधावत रहेऊ * बहुत हानि, जो, तुम बन गयेऊ ।
राज-करत, और, प्रजा दुखारी * नहिं, राजा, नर्कहु-अधिकारी ॥
रहौ, तात ! अस नीति विचारी * सुनत, 'लषन', ब्याकुल भे भारी ।
कविः-सीतल सिख, सुनि, सूखे कैसे * कमल-फूल, पाला परि, जैसे ॥
लषनः-दोहाः—बोल न निकसत, प्रेम-बस, गहे चरन, अकुलाय ।
७२. प्रभु ! स्वामी तुम, दास मैं, तजहु, तौ, कहा बसाय ॥
नीक-सिखावन, दीन्ह गोसाईं ! * लागत अगम, अबहिं, लरिकाईं ।
धरम-भार धरि, धीर उठावत * सास्त्र नीति, तिन्ह कहँ बतलावत ॥
मैं बालक, तुम्ह-प्रेम-का-पाला * उठै हंस ते, भला ! 'हिमाला' ।
गुरु, पितु मातु, न जानौं काहू * अपन सुभाउ कहौं. पतियावहु ॥

जहँ लगि, जग मैं, नेह, सगाई * प्रेम - रचित, विस्वास - बनाई।
एक तुमहिं सब कुछ हौ, स्वामी * दीन-मित्र, और, अंतर-जामी ॥
नीति, धर्म, प्रभु! सिखवहु, ताही * जो चाहे, सुभ - कर्म भलाई।
तन-मन - ते, जो, चरनन-लागा * छाँड़न-लायक, कहा अभागा ! ॥

कविः—दोहाः— विनय - वचन, सुनि, लषन-के, कृपासिंधु, उर लाय।
७३. डरत, न छाँड़हिं, प्रेम - वस, अस बोले, समुझाय ॥

रामः - अच्छा! पूँछहु, माता, जाई * लौटहु बेग, चलहु बन, भाई !
कविः-भे प्रसन्न, सुनि, रघुवर-बानी * सब-सब-लाभ ! गई सब हानी ॥
हर्षित - हृदय, मात पहँ, आये * मानहु, आंधरि, लोचन पाये।
मात - चरन, आ, नायो माथा * छांड़े मन, रघुवर-सिय-साथा ॥
मन - उदास, पूँछा, तेहि, माई * कही लषन, सब कथा, सुनाई।
सहमी अस, सुनि, बचन कठोरा * लगे आग, हरनी, चहुँ-ओरा ॥
बिगरा काम, 'लषन', तव, जाना * प्रेम-के-वस, कहुँ, करहि बहाना।
माँगत विदा, डरत, सकुचाहीं * सोचत कारि दे, 'हाँ', कै 'नाहीं'॥

दोहाः — सील-सुभाउ-के-रूप, दोउ, राम-सिय - कहँ जानि।
७४. पितु-प्यारे-अति, धुनत सिर, "हा पापिन, कस हानि" ॥

धीरज धरेउ, समय पहिचानी * सुंदर - हृदय, कही मिठु-बानी।
सुमित्राः-तात! तुम्हारि मात बैदेही * पिता राम, सब-भांति-सनेही ॥
तहीं, 'अवध', जहँ, राम निवासू * तहीं, दिवस, जहँ, सूर्य-प्रकासू।
जो सिय-राम, तात ! बन जाहीं *'अवध', तुम्हार-काज, कछु नाहीं! ॥
गुरु, पितु, मात, बंधु, सुर साईं * सेवइ, तात ! प्रान-की-नाईं।
राम, प्रान-प्रिय, जीवन-जी-के ! * मतलब-बिना, सखा, सबही-के! ॥
प्यारे, बड़े, अपन-सिर-माथे * चाहौं, सब-कहँ, राम-के-नाते।
लेहु, जाय, बन सँग-रघुनाथा * जग मैं, जनमे-कर-फल, ताता! ॥

दोहाः—मोरे, तोरे, भाग बढ़, पूत ! बलैयां लेत।
७५. जो, तुम, अस, छल-छांड़ि-के, राम-चरन, सिर देत ॥

पुत्रवती, स्त्री, जग सोई * रघुबर-भक्त, जासु-सुत होई।
नहिं तौ, बांझ रहै, सो नीका * 'हानी' जने-कलंक-का-टीका ॥
तुम्हरेहि-भाग, राम, बन जाहीं * दूसर-हेत, तात! कछु नाहीं।
सकल-पुण्य-कर-फल है एही * हो, सुभाउ-ते, राम-सनेही! ॥
प्रेम, क्रोध, मद, मोह, बासना * सपनेहु, जायो, इन-के-पास, ना!।
सब बिकार ते, चित्त हटाई * कीन्हेउ राम-चरन सेवकाई ॥
तुम कहँ, बन महँ, सबहि सुभीता * पिताःराम, सँग, माताःसीता।
जेहि न, राम, बन, सहैं कलेसू * करेउ, तात! सोइ, यहि उपदेसू ॥

छंदः—हे पुत्र! तुम्हरे - हाथ - ते, सिय - राम, अस, सुख पावहीं।
पितु, मातु, प्रिय, परिवार, पुर की, सब की - याद बिसारहीं ॥
समुझाय अस, कह, जाहु बन, तुलसी, असीसत अस भई।
सिय - राम - पद महँ, प्रीति तुम्हरी, होय सांची, नित-नई ॥

कविः—सो०:—मात - चरन, सिर नाय, चले तुरत, डरपत - जिय।
७६. रस्सी, मनहु, तुराइ, छुटि, भाजत मृग, भाग - सन ॥

गये लषन, जहँ रहे रघुराई * सुखी, राम, प्रिय - संगी - पाई।
करि प्रणाम, सिय - राम, सुहाये * दुइ सँग, दसरथ-मन्दिर, आये ॥
कहत एक सन, यक, नर - नारी * बनी-बात, बिधि, दीन्ह बिगारी।
मुख-उदास, तन-दुर्बल, मन-दुख * गयो, सहृद-सँग, माखी-करसुख ॥
कर मींजहिं, सिर-धुनि, पछिताहीं * गये - पंख, पच्छी अकुलाहीं।
जुरी भीर, भारी, दरबारा * कहेउ जात नहिं, दुःख, अपारा ॥
मंत्री, भूप - उठाय - बैठारे * "आये राम", अस बचन उचारे।
दोउ पूत, सिय - सहित, निहारे * ब्याकुल दसरथ, दुख-के-मारे ॥

दोहाः—राम, लषन, सिय-सहित, दोउ, देखि, देखि, अकुलाय।
७७. बारंबार, सनेह - बस, भूप, लिये, उर - लाय ॥

बिकल भूप, निकसत नाहिं बोला * जी महँ सोक, जरत, जनु, चोला।
भरे प्रेम, चरनन, सिर-नाई * बिदा मांगि, तब, उठि रघुराई ॥

रामःपितु ! असीस,आज्ञा,दोउ,दीजै * सुख-के-समय, दुःख, ना कीजै ! ।
जनि घबराहु,प्रेम-बस, स्वामी ! * जस हू जाय, होइ बदनामी ! ॥
कविःउठे भूप,करि करि अति प्यारा * पकरि बांह, रामहिं बैठारा ।
दसरथःकहत,मुनी,अस; नर-के-जामा * जग-भरि-के-मालिक हैं रामा ॥
सुभ, और असुभ,कर्म,जस होई * तस,समुझे, बिधि, फल दे, सोई ।
करम-को करता-ही, फल पावे * कहत लोग, और, सास्त्र बतावे ॥
दोहाः—एक करै अपराध, और, दूसर, तेहि-फल-पाय ।
७८. अति-बिचित्र, भगवान-गति, केहि सन, जानी जाय !!
कविःमानि, रहहिं, घर-ही,रघुराई * छल-तजि, कीन्हे बहुत उपाई ।
राउ, राम-ना-राजी जाने * चतुर, धरमधारी, पहिचाने ॥
उठि,झट,लाय सियहि उर लीन्ही * हितकारी, बहु सिक्षा दीन्ही ।
बन-के-दुख सब कहे, सुनाये * सासु-ससुर-पितु-सुख समुझाये ॥
चरन-कमल-की - चाहन - हारी * लागा घर, बन, बन, सुखकारी ।
औरहु-लोग, सियहि, समुझावा *बनमहँ बिपति,औ, दुःख,दिखावा॥
नारीःमंत्री-नारी, और, गुरु-नारी * चतुर, प्रेम-सों, कहा, बिचारी ।
तुम कहँ, तौ, न दीन्ह बनवासू * करहु,कहत जो ससुर,औ,सासू ॥
दोहाः—सीतल, हित - की मीठ, सिख, 'सीता', धरी न कान ।
७९. सरद-चांदनी, देखि सिख, 'सिय' - चकई अकुलानि ॥
सोच-बिबस, 'सिय, उतर न देई * उठी, लाल - हुइ, तब, 'कैकेई' ।
मुनियन - गहने - कपड़ा- बासन * धरि, आगे,लागी अस भाषन ॥
कैकईः—चाहत तुमहिं, प्रान - की-नाई * तातें नृप, असमंजस - माई ।
नसै पुण्य, जस, और परलोका * कहिहैं जान, न, मुख-ते, तोका ॥
अस बिचारि,सोइकरहु जो भावा * राम, मात-सिख-सुनि,सुखपावा ।
कविः-भूपहिं, बचन, बान-सम, लागे * कहत, 'न निकसत,प्रानअभागे' ॥
बिकल लोग, मुर्छित-भये - राऊ * करहिं कहा,कछु सूझि, न काऊ ।
राम, तुरत, मुनि - वेष - बनाई * चले, पिता - माता, सिर नाई ॥

दोहाः—बन-कर, सब सामान, करि, 'सीता' 'लषन' समेत।
८०. बाह्मन, औ विप्रन, नाइ सिर, चले, करि सबहिं अचेत॥

गुरु 'वसिष्ठ' के द्वारे आये * विरह-आग्नि, सब दीख जराये।
कहि-प्रिय-बचन राम, समुझाये * फिर, पुर-के-बृह्मण, बुलवाये॥
वर्षा-भोजन, सबहिं, दिवाये * आदर, बिन्ती, सुनि, हर्षाये।
फिर, प्रभु, दास-दासि, बुलवाये * गुरु कहँ, हाथ-जोरि, सौंपाये।
रामः—देख-भाल, इन सब की, साईं * कीन्हेउ, पिता-मात की नाईं!
जोरि हाथ-दोउ, बारंबारा * मिठ-बानी, अस बचन, उचारा।
सो, सब-भाँति, मोर-हितकारी! * जेहि ते, हौं महराज सुखारी॥

दोहाः—सब माता, मेरे विरह, होहिं न जेहि दुख-दीन।
८१. सोइ-उपाइ, तुम, सब, करेउ, चतुर-सजन! हुइ लीन॥

कविः—यह-विधि, राम सबहिं समुझावा * हर्षि, गुरू-चरनन, सिर नावा।
'गौरी', 'गनपति', 'सिवहिं' मनाई * चले, असीस-पाय, रघुराई॥
चलत-राम, भा दुख, अति-भारी * परी, नगर-महँ, हाहाकारी।
'रावण' असगुन, 'अवध', मांसोकू * हर्ष, विषाद, दोउ, सुर-लोकू॥
गई मूर्छा, भूपति जागे * टेरि 'सुमंत', कहन अस लागे।
दशरथः—जात-राम-बन, प्रान न जाहीं * रहत, कौन सुख कहँ, तन माहीं॥
कौन व्यथा, यह ते बलवाना! * जो,-दुख-पाइ-के, निकसहिं प्राना।
कविः—फिर, धरि-धीरज, बोले राऊ * लै रथ, संग, सखा! तुम, जाहू॥

दशरथः—दोहाः—'राम', 'लषन', सुकुमार दोउ, 'जानकी' अति सुकुमारि।
८२. रथ-चढ़ाय, दिखराइ-बन, लौटेहु, गये-दिन-चारि॥

जो न फिरहिं, फेरे, दोउ-भाई * सत-धारी, नेमी, रघुराई।
तौ, तुम कहेउ, राम, कर-जोरी * लौटावहिं, मिथिलेस-किसोरी॥
जब, सिय, बन कहँ देखि, डराई * कहेउ मोर-सिख, याद-दिवाई।
सासु, ससुर, अस कहा सँदेसा * चलहु, बहू! बन, बहुत-कलेसा॥
नैहर, कबहुँ, कबहुँ, ससुरारी * रहेउ, जहां, रुचि होइ तुम्हारी।

सब बिधि,करेउ उपाय,बिचारा * सिय-लौटे, कछु प्रान-सहारा ॥
नाहीं तौ, ये प्रानहु जाहीं * टेढ़-विधाता ! कछु बस नाहीं ।
कवि:-गिरे भूमि, मूर्छित, कहि, राऊ * "राम-लषन-सिय लाय दिखाहू"॥
दोहा:—पाये आज्ञा, नाय सिर, बेगहि रथ जुड़वाइ ।
८३. नगर-के-बाहर, तहँ, गयो, जहँ, सीता, दोउ-भाइ ॥
तब, 'सुमंत', नृप-बचन सुनाये * करि विन्ती, रथ, राम चढ़ाये ।
चढ़ि रथ, सिय-सहित,दोउ-भाई * चले हृदय अवधहिं सिर नाई ॥
समुझि राम-गये,अवध अनाथा * लोग, विकल, सब, लागे-साथा ।
कृपासिंधु, बहुबिधि समुझावहिं * फिरहिं,प्रेम-बसफिर-फिरिआवहिं॥
लागत 'अवध', भयानक, भारी * मानहु, कालि - रात - अँध्यारी ।
जंतु भयानक, पुर - नर - नारी * डरपहिं, एकन्ह - एक-निहारी ॥
घर, मसान, कुल-के,सब, भूता * पुत्र, मित्र, मानहु, जमदूता ।
वृक्ष, बेल, बागहु, कुम्हिलाहीं * नदी, ताल, देखे नहिं जाहीं ॥
दोहा:—हाथी, घोड़ा, पसु, हिरन, पुर के, पपिहा मोर ।
८४. तोता, मैना, कोकिला, सारस, हँस, चकोर ॥
राम-वियोग - विकल, सब, ठाढ़े * मानहु, कोउ, तसबीर-मा-काढ़े ।
सकल'अवध',भा, यक बन,भारी * पसु, पक्षी, बन - के, नर-नारी ॥
केकइ, भई, भील - की - नारी * दसहु-लता-ते, अग्नि पजारी ।
रघुबर-विरह,न सहिसकि,आगी * चले लोग सब, व्याकुल, भागी ॥
सबहि,विचारि, कहत,मन माहीं * 'राम'लषन-सिय'विनु,सुखनाहीं!।
जहाँ राम, तहँ, सबहि समाजू * बिनुरघुवीर, अवध,कह काजू! ॥
चले लोग, अस राय-मिलाई * तजि घर-सुख, जो,सुर ललचाई ।
चरन कमल,प्रभु के, प्रिय जिनका * सुख-संसारी,जीति न, तिनका ॥
दोहा:—बूढ़े, बालक, छांड़ि, घर, गे सब, प्रभु के पास ।
८५. पहिले-दिन,'तमसा'-नदी-तट, प्रभु कीन्ह निवास ॥
देखा, प्रजा, प्रेम - बस, आई * अति-दयालु ! दुख भा, रघुराई ।

दयावान, समरथ रघुराई ॐ समुझि लेत, झट, पीर-पराई ॥
कोमल - बचन, औ, प्रेम-सुहाये ॐ कहि,कहि,राम,प्रजहिं समुझाये ।
किये धर्म - उपदेस घनेरे ॐ लोग, प्रेम-बस, फिराहिं न, फेरे ॥
सील, सनेह, छांड़ि नहिं जाई ॐ भे, असमंजस - महँ, रघुराई ॥
हारि, सोक-बस, गे, सब, सोई ॐ देवन हू, तिन-की-मात, मोही ॥
दुइ-घरि, रात, बीति, जब, आई ॐ कह 'सुमंत्र'सन, अस, रघुराई ।
रामः-हांकहु रथ, कोउ, पता-न-पावे ॐ आन-उपाउ, समुझ नहिं आवे ॥
कविः—दोहाः—'राम'-'लषन'-'सिय'-थर, चढ़े, शंभु-चरन, सिर नाय ।
८६. तुरत, हांकि रथ, मंत्री, दोऊ-लीक-छिपाय ॥
जगे लोग, जब, भयो सबेरा ॐ मचा, 'गये रघुबर" अस सोरा ।
रथ-कर-खोज, कहूं नहिं पावैं ॐ राम-राम-कहि, चहुं-दिस,भाजैं ॥
जनु, समुद्र महँ, डूबि जिहाजू ॐ बनिया का,सब, विकल,समाजू ।
आपुस-महँ, अस कहः "रघुराई ॐ छांड़ेउ हमहिं, समुझि दुखदाई ॥
हम, निलज्ज्य, जो, तहुँ रहे जीते ॐ मछरीहु, तजत प्रान, जल बीते ।
राम - वियोग, विधाता कीन्हा ॐ हा ! मांगेहू, मृत्यु न दीन्हा ॥
चले लोग अस करत बिलापा ॐ आये 'अवध', भरे - संतापा ।
अस - करि - आशा राखे प्राना ॐ "चौदह-बरस-गये,सुख नाना" ॥
दोहाः—राम - दरस - हित, नेम, बृत, करन, लगे अस दीन ।
८७. चकवा, कोउ, चकई हरी, कमल - ते, सूरज छीन ॥
'सीता' मंत्री, और, दोउ भाई ॐ 'स्रंगबेर - पुर', पहुँचे जाई ।
उतरि के, रघुबर, गंगा-देखी ॐ कीन्ह दंडवत, हर्षि विसेखी ॥
सब संगी, फिर, कीन्ह प्रनामा ॐ पायो सुख, सँगिन, और,रामा ।
गंगा - जी, अति - मंगल - कारी ॐ दै-सुख, दुःख - मिटावन-हारी ॥
कहत कथा, देखत, रघुराई ॐ गंगा - की - तरंग, मन - भाई ।
मंत्री,'लषन',औ 'सियहि' सुनाई ॐ गंगा - की - महिमा, समुझाई ॥
कीन्ह अस्नान, मिटी थकवाई ॐ मन - प्रसन्न,जल-पिअत-सुहाई ।

सब श्रम मिटत, रटे रघुराई ❋ तिन कहँ, श्रम,व्योहार-जनाई ॥
दोहा—सुद्धि, सच्चिदानंद, प्रभु, सूरज - कुल - कर - केतु ।
८८. मानुष - से - करतब करत, हैं भवसागर - सेतु ॥
घर महँ, जब,'निषाद',सुधि पाई ❋ मित्र, कुटुँभी, लीन्ह बुलाई ।
भेंट-हेत, फल, झोरिन, डारे ❋ मिलन, चले, मन-भये-सुखारे ॥
करि दंडवत, भेंट रखि, लाई ❋ प्रभुहिं, निहारत, प्रेम-लगाई ।
भये, प्रीति - के - बस, रघुराई ❋ कुसल पूँछि, ढिंग,लीन्ह बिठाई ॥
गुहः—कुसल,चरन-देखे, रघुनायक ! ❋ भाग्य,जनन-मा,गिनवे-लायक ! ।
धन, धरती, घर-बार, तुम्हारा ! ❋ नीच-दास, मैं, और, परिवारा ॥
करहु कृपा, नगरी, रघुराई ❋ करहु दास, जग, होय बड़ाई ।
रामः—आदर सत्य,सखा! कहुं,तोका ❋ पितु-आज्ञा,कछु,औरहि, मोका ॥
दोहाः—मुनियन-कर-जामा, नियम, भोजन, और बन-बास ।
८९. चौदह-बरस, न जाउँ पुर, सुनि 'गुह' भयो उदास ॥
राम-लषन-सिय - रूप - निहारी ❋ कहत, नगर-के-नर-और - नारी ।
कहु सखी ! मात, पिता, ते,कैसे ❋ पठये बन,बालक, जिन्ह, ऐसे ! ॥
कहत एक, राजा, भल कीन्हा ❋ यह-विधि,हम कहँ,दरसन दीन्हा ।
तब,'निषाद' मन महँ, अनुमाना ❋ 'सीसम'वृक्ष, मनोहर जाना ॥
लै रघुनाथहिं, ठांव दिखावा ❋ कहा राम,"हां! बहुत-सुहावा" ।
पुरवासी, जुहारि, घर आये ❋ 'रघुबर', संध्या-करन, सिधाये ॥
कुस-पातिन-ते, सेज बनाई ❋ रचि,कोमल,और अधिक-सुहाई।
चुनि फल मूल, मीठ,मन - भावा ❋ दोनन-रखि 'निषाद', लै आवा ॥
दोहाः—'सिय','सुमंत्र',भ्राता-सहित, कंद मूल फल खाइ ।
९०. गये पौढ़ि 'रघुनाथ', और, पाउं दबावत भाइ ॥
उठे 'लषन', सोये - प्रभु - जानी ❋ कह 'सोवहु', मंत्री, मृदु-बानी ।
तानि-बान, कछु - दूर-पै, 'लाषन' ❋ लगे देन पहरा, बीरासन ॥
चौकीदार - ठीक बुलवाये ❋ जगह, जगह, 'गुह' खड़े-कराये ।

आपु, 'लषन' - पहँ, बैठा जाई * तरकस, कमर-महँ, बान चढ़ाई ॥
सोवत, प्रभुहिं,, निहारि, निषादू * भयो, प्रेम - बस, हृदय, बिषादू ।
तन, पुलकित, जल, लोचन, बहई * भरे - प्रेम, अस, 'लखन'-ते, कहई ॥
निषादः-राज-भवन, अति सुंदर सोई !* 'इंद्र'-भुवन, कछु - चीज-न-होई !
मनि - ते - जड़, सुघर - चौबारे * 'कामदेव', जनु, हाथ - सँवारे ॥

दोहाः—भाग - पदारथ, घर भरे, सुंदर - अतर - की-बास ।
९१. जरत दिया, मोतिन - जड़े, सुंदर - पलँग - के - पास ॥

तकिया, गद्दी, वस्त्र, बिछाई * दूध - फेन - सम, उज्जल, भाई ! ।
सयन करत, तहँ, सिय'-'रघुराई' * जिन्ह-छवि-देखि, 'काम' सरमाई ॥
घास-पात-परि, आज, सो सोवत ! * बिना-बिछौना, थाकि, मन मोहत ।
पिता, मात, बंधू, पुरवासी * भले-मित्र, और दास, उदासी ॥
राखत जिनहिं, प्रान - की - नाईं * सोवत, डारे धरती माईं ।
पिता 'जनक' जग जानि प्रभाऊ * 'इन्द्र'-के-मित्र, ससुर, 'रघुराऊ' ॥
रामचंद्र, पति, सो वैदेही * डारी-भुइं, दुख, सब कहँ, होई ।
सिया-रामहू, कह, बन - जोगू ! * करम प्रबल, सांची कह, लोगू ॥

दोहाः—रानी 'केकइ', कस कुटिल, कैस, कुटिलपन कीन्ह !
९२. सुख - बेरा, सिय, राम कहँ, पापिन ! अस दुख, दीन्ह ॥

सूरज - कुल - की भई कुल्हारी ! * कीन्ह, अनारिन, जगत दुखारी !।
कविः भयो 'निषादहिं', अस, दुख भारी * देखे, राम - सिया, भुइं - डारी ॥
कही 'लषन', मिठ, कोमल - बानी * ज्ञान, विराग, भक्ति की सानी ।
लषनः कों, केहि का, जग, सुख-दुख, देई * करहि करम, जस, तस-फल, तेही ॥
बिछुरन, मिलन, दुःख, सुख चोखा * बैर, मित्र, सब भ्रम, यक धोखा ।
जनम, मरन, जग-कर - जनजाला * संपाति, विपाति, करम, अरु, काला ॥
कह, धन, धरती, घर, परिवारा * सरग, नरक, सिगरा-ब्योहारा ।
देखत, सुनत, औ, मानत जिनका * मोह-ते-उपजा, भ्रम है, मन का ॥

दोहाः—सपने, राजा, खोइ धन, पावे धन, कंगाल !।
९३. जागत, लाभ, न, हानि, कछु, तैसहि, जग कर हाल ॥

अस विचारि,कस क्रोध बढ़ावत! ❋ दोस, व्यर्था,क्यों केहु लगावत!।
मोह - रैन, नर, सोवन - हारा ❋ देखत स्वप्न, अनेक - प्रकारा ॥
मोह - रात, सोइ जोगी जागत ❋ चाहत असल,नकल,जे त्यागत ।
जगै जीव, तब. छूटै लासा ❋विषय-सुःख,औ़र,भोग-विलासा॥
आवहि ज्ञान, मोह - भ्रम जाई ❋ होय प्रेम, चरनन - रघुराई ।
सखा ! असल परमारथ एही ❋ मन,क्रम,वचन ते राम-सनेही ॥
केहि मा राम,औ,नाहीं, केहि मा ❋ अलख-बृह्म,जेहिआदि,न,उपमा।
भेद - ते-अलग, विकार-ते-न्यारा ❋ नित्य-स्वरूप, वेद कहि, हारा ॥

दोहाः—सुर, गउ,बृह्मण, भक्त हित, जग हित, दीन - दयाल ।
९४. करत खेल, नर-तन - धरे, मिटत, सुनत, जगजाल ॥

समुझि,सखा!अस,मोह,तु,करिना!❋ रखु, तू, प्रीति,राम-के - चरना !
कविः-गाय - राम - गुन काटी राता ❋ जगे राम, मंगल - सुख - दाता ॥
सकल सौच करि, राम नहावा ❋ फिर,'बरगद'-कर-दूध सँगावा ।
'राम'-'लषन', सिर - जटा बनाई ❋ लखि 'सुमंत', नैनन, जल छाई ॥
जरा हृदय, औरमुख कुम्हिलावा ❋ जोरि हाथ,अस बचन सुनावा ।
सुमंतः-कहेउ राम!अस, 'कौसल-नाथा'❋ लै रथ जाहु, राम के साथा ॥
बन दिखाय, गंगा - अन्हवाई ❋ लायो, फेरि, बेग, दोउ - भाई ।
लषन, राम, सिय, लायो फेरी ❋ संसय, और, संकोच निवेरी ॥

दोहाः—महाराज अस कह, प्रभु ! अब, जो आज्ञा होय ।
९५. कविः—करि विन्ती, पाइन परा, बालक सम, वह रोय ॥

सुमंतः—तात ! कृपा करि,कीजइ सोई ❋ जेहि विधि,अवध,अनाथन होई।
रामः-राम, उठाय, मंत्री - समुझाये ❋ जानत! कह, कोउ, धर्म बताये ॥
'सिवि''दधीचि','हरिचंद्र' सेराजा❋ सहे दुख, कस, धर्म के काजा ।
'रंतिदेव', 'बलि' भूप सुजाना ❋ धरा धर्म, सहि संकट नाना ॥

नाहिं धर्म, कोउ, सत्य - समाना * वेद, पुरानहु, सास्त्र बखाना ।
सोइ सत - धर्म, सहज, मैं पाई * अपजस, तीन-लोक, तजि, छाई ॥
अस-सलाह, जेहि कहँ, जस भावे * कोटि मरन-दुख-सम, तेहि लागे ।

दोहाः—करेउ विनय, कोमल वचन, गहि-पितु - पद, कर जोरि ।
९६. चिन्ता, कवनेउ बात की, करहिं, तात ना, मोरि ॥

तुमहू, पितु - समान, हितकारी * करहुं विनय, करजोरि तुम्हारी ।
बस, अस-करतव रहहि तुम्हारा * होय, पितहिं, ना दुःख-हमारा ॥
कविः-सुनि, 'रघुवर'-'सुमंत' संवादू * कुल-समेत, भा, दुखी, 'निषादू' ।
सकुचि, राम, सौगंद, दिवाई * 'लषन-कही, तुम, कहेउ न, जाई ॥
सुमंतः–कह 'सुमंत', राजा, फिर, कहेऊ * लिया ते, जाय न, वन-दुख, सहेऊ ।
राम, औ तुम हूँ, करेउ उपाई * जेहिविधि सिया, लौटि, घर आई ॥
जैहैं, भये - न - कछू - सहारा * जल-बिनु, मछरी-प्रान - हमारा ।

दोहाः—मैके, ससुरे, सकल सुख, जहँ मरजी, मन भाय ।
९७. रहहिं तहीं, सुख-सों, सिया, जब लागि कुदिन, न जाय ॥

विन्ती, भूप करी, जेहि - भांती * दुखित, प्रेम-सों, नहिं कहि जाती ।
कविः–तब, सँदेस सुनि, कृपानिधाना * सिक्षा दीन्ह, सियहि, विधि-नाना ॥
रामः-सास, ससुर, गुरु, प्रिय, परिवारा * लौटे, सब कहँ होय सहारा ।
सुनि पति - वचन, कहत 'बैदेही' * सुनहु, प्रानपति! परम-सनेही ॥
सीताः–समुझौ अस, दयालु! मनमाहीं * तन तजिहू, रहि सकत है, छाईं ।
सकत, सूर्य तजि, धूपहु, जाई * चांदनि, चन्द्र तजै, कठिनाई ॥
कविः–प्रेम-भरी, बिन्ती, पति सों, करि * कह, 'सुमंत'-सों, मिठ-बानी, फिर ।
सीताःपिता, ससुर सम, तुम हितकारी * उत्तर देत, तुमहिं, दुख भारी ॥

दोहाः—परे-विपति, सन्मुख-भयों, बुरा न मानेउ, तात!
९८. आर्य-पुत्र, पति के विना, सूना, जगत, दिखात ॥

'जनक'-मान और सुख सब जाने * गिरत, चरन, राजा, संमाने ।
सब-सुख-कर, नैहर, अस्थाना * पती-बिना नहिं लगत सुहाना ॥

ससुर, चक्रवरती, यक राजा ❋ सब-लोकन, जिन्ह-डंका बाजा।
बढ़ि, आगे, 'इन्द्रहु', जिन्ह लेई ❋ आधा-सिंहासन, जिन्ह, देई॥
ऐस ससुर, और,अवध-निवासा ❋ प्रिय-कुटुंभी, मातु औ, सासा।
बिन - रघुबर - पद-पदुम-परागा ❋ सपनेहु,सुख-दाता नहिं लागा॥
राह कठिन, बन, और, पहारा ❋ सिंह, हाथी, और नदी अपारा।
बन-पक्षी, और, कोल, किराता ❋ प्रान-पती-सँग,सब, सुख-दाता॥

दोहाः—हाथ-जोरि, विन्ती करेउ, सब सन, मोरी-ओर।
९९. करहिं न चिन्ता, मोरि, कछु, बन, सब-सुख, दुख थोर॥

प्रान-नाथ, प्रिय - देवर, साथा ❋ बान, धुरन्धर, लीन्हे हाथा।
मनहु, थकावट, ना, दुख होई ❋ चिन्ता मोरी, करहि न कोई॥
लं:—सुनि,'सुमंत'कहँ,अस दुखहोई ❋ विकल सर्प,जस,मनि-कहँ,खोई।
नयन, सूझि नहिं, सुनइ न काना ❋कहि न सकत कछु,अति अकुलाना॥
समुझावा, 'रघुवर', बहु-भाँती ❋ नाहीं, तहूँ, जुड़ानी छाती।
लौटन-हेत, जतन, बहु, कीन्हे ❋ उचित-उतर,'रघुनन्दन' दीन्हे॥
मेटि जात नहिं, राम-रजाई ❋ कठिन करम-गति,कछु न बसाई।
चला 'सुमंत', अस, सीस-नवाई ❋ ब्योपारी, ज्यों, मूल - गँवाई॥

दोहाः – घोड़ा, रथ के, राम कहँ, देखि, देखि, हिहिनाहिं।
१८०. हांकेउ रथ, 'सुमंत' जब, मन, 'निषाद' पछिताहिं॥

जेहि के छुटत, विकल, पसु,ऐसे! ❋ प्रजा, मात, पितु, जीहहिं,कैसे!।
जैसे - तैसे, कीन्ह रवाना ❋ 'गंगा'-तट पहुँचे, भगवाना॥
माँगी नाव, न, केवट लावा ❋ कहत, "मर्म-तुम्हरा, मैं पावा"।
केवटः—इन-चरनन की-धूरहु, भाई ! ❋ सुना, आदमी - देत - बनाई॥
छुअतहि, पाथर, नारि - बनाई ❋ काठ, न पाथर सम, कठिनाई।
रिखि - नारी, नौका हुइ जाई ! ❋ समय पाय,कहुँ,दीन्ह उड़ाई !॥
पालहुं कुल, इक, नाव - चलाई! ❋ दूसर - कार,होत नहिं, भाई ! ।
पारहिं जानि, नाथ ! जो, चहहू ❋ चरन धोउं,अस मुंह ते,कहहू॥

छंदः—पद - कमल - धोय, चढ़ाउं नाव, न, नाथ ! उतराई चहौं ।
मैं, खाइ प्रभु - सौगंद, दसरथ - की, बात सांची कहौं ॥
चहुँ, मारैं लछिमन, तीर, जब लगि, मैं, न पाउं पखारिहौं ।
तब लगि न, तुलसीदास, नाथ - कृपालु ! पार उतारिहौं ॥
सो०ः—सुनि- केवट - की - चाल, प्रेम - लपेटी, अट - पटी ।
१०१. चितये, दीन - दयालु, 'लषन'-'जानकी'-ओर, हँसि ॥

रामः—कृपासिंधु बोले, मुसुकाई * करहु सोइ, जेहि, नाव न जाई ।
लाय, बेग, जल, पाउं पखारहु * भई देर, झट, पार, उतारहु ॥
कविः- { जासुनाम, सुमिरत, एकबारा * उतरत नर, भव-सिंधु, अपारा ।
सो केवट-मुख देखत, ठाढ़ * तीन-लोक, जिन्ह पद नापि, हारे ॥ }
गंगा, चरन देखि प्रभु, हर्षी * 'मांगत नाव', सुनत, जिय कर्षी ।
गंगहिं हर्ष, मोह, लखि चरना * लांघि, बेग, कहुँ जाइ उतरि ना ॥
राम - आज्ञा, जब देखी, पाई * भरि कठौत, केवट जल लाई ।
अति आनन्द, उमंग - महँ - आई * धोवन लगेउ, चरन - रघुराई ॥
देवन, फूलन, भाग सराहे * केहु पुण्य, अस, जग नहिं छाये ।

दोहाः—धोय-चरन, अमरित पिया, आपु, सहित - परिवार ।
१०२. भव ते, पित्रन कहँ, कियो, रामहिं, गंगा - पार ॥

उतरि नाव, ठाढ़ भये, रेता *'राम', 'सिय', 'गुह', 'लषण'-समेता॥
केवट, उतरि, दंडवत कीन्हा * सोचि रामः'कछु चाही दीन्हा'।
राम - के - जी - की - जाननहारी * दीन्ह, 'सिया', मुद्रिका उतारी ॥
रामः—कहा कृपालु, लेउ उतराई * गहे चरन, 'केवट', अकुलाई ।
केवटः-कह न पायो, प्रभु! मैं बड़भागी * दुख, दरिद्र की, मिटिगई, आगी ॥
बहुत काल, मैं, कीन्ह मजूरी * दई, आज, दई, मोकहँ, पूरी ॥
अब, कछु नाथ न चाहिये, मोरे * दीन - दयाल, दया - से - तोरे ।
जो प्रसाद, पर, लौटत, मिलिहै * यह-सरीर, सो, धरि-सिर, पैहै ॥

कविः—दोहाः—बहुत-कहा,'प्रभु''लषन''सिय', जब, नहिं, केवट लीन्ह ।
१०३. भक्ती - उज्जल - बर दिये, राम, विदा, तेहि, कीन्ह ॥

फिर स्नान करि, 'रघुकुल-नाथा' * रचि माटी - शिव, नायो माथा ।
सीताः—कहा सिया, 'गंगे'! कर-जोरी * माता ! पूरु मनोरथ - मोरी ॥
पति-देवर-संग,कुसल, जब, ऐहहुँ * करि-पूजा, तुहि, दिया-चढ़ैहहुं ।
कविः—सुनिसिय-विनय,प्रेम-रस-सानी* भइ, निर्मल-जल-ते, अस बानी ॥
गंगाः—सुनु, रघुवीर - प्रिय, 'वैदेही' ! * जानत जग, प्रभाउ सब तेही ।
मिलत ऊँच - पद, द्रष्टि - से-तोरे *सेवत,सब-सिधि,ताहि,कर-जोरे॥
मान-विनय, तुम, हमहिं सुनाई * कीन्ह कृपा, अरु, दीन्ह बड़ाई ।
तहूँ, असीसत, तो कहँ, रानी ! * सफल-करन-हित,अपनी-बानी ॥

दोहाः—प्रान - नाथ, देवर सहित, लौटि, 'अयोध्या, आय ।
१०४. पूजहिं, सब, मन-कामना, रहै, जगत, जस छाय ॥

कविःसुनि असीस,सब-सुख-की-मूला * मात-प्रसन्न, सिया - मन फूला ।
तव,प्रभु,'गुहहिं' कहा 'घर जाहू' * सुनत,सूख,मुख, भा, उर, दाहू ॥
गुहः—दीन-बचन, बोला, कर - जोरी * 'रघुकुल'-मनि!असविन्तीमोरीः।
नाथ - सँग - रहि, राह - दिखाई * कछुक-दिना, करिहौं सेवकाई ॥
जहं - जहं, बन, जैहौ, रघुराई ! * देव, छाय, हम, कुटी बनाई ।
फिर, जस होई राम - रजाई * सोइ करिहौं, रघुवीर - दुहाई ॥
कविः-सजन-सभाउ,'राम' लखि, तासू * सँग लीन्ह 'गुह', हृदय-हुलासू ।
सब जाती, 'गुह', अपन, बुलाये * कीन्ह विदा, सन्तुष्ट - कराये ॥

दोहाः—तब, गनपति,'इस' सुमिरि, प्रभु, 'गंग', नवायो माथ ।
१०५. सखा,अनुज,सिय सहित,बन, गवन कीन्ह रघुनाथ ॥

तेहि - दिन, वृत्त - तरे, भगवाना * ठहिर, कीन्ह, सँगिन, सामाना ।
भोर, 'प्राग', देखा, 'रघुराई' * जो, 'सब-तीरथ - राज' कहाई ॥
'सत्यः' मंत्री, 'श्रद्धा' नारी * माधव - से, 'मित्री' हितकारी ।
'काम','मोक्ष','धर्म''अर्थ,खजाना * रजधानी भाः पुण्यस्थाना ॥

अगम - क्षेत्र भा, किला सुहावा ❋ सपनेहु, शत्रु,सकत नहिं पावा ।
सकल तीर्थः अति-बल-की-सैना ❋ धर्रः पाप की सैन, डटै - ना ॥
'गंग'-'जमुन' - सँगमः सिंहासन ❋ छत्र अक्षय'वट'मुनि-मन-भावन ।
उठत लहर, जनु, चँवरी झालत ❋ दुख दरिद्र, सब, देखे भाजत ॥

दोहाः—'सेवक','साधु','महात्मा', सेवत, पूरन काम ।
१०६. 'बंदीजन', 'गुन'-'प्राग'-के, गावत • वेद - पुरान ॥

'प्राग' -'प्रभाउ' न सकइ बखाना ❋ पाप के गज कहँ सिंह-समाना ।
अस तीरथ - पति, देखि सुहावा ❋ 'रघुवर',सुखसागर,सुख पावा ॥
कह, सिय,लषनहिं,सखहिं,सुनाई ❋ श्री-मुख - ते, सब, प्राग-बड़ाई ।
करि प्रनाम, देखे बन बागा ❋ कहत महातम,अति-अनुरागा ॥
दरसन किये, आय, 'त्रिबेनी' ❋ सुमिरत, जो सुख केर-नसेनी ।
करि अस्नान, प्रथम, 'सिव' पूजे ❋ तीर्थ-देवता, विधि-सों, दूजे ॥
फिर, प्रभु, 'भरद्वाज' पहँ, आये ❋ करत दंडवत, मुनि, उर लाये ।
हर्षे मुनि, पा, दरस - सुहावा ❋ ब्रह्मानंद - ढेर, जनु, पावा ॥

दोहाः—दीन्ह असीस, मुनीस, तब, उर अनन्द, अस जानि ।
१०७. नयनन - आगे, पुण्य-फल, दीन्ह, आज, भगवान ॥

कुसल-पूँछि, मुनि, आसन दीन्हे ❋ करि पूजा, प्रेमादर कीन्हे ।
कन्द मूल, फल, दीन्हे लाई ❋ अमरित-सम, रस-भरे, मिठाई ॥
'लषन','सिय','गुह'-सहित,सुहाये❋ रुचि-सों, 'राम', मूल-फल खाये।
गई थकानि, भे, 'राम', सुखारे ❋ रिषि, अस,मीठे-वचन, उचारे ॥
भरद्वाजःआज,सुफल,तप,तीरथ,त्यागू❋आज,सुफल जप, जोग, विरागू ।
सुफल,सकल-सुभ-साधन, आजू ❋ दरस-पाइ, तुम्हरे, रघुराजू !॥
अस, सुख-लाभ-घरी, नहिं कोई ❋ मिला दरस, सब-आसा-खोई ।
अब, करि कृपा, देहु वर, एही ! ❋ चरन-कमल-कर, रहौं, सनेही !॥

दोहाः—करम, वचन, मन, छांड़ि छल, भक्ति न होइ, तुम्हार ।
१०८. तब लगि, कोटि-उपाउ-करि, नर नहिं होत सुखार ॥

कविः सुनि-मुनि-वचन, 'राम', सकुचाने * भक्ति - भरे, आनंद - अघाने।
'रघुवर', मुनि-कर सुजस, सुहावा * कहि अनेक-विधि, सबहिं, सुनावा॥
रामः–हे मुनि! जेहि कहँ, तुम सन्माना * भयो ऊँच, और गुन-स्थाना!।
कविः–कहत, एक-सन, एक, नवाई * दोउन-कहँ सुख, कहा न जाई॥
यह सुधि पाइ, 'प्रयाग'-निवासी * बृह्मचारी, मुनि, रिषी, उदासी।
'भरद्वाज' के आस्रम आये * दरसन - दसरथ - नन्दन पाये॥
आ, प्रनाम कीन्हा, रघुराई * भे प्रसन्न नयनन - फल-पाई।
दीन्ह असीस, परम सुख पाई * लौटत, छवि - की-करत-बड़ाई॥

दोहाः—कीन्ह, रात, विस्राम, प्रभु, भोर, 'प्रयाग' - नहाय।
१०९. चले, 'लषन', 'सिय', 'गुह' सहित, हर्षि, मुनिहिं, सिर नाय॥

राम, प्रेम-ते, कह, मुनि पाहीं * नाथ! कहौ, केहि मग, हम जाहीं?।
मुनि, मन-हँसि, राम सन, कहहीं * "सहज, सकल मग तुम कहँ अहहीं"॥
राम-संग-कहँ, शिष्य बुलाये * सुनि, मन-हर्षि, पचासक, आये।
राम पै, सब कर, प्रेम अपारा * कहत, "मार्ग-सब दीख-हमारा"॥
चारि बृह्मचारी, सँग दीन्हे * जन्म-जन्म, जो, बहु-पुन-कीन्हे।
करि प्रनाम, रिषि-आज्ञा-पाई * चले, प्रसन्न-चित्त, 'रघुराई'॥
गाउँ-तीर, जब, निकसत जाई * देखहिं दरस, नारि, नर, धाई।
भये-सनाथ, जनम-फल पावत * फिरत, दुखित मन, संग-पठावत॥

दोहाः—बृह्मचारिन, मन-भाइ-फल, दै, लौटाये, राम।
११०. उतरि, नहाये-'जमुन'-जल, जो रामहि - सम-स्याम॥

'जमुना'-तट-बासी, नर, नारी * सुनत, धाये, सब-काज-बिसारी।
तिनहु की, लखि, सुन्दरताई * अपन-भाग-की, करत बड़ाई॥
अति लालसा, सबहिं, मन माहीं * नाउँ, गाउँ, पूंछत सकुचाहीं।
रहे जो, उन महँ, बूढ़, सयाने * सो, करि युक्ति, 'राम'-पहिचाने॥
ते, औरन कहँ, कथा, सुनाई * "आये बन, पितु-आज्ञा पाई"।
भरे-दुःख-मन, सुनि, पछिताहीं * "राजा, रानि, कीन्ह भल नाहीं"॥

यक तपसी, तेहि अवसर, आवा * छोटि-बयस, मुख, तेज-सुहावा ।
कवि न जानि को, वेष-विरागी * मन, क्रम,वचन,राम-अनुरागी ॥

दोहाः—भरे नयन जल, पुलकि तन, इष्ट - देव, पहिचानि ।
१११. गिरेउ, भूमि महँ, दंड-सम, दसा न जात बखानि ॥

राम, प्रेम-सों, उठि, उर लावा * अति-गरीब, जनु, पारस पावा ।
बहुरि, 'लषन'-पाइन, सो, लागा * लीन्ह उठाय, 'लषन',अनुरागा ॥
फिर,सिय-चरन-धूरि,धरि,सीसा * जानि-पुत्र, सिय दीन्ह असीसा।
कीन्ह 'निषाद', दंडवत तेही * मिलेउ,जानि-कर, राम-सनेही ॥
रूप-अमरित, तपसी-तन-सूखा * भा प्रसन्न, नैनन, पी, भूखा ।
ते पितु, मातु, सखी ! कहु, कैसे * जिन, पठये वन, बालक-ऐसे ॥
'राम','लषन', 'सिय'रूप,निहारी * होत, सनेह-विकल, नर-नारी ।

दोहाः—तब रघुबीर, अनेक-विधि, सखहिं, सिखावन दीन्ह ।
११२. प्रभु-आज्ञा, सो, सिर-धरे, घर - की - रसता - लीन्ह ॥

फिर,'सिय','राम','लषन',करजोरी* 'जमुनहिं' कीन्ह प्रनाम,बहोरी ।
सहित-सिय, चले दोऊ-भाई * 'रवि-की-कन्या','जमुन'सराही ॥
मिलत, बहुत-जात्री, मग-जाता * कहत-प्रेम-सों,लखि दोउ भ्राता।
जात्रीः—राज-चिह्न, सब अँगन, तुम्हारे * होत सोच, लखि हृदय हमारे ॥
तुम, और, पाउं-पियादे, जाई * ज्योतिष, झूँठी, परत दिखाई ! ।
परबत-राह, अगम, बन, भारी ! * संग,नारि, तहि-पर, सुकुमारी!॥
यह, हाथी - सिंहन-बन होई ! * धरहु, हमहिं, सँग,जैहो खोई ! ।
जहाँ, जाहु, हम दें पहुँचाई *फिरहिं,लौटि,तुमकहँ, सिर-नाई ॥

दोहाः—यह-विधि, पूँछत, प्रेम-बस, नैनन - जल, दुखियाइ ।
११३. कहि प्रभु,"तुम्हरी-सब-कृपा",! दीन्ह सबहिं लौटाइ ॥

जो, पुर, गाँव, परत मग माहीं * तिनहिं नाग-सुर-लोक सराहीं ।
केहि धरमी, सुभ-घरी, बसाये * धन्न्य नगर ! भये परम सुहाये ॥
जहँ-जहँ, राम-चरन,चलि, जाहीं * तिन्ह सम, 'इन्द्र'-पुरी-हू,नाहीं ।

धन्य, राह - के-निकट-निवासी * करत बड़ाई, स्वर्ग-के-वासी ॥
भरि भरि नैन, जो, देखत, रामहिं*'सीता'-लषन'-सहित,'घनस्यामहिं'।
नदी, ताल, जहँ 'राम' नहाहीं * देव-नदी-और - ताल सराहीं ॥
जहाँ वृक्ष-तरे, बैठहिं, जाई * कल्प - वृक्ष करे, तासु-बड़ाई ।
चरन-कमल-रज, छुइ, छुइ,धरती * मानि-भाग-बढ़, चरनन-परती ॥

दोहा:—बादर, छाया - करत, और, देव, फूल, बर्षाहिं ।
११४. देखत,गिर, बन विहँग,मृग, 'राम', चले मग जाहिं ॥

'सीता', 'लषन' सहित,'रघुराई' * गाँव-तीर, जब, निकसहिं जाईं ।
सुनि सब बाल, वृद्ध, नर-नारी * आजाहिं, घर-के-काज-बिसारी ॥
राम-लषन-सिय - रूप - निहारी * पाइ नैन-फल, होहिं सुखारी ।
भरे, नैन, जल, पुलकि-सरीरा * होत मगन, देख दोउ-बीरा ॥
ऐसी-दसा, होत, तिन- केरी * मिली, रंक, 'चिन्ता-मनि'-ढेरी ।
कहत, एक-सन, यक, छन माहीं * नयन-लाभ लूटहु, वे ! जाहीं ॥
फँसे-प्रेम, कोउ, लागे साथा * मग-मग हेरत छवि-रघुनाथा ।
सिथिल,कोउ,मग-छवि, उर-लाये * तन, मन, वानी, अपन,गँवाये ॥

दोहा:—बर-की-छाहीं, देखि, कोउ, साजि घास, और, पात ।
११५. कहत: "करहु आराम कछु, जायो,हाल, कि प्रात" ॥

भरि कलसन, कोउ,लावत पानी * 'पियहु नाथ ! बोले, मिठु-बानी" ।
सुनि प्रिय-वचन,प्रीति अति देखी * राम, कृपालू, सील विसेषी ॥
थकी-सिया-समुझे, मन-माहीं * घरी-एक, ठहरे, बर-छाहीं ।
हुइ प्रसन्न, सब, देखत सोभा * रूप-अनूप, देखि, मन लोभा ॥
बैठे, लगत, लोग, चहुं-ओरा * घेरे, देखत चंद्र, चकोरा ।
नेय-पान-सम, प्रभु-तन सोहै * देख, कोटि 'कामहू' मोहै ॥
बिजुली-कस,जनु,'लषन',खिलोना* पाउं-से-चोटी-तलक सलोना ।
बँधे, कमर, तरकस, मुनि-जामा * सोहत'लषन',धनुष-कर, रामा ॥

दोहाः—जटा-मुकुट, मस्तक-दिये, उर, भुज, नैन, विसाल।
११६. पूरन-कातिक-चंद्र, मुख, बूँद-पसीनन, भाल॥

बरनि न जाइ, मनोहर-जोरी * सोभा,बहुत, और, मति, थोरी।
'राम'-'लषन'-'सिय' - सुंदरताई * चितवत मन, बुद्धी, चित लाई॥
प्रेम - पिआसे, नर नारी, गुप * दीपक देखि हिरन-हिरनी चुप।
गाँव-नारि, सीता-ढिग, जाहीं * अति-सनेह, पूँछत, सकुचाहीं॥
बार, बार, पाइन-सिय परि परि * कहत बचन,मीठे,मुँह-भरि-भरि।
नारीः—राजकुमारी ! विनय तुम्हारी * पूँछत, मति.प्रिय ! डरत,हमारी॥
स्वामिनि ! छमहु,हमारि ढ़िठाई * हम गँवारि,मन,बुरा न लाई।
राजकुँवर, इक, एक सलोना * दम-ते,जिन्ह के, चमकत सोना॥

दोहाः—स्याम, गौर, बारी-उमिर, जनु, सोभा - अस्थान।
११७. सरद-चंद्र-सो- मुख, नयन, सीतल, कमल - समान॥

कोटि-'काम' सरमावन - हारे * हे भामिनि!कस लगत,तुम्हारे ?।
कविः—सुनि, सनेह-सानी, प्रिय-बानी * सकुची सीता,मन मुसुक्यानी॥
देखि, नैन, फिर, नीचे डारे * कहत,लाज,अनुचित,चुप-मारे॥
बोली, मृग-नयनी, सकुचानी * मधुर-वचन,अम्, कोयल-बानी।
सीताः—सुंदर, सीध-सुभाऊ, गोरे * 'लषन' नाम, प्रिय देवर, मोरे॥
कविः—चंद्र-मुखी, मुख, अँचल-ढ़ांकी * पिय-तै चितइ,भौंह,करि बाँकी।
सुंदर, 'खंजन', तिरछे, नयननि * बतलाये पति-अपने, सैननि॥
भईं प्रसन्न, सुनि, अस, पुर-नारी * मानहु, लूटे रतन, भिखारी।

दोहाः—प्रेम-सहित, तब, पाउँ-परि, बहु-विधि, दीन्ह असीस।
११८. नारीः—रहौ सुहागिनि, जब तलक, धरती, 'शेष' - के-सीस॥

'पारवती'-सम, पिय की प्यारी * होहु, न दीन्हेउ, हमहिं, विसारी।
{ फिर,फिर,विनय करत,कर-जोरी * यह मारग, जो, लौटहु, फेरी॥
{ दीन्हेउ दरस, जानि-निज-दासी *समुझि सिया,सबप्रेम-की-प्यासी।
कविः—मधुर-बचन कहि.धीर्ज बँधाये * मनहु, चाँदिनी, फूल खिलाये॥

तब, 'लछिमन, 'रघुबर'-रुख-जानी* पूंछी मग, लोगन्ह, मृदु-बानी।
सुनत, नारि, नर, भये दुखारी * खडे रोम, जल, आँखिन, जारी॥
मिटा हर्ष, मन, भये मलीने * दई, लेतु, जनु, संपति छीने।
समुझि करम-गति, धीरज कीन्हा* सीधी-राह, सोचि, कहि दीन्हा॥

दोहाः—'लषन', 'जानकी' सहित, तब, कीन्ह गवन, 'रघुनाथ'।
११९. करि-विंती, लौटाइ सब, मन लीन्हे, प्रभु, साथ॥

फिरत, नारि, नर अति पछिताहीं * भागहिं दोस देत, मन माहीं।
नर-नारीःदुखित, एक-सन, यक, बतलाहीं* ।विधि-करतव, उलटे, जग माहीं॥
{ निपट कठोर, निडर अति, विधिना* रोग, कलंक दीन्ह, चनदरमा।
कल्प-वृच्छ, जढ़, सागर खारा * ते, पठये बन, राजकुमारा॥
जो विधि, इन्हैं, दीन्ह बन - बासू * रचा काहि, जग, भोग, बिलासू।
नँगे-पाउं, फिरत बन रामा * वृथा, जगत-के-बाहन नाना॥
परत भूमि, डारे - कुस-पाता ! * क्यों करि सुंदर सेज, बिधाता !
तरे - वृच्छ, जो, बास कराये ! * क्यों, श्रम-करि, ये महल रचाये!॥

दोहाः—जटा बढ़ाये, जो पहिर, मुनि - जामा सुकुमार।
१२०. सुंदर, जग, भूपन, बसन, व्यर्थ, रचे कर्तार॥

ये सब, कंद मूल, फल, खाहीं * अमरित-सम, भोजन, जग माहीं।
कहत एक, यह सहज सुहाये *प्रगट, आप-भे, 'विधि'-न-बनाये॥
{ विधि'-करतूति, वेद कही, भाई ! * देखी, सुनी, सो जानी जाई।
चौदह लोक, नजर, हम डारी * ना ऐसे नर, ना अस नारी॥
इन्हहिं देखि, 'बृह्मा' मन, चाहा * "देखहुं, इन-सम-पुरुष, बनावा।
अति श्रम हू, नाहिं बना बनाये * जरि, इन कहँ, बन, दीन्ह छिपाये॥
कहत, एक, हम बहुत न जानत * धन्य भाग, अपने, हम मानत।
पुण्यवान सोइ, हमरे लेखे * जे देखत, दिखिहहिं, औार, देखे॥

दोहाः—यह-विधि, कहि कहि बचन-प्रिय, लावत, नयनन, नीर।
१२१. कस चलिहैं, मारग-कठिन, अति सुकुमार सरीर॥

नारी, प्रेम - के - बस, ब्याकुल * सांझ होत, जस, चकई ब्याकुल ।
कोमल चरन, कठिन मग जानी * गद-गद-हृदय, कहत, मिठ-बानी ॥
लाल-कमल, कोमल-पग, परसत * हम-समान, धरती ह्व सकुचत ।
जो, 'जगदीस', इन्हैं, वन - दीन्हा * क्यों, फूलन की राह न कीन्हा!॥
जो, 'बृह्मा', मांगा-वर देई * आंखिन, रहहिं, चहव, हम, पही ।
कवि:-जे नर नारि, न अवसर आये * सो सिय राम, देखि नहिं, पाये ॥
सुनि स्वरूप, पूछहिं, अकुलाई * "कहँ लगि, पहुँचे हुइहैं, भाई!" ।
दौरन-लायक, देखहिं, जाई * लौटहिं, हुइ-प्रसन्न, फल-पाई ॥

दोहाः—नारी, बालक, कपिल-जन, कर मीजहिं, पछिताहिं ।
१२२. होहिं प्रेम-बस लोग अस, राम, जहाँ-जहँ, जाहिं ॥

गाँव-गाँव, अस, होइ अनंदू * देखे 'सूरज - कुल - के-चंदू' ।
जेहि, ये समाचार, सुनि पावहिं * 'दसरथ', 'केकइ', दोस लगावहिं ॥
कहत एक, अति-भलि, भूपालू * सुफल नयन, लखि 'दीन-दयालू' ।
करत, परस्पर, लोग-लोगाई * बातैं, सरल, सनेह, सुहाई ॥
"ते-पितु-मात, धन्य, जे जाये * धन्य सो नगर, जहाँ-ते, आये" ।
"धन, सो-देस, सैल, वन, गाऊँ * जहँ-जहँ, जाहिं, धन्य सो ठाऊँ" ॥
"राचि, 'बृह्मा', सुख पायो, तेही * जेहि के सीता राम सनेही" ।
मारग की, सब कथा, सुहाई * रही सकल मारग, वन, छाई ॥

दोहाः—रघुकुल-सूरज, राम, अस, मग, लोगन, सुख-देत ।
१२३. जात, चले, बन-बन-लखत, 'सीता'-'लषन'-समेत ॥

पाछे 'लषन', औ, आगे, 'रामा' * सोहत, तन, कस, तपसी-जामा ! ।
दोउन-बीच, 'सिय' सोहत, कैसे * बृह्म-जीव - बिच, माया, जैसे ॥
'कामदेव', यक, रितु-'बसंत', मनु * 'काम'-नारि, 'रति', बीच-दोउन, जनु ।
आगे, 'बुध', पाछे, 'चंदरमा' * 'सिया', 'रोहिणी', चलत, संध्य-मा ॥
डरत, राम - पग - चिन्न्ह-बचाये * धरत, सिया, पग, बीच, सुहाये ।
देखि, राम-सिय - चिन्न्ह-बचायें * चलत, 'लखन', दाहिनें, कहुँ, बायें ॥

'राम','लषन','सिय'प्रीति,सुहाईं * दीखि न बानी, ना कहि पाईं ।
खग, मृग,मगन,देखि-छवि,होहीं * राम,चुराइ, चलत, चित लेहीं ॥
दोहाः—राह-गीर, जिन जिन लखे, सिया - सहित, दोउ-भाइ ।
१२४. कठिन - मार्ग, आवागवन, बिन - श्रम, रहे छुटाइ ॥
{ अजहूँ, जिन-के - मन, सो झांकी*'राम'-'सिया'-बन गवन-की,बांकी।
राम - धाम - मारग, हैं सोईं * ढूंढ़, पावत, मुनि, जेहि, कोई !॥
तब, रघुबीर, थकी - प्रिय-जानी * देखि एक 'बर', सीतल - पानी ।
तहँ, बसि, कंद - मूल-फल - खाईं * प्रात, नहाइ, चले 'रघुराईं' ॥
देखत बन, गिरि, ताल, सुहाये * 'बालमीकि'-आश्रम,'प्रभु'आये ।
देखा, मुनि - अस्थान, सुहावन *सुंदर गिरि,बन,जल,अति-पावन॥
झीलन, कमल, पेड़, वन, फूले * गूँजत मस्त-भँवर, रस-भूले ।
मृग, पक्षी, कोलाहल करहीं * छांड़ि वैर, आनँद-सों, चरहीं ॥
दोहाः—सुन्दर-आश्रम, देखि के, भे प्रसन्न भगवान ।
१२५. सुना राम-कर-आगमन, आये, मुनि, अगवानि ॥
'मुनि' कहँ, 'राम,' दंडवत कीन्हा * आसिरवाद,'मुनी,'तिन्ह,दीन्हा ।
देखि-राम-छबि, नयन जुड़ाने * करि सन्मान, कुटी पहँ, आने ॥
थके-प्रान-प्रिय, परे दिखाईं * दै आसन, 'मुनि', सबहिं बिठाईं ।
कंद मूल फल, मधुर, मँगाये * 'राम',सिया,'लक्ष्मिन'फलखाये ॥
'बालमीकि'-मन, आनँद-भारी * मंगल-मूरति, नयन, निहारी ।
तब, कर-कमल, जोरि, रघुराई * बोले वचन, सुनत, सुखदाईं ॥
रामः—तीन-काल-की, जानत, नाथा ! * 'बेर'-समान, जगत, तुम-हाथा! ।
कविः-असकहि,प्रभु,सबकथा,बखानी * जेहि-जेहि भांति,दीन्हबन,रानी ॥
रामः- दोहाः—पिता-बचन, फिर, मात-हित, भाइ-'भरत'-कहँ राज ।
१२६. मिली, पुण्य-ते, बात, सब, और, दरस-महराज ॥
देखि चरन, मुनिराज ! तुम्हारे * भे, सुकर्म सब, सुफल हमारे ।
हे, मुनि ! अब, जहँ, आज्ञा होई * रहे, कष्ट, मुनि, पाइ-न-कोई

तपसी, मुनि, जिन-ते, दुख पावहिं * ते-नृप, बिना-अग्नि, जरि जावहिं ।
ब्राह्मण, राजी रहैं, तौ, सब सुख ! * करे-क्रोध, कुल जारहिं, सब दुख ! ॥
अस जिय, जानि, कहिये सो-ठाऊँ *'लछिमन' 'सिया'-सहित जहँ जाऊँ ।
रचि, पातिन-ते, कुटी, मनोहर * करहुँ, वास, कछुकाल, मुनीश्वर ! ॥
कविः-सुनि, सीधी, रघुबर-की-बानी * 'हाँ', 'हाँ', 'अच्छा' कह मुनि-ज्ञानी ।
बालमीकिः कस, न कहौ अस, सीधा-साधा ! * पालत, सदा, वेद-मर्यादा ! ॥

छंदः—तुम, वेद-रक्षक, 'राम' ! हौ भगवान, माया, 'जानकी' ।
जो रचत, पालत, जगत, मारत, निरखि-रुचि-भगवान-की ॥
संसार - मालिक, सर्प-नायक, हैं 'लषन', धरती-धरे ।
सुर-काज, दुष्टन-हतन-हित, धरि-राज-तन, तुम सब चले ॥

सो०:—राम ! सरूप तुम्हार, बानी, औ, बुध, ते परे ।
१२७. को पावे, कहि, पार, थके वेद, महिमा-कहत ॥

जगत - तमासा, देखन-हारे ! * विधि'-'हरि'-'संभु'-नचावन-वारे ।
तेहु न जानत, मर्म-तुम्हारा * फिर, को, तुम्हरा-जानन-हारा ॥
सोइ जानै जेहि, देहु जनाई * जानत-तुमहिं, तुमहिं-हुइ-जाई ।
तुम्हरीहि-कृपा, तुमहिं, रघुनंदन ! * जानहिं भगत, भगत-उर-चंदन ! ॥
चित - आनंद - भरी, तुम-देही * शुद्ध-हृदय, जिन्ह, पावहिं, तेही ! ।
नर-तन धरेउ, देव मुनि-काजा * कहत, करत, जनु जग-के-राजा ॥
राम, देखि, सुनि, चरित-तुम्हारे * हँसत मूर्ख, बुधि होत-सुखारे ।
जो, तुम करहु, कहौ, सब-सांचा ! * जस-कछनी, तस, चाहिये नाचा ॥

दोहाः—पूँछत, मो ते, "कहँ रहौं", मैं, पूँछत, सकुचाउं ! ।
१२८. जहँ-न-होहु, तहं, देहुं कहि, कौन बताऊं ठाउं !! ॥

कविःसुनि, मुनि-वचन, प्रेम-रस-साने * 'राम', सकुचि, मन-मँह, मुसुकाने ।
'बालमीकि', हँसि, बोले बानी * मधुर, मनोहर, अमरित-सानी ॥
बालमीकिःसुनहु, राम ! एते-अस्थाना * बसहु, 'लषन'-'सिय'-सँग, भगवाना !।

जिनके कान, समुंदर-नाईं * आपु-कथा, जनु, नदीं-सुहाईं ॥
चले, रात-दिन, भरि नहिं पाईं * तुम्हरे-योग्स्थान, गोसाईं !।
लोचन, पपिहा, दरसन, बादर * तकत,बूँद कहँ,जिन्ह,करि-आदर॥
नदी-ताल-जल, लागत खारी * स्वांति-रूप-के-बूँद, सुखारी।
तिन्ह लोगन-हृदय, सुखदायक * सुभ-अस्थान,बसहु,रघुनायक ! ॥

दोहाः—मान - सरोवर, राम-जस, जीभ - हंसिनी, जासु।
१२६. गुन-रूपी, मोती चुनत, बसहु, राम ! मन-तासु ॥

राम-प्रसाद, सुगंधित - बासा * प्रेम-सहित, सूँघत जे, नासा।
भोग लगाइ, जो, भोजन करहीं * पट,भूषन, पहिराइ के पहिरहिं ॥
सुर गुरु, बृह्मण, देखि, नवत जे * प्रीति सहित।फिर,विनयकरत,ते।
हाथ, करत, जिन्ह-कर,प्रभु-पूजा * हृदय, राम-भरोस, न-दूजा ॥
जिन के चरन, तीर्थ, चालि,जाहीं * बसहु, राम ! तिनके,मन माहीं।
मंत्र-राज, नित, जपत, तुम्हारा * पूजत तुमहिं, सहित-परिवारा ॥
तरपन, होम करत,विधि-नाना * बिप्र जेंवावत, दै दै दाना।
तुम-ते-अधिक, गुरू, जियँ-जानी * सेवत, रुचि सों,जो, सनमानी ॥

दोहाः--मांगत, बस,जो, एक-फलः 'तुम्हरे - चरनन - प्रीति'।
१३०. तिनके मन-मन्दिर, बसहु, 'सीता' - 'लषन' - समीत ॥

काम, क्रोध, मद,मान न मोहा * ममता, बैर, न छोभ न लोभा।
जिनके छल, न, कपट,ना, माया * तिनके हृदय,बसहु, रघुराया ! ॥
सब-के-प्रिय, सब के हितकारी * दुख-सुख, एक, बड़ाई-गारी।
कहहिं बचन,प्रिय,सत्य-बिचारी * सोवत, जागत, सरन-तुम्हारी ॥
तुम-सिवाय, रक्षक, कोउ नाहीं * बसहु, राम ! तिन के,मन माहीं।
जिनहिं, मात-सम, नारि-पराई * दुसरन-धन, विष-ते-अधिकाई ॥
दुसरन-संपति, देखि, सुखी जे * विपति-पराई, देखि, दुखी, जे।
जिनहिं, राम !तुम, प्रानन-प्यारे * तिन्ह-मन, बसिवे-योग, तुम्हारे ॥

दोहाः—स्वामि, सखा, पितु, मात, गुरु,जिनके सब-तुम.तात ! ।
१३१. तिन के, मन महँ जा, बसहु, सिया सहित, दोउ भ्रात!! ॥
अवगुन-तजि, सबके गुन गहहीं * विप्र-धेनु - हित, संकट सहहीं ।
नीति-वान-महँ, जिन-की-गिनती * करहुवास,तिन्ह-मन,यह विनती॥
गुन-तुम्हार, मानहिं निज - दोसा * जेहि,सब भांति,तुम्हार-भरोसा ।
राम-भक्त, प्रिय लागहिं, जेही * तेहि मन,बसहु,सहित-'वैदेही' ॥
जाति, पांति, धन, धरम, बड़ाई * अपन - कुटुंभी, घर, सुखदाई ।
सब तजि, रहहिं, चरन, लौ-लाई * तिन के हृदय, बसहु,रघुराई ! ॥
स्वर्ग, नर्क, औ मोक्ष, न जाना * सब-महँ, 'धनु-धारी'-पहिचाना ।
करम, वचन, मन, दास-तुम्हारा * करहु वास तहँ,सोउ-मन-प्यारा॥
दोहाः—जाहि न चाहिये,कबहुं कछु, तुम - सन, सहज, सनेह ।
१३२. तिन के मन,तुम बसि,सदा, घर तुम्हार है, तेहि ॥
कविः—'बालमीकि', अस ठाउँ बताये * प्रेम - बचन,प्रभु - के·मन-भाये ।
वा.मी.:कह'मुनि',सुनहु,'सूर्यकुलनायक'!*आश्रमकहौं,समय-सुखदायक॥
'चित्रकूट' - पर, बसि, रघुराई * सब-विधि,तहां,रहौ सुख पाई ।
सुंदर, बन, परवत, सुहावना * बिचरत,जीव-जंतु, मन-भावना ॥
नदी, पुनीत, पुरान - बखानी * 'अनसूया',तप-ते, जेहि, आनी ।
'मंदाकिनी', 'गंग' ते आई * पाप-नसावत, अति - सुखदाई ॥
अत्रि रिषी, औरहु मुनि बसहीं * करत योग,जप तप,तन कसहीं ।
तिन्ह-श्रम, होय सुफल रघुराई ! * 'चित्रकूट हू' पाइ बड़ाई ॥
कविः—दोहाः—'चित्रकूट'-महिमा अधिक, 'बालमीकि', कहि गाइ ।
१३३. 'राम','लषन'.-'सीता'-सहित, गे, तहँ, नदी - नहाइ ॥
'सुंदर - घाट' ! कहा, रघुराई * बसहिं कहां, बोलहु, हे भाई ! ।
लषनः—उत्तर - घाई, नदी · किनारा * धनु-समान, तहँ, घूमा - नारा ॥
नदी, तांत, और, तीर हैंः दाना * [१]सम,[२]दम,[३]कलियुग-पापःनिसाना।
चित्रकूट - गिरि, तीर - चलावत * एक-बान, सब-पाप-नसावत ॥

कविः अस कहि,'लषन',ठाउं-दिखरावा * देखि ताहि.'रघुबर' सुख पावा ।
रमेउ - 'राम' - मन देवन जाना * लिये - इन्द्र, आये, असथाना ॥
भील-वेष-धरि - धरि, सब आये * खर, पाती, लै लै, घर छाये ।
सकत न कहत, रची, दुइ कोठी * एक वड़ी, सुंदर, यक, छोटी ॥
दोहाः—'लषन'-'जानकी'-सहित,'प्रभु', राजत, तहां, अनूप ।
१३४. रितु-वसंत, सँग-नारि - 'रति', 'कामदेव', मुनि - रूप ॥
देव, नाग. किन्नर, दिगपाला * चित्रकूट, आये, तेहि-काला ।
सबहिं, प्रनाम कीन्ह, रघुराई * भे प्रसन्न, नयनन-फल-पाई ॥
फूल वर्षि, कह, देव-समाजू * नाथ!'सनाथभये,हम,आजू!" ।
करि विनती, दुख-अपन सुनाये * हर्षित,निज निज-धाम सिधाये ॥
'चित्रकूट' रघुनंदन' छाये * समाचार,सुनि-सुनि,मुनि आये ।
मुनिन भीर, देखी, जब, आई * कीन्ह दंडवत, उठि, 'रघुराई' ॥
मुनि,'रघुवरहिं',लाइ, उर, लेहीं * आसिरवाद, सुफल कहि, देहीं ।
'राम'-'लषन'-'सीता' -छविदेखत * सफल-अपन-जप-तप,सबलेखत ॥
दोहाः—जथा-जोग, सनमान करि, प्रभु, पठये मुनि-वृंद ।
१३५. लगे करन, जा, आश्रमन, जप-तप, अति-आनंद ॥
जब, भीलन हू, यह सुधि पाई * हर्षें, जनु संपति, घर, आई ।
कंद-मूल, फल, भरि भरि दोना * चले भिखारी, लूटन सोना ॥
तिन महँ, जिन देखे, दोउ भ्राता * तिनहिं, लोग पूँछत, मग-जाता ।
कहत, सुनत, रघुवीर-बड़ाई * सब पहुँचे, देखा 'रघुराई' ॥
करत जोहार, भेंट, धरि आगे * प्रभुहिं,विलोकत,अति अनुरागे ।
चित्र - लिखे - से, रहि गे, ठाढ़े * पुलकि सरीर, नयन, जल-बाढ़े ॥
'राम', सनेह - मगन, सब जाने * कहि,प्रिय-वचन,सबहिं सनमाने ।
प्रभुहिं जोहारि, बहोरि - बहोरी * विनय-बचन, बोले, कर-जोरी ॥
भीलः—दोहाः—भे सनाथ,हम,नाथ ! अब, चरनन - दरसन - पाइ ।
१३६. आये, हमरे - भाग - ही, बन, चलि, 'कोसल - राय' ॥

धन्य भूमि, बन, राह, पहारा * जहँ-जहँ, नाथ चरन तुम, धारा ।
धन पक्षी, मृग, विचरन - हारे * सुफलजनम भे, तुमहिं-निहारे ॥
हम सब धन्य, सहित-परिवारा * दीख दरस, भरि-नयन, तुम्हारा ।
कीन्ह बास, भल - ठाउं विचारी * इहां, सकल-रितु, रहब सुखारी ॥
हम, सब-भांति, करब सेवकाई * बाघ, सर्प और, सिंह बचाई ।
बन, पहार, खोहैं, रघुराई ! * हम तौ, यक-यक जानत. भाई ॥
जहघन, तुमहिं, सिकार-खिलाउब * झरना, और, जल-ठाउं दिखाउब ।
हम परिवार, दास, सब जाने * दीन्हेउ आज्ञा, बिनु-सकुचाने ॥

कविः-दोहाः—बेद, और मुनियन, अगम, ते, 'रघुबीर - कृपाल' ।
१३७. सुनत, पिता-सम, भील के, बचन, कहत - जनु - बाल ॥

एक, प्रेम - ही, रामहिं, प्यारा * जानि लेहु, जो जाननहारा ।
प्रेम - बचन, कहि, राम सुहाये * बन - बासी, सनतुष्ट कराये ॥
बिदा कीन्ह, सिर नाइ, सिधाये * प्रभु-गुन, कहत, सुनत, घर, आये ।
यहबिधि, 'सिया'-सहित, दोउभाई * लागि बसन, सुर-मुनि-सुखदाई ॥
जय ते. आय, रहे 'रघुनायक' * भा बन, तब ते, मंगल-दायक ।
फूलहिं, फलहिं वृक्ष, बिधि-नाना * चढ़हिं बेल, जनु तँमबू-ताना ॥
कलप-वृक्ष सम, वृक्ष सुहाये * देवन-बाग, छांड़ि, जनु आये ।
भँवरा, बांधि-झुंड, गुंजारत * तीनहुँ-ब्यारिचलत, सुख-लावत ॥

दोहाः—नीलकंठ, पपिहा, सुआ, चकवा, मोर, चकोर ।
१३८. बोलत-बोली, अति-मधुर, भाँति-भाँति, चित-चोर ॥

कपि, गज, सिंह, सुअर और हरना * संग-संग, बिचरत, कछु-डर-ना ।
देखे, छबि-'रघुबीर'-सिकारी * भाजत-हरन-न, होत-सुखारी ॥
जो, देवन-के-बन, जग माहीं * देखि, राम-बन, सकल सिहाहीं ।
'गंगा', 'सरस्वती', और 'यमुना' * 'गोदावरि', 'नर्मदा' ते, कम-ना ॥
सिंधु, सरोवर, नदी और नारे * 'मंदाकिनी', सराहहिं, सारे ।
'उदयाचल', परवत, 'कैलासू' * गिर-'सुमेरु', जहँ, देवन-बासू ॥

औरहु-परबत, सहित-'हिमाला' ❋ गावत, 'चित्र-कूट'-जस,आला।
'विंध्याचल', मन, सुख-न-समाई ❋ बिनु-श्रम, पाई, अधिक-बड़ाई॥
दोहाः—'चित्रकूट' - पक्षी, पसू, वृक्ष, बेल, और, पात।
१३९. पुण्य-की - पूँजी, धन्य हैं, कहत देव दिन - रात॥
अँखियारे, देखत रघुराई ❋ चिन्ता जात, जनम-फल-पाई।
चरन-धूरि-धारत, बिन-नयना ❋ मोक्ष-अधिकारी. कहत-बनै-ना॥
सो बन, सील-सुभाउ, सुहावन ❋मंगल-रूप,औ,अति-अति-पावन।
केहि-विधि,महिमा,कहिये,तासू! ❋ सुख-सागर,जहँ, कीन्ह निवासू!॥
'अवध', छीर-सागर, तजि, भाई ❋ जहँ, प्रिय-राम लषन, रहे आई।
सकहिं न वन-सोभा, कहि पाई ❋ सौ-हजार 'सेषहु' तौ, भाई! ॥
सो, मोते,केहि-विधि,कहि जाई? ❋ कछुअहु ते, परवत उठि पाई!॥
सेवत 'लषन', करम, मन, बानी ❋ जात न, सील, सनेह, बखानी॥
दोहाः—छिन,छिन,लखि सिय-राम-पद, जानि अपन - पर - नेहु।
१४०. सपने, 'लषन' न सुधि करत, मात, पिता, घर, केहु॥
'राम'-संग,'सिय' रहत सुखारी ❋'अवध'-कुटुंभ-घर-सुरति-बिसारी।
छिन, छिन,प्रिय-मुख-चंद्र-निहारी❋ 'सिय'-चकोर-मन,रहत सुखारी॥
दिन-दिन,वढ़त,'राम'-'सिय'-चाहत❋सुखी,'सिया'-चकई,दिन-वाढ़त।
'सिय'-मन, 'राम'-चरन अनुरागा ❋लाख-अवध-सम,यक-वन,लागा॥
पिय-सँग, पातिन - कुटी, सुहाई ❋ खग,मृग,प्रिय,परिवारऔ,भाई।
मुनी, ससुर, सासू, मुनि-नारी ❋ अमरित-सम, भोजन-फलहारी॥
नाथ-साथ, कुस - सेज, सुहाई ❋ 'काम'-सेज-सम, अति सुखदाई।
मिलत 'इन्द्र'-पदवी, लखि-जेही ❋ भला, भोग, कह मोहे, तेही!॥
दोहाः—सुमिरत रामहिं, तजत नर, जब, सब - विषय बिलास।
१४१. जग-माता, रामहिं-प्रिय, तजा, तौ, बात-न-खास॥
'सिया','लषन',जेहिविधिसुखपाहीं❋ सोइ रघुनाथ, करहिंऔकहहीं।
कहत, पुरानी-कथा, कहानी ❋ सुनत,'लषन','सिय'सुख,मन,मानी॥

जब,जब,'राम''अवध'-सुधि करहीं * आँसू-जल, नयनन महँ भरहीं ।
सुमिर कुटुँभ, मात, पितु, भाई * 'भरत'-सनेह-सील-सेवकाई ॥
कृपा-सिंधु, प्रभु, होहिं दुखारी * धीरज धराहिं, कुसमय-विचारी ।
'लषन','सिय',प्रभु की दोउ छाहीं * रामहिं विकल दोखि,विकलाहीं ॥
'सिय','लखन'-गति,लखि'रघुनंदन * धीर, कृपालु, भक्त-उर-चदंन ।
लगहिं कहन, कछु कथा पुनीता * सुनि,सुखपाहिं'लखन' और'सीता'॥

दोहाः—'राम','लषन','सीता',कुटी, बासि, अस सोभा देत ।
१४२. 'अमरपुरी'मा,'इन्द्र', जस, नारी - पुत्र - समेत ॥

राखत प्रभु,'सिय','लषनहिं',कैसे * पलक, नयन की पुतरी, जैसे ।
सेवत'लषन','सिया', 'रघुवीरहिं' * जस, अज्ञानी, अपन सरीरहिं ॥
यहविधि,प्रभु,बन,बसहिं,सुखारी * तपसी - देव - जीव- हितकारी ।
कविः—कहेउ, राम-बन-गवन-सुहावा * सुनहु,'सुमंत्र', अवध',जस,आवा॥
फिरेउ 'निषाद', 'राम' - पहुँचाई * रथ, 'सुमंत्र', देखे दोउ, आई ।
मंत्री - व्याकुल, लखा 'निषादू' * कहि न जाइ,जस भयो विषादू ॥
राम, राम, सिय, लषन पुकारी * हुइ व्याकुल, धरती महँ,डारी ।
दखिन - मुख, घोरा हिहिनाहीं * ज्यों, पच्छी, बिनु-पर,अकुलाहीं ॥

दोहाः—खात घास, ना, जल पियत, बहत, नैन, जल - धार ।
१४३. व्याकुल भयो 'निषाद', तब, घोरन - दसा निहारि ॥

निषादः-धरि धीरज,तब,कहा 'निषादू' * मंत्री ! त्यागहु, हृदय - विषादू ।
बुरा, भला, सब के तुम ज्ञाता * कह अधीर भये,टेढ़ विधाता! ॥
बहुत कथा, कहि मं:ट सुनाई * पकरि के, रथ, बैठारेहु, आई ।
सुन्न अंग, रथ, बनत न हांकत * रघुबर - बिरह, करेजा फाटत ॥
तरफरात, मग चलत न घोरे * हिरन जँगली, जनु, रथ जोरे ।
अड़ई, चलत, कहुँ देखहिं पीछे * छुटे'राम',जिय,दुख,अति-तीछे ॥
'लषन','राम','सिय',नामजोलेहीं * हिनहिनाय सो, देखहिं, तेहीं ।
विरह-दसा, कछु, कही नँ जाई * मनि-के-गये सर्प, जस, भाई ॥

दोहाः—भयो 'निषाद', विषाद-बस, देखि 'सुमंत्र', तुरंग।
१४४. सेवक, चारि, बुलाइ के, करि दीन्हे, तेहि-संग॥

कछुक - दूर - मंत्री - पहुँचाई * फिरा,विकल,'गुह',कहा न जाई।
चले 'अवध', रथ हाँकि, निषादा * छिन,छिन,मनमहँ,करत विषादा॥
सुमंतः-मंत्री सोचि, दुःख-का-मारा * विना राम, जीवन धिक्कारा।
जैहहि यक दिन, अधम - सरीरा * लीन्ह न जस,विछुरत-रघुबीरा॥
प्रान! पाप, अपजस, तुम काहीं * अबहूँ तन महँ,निकसत नाहीं!!॥
मन! मूरख! कस अवसर चूका * हृदय! अबहुँ हुइ जा दुइ टूका॥
कविः—मीजिहाथ,सिरधुनि,पछिताहीं* गांठी, जनु, कनजूस कटाई।
साजि, कोउ, शूर-बीर कहिलाई * जा,रन, लौटहि, पीठि-दिखाई॥

दोहाः—नामी, ज्ञानी, ऊँच - कुल, वेद - पढ़ा, कोउ विप्र।
१४५. धोखे मा, मदिरा पियै, तस, 'सुमंत' - दुख, भिन्न॥

सती, कुलीन, चतुर, जस, नारी * तन, मन, ते, पति, देव-विचारी।
देहि छांड़ि पति कहँ, भावी-बस * भा,'सुमंत',के हृदय, दुख,तस॥
तिलमिलाहिं, नैनन, जल जारी * फूटे कान, गई, मति, मारी।
सूखे होंठ, औ, मुँह, कुम्हिलाना * लौटन-आस, रुके, तन, प्राना॥
रंग-भंग, नाहिं, जात निहारी * आयो, मारि, मनहु, महतारी।
व्यापत, मन, अस, हानि गलानी * 'जम-पुर'-मग, जस,पापी-प्रानी॥
सुमंतः—बोल न सकत, हृदय, पछिताई * 'अवध', कहा, हम देखब जाई!।
बिना-राम, रथ, दिखिहहिं जोई * मैं सकुचैहौं, देखत, सोई॥

दोहाः—दौर, पूँछिहहिं, मोहिं जब, सकल, नगर-नर-नारि!।
१४६. उत्तर, देब, मैं, सबहिं तब, हृदय, बज्र-बैठारि!!॥

दुखित-भये, पुँछिहहिं, सब माता * तिनसन,कहिहौं कहा, विधाता!।
पुँछिहहिं,जबहिं 'लषन'-महतारी * कहिहौं, कवन,सँदेस, सुखारी!॥
राम-मात, जब, ऐहहिं, धाई * सुमिरे - बछरा, गौ - बियाई।
पूँछन, उतर देब, हम, तेही * गे बन 'राम', 'लषन', 'बैदेही'॥

जो पूँछै, यहि उत्तर देहूँ * जाय 'अवध', अव यह सुख लेहूँ।
पूँछहिं जब, भूपति, दुख-दीना * जिन्ह-जीवन, रामहि-आधीना॥
कहिहौं कहा, कौन-मुँह-लाई! * "आयों कुसल, कुँअर, पहुँचाई!!।
सुनत 'लषन', 'सिय', 'राम' सँदेसू * तिनका-सम, तन, तजहिं नरेसू॥

दोहाः—फाटि न हृदय, जो काँच-सम, सूखि गये दृ नीर।
१४७. नर, भोगत, जस, दुःख, मरि, तस, विधि, जिये, शरीर॥

कविः-करत, मनहिं-मन, अस, पछितावा * 'तमसा'-नदी तीर, रथ आवा।
विदा कीन्ह, करि विनय, 'निषादा' * फिरेउ, पाउँ परि, विकल-विषादा॥
घुसत नगर, मंत्री सकुचाही * जनु, मारा गुरु, वाम्हन, गाई।
वैठि, पेड़-तर, दिवस गँवावा * भई साँझ, सोइ, अवसर पावा॥
पैठा, नगरी महँ, अँधियारे * गयो महल, रथ - छाँड़े, द्वारे।
जिन, जिन, समाचार, सुनि पाये * भूप - द्वार, रथ, देखन आये॥
विना-राम-रथ, व्याकुल - घोरे * देखि, गले, जस, धूप मां, ओरे।
नगर-नारि - नर, व्याकुल, कैसे * पानी · सूखत, मछरी, जैसे॥

दोहाः—'आयो-मंत्री, जब, सुना, विकल भयो, रनिवास।
१४८. राज महल, तौ अस लगा, मानहु, प्रेत-निवास॥

विकल, खड़ी, पूँछत सव रानी * कहत न वनत, विकल भइ बानी।
कान, न सुनै, नैन, नहिं सूझा * कहउ, कहां, नृप? जेह-तेह, बूझा॥
दासिन, लखि 'सुमंत'-विकलाई * कोसल्या - घर, गईं, लिवाई।
जाइ, 'सुमंत', दीख, कस, राजा! * विनु-अमरित, जनु, चंद्र विराजा॥
उतरे- भूषन, सेज - ते - न्यारे * मन-मलीन, धरती महँ, डारे।
ऊँची-सांस लेत, यह-भांती * 'इन्द्र-पुरी'-ते, गिरा, 'जजाती''॥
सोचत, भरि-भरि-आवत, छाती * जनु, जरि-पंख, परा "सँपाती"।
राम, राम, कहि, राम, सनेही * कहां, राम, लछिमण, वैदेही!॥

दशरथः-दोहाः—कहि जय, मंत्री, दंडवत कीन्ही, करि प्रनाम।
१४६. सुनत, उठेउ, व्याकुल, नृपति कहु, सुमंत! कहँ राम?॥

कविः—भूप, 'सुमंत्र' लीन्ह उर लाई * बूड़त, कछु-अधार, जनु, पाई ।
अति सनेह ते, तीर, बिठारा * पूँछत, नयनन, आँसू-धारा ॥
दशरथः-राम-कुसल कहु, सखा! सनेही * कहँ रघुनाथ', 'लषन', 'वैदेही'? ।
लायो, फेरि, कि, बनहिं, सिधाये * सुनि, 'मंत्री', नयनन, जल छाये ॥
सोक-विकल, फिर, कहा, नरेसू * लायो, उन कर, कछु-सँदेसू? ।
राम-रूप, -गुन-सील-सुभाऊ * सुमिरि सुमिरि, मन, सोचत राऊ ॥
{ राज सुनाय, दीन बन-बासू * सुनि, मन, भयो न हर्ष, हिरासू ।
{ सो-सुत-बिछुरत गये न प्राना * को पापी, जग, मोहिं-समाना!! ॥
दोहाः—सखा, राम-सिय-लखन, जहं, तहाँ, मोहिं, पहुँचाउ ।
१५०. नहीं, चला, यह, प्रान अब, कहत मैं, सत्यहि भाव ॥
फिर-फिर, पूँछत, मंत्रीहिं, राऊ * प्रिय! तुम, सुत सनदेस, सुनाऊ ।
करहु, सखा! सोइ, वेग, उपाई * देहि 'राम' 'सिय', 'लषन' दिखाई ॥
सुमंत्रः-धरि धीरज, कह, कोमल-बानी * महाराज ! तुम, पंडित, ज्ञानी ।
बीर, औ, धीरज-धारी-राजा * सदा, सेइ, तुम साधु-समाजा ॥
{ जनम-मरन, सब, दुख-सुख-भोगा * हानि, लाभ, प्रिय-मिलन, वियोगा ।
{ काल-करम-वस, मिलि, सब, खोई * जस दिन, रात रात-दिन, होई ॥
मूरख, सुख-प्रसन्न, दुख, बिलखत * धीर, समान, न-दुखित, न-हर्षत ।
धारहु धीरज, ज्ञान-बिचारी * तजहु सोच, राजा हितकारी ॥
दोहाः—प्रथम-वास, 'तमसा' भयो, दूसर, 'गंगा' -तीर ।
१५१. करि-स्नान, जल-पी-रहे, 'सिय'-सहित, दोउ बीर ॥
केवट, कीन्ह बहुत सेवकाई * 'शृँगवेरपुर' रैन गँवाई ।
भोरहिं, बरगद-दूध मंगावा * जटा-मुकुट, निज-हाथ, बनावा ॥
राम-सखा, तब नाव मँगाई * 'सियहि'-चढ़ाय, चढ़ रघुराई ।
लषन, बान-धनु लिये, सुहाई * चढ़े, पाछे प्रभु-आज्ञा-पाई ॥
{ देखि विकल, मोका रघुबीरा * बोले, मधुर-वचन, धरि धीरा ।
{ जाइ, प्रनाम, पिता-सन कहेउ * चरन-कमल, तुम, फिरि-फिरि गहेउ ॥

कीन्हेउ विनती, मोरी - ओरी * करहिं पिता, जनि चिन्ता मोरी ॥
वन महँ, मंगल, कुशल, हमारे * कृपा, अनुग्रह, पुण्य, तुम्हारे ॥
छंदः—तुम्हरी कृपा ते, तात, मैं, बन जात, सब सुख, पाइहौं ।
करि, बचन-पूरे, कुसल, चरनन - के-दरस - हितु, आइहौं ॥
माता, सकल, समुझायो, परि-परि-पाउँ, करि बिनती, घनी ।
तुलसी, करेउ, सोइ जतन, जेहि-विधि, कुसल रहिं कोसल-धनी ॥
सो०ः—गुरु सन, कहेउ सँदेस, बार. बार, चरनन - परे ।
१५२. देहिं, ऐस - उपदेस, मोर - सोच, पितु, त्याग दें ॥
प्रजा, कुटुँभी, सबहिं, निहारी * तात ! सुनायो, विनती मोरी ।
जानि हौं ताहि, अपन हितकारी * जेहि-मन, राजा, रहँ-सुखारी ॥
कहेउ सँदेस, 'भरत' - के-आये * तजहिं न नीति, राज-के-पाये ।
पालहिं प्रजा, करम, मन, बानी * मातन - सेवा, एक-सी-जानी ॥
करि, पितु - मात-सुजन, सेवकाई * अस निवाहेउ, जस. भाई-भाई ।
राखहिं पिता, 'भरत', यह भाँती * मोरी-चिन्ता, जरहि न छाती ॥
क्षेपक { कह 'लषन', कछु वचन-कठोरा * "कहेउ न, जा, सो" कीन्ह निहोरा।
मोहिं, अपन-सौगंद-दिवाई * अबहीं, 'लषन', जानि, लरिकाई ॥ }
दोहाः—कहि प्रनाम, 'सीता', कछू, कहन चही, तौ, वात ।
१५३. रुकी जीभ, आँसू चले, पुलकि, प्रेम-सों, गात ॥
तेहि अवसर, रघुवर-रुख पाई * केवट, पारहिं, नाव चलाई ।
रघुकुल-तिलक, चले, यह-भाँती * देखेउं ठाढ़, बज्र-धरि, छाती ॥
कहौं, कौन-विधि, अपन-कलेसू * जियत, फिरा. लै-राम सँदेसू ! ।
कवि:-कहि 'सुमंत्र', अस, चुप रहि गयेऊ * हानि-सोच-परि, वे-बस भयेऊ ॥
मंत्री-बचन. सुने, जब, राऊ * गिरे, भूमि-महँ, मन, अति-दाहू ।
जरति, मोह, राउर-मन छायो * मीनहिं, मांझा-रोग, सतायो ॥
करि विलाप, सब, रोवत, रानी * महा-विपति, कस, जाय बखानी! ।
सुनि विलाप, दुख हूँ, दुख लागा * धीरजहू - कर - धीरज भागा ॥

दोहाः—मचा, 'अवध',कुहराम-अति, उठा, महल-ते, शोर ।
१५४. जनु, पक्षिन-के-बन, गिरा, रात-मां, वज्र कठोर ॥
भूपति-प्रान, कंठ मँह, आये ❋ व्याकुल, ज्यों, मनि,सर्प, गवाँये ।
सिथल भई, सब इन्द्री, ऐसी ❋ सूखे - पानी, मछरी, जैसी ॥
दीख दसा, 'कौसल्या', आई ❋ लखि, 'कुल-सूरज-डूबा' जाई ।
धीरज धारि, राम - महतारी ❋ बोली बचन, समय-अनुसारी ॥
कौसल्याः-करहु नाथ!मन,ऐसविचारा ❋ राम-विरह, यक सिंधु, अपारा ।
'अवध, नाव, और, आप खेवैया! ❋ अवध-वासी, सब, नाव-चढ़ैया ॥
धीरज धरहु, तौ, पैहहु पारा ❋ नाहिं तौ,डूबा, सब परिवारा ! ।
राखहु चित जो, बिनती-मोरा ❋ 'राम','लषन',सियमिलहिं,बहोरा॥
कविः—दोहाः—मीठ - बचन - रानी - सुने, चितये, नैन - उघारि ।
१५५. तलफत-मछरी, दीन्ह, जनु, ठनडा - पानी - डारि ॥
दसरथः—धरिधरिज,उठिबैठि,'भुआलू'❋ कहु,'सुमंत्र'!कहँ'राम'-कृपालू? ।
कहाँ 'लषन', कहँ, राम-सनेही ❋ कहाँ, बहू, प्यारी - बैदेही ? ॥
कविः-बिलपत राउ,विकल,बहु-भाँती ❋ जुग-सम भई, कटत नहिं राती ।
अंधे - तपसी - की - सुधि आई ❋ दीन्ह श्राप, जो, कथा, सुनाई ॥
कहत, कहत, भे विकल, कहानी ❋ बिना राम, जीवन धिग जानी ।
दसरथःराखहुँफिर,असतन,क्यों,हा!हा!❋ मोर-प्रेम-प्रन,जेहि,न निवाहा ॥
हा, रघुनंदनि ! प्रानन - प्यारे ! ❋ जी,तुम-बिन, बहु-दिना गुजारे! ।
हा,'सीता'!'लछिमन',हा,'रघुवर! ❋ पिता-चित्त-पपिहा के जलधर !॥
कविः—दोहाः— राम, राम कहि, राम कहि, राम - राम, कहि राम ।
१५६. तन - त्यागे, रघुबर - बिरह, गये, राउ, सुर - धाम ॥
जियन-मरन-फल, दसरथ पावा ❋ लोक-लोक-महँ, तेहि-जस छावा ।
राम-चंद्र-मुख, जियत निहारा ❋ मरत, राम-रटि, मरन सँभारा ॥
सोक-विकल, सब रोवहिं रानी ❋ रूप, सील, बल, तेज, बखानी ।
करहिं बिलाप, अनेक प्रकारा ❋ गिरि-धरती,और,खाय-पछारा ॥

बिलखहिं सकल दास, और, दासी * घर-घर-रोवत, सब पुर - बासी।
"डूबा, आज, सूर्य-कुल-भाना" * "धरम-रूप, और, गुन-अस्थाना"॥
यक-यक, केकई, गारी देही * सब जग, आँधर कीन्हा, जेही।
यह-विधि, बिलपत, रैन बिहानी * होत भोर आये, गुरु ज्ञानी॥

दोहा:—तब, 'बसिष्टि'-मुनि, समय-के, कहि-कहि बहु-इतिहास।
१५७. सोक मिटायो, सब्हन-कर, आपन-ज्ञान प्रकासि॥

नाव, तेल-भरि, लास डुबाई * बोले अस दूतनहिं बुलाई।
बसिष्ट:-जाहु 'भरत'-पहँ, दौरत, जाहू * मरन-खबरि, पर, कहेउ न काहू!॥
या ही कहेउ, 'भरत-सन', जाई * "गुरु, बुलाय-पठये, दोउ-भाई"।
कवि:-आज्ञा-पाय, दूत, अस, धाये * देखि चालि, घोरहु सरमाये॥
भये अनर्थ, अयोध्या, जब ते * असगुन होत, भरत कहँ, तब ते।
रातन, देखि, भयँकर-सपने * जगि, सोचत, बहु-विधि, मन-अपने॥
विप्र जेंवावत, दै, दै, दाना * पूजत 'महादेव', विधि-नाना।
यह वर मांगहिं, शिरहिं-सनाई * "कुल, पितु, मात, कुसल रहैं भाई"॥

दोहा:—यह विधि, सोचत, 'भरत', मन, दूतहु, पहुँचे - आइ।
१५८. गुरु - आज्ञा - सुनि, उठि, चले, तुरत, 'गनेस'-मनाइ॥

चले, पवन - से, घोडा, हांके * बन, पहाड़, और, नदी, नांघे।
बहुत सोच, मन, कछु-न-सुहाई * चाहत पहुँचन, पंख - लगाई॥
यक-पल, एक-बरस - सम, जाई * जस - तस, नगरी, परी दिखाई।
घुसत नगर असगुन भे नाना * बोलत काग, असुभ-अस्थाना॥
गधा, सियार, बुरे - ढँग, बोलत * उठत सूल, सुनि सुनि, मन डोलत।
नदी, ताल, और, बाग, बगीचे * काटत नगर, लगत सब फीके॥
पसु, पक्षी, कोउ, देखि न जाइ * राम - विरह - के - रोग - सताई।
नर, नारी, सब, लगत दुखारी * मानहु, सब, सब - संपति-हारी॥

दोहा:—निकसत, पुरबासी, मिलत चुप, सिर - नावत, जाहिं।
१५९. बदत दुःख, और, भय, 'भरत', पूंछत - कुसल, डराहिं॥

हाट - बाट, नहिं जात निहारी * दीन्ह अग्नि, कोउ नगरी,मारी ।
आवत सुत, सुनि, 'केकइ' रानी * हर्षी, रघुकुल-कमल-चाँदिनी ॥
लिये - आरती, दौरि, आइ * द्वारे, मिलि, घर कहँ, लै जाई ।
देखा, दुखी, 'भरत', परिवारा * कमलन-वन, जनु पाला-मारा ॥
'केकई,' मन, ऐसी हर्षाई * जस भीलिनि, वन,अग्नि लगाई ।
'भरत' - उदास देखि, मन-मारे * पूंछत 'नैहर, कुसल, हमारे ? ॥
सकल-कुसल,कहि,'भरत' सुनाई * पूंछी, घर-की, कुसल - भलाई ।
भरतःकहु,कहँ,तात,कहाँ,सबमाता?*कहँ,'सिय','राम','लखन' 'प्रिय-भ्राता॥
कविः—दोहाः—प्रेम - वचन-सुनि, पुत्र-के, झूँठे - आँसू लाइ ।
१६०. भरत - कान-मन-सूल सम, कह पापिन, बिलखाइ ॥
केकईः—तात ! बात,मैं,सबहि सँभारी * कीन्हा हित, 'मंथरा', विचारी ।
विधि,कछु,बीचहिं,काम, बिगारा * भूपति, स्वर्ग-धाम, पग धारा ॥
कविः—सुनत,'भरत',असभय,दुख,भयेऊ*सिंह-गरज-सुनि,जनु,गज सहमेऊ
"तात ! तात ! हा,तात"!पुकारी * गिरे, भूम-महँ, खाइ-पछारी ॥
भरतः—चलत, न देखन पायों, तोहीं * तात ! न रामहिं, सौंपा,मोहीं !।
कविः— धरा धीर, फिर, उठे,सँभारी * मृत्यु-कारन, पूँछा, महतारी ॥
सुनि सुत-वचन, कहत, 'कैकेई' * किये-घाउ, जनु, विष-भरि-देई ।
कही, छोर-ते, आपन-करनी * कुटिल,कठोर,खुसी-मन,वरनी ॥
दोहाः—'भरत', भूलि गे पितु-मरन, सुनत, राम - वन - वास ।
१६१. आपुहिं, वन-कारन समुझि रहि-चुप, भये उदास ॥
देखि,'भरत'-ब्याकुल, समुझावत * मनहु, जरे - पर, नोन लगावत ।
केकईः-तात !राउ,नहिं सोचन - योगू * बड़ - पुराय, सब, भोगे, भोगू ॥
जीते - जी, उन, सब - फल, पाये * मरि हू, ते, सुर-धाम, सिधाये ।
पूत ! जानि अस, धीरज धरहू * सहित-समाज, राज,अब,करहू ॥
कविः सुनि अस,सहिमेउ,राजकुमारा * पके-घाउ, रखि दीन्ह, अँगारा ।
भरतः—धरि-धीरज, लै लम्बी - साँसा *कह,पापिन!सब-बिधि,कुलनासा॥

इच्छा रही, बुरी, अस, ताही ! * मारि न डारा, जनमत, मोही ।
काटि - पेड़, तू, पालउ सींचा * जल, मछरी - आधार, उलींचा ॥
दोहाः—सूरज - कुल, दसरथ - पिता, 'राम', 'लषन' - से भाइ ।
१६२. माता ! मोरी - मात, तुम, विधि से, कहा बसाइ !! ॥
ठानी कुमति, हाय, कुल-घाती ! * भई न, टूँका - टूँका, छाती ।
भई न, बर मांगत, ताहिं, पीरा ! * गिरी जीभ, क्यों परे, न, कीरा ! ॥
क्यों, विस्वास, तोर, नृप कीन्हा * मरन-समय, विधि, मति, हरिलीन्हा।
नारी - गति, 'बृह्माहु', न जानी * अवगुन, छल, और कपट की खानी ॥
सील - धरम, अति सीधे, राऊ * कस समुझत, हा! नारि 'सुभाऊ' ।
अस, को जीव - जंतु, जग माहीं * जेहि, 'रघुनाथ', प्रान-प्रिय, नाहीं' ॥
सोइ, लागे, तोकहँ दुसमुन * है, तू, कौन, दुष्ट ! कहु, सुनु! सुनु ।
है-लो-है, अब, करि, मुँह - कारा * जा ! आंखिन-तें हट, कुल तारा ॥
दोहाः—राम-विरोधी - कोख - ते, कीन्ह जनम, विधि, मोर ।
१६३. मो-समान, को, पातकी, व्यर्थ, दोष, कहुँ, तोर ॥
कविः-सुनि, 'शत्रुहन', मात-कुटिलाई * जरत, क्रोध-ते, कछु-न-बसाई ।
तेहि अवसर, 'कुबरी', तहँ, आई * गहने, कपरा, अँग, सजाई ॥
लखि 'कुबरी', औरहु-रिस आई * जरत-अग्नि, मानहु, घी पाई ।
उछालि, लात, दै, कूबर, मारी * कुबरी, गिरि-धड़ाम, चिक्कारी ॥
फूटा सिर, और, कूबर टूटा * दाँतहु टूटे, लोहू छूटा ।
कुबरीः—हाय, राम, मैं, कहा बिगारा ! * मिला बुरा फल, नीक विचारा ॥
कविः-जानि, 'शत्रुहन', अँग-अँग खोटी * लागि घसीटन, पकरी चोटी ।
'भरत', दयालू, दीन्ह छुड़ाई * कौसल्या पहँ, गे, दोउ भाई ॥
दोहाः—दुख-सों-दूबरि, विकल अति, मैले - वस्त्र, उदास ।
१६४. कल्प - वृक्ष - की-बेल, भइ, पाला - मारी - घास ॥
देखि-'भरत', माता, उठि, धाई * गिरि, अचेत, भुइं, चक्कर खाई ।
देखत, 'भरत', बिकल भये भारी * सुधि-बुधि, तन-की, अपन, बिसारी ॥

भरतः—मात ! पिता कहँ ? देहु, दिखाई ❋ कहँ, 'सिय' 'राम' 'लषन', दोउभाई।
क्यों जनमी, 'केकई', कुल-घाती ! ❋ जनमे, कहूँ, बांझ, हुइ-जाती ! ॥
कुल-कलंक, तेहि जनमा, मोही ❋ अपजस-गठरी ! सब-कुल-द्रोही ! ।
को अभाग्य, मो-सम, संसारा ❋ जेहि-कारन, यह हाल तुम्हारा ! ॥
पिता-मरन, बन, राम-निकासन ! ❋ सब अनरथ कर, मैं, यक कारन ! ॥
जीवन, थू दइ कुल-बन, आगी ❋ भयो, दोस, और, दुख-कर, भागी ॥

कविः—दोहाः—'भरत'-वचन, कोमल, सुनत, उठी मातु, बिलखाय।
१६५. लिये उठाय, लगाय उर, नैनन महँ, जल-लाय ॥

सीध-सुभाउ, मात, उर लाये ❋ अस-हित, लौटि, 'राम', जनु, आये।
भेंटेउ - मात, 'लषन' - लघु-भाई ❋ सोक, प्रेम, नहिं, हृदय समाई ॥
देखि - सुभाउ, कहत सब कोई ❋ 'राम-मात, क्यों ना, अस होई' ! ।
माता, 'भरत' - गोद - बैठारे ❋ पोंछि-आंसु, मिठ-बचन उचारे ॥
कोसल्याः—मैं, बलि, बच्चा ! धीरज धारहु ❋ समुझि-खोट-समय-दुख त्यागहु।
जनि पछिताहु, समुझि, मन, बेटा ! ❋ होनहार, कहुँ, मिटत है, बेटा ॥
देहु दोस, मत, केहु, ताता ! ❋ सब-विधि, टेढ़ा, भयो विधाता ! ॥
दै अस दुख, राखा मोंहि बच्चा ! ❋ आगे, कह जाने, हरि-इच्छा ॥

दोहाः—गहने, कपड़ा, तजि दिये, पितु - आज्ञा, 'रघुवीर'।
१६६. भयो न सोक, न हर्ष, कछु, पहिरे छालन - चीर ॥

मुख - प्रसन्न, मन, हर्ष, न क्रोधा ❋ दीन्ह, सबहिं, संतोष, प्रबोधा।
राम-गवन सुनि, सिय, सँग, लागी ❋ रुकी न, राम-चरन-अनुरागी ॥
सुनतहि, 'लषन' चले, उठि, साथा ❋ रहे न, समुझायो—'रघुनाथा'।
राम, लषन, सिय, बनहिं, सिधाये ❋ गई, न संग, न, प्रान, पठाये ॥
यह - सब देखा, नयनन - आगे ❋ तहूं न निकसे, प्रान, अभागे ! ॥
लाज न, मोंका, प्रेम - निहारी ❋ राम-से-सुत, की, मैं, महतारी ॥
जियें, राउ, भलि, मरे, भलाई ❋ मैं, पाथर, जी, ना, मरि, पाई।

कविः—दोहाः—कौसल्या के वचन, सुनि, भरत-सहित, रनिवास।
१६७. व्याकुल, विलपत, राज-घर, मानहु, सोक-निवास॥
भरत, शत्रुहन, दोउ बिलखाहीं ❋ राम-मात, छाती, चिपटाहीं।
'कौसल्या', 'भरतहिं', समुझाई ❋ ज्ञान-भरे, बहु बचन सुनाई॥
लौटि, 'भरत', 'मातहिं' समुझावा ❋ वेद - पुरान - इतहास सुनावा।
सीधे-वचन, पवित्र, पौर, भोरे ❋ बोल भरत, दोउ - कर-जोरे॥
भरतः— पाप, मातु, पितु, सुत के मारे ❋ गौसाला, बृह्मन - घर, जारे।
पाप, जो, स्त्री, बालक मारे ❋ विष-ते, राजा, मित्र, सँहारे॥
पाप, और, महापापहु जेते ❋ करम, वचन, मन, उपजत, तेते।
तौ ये, सब, मोहिं, देइ विधाता ! ❋ यह मत-भरत, होय जो, माता॥
दोहाः—'विष्णू', 'शिव' के चरन तजि, भजत भूत, जो, घोर।
१६८. तिन-की-गति, मोहिं देइ, विधि, होइ, जो, यह मत मोर॥
बेंचहिं वेद, धरम, दुहि लेहीं ❋ दुसरन-पाप, चुगुलि, कहि देहीं।
छली, टेढ़, झगराल्, क्रोधी ❋ वेद न मानत, जग-कर-विरोधी॥
जिनके, लालच, लोभ, चलाकी ❋ जिन, दुसरन-धन, नारी, ताकी।
बुरी-दसा, इन-की-सी, हो री ! ❋ जो, माता! यह हो मत मोरी॥
जिन, संतन से, प्रेम न कीन्हा ❋ परमारथ - मग, पाउं न दीन्हा।
भजत न हरि, मानुष - तन-पाई ❋ 'विष्णू', 'शिव' कर सुजस न भाई॥
वेद-मार्ग - तजि, उलटे, चलहीं ❋ धरि-धरि-वेष, जगत कहँ, ठगहीं।
तिनकीगति, शंकर, मोंहिं दीन्हेउ! ❋ जनतहुँ होहुँ, जो, कह, कस, कीन्हेउ॥
कविः—दोहाः—मात, 'भरत'-के वचन-सुनि, साँचे, सीधे, जानि।
१६९. कौसल्याः काया, मन, और, वचन से, कहत, राम तुम प्रान॥
राम, प्रान - के - प्रान, तुम्हारे ❋ तुम, रघुवीरहिं, प्रान-ते - प्यारे।
दे विष, चंद्र, अग्नि ठंडाई ❋ जल-जीवहु, बिन-जल, रहि जाई॥
ज्ञान ते, होइ मोह, कहे कोई ❋ राम-शत्रु, पर, भरत न होई।
जो, यह राय, बतावे, तोरी ❋ सकहि न पुण्य, न, सुभ-गति, जोरी॥

कविः-असकहिमात,'भरत',हियलाये ❋ छाती, दूध, नयन, जल छाये।
करत विलाप बहुत, यह भांती ❋ बैठहि, बीति गई, सब राती॥
भोरहिं, 'बामदेव', 'गुरु', आये ❋ पुरजन, मंत्री लीन्ह बुलाये।
मुनिन,'भरत',बहु-बिधि,समुझाये❋ परमारथ, सुभ वचन, सुनाये॥
गुरुः—दोहाः—तात ! हृदय, धीरज, धरहु, करहु, जो, अवसर, आज।
१७०. कविः—उठे 'भरत', गुरु-बचन-सुनि, कहा करहु सब काज॥
वेद-रीति, नृप-तन, अन्हवावा ❋ सुन्दर, एक - बिमान, बनावा।
गहि-पद, 'भरत' मातु सब रोकी ❋ भईं न सती, प्रभु-दरसन-भूखीं॥
चनदन, अगर, ढेर, मँगवाये ❋ और-सुगंधि - पदारथ, आये।
'सरजू'-तट, रचि, चिता बनाई ❋ सीढ़ी, जनु वैकुंठ, लगाई॥
यह विधि,दाह-क्रिया, सब कीन्ही ❋ करि अस्नान, तिलांजलि दीन्ही।
देखि सास्त्र, और, वेद, पुराना ❋ कीन्ह 'भरत' 'दसगात' विधाना॥
गुरु-'वसिष्ठ', जस,आज्ञा दीन्हा ❋ सौ-सौ-भाँति, 'भरत' सब कीन्हा।
भये सुद्धि. दिये दान, सँभारी ❋ गौ, हाथी, घोड़ा, असवारी॥
दोहाः—गहने, कपड़ा, अन्न, धन, सिंहासन, अस्थान।
१७१. पाये, बृह्मण भे सुखी, दीन्ह, 'भरत' जो दान॥
कीन्ह'भरत',जेहि-विधिपितु-करनी❋ लाखहु-मुख,नाहिं,जात,सो,बरनी।
साइत सोधि, गुरू, तब, आये ❋ मंत्री, जन, परिवार बुलाये॥
बैठे, राज - सभा, जब आई ❋ 'भरत' 'शत्रुहन', लीन्ह बुलाई।
भरतहिं, गुरू, निकट, बैठारे ❋ नीति - धरम- के-बचन-उचारे॥
पहिले, गुरू, कथा सब बरनी ❋ केकई,कुटिल,कीन्ह,जस,करनी।
भूप-सत्य, और धरम सराहा ❋ 'त्यागा तन, पर, प्रेम निबाहा॥
कहा राम - गुन - सील, सुनाई ❋ खड़े-रोम, नयनन, जल लाई।
'लषन'-'सिय',फिर,प्रीति,बखानी ❋ सोक, सनेह मगन,मुनि-ज्ञानी॥
गुरुः—दोहाः—"होनहार, हुइ-के-रहत, कहा, बिलखि, मुनि-नाथ।
१७२. हानि, लाभ, जीवन, मरन, जस, अपजस, विधि-हाथ॥

को, केहि कहँ, फिर, दोस लगावे * क्यों, व्यर्थ, रिस, हृदय, बढ़ावे।
तात ! विचार करहु, मन माहीं * राजा, सोचन - लायक नाहीं ॥
जो, बृह्मण - हुइ, वेद न जाने * विषय-भोग, लौ-अपन, लगावे।
फिर, राजा, जो नीति, न जाने * प्रान-समान, प्रजा, ना-माने ॥
वैश्य, पाइ - धन, गांठी - बांधे * होइ न भक्त, न, 'शिव' आराधे।
शूद्र, जो, विप्रन - दोस, बखानी * टर्रा, मान - चहै, अभिमानी ॥
करहि, पती सँग, छल, फिर, नारी * कुटिल, लड़ांका, खुद-मुखतारी।
फिर, तजि-बृह्म-चर्य, बृह्मचारी * होइ न गुरु-कर - आज्ञाकारी ॥

दोहाः—धरे - गृहस्थी, मोह - बस, करम - मार्ग दे त्याग।
१७३. संन्यासी, झगरन - फँसे, छाँड़े ज्ञान, विराग ॥

तपसी होइ, तपस्या त्यागे * चाहै भोग, औ, तप ते, भागे।
बिना-बात, फिर, जेहिं रिसिआवे * वैर, मात, पितु, गुरु सन, भावे।
दुसरन - केर - बुरा, जो चाहे * गरज, आपनी, दया न आवे ॥
सोचहि, इन लोगन कहँ, कोई ! * और जो, ताजि छल, भक्त न होई।
भूप, न -सोचब - लायक, भाई ! * चौदह-लोक, जासु-जस-छाई ॥
भयो, न है, नहिं होवनहारा ! * भूप, 'भरत' ! जस, पिता-तुम्हारा।
'बृह्मा', 'विष्णु', 'शिव', हर्षाये * लोकपाल, दसरथ-गुन-गाये ॥

दोहा—कहौं, तात ! केहि-भांति, कोउ, करहि बड़ाई, तासु।
१७४. 'भरत', 'लपन', और 'शत्रुहन', 'राम' भये सुत जासु ॥

बढ़-भागी, सब-बिधि, भूपति जे * व्यर्थ, सोच, यह-लायक नाहिं ते।
दूरि, सोच, अस-जाने, करहू * भूप-कही, मानहु, सिर, धरहू ॥
राउ, राज, तुमहीं कहँ, दीन्हा * वचन, सत्य, तुम का चही कीन्हा।
राखि-बचन, बन, राम - पठाये * विरह-अग्नि, जरि, प्रान गँवाये ॥
प्रानहु-से-बढ़, वचनहिं जाना * अवस, वचन-तेहि, चहिये माना।
धरि-सिर, आज्ञा, पालहु, भाई ! * सब-बिधि, यह मा, सुघर-भलाई ! ॥
'परसुराम', पितु-आज्ञा पाली * अस-पाली, माता - लागि-मारी।

पुत्र, 'जजातिहिं', दीन्ह जवानी * भया न अपजस, ना कछु हानी ॥

दोहाः—बुरी, भली, पितु की कही, मानत, बिना - विचार ।
१७५. तिन्ह, सब सुख, और, जस, मिलत, देत स्वर्ग, कर्तार ॥

भूप-कही, करि सत्य, दिखावहु * छाँडहु सोच, प्रजा, अब, पालहु ।
परलोकहु, 'राजा', सुख पैहहिं * मिलै पुण्य, कोउ बुरा न कहिहहिं ॥
वेद कहत, और, लोगन दीखा * जेहि, पितु देत, सो, पावत टीका ।
करहु राज, तजि-दुख, हर्षाई * गुरु-के-वचनन, समुझि भलाई ॥
होयँ प्रसन्न 'राम', 'वैदेही' * कहै बुरा, नहिं, पंडित, कोई ।
'कोसल्या', और, सब महतारी * देखि प्रजा-सुख, होइं सुखारी ॥
'राम'-'भरत'-बिच, प्रेमहिं जानी * मानहिं भला, भला - पहिचानी ।
सौंपेहु राज, 'राम' - के - आये * कीन्हेउ सेवा, प्रेम - लगाये ॥

मंत्रीः–दोहाः—करहु, भरत ! जो, कह-गुरु, कह, मंत्रिन, सिर - नाइ ।
१७६. लौटे-राम, जो, हो - उचित, कीन्हेउ, जैस सुहाइ ॥

कोसल्याःधरिधीरज, कह 'कोसल-रानी' * गुरु - आज्ञा, हितकारी-जानी ।
आदर, करहु कहा - मुनि-ज्ञानी * काल, करम की गति, पहिचानी ॥
रघुपति, बन महँ, स्वर्ग मा, 'राऊ' * और, तुम बेटा! अस, घबराहू !।
मंत्री, प्रजा, मात, परिवारा * सब कहँ, तुम्हरा, एक सहारा !॥
विधि-गति, जानि, काल-कठिनाई * धीरज धरहु, मात, बलि जाई ।
सिर, धरि, गुरू-कहा, सो, करहू * प्रजा-पालि, सब-कर-दुख, हरहू ॥
कविः–मंत्रिन-विनय, गुरू-के-वचना * हितकारी, पर, 'भरत', सुने ना ।
अति - कोमल - बानी - महतारी * भरी-प्रेम, अति - सीधी-साधी ॥

छंदः—माता की बानी, प्रेम-सानी, सुनि, 'भरत', व्याकुल-भये ।
आँसू चले, आंखिन-ते, जनु, सींचत विरह-अंकुर-नये ॥
वह समय, देखी, जिन, दसा, सुधि-बुधि, बिसारि, सरीर-की ।
सो, कहत, 'तुलसी', धन्य भाई, प्रीति, कस, रघुबीर की ॥

सो०ः—'भरत', कमल-कर-जोरि, उर महँ, धीरज-धारि, तव।
१७७. अमरित-महँ, जनु, बोरि, दीन्ह उचित-उत्तर, सबहिं॥

भरतः–भल उपदेस,गुरू,मोहिं,दीन्हा! * मंत्री,प्रजा,सबहिं-भल चीन्हा!।
मात, सोचि, भल आज्ञा दीन्ही * धरि सिर,माथे, चाहौं, कीन्हीं॥
गुरु-पितु-मात-स्वामि-हितु- बानी * सुनहि,प्रसन्न,करहि,भलि-जानी।
बुरा, भला, जो, करहि-बिचारा * धरम जाय, बिगरहि संसारा॥
सोइ, सिख,तुम सब,दीन्हीं मोही * भला मोर, जेहि - माने, होई।
भल, समुझत, मैं, बचन-तुम्हारे! * पर, संतोष न होत, हमारे!॥
पहिले, मोर बिनय, सुनि, लेहू * फिर,जस-उचित सिखावन देहू।
उत्तर - देत, छमहु अपराधू * दुखी-दोस-गुन, लखत न,साधू॥

दोहाः— पिता, स्वर्ग, सिय-राम, बन, कहत: "करहुं, मैं राज"।
१७८. जानत, यह महँ, मोर-हित, और, आपन-बढ़-काज॥

मोरा हित, प्रभु-की - सेवकाई! * कुटिल-मात, सो, दीन्ह छुड़ाई!।
सब बिधि, सोच लीन्ह,मन माहीं * आन-उपाउ, मोर हित नाहीं॥
राज, कि, सोक, कहौ, केहि-लेखे? * लषन-राम-सिय-पद,बिन-देखे!।
बिना वस्त्र, दे, भूषन, आगी * बृह्म-ज्ञान-बिन, कहा, बिरागी॥
देही-रोगिल, कह, फिर, भोगा! * बिना-भक्ति,कह जप,कह योगा।
बिना -जीव, कह देह सुहाई! * राज,सोक,मोहिं, बिन-'रघुराई'॥
जाउँ, राम - पहँ, आज्ञा देहू * यही-भाँति, हित, और, न केहू।
राजा-करि, मोहिं, तुम, भल चहऊ * भूलि,सनेह-के-बस-हुइ, कहऊ॥

दोहाः—'केकइ'-पुत्र, निलज्ज, मैं, राम - बिमुख, मति-हीन!।
१७९. ऐसे-नीच-के राज ते, चाहत, तुम, सुख कीन!!॥

मैं, तो, निश्चय, अधम, कुकर्मी! * राजा, होन-चहीं, कोउ, धरमी।
दीन्ह राज,मोहिं,हठ-करि,हँसि-के!* पृथ्वी, जाइ, पतालहिं,धसि-के!।
को,अस-पापी,समझहु, मन-महँ !*जेहि-कारन,सिय,रामहु बन-महँ!॥
भूप, राम कहँ, बनहिं, पठाये * बिछुरत, आपन, स्वर्ग,सिधाये।

दुष्ट-'भरत', जिन-पाछे, अनरथ * बैठे, सुनत बात, नहिं अखरत॥
बिन देखे - बन, जहँ - रघुराई * रहे प्रान, सहि - लोक-हँसाई।
विषय-स्वाद, कछु,राम न जानत * जग-कर-राज, लालची चाहत॥
काठिन, मोर-हृदय, कस, भाई ! * दीन्ह, बज्र हू कहँ, सरमाई !

दोहाः—केकइ, कारन, काज, मैं, कठिन, तो, दोस न, मोर।
१८०. हाड़न - ते, पाथर कठिन, पथर - ते, लोह कठोर॥

'केकइ' -जनी-देह, लगि प्यारी * नीच-प्रान, रहि लेहिं सुखारी !।
प्रान, 'राम'-छुटि-हू, प्रिय-लागे ! * देखब, सुनब, बहुत-कछु,आगे!॥
'लषन','राम','सिय'कहँ,बनदीन्हा* पतिकहँ,स्वर्गदियो,हित कीन्हा।
भइ विधवा, सब अपजस लीन्हा *प्रजहिं,सोक,और,अति-दुख-दीन्हा॥
मोका, सुख, और, जस-कर,राजू* कीन्ह, केकई, सब-कर-काजू !।
यह-ते-बढ़,अब,कह,मोहिं,नीका !* कहत देन,तेहि-पर,मोहिं,टीका॥
उपजि, केकई - ते, जग-माहीं ! * यह,मोका,कछु,अनुचित नाहीं !॥
विधिना ही, सब बात, बनाई ! * प्रजा, पंच, क्यों ज़ोर-लगाई !॥

दोहाः—गृह - घेरे, भये - सन्न - हू, बीछी, मारहि - जाहि।
१८१. तेहि-पर, मदिरा, औषधी, भली, बताई, ताहि !!

केकइ - सुत, रह लायक - जोई * चतुर-बिधाता, दीन्हा, सोई॥
'दसरथ'-पुत्र, 'राम' - लघु - भाई * पर, यह, नाहक, दीन्ह बड़ाई॥
तुम सब, कहत, लगाऊँ टीका * भूपहु चहा, तुमहुँ कहँ, नीका।
उतर देउँ, केहि बिधि, केहि, केही * जेहि, जस नीक लगै, कहि लेई॥
छांड़ि, मोहिं, केकई - कुमाता * अस भलाई, को कीन्ही,भ्राता।
मोंका-छांडि, कौन, जग माहीं ! * जेहि,सिय-राम,प्रान-प्रिय नाहीं॥
बड़ी-हानि, समुझत, हितकारी * काहि, दोस ! तकदीर, हमारी!।
संसय, प्रेम, के बस महँ,जब,सब * जो-कछु-कहौ, ठीक है, सब,तब॥

दोहाः—राम-मात, अति-सीध, और मो-पर, प्रेम-विसेखि।
१८२. कहत, सुभाउ, सनेह ते, मोर दीनता देखि॥

गुरू, ज्ञान - सागर, जग जाना * लिये, हाथ, जग, बेर-समाना ।
तिनहूँ, तौ, यह-तिलक, सुहाता * सबहि-टेढ़, जब, टेढ़-विधाता ॥
छांडे - राम - सिय, जग माहीं * कहै, कौन, मोरी मत नाहीं ! ।
सो, मैं,सुनब, सहब, सुख-मानी * होत कींच, आखिर, जहँ पानी ॥
कहै बुरा, जग कछु डर नाहीं ! * परलोकहु कर, कछु, मन-माहीं ।
पर, यह अग्नि, मोर तन, जारी: * 'भरत-पाछे,सिय-राम,दुखारी' ॥
जनम सुफल,'लछिमन',करि पावा * सब-तजि,राम-चरन,मन लावा ।
बन - कारन, भा जनम, हमारा ! * मैं, झूँठा, पछितावन - हारा !

दोहा:—अपन, कठोर, मैं, दीनता, कहत, सबहिं, सिर - नाय ।
१८३. बिन - देखे - रघुनाथ - पद, जी - की - जरन न जाय ॥

और - उपाउ, मोहिं, नहिं सूझत * बिना राम, को जी-की, पूँछत ! ।
यह निश्चय, मोरे मन माहीं * होत भोर, चलिहौं, प्रभु-पाहीं ॥
दोस, अपन,समुझत कुल-नासन * सकल-विघन-कर, मैं ही,कारन ।
सनमुख-भये, सरन - महँ - जाई * छमहिं,कहां-लगि-नहिं,'रघुराई'॥
सील-वान, और, सीध - सुभाऊ * कृपा, प्रेम - के, घर, रघुराऊ ।
शत्रु सँग, नहिं करत बुराई * मैं शठ, लघु-सेवक - रघुराई' ॥
यह-मा, समुझि, मोर - कल्याना * देहु असीस, कहौ,मोहिं, जाना ।
सुने - अरज, जाने - सेवकाई * आवहिं,लौटि,'अवध','रघुराई'॥

दोहा:—निठुर - मात - ते, ऊपजा, दुष्ट - हृदय, बहु दोस ।
१८४. आपन - जानि, न त्यागिहैं, मोहिं, 'रघुवीर' - भरोस ॥

कवि:-भरत-वचत, सब के मन भाये * 'राम'-प्रेम-अमरित - अन्हवाये ।
विरह - सर्प - विष, के सब मारे * मनहु, मंत्र-सुनि, नयन उघारे ॥
मंत्री, मात, गुरू, नर-नारी * विकल, प्रेम-के-बस-भे, भारी ॥
'भरतहिं'-कहत, सराहि, सराही * "राम-प्रेम-की-मूरति, भाई" ! ।
लोग:-अहा,'भरत'!अस काहे न कहऊ * रामहिं प्रिय, प्रान-सम, अहहू ॥
जे नर नीच, समुझि नाहिं पाई * तुम-सिर,धरहिं मात-कुटिलाई ! ।

सौ - करोड़ - पीढ़ी-लागि, जाई ❋ रहहिं, कल्प-सौ, नरकहिं, छाई ॥

दोहाः—निश्चय चलिये, राम जहँ, कहा-'भरत', भल कीन्ह ।

१८५. डूबत, दुख - के-सिंधु-महँ, जनु, अधार, दै दीन्ह ॥

कविः-भा सब-के-मन,सुख,नहिं-थोरा ❋ बदरन - गरज, सुने जस, 'मोरा' ।

भा निश्चय, सब चलहिं, सवेरे ❋ 'भरत', प्रान-प्रिय-भे, सब-केरे ॥

'भरत','वसिष्ठि',दोउन, सिरनाई ❋ चले लोग, घर, विदा कराई ।

धन्य, भरत-जीवन, जग माहीं ! ❋ सील - सनेह-सराहत जाहीं ॥

कहत, लोग सब, 'बनिगा काजू' ❋ चलन हेत, सब साजहिं साजू ।

जिन कहँ, छांड़ा, घर - रखवारी ❋ सो समुझत,जनु,गरदनि-मारी ॥

लोगः—कहत, एक, मत छांड़हु, काहू ❋ सब चाहत, जग, जीवन-लाहू ।

दोहाः—भाइ, मात, पितु और,धन, तेहि, घर हू, बरि जाय ।

१८६. राम के सनमुख होन महं, होय न, आज, सहाय ॥

जोरे वाहन, सब, घर - केरे ❋ हर्ष, हृदय, 'बन जात सवेरे' ।

'भरत', जाइ, घर-महँ, अनुमाना ❋ गज, घोड़ा, घर, नगर खजाना ॥

रामहिं - केरी, संपाति, सारी ❋ गयो, जो, बिन-कीन्हे- रखवारी ।

अंत, न होई, मोरि भलाई ❋ पापी महा, कहैं सब भाई ॥

लाख, दोस, क्यों ना, दे, कोई ! ❋ तकहि स्वामि-हित, सेवक, सोई ।

अस विचारि, सेवक बुलवाये ❋ जिनकर-धर्म, न हलै, हलाये ॥

कहि सब मरम, धर्म समुझावा ❋ जेहि-लायक, जो, काम बतावा ।

करि सब जतन, राखि रखवारे ❋ राम-मात-पहँ, 'भरत' सिधारे ॥

दोहाः—देखि दुखी, सब मात कहं, 'भरत', प्रेम - बेहाल ।

१८७. कहा, सजावन - पालकी, मातन - हित, सुखपाल ॥

भे चकवा - चकई, नर - नारी ❋ तकत भोर कब, होहिं सुखारी! ।

जस-तस, जगि-जागि, रैन गँवाई ❋ मंत्री - चतुर, भरत, बुलवाई ॥

भरतः—कहा, लेहु, सब तिलक-समाजू ❋ रामहिं, बन, देहीं, गुरु, राजू ।

कविः 'वेग,चलेउ',सुनि,'भरत'-जोहारे ❋ गज,घोड़ा, रथ, तुरत, सँभारे ॥

लै, सामान - होम, निज - नारी * प्रथम, गुरू, चलि रथ-असवारी ।
फिर, बृह्मण, तप-तेजस्थाना * चले, बैठि-कर, वाहन, नाना ॥
नगर-लोग, सब, सजि-सजि, आये * चले, 'चित्रकूटहिं', हर्षाये ।
पालकी-सुंदर, चढ़ि-चढ़ि, रानी * चलीं, न, सोभा, जात वखानी ॥

दोहाः—सौंपि नगर, सेवकन कहँ, कहि-कहि सवहिं चलाइ ।
१८८. सुमिरि-राम - सिय-चरन, तब, चले 'भरत', दोउ-भाइ ॥

राम-दरस, नर-नारी, प्यासे * चले, मनहु, वन-गज, जल-ताके ।
समुझि, 'राम', 'सिय', दोउ, वन-माहीं * 'भरत', शत्रुहन', पाइन, जाहीं ॥
भाइन, देखि, प्रेम-महँ-पागे * पाइन चले, लोग, रथ-त्यागे ।
'भरत'-तीर, लै जाइ के डोली * राम-मातु, मृदु-बानी, बोली ॥
कौसल्याः तात! लेहु चढ़ि, चलि, महतारी! * होई, प्रिय - परिवार, दुखारी ।
चलत, पाउँ, तुम, देखत-लोगू ! * सोक-ते-दुर्बल, नहिं मग-योगू ! ॥
कविः-धरि, सिर, वचन, चरन, सिर-नाई * रथ-चढ़ि, चलत भये, दोउ-भाई ।
'तमसा'-तट, भा, पहिला-बासू * दूसर, तट-'गोमती', निवासू ॥

दोहाः—खात, दूध, फलहार, कोउ, कोउ, दिन-ही, कोउ, रात ।
१८९. करत, राम-हित, नेम, बृत, मारे, भोगहिं, लात ॥

'सई' - तीर, वसि, चले सवेरे * 'शृंगवेरपुर, पहुँचे डेरे ।
'गुह', जब, समाचार, ये, पाये * करत विचार, दुखित विलखाये ॥
गुहः-कारन कवन, भरत बन जाहीं? * है, कछु कपट-भाउ, मन माहीं !॥
जो, न होत, जी-महँ, कुटिलाई * पती-सैन, संग, क्यों, आई ! ॥
समुझा 'राम-लषन, दोउ-मारी * करइ, अकेले, राज सुखारी' ।
राज-नीति, तौ, 'भरत' न जानी ! * भा कलंक, अब, जीवन-हानी ! ॥
सब देवता, मिले - यकवारा * लरहिं, राम-ते, खाहिं पछारा ।
अचरज कहा, 'भरत', अस-ताकत * विष-की-बेल, न, अमरित, लागत ॥

गुहः—दोहाः—कह, भाइन, अस, 'गुह' समुझि; "सब, होहू हुसियार" ।
१९०. "नाव-बोरि, औंर, बांस-रखि, रोकि - घाट, तैयार" ॥

सावधान हुइ, रोकहु घाटा ! * ठाठहु, सकल, मरन-के-ठाठा ! ।
सनमुख, भरत - मोरचा, लेहूँ * 'गंगा', जियत, न उतरन देहूँ ॥
रन महँ मरब, औ, गंगा-तीरा * राम-काज, छन,मिटत सरीरा ।
मैं, जन - नीच, भरत, नृप, भाई * फिर,अस-मरन,न मिलिहु पाई!॥
स्वामी-हित, मैं लरिहौं, मरिहौं ! * चौदह-लोक,सुजस-ते,भरिहौं ! ।
तजहुँ प्रान, 'रघुनाथ'-निहोरे ! * दोउन-हाथ,सुख-लड्डू,मोरे ! ॥
{ सज्जन महँ जेहि, गिनती नाहीं * राम-भक्त, ना, जेहि, सराहीं ।
{ तेहि कर जीवन, धरती-भारा ! * मातं-वृत्त कहँ, पूत-कुल्हारा ॥

कविः—दोहाः—त्यागि दुःख, तव, भील - पति, भाइन कहँ उचकाइ ।
१६१. सुमिरि 'राम', मांगा कवच, धनु, तरकस, हर्षाइ ॥

गुहः—भाई ! बेगहि, करहु तैयारी ! * मोर - हुकुम, मत-मानेउ-हारी ।
कविःकहा,"भला,जसकहत,करबतस" * हुलकावत,एकन-यक,हँसि-हँसि ॥
चले निषाद, जोहारि - जुहारी * वीर,जिनहिं,रन, लागत प्यारी ।
सुमिरि - राम-पद-कमलन-पनहीं * तरकस-बाँधि, चढ़ाई-धनुहीं ॥
बखतर, लोह-टोप, तन पहिरहिं * फरसा, बरछी, भाला, सुधरहिं ।
कोउ, नीके, तलवार - चलावत * छांड़ि भूमि, आकास हलावत ॥
आपन, सब, सामान - बनाई * 'गुह-पति' कहँ, जोहारहिं,जाई ।
देखा योधन, लाइक - जाने * लै, लै, नाम, सबहिं सन्माने ॥

गुहः—दोहाः—धोखा, भाइ ! न खायो, तुम, आज, काज - रघुवीर ।
१६२. बोले, योधा, रिस भरे, "नाथ! न होहु अधीर" ॥

योधाः—राम-प्रताप, औ, बल-से-तोरे * मारब, भरत - के-योधा, घोरे ।
जियत, पाउँ नहिं, पाछे-धरिहैं ! * धरती, रुंड-मुंड-ते, भरि हैं ! ॥
कविः—सेना-सजी, देखि, 'गुह-राजा' * कहा;"बजावहु, रन-कर बाजा"।
इतना-कहत, छींक भइ, बायें * समुझे,'लरे, फतेह, हम, पायें' ॥
कहा, बूढ़-यक, सगुन-बुझाई * "मिलहिं'भरत',नहिंहोइ लराई"।
"रामहिं, 'भरत', मनावन, जाहीं * बोलत-सगुन,लरनि कहँ नाहीं"॥

गुहः-कहा निषाद, ठीक-कह, बूढ़ा ! * करि-जलदी, पछितावत,मूढ़ा ! ।
'भरत'-सुभाउ-सील, बिनु बूझे * होइ हानि, बिनु-जाने, जूझे ॥
दोहाः—वीरौ ! घेरहु घाट, तुम, लेत भेद, मैं, जाय ।
१६३. उदासीन, और, मित्र-बनि, तस, फिर, कहिहौं, आय ॥
पहिचानब, सभाउ - ते, नेहू * बैर, प्रीति,नहिं छिपत है, केहू ।
कविः—अस काहि, कीन्ह, भेंट-तैयारी * मछरी आदि, मूल - फलहारी ॥
मोटी, और, पुरानी मछरी * धरी कहारन, बाँधे - गठरी ।
भेंट, साजि-कर, मिलन, सिधाये * भये सगुन, मंगल, सुख पाये ॥
देखि, दूरि-ते, कहि निज-नामू * कीन्ह गुरू कहँ, दंड, प्रनामू ।
जानि राम-प्रिय, दीन्ह असीसा * कहा,'भरत'-समुझाइ, मुनीसा ।
राम-सखा,सुनि,रथ कहँ त्यागा * चले, उतरि, उमगत-अनुरागा ॥
गाउं, जाति, निज-नाम, सुनाई * 'गुह',जोहार कीन्हा,सिर-नाई।
दोहाः— करत दंडवत, देखि, तेहि, 'भरत' लीन्ह उर लाइ ।
१६४. मनहु, लषन ते, भेंट भइ, प्रेम न, हृदय, समाइ ॥
भेंटे भरत, कर, अस - प्रीती * लोग, सराहत प्रेम-की रीती ।
"धन्य" भई धुनि, मंगल-मूला * देव सराहा, बरषे फूला ॥
{ जाहि, वेद, जग, नीच-बतावत * परे, छाँह जेहि, लोग अन्हावत ।
तेहि-लपटाइ, राम - लघु - भ्राता * मिले, प्रेम-सों, पुलकित-गाता ॥
कहहि "राम", लीन्हे - जमुहाई * तेहि कहँ, पाप, न सकइ सताई ।
'गुह',तौ, 'राम', लाइ-उर-लीन्हा * कुल-समेत, जग पावन कीन्हा ॥
'करमनास'जल,'गंगहि'आवहि ! * सो-जल,सिर पर,को न चढ़ावहि।
उलटा-नाम-जपति, जग जाना ! * 'वालमीकि' भे बृह्म - समाना !
दोहाः—कोल, भील, चंडाल, कह, भंगी, कहा, चमार ।
१६५. होत सिद्ध, सब 'राम'-कहि, जानत जग संसार ॥
'गुह',पावित्र भा,अचरज नाहीं ! * राम,बड़ाई, दें, सब काहीं ! ।
राम-नाम-महिमा, सुर कहईं * सुनि-सुनि, लोग-अवध,हर्षाहीं ॥

राम-सखहिं-मिलि,'भरत',प्रेम,तब* पूँछी, षेम-कुसल, मंगल, सब।
देखि, भरत - कर-सील-सनेहू * सुधि, न रही, तन-हू की, तेहू॥
'गुह'-मन,प्रेम आनँद अति,बाढ़ा * भरतहिं, चितवत,इकटक, ठाढ़ा।
धरि धीरज, परि-पाउँ, बहोरी * प्रेम-विनय, कीन्हीं, कर-जोरी॥
गुहः-कुसल-मूल,तुम्ह-चरन-निहारे! * तीन-काल, अब, कुसल हमारे!।
मोरे-प्रभु ! दया - से - तारे ! * सौ-कुल-सहितहु,मंगल, मोरे !॥
दोहाः—मोरी-करनी - कुल-समुझि, और महिमा - रघुनाथ।
१९६. राम-चरन, जे, ना भजत, भाग, न तिन - के-हाथ॥
कायर, कपटी, कुमति, कुजाती * लोक-वेद - बाहिर, सब-भाँती।
कीन्ह राम, आपुनि, जबहीं ते * भा भूषन - लोकन, तबहीं ते॥
कविः—देखि प्रीति,सुनि विनय सुहाई * मिला निषाद,'लषन'-लघु-भाई।
लै निज - नाम,'निषाद', सुबानी * आदर - सहित, जोहारीं रानी॥
जानि'लषन'-सम,ताहि असीसत * 'रहु,सौ लाख बरस,तुम जीवत'।
देखि निषाद, नगर - नर - नारी * भये सुखी,जनु,'लषन'-निहारी॥
'यह,ही',कहत,'जन्म-फल-पायो' * 'भरत', बाँह-भरि, कंठ लगायो'।
सुनि,'निषाद', निज-भाग बड़ाई * हुइ प्रसन्न, लै चला, लिवाई॥
दोहाः—दीन्ह सैन, सेवक सकल, चले, स्वामि - रुख पाइ।
१९७. घर, वृक्षन, तालाव तट, दीन्हें बास बनाइ॥
'श्रृंगबेरपुर', 'भरत' दीख, जब * भे, सनेह-बस, सिथिल-अंग,तब।
टेकत, चलत, निषाद - सहारे * 'विनय','प्रेम', मानहु, तन-धारे॥
यह-विधि, 'भरत', सैन, लै संगा * दीख जाय, अति पावन - गंगा'।
राम - घाट - कहं. कीन्ह प्रनामू * भे, मन-मगन,मिले,जनु, 'रामू'॥
करहिं प्रनाम, नगर - नर - नारी * वृह्म-भरा - जल - देखि, सुखारी।
मांगत, करि-स्नान, कर - जोरी * 'राम-चरन महँ प्रीति,न-थोरी'॥
भरतः—कहा 'भरत', गंगे ! तुम्ह-रेती * काम-धेनु, सेवक, सुख देती।
जोरि - हाथ, बर मागहुँ, एही ! * रहौं, राम-सिय-चरन - सनेही !

कविः – दोहाः—कीन्ह, भरत, अस्नान, फिर, गुरु की आज्ञा पाइ।
१९८. मात - नहानी, जानि सब, डेरा, चले लिवाइ॥

जहँ, तहँ, लोगन, डेरा कीन्हा * सब कहँ,'भरत',बसे-लखि-लीन्हा।
गुरु-सेवा - करि, आज्ञा पाई * राम-मात - पँह, गे, दोउ-भाई॥
चरन दबावत, कहि मृदु-बानी * माता-सकल,'भरत', सनमानी।
सौंपि - भाइ, माता - सेवकाई * भरत, 'निषादहिं', लीन्ह बुलाई॥
चले-सखा-संग, कर - कर-जोरे * सिथिल-सरीर, सनेह, न-थोरे।

भरतः { सखा!मोहिं,सोठाउँ,दिखावहु! * आँखिन,मनकी,जरन,जुड़ावहु! ॥
जहाँ, राम-सिय, रात-गँवाई * कहा, 'भरत, लोचन, जल लाई।

कविः-'भरत'-वचन-सुनि,भयो विषादा * तहीं, 'भरत', लै गयो'निषादा'॥

दोहाः—जहँ, सीसम - के-पेंड़-तट, कीन्ह राम विश्राम।
१९९. प्रेम, और आदर सहित, कीन्हा, 'भरत', प्रनाम॥

कुस-की-सेज, निहारि, सुहाई * कीन्ह प्रनाम, घूमि-सो, जाई।
चरन - चिन्ह - की-धूरि, उठाई * कैस-प्रीति ! आँखिनहिं, लगाई॥
बीनि, गिरे, दुइ-चार, सितारे * समुझि-सियहि,अपने सिर धारे।
भरि-आँखिन-जल, जिय गलानी * कहत,सखा-सन, बचन, सुबानी॥

भरतः सिया-छुटे,गइचमक-सितारिन * जस,दुख-भये,'अवध-नर-नारिन'।
पिता, जनक, कस कहुँ, वैदेही * जग-सुख, रहत मुठी-महँ, जेही॥
ससुर, सूर्य-कुल-भानु,औ, राजा * करत 'इन्द्र', जिन-की, मर्यादा।
प्रान - नाथ, जिन के 'रघुराई' * देत बड़ाई, जेहि, सो पाई॥

दोहाः—नारि, सिरोमनि, पति - बृता, देखि 'सिय'-की-सेज।
२००. फाट न हृदय कठोर, जो, पाथर - हू - से - तेज !!॥

प्यार-योग, हा ! 'लषन', सलोने * भये न हैं, अस-भाइ, न होने !।
पुरजन - प्रिय, पितु - मात-दुलार * 'सिय','रघुवरहिं',प्रान-ते-प्यारे॥
कोमल - मूरति, नाजुक - देही * तात-ब्यार, लगि पाइ न, जेही।
ते, वन बसहिं, बिपति सब-भांती * दीनह लजाइ बज्र, यह छाती !॥

आइ राम, जग, कीन्ह उजागर * रूप-सील-सुख, सब-गुन-सागर।
पुरजन, कुटुँभ, गुरू, पितु, माता * राम-सुभाउ, सबहिं सुख-दाता॥
शत्रहु, राम - बड़ाई करहीं * बोलन, मिलन, विनय, मन हरहीं।
कोटि-'सारदा', कोटिन - 'सेषा'! * सकहिं न करि, 'रघुबर'-गुन-लेखा!

दोहाः—सुख - स्वरूप, रघुवंस-मनि, सुख - अनंद - भण्डार!।
२०१. कुस - बिछाइ, धरती, परत, विधि-गति, अगम अपार!!॥

कबहुँ, न 'राम' सुना दुख, काना * 'भूपति', प्रान-पेड़ - सम, जाना।
मातन राखा, कहत बनै ना * मनि, जल, सर्प, पलक, जस, नैना॥
सो, बन, पाइन, फिरत, दुखारी! * कंद - मूल-फल, करे-अहारी!।
मैं धिग, पाप-समुद्र, अभागी! * सब उतपात, भयो, जेहि लागी!॥
कुल-कलंक, मोहिं, कीन्ह विधाता! * राम-से-बैर, करायो, माता!।
कविः—सुने, प्रेम-सों, कहा, 'निषादा' * "विना-अर्थ, क्यों, करत विषादा"॥
गुहः—देहिं दोस, जो, तुम कहँ, झूँठे! * दोस न केहु, दोस-विध-रूठे।

छंदः—रूठे - दैव - करनी कठिन, जेहि केकई, अस, मति, हरी।
तुम्हरी बड़ाइ, तौ, राम कीन्ही, मुख-ते, परि-कुस-साथरी॥
तुलसी, न रामहिं, कोउ प्यारा, भरत-सम, भाई-की-सौं।
सब, अंत-महँ, हुइ है भला, धीरज धरहु, दुखिहै न भौं॥

सो०ः—अंतरजामी, 'राम', प्रेमी, हितू, दयालु, अति।
२०२. चालिये, करिये विश्राम, लाइ, मनहिं, विस्वास-अस॥

कविः—सखा-वचन सुनि, उर, धरि धीरा! * डेरहिं, चले, सुमिरि-'रघुवीरा'।
यह सुधि पाइ, नगर-नर-नारी * देखन चले, जिया, दुख-भारी॥
घुमि, घुमि करि, करहिं प्रनामा * वृथा, धरहिं केकई-के-नामा।
बार, बार, भरि आँसू, लावहिं * उलटि विधाता, दोस लगावहिं॥
एक, सराहत 'भरत' - सनेहू * 'दसरथ', एक, निवाहा नेहू।
कोसहिं अपुन, सराहिं 'निषादू' * सकत, कौन, कहि दुःख विषादू॥
जगति, रात, जब, भा, भिनसारा * उतरन लागे 'गंगा' - धारा॥

गुरु कहँ सुनदर - नाव, सुहाई ❋ मातन कहँ, नइ - नाव, चढ़ाई ॥
चारि-घरी-महँ, भे सब पारा ❋ उतरि, 'भरत' सबकीन्ह सँभारा ।
दोहाः—प्रात-कर्म करि, मात, और, गुरु-चरन, सिर नाइ ।
२०३. आगे-करे, निषाद - सब, दीन्ही सैन चलाइ ॥
'गुह' कहँ, कीन्हा, सब-ते-आगे ❋ मात - पालकी, ता - के - पाछे ।
तिनके, सँग कहँ, भाई - दीन्हा ❋ विप्रन-सहित,गवन,गुरु,कीन्हा ॥
'गँगहिं'. कीन्ह, 'भरत' प्रनामू ❋ सुमिरे 'लषन', 'जानकी','रामू' ।
'भरत' चले मग, पाउं - पियादे ❋ सेवक, घोरन - रासैं - साधे ॥
विनती करत, सो, बारम्बाराः ❋ "चलहु,नाथ! अब,हुइ-असवारा"।
भरतः—राम, तौ,नँगे-पाउँ, सिधाये! ❋ हम कहँ, घोरा, गये सजाये ! ॥
पाउँ, कहा, मैं सिर-भर, जाऊँ ! ❋ तब, सेवक-कर-धरम, निबाहूँ! ।
कविः-देखि,'भरत'-गति,सुनिमृदु-बानी❋ भये दुखी, सब, पानी - पानी ॥
दोहाः—'भरत', तीसरे - पहर - कहँ, पहुँचे जाइ 'प्रयाग' ।
२०४. कहत, 'राम-सिय, राम - सिय' भरे - उमँग - अनुराग ॥
झलकत छाला, अस, पाइन पर ❋ ओस-बूँद,जस,कमल-कलिन-पर।
चले भरत, पाइन - ही, आजू ❋ भयो दुखी,सुनि,सकल-समाजू ॥
सुना, 'भरत', सब, चुके-नहाई ❋ कीन्ह प्रनाम 'त्रिवेनी' आई ।
विधि-सौं, संगम, जाइ नहाये ❋ दिये दान, विप्रन, सिर-नाये ॥
स्यामल, गोरे, देखि, हिलोरे ❋ बोले, भरत, दोउ - कर-जोरे ।
भरतः { सिद्धि-मनोरथ - तीरथ-राऊ ! ❋ वेद कहत,जग, प्रगट, प्रभाऊ ॥
माँगत भीख, तजे-छत्री-पन ❋ करहिं न कौन कुकर्म,दुखी-जन ।
यही, समुझि-करि, जग-के-दानी ❋ सुफल करत,मँगतन-की-बानी ॥
दोहाः—चहत न भोग, न धर्म, धन, चाहत मोक्ष, न मान ।
२०५. रहे प्रीति, पद-'राम'-मह, जनम-जनम, यहि दान ॥
{ समुझहिं, 'राम', कुटिल-हू,मोहीं ❋ कहहिं, लोग, गुरु-मालिक-द्रोही।
एक, प्रेम, चरनन - महँ, मोरे ❋ दिन-दिन, बढ़इ, कृपा-ते-तोरे ॥

बादर, पपिहा-सुरति, बिसारहिं * माँगत जल, चहुँ, पाथर डारहिं।
पपिहा-रटनि, घटे, घटि-जाई * बढ़े प्रेम, सब-भाँति, भलाई॥
सोने पर रंग चढ़त, तपाये * तस, प्रीतम-पद, नेह निवाहे।
कवि:-भरत-वचनसुनि,वीच-'त्रिवेनी' * भइ बानी, सुभ, मँगल - देनी॥
त्रिवेनी:-सबविधि,सुष्ट,'भरत'!तुम ताता!*प्रेम, अथाह, चरन-जलजाता।
होहु उदास न, तुम, मन-माहीं * रामहिं तुम-सम, प्रियकोउ नाहीं॥
दोहा:—पुलिकेउ तन, जिय, हर्ष भा, 'त्रिवेनी' - अनुकूल।
२०६. "धन्य भरत" देवन कहा, बरसाये, सिर, फूल॥
हर्षें, तीरथ - राज - निवासी * गृहस्थ, ब्रह्म - चारी, संन्यासी।
करत बात, मिलि के दस पाँचा * भरत-स्नेह, सील, अति साँचा॥
सुनत-राम - गुन, परम सुहाये * 'भरद्वाज' के आश्रम आये।
देखे-मुनी, 'भरत', सिर नावा * समुझे, भाग, धरे-तन, आवा॥
दौरि, उठाय, लाइ उर लीन्हे * दीन्ह असीस, कृतारथ कीन्हे।
बैठे, आसन - पा, सिर - नाई *सकुचत,कस,मुनि,दीन्ह बड़ाई॥
मुनि,कछु पूँछहिं, यह, मन, सोचू * बोले मुनि, लखिसील, सँकोचू।
भरद्वाज:-तात,भरत!सब हाल,मैं पावा * बिधि ते, बसत न कछू बसावा॥
दोहा:—मन, मलीन, तुम, मत करहु, माता.करतब हेरि।
२०७. करत, बिचारी कह, गई, 'सरस्वती', मति - फेरि॥
ऐस - कहे, भल कहै न कोऊ * मानत वेद, शास्त्र, बुधि दोऊ।
उज्जल जस, तुम्हरा, जेहि गाई * पैहहि, वेद और,शास्त्र, बड़ाई॥
वेद, शास्त्र महँ अस लिखि आई * पिता, राज दे, जेहि सो पाई।
देत राज, तुम कहँ, बुलवाई * धरम रहत, सुख, होत, बड़ाई।
राम-गये-बन, अनरथ सारा * जेहि सुनि, दुख छायो,संसारा॥
होनिहार - बस - भूली, रानी * कीन्ह कुचालि, अंत,पछितानी।
'भरत'-दोस, जे, तनिकहु, जानी * नीच, दुष्ट, है सो, अज्ञानी॥
करत राज, तुम, होत न दोसू * सुनत, होत, रामहिं, सनतोषू।

दोहाः—कीन्ह भला, जो, बन चले, रहा उचित, यहि, तात ! ।
२०८. सब - मँगल-की, एक-जर, प्रेम - चरन - 'रघुनाथ' ॥

राम-चरन, तुम्हरे धन, प्राना * को बढ़-भागी, तुमहिं-समाना ! ।
तुम्हरा प्रेम, न अचरज, ताता ! * दसरथ-पूत, राम - प्रिय-भ्राता ॥
सुनहु 'भरत'!रघुपति-मन माहीं * प्रेम-करन-हारा, कोउ नाहीं ।
लषन, राम, सीताहिं, अति प्रीती * तुमहिं सराहि, रैन, यहँ, बीती ॥
जाना भाव, नहात - 'प्रयागा' * होत मगन, तुम्हरे-अनुरागा ।
तुम पर, अस, सनेह, 'रघुवर'के * जस,सुख जग जी,मूरख-नर के ॥
यह, न-अधिक, रघुबीर-बड़ाई * सब सेवक, पालहिं 'रघुराई' ।
तुम,तौ,'भरत'!लगत,मोहिं,ऐसे! * राम-सनेह, धरे-तनु, जैसे ! ॥

दोहाः—तुम कलंक समुझत, सोइ, हम सब कहँ, उपदेस ।
२०९. राम-भक्ति-रस - सिद्ध कहँ, भा, यह 'श्री - गनेस' ॥

नयो-चंद्र - उज्जल, जस - तोरा * राम-भक्त, सब भये चकोरा ।
रहहि सदा, डूबहि, कबहूं ना * जग-आकास, बढ़हि, दिन-दूना ॥
तीन-लोक, चकवा - भये, चहहीं * 'राम'-सूर्य, तेहि-छवि,ना हरहीं ।
निसदिन, देइ, सुःख, सब काहू * गहहि न 'केकइ,-करतब-राहू' ॥
राम - प्रेम-अमरित, है, जेहि मा * गुरु-अपमान-कलंक, न, तेहिमा ।
तृप्त होइं, भक्त, अमरित - पीकर * कीन्ह सुलभ,तुम,ला,धरती-धरि॥
'भागीरथ', 'गंगा' कहँ, लाये * मंगल - दाता, नदी, कहाये ।
'दसरथ'-गुन, कछु,कहे न जाहीं * जिन समान, कोऊ, जग, नाहीं ॥

दोहाः—जासु - प्रेम - के - वस - फँसे, 'राम', अवतरे, आय ।
२१०. 'शिव'के लोचन,देखि जिन्ह, कबहुं न, रहत अघाय ॥

तुम, ला, प्रथ्वी, चंद्र बनावा * राम - प्रेम - मृग, बीच, सुहावा ।
तजहु सोच, मन बांधहु - ढ़ारस * डरत दरिद्रहिं, पाये - 'पारस' ॥
सुनहु,भरत ! हम झूँठ न कहहीं * गरज-न-केहु-सन, तपि,बन रहहीं ।
सब साधन - फल, एक सुहावा * लषन,राम, सिय,दरसन पावा ॥

तेहि-फल-के-फल, दरस-तुम्हारा * जगेउ,'प्रयाग',सुभाग, हमारा!।
भरत धन्य, अस जस, नाहिं, काऊ * डूबे, प्रेम - मगन, मुनि-राऊ॥
कविः-सुनिमुनि-वचन, लोग हर्षाये * देव, प्रसंसि, फूल बरसाये।
भइ अकास-धुनिः"धन्य प्रयागा" *सुनि,सुनि,'भरत',मगन-अनुरागा॥
दोहाः—पुलकि-गात, जिय-राम-सिय, भरि-जल, कमल-से-नैन।
२११. करि प्रनाम, मुनि-मंडिलहिं, बोले, गद - गद बैन॥
भरतः—तीरथ,असबढ़,मुनिन-समाजा!* सांचहु-कसम-खाये ते, पापा!।
कहहिं, यहाँ, जो, बात-बनाई * पापी, अधम, न तेहि-सम, भाई!॥
कहौं, सत्य, तुम, सब-कछु जाना * रखि जिय, अँतरजामी-रामा।
मोहिं, न, मात-करतब-कर सोचू *ना दुख,समुझहिजग,मोहिं,पोचू॥
{नाहीं डर, बिगरहि परलोकू * पितहु-मरन-कर, नाहीं, सोचू।
जेहि कर पुण्य, रहा, जग, छाये * राम - लषन-से जे, सुत पाये॥
नासवान तन, जेहि तजि दीन्हा * राम-विरह,वही सोच न कीन्हा।
पर, यहि सोच, कि, नँगे-पाँई *'राम','लषन','सिय',गे,बन-माहीं॥
दोहाः—मृग-छाला, तन, खात-फल, परत भूमि, कुस, पात।
२१२. बृक्षन-तट, ठहिरत, सहत, गरमि, ठंड, बरसात॥
यह ही सोच, जरत, नित, छाती * दिन,नाहिं, भूँख,नींद, नहिं,राती।
बुरा-रोग, कछु चारा नाहीं!* सब धरती,छानी,मन माहीं!॥
{मात-कुमति, बढ़ई, दुख-मूला * कीन्ह, मोर-हित,अपन बसूला'।
बुरा-काठ, दुख का, गढ़ि-जन्तुर * 'अवध',गाढ़िदीन्हा,पढ़ि-मन्तुर॥
यह कुठाठ, मोरे - हित, ठाटा * करि दीन्हा, जग, बारह-बाटा।
मिटइ कुयोग, राम, घर - आये * अवध बसइ,नहिं आन उपाये॥
कविः-भरत-बचनसुनि,मुनि,सुखपाई * सबहि कीन्ह, बहु-भांति, बड़ाई।
भरद्वाजःकरहु,तात! ना,सोच बिसेषी * सब दुख मिटहिं,राम-पददेखी॥
दोहाः—समुझावा, मुनि और कहा, भये प्रिय - महिमान।
२१३. कंद मूल फल खाइः कछु, करहु, भरत! जलपान॥

कविः सुनि मुनि-वचन, लगे, सो, सोचन * तीरथ छत्री, और, मुनि-भोजन ।
समुझि गुरु - वचनन - गरुआई * कहा, 'भरत' अस, माथ-नवाई ॥
भरतः सिर, आंखिन पर कहा-तुम्हारा! * परम-धरम, यहि, नाथ ! हमारा ।
कविः भरत -वचन, मुनि कहं, मन भाये * सेवक, चेला, तुरत, बुलाये ॥
मुनिः-खातिर-भरत, कीन्ह, कछु, चाही * कंद मूल फल, लावहु, जाई ! ।
'बहुत भला' कहि तिन, सिर-नाये * हुइ प्रसन्न, निज-काम, सिधाये ॥
मुनिः-दीन्हा, बड़े - आदिमिन, न्योता * तस, पूजा चाही, जस देउता ।
कविः-अस सुनि, आठहु सिद्धी आई * कहा कराहिं जो कहौ, गुसाई ॥

मुनिः— दोहाः—राम-बिरह, व्याकुल 'भरत', 'शत्रुहन', सकल-समाज ।
२१४. हरहु थकाई, सभनि की, कह, प्रसन्न - 'मुनि - राज' ॥

कविः-धरि सिर, सिद्धिन, मुनि-की-बानी * अपने कहँ, बढ़-भागी-जानी ।
राम-भाइ, रिधि - सिधि हर्षाहीं * अस महिमान, कि तुलना-नाहीं ॥
"मुनि-पद"-सुमिरि, कराहिं सो आजू * "होइ सुखी, सब, राज-समाजू" ।
अस कहि, रचे, सुघर-घर, नाना * जिन-देखे, सरमात बिमाना ॥
भोग-बस्तु-ते घर, भरि दीन्हे * देवहु, ललिचावहिं, जेहि-चीन्हे ।
सब सामग्री, सेवक कीन्हे * रुचि-सों, रुचि, हाथन-महँ, लीन्हे ॥
पल ही, सब, सामान सजाई * सपनेहु, जे, बैकुंठ, न पाई ।
प्रथम, सभन कहँ, दीन्ह निवासा * जैसी, जेहि-की, तस, रुचि राखा ॥

दोहाः—भरत-कुटुँभी, भरत, कहँ, रखि, तहँ, दीन्ह निवास ।
२१५. जहँ, लीला, तप-बल-रची, 'बृह्मा' - लखे - उदास ॥

मुनि-प्रभाउ-लखि, भरतहिं, धोखा * छोटे लोकपाल, और, लोका ।
सुख-वस्तू, नहिं जाहिं बखानी * तजहिं बिराग, देखि जिन, ज्ञानी ॥
बस्त्र, सेज, आसन, समियाना * बन, बागा, पच्छी, मृग-नाना ।
फूल, और, फल अमृत-समाना * कुआँ, तलाब, बावली, नाना ॥
खान-पान, अमरित-सम, पानी * विषय, देखि, सकुचत, मन-ज्ञानी ।
काम - धेनु, सब - के-अस्थानन * कल्प-बृच्छ, 'इंद्रहु'-ललिचावन ॥

रितु-वसंत, अति सीतल-ब्यारी * सब कहँ, सहज,पदारथ-चारी।
माला, चंदन, नारि-समाजा * भा,अनंद,और,अचरजि लागा॥
दोहाः—'सँपति'-चकई, 'भरत' - चक, 'मुनी' - भील, यक - ठौर।
२१६. 'आश्रम' - पिंजरा, रात-रहि, विना - भोग, भा भोर॥

तीरथ - राजहि - जाइ, नहाये * सभन-संग, मुनि, माथ-नवाये।
मुनि-असीस - आज्ञा, दोउ, पाई * कीन्ह दंडवत, विनय सुनाई॥
लिये संग, मग - जानन - हारे * 'चित्रकूटि', मन - धरे, सिधारे।
चले 'भरत', 'गुह'-कांधे,धरि-कर * लगत, प्रेम-मूरति,जनु,धनकर॥
{ बिनु-छतुरी, बिनु - जूता, पग मा * बिनु-छल-प्रेम,धरम,बृत, नेमा।
लषन-राम-सिय - गवन - कहानी * पूंछत 'गुह',ते कहि मृदु बानी॥
राम-ठाउँ, और, वृत्त, बिलोके * मन, अनुराग, रुकत नहिं, रोके।
देखि - दसा, सुर वर्षहिं फूला * प्रथ्वी, कोमल, मग, सुख-मूला॥
दोहाः—बादर, छाया कीन्ह, और, सुंदर चलीं बियारि।
२१७. रामहुँ, दीन्हा सुख न, मग, जस, भरतहिं, करि-प्यार॥

{ जड़, चेतन, मग - जीव, घनेरे * मिले दरस, जिन्ह कहँ,प्रभु-केरे।
भये, परम - पद-के - अधिकारी * देखि-'भरत',गा दुख - संसारी॥
यह, बढ़ि-बात,'भरत'-की, नाहीं * सुमिरत,राम, जिनहिं,मन-माहीं।
एक - वेर, जो, राम - नाम - ले * आपु तरै, दूसरन, तारि दे॥
भरत, राम-प्रिय,और, लघु-भ्राता * क्या न होइ, मग, मंगल-दाता।
मुनी, सिद्ध, साधू, अस कहहीं * देखि'भरत' कहँ,मन महँ,हर्षहिं॥
देखि प्रभाउ, 'इन्द्र', भा सोचू *जग,भल,मलिन-कां,पोच-कांपोचू।
इंद्रः-गुरु-सन कहा,करिय,प्रभु!सोई * भरत-राम, जेहि, भेंट न होई॥
दोहाः—सागर, भरत, तौ, प्रेम-के, राम, प्रेम - आधीन।
२१८. बनी-बात बिगरत, गुरू! बिनु - छल - विद्या-कीन॥

'बृहस्पती',अस सुनि मुसुक्याना * नैन, सहस, पर,आंधरि जाना।
बृहस्पतीः-बोला,छल-बिचार तजु;भाई * इहाँ, कपट, नहिं चलै, चलाई॥

सेवक-भरत - राम, माया -पति * उलटी, परइ न माया, डरपत ।
टारा तिलक, राम - रुख-जानी * अब,कुचालि करि, हुइ है हानी !॥
सुनहु, इन्द्र ! रघुनाथ-सुभाऊ * निज अपराध, रिसाहिं न काहू ।
भगत-संग, अपराध, जो करई * राम-क्रोध-अग्निी, सो, जरई ॥
जानत वेद, जगत, इतहासा * राम-कोप, समुझत 'दुर्वासा' ।
को प्रेमी, जग, भरत-समाना * जपत-राम, जग,भरतहिं, रामा ॥

दोहाः—ना सोचहु, मनः राम-के, भक्त - को - बिगरहि - काज ।
२१६. दुख, अपजस,दोउ-लोक-महँ, होइ, देव - सरताज !! ॥

सुनहु, इन्द्र ! उपदेस - हमारा * रामहिं, सेवक, बहुत - पियारा ।
सुखी, देखि, सेवक - सेवकाई * करे - बैर, बैरी, रघुराई ॥
समदरसी, हर्षत, ना, क्रोधत * पाप, पुण्य,गुन, दोस,न लेखत ।
कर्म-आधीन, जगत, करि राखा*जो,जसकरहि,सो,तस फल चाखा ॥
करत, छोट - बढ़, तहुँ, बरतावा * जानि,दुष्ट, यक, भगत-सुहावा ।
निरगुन - ब्रह्म, अलेख, एक-रस * सगुन,राम भा, भक्त-प्रेम-बस ॥
राम, सदा, सेवक-रुचि राखी * साधू, देव, वेद, हैं साखी ! ।
अस, जिय-जानि,तजहु कुटिलाई * करहु भरत-पद, प्रीति सुहाई ॥

दोहाः—भक्त-हेत, बांधे - कमर, लखि - दुख, 'राम' दयाल ।
२२०. 'भरत', भक्त-सरताज, ते, क्यों डरपत, सुर-बाल !! ॥

करत कही, प्रभु, सुर-हितकारी * चलत भरत, रामहिं-अनुसारी ।
अपनी-गरज, बिकल, जनि होहू * भरत, दोस-ना ! तुम्हरा, मोहू ॥
कविः-सुने,'इन्द्र' अस, गुरु की-बानी * भे प्रसन्न, सब गई गलानी ।
बरषे फूल, हरषि. 'सुर - राऊ' * लगे सराहन, 'भरत'-सुभाऊ ॥
यह बिधि,'भरत'चले, मग.जाहीं * देखि-दसा, मुनि, सिद्ध सराहीं ।
जबहि"राम"कहि,खींचत साँसा * उमगत प्रेम, मनहु, चहुँ-पासा ॥
सुनत बचन, पाथर - हू-पानी * लोगन -प्रेम, न जात, बखानी ।
ठाउं, ठाउं बासि, 'जमुनहिं' आये * निरखि नीर, लोचन,जल छाये ॥

दोहाः—स्याम रंग-जल-जमुन-लखि, भरत, औ, सकल-समाज।
२२१. बिरह-सिंधु, डूबन लगे, चढ़े-विचार-ज़िहाज॥

'जमुना'-तीर, कियो, बिस्रामा * तेहि-दिन, सब कीन्हा आरामा।
रातहिं, घाट-घाट-की-नावैं * कही न जात, तहां, चलि आवैं॥
प्रात, पार भे, एकहि खेवा * भे सन्तुष्ट, सखा-की-सेवा।
चले, नहाइ, 'जमुन' सिर नाई * संग, 'निषाद' और दोउ-भाई॥
आगे, मुनी-लोग, असवारा * पाछे, सबहि राज-परिवारा।
ते-पाछे, दोउ-भाइ, पियादे * बस्त्र, वेष, पहिरे, किये, सादे॥
मंत्री-सुत, प्रिय-सेवक, साथा * सुमिरत 'लषन', 'सिया', 'रघुनाथा'।
कीन्ह राम, जहँ-जहँ, विश्रामा * करत. प्रेम-सौं, ताहि, प्रनामा॥

दोहाः—मग वासी, नर-नारि, सुनि, कामकाज तजि धाइ।
२२२. देखि सरूप, सनेह कर, खुसी, जनम-फल-पाइ॥

लोगः-कहत, प्रेमसन, यक, यक, पाहीं * हैं, ये, 'राम-लषन', कै, नाहीं।
नारीः-रंग, रूप, आयू, तन, आली! * मिलत, सनेह, सील, और चाली॥
संग, नारि-ना, तपसी-बाना * आगे, सुंदर-सैना, नाना।
चित-उदास, और, मुख-कुम्हिलाना * मन-संदेह, जाने, भगवाना॥
कविः—माना, नारिन, तहि-अनुमाना * कहा, "चतुर" तुम-समनहिं आना।
"सत्य कहत", अस कहे, सराहत * दूसर, मधुर-वचन उच्चारत॥
प्रेम सहित, सब कथा सुनाई * तिलक, विघ्न भा, जस, रघुराई।
भरतहिं, फेर, सराहन लागी * प्रेम, सुभाउ, सील, और, भागी॥

नारीः—दोहाः—पाइन चलत, औ, खात, फल, तजे पिता-दियो-राज।
२२३. जात, मनावन रघुवरहिं, तिन-समान, को, आज॥

भक्ति, भाइ-पन, और, आचरना * कहत, सुनत, सखी, ! सब-दुख-हरना।
जो कछु कहौं, थोर, सखि! सोई * राम-भाइ, अस, काहे न, होई॥
'भरत', 'शत्रुहन' कहँ, हम देखे * भईं धन्य, त्रिन-के-लेखे।
सुनि गुन, देखि दसा, पछिताहीं * 'केकई'-मात-जोग, सुत नाहीं॥

कहा एक, क्यों, दोसहु रानिन * कीन्ह विधाता,भा, हम-दाहिन ।
कहँ, हम, वेद-सास्त्र - ते हीना ! * नीच-नारि, आचरन - मलीना ॥
खोंट-देस, औ, गांवन, वसना * दरस,पुण्य-फल,भा,जस,कस ना ।
अचरजि, और अनंद, सब ग्रामा * कल्प-वृच्छ, जनु, ऊसर, जामा ॥

दोहाः—भरत-दरस, देखत खुलेउ, मग - लोगन - कर - भाग ।
२२४. बासी-'सिंगल - दीप,, जनु, घर-चालि-आइ 'प्रयाग' ॥

कविः—राम, और, आपन-गुन, साथा * सुनत,चलत,सुमिरत रघुनाथा ।
तीरथ, मन्दिर, मुनि - अस्थाना * दरस, स्नान, करत, प्रनामा ॥
मन-ही-मन मांगत, या - ही-वर * 'प्रेम, चरन-सीता और'रघुवर' ।
मिलत भील, वन-लोग उदासी * वृह्मचारी, साधू, संन्यासी ।
करि प्रनाम, पूँछत, जेहि-तही * केहि-वन. वसत, राम-वैदेही ? ॥
ते, प्रभु - समाचार बतलावहिं * भरतहि देखि,जनम-फल-पावहिं ।
जे जन कहत:"कुसल हम देखे" * राम-लषन-सम, 'भरत'-के-लेखे ॥
यह-विधि, पूँछत, मीठी-बानी * सुनत, राम-वन-वास-कहानी ।

दोहाः—तेहि दिन,तहँ वासि,प्रात ही, चले, सुमिरि - 'रघुनाथ' ।
२२५. राम - दरस - की . लालसा, 'भरत'-सी, सब के साथ ॥

मंगल सगुन होत, सब काही * भुजा, नेत्र, फरकहिं, सुखदाई ।
अब कहँ, 'भरत'-समेत, उछाहू * राम-मिले-मिटिहहिं दुख, दाहू ॥
करत मनोरथ,जस, जिय, जा के * छके जात, प्रेमाम्रित पा के ।
सिथिल-अंग, मग,डगमग डोलहि * चली-फिरी-सी - बातैं, बोलहिं ॥
गुहः—राम-सखा, ते समय, दिखावा * 'चित्र कूट', यह, सैल सुहावा ।
जासु निकट, 'मंदाकिनि'-तीरा * सिया-समेत, बसत,दोउ-बीरा ॥
देखि, करहिं, सब, दंड - प्रनामा * कहि जय,जानकी-जीवन-रामा ।
प्रेम मगन, अस राज - समाजू *जनु, फिरि,'अवध'-चले,रघुराजू॥

दोहाः—'भरत'-प्रेम,जस,तेहि समय, 'सेषहु' कहि नहिं पाहिं ।
२२६. मोह-पुरुष-कहँ, वृह्म - सुख, तस, दुर्लभ, कवि काहिं ॥

सिथिल,प्रेम महँ,हुइ, 'रघुवर'-के * गये, कोस - दुइ, सूरज - ढरके।
जल-ठिकान-बसि, रातहिं बीते * चले, प्रात,सब रघुवर - प्रीते ॥
रहे - रात, उत, जागे 'रघुवर' *कहा,विकल,सिय,सपन-देखि कर।
सीताः—'भरत',समाज-लिये,जनु,आये * राम-बिरह, तन, अपन, तपाये ॥
सब मलीन, और दीन दुखारी * वदली सकल, सकल-महतारी।
कविःसुनि-सिय-सपन, नैन, जल लाई * औरन - हरत, सोच, रघुराई ॥
रामः—सपन,नीक नहिं,लछिमन,भाई! * बात सुनैहहि, कोउ, अनचाही।
कविः—अस कहि,'लषन'-समेत,नहाने * पूजा शिव, साधू सन्माने ॥
छंदः—देवन, रिखिन, सन्मानि, बैठे, उत्तर - दिसि, देखत - भये।
देखी, अकास मा, धूरि, खग-मृग, विकल, प्रभु-आश्रम गये ॥
तुलसी, उठे, कारन - बिलोकन, चित्त महँ, अचरजि - किये।
सब समाचार, किरात, कोलन्हि, आइ, तेहि-अवसर, दिये ॥
सो०ः—मंगल-दायक - बात, सुनि, मन, सुख भा, तन पुलकि।
२२७. नीर बहावत, नाथ, सरद - कमल - से - नेत्र सन ॥
सिय-रमन, फिर,सोचा,मन महँ * भरत आये,केहि-कारन,बन महँ।
एक, आइ, अस कहा, बहोरीः * 'भरत'-संग, सैना, नहिं-थोरी ॥
सो सुनि,रामहिं,भा, अति-सोचू * पिता-वचन,उत, भरत-सँकोचू।
भरत-सुभाउ, समुझि,मन माहीं * भई, बात, कोउ, स्थिर नाहीं ॥
गयो सोच सब, फिर, यह-जाने * भरत, कहे - महँ-साधु-सयाने।
लषन, देखि, प्रभु-हृदय दुखारी * कहत,समय-सम,नीति-विचारी ॥
लषनः—कहौं, बिना-पूँछे, रघुराई! * समय कहावत, छमहु ढिठाई!
तुम, स्वामी,जानत-सब,रघुबर! * कहत,नाथ,मैं, अपुन-समुझ-भर॥
दोहाः—सुद्ध - हृदय, सीधे, प्रभु, सील, औ, प्रेम-की-खानि।
२२८. करत प्रीति, विस्वास, तुम, सब-कहँ, अपन-सा-जानि ॥
बिषयी - जीव, पाइ प्रभुताई * जाने, मोह के बस हुइ जाई।
भरत, चतुर, सज्जन, और नीती * जानत, करत, चरन-प्रभु प्रीती ॥

सोऊ, आज, राज-पद पाई * चले, धरम-मर्जाद-मिटाई ।
कुटिल दुष्ट, अस-अवसर-पाई * ज़ानि अकेले, बन, रघुराई ॥
करि सलाह खोटी, साजि-साजू * आये, चहत अकंटक राजू ।
लाये, मन, अनेक-कुटिलाई * जोरि-सैन, आये, दोउ-भाई ॥
कस सुहात बिनु-कपट-भये,मन ! * रथ,घोरा,हाथिन-की-पलटन ! ।
भरतहिं, दोस, कौन दे, भाई ! * जग, बौरात, राज-पद-पाई ! ॥

दोहाः—'चंद्र' भोगि गुरु-नारि-सँग, 'नहुष', विप्र-अपमान ।
२२६. वेद-सास्त्र-ते विमुख भा, नीच को 'वेन'-समान ॥

'सहसबाहु'और, 'इन्द्र','त्रसंका' * दीन्ह, राज-मद, सबहिं,कलंका ।
'भरत', कीन्ह भल उचित उपाई * रिनी,शत्रु, कोउ,रखा न चाही ॥
एक, कीन्ह नहिं भरत भलाई * कीन्ह निरादर, लखि असहाई ।
समुझे, को, सहाय-रघुराई * चढ़े आय, नहिं कीन्ह भलाई ॥
परइ, आज मालूम, सँभारी ! * क्रोध-युक्त,मुख-राम, निहारी ।
कवि:—ऐसी कहत, नीति-रस भूला * 'लछिमन'-तन,रन-के-रस,फूला ॥
बंदि चरन, सिर, धूरि-चढाई * सांचा बल-सुभाउ, बतलाई ।
लषन:—झूठ न मानेउ, हे, रघुराई ! * मारन-महँ,कछु कसर न, भाई ॥
कहँ-लग,सहिये,रहिये,मन-मारे ! * नाथ, सँग, धनु, हाथ-हमारे ॥

दोहाः—रघुकुल, क्षत्री, जन्म भा, राम-भाइ, सब जान ! ।
२३०. नीच-धूरि, सोउ-सिर-चढ़त, लगे-लात, भगवान !! ॥

कवि:—जोरि हाथ, प्रभु-आज्ञा मांगा * मनहु, वीर-रस, सोवत, जागा ।
कसि तरकस, सिर-जटा-सँभारी * धनुष-बान लीन्हा, कर, धारी ॥
लषन:—आज, राम-सेवक-जस लेहूँ * भरतहिं, युद्ध, सिखावन, देहूँ ।
राम-से-वैर-किये-फल पैहौ ! * रन-की-सेज,भाइ,दोउ,सुइहौ ! ॥
सब सामान, जुरा, यक-ठाऊँ * पाछिल-क्रोध, आज, दिखराऊं ।
हाथिन, सिंह हतइ, जस, बन मा * बाज,लवा कहँ,झपटहि खन मा॥
तैसेहि, 'भरत', भाइ, और, सैना * रन, गिराइ, दिखरावहुँ पैना ।

'शंकर' हु, आ, होहिं सहाई ! * जियत, न छाँडहु; राम-दुहाई ॥

दोहाः—भरे - क्रोध, देखे - लषन, खात - कसम - भगवान ।

२३१. लोक, 'इन्द्र', सब, डरि गये, तजन चहत अस्थान ॥

आकास-वानीः-भरि,जग,भय,अकास,भइबानी*लषन-भुजा-बल,कहतबखानी।

तात ! प्रभाउ, प्रताप, तुम्हारा ! * कोउ, न कहन, न, जानन-हारा ॥

अनुचित, उचित, काज,जस,होई *समुझि,करिये,भल-कहे-सब-कोई।

इकदम - किये, पाछे, पछितावा * विद्वान, और, वेदहु गावा ॥

कविः सुनिसुख-वचन,'लषन'सकुचाने* राम, सिय, लषनहिं-सन्माने ।

रामः—कही,तात ! तुम, नीति-सुहाई * है, अति-कठिन, राज-मद,भाई ॥

मिलत, राज, तिनहीं,मति-छीनी * जिन, साधुन-सेवा नहिं कीन्ही ।

भरत - समान, जगत महँ, भाई * देखा, ना, कोउ, परा-सुनाई ॥

दोहाः —भरतहिं, होइ न राज-मद, 'शिव' - 'ब्रह्मा' - पद-पाइ ।

२३२. कांजी - बूंदन-ते, कहूं, क्षीर-सिंधु फटि जाइ !! ॥

अंधकार / ले, सूरज खाई * बादर ते, अकास, मिलि जाई ।

मुनि,अगस्त्य' डूबहि थोरे-जल * पृथ्वी, छांड़हि-छमा,तात!भल ॥

मच्छर, फूंकि, पहाड़ - उड़ाई * भरतहिं, मद न होइ, पर, भाई ।

पिता, और, तोरी-सौं खाई * भल, पवित्र ना, दूसर - भाई ॥

गुन-पय,अवगुन-जल,मिलि,ताता!* सृष्टि-की-रचना,करत,विधाता ।

सूरज - वंस - ताल, हुइ - हंसा *'भरत',दोस-ताजि,गुनहिं,प्रसंसा ॥

दूध-को-दूध, पानी - को-पानी ! * चमकायो जस, जग मँह,आनी ।

कविः—कहत'भरत'-गुन,सील, सुभाई * प्रेम - सिंधु, डूबे रघुराई ॥

दोहाः—सुनि बानी रघुबीर - की; देखत प्रेम - बिहाल ।

२३३. देव-वानीः–देव कहत; "को, राम-सम, स्वामी, और दयाल" ॥

जों, न होत,जग जनम,'भरत'को * धरम-भार,सिर-अपन,धरत को?।

भरत के गुन, आर,को काहे पाता * को जानत ? जानत, रघुनाथा ॥

कविः—लषन,राम,सिय,सुनिसुर-बानी* भ प्रसन्न, अति-ही-सुख-मानी ।

इधर, 'भरत',सँग, सैन-लिवाए ✻ 'मंदाकिनी' पुनीत, नहाये ॥
नदी - तीर, सब कँह, ठाहिराई ✻ मात, गुरू, की आज्ञा पाई ।
चले भरत, जहँ, सिय - रघुराई ✻ संग, 'निषाद', और लघु-भाई ॥
समुझि-मात - करनी, सकुचाहीं ✻ संसय-करत, जात, मन-माहीं ।
भरतः–मोर-नाम-सुनि, कहुँ, रघुराई !✻ अंत न जाहिं, सहित-सिय-भाई ॥

दोहाः—माता की-मति-महँ समुझि, जो-कछु-कहहिं, सो, थोर ।
२३४. दोस, पाप, चाहैं, छमहिं, देखे - अपनी - ओर ॥

तजहिं, चाहुं, मन-कारिख-जाने ✻ सेवक समुझि, चाहुं, सन्माने ।
गिरहुं, सरन,पनहीं, उनाहिन के ✻ सेवक,दोस,स्वामि,अति-नीके ॥
जस, दोउन्ह (१)पपिहा,जल-त्यागे ✻ (२)मछरी,प्रेम-पहित,जल-पागे ।
कविः–अस बिचार,मन महँ,मग-जाता ✻ सोच, सनेह, सुन्न-सब-गाता ॥
दुष्ट, मात - करनी, लौटावत ✻ भक्ति-के-बल-ते, पाउं बढ़ावत ।
जब, समुझत सुभाउ रघुराई ✻ पाउं - पे - पाउं, परत, हर्षाई ॥
'भरत'-दसा,अस,तेहि-अवसर-की ✻ वहत धार, जस,जल-भँवरा-की ।
प्रेम सोच, देखे, तन - मन - कर ✻ भूला 'गुह'सुधि,अपने-तन-कर॥

दोहाः – लगे होन सुन्दर - सगुन, बूझत, कहत, 'निषाद' ।
२३५. निषादः–मिटइ सोच, आनंद - हुइ, पाछे, होइ बिषाद ॥

कविः–बचन-निषाद, सत्य,सब, जाने ✻ 'भरत' राम आश्रम, नियराने ।
वन, परवत, और, देखि समाजा ✻ भूखे-'भरत',पायो, जनु, नाजा ॥
आफत - मारी, प्रजा, दुखारी ✻ गृह - घरी, सब तापन - जारी ।
पहुँचइ, सुन्दर देसहिं, जाई ✻ रही, भरत-की,तस,गति,भाई! ॥
बसत राम, संपति, अस सोहत ✻ प्रजाहिं, सुराज-मिले,सुख होवत ।
मंत्री, वैरागी, नृप, ज्ञानी ✻ सुन्दर- बन, सुदेस-सम-जानी ॥
योधा, नियम, सैल, रज - धानी ✻ सुन्दर - सुमति, शान्ती, रानी ।
सब-विधि, भरा-पुरा, करि राजा ✻ राम-आसरे, धरि-चित, काजा ॥

दोहाः—ज्ञानी - राजा, जीति, रन, मोह - राज - कहँ, लीन्ह ।
२३६. करत, अकंटक - राज, जनु, सुख, संपति, भरि दीन्ह ॥

वन, इत-उत, मुनि - बास, घनेरे * जनु,पुर, नगर, गाऊं,और, खेरे ।
सुंदर पच्छी, और, मृग, नाना * सुखी प्रजा, नाहिं जात बखाना ॥
सुअर, हाथि, भैंसा और गैंडा * चीता, सेर, अनोखे - कैंडा ।
छांड़ि-बैर, यक सँग, सब चरहीं * जनु, सैना, बिहार. सब,करहीं ॥
झरना झराहिं, हाथि चिंघारहिं * लगत, मनहु,सोइ डंका बाजहिं ।
कोयल, तोता, पपिहा, हंसा * चक, चकोर, बोलत,पुरि-मंसा ॥
गावहिं भौंरा, नाचहिं मोरा * जनु, सुराज, मंगल, चहुँ-ओरा ।
दूब, वृच्छ, बेली, फल, फूला * सब, आनन्द, औ, मंगल-मूला ॥

दोहाः—राम-बास-सोभा, निराखि, 'भरत'-हृदय, अस-प्रेम ।
२३७. तप-फल, तपसी, पाइ, कोउ, करे-समापत-नेम ॥

तब, केवट, ऊँचे पर-जाई * कहा, भरत-सन, भुजा-उठाई ।
केवटः-नाथ ! देखिये, वृच्छ-विसाला ! * पाकर, जामुन, आम, तमाला ! ॥
बरगद, यक, तिन-के-बिच, सोहा * देखत-जाहि, तात ! मन मोहा ।
घने-पात, नीले, फल, लाला * छाया, सुख-दाता सब काला ॥
लाली, कारिख, दोउ-मिलवाई * 'विधि', जनु, ढेरी, हाथ, बनाई ।
नदी-तीर, यह वृच्छ, गुसाईं ! * फूस-कुटी-रघुवर, जेहि-ठाईं ! ॥
बहुतक, तुलसी-पैड़, सुहाये * कहूँ,'सिय',कहुँ,'लषन', लगाये ।
वेदी, छाया - तरे, बनाई * कर-कमलन-ते, 'सिय', सुहाई ॥

दोहाः—जहाँ, बैठि, मुनियन-सहित, 'सीता', 'राम', सुजान ।
२३८. सुनत कथा, इतिहास, और, सास्त्रहु, वेद, पुरान ॥

कविः-सखा-वचन-सुनि,वृच्छ-निहारा * उमड़ा प्रेम, नैन, जल-धारा ।
करत प्रनाम, चले दोउ भाई * सरस्वतीहु, न, प्रीति, कहिपाई ॥
चिन्ह-रामपद लखे, सुखारी * जैसे, पारस-मिले, भिखारी ।
चरन-धूरि, सिर, नैन, लगावहिं * मिले-राम-जनु,अस,सुखपावहिं॥

देखे, अकथ-प्रेम, हद-बाहर * मगन वृक्ष, पसु, पक्षी, पाथर।
सखा, प्रेम-वस, रसता भूला * सुरन बताई, बरसे फूला॥
देखि सिद्ध, साधक, अनुरागे * 'भरत' - सनेह, सराहन लागे।
होत न, जग,जो प्रेम भरत को ! * डारत, काढ़त,प्रान, जियत,को?॥

दोहाः—भरत-सिंधु, परवत-विरह, ते, मथि - मथि, रघुनाथ।
२३९. आ, देवन-हित, प्रगट भे, प्रेम - अमरित -लिये-हाथ॥

सखा - समेत, मनोहर - जोरी * लषन, न,घन-वन-ओट. लखो री।
दखि भरत प्रभु-आस्रम, पावन * सुभ,मंगल-घर,अतिमन-भावन॥
करत प्रबेस, मिटा दुख-दाहा * जनु, जोगी, परमारथ पावा।
दीख भरत, लक्ष्मिन, प्रभु-आगे * पूँछत, राम, कहत, अनुरागे॥
जटा, कमर-तरकस, मुनि-जामा * डारे-धनु, तरकस, कर बाना।
वेदी-पर मुनि, साधु समाजू * सहित,'सिय', राजत रघुराजू॥
वक्कल-वस्त्र, जटा, तन-स्यामा * धारे-तन,जनु,'रति',और,'कामा।
कर-कमलन, फेरत धनु-बाना * जी-की-जरन, हरत, मुसुकाना॥

दोहाः—मुनिन - बीच, सोहत, सिय, बैठे, रघु - के-चंद।
२४०. ज्ञान-सभा-के- बीच, जनु 'भक्ति' 'सच्चिदानंद'॥

सखा,'भरत',और,भाइ-'शत्रुहन' * भूले सुख-दुख, हर्ष-सोक, मन।
रक्षा ! रक्षा ! करहु, गुसाईं ! * गिरे,भूमि, कहि, दण्ड-की-नाईं॥
प्रेम-वचन, लक्ष्मिन पहिचाने * करत प्रनाम, भरत, जिय-जाने।
भ्रात-प्रेम, इत, भरत की ओरा * मालिक-सेवा, उधर, निहोरा॥
बनत न मिलत, बनत ना त्यागी*'लषन'-की-गतिकविकहँअसलागी।
'प्रेम-ते, सेवहिं, समुझे-भारी * खींचत, चढ़ी-पतंग, खिलारी॥
भरतः—कहत, प्रेम-सों, नाये-माथा * करत प्रनाम, भरत, रघुनाथा!।
कविः—विकल, प्रेम-ते, उठि रघुवीरा! * कहुँपट,तरकस,कहुँ,धनु,तीरा!॥

दोहाः—बल-भरि, लीन्ह उठाय, उर, लाये, कृपानिधान।
२४१. भरत-राम-की-मिलनि-लखि, रहि सब चित्र-समान॥

मिलनि-प्रीति, कस्न, जाइ बखानी ❋ मन,क्रम,वचन से,जात न जानी ।
दोऊ भाइ, प्रेम तें फूले ❋ अहँकार, मन,बुधि,चित,भूले ॥
कहौ, प्रेम, सो, को, कहि पाई ❋ कबि,केहि की उपमा, दे, भाई ! ।
शब्द, अर्थ ही, कवि, बल-जाने ❋ नाचत नट, तालहिं-पहिचाने ॥
अगम सनेह, भरत-रघुवर कर ❋ जहँ न जाइ, मन; बृह्मा, हर कर ।
सो, मैं, कुमति! कहौं,केहि-भाँती? ❋ निकसत राग,न, ऊन-की-ताँती ॥
देखे मिलनि भरत-रघुवर-की ❋ डरे देव,और,धुक-धुकि धरकी ॥
गुरू - चितावत, सूरख जागे ❋ बरसे फूल, प्रसंसन लागे ।

दोहाः—मिले प्रेम - सों, 'शत्रुहन', केवट भेंटेउ राम ।
२४२. भरे-भाउ, लछिमन मिले, भरतहिं, किये प्रनाम ॥

भेंटे 'लषन', लपाकि, लघु-भाई ❋ फिर, 'निषाद',लीन्हा उर लाई ।
भाइन, मुनिन, विप्र सिर-नाये ❋ पा आसीर्वाद, सुख पाये ॥
'भरत',शत्रुहन',उमंगि, प्रेम-भरि ❋ चरन-कमल-सिय-धूरि धरी सिर।
'सीता', करत-प्रनाम, उठाये ❋ फेरि कमल-कर, सिर, बैठाये ॥
दीन्ह असीस, सिया, मन माहीं ❋ मगन सनेह, देह-सुधि-नाहीं ।
देखि प्रसंन्न, सबहि-विधि, सीता ❋ 'भरत'-सोच,और डर,सबबीता ॥
कोउ,कछु कहा,नकोउ,कछु बूझा ❋ प्रेम-ते, मन - चंचलता भूला ।
तेहि अवसर, केवट, धीरज-धरि ❋ जोरे कर विनवत, प्रनाम करि ॥

केवटः—दोहाः—गुरु-'वसिष्ट' के संग, प्रभु, मात, सकल, पुर लोग ।
२४३. सेवक, मंत्री, सैनपति, आये, विकल - वियोग ॥

कविः-सील-सिंधु,सुनि,गुरु-आगमन ❋ सियहि-पास, बैठारि 'शत्रुहन' ।
चले राम, बेगहिं, तेहि काला ❋ धीरज - धारी दीन - दयाला ॥
'लषन','राम',लखि गुरु,अनुरागे ❋ दण्ड, प्रणाम, करन, दोउ, लागे ।
झपटि, गुरू, लीन्हें उर लाई ❋ प्रेम उमंगि, भेंटे, दोउ भाई ॥
पुलकि प्रेम, केवट, कहि नामू ❋ दूरि-ते, भूलि, कीन्ह प्रनामू ।
बरबस, गुरू, तेहु सन, भेंटत ❋ धरती - परा - सनेह, समेटत ॥

भक्ति, राम - की, मंगल - मूला * देव सराहत, बरसत फूला।
केवट - सम, जग, नीचहु नाहीं * गुरु-ते-बड़ा, न कोउ, जग माहीं॥
दोहाः—लछिमनहू ते, अधिक तौ, तेहि सन, मिले, 'वसिष्टि।
२४४. यह प्रताप, रामहिं-भजे, प्रगट भयो, सब सृष्टि॥
राम, दुखी, सब लोगन, जाना * चतुर, दयालू, श्री - भगवाना।
जेहि की रही कामना जैसी * पूरी, तेहि, रुख - राखे, तैसी॥
'लषन'-सहित, पल महँ, सब भेंटे * जिय की जरन, दाह, सब मेटे।
यह, बढ़-बात, राम-की, नाहीं * लाखन घड़न, एक-रवि-छाहीं॥
मिलि केवटहिं, उमँगि अनुरागा * आपन, लोग, सराहत भागा।
देखी राम, दुखित - महतारी * पाला - परे, बेल, जनु, मारी॥
मिले केकई, पहिले 'रघुबर' * भाउ, भक्ति ते, मति कीन्ही तर।
परे-पाउं, फिर, प्रभु समुझावा * काल, कर्म, विधि, दोस लगावा॥
रामः—दोहाः—भेंटे रघुबर, मात सब, कहा, करे - सन्तुष्ट।
२४५. दोस, न काहू दीजिये, ईस - के - बस, सब - सृष्टि॥
कविः—गुरु-नारी, भेंटे, दोउ भाई * भेंट, विप्र - नारि, सँग - आई।
बंदे, 'गंग' - 'गौर' - समाना * आसिरवाद पाइ, सुख नाना॥
गहि - पद, भरी सुमित्रा - कौरी * मिलीं, भिखारिन्ह, संपति, दौरी।
कोसल्या - चरनन, फिर, जाई * ब्याकुल, पुलकि, परे, दोउ भाई॥
प्रेम उठाय, मात, उर लाये * प्रेम - भरे, अंसुवन, अन्हवाये।
सकत न कहि, सो हर्ष - विषादा * कवि, गूंगा, उत, प्रेम-को-स्वादा॥
मिलि मातन, लछिमन, रघुराई * कहा, 'चलहु, गुरु सन, सिर नाई'।
आज्ञा, गुरु - की, पाये, योगू * जल, अस्थान, तके, टिकि लोगू॥
दोहाः—बृह्मण, मंत्री, और सखा, मुख्ख लोग, लिये साथ।
२४६. पावन आश्रम कहँ गये, 'भरत', 'लषन', रघुनाथ॥
सीता, आइ, गुरू - पद लागीं * उचित असीस पाइ, मन-मांगी।
गुरु-पतिनी, मुनि-पतिनि, समेता * मिली प्रेम, कहि जाइ न, जेता॥

लागि-लागि-पद,सिय, सबही के * आसिरबाद पाइ, प्रिय-जी-के।
सासुन कहँ, जब, सिय, निहारी * मूँदे नयन, सहमि, सुकुमारी॥
परी हंसिनी, फंद - सिकारी * हा विधिना ! कस बात,बिगारी।
सियहिं-देखि, सासुन दुख पावा * सो,सब,सहिये,जो, दैव सहावा॥
जनक-सुता, तब, धरि उर धीरा * नलिे, कमल-नयन, भरि नीरा।
मिलीं, सकल सासुन,सिय, आई * देखत, पृथ्वी, करुना-छाई॥

दोहाः—लागि लागि, सब के चरन, भेंटत, सिय अनुराग।
२४७. हृदय, असीसत, प्रेम-सों, "होइ अखंड, सुहाग"॥

बिकल, सनेह,सिया, और, रानी * "बैठहु",कहा,देखि, गुरु-ज्ञानी।
जग सब, माया,कहि, मुनि-नाथा * कही कछुक - परमारथ-बाता॥
दसरथ-सुरपुर - गवन, सुनावा *सुनि,'रघुनाथ',बहुत दुख पावा।
कारन, अपन - सनेह बिचारी * विकल, राम-भे, धीरज-धारी॥
बचन कठोर, मरन, सुनि बानी * बिलखत'लषन','सिय'सब-रानी।
विकल-सोक-भा, सकल-समाजू * छांड़ी देह, आज, जनु राजू॥
गुरु- 'वशिष्ठि' रामहिं समुझाये * सकल, जाइ, फिर,'गंग' नहाये।
निरअहार-वृत, सब, दिन कीन्हा * कहा मुनी, कोउ जल नहिंलीन्हा॥

दोहाः—भोर भये, रघुनाथ कहं, जो, मुनि, आज्ञा दीन्ह।
२४८. स्त्रिद्धा, भक्ति समेत, प्रभु, सो, आदर सों, कीन्ह॥

सुद्ध भये,बिधि,पिता-क्रिया-करि * पाप - नसावनहारे, रघुबर।
जेहि कर नाम, पाप, सब,जारत * सकल सःख सुमिरे,नर पावत॥
सुद्ध, सो, भये, कहत-साधु-अस * न्योते-तीरथ, गंगा - महँ, जस।
भये सुद्ध, दुइ - दिन - के - बीते * बोले गुरु सन, राम, पिरीते॥
रामः—नाथ ! लोग सब,बहुत दुखारी * कंद मूल फल मिलत अहारी।
'भरत', मंत्री, शत्रुहन, माता * देखि, एक-पल,जुग-सम जाता॥
लइ सब सँग, अवध कहँ, जाहू * आप इहां, और, सुर-पुर-राऊ।
बहुत कहा, मैं, कीन्ह ढिठाई * उचित जो होइ,करहु,चित-लाई॥

गुरुः–दोहाः—दया, धर्म के सिंधु, तुम, कस न कहहु अस, राम।
२४६. दुइ दिन, दुखिया, दरस-करि, पाइ रहे बिस्राम॥

कविः-राम-बचन-सुनि, डरत समाजा ❋ डूबा अब, जनु, सिंधु, जहाजा।
गुरू-बचन सुनि, भये सुखारी ❋ पवन, जहाज - बचावनहारी॥
तीन काल, तेहि-जलहिं, नहाहीं ❋ जाहि-देखि, सब-ताप-नसाहीं।
मंगल मूरति, लोचन-भरि-भरि ❋ देखत, हर्षि, दंडवत-करि-करि॥
राम-सैल-बन, देखन जाहीं ❋ जहँ,सब सुख,दुख,एकहु नाहीं।
अमरित-जल, झरनन-ते, जारी ❋ हरत ताप, जल, तीन-बियारी॥
वृच्छ, बेल, और, घास सुहाती ❋ पात,फूल,फल, अन,-अन,-भाँती।
सुंदर सिला, औ, सीतल छाहीं ❋ बन-छबि,बरनि जाइकेहि पाहीं!॥

दोहाः—खिले कमल, गूँजहिं भँवर, जल - पक्षी, रहे बोलि।
२५०. मृग, पक्षी, बहु - रंग, तजि-बैर, रहे, बन, डोलि॥

कोल, किरात, भील, बन-लोगा ❋ मीठे, सुन्दर, बन-के - भोगा।
कंद मूल फल, जोरि, बटोरी ❋ धरि दोनन,रुचि-सों,लिये झोरी॥
देत, सबहिं, करि दंड, प्रनामा ❋ स्वाद,भेद,गुन,कहि, कहि नामा।
देहिं लोग, से, मोल न लेहीं ❋ फेरत, राम - दोहाई, देहीं॥
कहत, सनेह-मगन, मृदु-बानी ❋ मानत, सुनि, प्रेमहिं पहिचानी।
भीलः-आप!सुकरमी,नीच-जाति,हम!❋ दरस-तुम्हार,अमोल,मोल-कम!॥
दुर्लभ, राम - कृपा - ते, पावा ❋ 'माड़वारि',जनु, 'गंग' नहावा।
राम, दयालु, गरीब-निवाजा ❋ सेवक, प्रजा, चहीं, जस-राजा॥

दोहाः—यह, जिय-जानि. सँकोच-तजि, दया करहु लखि नेहु!
२५१. हमहिं, कृतारथ-करन-हित, घास, पात, फल लेहु!!

भे-महिमान, बनहिं, तुम! आये ❋ भाग! न तुम-सेवा, करि पाये।
करन-योग, नहिं, कछु सेवकाई ❋ ईंधन, पातिन, उमिरि-गवाँई॥
यह ही, सब से बढ़, सेवकाई ❋ लेत न, बासन, बसन, चुराई।
मूरख, जीवन - हत्या, करिहीं ❋ टेढ़ी-चाल, नीच, हम, चलहीं॥

करत पाप, दिन-राती, नाना * धोती, कमर, न, पेट, अघाना ।
सपनेहु, धरम-राह नहिं चलहीं * राम-दरस पावा, कछु सुधरहीं ॥
जब ते, प्रभु-पद-पदुम-निहारे * मिटे दुःख, और दोस, हमारे ।
कविः-सुने, अवध-बासी अनुरागे * भीलन-भाग, सराहन लागे ॥
छंदः—लागे सराहन भाग, सब, और बचन - प्रेम सुनावहीं ।
बोलन, मिलन, सिय-राम-चरनन-प्रेम लखि, सुख पावहीं ॥
निज प्रेम कर, कीन्हे - निरादर, कहत, राम-कृपा-करे ।
तुलसी, कृपा, सो, लगत, जस, जल, लोह, लइ-नौका-तिरै ॥
सो०:—घूमत, वन - चहुं-ओर, रैन-दिना, सब, भे-खुसी ।
२५२. किलकत, दादुर, मोर, पहिली-वर्षा - देखि, जस ॥
भये मगन, प्रेमहिं, नर-नारी * मारि-पलक, जनु, समय गुजारी ।
एक-सिय, बहुतक - हुइ, भाई * एक-सी, सासुन्ह, सेवइ, आई ॥
मरम, सो,जाना इक, 'रघुराया' * सिय-माया महँ, सब-सब-माया ।
सासुन्ह सेइ, सिय,बस कीन्हीं *सिख,असीस,मिलि,दोउ सुख दीन्ही॥
सीध-सुभाउ, सिय, दोउ-भाई * देखि, कुटिल - कैकइ, पछिताई ।
जग, और धरती,दोउन,मनावत * देत, एक, मृत्यु,दूसर, फाटत ! ॥
जानत सब, भये-रघुबर-द्रोही * नर्कहु, ठाउं, देत नहिं, तेही ।
यह संसय, सब के मन माहीं * लौटहिं राम, अवध,कै, नाहीं !॥
दोहाः—रात, नींद, नहिं, भूख, दिन, विकल, 'भरत'-जिय सोच ।
२५३. सूखे-पानी, कींच-रहि, मछरी, जलहिं-संकोच ॥
भरतःकीन्ह,मात-धरि,'काल',कुचाली * पके-धान, जनु, आफत मारी ।
राम-तिलक,अब,केहि विधि होई! * राह, न सूझत, हम कहँ कोई! ॥
गुरू-कहे, निश्चय, घर जैहहिं * बिना राम-रुख,सो,ना कहिहहिं ।
कहे-(राम-माता हू), फिरिहीं * कीन्ह न कबहुँ,आज,हठ करिहीं!॥
रही-मोरि, सो, केतक-बाता! * समय-खोट, और, टेढ़-विधाता ।
जो, हठ करहुँ, तौ, होइ कुकरमा! * गिरि-ते-भारी, सेवक-धरमा! ॥

ठीक-युक्त, कोउ, समुझि न आती * गुजरी, भरतहिं, सोचत, राती ।
कविः—प्रात, नहाइ, प्रभुहिं, सिर-नाई * बैठत, लीन्हा, गुरू, बुलाई ॥

दोहाः—गुरु-पद-कमल, प्रनाम-करि, बैठे, आज्ञा-पाइ ।
२५४. विप्र, महाजन, मंत्री, जुरे, सभा, सब, आइ ॥

गुरुः—कहा 'वसिष्ठ',समय-पहिचाना * सुनहु,सभा-जन!भरत-सुजाना! ।
राम, स्वतंत्र, एक, भगवाना * घरम-धारि, सूरज-कुल-भाना ॥
पालत-वेद, करत-मन-ठाना * लीन्ह जनम, जग-कर-कल्याना ।
पालहिं वचन - पिता - महतारी * दुष्टहिं दलइं, देव - हितकारी ॥
जग कर स्वारथ, और, परलोका * नीति, प्रीति, प्रभु,जानत,चोखा ।
तीन-देव, रवि, ससि, दिकपाला * माया, जीव, करम,और काला ॥
राजा, शेष, सिगर प्रभुताई * जोग-सिद्धि, जो, बेदन गाईं ।
करि, विचार-जिय, देखहु नीके * प्रभु की आज्ञा, सिर,सब-ही-के !॥

दोहाः—प्रभु-आज्ञा - ही, सिर-धरे, हम-सब-कर-हित होइ ।
२५५. समुझि, करहु, अब, चतुर ! सब, जाने निश्चय सोइ ॥

राम-तिलक, सब कहँ, सुखदाई * सब-मँगल-की, यक-जर, भाई !।
पर, केहि-विधि, लौटहिं, रघुराई * समुझि,कहहु,सो,कराहिं उपाई ॥
कविः-सुनी, नीति-की,गुरु-की-बानी * जग-स्वारथ,परलोक-की,सानी ।
हक-बकाइ, कोउ दीन्ह न उत्तर * भरत,नाइ-सिर,कहा,जोरि कर ॥
भरतः-भे, कुल-महँ, राजा, बहुतेरे * बड़े, एक - से - इक, गुरु, मेरे !
देत, जनम, सब कहँ पितु-माता * करम,बुरा,और,भला,बिधाता ॥
हरत दुःख, पावत कल्याना * जाहि असीसत, तुम-भगवाना! ।
विधि-गति,सकत,तुमहिं तौ,छेंकी * टेक, कौन टारे, तुम - टेकी ॥

दोहाः—सो, तुम, पूँछत, हमतेहीं, यह अभाग, सब, मोर ।
२५६. प्रेम-वचन-सुनि, गुरु-हृदय, बाढ़ी प्रेम - हिलोर ॥

गुरुः—मिली बड़ाई, राम-कृपा - ते * सपनेहु, राम - रुठाइ, न पाते ।
सकुचत,कहत,चतुर,अस करहीं * सबहिं-जात,आगे-कहँ-पकरहिं ॥

बन महँ रहौ, तुमहिं, दोउ भाई * फेरहु लषन, सिय, रघुराई ।
सुनि अस वचन हर्षि दोउभ्राता * भरे, हर्ष - ते, सबही - गाता ॥
कविः-सुनि,प्रसन्न,अस-तेज विराजा * 'दसरथ-जिये', 'राम-भे-राजा' ।
सब कहँ, बहुत लाभ, हानी-कम * रानी रोवत,दुःख, सुःख, सम ॥
भरतः-मुनि-की-आज्ञा,मैं,सिर धारत!* चाहा,मिलत,जनम-फल-पावत! ।
रहौं, जनम-भरि, बन - मँह, छाई * यह-ते-बढ़,हा ! कवन भलाई ! ॥
दोहाः—अंतर-जामी, राम, सिय, आप, चतुर, वलिहार ! ।
२५७. नाथ ! कही जो, सत्य, तुम, करहु ताहि-अनुसार ॥
कविः-देखे, यह गति, भरत-नेह-की * सुधि भूले, गुरु, सभा, देह-की ।
महिमा-भरत, सिंधु जस होई * गुरु-मति,नारि-भोरि रही खोई ॥
पार, जान चाहत, बहुतेरा * मिलत, न नाव, जहाज, न बेरा ।
सकइ कौन कहि भरत - बड़ाई * सकइ,सिंधु कस सीप-समाई !॥
'भरत',गुरुहिं, मन-भीतर, भाये * लै-समाज, 'रघुबर' पहँ, आये ।
करि प्रनाम, आसन, प्रभु दीन्हा * सब बैठे, प्रभु - आज्ञा चीन्हा ॥
करि बिचार, बोले गुरु-ज्ञानी * देश, काल, अवसर पहिचानी ।
गुरुः-सुनहु,राम!तुम,चतुर,सुजाना * ज्ञान, धर्म, गुन, नीति-स्थाना !॥
दोहाः—सब के हृदय महँ, बसत, जानत भाउ, कुभाउ ।
२५८. लोगन, रानिन, भरत-हित, होइ, सो, करहु उपाउ ॥
कहत विचारि, न, कबहुँ,दुखारी * सूझत अपनोहिं दांव जोआरी ।
रामः-सुनि मुनि-वचन,कहत रघुराई * नाथ ! तुम्हारहि हाथ, उपाई !॥
सब कर हित, तुम्हार-रुख-चीन्हे!* सत्य कहे, और, आज्ञा दीन्हे ।
पहिले, जो, मोहिं, आज्ञा होई * माथे, धरहुँ, करहुँ, मैं, सोई ॥
फिर,जेहि कहँ, जस, आज्ञा होई * करहि सेइ, सेवकाई, सोई ।
गुरुः-कह,मुनि, कही सत्य रघुराई * भरत-सनेह, कछू सुधि, भाई !॥
ता ते, कहत, बहोरि - बहोरी * भरत-भक्ति-वस,भइ,मति-मोरी ।
मोरे - जान, भरत - रुचि-राखी *जो कछु करहु,भला,शिव-साखी!॥

दोहाः—'भरत'-विनय, सादर, सुनहु, फिर, मन, करहु विचार।
२५९. नीति, लोक, और सुजन-मति, बेद, सास्त्र, अनुसार॥

कविः-गुरू-सनेह, 'भरत'-पर, देखी ❋ राम - हृदय, आनन्द बिसेखी।
भरतहिं धरम-धुरं-धरि जानी ❋ जाने - सेवक, तन-मन-बानी॥
रामः-गुरू ! आप-के-वचन, मनोहर!❋ आज्ञा, सुखदाता, कह'रघुवर'।
गुरु-की-सौं ! पितु-वचन-दोहाई ! ❋ भयो न,जगत,भरत-सम भाई!॥
जे नर गुरु-चरनन - अनुरागी ❋ लोक, बेद महँ, तेहि बड़-भागी।
गुरु का,जेहि पर,अस-अनुरागा ❋ को कहि सकइ,'भरत-कर-भागा॥
सकुचत, जाने छोटा भाई ❋मुहँ-पर, केहि-विधि, करहुं बड़ाई!॥
भरत-कहत, सो - किये, भलाई!❋ हुइ गे, चुप, अस-कहि-रघुराई॥

दोहाः—तब, मुनि,बोले, भरत-सन, सब-सँकोच - तजि, तात।
२६०. राम, दयालू - भाइ-सन, कहउ न जी - की - बात॥

कविः-सुनि,मुनि-वचन,राम-रुख-पाई ❋ जानि प्रसन्न, गुरू, रघुराई।
जाने, पर, अपने - सिर, भारा ❋कहि न सकतकछु,करत विचारा॥
पुलकि सरीर, सभा, भये ठाढ़े ❋ कमल-से-नैन, नेह - जल - बाढ़े।
भरतः-मोरकहनि,'मुनि-नाथ,'निबाहा❋ यहते-अधिक, कहऊँ मैं, काहा ?
मैं जानत रघुबीर - सुभाऊ ❋ देखि दोस हू, कोप न काऊ।
मो पर, कृपा, सनेह, विसेषी ❋ खेलत हू पर, खुन्स न देखी॥
लरिकाईं, मो का नहिं छोड़ा ❋ मोरा जी, कबहूं नहिं तोड़ा।
आदि-ते, कृपा रही, अस, होई ❋ खेलहु, हारि, जितावहिं, मोही॥

दोहाः—महूं, प्रेम, संकोच ते, सनमुख, कही न बात !।
२६१. प्यासे नैना, दरस के, कबहुं जो, मोर, अघात !!॥

सका न सहि,'बिधि',मोर-दुलारा❋ मात, बीच-दइ, अंतर डारा।
यहऊ कहत,मोंहि, आज न सोभा ❋ अपने-मुख-कहि,साधू,को भा?॥
माता - कुटिल, भयों, मैं साधू ❋ अस जानेहू, बढ़त विषादू।
चांवर, फरत न, कोदों - बाली ❋ ताल-सीप, मोतिन-रहि-खाली॥

कहू. दोस, कलेस, न, आहा ! ※ मोर अभाग-सिंधु नहिं-थाहा।
अपन पाप, बिनु-किये, विचारा ※ बुरा-भला, मातहिं, कहि, जारा ॥
थकेउँ, खोजि हृदय, चहुँ-ओरा ※ एकहि-भाँति, भले ! हित-मोरा।
आप, गुरू, मालिक - सिय-रामा ※ लगत, नीक हुइ है परिनामा ॥

दोहाः— सुजन -सभा, गुरु, प्रभु, निकट, ,भले-ठौर, सत - भाउ।
२६२. कहत, प्रेम - छल, झूँठ-सच, जानत मुनि, रघुराउ ॥

प्रेम - प्रतिज्ञा, राखि, गे राजा ※ मात-कुमति-ते, भयो अकाजा।
दीख न जाइ, विकल महतारी ※ दुख ते, जरत, नगर-नर-नारी ॥
सब-अनरथ-की, एक, महीं जर ! ※ सहौं दुःख, सब, कान-नैन-भरि!।
सुनि, बन-गवन, कीन्ह रघुनाथा ※धरि मुनि-वेष, लषन, सिय, साथा॥
नँगे- पाउँ, दौरि, मैं, आई ※ यह की, 'शँकर', मोर-गवाही।
फिर, केवट - कर - प्रेम, निहारा ※ वज्र-हृदय, नहिं छिदा, हमारा ॥
अब, आँखिन-आ दीख, जो, भयेऊ ※ सूरख जीव, जियत, सब सहेऊ।
तमोगुनी, बीछी, और नागिन ※ जिनहिं देखि, कीन्हा विष-त्यागन॥

दोहाः—ते रघुनंदन-लपन - सिय, लागि, शत्रु - सम जाहि।
२६३. तेहि के सुत-कहँ-छांड़ि, विधि-!दुःख, सहावहि, काहि!! ॥

कवि!: सुनि, अति-विकल, भरत-की-बानी※प्रीति, नीति, दुख, विनयकीसानी।
व्याकुल सभा, सोक तनु जारा ※ कमल-के-बन, जनु, पाला मारा ॥
कहि, अनेक-विधि, कथा, पुरानी ※ समुझायो भरतहिं, मुनि-ज्ञानी।
बोले, योग - वचन, रघुनन्दू ※ सूरज-कुल- बन-कुमुद-के-चन्दू ॥
रामः-लाल ! न, जी महँ, करहु गलानी ※ बिधि के हाथ, जीव-गति, जानी।
तीन - काल, और लोक, निहारे ※ नीचे, तुम . ते, कीरति - वारे ॥
मन, सोचइ, जो, भरत - बुराई ※ तेहि कर जग, परलोक नसाई।
मातहिं, दोसहिं, मूरख, तेही ※ गुरू, संत, जिन, सभा न सेई ॥

दोहाः—छूटहिं जग - जंजाल' सब, मिटइ, पाप, दुख - भार !
२६४. जग महँ, जस, परलोक, सुख, सुमिरे - नाम -तुम्हार !! ॥

कहत,सत्य,मैं,करि'सिव'साखी ! ❋ प्रथ्वी रहइ, तुम्हारे - राखी ! ।
करहु न संका, कछु, मन लाये ❋ प्रेम, बैर, नहिं छिपत, छिपाये ॥
देखि - मुनी, पसु, पच्छी, आवहिं ❋देखि-(भील-सुत),प्रान छिपावहिं।
प्रेम, वैर, पच्छी - लागि, जाना ❋ नर, तौ, पावा,गुन,और,ज्ञाना ॥
तात ! तुमहिं, मैं, जानत नीके ❋ कहौं कहा, असमंजस, जी-के ।
पिता, तजेउ मोंहिं, सत्य-सँभारा ❋ प्रेम-दांव रखि, तन - हू हारा ॥
तासु-वचन, मेटत, मन, सोचू ❋ तेहि-ते-अधिक, तुम्हार सँकोचू ।
तेहि पर, गुरु, मोहिं आज्ञा दीन्हा ❋अब,जो,कहौ,अवसि,चहुं कीन्हा॥

दोहाः—मन, प्रसन्न-करि, सकुच-तजि, कहहू, करहुं सोइ, आज ।
२६५. कविः—सत्य-धारि-प्रभु, अस कहा, भा, सुनि, सुखी, समाज ॥

देवन-सहित, 'इन्द्र', सुर-राजा ❋ जाना, अवहीं, होत अकाजा ।
करत उपाउ, बनत, कछु नाहीं ❋ राम-सरन, मन-अपन, मनाहीं ॥
करि-विचार, इक सन, इक कहई ❋ भगतन-के-बस, 'रघुवर' अहई ।
सुमिरत "अम्बरीष" 'दुर्वासा' ❋ देव, 'इन्द्र', सब, भये निरासा ॥
पहिले, देवन, सहे विषादा ❋ नरसिंह, प्रगट कीन्ह 'प्रहलादा' ।
लागि लागि कान,कहत,धुनि-माथा ❋ "देव-काज,अब, भरत-के-हाथा ॥
और - उपाउ, न देखा देवा ❋ रामहिं, प्यारी, सेवक - सेवा ।
प्रेम-सहित, सब,सुमिरत भरतहिं ❋ जे,गुन,सील,राम, बस-करतहिं ॥

दोहाः—देवन - की - मति, 'सुर - गुरु', देखि, सराहत भाग ।
२६६. सुर-गुरुः—मंगल - दाता, जगत मैं, 'भरत - चरन - अनुराग ॥

'सीतापति' - सेवक - सेवकाई ❋ काम - धेनु - सम, श्रेष्ठ कहाई ।
'भरत' - भक्ति, तुम्हरे-मन, आई ❋ तजहु सोच,'विधि',बात-बनाई ॥
देखहु, 'इन्द्र' ! भरत-प्रभाऊ ❋ जिन्ह-सुभाउ-बस हैं,'रघुराऊ'! ।
मन, थिर करहु, देव ! डर नाहीं ❋ समुझहु 'भरत', राम-परिछाहीं ॥
कविः—सुनि सलाह-देवन, भा सोचू ❋ अंतर-जामी, प्रभुहिं, संकोचू ।
'भरत', भार - सिर-अपने-जाना ❋ करत बिचार,मनहि-मन, नाना ॥

आखिर, करि-विचार, यह ठाना * प्रभु-की-आज्ञा-ही, हित जाना।
भरतः-तजि, प्रणअपन रखेउ, प्रण मोरा * लाड़, प्रेम हू, कीन्ह, न थोरा॥
दोहाः—कीन्ह कृपा मो पर, प्रभु, अति-ही, सीता-नाथ!।
२६७. कविः-करि प्रनाम, बोले भरत, जोरि कमल-दोउ-हाथ॥
भरतः-कहऊँ, कहाऊँ, कह, अब, स्वामी! * दया-सिंधु, तुम, अंतर-जामी!।
गुरु, प्रसन्न, और स्वामी, राजी * मिटी पीर, कलपावन-हारी॥
वे-जर-सोच, झूँठ-डर, मन महँ * भूले-मग, कह दोस, सूर्य-कहँ!।
मोर-अभाग, मात-कुटिलाई * विधि-गति-उलटि, काल-कठिनाई॥
रोपि पाउं, सब मिलि, मोहिं, घाला * दीन-पाल, आपन-प्रन-पाला।
नई-रीति, है, तुम्हरी, नाहीं * छिपी, कहूं, जग, वेदहु माहीं॥
सब-जग, बुरा, भले, यक-साईं! * तुम-बिन भला-करइ, कोउ नाहीं।
कल्प-वृक्ष-सम, आप-सुभाऊ * सन्मुख-भये, विमुख नहिं, काऊ॥
दोहाः—जाइ, निकट, पाहिचानि-के, वृक्ष-छांह, तजि-सोंच।
२६८. मुँह-मांगा, पावत, सबहिं, राउ, रंक, भल, पोच॥
लखि, सब-विधि, गुरु-स्वामिसनेहू * भा, मन-थिर, नहिं रह सँदेहू।
दयावान! अब, करिये सोई * हित-मोरा, तुम्हें, सोक न होई॥
निज-हित, स्वामी-सोक-माँ-डारै * सो-सेवक, मति-हीन, कहावै।
सेवक-हित, या-ही-महँ, भाई! * तजि-सुख-लोभ, करइ सेवकाई॥
लौटे, यक-स्वारथ, सब-ही-का * प्रभु-आज्ञा, परमारथ-नीका।
यह स्वारथ, परमारथ-सारू * पुण्य-केर-फल, सुगति-सिंगारू॥
एक-विनय, मोरी, सुनि लीजै * फिर, जो रुचि आवै, सो कीजै।
तिलक-साज, सब, लायों, वनाई * चाहौ, सफल करहु, रघुराई!॥
दोहाः—'शत्रुहन', मो कहँ, भेजि-बन, फिरहु, 'अवध', रघुनाथ!।
२६९. लषन, शत्रुहन, फेरि, कै, लेहु-दास-कहँ, साथ!!॥
कै, सिय-संग, फिरहु, रघुराइ! * पठवहु बन, हम-तीनहु-भाई!।
जेहि-विधि, प्रभु! प्रसन्न मन होई * दया-सिंधु! अब, करिये, सोई॥

सबहिभार,विधि',तेहि-सिर-डारा * जेहि-के,नीति, न, धर्म-विचारा ।
कहत बचन, मैं, स्वारथ-जाना * रहत न,दुखिया-के-चित,ज्ञाना ॥
प्रभु - आज्ञा, सुनि, उत्तर देई * लाज लजावहि, सेवक, तेई ।
अस-अवगुन-कर - सागर - भाई * करत, प्रेम-वस, तासु-बड़ाई ! ॥
यह मति,अब, कृपालु,मोहिं,भावे * स्वामी-मन,जेहि, सोच न आवे ।
प्रभु-सौं ! कहौं मैं, सत्य-सुभाई * हित-मंगल - कर, एक-उपाई ॥
दोहाः—प्रभु, प्रसन्न-मन, सोच-तजि, जो, जेहि, आज्ञा, तात ! ।
२७०. सो धरि-धरि-सिर, करहिं सब, सुरझइ, उरझी-बात ॥
कविः–भरत-बचन,सुभ,सुनि,सुर हर्षे * कहि-साधू, सुर, फूलन वर्षे ।
असमंजस-महँ, अवध-के-वासी * मन-फूले, तपसी, वन-वासी ॥
रघुवर, चुप-हुइ, रहे सँकोची * सो-गति-देखि,सभा,सब, सोची ।
जनक-दूत, तेहि-अवसर, आये * मुनि-'वसिष्ठ',सुनि,बेग.बुलाये ॥
करि - प्रनाम, ते, राम - निहारे * 'राम'-वेष-लखि, भये दुखारे ।
दूतन ते, मुनि पूँछत बाता * पूँछा, "जनक, कुसलहैं,भ्राता!"॥
सुनि, सकुचाइ,भूमि, धरि-माथा * दूतन कहा, जोरि-करि-हाथा ।
दूतः–अस-आदर, पूँछत कुसलाई * और,कहा, फिर,कुसल कहाई ॥
दोहाः—नाहिं तौ, कौसल-नाथ-के-साथ, कुसल गइ, नाथ! ।
२७१. 'मिथिला', 'अवध',तौ,खास-कर, सब जग,भयो,अनाथ ॥
दसरथ-की-गति, कानन, सुनेऊ * 'जनक'-नगर, पागल हुइ गयेऊ ।
बीस-बिसे, भे, 'जनक' विदेहू * सत्य-नाम,अस,जग, नहिं, केहू ॥
सुनत, कुचालि-केकई, नृपहिं * सूझि न कछु,मनि-बिनु,जस,सर्पहिं।
'भरत', राज, रामहिं वन-वासू * भयो,'जनक',सुनि,हृदय,हिरासू ॥
मंत्रिन, विद्वानन ते, राजा * पूँछा, "चही करब कह, आज्ञा?"।
समुझि अवध, असमंजस, दोऊ * चलिये,कि रहिये,न कह,कछु,कोऊ॥
जनक, हृदय, धरि-धीर, विचारी * पठये 'अवध', दूत, कहि, चारी ।
"आयो ! भरत-केर-मन, जाने * वेग, न मरम, कोउ पहिचाने" ॥

दोहाः—गये दूत, बूझी, लखी, अवध, भरत-करितूत।
२७२. बन कँह, आये, 'भरत', इत, 'जनक-पुरी', गे, दूत॥

दूतन, आइ, 'भरत'-की-करनी * मति-अनुसार, सभा मैं, बरनी।
गुरू, कुटुँभी, मंत्री, भूपति * सोच,प्रेम,ते, भये बिकल-अति॥
धरि-धीरज, करि, भरत-बड़ाई * वीर, सैन-पति, लीन्ह बुलाई।
घर, पुर, देस, सौंपि - रखवारे * गज, घोरा, रथ, अपन सँवारे॥
साधि, दु-घरिया, तुरत, महूरति * चले, रुके-बिन,सोक-की-सूरति।
भोरहिं, आज नहाइ - 'प्रयागा' * सैना, 'जमुना'-उतरन - लागा॥
हमहिं,खबर-कहँ, पठवा, नाथा ! * अस कहि, दूतन, नायो माथा।
कविः-साथ, किरात, छु-सातक,दीन्हे * बिदा, दूत सब,मुनि,तब, कीन्हे॥

दोहाः—सुनत, 'जनक'-आगमनि, सब, हर्षेउ, 'अवध'-समाज।
२७३. राम-के-मन-महं, सोच भा, समुझा 'इन्द्र' अकाज॥

गलत, सोच - के - बस कैकेई * जनक, कहइं केहि,दोसहिं केई !।
भये खुसी, समुझे, नर - नारी * निश्चय, रहब, दिना, दुइ-चारी॥
यह प्रकार, वह दिन, तौ, गयेऊ * लोग नहाइ, भोर, जो, भयेऊ।
'गनपति','गौरी', पूजा 'शंकर' *दीन्हा,'सूरज',जल,उंजिरिन-भरि॥
लछमी-पति, भगवान, मनावत * जोरत कर,औरु, हाथ पसारत।
"होहिं राम राजा, सिय रानी * आनद-पुरी, अवध, रजधानी॥
"बसहिं,अवध,सुख,लिये-समाजा * करहिं, राम, भरतहिं युवराजा।
"यह-सुख-अमरित,सींचहु,सबकहँ*जनम-लिये-फल,पावहिं,जगमहँ"॥

दोहाः—"गुरु, समाज, भाइन-सहित, राम-राज, पुर, होइ।
२७४. राम राज महँ, हम मरहिं", अस मनावे, सब - कोइ॥

सुनि, सनेह - की, लोगन - बानी * थूकत जोग, बिरागहिं, ज्ञानी।
नित्य-करम-करि, पुलकि सरीरा * करत प्रनाम, आइ, रघुवीरा॥
ऊँच, नीच, मध्यम, नर - नारी * पावत दरस, भाव - अनुसारी।
सावधान, सब कहँ, सन्मानहिं * सो,सब,रामहिं,देखि सराहहिं॥

लरिकाई - ते, राम - की - बानी * पालत नीति, प्रीति पहिचानी ।
सील - सँकोच - सिंधु, रघुराऊ * बात-चीत, अति-सरल,सुभाऊ ॥
कहत राम - गुन, सब, अनुरागे * आपन - भाग, सराहन लागे ।
पुण्य-वान, जग महँ, अस,थोरे ! * समुझत,राम,जिनहिं,'ये, मोरे' ॥

दोहाः—भये, प्रेम-महँ, मगन, सब, सुनाः 'जनक' - रहे - आइ ।
२७५. सभा-सहित,कुल-भानु,प्रभु, उठे, लेन, घबराइ ॥

मंत्री, भाइ, लोग, गुरु, साथा * आगे, गवन कीन्ह, रघुनाथा ।
उधर, 'जनक',देखा गिरि,जबहीं * करि-प्रनाम, त्यागा रथ,तबहीं ॥
राम - दरस - लालसा, उछाहू * थके, कलेस - भयो, ना, काऊ ।
मन, तहँ, जहँ, रघुवर - वैदेही ! *बिनु-मन,तन-दुख-सुख,सुधि,केही!॥
आवत, 'जनक', चले, यह-भांती * सहित-समाज, प्रेम, धरि-छाती ।
आये, निकट, देखि, अनुरागे * सादर, मिलनि, एक-इक, लागे ॥
'जनक'कीन्ह रिखियन-पद-वन्दन * रिखिहिं,प्रनाम कीन्ह, रघुनंदन ।
भाइन-सहित,राम,मिलि राजहिं * चले, लिवाइ, समेत-समाजहिं ॥

दोहाः—आपन - आश्रम - सिंधु महं, भरेउ शांत, जहं, नीर ।
२७६. सोच-नदी, सब - सैन - की, लिये - चले, रघुवीर ॥

तोरत, ज्ञान - विराग - किनारे * सोक-वचन, लीन्हें सँग, नारे ।
गहिर-साँस, जनु, लहर-उठावत * बहत, धीर्ज,जनु, वृत्त, उखारत ॥
बहत, तेज, दुख-की, जनु, धारा * घूमत, भय-भ्रम-भवँर अपारा ।
बुधि, केवट, विद्या, जनु, नावा * को खेवइ, कोउ, खेइ न आवा! ॥
जात, भील, देखत, हिय - हारे * सकत न जोर-लगाइ, बिचारे ! ।
सागर - मिली, नदी, जब, जाई * उठा, मनहु, सोऊ, अकुलाई ॥
बिकल-सोक, दोउ-ओर-समाजा * रहा न ज्ञान, न धीरज, लाजा ।
दसरथ-गुन,और सील, सराहत * डुब्बी, सोक-समुद्र, लगावत ॥

छंदः—डुब्बी लगावत, सिंधु, अस, नर-नारि, सब, ब्याकुल, महा ।
रिस ते, कहत, टेढ़ा बिधाता हुइ, अहा, कीन्हा कहा ॥

सुर, सिद्ध, तपसी, जोग-जन, मुनि, देखि दसा विदेह - की ।
नहिं सकत, तुलसी, तैरि, कोउ, नद्दी - अथाह, सनेह - की ॥
सो०ः—दीन्ह बहुत - उपदेस, जहं - तहं, लोगन, मुनिन ने ।
२७७. 'धीरज धरहु, नरेस' कहेउ 'वसिष्ठ','विदेह'-सन ॥

मोह-अंध, जेहि-ज्ञान,नसावहि * जासु वचन,मुनि-मनहिं खिलावहि।
ताहि न, ममता, मोह सताही * यह सिय - राम-सनेह - बड़ाई ॥
भोगी, साधू, सिद्ध, सयाने * वेद, तीन, जग, जीव, बखाने ।
राम-प्रेम-कर-रस, जेहि-मन-महँ * तेहि-आदर,अति सुजन-सभा-महँ॥
राम-प्रेम-बिनु, ज्ञान न सोहत ! * बिन-मल्लाह, नाव,कहुँ, खेवत ! ।
कवि:-मुनि,बहु-बिधि,'विदेह'समुझाये * राम - घाट, सब, जाइ नहाये ॥
सोच-विकल भे, सब, नर - नारी * सब-दिन,बिनु-जल-लिये गुजारी।
पसु, पच्छी, नहिं कीन्ह अहारा * कैसे, करत, प्रिय - परिवारा ॥
दोहाः—राम-समाज, औ, जनक-की, भोर, किये - अस्नान ।
२७८. बैठे, बरगद - तीर, सब, मन - मलीन, कुम्हलान ॥

जे बृह्मण, दसरथ - पुर - वासी * और,जे मिथिला-देस-निवासी ।
रघुकुल-गुरू, 'जनक' - के-पाधा * जिन,जग-कहँ,भल,सोधा-साधा॥
लगे करन उपदेश - बखाना * नीति, विराग, धर्म, और, ज्ञाना ।
'विश्वामित्र' कहा, मिठ-वानी * सिखइ-सभा,कछु,कथा-पुरानी ॥
राम:-'विस्वामित्रहिं',प्रभु,अस,कहेऊ * नाथ!काल,जल-बिन,सब रहेऊ ।
विश्वामित्रः-कहमुनि,उचित,कहत,रघुराई!*चढ़िआवत,दिन,पहर-अढ़ाई ॥
जनकः-मुनि-रुख-देखि,कहा,तब,'राजा'* इहाँ, उचित-नाहिं, खाइ अनाजा ।
कहा-भूप, भल, सबहिं, सुहाना * आज्ञा-पाइ, चले अस्नाना ॥
दोहाः—तेहि-अवसर, फल, फूल, दल, मूल, अनेक-प्रकार ।
२७९. कोल, भील, लाये, दौरि, भरि-भरि-बहिंगा, भार ॥

'चित्रकूट', सब, इच्छा पूरत *मिटत दुःख,सब,गिरि-कहँ-घूरति।
नदी, तलाउ, भूमि और, जंगल * उमड़त,सब,जनु, आनँद-मँगल ॥

वृक्ष, बेल, नित, फरहीं, फूलहिं * सुंदर बोली, पक्षी, बोलहिं ।
कहि न जात, वन-केरि-उछाहू * तीन-ब्यारि, सुख दें, सब काहू ॥
छाइ मनोहरता, अस-जानी * पृथ्वी, करत 'जनक'-महिमानी ।
तब, सब-लोग, नहाइ, नहाई * राम जनक-की, आज्ञा-पाई ॥
छाया-घनी, पेंड़, तकि, आगे * जहँ, जेहि-चाहा, उतरन लागे ।
दल, फल, मूल कंद, विधि-नाना * अति सुन्दर, जनु, अमिरित-साना ॥

दोहाः—आदर-ते, सब कहँ, गुरू, पठये, भरि-भरि-थार ।
२८०. पूजि पितर, गुरु, देवता, लगे करन फलहार ॥

यह-विधि, वीते, दिन, कोउ, चारी * देखि राम, नर-नारि, सुखारी ।
दोउ समाज, अस रुचि, मनमाहीं * बिनु-सिय-राम, फिरब, भल-नाहीं ॥
बन बसि, संग-सिय-रघुनायक * स्वर्गहु-ते, जनु, बढ़, सुखदायक ।
छांडे राम, लषन, वैदेही * भावहि घर, 'विधि', टेढ़ा, तेही ॥
सीध होइ, जब, विधिना, सबहीं * राम-पास बसिये, वन, तबहीं ।
तीनहु-काल, नदी-अस्नाना * दरसन, सुखदायक, भगवाना ॥
परवत, वन, तपासिन-अस्थाना * कंद मूल, अमरित-सम, नाना ।
चौदह-बरस, कहत, मन ठाना * पल-समान, बीतहिं, बिनु-जाना ॥

दोहाः—घरेउ, कहाँ, अस-जोग, है, मिलइ, जगहि-जो-भाग ।
२८१. कहत, लोग, दोउ-ओर-के, राम-चरन-अनुराग ॥

यह-बिधि, लोग, मनोरथ करहीं * प्रेम-वचन-कहि, सुनि-मन, हरहीं ।
सिया-मात, तेहि-समय, पठाई * दासी, अवसर-देखन, आई ॥
निरखू-जानि, सबहिं-सिय-सासू * आवा मिलनि, 'जनक'-रनिवासू ।
'कोसल्या', सादर, सन्मानी * आसन दिये, समय-सम, आनी ॥
सील, प्रेम, असा, दोउ-ओरा * पघिलि, देखि, सुनि, वज्र-कठोरा ।
पुलकित, देह-सिथिल, जल लोचन * सोचहिं, धरती-लगीं-खरोंचनि ॥
सब, सिय-राम-प्रेम-की-मूरति * धरे-वेष, जनु दुख, बहु-सूरति ।
सियमातः टेढ़ा-विधि, कह, सीता-माता * दूध-फेन-पर बज्र चलाता ॥

दोहाः—देखत-विष, अमरित-सुनत, अति-कराल, करितूति।
२८२. हंस, झील-यक; जग-भरे, बकुला, कौआ, छूत ॥
सुमित्राःकहा,'सुमित्रा',मनमहँ,सोकी * बिना-प्रीति,विधि-रीति,अनोखी।
रचइ, पालि, मारइ, मति-भोरी * बाल, खेलि-राचि, डारहि-फोरी ॥
कौसल्याःराम-मातकह,दोस-न-विधिना*दुख,सुख,हानि,लाभ, वस-कर्मा।
कठिन करम-गति, जान-विधाता * होत,असुभ,सुभ,फल-कर-दाता॥
विधि-आज्ञा,सबही,सिर, धारत *जिआनि,मरानि,पालनि,विष,अमरित
वृथा-सोच ! भा ऐसा-वैसा * विधि-प्रपंच, रह, अटल, हमेसा ॥
जियन-मरन-दसरथ-सुनि,रानी ! * होत सोच, जाने-निज-हानी।
सियमातःसीय-मातकह,सत्य-है-वानी * पुण्य-वान ! तुम, दसरथ-रानी ॥
दोहाः—लषन, राम, सिय, बन रहहिं, यह-कर-अंत, तौ, नीक।
२८३. कौसल्या कह 'कोसल्या', सोच, इक,लागत 'भरतहु-ठीक' !! ॥
ईस्वर-कृपा, असीम्-तुम्हारी ! * गंगा-जल-सम,सब, सुत, नारी।
खाइ-राम-सौं, कबहुं न, माई ! * सत्य-भाव, कहुं, अब,सो-खाई!॥
{ भरत-सील, गुन, नवनि, बड़ाई * भक्ति, सनेह, भरोस, भलाई।
कहत,सारदा-की-मति, पिकचत! * सीप ते,सागरहू,कहुँ उलचत ! ॥
जानुँ 'भरत', कुल-दीपक, भयेऊ * बार-बार राजहु, अस कहेऊ।
सोना, कसे, जवाहिर, परखे * पुरुष-सुभाउ, भले-दिन-सरके ॥
अनुचित,आज,कहन-अस,मोरी * सोक सनेह, चतुरता-थोरी।
कविः-निर्मल, गंगा - जल-सी,वानी * बिकल,प्रेम-बस,सुनि, भइ रानी॥
कौसल्याः-दोहाः—कौसल्या, धरि-धीर, कह, सुनु, देवी, मिथिलेसि !।
२८४. ज्ञान-सिंधु-की - नारि, तुम, तुमहिं, सकई,उपदेसि !! ॥
कहेउ, 'भूप' सन, अवसर-पाई * अपनि-ओर-ते, अस समुझाई।
चाहइ-मन, घर,'लषन'फिरावहिं * 'भरत',राम के सँग,बन,जावहिं॥
करेउ, भाँति-भल, जतन,विचारी * मौका, सोच, 'भरत'-कर भारी।
बहुत-सनेह, भरत - मन-माहीं * रहे, ठीकै, मोहिं, लागत नाहीं ॥

कवि:-लखि सुभाउ,सुनिसरल-सुबानी॰ करुना - रस, डूबीं, सब रानी।
भइधुनि:"धन्य",फूल,लगे बरसन॰ थके,प्रेम-लखि,मुनि, जोगी,जन॥
थकि, रनिवास,चितइ,रहि गयेऊ॰ तब, धरि-धीर 'सुमित्रा'कहेऊ:।
"दुइ-घरी, रात, देवि!गइ बीती"॰ राम-मात, सुनि, उठी,सप्रीती॥
कोसल्या:-दोहा:-वेग, पधारहु जाइ, सब, कहूं, प्रेम, सति-भाय।
२८५. ऊपर, मालिक - ईस, कै, नीचे, 'जनक' सहाय॥
कवि:-लखि,अस-प्रेम,सुने,अस-बानी॰ पकरि पाउं,कह 'मिथिला-रानी'।
सीता-माता:-क्योंनहोइ,असविनय-तुम्हारी!॰दसरथ-रानि,राम-महतारी!॥
बड़े, नीच कहँ, मानत, धरि'सिर॰अग्नि,धुआं,सिर,घास,धरत गिरि।
'राजा', तुम्हरे,सब-विधि किंकर॰ देवि!सहायक, गौरी - संकर !॥
जग, हुइ-सकइ, तुम्हार-सहाई !॰ सूरज कहँ, को दिया - दिखाई।
राम, जाइ-बन, करि सुर-काजू॰अचल,अवध,फिर,करिहहिंराजू॥
देव, नाग, नर, राम - भुजा-बल ॰बसिहहिं,सुख-ते,निज-निज-अस्थल।
यहसब,'जागबालिक',कहि राखा॰ देवी ! झूठ नहीं, मुनि - भाखा॥
कवि-दोहा:—अस-कहि, परि-पग, प्रेम-अति, सिय-हित, विनय, सुनाय।
२८६. सिय-समेत, सिय-मात,तब, चली, सुआज्ञा - पाय॥
मिली कुटुंबिन, जा वैदेही॰ जो,जेहि-लायक,मिलि,तस,तेही।
तपसी - वेष - जानकी-देखी॰ भये विकल सब,दुःख विसेखी॥
जनक, राम-गुरु - आज्ञा - पाई॰ ठौर आइ, सिया देखा, आई।
लीन्ह लाइ उर, जनक, जानकी॰ अति पवित्र, महिमान-प्रान-की॥
प्रेम-सिंधु, उर, उमड़न लागा॰ भयो, भूप-मन, मनहु, प्रयागा।
सिय - स्नेह - वट, बाढ़त पावा॰ राम-प्रेम, जनु बाल सुहावा॥
जनक-ज्ञान, भा, जनु, "मरकंडे"॰ बाल-सहारा, मिलि गयो,अंधे।
सकत न जनक, मोह-माँ-डूबी॰ यह, सिय-राम-प्रेम-की खूबी॥
दोहा:—सिय, पितु-मात-सनेह-बस, विकल, न सकी, सँभारि।
२८७. पृथ्वी - कन्या, धीर-धरि, अवसर, धरम विचारि॥

तपसी-बेष, जनक, सिय-केरा * देखि, प्रेम, सनतोष, घनेरा।
जनकः–दोऊ कुल, बेटी ! तुम तारे * गइहहिं जस,जग,लोग,तुम्हारे! ॥
'गंगा', तुम, दीन्हीं सरमाई * सो-बृह्मांडन, तुम-जस छाई।
तीनहिं तीरथ, 'गंग'-किनारे * तुम-जस, लाखन-मुनिन सँवारे ॥
कविः–कहत पिता,अस,प्रेम-की-बानी * धरती-महँ सिय, जात समानी।
फिर, पितु, मात, लीन्ह, उर लाई * सिख,असीस,दोउ,दीन्ह सुहाई ॥
कहत न, सिय, सोच-मन-माहीं * रात-बसब, इहाँ, नीका नाहीं।
देखे-रुख, माता कहा, राऊ * जनक सराहा, हृदय, सुभाऊ ॥

दोहाः—बार, बार, मिलि, भेंटि सिय, बिदा कीन्ह, सिर-नाइ।
२८८. 'भरत'-की-गति, पाये-समय, रानी, कही, सुनाइ ॥

भरा, 'भरत' ,अस-सेवक - धर्मा * सोन:सुगँध, अस रित:चंदरमा।
ढरके - नयन - मूँदि, पुलके - तन * भरत-केर-जस, लगे प्रसंसन ॥
जनकः-'भरत'-कथा,सुनु,रानी,प्यारी! * जग-बंधन-की, तोरन-हारी !।
नीति, धर्म, और, बृह्म - विचारा * महुं समुझत,मति-के-अनुसारा॥
सो मति, मोर, प्रिय ! सकुचावत * छुवत न छाहीं, कस कहि आवत।
सेष, सारदा, बृह्मा, सँकर * पंडित,बुद्धि-मान,कवि, चातुर ॥
करनी, चरित, भरत के, भाई ! * धर्म, सील, गुन, और, बड़ाई।
समुझत,सुनत, सबहिं, सुख-दाता * गंगा-जल, अमरित, सरमाता ॥

दोहाः—उपमा, अपनी, आप - ही, को, जग, भरत - समान।
२८९. दे, पहाड़ कँइ, सेर कहि, कवि-मति रहि सकुचानि ॥

कस बरनइ, कवि मुसिकल ऐसी * चलत, माछरी, सूखे, जैसी।
भरत-की - महिमा, मोरी रानी ! * जानत राम, न सकत बखानी ॥
चहत, प्रेम-सन, भरत - सुभाऊ * रानी - रुख - जाने, कह राऊ।
लौटहिं 'लषन', भरत, बन-जाहीं * भला, और, सब-के-मन-माहीं ॥
राम-प्रतीति, 'भरत' - की - प्रीती * को समुझइ, आपुस-की-रीती।
प्रेम-की - मूरति, भरत, उजागर * रघुवर, सब-पर, दृष्टि,बराबर ॥

लोक, प्रलोक, जगत-सुख, सारे ❋ भरत, न,सपनेहु,कबहुं, निहारे ।
नित-नित, प्रेम, राम-चरनन पर ❋ लगत,यही सिद्धान्त,'भरत'-कर॥

दोहाः—भूलेहु,'भरत',न, स्वप्न-महँ, टारहिं राम - की बात ।
२६०. प्रेम-किये, फिर, सोच कह, कहा, भूप, बिलखात ॥

कविः–बरनत प्रेम-ते,राम-भरत-गुन ❋ बीती रैन, पलक-सम, दोउन ।
भोर, समाज दोउ, उठि, जागे ❋ करि स्नान, सुर-पूजन-लागे ॥
गे. नहाइ, गुरु पहँ, रघुराई ❋ नाइ माथ, अस-बोले, आई ।
रामः–नाथ ! भरत, सब जन, महतारी ❋ विकल-सोच,बन-बसत,दुखारी ॥
जनक-राउ, और, जनक समाजी ❋ कब लगि,सहइँ कलेस,पिता जी!।
उचित होइ, सो, कीजिये, नाथा!❋ सब कर-हित,आपहि-के-हाथा!॥
कविः–असकहि, अतिसकुचे रघुराऊ ❋ पुलके मुनि, लखि,सील सुभाऊ ।
तुम-बिनु,राम !,जगत-सुख, नाना ❋ दोउ-समाजन, नर्क-समाना ॥

दोहाः—जीवं-जीव के, प्रान, तुम, प्रान-के, सुख-के-सुःख ।
२६१. होइ अभागी, घर-चहै, तजे-तुमहिं, जो, दुःख ॥

अस सुख, धरम, करम,जरि जावे ❋ जेहि मा, राम-चरन-ना-भावे ।
जोग, कुजोग, ज्ञान, अज्ञाना ❋ राम-प्रेम, जेहि, बड़ा न जाना ॥
तुम-बिन, दुखी, सुखी, तुम-साथा ❋ सब-कर-जी, जानत, रघुनाथा! ।
तुम्हरी - आज्ञा, सिर सब-ही-के ❋ सब-की-गति,जानत,तुम, नीके ॥
वसिष्ठः-'आस्रम,चलहु',तनिक,रघुराऊ!❋सिथिल प्रेम-सों,कह मुनि-राऊ ।
कविः-करि-प्रनाम, तब, राम सिधाये ❋ गुरू,'वसिष्ठ',जनक पहँ, आये ॥
राम-वचन, गुरु, नृपहिं, सुनाये ❋ सील, सनेह, सुभाउ, सुहाये ।
गुरूः–महाराज ! अब, करिये, सोई ❋ रहइ धर्म, सब-कर-हित होई ॥

दोहाः—ज्ञान - भरे, तुम, अति - चतुर, धर्म - धीर - महिपाल ! ।
२६२. केहि के हाथन, मिटि सकइ, असमंजस यह, काल !! ॥

कविः-सुनि,मुनि-बचन,प्रेम,भरिआवा❋ ज्ञान, विरागहु, भयो विरागा ।
भये सिथिल, सोचत, मन-माहीं ❋ "आये,यहां, कीन्ह-भल-नाहीं" ॥

दसरथ, रामहिं, बनहिं, पठावा * प्रेम, सत्य-करि, अपन, दिखावा ।
रामहिं, वन - ते -बनहिं, पठैंहऊं * ज्ञान-बढ़ाइ, घरइ, खुस, जैहऊं ॥
बृह्मण, मुनि, तपसी, यह देखी * फँसे, प्रेम-बस, विकल बिसेखी ।
समय-जानि, धीरज-धरि, 'राजा' * चले, 'भरत'-पहँ, लिये-समाजा ॥
'भरत', आइ - आगे, सब लीन्हे *. समय-जोग, सब, आसन दीन्हे ।
जनकः-सुनहु, भरत ! बोले अस, राऊ * तुम जानत, रघुबीर - सुभाऊ ॥
दोहाः—चहत - धर्म, ठाना—करत, सब-कर - सील - सनेहु ।
२६३. सोच - परे, संकट सहत, करहुँ, जो - आज्ञा - देहु ॥
तन - पुलकित, नैनन, जल लाई * अति-धीरज-धरि, बोले, भाई ! ।
भरतःराम, स्वामि, औरं, आप, पिता-सम * गुरु, जिन-हित-ते, मात पिता-कम ॥
'बिस्वामित्र', और, सब मंत्री * सागर, आप, ज्ञान - के - जंत्री ।
बालक, सेवक, आज्ञा-कारी * समुझि देहु, सब-मिलि, निज-प्यारी! ॥
सभा, जगह-अस, फिर, तुम-बूझन * कह बोलइ, पागल, मैला-मन ! ।
कहत मैं, छोटे-मुँह, बड़ - बाता * छमहु, तात! लखि टेढ़-बिधाता ॥
कहत वेद, और, लिखा - पुराना * सेवक-धर्म, कठिन, जग जाना ।
स्वारथ, सेवा, दोऊ, जूझत * वैरी - बने, प्रेम नहिं सूझत ॥
दोहाः—धरम, नियम, रुख-राम, राखि, पराधीन, मोंहि, जानि ।
२६४. करहु, जो सब-की-राय-हो, हित, सनेह पहिचानि ॥
कविः—भरत-वचन-सुनि, देखिसुभाऊ * लगे सराहन, सभा, औ, राऊ ।
सहजहु, गूढ़हु, नरम, कठोरा * मतलब-बहुत, औ, अच्छर-थोरा ॥
लखि-मुख, सीसा, जात-न-पकरा * भरत-बानी, अधभुत, मति, मकरा ।
भरत, भूप, मुनि, साधु, समाजा * गये, राम-पहँ, जहँ सुरकाजा ॥
बिकल लोग सब, होइ-कहा-अब * तकत-नयो-जल, मछरी-भे, सब ।
पहिले, देवन, गुरु - गति - देखी * जनक-केर, फिर, प्रेम-बिसेखी ॥
भक्ति-भरे, फिर, 'भरत'-निहारे * देव, मतलबी, कह, हिय - हारे ।
फँसे - प्रेम - महँ, रामहिं, जाना * रहि-गे, बुत-से, हिलत-न-काना ॥

दोहाः—रामहिं, प्रेम, संकोच - वस, जाना, जब, सुर-राज।
२९५. सुर-राजः—कह, पंचहु ! माया रचहु, नाहिं - तो, भयो अकाज ! ॥

सुमिरि - सारदा, करी वड़ाई ❊ देवन कहा, "सरन अब, माई!"।
देवः-भरत-की-मति,फेरहु,करि-माया ❊ राखहु देवन, करि-छल छाया ॥
कविःचतुर सारदा, सुनि, अम वानी ❊ गरजी, देव, मूढ़, पहिचानी।
सारदाः-मो ते कहत,भरत-मति,फेरहु ❊ नयन-हजार! 'सुमेरु',तौ, हेरहु ॥
विधि, विष्णू, शिव-माया, भारी ❊ भरत-की-मति,नहिंसकत निहारी।
सो मति, मोते, कहत,कि फोरहु ❊ कहत 'चांदिनी!चंदा-चोरहु' !।
भरत,हृदय, सिय - राम वसत हैं ❊ अंधकार, जहँ, सूर्य बरत हैं ! ॥
कविः—गई, कहत-अस,ब्रह्म-लोक-कहँ ❊ छांड़ि, विकल-चकवा, रात्री-महँ।

दोहाः—मैला - मन, सुर, मतलबी, बांधे - खोंटी - राय।
२९६. आपुन माया, अस रची, कि, भय, भ्रम, दुख, ना जाइ ॥

करि-कुचालि,सोचत,'सुर-राजा' ❊ 'भरत-हाथ, सब-काज-अकाजा।
गये जनक, जहँ, रहे रघुनायक ❊ उठे कीन्ह-आदर, कुल-दीपक ॥
समय, समाज, धरम-अनुसारा ❊गुरू-'वसिष्ट',अस-कहा,विचारा।
गुरूः—जनक - भरत - संवाद सुनावा ❊ कहा, भरत-जो, सोउ, बतावा।
जस आज्ञा, अब, हो प्रभु - केरी ❊ सो सब करहिं,यही मति मेरी ॥
कविः-सुनि, रघुनाथ, दोउ-कर-जोरे ❊ मीठे, सत्य, वचन, अस, बोले।
रामः—गुरु,और,'जनक',दोउ विद्वाना ❊ कहौं, कहा, फिर,मैं, नादाना ! ॥
जस-मति, तुम - दोउन-की, होई ❊ आपु-की-सौं!मैं, करिहौं,सोई ! ॥

कविः—दोहाः—मुनी, जनक, सकुची सभा, कसम - खात - रघुनाथ।
२९७. लगे विलोकन भरत - मुख, निकसत, केहु, न, बात ॥

सभा, सकुच-बस, भरत-निहारी ❊ धरा, भरत, धीरज, तब,भारी।
कुसमय-जानि, प्रेम, कसि-बांधा ❊ज्यों,'अगस्त्य','विंधा-चल'साधा॥
{ शोक-'हिरण्याक्ष', सब-गुन-वारी ❊ जब मति, प्रथ्वी-हरी, विचारी।
{ भरत - ज्ञान, धरि, वेष - 'बराहा' ❊ कीन्ह, तुरत, उद्धार, सुहावा ॥

करि प्रनाम, सब कहँ, कर-जोरें * राम, राउ, गुरु, साधु निहोरे।
भरतः-छमहु, आज, सब, अनुचित मोरा * कोमल-मुख, कहुं, वचन-कठोरा॥
कविः-सुमिरत, भइ, 'सारदा' सहाई * मन-ते, चट, मुख-कमलहिं, आई।
नीति, ज्ञान, और धरम के मोती * बानी, हंसिनी-सुनदर, चुँगती॥
दोहाः—ज्ञान-के - नयनन, देखि-के, सिथिल, सनेह, समाज।
२६८. करि प्रनाम, बोले भरत, सुमिरि - सिय - रघुराज॥
भरतः-गुरू, मित्र, माता, पितु, स्वामी * हितू, पूज्य, और, अंतर-जामी।
सील, सुभाउ, सरल, प्रभु-नीके * सरन-पाल, सब जानत, जी-के॥
समरथ, सरनागत, हितकारी * पाप, दोस, तजि, गुनहिं-निहारी।
तुम-समान मालिक, यक-तुमहीं! * मों-समान, सेवक, इक, मैं-हीं!॥
पिता-वचन-तजि, मैं, बन-आयों * सब-समाज-हू, सँग, मैं, लायों।
{ भला, बुरा, जग, ऊँचा, नीचा * अमरित, विष, जीवन, औरमींचा॥
मेटी हो, प्रभु - आज्ञा, मन-से * दीख, न, आंखिन, सुना, कान-ते।
सो, मैं, सब-विधि, कीन्ह ढिठाई * जाना राम, प्रेम, सेवकाई॥
दोहाः—आप, भले, कृपा, भली, कीन्ह भलाई मोर।
२६६. मोर दोस, भूषन-भये, छायो-जस, चहुँ-ओर॥
प्रभु-की-बानी, रीति, बड़ाई * जानत जग, बेदहु, तो, गाई।
{ निर्दइ, दुष्ट, कुटिल, मति-हीना * बज्र, निडर, नीचा, वेदीना॥
तेहु, सुनि-सरन, सामने-आये * करत-प्रनाम, तुरत, अपनाये।
कबहुँ न, देखि-दोस, जिय-आने * साधुन-मुख, गुन सुने, बखाने॥
अस-स्वामी, सेवक-पर, दाया * आपन-सा, तेहि, देत बनाया।
कीन्हा-आपु, न सोचा, सपने * सेवक-सोच, सोच, मन-अपने॥
अस-स्वामी, तुमहीं, नाहिं, दूसर * कहत, रोपि-प्रन, भुजा-उठा-करि।
सुआ पढ़त, और, बंदर नाचत * जैस, पढ़ावत, और, जस डांटत॥
दोहाः—तैसेहि, दास, सुधारि, तुम, साधु-मौर, सिर-देत!
३००. बिनु कृपालु, बिगरी, जगत, कौन सुधारे लेत!!

सोक, प्रेम, कै, बालक-पन-ते * आयौं, आज्ञा-टारे, मन-ते।
तहूँ, कृपालू, लखि, निज-ओरा * सबहि-भाँति, भल माना मोरा॥
सुभ-चरनन-कर - दरसन पावा * जाना, स्वामी अस अनुरागा।
बड़ी - समाज, सराहत भागा * पती-चूक, पत अनुरागा !॥
कृपा, अनुग्रह-ते, भरि दीन्है * सब-अँग-मोर, अधिकता-कीन्है।
राखा, मोर-दुलार, गुसाईं ! * अपने सील, सुभाउ, भलाईं॥
नाथ ! बहुत, मैं, कीन्ह ढिठाई * स्वामि, समाज,सँकोच भुलाई।
करी-नरस, जैस, मन - आई * कही, छमहु, मैं, दुखिया, भाई॥
दोहाः—अच्छे - स्वामी - ते, बहुत - कहे, दोस, बढ़, राम !।
३०१. अब, आज्ञा, मोहिं दीजिये, मोर सुधारिये काम !!॥
सत्य - पुण्य - खानी, सुखदाई * राम-चरन, तिन-की-सौं-खाई।
राखि, उर चरन, यही रुचि मेरी * सोवत, जागत, सपने-केरी॥
होत, प्रेम - ते - ही, सेवकाई * चारहु-फल, छल, गरज, हटाई।
आज्ञा-पालन, ही, बढ़-सेवा * देहु, प्रसाद, सोइ,मोहिं,देवा !॥
कविः-असकहि,प्रेम-विवस,हुइ गयेऊ * पुलकि सरीर, नयन, जल चलेऊ।
प्रभु-पद-कमल, गहे, अकुलाई * सो-सनेह,को,कस, कहि पाई !॥
मीठी- बानी - कहि, सनमाना * धरा, पकरि, गोदी, भगवाना।
भरत-विनय-सुनि, देखि-सुभाऊ * सिथिल-प्रेम-ते, सब, रघुराऊ॥
छंदः—भये, प्रेम-ते, सब, सिथिल, साधू, राम,मुनि,'मिथिला-धनी'।
सब, 'भरत'-भाई-पन, सराहत, भक्ति-की-महिमा-बनी॥
भरतहिं, सराहत देवता, सब-दुख-टरे, मन-मतलबी।
तुलसी, विकल सब, सोच-वस, जनु, रात-आइ, कमल-कली॥
सो०—देखि, दुखारी, दीन, दोउन-ओर, नर-नारि, हू !।
३०२. 'इन्द्र', जो, महा-मलीन, मरिन-मारि, निज-सुख-चहत॥
छल-कुचालि-मूरति, सुर - राजा * पर-अकाज, चाहत-निज-काजा।
काग-समान, 'इन्द्र'-की-रीती * मैला, छली, न केहु-प्रतीती॥

पहिले, कपट, इकट्ठा-कीन्हा * सब-कर-मन, उचाट करि दीन्हा।
सुर-माया, सब लोगन लागी * कछु-कछु,प्रेम,दीन्ह,सब,त्यागी॥
मन,उचाट-बस,रहा न,फिर,थिर * बन-सूझत, कबहूँ, कबहूँ, घर।
भये दुखी, दुविधा-महँ-परि, अस * नदी,समुद्र,मिलत-पर,जल,जस॥
चित, दुइ-ओर, उठावहिं, धरहीं * यक-सन, एक,मरम, ना कहईं।
कहा, हँसे, मन, कृपानिधाना * कुत्ता, 'इद्रं', एक-से, ज्ञाना॥

दोहाः—छाँड़ि - भरत - मुनि - मंत्री, - महातमा - 'मिथिलेस'।
३०३. जथा-जोग, सब कहँ, लगी, माया, दीन्ह-कलेस॥

जानि राम, सब - लोग - दुखारे * इधर, प्रेम, उत, माया-मारे।
सभा, राउ, गुरु, वृह्मण, मंत्री *भरत-भक्ति,सब-की-मति-जकड़ी॥
रामहिं-चितवत, चित्र-लिखे-से * सकुचे, बोलत बचन, सिखे-से।
प्रीति, विनय, और, भरत-बड़ाई * कानन, भली, कहत, कठिनाइ॥
भरत-भक्ति-सागर-बूँदहि, पी * गुरू,जनक,दोउ, मगन भये, जी।
महिमा-तासु, कहइ कस, तुलसी * भक्ति-सुभाउ,मोरि-मति हुलसी॥
आप, छोट, महिमा, बढ़-जानी * कवि-मर्यादा, रहि सकुचानी।
भावत गुन, मति, बालक, मोरी * बचन न निकसत, जीभहु-तोरी॥

दोहाः—चंद्र, 'भरत'-कर-जस, विमल, मति, जनु, बाल-चकोर।
३०४. शुद्ध-हृदय, आकास, यह, तकत, देखि-तेहि-ओर॥

भरत-सुभाउ, वेदहू, मुसकिल * छमहुमोर-छोटी-मति,कवि-कुल!।
कहत,सुनत,सत-भाव,'भरत' को * सिय-राम-पद, होत न रत, को!॥
सुमिरि-'भरत', जो, राम-सनेही * होइ न, तेहि-सम, मंद न कोई।
देखि, दयालू, दसा-सभन-की * चतुर-राम, जानी सब-जी-की॥
धरम-धारि,और, नीति-के-सागर * प्रेम, सील, और, सत्य,उजागर।
{ सभा, समय, और देस-निहारे * नीति, प्रीति, के, पालन-हारे॥
कहे बचन, बानी - के - सरबस *हितकारी,और,चंद-अमरित-जस।
रामः—भरत!धरम, तुम्हरे-आधारा ! * वेद, सास्त्र, सब,पढ़ा-तुम्हारा!॥

दोहाः—करम वचन, मन सुद्ध, सब, तुम-समान - तुम, तात।
३०५. बड़िन-सभा, लघु-भाइ-गुन, कुसमय - देखि, डरात॥

जानहु, अपने, कुल-की-रीती ❋ राखा सत्य, पिता,करि-प्रीती।
समय, समाज,लाज, गुरु,जन,की ❋ हित,अनहित,जानहु सब मन-की॥
फिर, जानत तुम सब-के-करमा ❋ समुझत,मोर,अपन, हित,धरमा।
मोहिं, सब भाँति,भरोस-तुम्हारा ❋ तहूँ, कहत, अवसर-अनुसारा॥
गये-पिता, सब - बात - हमारी ❋ गुरू-की-कृपा दीन्ह सँवारी।
नाहिं, तो, प्रजा, नगर, परिवारा ❋ होत दुखी महुँ,कहाँ-किनारा !॥
सांझ - से- पहिले, सूरज जाई ❋ केहि का दुख नहिं, मोरे-भाई !।
सोइ-उतपात, विधाता कीन्हा ❋ गुरू,जनक,सब कहँ राखि लीन्हा॥

दोहाः—राजकाज, और लाज, पति, पृथ्वी, धन, अस्थान।
३०६. गुरु, सबही कहँ, राखि हैं, भल· हुइ हैं अनजाम॥

सहित-समाज, हमार, तुम्हारा ❋ घर, बन, गुरु-प्रसाद, रखवारा।
मात-पिता-गुरु-स्वामी-कही सिर ❋ मानि, शेष, पृथ्वी, लीन्ही धरि॥
तुमहु, करहु, सोइ, मोहि, करावहु ❋ रत्तहु सूरज - बंस, सँभारहु।
यह साधे, सब कुछ, मिलि जाई ❋ करनी, शुभ-गति और बड़ाई॥
अस विचारि, सहि-संकट-भारी ❋ करहु प्रजा, परिवार, सुखारी।
बड़ी-बिपाति, सब कहँ,महुँ, भाई ! ❋ चौदह-बरस· तुमहिं, कठिनाई॥
समुझे - कोमल, कहत - कठोरा ❋ परा-कुदिन, कछु, दोस, न मोरा।
भले-भाइ, दें, कुदिन, सहारा ❋ बढ़त-हाथ,जस, लखि-तलवारा॥

दोहा——मैं, मुखिया, मुख-सो, 'भरत' सेवक कर-पद-नयन।
३०७. कवि—प्रीति - रीति, तुलसी, कही, सांची, प्रभु की-वयन॥

सकल सभा, सुनि रघुवर-वानी ❋ प्रेम - पगी, अमरित-की-सानी।
लगी सभा, जनु, प्रेम-समाधी ❋ देखि दसा, बानी, चुप-साधी॥
भरतहिं, भयो, बहुत-सनतोषू ❋ सनमुख-स्वामि, मिटे सब दोसू।
भा, दुख-दूरि, जगा, जनु, भागा ❋ जस, गूँगा, कोउ, बोलन-लागा॥

कीन्हा 'भरत' प्रनाम बहोरी * बोले, कर-कमलन-कहँ-जोरी ।
भरतः—भरि पायों सुख, संग गयेको * भरि पायों फल, जनम लिये को ॥
अब, कृपालु ! जस आज्ञा होई * करहुं, माथ-धरि, माने, सोई ।
देहु नाथ ! कछु, अस अधारा * चौदह-बरस, पाउं, मैं, पारा ॥
दोहाः—नाथ ! आप के तिलक-हित, गुरु - की - आज्ञा पाइ ।
३०८. लायों, जल - सब - तीरथन, जो अब, प्रभु-मन भाइ ॥
एक मनोरथ, बढ़, मन-माहीं * डरत, सोच-बस, कहत, सैं, नाहीं ।
कविः—कहउ, तात ! सो, कह, रघुराई * कह बानी, तब, 'भरत', सुहाई ॥
भरतः—चित्रकूट, मुनियन, तीरथ, बन * नदी, ताल, पच्छी, गिरि, झरनन ।
गये, जहां, जहँ, प्रभु के चरना * देखहुं जाइ, होइ, जो डर ना ॥
रामः-अवसि, 'अत्रि'-आज्ञा सिर-धरहू * बन महँ, जाइ, निडर तुम फिरहू ।
मुनि की कृपा ते, बन, सुखदाता * भा, पवित्र, मन-मोहन, भ्राता ! ॥
'अत्रि'-मुनी-की- आज्ञा कीन्हेऊ * तीरथ-जल, तहँही, रखि दीन्हेऊ ।
कविःसुनिप्रभु-वचन, 'भरत', सुख पावा * चरन-कमल महँ, झट सिरनावा ॥
दोहाः—भरत-राम - संवाद सुनि, जो सब सुख कर मूल ।
३०९. सुरन सराहा, दोउन-कहँ, स्वर्ग - ते, बरषे फूल ॥
"धन्य, भरत! जय! राम, गुसाईं" * कहत देव, फिर-फिर, हर्षाहीं ।
सभा, जनक, और गुरु, सब काहू * भरत-वचन-सुनि, भयो उछाहू ॥
'भरत'-'राम'-गुन, और, सनेहू * पुलकि, प्रशंसत, 'जनक'-विदेहू ।
सेवक - स्वामि - सुभाउ सुहावन * नियम, प्रेम, दोउन, अति-पावन ॥
मति - अनुसार, सराहन लागे * मंत्री, सभा-के-जन, अनुरागे ।
सुनि, सुनि, 'राम' - 'भरत'-संवादू * दोउ-ओर, भा, हर्ष, विषादू ॥
सुख, दुख, दोउ, बराबर जानी * राम-मात, गुन, दोस, बखानी ।
करत, रानि, इक, राम - बड़ाई * एक, सराहत 'भरत'-भलाई ॥
अत्रिः—दोहाः—'अत्रि'-मुनी, कह, भरत, सन, कुईं - महँ, परबत - तीर ।
३१०. अमरित-जल, राखि देहु, जा, सकल - तीरथन - हीर ॥

कवि:–'भरत', मुनी - की-आज्ञा-पाई ❋ जल - के-वासन, दीन्ह पठाई ।
'भरत','शत्रुहन', 'अत्रि',मुनी-जन ❋ गये, कुईं-के-तीर, मुदित-मन ॥
जल-पावन, पावन-कुइं, डारा ❋ मुनि,प्रसन्न,तव,कहा, विचारा ।
अत्रि:–सदा, सिद्ध रह, यह स्थाना ❋ काल-प्रभाउ,छिपेउ, नहिं जाना ।
तव, सेधकन, दीख जल, आई ❋ घटइ-न-जल, अस,दीन्ह-वनाई ।
कीन्ह विधाता, जग - उपकारा ❋ कठिन,सहज भा,धरम-विचारा॥
'भरत - कूप',सव कहि हैं, भाई ! ❋ अति-पावन, तीरथ - जल-पाई ।
कूप - स्नान, करहिं, जे प्रानी ❋ हुइ हैं सुद्ध, करम-मन-वानी ॥

दोहा:—कहत कूप - महिमा, सकल, गये, जहां, रघुराउ ।
३११. अत्रि, सुनायो, रघुवरहिं, तीरथ - पुण्य - प्रभाउ ॥

धरम-कथा-कहि,आंखिन - कोरा ❋ सुख महँ, रैन कटी, भा भोरा ।
नित्य-क्रिया-करि,भरत, औ, भाई ❋ राम-'अत्रि' - गुरु-आज्ञा पाई ॥
लोग, संग - लै, नंगे - पाँई ❋ चले, (राम-वन) - कहँ, हर्षाहीं ।
नंगे - पाउं, दीख, जव, धरती ❋ हुइ-कोमल, तिन्ह-पाइन परती ॥
कुस, कांटे, कँकर, सरमाई ❋ वुरी-वस्तु, सव, लन्हि छिपाई ।
सुनदर, कोमल, मारग दीन्हीं ❋ लागी व्यारि,चलन,अति-भीनी ॥
देव, फूल, और, बादर, छाहीं ❋ वृक्ष फरे, घासैं नरमाईं ।
मृग, नयनन, पसु, सुन्दर-वानी ❋ सेवत सबहि, राम-प्रिय-जानी ॥

दोहा:—सहज सिद्धि, जव, पुरुप-कहँ, कहे - राम, जसुहात ! ।
३१२. 'भरत', राम - के-प्रान - जो, तेहि,यह,कह,वड़-वात!! ॥

यहविधि,'भरत',फिरत,वन-माहीं ❋ नयम,प्रेम,लखि,मुनि सकुचाहीं ।
टीला, खोह, ताल, और झरना ❋ पेंड,घास, गिर, पक्षी, हिरना ॥
सुनदर, और, पवित्र, विसेखी ❋ पूँछत, दिव्य-रूप, सव, देखी ।
'अत्रि'-मुनी,हँसि-हँसि,समुझावत❋ गुन,प्रभाउ,और,नाम, वतावत ॥
करत प्रनाम, कहूँ, अस्नाना ❋ देखत, कहुँ, सुनदर-अस्थाना ।
कहूँ, बैठि, मुनि - आज्ञा - पाई ❋ सुमिरत सिया, लषन, रघुराई ॥

देखि प्रेम, और, 'भरत'-की-सेवा * 'भरत'-असीसत, बन-के-देवा ।
लौटत, गये-दिन, पहर-अढ़ाई * राम-चरन, फिरि, देखत आई ॥

दोहाः—पाँच दिना महँ, दीख सब, 'भरत', तीर्थ - अस्थान ।
३१३. पँचएँ-दिन - हू, साँझ-भइ, करत हरी - गुन - गान ॥

भोर, नहाये, जुरा - समाजा * बृह्मण,'भरत' औ,मिथिला-राजा'।
सुभ-दिन जानि,आज, मन-माहीं * राम,कृपालु, कहत, सकुचाहीं ॥
भरत, सभा, गुरु, जनक, निहारा * कहि न सके, सिर, नीचे डारा ।
सील सराहि, सभा, सब, सोची * को स्वामी,जस, राम-सँकोची ॥
चतुर-'भरत', देखा रुख - रघुबर * उठे, सँभरि. धीरज,छाती, धरि ।
भरतः—करि दंडवत, कहत,कर जोरी * नाथ!सकल रुचि, राखी,मोरी ॥
मोरे - हेत, सभन, दुख पावा * दुःख, नाथ हू, बहुत, उठावा ।
देहु आज्ञा, मोंहिं, रघुराई ! * चौदह - बरस, सेंउ पुर, जाई ॥

दोहाः—जेहि-विधि, देखहुँ चरन-प्रभु, लौटे, दीन - दयाल !
३१४. करहुं कहा, चौदह - बरस, सिखवहु,कोसल-पाल !! ॥

नगर - निवासी, और परिवारी * सब, पवित्र, नेही, हितकारी ॥
तुम-हित,मोंका, जग, दुख,नीके ! *तुम-विन,मोच्छ-सुखहु,मोंहिं,फीके।
आप, चतुर, जानत - सबही - की *रहानि,लालसा, रुचि, जन-जी-की।
सरन - आइ, पालत, सब काहू * दोउ-ओर, तुम्ह-हाथ, निवाहू ॥
अस,मोंहिं,नाथ ! भरोसा - भारी * सोचहुं-क्यों,क्यों-होउं-दुखारी ।
मोरा-दुख, और-प्रभु - की-दाया * दोंउ-मिलि,दासहिं,ढीठ-बनाया॥
यह बढ़-दोस, दूर करि, साँई * तजि-सँकोच,सिख देहु, गुसाईं!।
कविः-सुनत-विनय,सब,'भरत'-प्रसंसा*जल,और,दूध,अलग कियो,हंसा ॥

दोहा—दीन-बंधु, सुनि, भरत के, बचन, दीन, छल-हीन ।
३१५. अवसर-के-अनुसार प्रभु, कहि, सुख, सब-कहँ, दीन्ह ॥

चिंता, मोरि, तुम्हार, सभन-की *'जनक'-गुरू-सिर, घर,और,बनकी।
सिर-पर, गुरू, और, 'मिथिलेसू' * हमहिं, तुमहिं, सपने, न कलेसू ॥

मोर, तुम्हार, यही सुभ-करमा * जगहु, जस, परलोकहु, धरमा।
पिता-बचन,हम-तुम,दोउ,पालहिं * लोक,वेद रखि,पितु,सुख,पावहिं॥
गुरु-पितु-मात-स्वामि-सिख,पाले * कुमग, चले हू, गिरहु, न,खाले।
तजे-सोच, अस - समुझ, भाई * पालहु 'अवध' अवधि-भरि,जाई!
देस, खजाना, पुर, परिवारा * गुरु-पद-रजि, सब-केर-सहारा॥
गुरू-मात - मंत्री - मति, मानी * सेवहु जाइ, प्रजा, रजधानी।

दोहाः—मुखिया, मुख-सों, चाहिये, खान-पान - कहँ एक।
३१६. पालत, पोषत, समुझि - कर, तन - के-अंग, अनेक॥

सार, राज - के-धर्म-का, भाई! * इच्छा-सम, मन रखहु, छिपाई।
कविः-सिखवा राम,'भरत',बहु-भांती * बिनु-आधार, जुड़ात न छाती॥
'भरत'-सील,गुरु, सकल-समाजू * सकुचि,प्रेम-बस, भे 'रघुराजू'।
चरन-निकासि, खड़ाऊँ दीन्हीं * भरत,गहे,सिर,सो,धरि लीन्हा॥
दुइ - खड़ाउं, कृपानिधान - के * जनु, रखवारे - प्रजा-प्रान - के।
भरत - प्रेम - कहँ, दोउ, सकोरा * "रा" "मा", जीवकी-चिंता-चोरा॥
हाथ, करम कहँ, कुलहिं,किवारा * सेवा - धरम-नयन, अँखियारा।
भरत, खुसी-मन, पाइ सहारा * एक, राम, इक, सिय, निहारा॥

दोहा:—मांगेउ विदा, प्रनाम करि, राम, लिये, उर लाइ।
३१७. 'इन्द्र' उचाटा मन, सभन केरा, अवसर पाइ॥

भइ कुचालिहु सब - कहँ नीकी * फिरन-आस भइ,जीवन, जी-की।
नाहिं, तौ, राम - विरह-दुख-पाते * हाय-हाय-करि सब, मार जाते॥
राम - कृपा, दइ - टेढ़ - सुधारी * देवन - माया, भइ हितकारी।
भेंटत, भरि-भुज, भाइ-भरत, सो * राम-प्रेम-रस, कहि-पावे, को॥
तन, मन, बचन,उमड़ि-अनुरागा * धीरज - धारी, धीरज त्यागा।
कमल-से-नयन, बही जल-धारा * भये, देव सब, दुखी, निहारा॥
मुनि-जन, गुरू, 'जनक'-से-राजा * ज्ञान-अग्नि, मन-कनक तपावा।
कमल-पात - सम, ताजि-संसारा * जल-ते-भा,जल-मैं,और, न्यारा॥

दोहा—सोउ, देखि, रघुबर, भरत, जिन्ह की प्रीति अपार।
३१८. भये मगन, तन, मन, बचन, सहित बिराग, विचार॥

जहां,जनक, गुरु-मति, भइ भोरी * सो, साधारन - प्रीति न होरी।
रघुवर-भरत-बिरह, कवि बरनहि * तेहिसमान,नदेइ,कोउ-नर नहिं॥
नहिं, सकोचि, 'बानी'-कहि-पावे * देखइ - प्रेम, खड़ी, पाछितावे।
भेंटि भरत, रघुबर समुझाये * फिर, 'शत्रुहन', राम,उर-लाये॥
सँग-के-लोग, भरत - रुख - पाई * निज-निज-काज, लगे सब,जाइ।
घोर-दुःख, सुनि, दोउ - समाजा * लगे, चलन-के, साजन, साजा॥
प्रभु-पद - पदुम, वंदि, दोउ-भाई * धरि सिर, चले, राम-सेवकाई।
मुनि, तपसी, वन-देव दरस-करि * चले,सबहिं-सनमानि,जोरि-कर॥

दोहाः—लषनहिं भेंटि,प्रनाम-करि, सिय-पद-रजि,धरि-सीस।
३१९. सुखदाता, मंगल-भरी, पाई, चलत, असीस॥

लषन, राम, जनकहिं सिर-नाई * कीन्ह,बहुत-विधि,विनय,बड़ाई।
रामः-दया करी,अस दुःख उठायो * लै-समाज,वन-लागि,चलिआयो॥
देहु असीस, फिरहु घर, आजा! * धरि धीरज, चलि दीन्हें राजा।
कविः-मुनि, साधू, बृह्मण सनमाने * बिदा कीन्ह 'बृह्मा'-शिव-जाने॥
सासु-के-पास, गये, दोउ-भाई * गिरि-पद,सुभअसीस, दोउ,पाई।
'बिस्वामित्र', कुटुंभ, सुजन-जन * मंत्री, 'वामदेव', औरहु मुनि॥
जथा-जोग, करि विनय, प्रनामा * कीन्ह बिदा,सब,लछिमन,रामा।
छोटे - बड़े, सबहिं, नर - नारी * करिं सनमान, राम लौटारी॥

दोहाः—मात केकई, बांदि, प्रभु, सुद्ध - प्रेम - ते, भेंटि।
३२०. बिदा कीन्ह, सजि-पालकी, सोच, सकुच, सब मेटि॥

फिर, सिय, भेंटि दोउ-परिवारा * फिरी, राम-की - प्रान-अधारा।
करि प्रनाम, सब सासुन भेंटत * कवि ते जात,प्रीति,नहिं बरनत॥
सिख, असीस मन-चाही, पाई * दोउन-कुल, उर, प्रीति, समाई॥
तब, रघुपति, पालकी - मँगाई * मातन - कहँ, समुझाइ चढ़ाई।

वार. वार. हिलि,मिलि,दोउ भाई * कछुक-दूरि, मातन्ह, पहुँचाई ।
वाहन, हाथी, सब, सजि लीन्हे * भरत-जनक-दल,दोउ,चलि दीन्हे ॥
करत याद, सिय-राम-लषन की *चलत,भूलि,सब,सुधि,तन-मन-की।
हाथी, घोरा, सब हिय - हारे * चलत, जुते, बेबस, मन-मारे ॥

दोहाः— बंदि गुरु, गुरु नारि, दोउ, 'लषन','सिय',और,'राम' ।
३२१. हर्ष, सोक, दोउ उर-धरे, लौटे, आपन - धाम ॥

विदा कीन्ह, सनमानि, निषादा * चलेउ,हृदय-धरि,बिरह-बिषादा ।
कोल, किरात, भील, वन-वासी * करि जोहार,सब,फिरे,उदासी ॥
'लषन','राम','सिय',वर-की-छाहीं* बैठि, बिरह-दुख-ते, बिलखाहीं ।
भरत को प्रेम, सुभाउ, औ बानी * 'सिय'-लषन'-ते,कहत, वखानी ॥
प्रीति, प्रतीति, वचन, मन,करनी * प्रेम-के-वस,श्री-मुख,सों-वरनी ।
पसु, पच्छी, जल, थल,और मीना * जड़, चेतन, सब भये मलीना ॥
प्रेम-दसा, अस, लखि रघुवर-की * कही व्यथा, देवन, घर-घर-की ।
प्रभु, प्रनाम-करि, धीर्ज बँधायो * चले, गयो-डर, मन हर्षायो ॥

दोहाः— छपर-कुटी-महँ, सोहिं, अस, लषन', 'सिय', 'रघुबीर' ।
३२२. भक्ति, बिराग, औ ज्ञान,जनु, राजत, धरे - शरीर ॥

मुनि, वृह्मण,गुरु,भरत.औ, राजा * राम-बिरह, बेहाल, समाजा ।
प्रभु-के-गुन-गन,मन महँ,सुमिरत * चले जात,सब,चुप,मग-डगरत॥
'जमुना'-उतरि, पार, सब भयेऊ * बिन-भोजन,वह-दिन,तौ, गयेऊ ।
दूसर - दिन, 'गंगा-तट, 'बीता * कीन्ह सखा,सब-भांति,सुभीता॥
'सई' - उतरि, 'गोमती' नहाये * चौथे-दिन,सब,'अवधहिं, आये ।
'जनक''अयोध्या'-रहि. दिन-चारी * राज-काज, सब-वस्तु, सँवारी ॥
गुरू, भरत, मंत्री, दै राजू * चले 'जनक', सँग-लिये-समाजू ।
नगर, नारि, नर, गुरु-सिख मानी * सुख-ते, बसन लगे रजधानी ॥

दोहाः—राम-दरस-के-हेत, सब, लागे करन उपास ।
३२३. तजि, ताजि भूपन, भोग, सुख, जिअत राम करि आस ॥

मंत्री, सेवक, 'भरत', सिखाई * निज-निज-काम, लगे, सब,जाई ।
भरतः'शत्रुहन'कहँ,बोलाइ,कह,भाई !* तुम्हरे-सिर, मातन-सेवकाई ॥
कविः–बृह्मण-जोरि, भरत, कर-जोरे * करि प्रनाम, अस कहा, निहोरे ।
भरतः-छोटा, बड़ा काम, जस, भाई * लीन्हेउ, बिना-सोच, करिवाई ॥
कविः–प्रजा, कुटुँभी, अपन, बुलाये * ठीक-ठौर-करि सबहिं बसाये ।
गये, भाइ-संग, गुरु की ओरी * करि दडंवत, कहा, कर जोरी ॥
भरतः—आज्ञा होइ, तौ,रहौं,नयम-ते * पुलकि, बोलि गुरु, बड़े-प्रेम-ते ।
समुझहु,करहु कहउ,तुम जोई * ठीक-धरम, जग, हुइ है, सोई ॥
दोहाः– सुनि सिख, पाइ, असीस अस, सुभ सायत-छटवाइ ।
३२४. सिंहासन मह, लीन्ह धरि, राम-खड़ाऊँ, आइ ॥
राम-मात, और, गुरु, सिर-नाई * राम - खड़ाऊँ - आज्ञा पाई ।
'नंदगाँव' महँ, छाइ-के - छप्पर * लगे रहन, वे, धरम-धुरन-धर ॥
मुनियन - जामा, जटा - बनाई * धरती-खोदि, आसनी बिछाई ।
भोजन, वस्त्र, नियम, वृत,बरतन *कठिन,रिखिन-के-धरम,किये,मन॥
भूषन - बसन - भोग - सुख - कोरे * तन-मन-से, तिनका-सम, तोरे ।
{ राज - अयोध्या 'इंद्र' सराहा * संपति देखि, 'कुबेर' लजाया ॥
{ भरत, तहाँ राहि, कीन्ह विरागा * जस, भौंरा, चम्पा के बागा ।
राम-प्रेम, जिन्ह कहँ, बढ़-भागी * देत, ओक-सम, लक्ष्मी-त्यागी ॥
दोहाः—वड़ी, न कछु, करतूति, यह, भरतः प्रेम - भंण्डार ।
३२५. दूध-हंस, पपिहा, पिअत, स्वाँती - बूँद, विचारि ॥
देह, दिना - दिन, दूबरि होई * तेज जैस, तस, मुख-छवि, सोई ।
प्रेम केर प्रन, नये-नये ठानत * धरम-की-पूँजी, रोज, बढ़ावत ॥
आये-शरद, पानी, जस, समिटत *कमल,बेत,जस,खिलत,औपसरत।
सम, दम, संयम, नियम,उपासा * दमकत, नखत भरत-आकासा ॥
द्रढ़,'ध्रुव',अवधि है, पूरन-मासी * रामहिं-सुमिरन, मग-आकासी ।
राम - प्रेम, निर्मल - चंदरमा * सोहत,नखत करत परिकरमा ॥

रहनि, समुझ, करितूति, भरत की * संपति, ज्ञान-बिराग, भगत-की।
अच्छे-कवि-ते, बनत न बरनत * 'सेष', 'गनेस', 'सारदा', सकुचत॥

दोहाः—पूजि खड़ाऊं, नित्य-नित, प्रीति न हृदय समात।
३२६. माँगि-माँगि- आज्ञा, करत, राज-काज, बहु-भांति॥

पुलकि देह, जिय, सिय, रघुबीरा * नाम, जीभ-पर, नयनन नीरा।
लषन, राम, सिय, बन महँ, बसहीं * भरत, रहत-घर, तप, तन कसहीं॥
दोऊ समुझि, कहत अस, लोगू * सब-विधि, भरत, सराहन-योगू।
सुनि, व्रत, नयम, साधु सकुचाहीं * बड़े-बड़े-मुनि, देखि, लजाहीं॥
अति पुनीत, जग, भरत-को-खाता * सुंदर, आनँद - मँगल - दाता।
कलियुग - पाप - नसावन - हारा * मोह-रैन मँह, जनु, उजियारा॥
पापन- गज- कहँ, सिंह -समाना * दुःख, कलेस, मिटावत, नाना।
भगतन - सुख, भव-तारन-हारा * राम - सनेह - चंद्र - कर-सारा॥

छंदः—भरि-प्रेम-अमरित-राम-पद, जो, होत जन्म न, 'भरत'-को।
सुनियन, कठिन, जो, नयम-व्रत, हठ-योग, जग, सिर, धरत को॥
जस-के-बहाने, दुख-जरन, और, पाप-दोसन हरत को!।
कलियुग-मा, तुलसी, दुष्ट-सम, फिर, 'राम'-सनमुख, करत, को!!॥

सो०:—भरत-चरित, करि-नेम, तुलसी, जे, आदर, सुनहिं।
सिय-राम-पद-प्रेम, होइ, विरागहु, विषय-ते॥

* श्री *

अरण्य-काण्ड

* श्रीगनेसायनमः *

मंगलाचरन

वक्ताः—सो०—१. धर्म - वृक्ष - कर - मूल, ज्ञान - सिंधु-कहँ, चंद्र-से ! ।
कविः— कमल-विराग-अनुकूल, सूर्य, ताप-अघ-तम-हरत !! ॥
२. जै, सिव ! पवन-समान, फारत मोह-के-बादरन्ह ! ।
करि विप्रन-कल्यान, नसत दोस, रामहिं प्रिय !! ॥
३. तन, जनु, मेघ - समान, पीताम्बर, धारन - किये ! ।
हाथन, धनु और बान, कसे, कमर, तरकस, सुभग !! ॥
४. लोचन, कमल-समान, जटा-जूट, सिर पर, सुभग ! ।
विचरत,वन, भगवान, लिये-लषन-सिय, सोइ भजउं !! ॥
सो०—उमा ! राम-गुन गूढ़, ज्ञानी, होत बिराग, सुनि ! ।
फँसत, मोह मा, मूढ़, जिनहिं, धर्म, ना, हरि, प्रिय !! ॥

पूरन भरत - प्रीति, मैं गाई * मति-अनुसार, न-जेहि-सम,भाई ।
बन-चरित्र-प्रभु, अब, सुनु, पावन * जो, सुर-नर-मुनि-के-मन-भावन ॥
एक बार, चुनि फूल, सुहाये * भूषन, हाथन, राम बनाये ।
आदर - सों, सीतहिं, पहिराये * फटिक-सिला,सब, बैठि, सुहाये ॥
धरि, 'जयंत' कागा - कर - भेषा * दुष्ट, चहा, रघुबर - बल, देखा ।
प्रभु - बल-थाह लगावन आवा * सिंधु-थाह, चींटी, मन चाहा ॥
मारि चोंच, सीता-पद, भागा * मूर्ख, मंद-मति, आखिर, कागा ।
बहा लोहु, तब, रघुबर जाना * ताना, धनुष, सींक - कर-बाना ॥

दोहाः—अति कृपालु, रघुनाथ, जे, करत, दीन पर, प्यार ।
२. आ, तिनही सँग छल कियो, मूरख, मूढ़, गवाँर ॥

बृह्म - मंत्र-बल, पायो, बाना * भागि काग, डरि, आवत जाना ।
काग-रूप तजि, पितु पहँ, गयेऊ * 'इन्द्र', राम बैरी सुनि, तजेऊ ॥
भा निरास, उपजा अस त्रासा * 'चक्र-सुदर्सन', ज्यों, 'दुर्बासा' ।
सिव,और, बृह्म-लोक सब-लोका * फिरत रहा,ब्याकुल, भय-सोका ॥
बैठावा नहिं, तेहि का, कोई * सकइ राखि, को, रघुबर-द्रोही ? ।
मात, काल, पितु,जम-सा भयेऊ * धरं बैर, अमरित, विष कहेऊ ॥
मित्र करत सौ-शत्रु-की-करनी * तेहि, गंगा, लागत बैतरनी ।
अग्नि-समान लगत जग, तेहिका * राम-बैर, मन, भावइ, जेहिका ॥

दोहाः—ज्यों, ज्यों, भाजत इन्द्र-सुत, ब्याकुल, अति, दुख-दीन ।
३. दौरत रघुबर - बानहू, चातुर, पीछा कीन्ह ॥

पकरे-गरुड़, सर्प बचि जावे * राम - बान खाली नहिं जावे ।
देखा, नारद, विकल, 'जयंता' * दया लागि, कोमल-चित-संता ॥
दूरहि ते, कहि प्रभु - प्रभुताई * भाजत, काग, दीन्ह समुझाई ।
नारदः-करहु, राम-पहँ जाइ पुकारी * "रच्छा करहु, सरन-हितकारी" ॥
कविः-दुखी, डरत, पकरे पद, जाई * कहाः "करहु, रच्छा, रघुराई" ।
जयंतः-बल,अथाह,तुम्हरी प्रभुताई ! * मैं मति-मंद, जानि नहिं पाई ! ॥

किया कर्म, जस, तस, फल पावा ❋ अब, प्रभु ! सरन तोरि, मैं, आवा ।
कविः-दुखिया की, सुनि, प्रभु, असवानी ❋ फोरि नयन इक, छमेउ, भवानी ॥
सो०—कीन्ह, मोह - बस, बैर, तेहि का, मारब, रह उचित ! ।
४. दीन्ह छाँड़ि, कहिः 'खैर', को, कृपालु, रघुबीर सम !! ॥
चित्रकूट महँ, बसि, रघुराई ❋ कीन्हे बहुत चरित, सुखदाई ।
तब, रघुपति, विचार, मन, कीन्हा ❋ भये बहुत दिन, गे सब चीन्हा ॥
सकल मुनिन ते, बिदा कराई ❋ चले, सहित, सिय, दोऊ भाई ।
'अत्रिः' मुनी के आस्रम गयेऊ ❋ आवत सुनि, मुनि हर्षित भयेऊ ॥
सुनि, मुनि, तन-पुलकित, उठिधाये ❋ राम-दरस कहँ, तुरतहिं, आये ।
करत दंडवत, मुनि, उर लाये ❋ राम-लषन, अँसुअन, अन्हवाये ॥
देखि राम - छबि, नयन जुड़ाये ❋ आदर-सों, आश्रम लइ आये ।
करि पूजा, कहि बचन सुहाये ❋ दिये मूल, फल, प्रभु-मन-भाये ॥
सो०—आसन पर, बैठाइ, भरि लोचन, सोभा निरखि ।
(१) चतुर मुनी, हर्षाय, जोरि हाथ, अस्तुति करत ॥
'अत्रि':-छंदः प्रभु ! भगतन के, हौ मातु-पिता, अति कोमल, और, कृपालू, तुम ।
निष्काम भजे, मुनि, स्वर्ग लहत, सो चरन तुम्हार, भजत हैं, हम ॥
प्रभु ! काम-रहित, सुन्दर-स्यामा, जस, सागर - रत्न निकासत हौ ।
तस, भव-सागर ते, भगतन कहँ, जग-के, तुम, बधं, छुड़ावत हौ ॥
प्रभु ! कमल-से हैं नयना तुम्हरे, और, दरसन, दोस-मिटावत-है ।
(२) कर जोरि करत प्रनाम, मुनी, सौ-बार, चरन, सिर नावत है ॥
छंदः—इन-लांबी-भुजन-बल-थाह नहीं, पदवी, जेहि कर, प्रमान नहीं ।
तिहुं-लोक-के-स्वामी ! हाथ, लिये, धनु-बान, कसे तरकसहु, कहीं ॥
हौ, सूरज-कुल-के-भूपन, तुम, शिव-चाप के हौ तोरन-हारे ।
(३) मुनि, संतन के, आनँद-दाता, दैत्यन के, हौ नासन-वारे ॥
छंदः—शिव, काम-के-शत्रु, तुमहिं बंदत, ब्रह्मादिक-देव तुमहिं सेवत ।
हौ, ज्ञान-पवित्र-स्वरूप, तुमहिं, सब दोस-विकारन, तुम नासत ॥

सत्पुरुषन-गति, सुख-अस्थाना, प्रनाम करत, हे लछिमी-पति ! ।
(४) तुम, 'इन्द्र'-के-भाइ, 'उपेन्द्र', प्रिय, सिय(शक्ति)-लपन-सँग, मैं विनवत ॥
छंदः—तजि डाह, चरन-कमलन तुम्हरे, जे नर, जग माहिं, भजन करहीं ।
संसार, कुतर्क - की-लहरन - ते - बाढ़त, तेहि सिंधु, नहीं परहीं ॥
साधू-जन, मुक्ती हेत, सदा, एकांत, सुखी, चरनन भजहीं ।
(५) इन्द्री-सुख कहँ, से, दूरि करे, जो आपन-गति, तेहि कहँ लहहीं ॥
छंदः—एक, अदभुत, प्रभु, समरथ, ईश्वर, इच्छा - ते - रहित, तुमही तौ हौ ।
गुरु - जग-के, पूरन, आदि - पुरुष, तुरीया मैं बसत, तुमही तौ हौ ॥
भगती के प्यारे - स्वामी हौ, विषयी कहँ दुर्लभ, रघुनायक ! ।
(६) हौ कल्प-वृक्ष, भगतन के, तुम, भजुं नित - सेवा-करिबे - लायक !! ॥
छंदः—उपमा - ते - रहित, त्रिभुवन - स्वामी, पृथ्वी-कन्या, सीता के पति ! ।
हुइ, नाथ ! प्रसन्न, चरन - भगती, दीजइ, सिर नाय, प्रनाम करत ॥
जे नर, आदर - ते, ध्यान - धरे, यह अस्तुति कर, नित, पाठ करत ।
ते, आप की भक्ति ते, युक्त भये, आपहि के धामहिं, जाय बसत ॥
दोहाः—विनय कीन्ह, मुनि, नाय सिर, कहः "कर जोरत दास ।
५. चरन-कमल, प्रभु, आपके, करहिं, सदा, उर, बास" ॥

जनम, जनम, चरनन, सुख-कंदा ! ❋ बढ़इ प्रेम, चकोर, जस, चंदा ।
विनय, प्रनाम, देखि, रघुराया ❋ मुनि ते, बहु प्रकार, सुख पाया ॥
अनसूया-पद छुइ, वैदेही ❋ मिली, सील-सों, झुकि कर, तेही ।
लोक-लोक-की सिय, सुख-दाता ! ❋ सारे जग की, सीता, माता ! ॥
मिलि मुनि-नारी, अस हर्षानी ❋ रैन पाय, जस, खिलत कुमुदिनी ।
बाढ़ा सुख, सीतहिं, उर लाई ❋ दीन्ह असीस, निकट, बैठाई ॥
भूषन, और, वस्त्र, पहिराये ❋ सदा नये, जो, रहत सुहाये ।
देखे जिन, दुख दूर होत, अस ❋ सर्प, गरुड़-देखे, भाजत, जस ॥
दोहाः—अति पवित्र भूषन दिये, सुन्दर, सिय कहँ, आनि ।
६. करि आदर, प्रिय बचन कहि, प्रीति न जात बखानि ॥

जगत-हेत, करि सिय-वहाना * नारि-धर्म, रिषि-नारि बखाना ।
अनसूया:-सीता! मात, पिता, और, भ्राता * इन सब कर सुख, मिथ्या जाता ॥
पति-सेवइ, तेहि सुभ-गति मिलहीं * नारि, सो नीच, जो, पतिं ना सेवहीं।
धीरज, धर्म, मित्र, और, नारी * परखे जात. बिपति महँ, चारी ॥
बूढ़ा, रोगी, जड़, धन-हीना * आँधर, वहिरा, क्रोधी, दीना ।
ऐसेहु पति की, करे बुराई * नारि, नर्क परि, वहु दुख पाई ॥
धर्म, नेम, व्रत, नारिन, पही * करम-वचन-मन, पती-सनेही ।
चारि-भांति, पति - सेवन - हारी * वेद बतावत, जग की नारी ॥

दोहा:—उत्तम[1], मध्यम[2], नीच[3], लघु[4], सबहिं, कहउँ, समुझाय ।
७. तरिहैं जग-नारी, सुने, सुनहु सिया ! चित-लाय ॥

लगत, सदा, उत्तम[1]-मन माहीं * और-पुरुष, जग, सपनेहु, नाहीं ।
मध्यम[2], और-पुरुष, लखि, कोई * समुझन भ्रात, पिता, सुत होई ॥
समुझि धर्म, जो कुल महँ रहई * नीच[3] नारि, वेदहु, अस कहई ।
समय न मिलि, जो, डरि, घर रहई * सब ते लघु[4]-नारी, जग कहई ॥
पति सों छल. औरन कहँ चाहे * घोर-नर्क, सौ-कल्प, वसाये ।
थोरे-सुख, सौ-जन्म नसावत * कस खोंटी, दुख समुझि न पावत! ॥
बिनु-आढ़त, वैकुंठ, सो रहई * तजि छल, जो, पति-सेवा करई ।
पती-विमुख, जहँ, जनमइ, जाई * जुआनी महँ, विधवा हुइ जाई ॥

सो०:—नारि, जन्म-ते-छूत, पति-सेवा-ते, जात तरि ! ।
'वृन्दा' की करितूति, तुलसी, अजहूं, हरि-प्रिय !! ॥

सो०:—सीता ! तुम्हरो नाम, सुने, नारि, पतिव्रत करहिं ।
८. तुमहिं, प्रान-प्रिय, राम, कहेउं कथा, संसार-हित ॥

कवि:—सुनि, जानकी, परम सुख पावा * आदर-ते, चरनन, सिर नावा ।
राम:-तब, मुनि सन, कह कृपा-निधाना * आज्ञा देहु, जाउं, वन-आना ॥
नित ही, मो पर, कृपा करेहू * सेवक जानि, तजेउ ना नेहू ।
कवि:—धरम-खंभ, रघुपति-की-वानी * सुनि, बोले, प्रेमी, मुनि, ज्ञानी ॥

कवि:- { 'शिव','बृह्मा''संकादिक'चाहत * जेहि की कृपा, प्रलोक संभारत ।
सोइ राम, अस बचन उचारे * निष्कामिन कहँ,जो,अति-प्यारे ॥
मैं जानी, प्रभु की चतुराई * सब सुर तजइ, भजइ रघुराई ।
वड़ा, न, जिन्ह-सम, जग महँ कोई * क्यों,तेहिकर,अस सील न होई !॥
तुम, तौ, हौ प्रभु ! अंतर-जामी *केहिविधि,कहउं,जाहु तुम,स्वामी।
कवि:—असकहि,चितइ,राम-की ओरा * छाय, नयन,जल, फूलि सरीरा ॥

छंद:—तन पुलकि, पूरन प्रेम सों, मुख-कमल-महँ, नयना दिये ! ।
मन-ज्ञान-इन्द्री-ते-परे, प्रभु दीख, कह, जप तप किये !! ॥
जब, जुरत धर्म, औ,जोग,जप, तप, भक्ति, तब नर पावहीं ! ।
और, दास-तुलसी,रात-दिन, सुभ-चरित-रघुबर गावहीं !! ॥

दो०—नासत सब मल, राम-जस, जारत दुख, सुख-धाम ।
सो जस, जो, आदर, सुनत, तिन पर रीझत राम ॥

सो०—कलियुग, कठिन है काल, धर्म-न-ज्ञान, न जोग-तप ।
९. छांड़ि सबहि जंजाल, भजहिं राम, से नर चतुर ॥

मुनि-पद-कमल, नाय कर, माथा * चले बनहिं, सुन्दर-मुनि-नाथा ।
आगे राम, लषन, तिन्ह-पाछे * बेष-श्रेष्ठ-मुनि धारि, अति आछे ॥
दोउन-बिच, सिय सोहत, कैसे * बृह्म-जीव-बिच, माया, जैसे ।
वन, परबत, मारग करि दीन्हें * नदिन, घाट दिया,स्वामी चीन्हे ॥
जहँ-जहँ, जायँ, देव - रघुराई * मेघ करत छाया, घन लाई ।
निसिचरइक,'विराध',मग,मिलेऊ* राम,चलत ही, तेहि का, हतेऊ ॥
सुन्दर रूप, मरत, सो पावा * देखि दुखी, निज-धाम पठावा ।
पहुँचे,फिरि,जहँ मुनि"सरभंग।" * लछिमन, और, जानकी संगा ॥

दो०—मुनि - लोचन, भवँरा भये, प्रभु - मुख, कमल - समान ।
१०. छवि-रस, चूसत, राम कर, धन्य जन्म, मुनि जानि ॥

सरभंगा-कह,मुनि,सुनहु:वीर,रघुबंसा!* सिव-मन - मानसरोवर - हंसा ।
जात रहेउं, बृह्मा - के - धामा * सुना कान, वन, ऐहहिं, रामा ॥

ताकत रहेउं, राह, दिन-राती ❋ अब प्रभु ! देखि जुड़ानी छाती ।
जप, तप, भजन, न कछु, मैं कीन्हा ❋ जानि दीन,तुम, दरसन दीन्हा ॥
मोहिं, दरस भा, कौन निहोरा ❋ मन तुम्हरा, भगतन-मन-चोरा ।
ठहरहु, जब लगि, जरि, मैं, आगी ❋ मिलहुं आय,तुम महँ,तन त्यागी॥
कविः—जोग, जग्य,जप,तप,जो कीन्हा ❋ प्रभु कहँ दीन्ह, भक्ति-वर लीन्हा ।
रची चिता, तब मुनिः "सरभंगा" ❋ बैठेउ, छांड़ि, कामना-संगा ॥
दोहा—"सीता-लषन-समेत, प्रभु, मेघ-से, तन, जिन्ह, स्याम ।"
११. "सदा, हृदय मोरे, बसहु, सगुन-रूप, श्री राम ॥"
अस कहि, जोग-अग्नि, तन जारा ❋ राम - कृपा, बैकुंठ, सिधारा ।
हरि महँ लीन, भयो नहिं जाई ❋ चुका, भक्ति-वर, पहिलेहि, पाई !॥
'सरभंगा' की, यह गति देखी ❋ भये सुखी, रिषि-मुनी विसेखी ।
अस्तुति कीन्ह, सकल मुनि,आई ❋ भगतन - हितकारी-जय गाई ॥
फिरि, रघुनाथ चले, वन, आगे ❋ रिषी, मुनी, बहुतक, सँग लागे ।
हाड़ ढेर, देखा, रघुराया ❋ पूंछि, मुनिन,लागी अति दाया ॥
मुनिः-जानत हौ,और,पूँछत,स्वामी! ❋ समदरसी, तुम, अंतर- जामी ! ।
कहा,लीन्ह,निसिचर, मुनि खाये ❋ सुनि, रघुवीर, नयन, जल छाये ॥
कविः–दो० —"निसिचर-बीज नसाउं, मैं", भुज उठाय, प्रन कीन्ह ।
१२. सबहिं मुनिन के कुटिन महं, जाय, जाय, सुख दीन्ह ॥
मुनिः'अगस्ति'कर सिष्य सुजाना❋ प्रेमी, रहा, 'सुतीक्षन'-नामा ।
मन-क्रम - बचन, राम-की-सेवा ❋ करइ, आस, नहिं, दूसर-देवा ॥
प्रभु-आगमन, जबहिं, सुनि पावा ❋ करत मनोरथ, व्याकुल, धावा ।
सुतीक्षन-विधिना ! दीन-बंधु, रघुराया ❋ मो-से-शठ पर, करिहैं दाया ॥
लषन-सहित, मोहिं, राम-गोसाईं ❋ मिलिहैं, निज-सेवक-की नाईं !।
पोढ़-भरोस न कछु, मन-माहीं ❋ भक्ति, विराग,ज्ञान, कछु नाहीं !॥
जोग - जग्य - जप - सतसँग-कोरे ❋ चरन-कमल,कछु प्रीति न, मोरे ।
और-देवता - आस न, जाके ❋ हैं, स्वभाव-ते, रघुबर, ता के ॥

होंई सुफल, नयना, लखि चरना ❋ राम-कमल-मुख, जग-दुख-हरना।
कवि:-सब-तजि,प्रेम-मगन,मुनि-ज्ञानी ❋ कहि न जात,सो दसा, भवानी !॥
"कौनराह,औंर,किधर,नजानत"❋ 'कोमैं','कहाँचला',अब'भाजत'!।
कबहूँ, चालि, फिरि, पाछे जाई ❋ कबहूँ, नाचि, रहा, गुन-गाई॥
प्रेमी, अटल - भक्ति, मुनि पाई ❋ वृक्ष - ओट, देखत, रघुराई।
अति-अति-प्रीति, देखि,रघुबीरा ❋ प्रगटे, हृदय, हरन-भव-पीरा॥
मुनि,मग-बैठि, अचल हुइ गयेऊ ❋ देह,फूलि, कटहल - सम, भयेऊ।
तब, रघुनाथ,निकट, चलि आये ❋ भगत - दसा देखी, मन भाये॥
मुनि कहँ, रघुबर, बहुत जगावा ❋ जगि न, ध्यान-सुख,रहा हुबावा।
राज-रूप, तब, राम छिपावा ❋ हृदय, चतुर्भुज-रूप दिखावा॥
मुनि, अकुलाय, उठा, तब ऐसे ❋ व्याकुल सर्प, खोइ मनि, जैसे।
आगे, दीख, राम-(तन-स्यामा) ❋ सीता-लषन-सहित, सुख-धामा॥
दंडा - ज्यों, चरनन लिपटाना ❋ बढ़-भागी, मुनि, प्रेम-समाना।
बड़ी-भुजन, गहि, लीन्ह उठाई ❋ राखा, प्रेम-ते, हृदय लगाई॥
मिलत,मुनिहिं,अस सोह कृपाला ❋ मनहु, धतूरहिं, मिलत तमाला।
मुनि,प्रभु कहँ, अस देखत, ठाढ़े ❋ जनु, तस्वीर-लिखे,कोउ, काढ़े॥

दोहा:—तब, मुनि, हृदय, धीर धरि, गहि पद बारंबार।
१२. निज-आस्रम, प्रभु लाय कर, पूजा, बहुत-प्रकार॥

सुतीक्षन:कहा:सुनहु,प्रभु!बिनतीमोरी❋ अस्तुति करउं कौन-बिधि, तोरी।
महिमा बहुत, थोर, मति - मेरी ❋ उपमा: सूरज - जुगुनूं - केरी॥
कमल-समान, दमक तन-स्यामा ❋ जटा-मुकुट, पहिरे, मुनि-जामा।
तरकस, कमर, हाथ, धनु-बाना ❋ नमस्कार, मोरा, नित ; रामा !॥
मोह-सघन-बन, अग्नि-स, जारत ❋ सूर्य, कमल- बन-संत खिलावत।
निसिचर-गज कहँ,सिंह-समाना ❋ भंव-खग-बाज ! सो,रखहु,रामा!॥
लाल-कमल-नयना, सुखकंदा ! ❋ नयन - चकोर - सिया-के-चंदा !।
(राज्ञ-हंस)-(शंभू-मन-ताला) ❋ नवत, राम ! उर, भुजा बिसाला॥

संसय-सर्प, गरुड़ - मम, नासत ❊ तर्क -कठोर- केर - दुख भाजत ॥
रच्छत सुर, जग-बंध छोड़ावत ❊ कृपा - सिंधु, मैं, रच्छा मांगत ।
बिनु-रूपहु, और, रूपहु धारा ❊ बानी - ज्ञान - इन्द्री - के-पारा ॥
सम्पूरन, बिनु - दोस, अपारा ❊ नवउं, राम ! भंजत-जग-भारा ।
कल्प-भक्ति-के, मनहु, बगीचा ❊ काम-क्रोध-मद-लोभ-के - मीचा ॥
अति - चातुर, जग-सागर-सेता ❊ रच्छहु, नित, सूरज-कुल-केता ! ।
भुज-प्रताप-अति, बल के-धामा ❊कलियुग-मल नासत, जिन्ह नामा ॥
धर्म-हेत, गुन, ढाल - समाना ❊ करहु, सदा, मोरा कल्याना ।
माया - रहित, रमे, अविनासी ! ❊ सदा, सभन के हृदय-वासी !॥
बसहिं रूपः बन-बिचरन-हारा ❊ सदा, लषन-सिय-सहित, तुम्हारा ।
{ जानत होय, तुमहिं, कोउ, स्वामी ❊ निर्गुन, सगुन, कि, अंतर-जामी ॥
{ कमल-नयन, कोसल-पति, रामा ! ❊ बसहु, हृदय मेरे, यह - जामा ।
भूलेहु, अस - अभिमान, न जाई ❊ मैं सेवक, स्वामी रघुराई ॥
कविः सुनि, मुनिवचन, राम, मन, भाये ❊ फेरि, हरषि, मुनि कहँ, उर लाये ।
रामः-अतिप्रसन्न, जानहु, मुनि! मोही ❊ जो बर मांगउ, देहुँ, मैं, तोही ॥
मुनिः-कह, मुनि, बर मांगा नाहिं, कबहूँ ❊ समुझत झूठ, न, सांचा, अबहूँ ।
तुमहिं, नीक लागइ, रघुराई ! ❊ देहु, होइ, दासहिं, सुख - दाई ॥
रामः-अटल-भक्ति, वैराग, औ, ज्ञाना ❊ सब गुन-केर, होहु अस्थाना ! ।
मुनिः-प्रभु जो दीन्ह, मो बर मैं पावा ❊ अब, सो देहु, मोहिं, जो, भावा ॥

दोहाः—लषन-जानकी-सहित, प्रभु ! धनुप-बान - लिये राम ।
१४. बसहु, चन्द्र-से, तुम, सदा, उर-अकास, निष्काम ॥

कविः—"एम्माहि होय", कहे रघुवीरा ❊ हर्षि, चले, 'कुंभज - रिषि' तीरा ।
सुतीच्छनः-बहुत दिवस, गुरु-दरसन पाये ❊ भये, मोहिं, यह आश्रम, आये ॥
अब, प्रभु-सँग, जाऊं, गुरु पाहीं ❊ तुम कहँ, नाथ ! निहोरा नाहीं ।
कविः-देखि सुतीच्छन की चतुराई ❊ लीन्ह संग, हंसि के, दोउ-भाई ॥
चले, राह, निज-भक्ति बखानी ❊ मुनि-आश्रम, पहुँचे, सब आनी ।

तुरत, सुतीछन, गुरु पहँ, गयेऊ * करि दंडवत, कहत अस भयेऊ ॥
सुतीछनः-नाथ!कोसला-धीस-कुमारा * आये, मिलन, जगत - आधारा ।
लिये, संग, लछिमन, वैदेही * जपत, आप, दिन-रात, हैं, जेही ॥
कविः-सुनत,'अगस्त्य',तुरत,उठि,धाये* देखि राम, नयनन, जल छाये ।
मुनि-पद-कमल, गिरे, दोउ-भाई * लीन्ह, प्रीति, मुनि, हृदय-लगाई ॥
पूँछि कुसल, आदर-से, ज्ञानी * आसन पर बैठारेउ, आनी ।
बहु-विधि, करत, प्रभु-की पूजा * "बड़-भागी,मो-सम,नहिं दूजा" ॥
हर्षे और-रिषी, तहँ, नाना * देखे सुख - दाता - भगवाना ।
दोहाः—बीच मुनिन के, बैठि, प्रभु, किये मुख, सब की ओर ।
१५. सरद-चंद्र प्रभु कहँ तकत, बैठे मुनी-चकोर ॥
रामः-तब, रघुवीर कहा, मुनि पाहीं *तुम सन,मुनि! छिपाउ कछु नाहीं।
जानत, तुम, जेहि कारन, आयों * ता ते,मैं, नहिं कहि समुझायों ॥
सो सलाह, अब, देवहु, मोही * मारहुँ मुनि-बैरी, जहँ, जोई ।
अगस्त्यः-मुसुकाने मुनि,सुनि प्रभु-बानी* पूँछा,नाथ ! मोंहि, का जानी ? ॥
करें भजन, कछु, अवध-विहारी * जानत महिमा, महूं, तुम्हारी ।
गूलर-वृक्ष, तुम्हारी माया * और,ब्रह्माण्ड,सो,फल,रघुराया !
फल-बिच, भुनगा, जीव-चराचर * भीतर रहत, न जानत बाहर ।
कठिन काल,तेहि फल कहँ खावे * सो कालहु, प्रभु ! तुमहि,डरावे ॥
सब लोकन के पति, तुम, साईं ! * पूँछा, मोहिं, मनुज की नाईं ।
मांगत, मन-मोरे, बर एही * बसहु, सहित-लछिमन-वैदेही ॥
नित भगती, बिराग, सत-संगा * सदा, प्रेम, चरनन महँ, चंगा ।
तुम अखंड, नहि छोर तुम्हारा * भजत रिषी,मुनि,ज्ञान के द्वारा ॥
जानत निर्गुन-रूप तुम्हारा * पर, बन-रूप,मोहिं,अति-प्यारा ।
सदा, दास कहँ, देत बड़ाई * पूँछा, तेहि ते, मोहिं, रघुराई ॥
सुन्दर, एक, मनोहर ठामा * 'पंच-बटी', पावन, सुभ-नामा ।
'दंडक'-बन, पवित्र, प्रभु ! करहु * लागि स्राप, बन कहँ,सो हरहु ॥

करें बास, तहँ, रघुकुल-राया ! ※ करहू, सकल-मुनिन-पर, दाया ।
कवि:-चले राम, मुनि-आज्ञा पाई ※ पंच-बटी पहँ, पहुँचे, जाई ॥
दोहा:—भेंट, 'जटायू' ते, भई. बहु विधि, प्रीति पुढ़ाय ।
१६. 'गोदावरी'-निकट, प्रभु, रहे फूस - घर - छाय ॥
जब ते, राम कीन्ह, तहँ, वासा ※ भये सुखी, मुनि, गा डर, खासा ।
परवत, नदी, ताल, छवि-छाये ※ दिन-दिन, अति-अति, होत सुहाये ॥
पच्छी, मृग, आनन्द-ते, रहईं ※ मधुर-गूँज, भँवरा, छवि लहईं ।
सेषहु ते, बन, बरनि न जाई ※ जहँ बसि लषन, सिया, रघुराई ॥
दीख, बैठि, प्रभु कहँ, सुख माहीं ※ लछिमन कहे वचन, छल-नाहीं ।
लषनः-सुर-नर-मुनि-चर-अचर-के-साईं! ※ पूछउं, आपन-प्रभु-की-नाईं ॥
मोहिं, समुझाय, कहहु, सोइ, देवा ! ※ सब तजि, करउं, चरन-रज-सेवा ।
'ज्ञान', 'विराग', कहौ, कह माया'? ※ कहा 'भक्ति', जेहि पर, तुम-दाया? ॥
दोहा:—ईश्वर, जीव महँ. भेद कह, नाथ ! कहौ. समुझाय ।
१७. बाढ़इ, चरनन, प्रीति, जो, सोक, मोह, भ्रम जाय ॥
रामः-कहब बहुत, थोरे-महँ, भाई ! ※ सुनहु, तात ! मन, चित्त लगाई ।
'मैं', 'तुम', 'मोर', 'तोर', यहि माया ※ जेहि के फंद, जीव जग, आया ॥
इन्द्री, मन ते, जाना जावे ※ जहँ लगि, सोई 'माया' कहावे ।
दुइ-प्रकार - की, माया, भाई ! ※ 'विद्या', एक, 'अविद्या', छाई ॥
रूप-'अविद्या', अति दुख-कारी ※ देत, जीव, भव-कुइं-मां, डारी ।
'विद्या' करत, जगत-की-रचना ※ प्रभु-इच्छा-ते, निज-बल-कछु-ना ॥
देखत, बृह्म-रूप, सब-माहीं ※ ज्ञानी, कोउ-अभिमानहु-नाहीं ।
जानहु, तेहि का तात ! 'विरागी' ※ सिद्धी-सत-रज-तम-कर-त्यागी ॥
दोहा:—'जीव', न-जानत, अपन-कहँ, ना माया, ना ईस ।
१८. बांधइ, छोरइ, सब-परे, माया-रचइ, सो 'ईस' ॥
धर्म, 'विराग', जोग दे 'ज्ञाना' ※ ज्ञान. मोच्छ दे, बेद बखाना ।
जेहि सन, भ्रट-प्र[illegible], मैं, भाई ! ※ सो 'भगती', भगतन-सुखदाई ॥

चहत न, 'भगती', कोउ सहारा * तेहि-आधीन है, 'ज्ञान', विचारा ।
भगती-सा, नहिं कछु सुखदाता * मिलत,संत-की-दया-ते, भ्राता ! ॥
भगती-साधन, कहउं. बखानी * सहज राह, पावहिं मोंहि, प्रानी ।
सुनि,सुनि,विप्र-चरन, करि प्रीती * पोढ़, धर्म, हो, वेद-की-रीती ॥
विषय छुटइ, और, होई विरागा * उपजइ, मोर - धर्म - अनुरागा ।
सुनि, मन-महँ, नौ-भाक्ति पुढ़ावइं * चरित-मोर,मनकहँ,अतिभावइं ॥
संत-चरन-कमलन, अति - प्रेमा * मोर- भजन - कर, द्रढ़-ते, नेमा ।
गुरु, पितु, मात, वंधु, पति, देवा * सब,मोहिंजानि,करहि,द्रढ़,सेवा ॥
गाइ मोर-गुन, पुलकि-सरीरा * भरि - हिलकी, नैनन, चलि नीरा ।
काम. क्रोध, मद, छल, नहिं, जाके * तात ! सदा, मैं, बस-महँ,ता के ॥

दोहाः—सरन-मोर, मन क्रम-बचन, भजत मोहिं, निष्काम ।
१६. कमल-हृदय, तिन्ह के, सदा, करहुं, तात ! विश्राम ॥

कवि–भक्ति-जोग सुनि अतिसुखपावा * कीन्ह प्रनाम, लषन, सिर नावा ।
चरचा होत, गये दिन बीती * कहत विराग, ज्ञान, गुन, नीती ॥
'सूर्प-नखा', रावन की भगिनी * नागिन-सी-ज़हरीली, ठगिनी ।
आई, पंच - वटी, इक - बारा * भई विकल, लखि दोउ कुमारा ॥
{ नारी, देखि मनोहरताई * पुरुष, छोट-बढ़-सम, कोउ, भाई ।
होत विकल, मन, सकत न रोकी * कांच-आतिसी, जरि,रवि देखी ॥
रचा रूप-सुन्दर, और, आई * प्रभु पहँ, कहा वचन, मुसुकाई ।
सूपनखाः-तुम-सा पुरुष, न,मो-सी नारी!* कस, विधि,जोरी रची,विचारी ॥
मोरे-जोग, पुरुष, कोउ, नाहीं * देखा, तीनहुं - लोकन - माहीं ।
ता ते, अब लागि रहेउं कुआँरी * कछु भाई, मन,सुरति तुम्हारी ॥
रामः—सीतहिं देखि, जनावा नाता * है कुँआर,अब लागि, यह भ्राता ।
कविः—गई,लषन-पहँ,तिन्ह,पहिचानी * देखि-राम, बोले, मिठ-बानी ॥
लषनः–सुन्दरि!मैं,तौ, दास-भगवाना ! * बस-पराए, नहिं-मोर-ठिकाना ।
कोसल-राजा, प्रभु, सब-ताक़त *जो-कछु-करहिं,उनहिं,सब छाजत॥

{ सेवक, सुख, ना, मान, भिखारी * स्वर्ग, कुकर्मी, ना,धन, जुँआरी ।
लोभी, जस, ना, छवि, अभिमानी * दूध, अकास-ते,चही को प्रानी ॥
कविः–अस सुनि, राम-तीर,चलि,आई * राम, लषन-ढिंग, फिर, लौटाई ।
लषनः–तुम्हरे-जोग, सोइ बर लागत *तिनका-सम,जो,लाजहिं त्यागत ॥
कविः–तब, खिसियान, राम पहँ गई * रूप - भयंकर, प्रगटत भई ।
सीता - डरत, दीख, रघुराई * कहा, लषन-सन, सैन, चलाई ॥

दोहाः—लछिमन, तुरत, सफाइ-ते, नाक - कान - बिनु कीन्ह ।
२०. वह के हाथन, रावनहिं, मनहु चुनौती दीन्ह ॥

नाक - कान - कटि, भई भयंकर * गेरू-धार, बहत,जनु, गिरि-पर ।
सूपनखा-'खर'-'दूषन'पहँ,गइ बिलखाता* तुम-बल-पुरुषारथ, थू ! भ्राता ॥
कविः—भाइन पूँछा, कथा सुनाई * खर, दूषन, तब, सैन सजाई ।
राक्षस - झुंड, जमा भे, सारे * काजल-गिरि - से. पंखन-वारे ॥
बहु-रँग, पैदल, कोउ, असवारा * घोर, विकट, लीन्हे हथियारा ।
दौरे, सूपनखा - करि - आगे * दुसरन-असगुन-करे, अभागे ॥
होत भयंकर - असगुन आनी *काल-के-बस, नहिं गिनत,भवानी!।
गर्जत, उड़त, अकासहिं जाहीं * देखि सैन, जोधा हर्षाहीं ॥
कोउ कहः 'जियत धरहु,दोउ भाई' * कोउः 'मारहु,सिय-लेहु-छिनाई ।
देखि धूरि, आकासहिं, छाई * लषन-बुलाय, कहा, रघुराई ॥
रामः–सियहिं, गुफा-मां, देहु छिपाई * कटक-भयंकर, आवत, भाई ! ।
कवि–'खातिर-जमा-रहेउ',सुनि वानी * चले, लिवा,धनु-बानहिं-तानी ॥
राम देखिः रिपु-दल चढ़ि आवा * कठिन-धनुष,मुसकाय,चढ़ावा ।

छंदः—अति-कठिन-धनु-खींचे जटा, सिर-बाँधे, प्रभु, अस सोह, मनु ।
नीलम-पहाड़ - पै, कोटि - दामिन-ते, लरत दुइ सर्प, जनु ॥
कसि, कमर, तरकस, भुज-बिसाल- ते, धनुष-बान सुधारि के ।
चितवत, प्रभु, जस-सिंह-कोउ, हाथिन-के-झुंड-निहारि-के ॥

सो०ः—धाये, जोधा, रोलि, 'पकरहु', 'पकरहु', कहत - भे ।
२१. जाने सूर्य अकेल, घेरत राक्षस, भोर, जस ॥
देखि राम - की - सुन्दरताई ❋ थके, सके नहिं, तीर चलाई ।
खरदूषनः-मंत्री - ते, बोले खर - दूषन ❋ लागत राज-पुत्र, नर-भूषन ! ॥
नाग, असुर, सुर, नर, मुनि, जेते ❋ मारे - कछु, देखे - सब, तेते ।
ऐसी, कबहुं, मनोहरताई ❋ गई उमिर, देखी नहिं, आई ॥
बहिनी कहँ, तौ, कीन्ह कुरूपा ❋ मारन-जोग न, पुरुष-अनूपा ! ।
कहउ देहिं जो नारि - छिपाई ❋ जिअत, जायँ घर, दोऊ-भाई ॥
कहा-मोर, तुम, जाइ सुनावहु ❋ जो उत्तर दें, तुरतहि, लावहु ।
कविः—दूतन कहा, राम-सन, जाई ❋ सुनत, राम बोले, मुसुकाई ॥
रामः-हम छत्री, सिकार, बन, करहीं ❋ तुम-से-खल-मृग, ढूँढ़त फिरहीं ।
बली - शत्रु - देखे, नहिं डरहीं ❋ एक-बार, कालहु-सन, लरहीं ॥
हौं मनुष्य, पर, राक्षस-घालक ❋ मुनि-पालत, खल-मारत, बालक ।
बल न होय, घर क्यों नहिं भाजत ❋ रन-ते-भाजत, हम, नहिं मारत ॥
रन महँ, कपट, चतुरता चाही ❋ दया करत, डरपोक -सिपाही ।
कविः-दूतन, जाइ, चरित सब कहेऊ ❋ खर-दूषन-उर, क्रोध-ते, जरेऊ ॥
छंदः—जरि क्रोध, बोले, "दौरि, पकरहु", सुनत, धाये, निसिचरा ।
तलवार, बरछी, कटारि, परसा, बान, बल्लम, तब, धरा ॥
प्रभु कीन्ह धनुष-टँकोर, भा, अस-सोर, घोर, भयंकरा ।
भे विकल, फूटे-कान, रह नहिं, होस-माँ, कोउ निसिचरा ॥
दोहाः—सावधान हुइ, धाये, फिर, समुझि शत्रु बलवान ।
अस्त्र, शस्त्र, बरसन लगे, खड़े, बीच, भगवान ॥
दोहाः—काटि अस्त्र, सब, तिल-किये, पहिले, तौ, रघुवीर ।
कानन-लगि, धनु, खींचि, फिर, छाँड़े, आपन-तीर ॥
छंदः—चले, बान, याहि प्रकार,—जनु, सर्प करत फुँकार ।
किया क्रोध, जब, श्रीराम,—दिये बान, पवन-समान ॥

जब, देखे तीक्षन तीर,—मुरि चले, निसिचर-वीर।
कह, क्रोधि, तीनहु-भाइ,—जो भाजि, रन-ते, जाय॥
सो, हमरे-हाथन, मरे,—ठाना मरन, सब फिरे।
हथियार, बहुत प्रकार,—सनमुख, करी बौछार॥
रिपु, परम-क्रोधित जानि,—प्रभु, तीर, धनुप पै तानि।
दिये, अति-विकट, अस तीर,—लगे कटन निसिचर-वीर॥
केहु सीस, भुज, केहु चरन,—लगे, राक्षसन-कर, गिरन।
चिल्लात, लागे बान,—धड़ गिरत, सैल-समान॥
भट-तन होत सौ-खंड,—फिर, उठत, करि पाखंड।
भुज उड़त, कहुँ, कहुँ, मुण्ड,—बिन-सिरन, दौरत रुंड॥
और, गिद्ध, गीदड़, काग,—कटकटहिं, जागे भाग।

छंदः—कटकटहिं गीदड़, भूत-प्रेत-पिसाच, खपरन्हि, साजहीं।
बैताल, वीर, औ, जोगिनी, खपरनि-की-ताल-पै, नाचहीं॥
रघुवीर-बान, प्रचंड, काटत निसिचरन-उर-भुज-सिरा।
सो गिरत, उठि, फिर, लरत, 'पकरहु' करत सोर, भयंकरा॥

छंदः—आंतन-दबाये, उड़त गिद्ध, पिसाच, गहि-भुज, धावहीं।
अस लगत, रन-बासिन-के-बालक, जुरि, पतंग उड़ावहीं॥
मारें, पछारे, कोउ घाइल, 'हाय-हाय' करत, परे।
दल, दीख, व्याकुल, अपन, तब, 'खर-दूपनहु' धाये, लरे॥

छंदः—तलवार, बान, त्रिसूल, परसा, बरछी, सब, इकबारहीं।
अनगिनित-राक्षस, राम पहँ, करि कोप, मिलि,मिलि, डारहीं॥
प्रभु, एक-पल महँ, बान, सब-सब, काटि, फिर, ललकार के।
गिनि, गिनि के, दस-दस, बान मारे, राक्षसन-सरदार के॥
धरती गिरत, नहिं मरत, जोधा, उठत, करि माया घनी।
सुर डरतः "ये चौदह-हजार, औ, एकही, कोसलधनी"॥

जब, दीख, सुर-मुनि-डरत, 'माया-नाथ' अस कौतुक कियेउ।
श्रम-ते, निशाचर, जानि रामहिं, आपुसहिं, दल, लरि, मरेउ॥

दोहाः—राम, राम कहि, तन तजहिं, देत मोक्ष भगवान।
मारेउ, सबकहँ, करि जतन, छन-महँ, कृपा-निधान॥

दोहाः—फूलन की, वर्षा करी, देवन, अति हर्षानि।
२२. करि करि अस्तुति, सब चले, चढ़ि, चढ़ि, अपन विमान॥

कविः—जब, रघुनाथ, समर, रिपु जीते * सुरन, मुनिन कर, सब दुख बीते।
तब, लछिमन, सीतहिं लै आये * प्रभु, पद-परत, हर्षि. उर लाये॥
देखत, सिय, स्याम-मृदु-गाता * प्रेम - भरे - मन नहीं अघाता।
पंच - बटी बसि, श्रीरघुनायक *करतचरित, सुर-मुनि-सुख-दायक॥
धुआँ देखि, खर-दूषन-केरा * सूप - नखा जा, रावन टेरा।
सूपनखाःबोली बचन, क्रोध करि, भारी * तुम तो, देस की सुरति बिसारी! ॥
सोवत, पी-मदिरा, दिन-राती * खबरि न, सिर-पर, आनन-घाती! ॥
राज, नीति-बिनु, घन, बिनु-धर्मा * बिनु - हरि-अरपन, नीके-कर्मा।
बिन - बिचार - के, पढ़े - पढ़ाये * वृथा पढ़े कीन्हें, और, पाये॥
सँग-ते, जती, कुमंत्र-ते, राजा * मान - ते, ज्ञान, नसा-ते, लाजा।
प्रीति, निठुर-भे, मद-ते, गुनी * नसत, वेग, सैं, नीति अस, सुनी॥

सो०:—रोग, शत्रु, प्रभु, पाप, अग्नी, छोटा - ना-गिनइ।
कविः—कहि अस, कीन्ह बिलाप, बहु-विधि, फिरि, रोवन लगी॥

दोहाः—ब्याकुल, सभा-मा, गिरि परी, बहुप्रकार, कहा, रोय।
२३. "भ्राता! तुम्हरे जियत-ही, मोरी, अस गति होय"॥

सुनत, सभा-जन उठि, अकुलाई * समुझावा, गहि बाँह उठाई।
रावनः-कह लँकेस, कहहु, समुझाई * कहाँ, नाक, तैं, कान, कटाई? ॥
सूपनखाः-अवध-के-राजा, दसरथ-ज्याये* सिंह-से, दुइ, बन, खेलन, आये।
जानि परत, उन की अस करनी * राखिहैं निसिचर, एक-न, धरनी! ॥
भाई! उन - कर-भुज-बल-पाये * निडर, फिरत, मुनि, बन, हर्षाये!।

देखत, बालक, काल - समाना * धीर, धनुष - धारी, गुन-नाना ॥
भारी बल - प्रताप, यह चाहैं * बधइं दुष्ट, सुर-मुनि-सुख-पावइं ।
नामः 'राम', सोभा, जिन्ह, हारी * तिन सँग, सोरह-बरस-की-नारी ॥
रूप-खानि, विधि, हाथ - सँवारी * सौ - करोड़ - रतिहू बलिहारी ! ।
कान-नाक, तिन्ह - भाइ, खिरानी * कीन्ह हँसी, तुम-भगिनी-जानी ॥
सुने टेर, खर - दूषन लरे * छन महँ, कटक-के - जोधा मरे ।
'खर', 'दूषन', 'त्रिसिरा' गे मारे * सुनि, रावन, जनु, अंग पजारे ॥

दोहाः—सूपनखहिं, समुझाय कर, निज-बल कहि, बहु-भांति ।
२४. गयो, भवन, अति-सोच-वस, नींद, परी नहिं, राति ॥

रावनःसुर, नर, असुर, नाग, खग नाहीं * मोहिं-समान, कोऊ, जग माहीं ।
खर - दूषन, मो - सम, बलवाना * सकत मारि को, बिनु भगवाना!॥
सुरन-दुःख - हित, पृथ्वी - भारा * हरन, लीन्ह, जो प्रभु, अवतारा ।
तौ, मैं जाय, बैर, हठि करिहौं * प्रभु-बानन, मरि, मैं, भव तरिहौं ॥
बिना-भजन, सुभ-गति, मिलिजाई! * तन तामस, बस, यही उपाई ।
भे, नर - रूप, भूप - सुत कोऊ * हरिहौं नारि, जीति, रन, दोऊ ॥
कविः—चला, अकेल, विमान-चढ़े, झट * जहँ, 'मारीच' बसत सागर-तट ।
इधर, राम, जो, जुक्ति, बनाई * सुनहु, उमा ! सो कथा सुहाई ॥

दोहाः—जब, वन कहँ, लछिमन गये, लेन मूल, फल, फूल ।
२५. जनक - सुता सन, राम कह, जानि समय अनुकूल ॥

रामः सुनु, वृत सुन्दर, प्रिय! सुसीला * चहत, करन, मैं, कछु नर-लीला ।
अग्निी महँ, तुम जाहु, समाई * जब लगि, राक्षस मारहुं जाई ॥
कविः—जबहिं, राम, सब कहा, बखानी * धरि प्रभु-पद, हिय, अग्नि समानी ।
धरि दूसर-सिय, नकल-बनाई * रूप, सील, तैसीहि, सिधाई ॥
लछिमनहू यह मर्म न जाना * जो कुछ चरित रचा भगवाना ।
रावन, ढिग-'मारीच'-के, आवा * नीच, लगे-मतलब, सिर नावा ॥

झुकनि, नीच-की, अति दुख-दाई * जस, अँकुस, धनु, सर्प, बिलाई ।
भय-ते-रहति-न, खल-प्रिय-बानी * जस, कुसमय के फूल,भवानी ! ॥

दोहाः—करि पूजा, मारीच, तब, आदर, पूँछी बात ।
२६. मारीचः— "कस, अकेल, घबराये-अति,आये,कहु तुम,तात" ॥

कविः-दस-मुख,सकल कथा,तेहि-आगे * कही,सहित-अभिमान, अभागे ।
रावनः-धरहु वेष-मृग-कर,छल-कारी ! * हरौं, जासु, मैं, जा,नृप-नारी ! ॥
मारीचः-सुनु,दस-सीस!रामनर-नाहीं * हैं, नर - रूप, जगत - के-साईं ।
उन ते, तात ! बैर ना कीजै * मारे, मरिये, जिआये, जीजै ॥
मुनि - जग रखन, गये कुमारा * बिनु-फर-बान,तहाँ,मोहि,मारा ।
सौ-जोजन, घायल - करि, फैंका * तिन ते बैर!नाथ!बल देखा ? ॥
माखी-क, मकरीहि, परत दिखाई * छुटि, तस, देखत, मैं, दोउ-भाई ।
जो, नरहू हों, तौ, अति - सूरा * करे बैर - उन, परइ न पूरा ! ॥

दोहाः—जेहि, 'ताड़का', 'सुबाहु' हति, तोरेउ सिव-धनु, आनि ।
२७. 'त्रिसिरा', 'खर', 'दूषन' वधे, नरहु,क,अस-बलवान ? ॥

लौटहु, घर, कुल-कुसल विचारी * सुने, जरा रावन, दइ गारी ।
रावनःगुरु-समान, तू देत सिखावन ! * कोजोधा,जगमहँ, जस-रावन ? ॥
मारीचसोचा,तब,'मारीच' असमन-मा * नौ-पुरुषन-ते, बैर, उचित ना ।
सस्त्री, भेदी, राजा, गुनी * वैद, भाट, कवि, मूरख, धनी ॥
दोउ-भांति, जाना, मृत्यु मेरी * तकहुँ स्मरन, रघुनाथहिं केरी ।
करे 'न', क्यों, इन-हाथन, मरउँ ! * राम-बान-लागि, काहे-न, तरउँ ? ॥
कविः—करि विचार, अस, रावन-संगा * चला, प्रेम करि, प्रभु-पद, चंगा ।
मन महँ हर्ष, बतायो न, तेही *'मिलहिं,आज,मोहिं परम-सनेही'॥

मारीचः-छंदः—मैं, अपन-प्रीतम, देखि, आंखिन, जन्म-फल, सुख, पाइहौं ।
और, देखि सीता, लक्षिमनहू, राम-पद, मन लाइहौं ॥

है, क्रोध-जिन्हकर, मोक्ष-दाता, भक्ति-के-वस, जो हरी।
निज-हाथ, खींचि के, बान, सो, मोहिं, मारिहैं, बीते घरी॥

दोहाः—धनुष - बान - धारन - किये, भजिहैं पाछे - मोर ! ।
२८. लौटि, लौटि, मैं देखिहौं, धन्य न, मो-सम, और !!॥

कवि { सीता-लषन-सहित, रघुराई ❋ जेहि वन, चरत, मुनिन-सुख-दाई ।
तेहि-वन-निकट, दसाननगयेऊ ❋ तव, 'मारीच', कपट-मृग, भयेऊ ॥

अति-सुन्दर, कछु, कहा-न-जाई ❋ सोने-महँ, नीलम-छवि छाई ।
देखा, सीता, भाजत जाई ❋ अंग - अंग - महँ, सुन्दरताई ॥
सीताः—कहा, सुनहु, रघुवीर ! कृपाला ❋ यह मृग कर, अति सुन्दर छाला! ।
सत - संकल्प - प्रभु ! वधि, एही ❋ लावहु खाल, कहा वैदेही ॥
कविः—तव, रघुपति, जानत-सव-कारन ❋ उठे, हरषि, सुर-काज सँवारन !।
बांधि-फेंट, रघुवर, उठि, धाये ❋ सुन्दर - तीर - कमान - चढ़ाये ॥
रामः—कहा, लषन-ते, प्रभु, समुझाई ❋ बन महँ, फिरत निसाचर, भाई!॥
सीता केर, करेहु रखवारी ! ❋ बुधि, विचार, वल, समय, निहारी!॥
कविः-भागा मृग, तव, राम - निहारे ❋ पाछे, रघुवर, धनुष - सँवारे ।
थके वेद, सिव, ध्यान न पावा ❋ सो माया - मृग - पाछे, धावा ॥
आवइ तीर, दूर, कहुं, भाजइ ❋ परइ दिखाई, कहुं, छिपि जावइ ।
दीखत, छिपत, करे-छल-भारी ❋ गयेउ, दूरि लै अवध-विहारी ॥
तव, तकि, कठिन-तीर, प्रभु मारा ❋ गिरा, भूमि, करि घोर-पुकारा ।
"हा, लछिमन, चलियो", अस बोला ❋ सुमिरा राम-नाम अनमोला ॥
तजत प्रान, निज-देह दिखाई ❋ प्रीति-सहित, सुमिरा रघुराई ।
तेहि कर, हृदय-प्रेम, पहिचाना ❋ दीन मोच्छ, मुनि-दुर्लभ-जाना ॥

दोहाः—बरसाये, सुर, फूल, तब, गावत प्रभु-गुन, साथ ।
२६. निसिचरहू, सुभ-गति दई, अस कृपालु, रघुनाथ ॥

मारि दुष्ट, लौटे रघुवीरा ❋ तरकस, कमर; हाथ, धनु-तीरा ।

सुनी, सिय, जब, दुख-भरी-बानी * कहा, लखन-तें, अति-भय-मानी ॥
सीताः—जाहु, वेग, संकट कोउ, भ्राता * लषन हँसे, बोलेः "सुनु, माता"!।
लषनः-पलक-मारि, जग-रचइ-नसावे * सपनेहु, संकट, ताहि सतावे! ॥
गये, सौंपि, रघुबर, मोहि थाती * तेहि छांड़े, संतोष-न, छाती ।
जब, पूँछइं, रघुवर, हे, माता ! * 'क्यों आये', का कहिहौं बाता! ॥
कविः-वचन कठोर, सिय, तब, बोली * हरि-इच्छा, लछिमन-मति डोली!।
खींचि कुण्डली, सिय-चहुँ-ओरा * कसमसाय, चिन्ता, मन, घोरा ॥
बन, दिस, देव, सौंपि, सब काहू * गे, जहँ, रावन-चंद्र-के-राहू ।
फिर, फिर, देखत सीतहिं, ऐसे * बालक, छुटे, मात-कहँ, जैसे ॥

दोहाः—इक डर, मन महँ, राम कर, दूजा, सिय-अकेल ।
३०. लषन-तेज मुर्झायो, अस, जस, अरि, बन-की-बेल ॥

सून - बीच, दसकंधर जाना * आयो, धरि संन्यासी - बाना ।
जेहि के डर, सुर, असुर डराहीं * रैन, नींद, दिन, अन्न न खाहीं ॥
सो - रावन, कूकुर - की - नाईं * चला, चोर, ठिठुकत, मन माईं ।
बुरे-मार्ग-महँ, कबहूँ, पग धरि *बल,बुधि,तेज,रहत-नहिं,तिल-भर॥
करि,अनेक-विधि, छल, चतुराई * मांगी, भीख, दसानन, जाई ।
जानि गरीब, सिय, कछु लै फल * लागी देन, कीन्ह, रावन, छल ॥
रावनः—बाँधी-भीख,देत,तुम,माता ! * यह कर फल, सब, निष्फल जाता ।
कविः—विधिना की गति, टेढ़ी, भाई ! * लांघि रेख, सिय, बाहिर,आई ॥
नाना - विधि, कहि कथा,सुहाई * राज-नीति, भय, प्रीति दिखाई ।
सीताः—कह, सीता,कस जती,गोसाईं ! * बोलत बचन, दुष्ट - की - नाईं ॥
कविः—तब, रावन, निज-रूप,दिखावा * डरपी, जब, निज-नाम सुनावा ।
सीताः—कहत, सिया, धरि धीरज-गाढ़ा* आय गये, प्रभु, "खल!रहु ठाढ़ा"॥
काल-के-बस भा, तू,निसिचर-पति* हुइ खरगोस, सिंहनी चाहत ।
कविः-सुनत वचन,दस-सीस लजाना * मन महँ,चरन बंदि,सुख माना ॥

दोहाः—क्रोधवंत, तब, रावन, लीन्हा, रथ, बैठाय।
३१. चलेउ, वेग, आकास, रथ, डर-ते, हांकि न जाय॥

सीताः-एकहि-बीर,जगत,रघुराया ! ❊ केहि अपराध, भूलि गे दाया ! ।
दुःख-हरन, सेवक - सुख-दाता ! ❊ रघुकुल-कमल-सूर्य, रघुनाथा ! ॥
लषन ! दोस तुम्हरा, नहिं मानउं ❊ क्रोध-किये-कर, यह फल, जानउं।
बिबिधि-बिलाप करत, वैदेही ❊ कृपा-बहुत, पर, दूरि, सनेही ॥
रामहिं, बिपति, सुनइहै को, हा ! ❊ जज्ञ-खीर, खा चाहत, गदहा ! ।
कविः-सीता कर विलाप, सुनि, भारी ❊ भे, धरती - के - जीव, दुखारी ॥
सुनी, 'जटायू', दुख - की-बानी ❊ रघुबर-नारि, ताहि, पहिचानी।
अधम - निसाचर लीन्हे जाई ❊ मानहु, कपिला - गाय, कसाई ॥
जटायूः-बेटी सीता ! मत करु त्रास्मा! ❊ आवत, करन निसाचर-नास्मा ! ।
कविः-दौरा गिद्ध, भरा-रिस, कैसे ❊ गिरत बज्र, परवत पर,जैसे ! ॥
जटायूः-अरे,दुष्ट क्यों, ठाढ़ न होई ! ❊ जात निडर, जानत-नहिं-मोही ! ।
कविः-लखि, आवत, जम-राज समाना ❊ सोचत, दसकंधर, बल-वाना ॥
रावनः-कै 'मैनाक', 'गरुड़', कै, धावा ❊ जानत विष्णु-सहित,बल-थाहा! ।
आ,हा, वृद्ध 'जटायू', डर-ना ! ❊ चहत,मोर-भुज-तीरथ,मरना! ॥
कविःसुनत,गीध,करि अति-रिस,धावा❊कहः"सुनु,रावन!मोर-सिखावा"।
जटायूः { तजि सिय,जो,न,नीक,घर जैहौ ❊ बीस-भुजा! तौ, अस-फल पइहौ॥
राम-क्रोध अग्नि, अति घोरा ❊ जरि है,जस, पतंग,कुल-तोरा ! ।
कविः-उतर न देत, दसानन जोधा ❊ तबहिं, गीध धावा,करि क्रोधा ॥
बाल-पकरि, रथ ते, भुइं, डारा ❊ आवा, फिर, सीतहिं बैठारा।
मारि चोंच, फारी सब देही ❊ घरी एक, भइ मुर्च्छा, नेही ॥
फिर, खिसियाइ, निसाचर, हारी ❊ क्रोधि,विकट-तलवार, निकारी।
काटे पंख, गिरा, धरती पर ❊अदभुत-करनी!राम,सुमिरि कर॥
रथ चढ़ाय, सीतहिं, लै, गयेऊ ❊ चला वेग,मन, अति डर भयेऊ।
जात सिय, चिल्लात, विचारी ❊ जस हरनी, परि फंद-सिकारी ॥

गिरि-पर-बैठे-कपिन निहारी * लइ हरि-नाम, दीन्ह पट डारी।
यह विधि,सीताहिं,सो, लै, गयेऊ * बनः'असोक'महँ, राखत भयेऊ॥

दोहाः—हारि गयेउ, खल, बहुत विधि, भय और प्रीति दिखाय।
नये - असोक के वृक्ष तट, राखा, जतन कराय॥

दोहाः—पाछे - माया - मिरग - के, . जस धाये श्री राम।
३२. सो छवि, सीता, राखि, उर, रटत रहत हरि-नाम॥

रघुबर, लषनाहिं, आवत देखा * ऊपर - मन - ते, सोच - विसेखा।
रामः-छांड़ि अकेली, जनक-कुमारी * आये, भ्राता ! बचन बिसारी ! ॥
निसिचर-झुंड फिरत, वन माहीं * लागतः सिय, कुटी मँह, नाहीं।
लखनः-गहि पद-कमल, कहा कर जोरी * नाथ ! खता, नाहीं, कछु, मोरी॥
कविः-अनुज - समेत गये रघुराई * जहां, नदी-तट, कुटी बनाई।
दीख, कुटी-मँह, सिया-न-कोई * विकल, धनी, जस, संपति खोई॥
रामः-हे, सीता ! सब-गुन-ते-भरी * रूप, सील, वृत, नेम मा खरी !।
चले तोषि, लछिमन, बहु भाँती * पूँछत वेल, वृच्छ, और, पाती॥
हे, पच्छी ! भौंरा ! हे हरनी ! * देखी कहुं ? सीता, मृग-नयनी।
खंजन, मछरी, सुआ, कबूतर ! * मृग,भौंरा,और,कोयल,चातुर ! ॥
कमल,अनार, चमेली, दामिन ! * सरद-चंद्र-पूरन, और, नागिन !।
बरुण-फाँस,धनु-काम,औ,हंसा ! * गज,केहरि ! निज,सुनत,प्रसंसा॥
वेल, सोन, केला हर्षाहीं ! * कछु सँकोच,संका,मन, नाहीं !।
ये सब, सीता ! तुम-बिनु, आजू ! * भये खुसी, जस पावा राजू ! ॥
तोहि,अनख, कैसे ? सह जावे ! * निकसि, बेग, काहे नहिं, आवे !।
कविः-करतविलाप,औ,खोजत,स्वामी * व्याकुल,महा-बिरह, जनु, कामी॥
भरे-पुरे, जो, सुख-के-सागर ! * जन्म-न-नास,करत लीला-नर !।
आगे, परा, 'गीध-पति', देखा * सुमिरत राम-चरन-की-रेखा॥

दोहाः—कर-कमलन, सिर, छुइ दियो, कृपा-सिंधु, रघुवीर।
३३. देखि राम-मुख, धाम-छवि, निकसि गई, सब पीर॥

जटायूः-धरि धीरज,अस वचन उचारे * हे, भव-के-भय-भंजन-हारे ! ।
मोरी, रावन, यह गति कीन्हीं *सोइ खल,जनक—सुताहरिलीन्हीं ॥
दच्छिन कहँ, लै गयेउ, गोसाईं * बिलखत सिय, टिटिहरी-नाईं ।
दरस-हेत, मैं राखे प्राना * जान चहत, सो कृपा-निधाना ! ॥
राम-जटायूःकहा,राम,तन राखौ,ताता ! * तव,मुसुकाय, कहाःसुनु,नाथा ! ।
जटायू { जेहिकर नाम,मरत,मुख,आवत * तरत, नीच, अस, वेद बतावत ॥
आंखिन-आगे, सो भगवाना ! * केहि कारन, अब राखउँ प्राना ! ।
रामः-लाय, नैन, जल, कह रघुराई * नीक-कर्मकरि सुभ-गति पाई!॥
दुसरन-हित, जिन-के-मन-माहीं *जगमहँ,तिनहिं,कठिन-कछु-नाहीं!।
तजि तन, तात! जाउ मम धामा * कहा देउँ ! तुम पूरन कामा! ॥

दोहाः—तात ! पिता सन, सिय-हरन, कहेउ न, देखौ, जाय ! ।
३९. जो, मैं, राम, तौ कुल-सहित, कहिहै रावन, आय !! ॥

कविः—गीध, चतुर-भुज-मूरति पाई * पीताम्बर, भूषनन - सजाई ।
स्याम सरीर, धरे भुज चारी * करत विनय,अस,प्रभुहिं निहारी॥

जटायूः-छंद१. जय, राम ! जो बिन रूप, और नर - रूप, भल-गुन तुम-करे ।
रावन - के - भुज, संसार - भूषन ! तेज - वानन, तुम हरे ॥
मुख, कमल - सो, घन - सो - वरन, नयना, कमल-से, अति बड़े ।
लांबी - भुजन, भव - भय - छुड़ावत, माथ, मैं, नावत, खड़े ॥
२. अति-बल, न-आदि, न-जन्म, गोविंद ! रूप, महिमा, जानि को ।
गौ-पद-से, सुख-दुख-हरत, धरती-धरत, घन-विज्ञान-को ॥
अन-अंत ! संत, जो, राम-मंत्र, जपत, तिनहिं, तुम, खुस करत ।
निष्काम-भगतन-प्यार, कामहिं-नसत, नित, तोहि, दंडवत ॥
३. वेदहु, 'निरंजन', 'बृह्म', 'व्यापक', 'जन्म-दोस-न', कहि भजत ।
करि ध्यान, ज्ञान, विराग, जोग, अनेक, जेहि कहँ, मुनि लहत ॥
सो, प्रगट, सोभा-धाम, करुना-सिंधु, सब जग मोहई ।
बहु-काम-छवि, जिन्ह-अंग, मम-उर-कमल, भँवर-सो सोहई ॥

४. दुर्लभ-सहज, निर्मल-स्वभाउ, जो, सम-विसम हू, रहत हैं ।
बस-करि, मन-इन्द्रिन-अपन, जोगी, जतन करि, जेहि लखत हैं ॥
तिहुँ-लोक-स्वामी ! लक्ष्मी-पति ! दास-बस, नित, रहहिं, जो ।
जिन्ह-कीर्ति, पावन करत, तापन-हरत, मम-उर, बसहिं, सो ॥

कविः–दोहाः––अटल-भक्ति-वर मांगि, तब, गयो गीध, हरि-धाम ।
३५. क्रिया, विधि-सों, गीध की, करी, हाथन, श्री-राम ॥

कोमल-चित, अति, दीन-दयाला * बिनु-कारन, रघुवीर, कृपाला ।
गीधहिं, नीच, माँस-कर-भोगी * दीन्ह,सोगति,जो,माँगत जोगी ॥
सुनहु, उमा ! ते लोग, अभागी * तजत राम, कामहिं-अनुरागी ।
फिर, सीतहिं-खोजत, दोउ भाई * चले, बिलोकत बन, बहुताई ॥
वृक्ष - बेल - ते - घन - बन खोजत * सिंह, बाघ, जहाँ, पक्षी डोलत ।
मिला 'कवंध', राह-मा, मारा * कहा स्राप-निज, राम-निहारा ॥
'कवंध':–दुर्वासा-रिषि दीन्हा स्रापा * प्रभु-पद-देखि, मिटा सो पापा ।
रामः–सुनु, गंधर्व ! कहउँ, मैं, तोही * मोहिं, न भावत, बृह्मन-द्रोही ॥

दोहाः –जो बृह्मन-सेवा करत. छांड़ि कपट, हे, तात ! ।
३६. मैं, बृह्मा, शिव, देव-सब, तेहि-के-बस हुइ जात !! ॥

कोसइ, मारइ, दे, मुख, गारी * तहुँ, बृह्मन की पदवी भारी ! ।
पूजइ विप्र, सील-और-गुन-बिन * पूजइ सूद्र न, गुन-भये-लाखन ॥
कविः–आपन-धर्म, राम समुझावा * देखि प्रीति-चरनन, मन भावा ।
रघुपति-चरन-कमल, सिर नाई * भा गंधर्व, अकासहिं जाई ॥
दै, 'कबंध', गति, तब, रघुराई * पहुँचे, 'सबरी'-आश्रम, जाई ।
'सबरी', देखि, राम-घर-आये * सुमिरे मुनि-के-बचन-सुहाये ॥
कमल-से-नैना, भुजा-बिसाला * जटा-मुकुट,सिर,गरे,बन-माला ।
स्याम, गौर, सुन्दर, दोउ भाई * 'सबरी' गिरी, चरन, लिपटाई ॥
मगन, प्रेम महँ, वचन न आवा * फिर-फिर,चरन-कमल,सिरनावा ।

आदर-ते, जल, चरन पखारे ❋ फिर, सुन्दर-आसन, बैठारे ॥

दोहाः—कंद-मूल, फल, रसिक-अति, दीन्हे, रामहिं, आनि ।
३७. करे बड़ाई, प्रेम - ते, सो, खाये भगवान ॥

जोरि हाथ, आगे, भइ ठाढ़ी ❋ देखत-प्रभु, प्रीति, अति बाढ़ी ।
सवरीः केहिविधि अस्तुति करउँ, तुम्हारी ❋ नीच, काठ-बुद्धी, मैं, नारी ॥
नीच-ते-नीच, नीच, मैं, नारी ❋ तिनहुन-महँ, मति-मंद, गँवारी ।
राम'-सुनु, भामिन! अस कह रघुनाथा ❋ मानहुँ एक, भक्ति-कर-नाता ॥
जाति-पाति, कुल, धर्म, बड़ाई ❋ धन, कुटुंभ, बल, और चतुराई ।
विना-भक्ति, यह लागत, ऐसे ❋ विन-जल, वादर, देखिअ, जैसे ॥
नौ - प्रकार - की, भक्ति, वताई ❋ सुनु, हुइ सावधान, मन-लाई ।
संग, संत कर, पहिली रीती ❋ दूसर, मोर-कथा महँ प्रीती ॥

दोहाः—तीसर, गुरु-सेवा करइ, त्यागे सब अभिमान ।
३८. चौथे, छाँड़े छल - कपट; करइ मोर - गुन - गान ॥

पँचईं-भक्ति, भजन है मोरा ❋ मंत्र - जाप, विस्वास - घनेरा ।
छठ, इन्द्री, बहु-कामन, त्यागइ ❋ सज्जन-धर्म-राह, पग धारइ ॥
सतएं, राम-रूप, जग, जानइ ❋ मो-ते-बड़ा, संत कहँ, मानइ ।
अठएं, जो-कछु-मिलइ, सो पाये ❋ देखइ, स्वप्न, न, दोस, पराये ॥
नवें, सीध, सब-सन, छल-हीना ❋ मोर-भरोस, न - हर्ष - मलीना ।
नौ महँ, जिनके, एकहु होई ❋ नर हो, नारी हो, जग, कोई ॥
सो, अति-प्यारा, भामिन! मोरे ❋ सब - प्रकार - की - भगती तोरे ! ।
दुर्लभ, गति, जोगी कहँ, जोई ❋ आज, सहज है, तो कहँ, सोई ! ॥
मोर-दरस-सा, जग, कछु नाहीं ❋ पाये, जीव, मुक्ति हुइ जाहीं ।
चलत-चाल, गज-सी-मतवारी ! ❋ जानत, कछु सुधि, सीता-प्यारी? ॥
सवरीः-'पंपा-सर' पर, जा, रघुराई ! ❋ करिहौ, तुम, 'सुग्रीव'-मिताई ! ।
पता वतइहै, सो, रघुवीरा ! ❋ जानत सब, पूँछत, मति-धीरा ! ॥

कविः-बार-बार, प्रभु-पद, सिर नाई * होनहार, सब-कथा, बताई।

छंदः—कहि सब कथा, और, देखि प्रभु-मुख, पद-कमल, हृदय, धरे।
गइ, लीन-हुइ, तजि-देह, जोग ते, जहँ-से, नहिं-कोऊ-फिरे॥
बहु-कर्म, और, अधर्म, सौ-मत, देत दुख, सब त्यागहू।
रखि एक-मत-विस्वास, तुलसी, राम-पद अनुरागहू॥

दोहाः—नीच - जाति - की - भीलनी, राम दीन्ह सोउ, तारि !।
३६ हे अज्ञानी ! सुख चहत, ऐसे - राम - विसारि !!॥

चले राम, त्यागा बन, सोऊ * अति-बलवान, सिंह-से, दोऊ।
नर-समान, प्रभु, करत-विषादा * कहत, अनेक कथा, सँवादा॥
रामः-बन-सोभा, देखौ, तौ, भ्राता * केहि कर मन, नहिं, देखि, लुभाता!।
पक्षी, हिरन, संग-लिये-जोरी ! * करत जात, निंदा, जनु, मोरी !॥
भाजत हिरन, देखि कर मो का * हिरनी कहतः 'अरे, डरपोका' !।
"डरत काहे तुम, हिरन-के-ज्याये ! * ये, माया-मृग-खोजन, आये" !॥
हाथी, हथिनिन संग-न-छांडत * 'तजी-सिय-क्यों', मोंहि, सिखावत।
{ सास्त्र, पढ़े-हू, समुझि न पावे * राजा, सेवत - आंख - दिखावे॥
तस, नारी, रखि-हृदय-माहीं * इन तीनहुं पर, कछु-बस-नाहीं !।
देखहु, तात ! वसंत, सुहावा ! * सीता-बिनु, पर, मोंहि, न भावा !॥

दोहाः—कामदेव, जनु, बिरह सन, विकल, अकेला जानि।
पक्षी-भौंरा-सैन-लै, मो पर, धावा, आनि॥

दोहाः—कामदेव, सुनि, दूत-मुख, लछिमन-सहित-निहारि।
४०. रोकि-राह, सैना-सहित, दीन्हा डेरा डारि॥

सुन्दर बेल, वृक्ष - उरझानी ! * कामदेव, जनु, तम्बू तानी !।
केला, ताड़, लगत, जनु, झंडी ! * मोहित को नहिं, देखि, घमंडी !॥
फूले वृक्ष, परत, अस, जाना * ठाढ़े बीर, बनाये-बाना।

कहुं-कहुं, सुन्दर वृक्ष, सुहाये * अलग-अलग, जनु, जोधा छाये ॥
कोयल कूकि, मस्त, जनु, हाथी * ऊंट, कुलंग - महोख, सुहाती ।
मोर, चकोर, सुआ हैं घोड़ा * हंस, कबूतर, ताजी-जोड़ा ॥
तीतुर-लवा हैं पैदल-सैना * कामदेव-की, कहत-बनै-ना ।
सिला, मनहु-रथ, वाजे, झरना * पपिहा, वंदी-जन, गुन-बरना ॥
गूँजत भौंरा, जनु, सहनाई * तीन-ब्यारि, जनु, चींठा आई ।
चारि-रंग-सैना, सँग, लीन्हे * घूमत काम, चुनौती-दीन्हे ॥
तजहि न धीर, देखि अस सैना * वड़-समान, जग महँ, कोउ नर ना ।
कामदेव - सब - सब-बल, नारी * तेहि जीतइ, सो, जोधा-भारी ॥

दोहाः—काम, क्रोध, और, लोभ, हैं, दुष्ट-तीन - बलवान ।
डारत आइ, विकार ये, मुनिन - के - मन, इक-आन ॥

दोहाः—पाखंड, इच्छा, लोभ - बल, काम-केर - बल नारि ।
४१. क्रोध - केर - बल कड़ु - वचन, संतन कहा विचारि ॥

कविः—सब-गुन-रहित, जगत-के-स्वामी * सब के, उमा ! हैं अंतरजामी ।
कामी - नर - दीनता दिखाई * धीर - नरन, वैराग पुढ़ाई ॥
काम, क्रोध, मद, लोभ, औ, माया * छूटहिं सकल, राम-की - दाया ।
इन्द्र-जाल-फँसि, सो नहिं भूला * जेहि पर, रघुवर-नट अनुकूला ॥
लागत, उमा ! पेम, मन, अपना * सांच भजन-हरि, जग-सब सपना ।
फिर, प्रभु गये, सरोवर - तीरा * सुन्दर 'पंपा', झील - गँभीरा ॥
संत-हृदय - सा, निर्मल पानी * बने घाट, सब-ओर, भवानी ! ।
मृग अनेक, जल पिअत, सुखारी * जनु, दाता-घर, जुरे भिखारी ॥

दोहाः—घनी - पुरैनी, छाइ, जल, जल कर, मिलत न मर्म ।
ढकि, माया - ते, जैस, नर, लखत न निर्गुन-ब्रह्म ॥

दोहाः—सुखी मीन, सब, एक रस, अस गहिरे-जल माँहिं ।
४२. जैसे, धर्मी - पुरुष - के, सब दिन, सुख महँ, जाहिं ॥

रंग - विरंग कमल, खिले, तहँ * मधुर-सुरन, भौंरा गूँजत, जहँ ।
बोलत मुरगावी, और, हंसा * देखि राम, जनु, करत प्रसंसा ॥
चकवा - बगुलन - सुन्दरताई * देखत बनइ, कही नहिं जाई ।
बोलत, चिड़ियाँ, बोल सुहाई * राहगीर, जनु, लेत बुलाई ॥
ताल - तीर, मुनि - कुटी सुहाई * चहुं-दिस-वन, वृक्षन-की - छाई ।
कदम, मौलश्री, चमपा, पाना * कटहल, पाढ़, पलास, औ आमा॥
फूले वृक्ष, लिये - नइ - पाती * जिन्ह पर, भँवर-गूँज मधुमाती ।
सीतल, मंद, सुगंध बयारी * वहत, सदा, लागत, अति प्यारी ॥
कोयल कू-कू करि, धुनि करहीं * रसिक-शब्द, मुनि-ध्यानहु हरहीं ।

दोहाः — बृक्ष, फलन - के-बोझ-ते, झुके, भूमि नियराय ।
४३. पर-उपकारी-पुरुष, ज्यों, पा संपति, झुकि जाय ॥

देखा सुन्दर, राम, तलावा * करि अस्नान, परम सुख पावा ।
देखी सुन्दर वृक्षन - छाया * बैठे, लषन - सहित, रघुराया ॥
तहँ, फिर, सबहि देव,मुनि आये * करि अस्तुति, निज-धाम सिधाये।
बैठे, परम - प्रसन्न, कृपाला * कहत, लषन-ते, कथा-रसाला ॥
जाने - राम, विरह - के - मारे * भे 'नारद', मन, सोचि, दुखारे ।
नारदः-मोर-स्राप-कहँ, सिर पर,धारी * सहत राम, वन, फिरि,दुख भारी ॥
ऐसे प्रभु कहँ, देखउं जाई * अस अवसर,फिर,मिलइ-न,भाई!।
कविः—अस विचारि,नारद,लिये वीना * गे, जहँ, प्रभु बैठे, सुख जी - ना ॥
गावत राम-चरित, मिठ बानी * प्रेम-सहित, वहु भांति, वखानी ।
करत दंडवत, लिया उठाई * राखा, देर तलक, उर लाई ॥
पूँछि कुसल, फिर, पास, विठारे * लछिमन, नारद - चरन पखारे ।

दोहाः — नाना - विधि, विनती करी, प्रभु, प्रसन्न - जिय, जानि ।
४४. बोले नारद, बचन, कर, जोरे, कमल - समान ॥

नारदः—सुनहु, परम-दाता,रघुनायक! * सहज-कठिनहु, और वर-दायक!।

देहु, एक वर, मांगहुँ, स्वामी ! * जानत, नीके, अंतर-जामी ! ॥
रामः—जानहु, मुनि, तुम मोर स्वभाऊ * भगतन सन, नहिं मोर छिपाऊ ।
कौन वस्तु, मो कहँ, अस-प्यारी ? * जो, नहिं मांगि सकत, बलिहारी !॥
कछु-नहिं, जो, न देहुं, भगतन-का ! * भूलेहु, अस करेउ न संका ! ।
नारदः—तब, नारद, बोले, हर्षाई * वर, यह मांगत, करत ढिठाई ! ॥
हैं, तो आप - के - नाम, अनेका * वेद - कहें. बढ़ - एक-ते - एका ।
होय, 'राम', सब-ते-बढ़-नामा ! * पाप - नसावन - हारे, रामा ! ॥

दोहाः—भक्ति - की - पूरन - रात, हो, 'राम' - चंद्र - प्रकास ।
और - नाम - तारिन - सहित, भक्त - हृदय-आकास ॥

दोहाः—'ऐसा ही हो', मुनि, कहा, कृपा - सिंधु, रघुनाथ ।
४५. कविः— तब, नारद-मुनि, हर्षि अति, प्रभु-पद, नायो माथ ॥

अति प्रसन्न, रघुनाथहिं जानी * बोले नारद, अति मिठ-बानी ।
नारदः—जब, फैलाई, प्रभु ! निज-माया * मो कहँ, मोहि लीन्ह, रघुराया !।
तब, विवाह, मैं, चाहा कीन्हा * केहि कारन, प्रभु ! करन न दीन्हा?।
रामः अति प्रसन्न, मैं कहुं, समुझाई * जो, सब-तजि, चरनन मन लाई ॥
करौं, सदा, तेहि की रखवारी * रक्षत बालक, जस, महतारी ।
बालक, बछरा, सर्प-आ-आगी * पकरें, मात - बचावत - भागी ॥
ज्यों, ज्यों, बड़ा होत, तस, माता * भूलत पाछिल - बातैं, ताता !।
'ज्ञानी,' मनहु, मोर-सुत-ज्याना * 'दास,' मान-बिनु, बाल-समाना ॥
इक, अपने, इक रहत, मोर-बल * वैरी - काम - क्रोध - दोउन - खल ।
अस विचारि, 'ज्ञानी' मोंहि भजहीं * ज्ञान-भये-हू, भक्ति न तजहीं ॥

दोहाः—काम, क्रोध, मद, लोभ, सब, प्रबल-मोह-की-धारि ! ।
४६. दुख - कारी, सब - ते - अधिक, माया - रूपी नारि !! ॥

कहत पुरान, वेद, और, संता * मोह-के-बन महँ, नारि, बसंता ।
जप - तप - नेम : कुँआ तालावा * हुइ-गरमी-रितु, देत सुखावा ॥

काम क्रोध-मद, मेंडक, बर्षा * भये, नारि, बोलत, जनु, हर्षा ।
दुष्ट, वासना - रूप, पुरइनी * नारि, सरद-रितु, तेहि-सुख-देनी ॥
हुइ हेमन्त-रितु, पाला डारइ * कमल-धर्म, थोरे-सुख जारइ ।
भये सिसिर-रितु, बढ़त जवासा * जो, ममता - रूपी, इक घासा ॥
पापी-उल्लुन कहँ सुख-कारी * नारी, मनहु रैन-अँधियारी ।
बुधि, बल, सील, सत्य, जनु-मछरी * त्रिय वंसी-ते, जात हैं पकरी ॥

दोहाः— सब दोसन की, नारि, जर, दुख-दायक, दुख-खानि ।
४७. यह ते, मुनि ! रोका, तुमहिं, हँसि, बोले, भगवान ॥

कविः-सुनि रघुपति के वचन-सुहाये * मुनि तन पुलकि, नयन भरि आये ।
नारदः केहि-स्वामी की, कहु, अस रीती ! * सेवक पर, अस ममता, प्रीती ! ॥
अस-प्रभु, भजत न, जे, भ्रम-त्यागी * से नर मूरख, बड़े-अभागी ! ।
आदर - ते, नारद, फिर, कहा * सुनहु, राम ! विज्ञानी महा ! ॥
संतन - लच्छन, नाथ - हमारे ! * कहहु, जगत - भय - भंजन - हारे ।
रामः-सुनु, मुनि ! संतन के गुन कहउं * जिन्ह ते, मैं, उनके बस रहउं ॥
जीतइ छः विकार, निष्कामा * अचल, सुद्ध, बिनु-धन, सुख-धामा ।
ज्ञान - तौ - बहुत, चेष्टा - थोरी * सत्य - प्रतिज्ञा, चातुर, जोगी ॥
देहि-मान, नहिं-कछु - अभिमाना * सावधान, अति-भक्ति-समाना ।

दोहाः—गुन - सागर, संदेह, ना, संसारी - दुख, तीर ।
४८. प्यारा, चरनन - कहँ - तजे, पर, ना, जिनहिं, सरीर ॥

सुनत-अपन-गुन, अति सकुचाहीं * औरन-गुन-सुनि, अति हर्षाहीं ।
समदरसी, त्यागहि-नाहिं-नीती * सीध-स्वभाउ, सबहिं सन, प्रीती ॥
जप, तप, वृत, दम, संजम, नेमा * गुरु - गोविंद - विप्र-पद प्रेमा ।
श्रद्धा, छमा, मित्रता, दाया * खुस्स, चरनन-महँ-प्रीति, न-माया ॥
भुकनि, विराग, विचार, औ, ज्ञाना * जानत, नीके, वेद - पुराना ।
मद, अभिमान, पखंड न करहीं * भूलेहु, पाउँ, कुराह, न धरहीं ॥

राम-चरित, नित, गावहिं, सुनहिं * बिनु कारन,जो पर-हित करहिं ।
हे, मुनि, संतन के गुन, जेते * कहि न सकत, वेदहु, तौ तेते ॥

छंदः—कहि सकत, गुन,नहिं, 'सेष', सारद,चरन,अस,सुनतहि,गहे ।
अस दीन-बंधु, कृपालु, अपने भक्त के गुन, मुख, कहे ॥
सिर नाय, बारंबार, चरनन, बृह्म-पुर, नारद गये ।
ते धन्य, तुलसीदास, जो, तजि-आस, हरि-रँग, रँगि रहे ॥

दोहाः—सुनि, गा, रावन-शत्रु-जस, सुद्ध होत नर-नारि ।
विन विराग, जप, जोग के, पावत भक्ति, सँभारि ॥

दोहाः—दीपक-की-लौ नारि है, रे मन ! हो न पतंग ।
भजहु राम, मद-काम-तजि, करहु, सदा, सत-संग ॥

* श्री *

किष्किंधा-कागड

मंगलाचरन

सो०ः—कुंद, औ, कमल समान, सोभा-ज्ञान-के-घर, बली ! ।
निपुन, धनुष-और-बान, गौ-बृह्मन-प्रिय, वेद-कहे !! ॥
माया-नर-अवतार, करत फिरत हित, धर्म-धरि ! ।
सिय. बन, खोजन-हार,राम-लषन, देउ, भक्ति, मोहिं !! ॥
धन्य ! करत, जे, नर, पान, नाम-अमरित, सदा, ! ।
लेत, पाप सब, हरि, वेद. सिंधु ते, निकसि जो !! ॥
सिव -मुख, चंद्र-समान, सोहत जो, सिय-प्रानहू ! ।
औषधि, सुख-कर-खानि, संसारी - भव-रोग-कहँ !! ॥

सो०ः—मुक्ति-जन्म - अस्थान, ज्ञान-खानि, पापन - हरत ! ।
उमा, औ, शिव, भगवान, बसत, सो कासी सेइये !! ॥
देवन, लीन्ह, बचाय, जरत-जो-विष-ते, आपु, पी ! ।
मूरख ! भजत न, ताहि,को कृपालु, शिव-सम, भला !! ॥

१. —:०:—

कविः—आगे, चले, लषन-रघुराई ❋ 'रिष्यमूक'-परबत-ढिंग, आई ।
तहँ, मंत्रिन-सँग, रहि 'सुग्रीवा' ❋ आवत, देखि, दोउ बल-वीरा ॥
सुग्रीवः-डरपेउ,कहत सुनहु,हनुमाना! ❋ कौन, ये,रूप-औ-बल-स्थाना ? ।
विप्र - रूप धरि, देखहु, जाई ❋ जाने, दीजेउ, सैन जनाई ॥
होय न, वैर-ते, 'बालि' पठावा ❋ भागउं, तुरत, कहेउ,समुझावा ।
कविः–विप्र-रूप धरि,कपि,तहँ, गयेऊ ❋ नाय माथ, पूँछत, अस भयेऊ ॥
हनूमानः-को,तुम,स्यामल-गौर-सरीरा!❋ क्षत्री-रूप, फिरत, बन, वीरा ।
कठिन भूमि, कोमल पद तुम्हरे ❋ केहि कारन,स्वामी!बन,विचरे?॥
सुन्दर, कोमल, गात, तुम्हारे ❋ बन-दुख सहत,फिरत, लू-मारे ।
बृहमा, शिव, कै विष्णु, होऊ ! ❋ 'नर'-'नारायण' कै,तुम-दोऊ ! ॥
दोहाः—भव के तारन हेत, कह, लीन्ह मनुज - अवतार ! ।
२. आये, जग महँ, हरन कहँ, जग-पति ! धरती-भार !! ॥

हँसि, बोले, रघुबंस - कुमारा ❋ बृह्मा-लिखा, को, मेटन-हारा ।
रामः—कोसल-राजा, दसरथ-ज्याये ❋ हम,पितु-वचन,मानि,बन,आये॥
नाम, 'राम'-'लछिमन', दोउ-भाई ❋ रही सँग, 'सिय', नारि सुहाई ।
यहाँ,, हरी, निसिचर, 'वैदेही' ❋ ढूँडत फिरत विप्र !हम, तेही ॥
यह, कारन, बन-विचरन, मोरा ❋ आपन-चरित,कहउ,अब थोरा ।
कविः-प्रभु,पहिचानि,गिरेउ,कपि,चरना❋सोसुख,जात न,शिवसन,बरना॥
देखि, राम - अँग, सुन्दर-रचना ❋ फूला तन,मुख, आयो न,वचना ।
फिर,धीरज धरि,अस्तुति कीन्ही ❋ मन-सुख.आपन-नाथ,हिं,चीन्ही ॥
हनूमानः-मैं नर, पूँछा,ठीक,हि, साईं ! ❋ तुम, कस पूँछत, नर-की-नाईं ! ।

मैं, माया-बस, फिरउं, भुलाना * तेहि ते,मैं,नहिं,प्रभु, पहिचाना ॥
दोहाः—मोह-के-बस, मैं मंद-मति, हृदय, भरा अज्ञान।
३. मो का, दीन्ह बिसारि, तुम, दीन-बंधु-भगवान ॥
सही, मोर-अवगुन, बहुतेरे * सेवक-तजत-न, स्वामी, हेरे।
मोहे जीव, तुम्हारी माया * तरत न,सो,बिन तुम्हरी दाया ॥
तेहि पर, मैं, रघुवीर-दोहाई ! * जानत नहिं, कछु,भंजन-उपाई।
सेवक, स्वामि-भरोसा, ऐसे * तजि न सकत,माता,सुत,जैसे ॥
कविः—असकहि,परेउ,चरन, अकुलाई * कपि-तन प्रगटि,प्रीति,उर, छाई।
उर ते राम, उठाइ, लगावा *कपिकहँ,अँसुवन,सींचि,जुड़ावा ॥
रामः—प्रिय! संदेह न,जिय,कछु आनहु * लखन-ते-दूना, प्रिय तुम, मानहु।
समदरसी, जग, मोहिं, बतावत * भक्त, अनन्य,मोहिं,अतिभावत ॥
दोहाः—ऐस भगत, सब-जग लखत, सदा, रूप - भगवान।
४. कविः—"मैं, सेवक, अस स्वामि कर", टरत न, कबहूं, ज्ञान ॥
स्वामी-रीझे, लखि, हनुमाना *मिटा दुःख,अति ही सुख,माना।
हनूमानः-गिरि पर,'कपि-पति',नाथ-हमारे*बसत,दास,"सुग्रीव",तुम्हारे॥
बनहु मित्र, चलि, लेहु सहारा * पहिले, वह कर, दुःख, निवारा।
लाखन बानर, सो पठाइ के * सिया-खोज, रहि है, लगाइ के ॥
कविः—यहविधि,सकलकथा,समुझाई * राम, लषन, लिये, पीठ, चढ़ाई।
'कपि-पति',आवत राम,जो,जाना * आपन जन्म, धन्य,तेहि, माना ॥
करे दंडवत, माथ नवायो * राम, लषन कहँ, कंठ, लगायो।
सोचत, जानै, कौन-सी-रीती * "मो ते,विधिना! करिहैं,प्रीती" ॥
दोहाः—तब, 'हनुमत', दोउ-ओर-की, कथा, दोउन, समुझाय।
५. अगनी कहँ, दइ, बीच महँ, दीन्हे मित्र मिलाय ॥
कीन्ह प्रीति, कछु भेद, न राखा *लक्ष्मण राम-चरित,सब भाखा।
सुग्रीवः—कह, सुग्रीव, नैन, जल-छाये * मिलहिं,नाथ! सिय,खोजलगाये ॥
मंत्रिन-संग, बैठे, एक-बारा * करत रहेउँ,कछु समय-विचारा।

सिय, अकास, मैं देखा, जाती * फँसे-पराये-बस, अकुलाती ॥
"राम-राम-हा-राम !" पुकारत * मो का, देखि, गई, पट डारत ।
कविः–माँगा, राम, लाय, पट, दीन्हा * पट, उर, लाय, सोच अति, कीन्हा ॥
सुग्रीवः–कह, सुग्रीव, सुनहु, रघुवीरा ! * तजहु सोच, मन, लावहु धीरा! ।
सब प्रकार, करिहौं सेवकाई * जेहि विधि, मिलहिं, जानकी-माई ॥

कविः-दोहाः—कृपा-सिंधु, बल-खानि, ने, सुने वचन, हर्षाइ ।
६. पूँछा, बन, काहे बसत, "सखा ! देहु, बतलाइ" ॥

सुग्रीवःनाथ! 'बालि' और, मैं, दुइ-भाई * रही प्रीति, कछु, कहा न जाई ।
निशिचर-सुत, 'मायाबी', नामा * आवा, इक दिन, मोरे गाँवा ॥
आधि-रात, पुर-द्वार, पुकारा * सका न सहि, बल, भाइ-हमारा ।
धावा 'बालि', निसाचर भागा * महूँ, भाइ-के-पाछे, लागा ॥
निसिचर घुसा, गुफा, इक, जाई * भाई, मोंहिं, कहा, समुझाई ।
"देखेउ राह, एक पखवारा * ना लौटौं, जानेउ, गा-मारा" ॥
एक-मास, मैं, बाट, निहारी * गुफा-ते, लोहू, भा, जब, जारी ।
डरेउँ, न मारइ, मोहुँ, निसाचर * लौटेउँ, गुफा के, मुख, धरि पाथर ॥
बिन-राजा, मंत्रिन, पुर, जाना * राज दीन्ह, हठि, मोंहिं, न माना ।
'बालि' मारि निसिचर, घर, आवा * देखि मोंहिं, जिय; बैर बढ़ावा ॥
बैरी-सम, मारा मोंहिं, भारी * लीन्ही हरि, सब-सब, और, नारी ।
तेहि के डर, रघुवीर-कृपाला! * सब लोकन, मैं, फिरा, बेहाला ॥
यहाँ, श्राप-बस, आवत नाहीं * तहूँ, रहत डरपत, मन माहीं ।
कविः–सुनि सेवक-दुख, दीन-दयाला * फरकि उठीं, दोउ भुजा, विसाला ॥

रामः–दोहाः—सुनु, सुग्रीव ! मैं मारिहौं, 'बालिहिं' एकहि बान ।
७. शिव, ब्रह्मा की सरनहू, लीन्हे, बचइ न प्रान ॥

मित्र-के-दुख, नाहिं होत दुखारी * तिन के देखे; पातक, भारी ।
आपन-दुख, मानइ नित थोरा * मित्र-थोरहु-दुख, बहुतेरा ॥

ऐसी मति, जेहिकर, नहिं होई * बनत मित्र, काहे, शठ, सोई !।
छांड़ि कुराह, जो, राह, चलावइ * गुन दिखाइ,और,दोषछिपावइ ॥
देत · लेत, ना होइ दुखारी * बल-भरि, रहइ, सदा, हितकारी ।
बिपति मां, सौ·गुन, नेह बढ़ावइ * श्रेष्ठ · मित्र, सोइ, वेद बतावइ ॥
आगे, मीठ - बचन बनाई * पाछे, अनहित, मन-कुटिलाई ।
सर्प-समान, चलत चित, जेहिका * सो कुमित्र,भल,त्याग है,तेहिका॥
राजा-सूम, औ, खोंटी-नारी * शठ-सेवक, कुमित्र, दुख-कारी ।
सखा ! सोच, त्यागहु, बल-मोरे! * सब-विधि,करउँ,काज,मैं, तोरे ॥
सुग्रीवः–कह,सुग्रीव,सुनहु, रघुवीरा! *'बालि'बली-अति,अति-रन-धीरा ।
सात ताड़, छेदत, इक-बाना * 'दुंदुभि',हतेउ,'सुमेरु'-समाना ॥
कविः–ताड़, छुअतहीं, राम गिराये * हाड़ - दुंदुभि, फूंकि, उड़ाये ।
देखि राम-बल, बाढ़ी प्रीती * बालि-मरन कर, भई, प्रतीती ॥
बारम्बार, नाय, पद, सीसा * जानि प्रभु, मन, हर्षि, कपीसा ।
सुग्रीवः–उपजा ज्ञान,वचन,अस,बोला * तोर दया मन, भयो, अडोला! ॥
सुख, संपति, परिवार, बड़ाई * सब तजि,अब,करिहौं सेवकाई! ।
इनते, परत, भक्ति महँ, बाधा * कहत संत,जिन,हरि, आराधा ॥
दुख-सुख, सत्रु-मित्र, जगमाहीं * सब माया, परमारथ नाहीं ।
'बालि', परम-हितु, रहा, हमारा * दुख-नासक, भा, दर्स तुम्हारा ॥
स्वप्न, भाइ - सन, भई लराई * जागा, समुझत, मन सकुचाई ।
अब, प्रभु! कृपा करहु, यह भाँती *तजि सब,करउँ,भजन,दिन-राती ॥
कविःकपि-विराग-भरि-वचन,सुने,जब * राम, धनुष-धारी, बोले, तब ।
रामःजो तुम कहा, सत्य, सब, सोई * मोर-बचनहू, झूठ न होई ! ॥
कविः–जैसे, नट, बानरहिं, नचावइ * सबहिं, राम, तस, वेद,बतावइ ।
लइ, सुग्रीव, संग, रघुनाथा *चले,बान-और·धनु,लिये,हाथा ॥
तब, रघुपति, सुग्रीव पठावा * गर्जा, जाइ, राम-बल-पावा ।
बालिहिं, क्रोध भयो, सुनि, धावा * पकरि चरन,'तारा' समुझावा ॥

बालि-स्त्री तारा { मिला जाइ,सुग्रीवहै,जिनते * बल, और, तेज, हारिगे,तिनते ।
दसरथ-सुत,दोउ,लछिमन-रामा*कालहु,जीति सकत,संग्रामा॥

दोहा:—कहा, 'बालि', क्यों, भय करत, समदर्शी रघुनाथ ! ।
८. जो गति, चाहत मुनि, सोई, मिलइ, मरे-उन-हाथ !! ॥

कवि:असकहि,चला महा-अभिमानी * भाई-बल, तिनका-सम, जानी ।
भिरे दोउ, 'बाली', अति तर्जा * घूँमा मारि, महा-धुनि, गर्जा ॥
तब, सुग्रीव, विकल-हुइ, भागा * धूँसा-'बालि', वज्र-सम, लागा ।
सुग्रीव:मैं,जो,कहा,रघुवीर, कृपाला ! * भाइ न,मोर,मोर, यह काला ! ॥
राम:—एक-रूप, तुम, भाई-दोऊ * तेहि भ्रम ते, नहिं मारेउं, सोऊ।
कवि:—फेरा,तन पर, कर, रघुवीरा * वज्र, भयो तन, गइ सब पीरा ॥
फूलन-माला, गरे, पिन्हाई * फिर पठवा, दइ बल-अधिकाई ।
बहुत भांति, फिर, भई लराई * वृक्ष - ओट, देखत, रघुराई ॥

दोहा:—निज-बल-सों, जब लगि, लरा, रहे देखत, भगवान ।
९. मानी, हृदय, हार, जब, राम, बान दियो, तानि ॥

परा, विकल, गिर, बान-के-लागे * उठि बैठा, देखत प्रभु आगे ।
स्याम सरीर, जटा, सिर, धारे * नैन, लाल, धनु-बान-संवारे ॥
देखि, देखि, चित, चरन, लगावा * प्रभु-पहिचानि, जन्म-फल पावा।
हृदय, प्रीति, मुख, वचन-कठोरा * बोला, चितइ, राम की ओरा ॥
बालि:धर्म-हेतु, अवतरेउ, गोसाईं ! * मारा, छिप, व्याध की नाईं ।
मैं, वैरी, सुग्रीव, पिआरा * कारन,कौन,नाथ !मोहिं,मारा ॥
राम:छोट-भाइ, और,सुत कर नारी * कन्या, बहिन, एक-सी, चारी ।
रे, शठ ! इन कहँ, ताकइ, जोई * तेहि के मारे, पाप न होई ॥
तेहि पर,तो कहँ,बढ़-अभिमाना * 'ताराहू' कर कहा, न माना ।
रहा, मोर-बल, तोरा-भाई * अभिमानी ! तेहि,मारा चाही ॥

बालि:—दोहा:—सुन्दर-स्वामी, राम, तुम, चल न चातुरी मोर ।
१०. अजहूं, का, मैं, पातकी, मरत, सरन मां, तोर ॥

कविः कोमल-बानी-सुनि, रघुनाथा * बालि-सीस, पर, फेरेउ, हाथा।
रामः अचल, करउं, तन, राखहु प्राना ! * कहा, 'बालि', सुनु, कृपा-निधाना॥
बालिः जनम, जनम, मुनि, जतन कराहीं * मरत, 'राम', कहि आवत नाहीं।
आपु-नाम-बल, संकर, कासी * देत, सभन कहं, गति, अविनासी॥
आज, ठाढ़, सोइ नैनन-आगे * फिरहु क, भाग जगहिं, जस, जागे।

छंदः—सो, नैन-आगे, मोर, जिन कर, वेद, नित, जस गावहीं।
जिन-ध्यान, मुनिहू, जीति इन्द्रिन, और, मन, नहिं पावहीं॥
अभिमानि, मो का, जानि, सो प्रभु, कहत, "राखु, सरीरहीं"।
मैं, कल्प-वृक्षहिं, हाथ, काटउं, और, लगाउं बबूरहीं !!॥

छंदः—अब, करि दया-की-नजर, मो पर, देहु दुइ-बर, मांगहूँ।
जेहि जोनि, उपजउं, जाय, मरि, मैं, राम-पद, अनुरागहूँ॥
और, नाथ ! अंगद, मोर-सुत, कल्यान-पदवी, दीजिये।
गहि बांह, सब-के-स्वामि, वह की, दास आपन, कीजिये॥

कविः—दोहाः—राम-चरन महँ, प्रीति करि, तजे 'बालि', अस, प्रान।
११. सहज, गिरत, जस, कंठ ते, माला, गज, नहिं जानि॥

राम, 'बालि', निज-धाम, पठाये * नगर-लोग, ब्याकुल, सब धाये।
नाना-विधि, विलाप किये, 'तारा' * छूटे-केस, न-देह-सँभारा॥
विकल देखि, 'तारा', रघुराया * दीन्ह ज्ञान, हरि लीन्ही माया।
रामः अग्नि, पवन, जल, पृथ्वी, अकासा * पांच-तत्व-की, देह, तमासा !॥
सो तन, तुम्हरे आगे, डारा * मरत, जीव, नाहिं, कबहूं, 'तारा' !।
कविः उपजा ज्ञान, चरन, चित लागा * परम-भक्ति कर बर, तब, माँगा॥
देखहु, कठ-पुतरी की नाईं ! * सबहिं, नचावत, राम, गोसाईं !।
तब, सुग्रीवहिं, आज्ञा दीन्हा * मृतक-कर्म, जा, विधि-मन, कीन्हा॥
रामः लषनहिं, कहा, राम, समुझाई * देहु राज, सुग्रीवहिं, जाई।
कविः रघुपति-चरन, नाय करि, माथा * चले सकल, हांके-रघुनाथा॥

दोहाः—लक्ष्मण, तुरत, बुलाय कर, पुरजन, विप्र समाज।
१२. दीन्ह, राज, सुग्रीव कहँ, अंगद कहँ, युवराज॥

राम-समान, हितू, जग माहीं * गुरु,पितु,मात,भ्रात,कोउ नाहीं।
नर, मुनि, देव, सबहि कर रीती * मतलब - लगे, करत हैं प्रीती॥
बालि-के-डर,व्याकुल, दिन-राती * जारत, चिंता, रहि, नित,छाती।
सोइ सुग्रीव, राज दियो, आई * अति-कोमल-स्वभाव, रघुराई!॥
जानतहु, अस प्रभु, जे तजहीं * काहे न, बिपति जाल, ते परहीं!।
फिर, सुग्रीवहिं, राम, बुलाई * राज-नीति, बहु-भांति, सिखाई॥
रामः-सुनु, सुग्रीव! रहऊँ, यह ठाऊँ * चौदह बरस, नगर, नहिं जाऊँ।
गइ गरमी, बर्षा - रितु आई * रहिहौं, तीर, पहार पै, छाई॥
अगंद-सहित, करहु, जा, राजू * राखे, जी महँ, मोरहु काजू।
कविः-तब,सुग्रीव, लौटि,घर, आये * राम, "प्रवर्षन-गिरि" पर,छाये॥

दोहाः—रचि राखी, तहँ, कन्दरा, देवन, सुघर, बनाय।
१३. राम, कृपानिधि, कछुक-दिन, वास करेंगे, आय॥

वृक्ष फूलि, छाई, बन, सोभा * गूँजत भँवरा, मधु - के - लोभा।
कंद - मूल, फल, पात, सुहाये * भये बहुत, जब ते, प्रभु आये॥
देखि मनोहर - सैल, अनूपा * रहे लषन - सँग, तहँ, सुर-भूपा।
मंगल - रूप भयो, बन, तब ते * कीन्ह निवास, राम आ,जब ते॥
बैठे, पाथर - सिला, सुहाई * लइ आसन,सुख सों, दोउ भाई।
देव, सिद्ध, मुनि, सेवा - रघुवर *करत,मिरग-खग-भंवरा-तनधारि॥
कहत कथा, रघुबर, मिठ-बानी * भक्ति, बिराग, नीति की सानी।
बर्षा रितु, बादर रहे छाये * गर्जत, लागत, परम सुहाये॥

रामः—दोहाः—लक्ष्मण, बादर, देखि के, हर्षित, नाचत मोर।
१४. विष्णु-भक्त कहँ,देखि, ज्यों,गृहस्थ, विराग-मा-बोर॥

घुमड़त बादर, गरजत घोरा * सीता-बिन, डरपत, जिय मोरा।
बिजुली, दमकि रही, घन माहीं * खल की प्रीति,जैस,थिर नाहीं॥

झुकि,झुकि बादर,जल बरसावहिं * विद्या, पा, पंडित नात्रि जावहिं ।
बूंदन - चोट, सहत, गिरि, ऐसे * खल के बचन, संत सहि, जैसे ॥
चलीं, नदी छोटी, उतराई * जस, खल, थोरे - धन, बौराई ।
धरती, गिरत, कींच भा, पानी * जस, जीवहिं, माया लपटानी ॥
भरत तलाउ,सिमिटि जल, ऐसे * नीके-गुन, सज्जन महँ, जैसे ।
गिरत, नदी - जल, सागर, जाई * होत अचल, ज्यों,नर,हरि पाई ॥

दोहाः—जमत घास, धरती ढकी, सूझि परत, नहिं, पंथ ।
१५. ज्यों, पाखंडी, जग, बढ़े, गुप्त भये सद्ग्रंथ ॥

चहुँ दिस, दादुर - सोर सुहाये * जनु, विद्यार्थि, वेद, सुनाये ।
नये पात, पेंड़न मां, लागे * ज्ञान, जैस, साधक-मन, जागे ॥
जरे 'मदार', 'जवासा', कैसे * खल-धंधा, स्वराज भे, जैसे ।
धूरि, मिलत नहिं, कतहूँ, ढूंढ़े * जात, धर्म,जस, क्रोध मां, बूड़े ॥
भरि खेती, लागत, अस, धरती * जस, उपकारी, धन-की-भरती ।
रैन अंधेरी, जुगुनू चमकें * मोह - अंध, पाखंडी दमकें ॥
अति वर्षा, चलि, फूटि,किआरी * बिन-लगाम,जस, बिगरत नारी ।
चतुर किसान, निरावत, कैसे * मान, मोह, मद, पंडित, जैसे ॥
परत न, चकवा-चकइ, दिखाई * पाइ कलेस, धर्म, ज्यों, जाई ।
जमत न तिनका, ऊसर, बरसे * उपजत काम न,संत के उर से ॥
बाढ़े जीव, जंतु, पृथ्वी, अस * सुन्दर राजा पाय, प्रजा, जस ।
थकि बैठे, जहँ - तहां, मुसाफिर * इन्द्री होत,ज्ञान ते, जस, थिर ॥

दोहाः—चलइ ब्यार, कहुँ, जोर-ते, कहुँ, बादर फटि जायं ।
जस, कुपूत के ऊपजे, कुल के धरम नसायं ॥

दोहाः—दिन महँ, होत अंधेर कहुँ, प्रगट सूर्ज, कहुँ, होय ।
१६. बढ़त ज्ञान, सतसंग ते, देत, कुसंगत, खोय ॥

वर्षा गई, सरद - रितु, आई * देखहु, लछिमन ! परम-सुहाई ।
फूलि कांस, धरती मां, छाई * वर्षा - रितु, जन, गई बुढ़ाई ॥

उदय 'अगस्त', राह-जल सोखा * सोखत लोभ, जैस, सनतोषा ।
नदियन-जल, निरमल भा, कैसा * तजि मद-मोह, संत-उर, जैसा ॥
रवि,ससि, सोखत, नदियन-पानी * ममता, तजत रहत,जस, ज्ञानी ।
जानि सरद-रितु, 'खंजन' आये * ज्यों, सुभ-कर्म, समय के पाये ॥
धूरि-न-कीच, सोह, अस, धरनी * नीतिवान - राजा, जस, करनी ।
सूखत जल, ब्याकुल, अस, मीना * बुद्धि-हीन-नर, जस, धन हीना ॥
बिन-बादर, निरमल आकासा * जस,हरि-जन-हृदय, तजि आसा ।
सरदहु, वर्षा, कहुँ-कहुँ, थोरी * मिलतभक्ति,जस,कोउ-कोउ,मोरी ॥

दोहाः—चले, हर्षि, तजि नगर, नृप[1], बनिया[2], तपसि[3], भिखारि[4] ।
१७. मिले भक्ति, जस,श्रम तजत, हर्षित आस्रमी, चारि ॥

सुखी मीन, गहिरे-जल, कैसे * हरि-की-सरन गहे, नर, जैसे ।
सोहत, ताल, कमल खिलि, कैसे * निरगुन वृह्म, सगुन-भे, जैसे ॥
बाँधि झुंड, भँवरा गुंजारैं * पक्षी, सुन्दर, बोल सुनावैं ।
दुखी, रैन के देखे, चकवा * दुष्ट, पराये-धन, जस, दुखवा ॥
रटत पपीहा, लागि अति प्यासा * शिव-वैरी,जस,नहिं सुख-आसा ।
सरद-चंद्र, गरमी, हरि, एसे * संत-दरस, पापहिं, हरि, जैसे ॥
मिलि, चकोर, अस,चंद्र,निहारइं * भक्त, पाइ हरि, पलक न मारइं ।
मच्छर, डाँस, गये, पाला, डरि * नासत विप्र - वैर, जैसे, घर ॥

दोहाः—जीव, जंतु, धरती, रहे, गये, सरद - ऋतु पाय ।
१८. जैस, भले - गुरु के मिले, भ्रम, संदेह नसाय ॥

वर्षा गई, सरद - रितु आई * सुधि, न,तात ! सीता की पाई !।
एक बार, कैसेहु, सुधि पाऊँ * कालहु, जीति, तुरत, मैं, लाऊँ ॥
कहूँ, होय, जो, जीवत, होई * तात ! जतन करि,ल़ावहु,सोई ।
सुग्रीवहु, सुधि मोर, बिसारी * राज, खजाना, पाये, नारी ॥
जेहि बानहिं, मारा, मैं, "बाली" * हतउँ मूढ, तेहि बानहिं, काली ॥
कविः—जासु-कृपा, मद-मोह नसावइ * सपनेहु,तेहिकहँ,क्रोध न आवइ ॥

जानइँ, यह चरित्र, मुनि ज्ञानी * जिन,सनेह,प्रभु-चरनन, जानी ।
लछिमन, क्रोधवंत-प्रभु जाना * धनुष उठाय, चढ़ायो बाना ॥
रामः—दो०:—सखा - मोर, सुग्रीव है, तात ! देहुँ, समुझाय ! ।
१९. लै आवहु, तुम, जाइ कर, खाली भय, दिखराय !! ॥
कविः-उधर,'पवनसुत'हृदय,बिचारा* राम-काज, सुग्रीव बिसारा ! ।
जाय, निकट, चरनन,सिर नावा *चारहु विधि,तेहिकहँ,समुझावा॥
सुनि, सुग्रीव, बहुत भय माना * जाना,विषय, लीन्ह, हरि,ज्ञाना ।
सुग्रीवः-ओरहु बानर, खोज लगावहु * जहँ-तहँ, वानर-सैन, पठावहु ॥
एक पाख, जो, खबर न लावइ * मोरे हाथन, मारा जावइ ।
कविः-तब, हनुमान, दूत, बुलवाये * करि सनमान, बहुत समुझाये ॥
भय, और, प्रीति, नीति दिखराई * चले दूत, चरनन, सिर नाई ।
तेहि अवसर, लछिमन,पुर, आये * देखि क्रोध,कपि,जहँ-तहँ, धाये ॥
दो०:—धनुप चढ़ाये, कहा, तब, "लीन्ह,सबहिं,पहिचानि ! ।
२०. किये देत, अब, नगर, मैं, भष्म, एकही बान" !! ॥
अंगद, आइ, चरन, सिर नावा *लषन, विनय सुनि,अभय करावा।
क्रोधवंत लछिमन, सुनि, काना * कह सुग्रीव, बहुत-अकुलाना ॥
सुग्रीवः-तुम,हनुमंत ! संग लइ'तारा' * करि विनती, समझाहु, कुमारा ।
कविः-'तारा'-सहित, गये हनुमाना * बंदि चरन, जस-राम बखाना ॥
करि विनती, घर कहँ, लै, आये * धोय चरन, पलिका, बैठाये ।
तब, सुग्रीव, चरन, सिर नावा * गहि भुज,लछिमन,कंठ,लगावा ॥
सुग्रीवः-नाथ!विषयसम,मद,कछु,नाहीं* मुनि-मन, मोह,करत,छन माहीं ।
कविःविनय-वचनसुनि,अतिसुखपावा*लछिमन,तेहि, बहुविधिसमुझावा॥
तब, हनुमान, कथा, सब, गाई * जेहि विधि, दूत, रहे पठवाई ।
दो०:—हर्षि, चले, सुग्रीव, तब, अंगद - और - कपि- साथ ।
२१. लछिमन कहँ, आगे, कियो, आये, जहँ रघुनाथ ॥
सुग्रीवः-विषय-के-बस, सब,सुर,मुनि,स्वामी!नीच पसू,बानर, मैं, कामी ! ।

{ नारी - नैन - बान ना लागइ * घोर-क्रोध-की-रैन, जो जागइ ॥
लोभ-फाँस, जेहि, गर,न बँधाया * सो नर, तुम-समान, रघुराया ॥
साधन ते, यह गुन नहिं होई * तुम्हरी-कृपा, पाइ, कोइ-कोई ॥
रामः-तब, रघुपति, बोले, मुसुकाई * तुम,प्रिय मोहिं, भरत-सम,भाई।
अब, सो जतन, करहु, मन लाई * जेहिविधि,सीता-सुधि मिल जाई॥
कविः—दो०ः—होत रही, अस बतकही, आये, झुंड - बँधाय।
२२. बानर, सबही - रंग - के, बल, बरना, नहिं जाय ॥
सैना, एकहु कपि, अस नाहीं * राम, कुसल, जेहि, पूँछी, नाहीं।
प्रभु कर, यह, कछु नहीं बड़ाई * जब, सब-महँ-ब्यापक, रघुराई ॥
आज्ञा पाइ, खड़े भे, आई * कह, सुग्रीव, सबहिं, समुझाई।
सुग्रीवः-राम-काज,और, मोर-निहोरा * बानर!सुनहु, जाउ, सब-ओरा ॥
खोजेउ, सीता कहँ, सब, जाई * एक मास मां, लौटेउ, आई।
बीते, मास, जो, काज न होई * मरहिं आइ, इन-हाथन, सोई ॥
कविः-दोहाः—सुनत बचन, बानर उठे, जहँ-तहँ, चले, तुरंत।
२३. तब, सुग्रीव, बुलाय के, कह, अंगद - हनुमंत ॥
सुग्रीवः-सुनहु, नील!अंगद!हनुमाना! * जामवंत ! मति-धीर, सुजाना।
मिलि, सब जोधा, दच्छिन. जाहू * सीता सुधि, पूँछेउ, सब काहू ॥
बचन - कर्म - मन, राह विचारहु * रामचन्द्र के काज, सँवारहु।
भानु, पीठ, सेवइ, उर, आगी * स्वामी, सेवइ, सब-छल-त्यागी ॥
तजि माया, सेवइ परलोका * मिटहिं, जासु, संसारी-सोका।
देह-धरे कर, यह फल, भाई * सब-तजि, भजइ, एक, रघुराई ॥
सोइ गुनवान, सोइ बड़-भागी * जो रघुबीर-चरन-अनुरागी।
कविः-मांगि बिदा, चरनन, सिर नाई * चले, सकल, सुमिरत-रघुराई ॥
हनूमान, पाछे, सिर नावा * जानि काज,प्रभु,निकट,बुलावा।
फेरा हाथ, सीस, कहि बानी * दीन्ह मुद्रिका, निज-जन,जानी ॥
रामः-बहु प्रकार, सीतहिं, समुझायो * कहि बल-बिरह-मोर,झट,आयो।

कविः-हनुमत,जन्मसुफलकरिजाना * चला,हृदय,धरि, कृपा-निधाना ॥
होनहार, जानत - सब - बाता * राज-नीति, पालत, रघुनाथा ।
दोहाः—खोजत, तब, सब कपि चले, बन, परबत, और, खोह ।
२४. राम-काज, तन-मन-दियो, कीन्ह न तन - कर-मोह ॥
जहँ, कहुं, निसिचर ते भइ भेंटा * लीन्ह प्रान हरि, एक - चपेटा ।
बन, परबत, सब बानर,खोजहिं * सीता-सुधि, मुनियन ते बूझहिं ॥
लागि प्यास,सब कपि अकुलाने *मिलत न जल कहुं,फिरत,भुलाने ।
तब, मन महँ, सोचा, हनुमाना *"मरनचहतकपि,बिनजल-पाना"॥
चढ़ि, परबत पर, देखा जाई * नीचे, यक बिल, परा दिखाई ।
चकुला, हंस, उड़त, देखे, तहँ * करत, प्रवेस, रहे, पच्छी जहँ ॥
गिरि ते उतरि, पवनसुत आवा * वह बिल,सब बानरन्ह,दिखावा ।
करि आगे, हनुमंतहिं, लीन्हा * पैठे, बिल महँ, देर न कीन्हा ॥
दोहाः—देखा, बाग, तलाउ, इक, फूले कमल, सुहाय ।
२५. बैठी, यक मंदिर, तहाँ, तपसिन, ध्यान लगाइ ॥
दूरहि ते, तेहि का, सिर नावा * पूँछा, कपि, सब हाल,सुनावा ।
सो, तब, कहा, "करहु, जल-पाना * खाहु सरस,सुन्दर,फल,नाना"॥
करि अस्नान, मधुर फल खाये *तासु निकट,सबकपि,चलि,आये।
चन्द्रप्रभाःतपसिन,आपन-कथा,सुनाई* मैं, अब जात, जहाँ रघुराई ॥
मूँदहु नैन, तजहु बिल, जाहू * पैहौ, सीतहिं, ना घबराहू ।
कविः—मूँदि नैन, खोले, जब, बीरा * देखाः "ठाढे, सिंधु के तीरा ॥
तपसिन गई, जहाँ रघुनाथा * जाय, कमल-पद, नायो माथा ।
नाना-भाँति, बिनय सो कीन्ही * घटइ-न-जो-भगती,प्रभु दीन्ही॥
दोहाः—'बदरीबन' कहँ, सो गई, प्रभु-आज्ञा, धरि सीस ।
२६. राम-चरन, धरि, उर, सोई, ध्यावँ जो ब्रह्मा, ईस ॥
इधर, विचारत कपि,मन माहीं * गयो मास, काजहु, भा नाहीं ।
सबमिलि,कहत, परसपर बाता*' बिन-सुधि-लिये,करब कह,भ्राता!"॥

अंगदः-भरि आँसू, अंगद कह, भाई * मरन, भाँति दोउ, परत दिखाई।
इहाँ, न, सुधि सीता की, पाई * उहाँ, गये, मारहिं, कपिराई॥
मारत मोहिं, पिता-संग, भाई ! * लीन्ह, कृपा करि, राम, बचाई।
कविः-फिर-फिर, अंगद कह-सब पाहीं * "भयो मरन, कछु संसय नाहीं॥
अंगद-बचन सुनत कपि-बीरा * बोलि न सकहिं, नैन,भरि नीरा।
कहत, "बिना, सीता-सुधि, पाये * कह करिहैं, अंगद ! घर,जाये" ॥
अस कहि, सिंधु - किनारे जाई * बैठे कपि,सब, कुसा बिछाई।
जामवंत, अंगद - दुख, देखी * कही कथा, उपदेस-बिसेषी॥
जामवंतः-तात!रामकहँ,नर, मतजानहु * निर्गुन, अजय, अजन्मा, मानहु।
तिन-कर-सेवक, हम बढ़-भागी * सगुन-ब्रह्म के,नित, अनुरागी॥
दोहाः—निज-इच्छा, प्रभु अवतरेउ, सुर, ब्रह्मण, गौ हेत।
२७. सगुन उपासक, संग रहि, मोक्षहु-सुख, तजि देत॥
यह विधि,कथा,कहत,बहु भांती * गिरि-की-गुफा सुना, "संपाती"।
हुइ बाहिर, देखा, 'संपाती' * समुझा, बानर, रोटी-ताती॥
संपातीः आज,सभन कहँ,भोजन करऊं * बिन-खाये, बहु दिन भे, मरऊं।
कबहुं न मिलि, भरि-पेट-अहारा * भेजा, आज, राम, यकबारा॥
कविः-डरप 'गृध्य'-बचन, सुनि,काना *"अब,भा मरन,सत्य,हम जाना"।
देखि गृध्य, भे कपि सब ठाढ़े * जामवंत-मन,सोच, अति,बाढ़े॥
अंगदःकह,'अंगद',विचारि,मन माहीं *धन्य, 'जटायू'-सम, कोउ, नाहीं।
राम-काज-कारन, तन त्यागी * हरि-पुर, गयो,रहा बढ़-भागी !॥
कविःहर्ष-सोक-सानी, सुनि बानी * आवा,निकट,कपिन, भय मानी।
डर छुटाय, तिन्ह, पूँछा, जाई * कथा,सकल,कपि,ताहि, सुनाई॥
सुनि, 'संपाती', भाई-करनी * रघुपति-महिमा,बहु-बिधि-बरनी॥
दोहाः—चलहु, मोंहि,लै, सिंधु-तट, देहुं, तिलांजलि, ताहि।
२८. देहुं सहारा, बचन ते, पैहो, खोजहु जाहि॥
कविःअनुज-क्रिया करि,सागर-तीरा *कहिनिज-कथा,"सुनहु,बल-बीरा!",

संपातीःज्वानी महँ, हम, दोऊ-भाई * चले, सूर्य-तट, पंख, उड़ाई ॥
लागि तेज, भाई, घर आवा * मैं, आगे कहँ, पंख बढ़ावा ।
जरे, पंख, सब, तेज के मारे * धरती, गिरा, आइ, हिय-हारे ॥
नाम 'चंद्रमा', मुनि, इक, आवा * लागि दया, मोहिं कंठ लगावा ।
बहु प्रकार, मोहिं, ज्ञान सिखावा * तन-उपजा-अभिमान छुटावा ॥
कह, "त्रेता-जुग, प्रभु तन धरिहैं * तासु-नारि, लंका-पति हरिहैं" ।
"खोजन, राम, पठइहैं दूता * मिले, तिनहिं, तू, होइ पुनीता" ॥
"जमिहैं पंख, करहु ना चिंता * दीन्हेउ, तिनहिं, दिखाइ, तु, सीता ।
मुनि के बचन, सत्य भे, आजू * सुनि मम-बचन, करहु, प्रभु-काजू ॥
'गिरि-त्रकूट'-ऊपर, बसे लंका * फिरत, तहां, रावन कर, डंका ।
तहां, 'अशोक-वाटिका' माहीं * सिया-मात, दिन-रैन, बिताहीं ॥

दोहाः—मैं देखत, तुम ना लखत, मोरी दृष्टि अपार ।
२९ भयों बूढ़, नहिं, आज, मैं, होत सहाय, तुम्हार ॥

सौ-जोजन, लांघइ जो सागर ! * करहिं, मो, राम-काज, मति-आगर ! ।
मोहिं-निहारि, धरहु, तुम, धीरा * राम-कृपा, कस, भयो सरीरा ! ॥
पापिहु, जेहि कर, सुमिरन करई * भव-सागर ते, निश्चय, तरई ।
तिन-कर-दूत ! तजहु कदराई * राम, हृदय धरि, करहु उपाई ॥
कविः-अस कहि, गृध्य, उड़ा, घर गयेऊ * सोचत मन, कपि, चिंता भयेऊ ।
आपन-बल, सब कपिन, सुनावा * पार जान, कोउ, कीन्ह न, दावा ॥
जामवंतः–जामवंत कह, गयों बुढ़ाई * बल नाहिं, तन महँ, तनिकहु, भाई ।
'बामन-रूप', लियो अवतारा * तब, बल मोरा, रहा अपारा ॥

दोहाः—राजा - 'बलि' - बाँधत-समय, प्रभु, तन, दीन्ह बढ़ाय ।
३०. सात प्रक्रमा, कीन्ह मैं, दुइ ही घरी मा, जाय ॥

अंगदः–अंगद कहा, जाउँ मैं, पारा * सकुचत जिय, कछु, लौटत बारा ।
जामवंतः–जामवंत कह, तुम सब-लायक * कस भेजउँ, तुम सब-कर-नायक ॥
जामवंत कह, सुनु, हनुमाना ! * चुप साधे, काहे, बलवाना ! ।

पवन - पुत्र, बल, पवन-समाना * बुधि,बल, दोऊ कर अस्थाना ! ॥
को,अस,काज, कठिन, जगमाहीं * तात ! होइ नहिं, जो, तुम पाहीं ।
राम - काज-हित, तुम-अवतारा * सुनि,कपि-तन भा,मनहु,पहारा ॥
तन, सोने - सा - तेज, विराजा * जनु,सुमेरु,सब गिरिन-क-राजा ।
हनुमानः-गरजि, सिंह-सम,बारंबारा * खेलहिं, लाँघउं, सिंधु-अपारा ॥
सैन-सहित, 'लंका-पति', मारी * लाउँ, यहाँ, 'त्रिकूट', उखारी ।
जामवंत ! मैं, पूँछहुँ, तोही * उचित सिखावन, देहु, मोही ॥
जामवंतः—इतना करेउ, तात!तुम,जाई * सीतहिं,देखि,कहेउ, सुधि,आई ।
तब, अपने-भुज-बल रघुनाथा * करिहैं,कौतुक, लइ कपि, साथा ॥

छंदः—सँग, सैन लै, और, मारि निसिचर, राम, सीतहिं, आनि हैं ।
सब, देव, मुनि, यह सुजस पावन, गाय, गाय,बखानि हैं ॥
कविः—यह सुजस, गावत, कहत, समुझत, परम-पद, नर पावहीं ।
सो, राम-पद-महँ-लीन, तुलसी-दास, मुख ते, गावहीं ॥

दोहाः—यह जस, भव कर औषधी,सुनिहैं, जे नर, नारि ।
तिन कर, मन की कामना करहि सिद्ध, करतार ॥

सो०ः—नीलम-सम, तन, स्याम, कोटि काम, लज्जित करत ।
तिन के गुन, सुनु, कान, जासु नाम, पापहिं हरत ॥

* श्री *

सुन्दर-काण्ड

मंगलाचरन

सो०ः—१. पाप, न, जेहि प्रमान, सांति, मोक्ष, जे, देत, दोउ ।
सेष, हरि, हर समान, जानत वेदान्ती, जिनहिं ॥
२. राजन्ह, सुन्दर, राम, व्यापक - ईश्वर, धरे-तन ।
अति दयालु, प्रनाम ! देव-गुरू, रघुबंस - मनि ॥
३. हे रघुनाथा, राम ! जानत, अंतरजामि, सब ।
हरहु मोह, मद, काम, देहु भक्ति, नहिं-कछु-चहत ॥
४. अतुलित-बल-अस्थान ! गिरि-'सुमेरु'-सम-तन धरे ।
जारत, अग्नि - समान, राक्षस - बन, ज्ञानी-बड़े ॥
५. सकल-गुनन-कर-खानि, बानर-कटक-के - सिरवरा ।
राम-दूत, हनुमान ! नामः'पवन-सुत', नवत मैं !! ॥

कविः—'जामवंत' के वचन-सुहाये * सुनि,हनुमान-हृदय, अति भाये ।
हनुमानः { सह दुख, कंद-मूल, फल खाई * तब लगि, मोहिं, परखियो, भाई ॥
जब लगि,आवहुँ,सीतहिं देखी * होय कार्य, मोहिं, हर्ष-विसेषी ।
कविः-असकहि,नाय,सभन कहँ,माथा * 'हनुमत'चला,सुमिरि रघुनाथा ॥
सिंधु-तीर, इक परबत रहेऊ * सहजहिं, कूदि,ताहि,चढ़ गयेऊ ।
बार - बार, सुमिरा रघुवीरा * गर्जा, कूदा, अति बल-वीरा ॥
जेहि परवत कहँ, लात लगाये * सोई, धसकि, पतालहिं, जाये ।
राम-बान, जस, पवन - समाना * ताही भांति, चला, हनुमाना ॥
सिंधुः—कहा, सिंधु,यह रघुबर-भेजा * श्रम, "मैनाक"!-हरहु,यह केरा ।
कविः—दोहाः—छुआ बदन, तेहि-दूत-कर, कीन्हा, दूत, प्रनाम ! ।
२. "राम-काज-कीन्हे - विना", कहा, 'कहाँ, विश्राम" !! ॥
करन, चला, कपि, रघुबर-सेवा * बल,बुधि,देखि,तृप्ति नहिं, देवा ।
'सुरसाः' नाम, सर्प-की-माता * भेजा, देवन, कहि आ, बाता ॥
सुरसाः—भोजन, देव, दीन्ह, पठवाई ! * चातुर-कपि, सुनि, बात बनाई ।
हनूमानःराम-काजकरि,फिरि,मैंआवहुँ* सीता कर सुधि,प्रभुहिंसुनावहुँ ॥
तोरे मुख, तब, पैठउं, आई * कहउं सत्य, मोहिं,जान दे,माई! ।
कविः-कौनेहु जतन, देहि नहिं जाना * "पकरु न,मोहिं" कहा,हनुमाना॥
जोजन-भर, मुख, दीन्ह पसारा * दुगुन-देह, करि,'पवन-कुमारा' ।
सोरह - जोजन, यह, मुख करेऊ * बत्तिस-जोजन,कपि,तन,धरेऊ ॥
जस-जस, 'सुरसा', बदन बढ़ावा * तासु-दून, कपि, रूप, दिखावा ।
सौ-जोजन, जब, 'सुरसा' कीन्हा *कपि,अति-छोटा-तन,करि लीन्हा॥
पैठा, मुख मां, बाहिर, आवा * बिदा मांगि,'सुरसहिं'सिर नावा।
सुरसाः-जेहि कारन,मोहिं,देव,पठावा * बुधि, बल मर्म, तोर, मैं पावा ॥
कविः—दोहाः—"राम-काज, तुम ते, बनइ, तुम, बल - बुधि-अस्थान" ।
३. दै असीस, 'सुरसा' गई, हर्षि, चला, हनुमान ॥
निसिचर, एक, सिंधु मां, रहई * पत्नी, उड़त, अकास-के, गहई ।

जेहि पच्छी, आकास, उड़ाहीं ❋ जल-बिच,लखि,तिनकर,परिछाईं ॥
पकरे छाँह, उड़ा, नहिं जाई ❋ जल महँ, गिरत, लेत, सो खाई ।
सोइ-छल,'हनूमान' सन, कीन्हा ❋ कपट,चतुर-कपि,तुरतहि चीन्हा ॥
ताहि, मारि कर, पवन-कुमारा ❋ भा, मति-धीर, सिंधु-के - पारा ।
तहां, पहुंचि, देखी बन - सोभा ❋ गूँजत भँवरा, मधु-के-लोभा ॥
वृच्छ-बहुत, फल, फूल, सुहाये ❋ देखत मृग, पच्छी, मन-भाये ।
सुन्दर परबत, देखा, आगे ❋ तेहि पर चढ़ा,जाय,भय-त्यागे ॥
यह, कछु, कपि की, नहीं बड़ाई ❋ राम-के-बल, कालहु, ले खाई ।
चढ़ि, गिरि पर, कपि, लंका, देखी ❋ मारइ,को,यह-किला-कि-सेखी ! ॥
अति ऊँची, सागर वहि पासा ❋ कनक-किला,करि रहा प्रकासा ।

छंद—हैं, मनि - जड़े, सोने - के - घर, बहुतेरे, लंका मां, घने ।
है, हाट, चारहु - ओर, सुन्दर, बाट हैं, बहु - विधि, बने ॥
रथ, हाथि, घोरा, और, खच्चर, तिनकी गिनती, को गिनै ।
बलवान, नाना-रूप, निसिचर - सैन, नहिं, बरनत बनै ॥

छंदः—बन, बाग, कुइं, औ, तलाउ, सुन्दर, बाटिका, तहँ, सोहहीं ।
नर - नाग - सुर - गंधर्व - कन्या, देखि, मुनि - मन मोहहीं ॥
कहुँ, पहिलवानहु, बड़े, सैल - समान, बल ते, गर्जहीं ।
आ, आ, अखारन, भिरत, बहु-विधि, एक, एकन, तर्जहीं ॥

छंदः—करि जतन, कोटिन, विकट-जोधा, मिलि, नगर कहँ, रक्षहीं ।
कहुँ, मांस - बकरी - गाय - भैंस - मनुष्य, निसिचर भक्षहीं ॥
यह बात ते, 'तुलसी', कथा, इन कर, बहुत-थोरी, कही ।
मरि, राम-बान ते, एक दिन, येह, राम-गति, पैहहिं, सही ॥

दोहाः—पुर-रखवारे, देखि कर, कपि, मन, कीन्ह विचार ।
४. छोट-रूप-धरि, रात मँह, पैठहुं, नगर-मँझार ॥

चला, धरे, मच्छर-कर-बाना ❋ सुमिरि राम, लंका, हनुमाना ।
लंकिनीः-कहा, 'लंकिनी', जोरा-जोरी ❋ चला, कहां ! करि निंदा मोरी ! ॥

जानत नहिं, शठ ! मर्म-हमारा ! * लंक - चोर है मोर - अहारा ! ।
कविः तब, कपि, इक घूँसा, तेहि, मारा * थूकि लोहु, गिरी, खाइ पछारा ॥
उठि, फिर, आपन देह, सँभारी * कीन्ह विनय, मन, संका, भारी ।
लंकिनीः-ब्रह्मा, रावन कहँ, बर दीन्हा * चलत, कहा, तब, मो का चीन्हा ॥
"विकल होय, जब, तू, कपि मारे * तब, जानेउः "निसिचर-सँहारे" ।
मोरा, पुण्य-प्रभाउ बहूता ! * देखा, आँखिन, रघुबर-दूता ! ॥
दोहाः—मोक्ष, और, बैकुंठ सुख, जोरे, तौलहु, लाय ।
५. सत-संगत-सुख, इक-घरी, दोउ सुख-ते, गरुआय ॥
नगर, पैठि, कीजै, सब काजा * राखि, हृदय, कोसलपुर-राजा ।
{ ज्यावइ, विष, रिपु, करइ मिताई * मीठ, सिंधु-जल, अग्नि, जुड़ाई ॥
राई-सम, परबत हलकाई * राम, कृपा-करि, चितवहिं जाई ।
कविः-रूप, छोट-अति, धरि, हनुमाना * पैठा, नगर, सुमिरि भगवाना ॥
इक-इक-मन्दिर, देखा, जाई * जहँ-तहँ, जोधा, परे, दिखाई ।
पैठा, रावन-मन्दिर माहीं * अति सुन्दर, कहि जात, सो, नाहीं ॥
सोवत, रावन, परा दिखाई * रही, तहां, नहिं, जानकी-माई ।
भुवन, एक, फिर, दीख, सुहावा * हरि-मन्दिर, तहँ, अलग, बनावा ॥
दोहाः—राम, लिखे, धनु-बान-लिये, देखा, कपि, तहँ, जाय ।
६. तुलसी-बिरवा, देखि कर, सोचत, कपि, हर्षाय ॥
हनुमानः-लंका, निसिचर-केर-निवासा * इहां, कहां ! सज्जन-कर-वासा ।
कविः-मन महँ, सोच, करन, अस, लागा * तेही-समय, 'विभीषन' जागा ॥
राम-नाम, उठि, सुमिरन कीन्हा * हर्षा, कपि, सज्जन कहँ चीन्हा ।
हनुमानः-याही सन, करिहौं पहिचानी * साधु ते, होय न, कारज-हानी ॥
कविः-विप्र-रूप धरि, बचन सुनावा * सुनत, विभीषन, उठि, तहँ, आवा ।
विभीषनः-करि प्रनाम, पूछी कुसलाई * कहहु, विप्र ! निज-कथा, सुनाई ॥
कह, तुम, हरि-दासन मां, कोई ? * मोरे हृदय, प्रीति अति होई ! ।
कह, तुम, राम-दीन-अनुरागी ? * आये, करन, मोंहि, बड़-भागी ! ॥

कविः—दोहाः—कही, कथा, हनुमान, सब, आपन-नाम, बताय।
७. सुमिरि राम-गुन, मग्न-मन, तन, फूला-न-समाय॥

विभीषनःसुनहु,पवन सुत,रहनि हमारी * जस दांतन महँ, जीभ, बिचारी।
कबहुं,तात! मोहिं,जानि अनाथा * करिहैं, कृपा. सूर्य-कुल-नाथा?॥
तामस-तन, कछु साधन, नाहीं * राम भक्ति हू, ना, मन माहीं।
भा भरोस,अब,मोंहि, हनुमंता! *बिनु हरि-कृपा,मिलत नहिं,संता!॥
कृपा, राम, जब, मो पर कीन्हा * तुमहूं, आय, दर्स, मोहिं, दीन्हा।
हनुमानःसुनहु,विभीषन!प्रभु की रीती * करहिं, सदा, सेवक पर, प्रीती॥
कहउ, भला! मैं, कौन कुलीना * चंचल कपि,सब-विधि,मैं,हीना!।
भोर, लेहि, जो, नाम हमारा * मिलइ न,दिन-भरि,ताहि,अहारा॥

दोहाः—सुनहु, सखा! अस-नीच, मैं, कृपा कीन्ह, रघुवीर।
८. कविः— जानि, कृपालु, राम, अस, नैनन, छायो नीर॥

अस स्वामी,जो, जानि, बिसारी * काहे न, सो नर, होय दुखारी।
यह विधि,कहत राम-गुन-ग्रामा * पावा, कह-न-जाय, बिस्रामा॥
फिर, सब कथा, विभीषन गाई * जेहि विधि, जहां, जानकी-माई।
तब,हनुमान कहाः"सुनु,भ्राता! * देखा चहउं, जानकी-माता"॥
जुक्ति, विभीषन, सकल, बताई * चला पवन-सुत, बिदा कराई।
तेही विधि, पहुँचा हनुमाना * बन-'असोक',सीतहिं पहिचाना॥
देखि, मनहि-मन, कीन्ह प्रनामा * बीतत राती, सुमिरत रामा।
लट-उरझे, औ, सूखि सरीरा * जपत, बैठ, गुन-गुन-रघुबीरा॥

दोहाः—नीचे-डारे-नैन, मन, राम-चरन-महँ-लीन।
९. बहुत दुखी भा, पवन-सुत, देखि जानकी, दीन॥

पेंड़ के पातिन, रहा लुकाई * करत विचार,"करहुँ का,भाई!"।
तेहि अवसर, रावन तहँ, आवा * संग नारि, बहु-किये-बनावा॥
खल,बहु विधि,सीतहिं,समुझावा * साम, दाम, भय, भेद, दिखावा।

रावनः { कहत, चंद्र-मुख! सुनहु, सयानी * 'मंदोदरी'-सहित, जो रानी ॥
चेरी, करउं, तोर, प्रन मोरा * एक-बार, देखहु, मम-ओरा ! ।
सीताः—तिनका - ओट, कहत, बैदेही * सुमिरु अवधपति, परम सनेही ॥
खिलत कमल, कहुं! जुगनू चमके * रे, शठ! जब लगि, सूर्य न दमके ।
अस, मन सुमुभुतु, कहत जानकी * कह! खल! सुधि, नहिं, राम-बानकी॥
सूने, शठ ! हरि लायो, मोहीं * अधम ! लाज नाहिं आवत, तोही ।
कविः—दोहाः—जुगनू-सम, सुनि, आप कहँ, रामहिं, सूर्य - समान ।
१०. लीन्ह खींचि, तरवार, सुनि, निंदा, अति खिसियान ॥
रावनः-सीता ! कीन्ह, मोर-अपमाना * यह तरवार, हतौं सिर, जाना ! ।
मानुँ, शीघ्र, नहिं, मोरी बानी ! * बिन - माने, है जीवन - हानी ! ॥
सीताः { स्याम कमल-माला-समसुन्दर * प्रभु-भुज, सूंड-सी, रे, दसकंधर ! ।
जायं, कट, तरवार, कि, घोरा * सुनु, शठ! पेम्न अटल प्रनमोरा! ॥
'चंद्रहास' ! हरु दुःख हमारा ! * राम-बिरह-अग्नी, तन, जारा ! ।
सीतल, चांदनी-रैन-सी धारा ! * हरहु, आय, सब दुःख हमारा !॥
कविः—सुनत बचन, मारन, उठि, धावा * 'मंदोदरी', नीति समुझावा ।
रावनः—कहा, सकल निसिचरी, बुलाई * डरपावहु, सीतहिं, सब जाई !॥
मास - एक, जो, कहा, न माना * यह तरवार, कटा, सिर, जाना ।
कविः—दोहाः—अस कहि, रावन, घर गयो, निसिचरि, झुंड - के - झुंड ।
११. आ, सीतहिं, डरपावती, धरे - रूप - प्रचंड ॥
'त्रिजटा', राच्छसी, एक, सयानी * राम-चरन - सेवक, अति ज्ञानी ।
त्रिजटाः—कहा, दीख, मैं, रातहिं, सपना * सीतहिं सेइ, होय हित अपना ॥
बानर, सपने, लंका, जारी * निसिचर-सैन गई, सब, मारी ।
{ चढ़े गधा, नँगे, दस - सीसा * मूडा - सिर, टूटी - भुज - बीसा ॥
यह विधि, रावन, दच्छिन, गयेऊ * लंका - राज, बिभीषन, भयेऊ ।
फिरी, नगर, रघुबीर - दोहाई * लीन्ह, राम, सीतहिं बुलवाई ॥
यह सपना, मैं कहत, पुकारी ! * हुइ है सत्त्य, गये - दिन - चारी ।

कविः-सुनतवचन,निसिचरि भयपावा॥ जनक-सुता-चरनन, सिर नावा ॥

दोहाः—उठि, उठि, आपन-घर, गईं, सीता के मन सोच।

१२. "निश्चय, बीते मास, मोहिं, मारहि, रावन - पोच" ॥

सीताः-त्रिजटा सन बोली,कर जोरी ❋ मातु ! विपति-महँ,संगिन-मोरी!।

तजहुँ देह, तुम करहु उपाई ! ❋ विरह-दुःख, अब, सहा न जाई ॥

ला लकरी, रचि, चिता बनावहु ❋ लाय अग्नि, तुम,चिता, पजारहु ।

करउ सोइ, जो, मैं. मन, ठानी ❋ अब, ना सुनब, सूल-सी-बानी !॥

कविः-सुनि,त्रिजटा,सीतहिं,समुझावा❋ बल, जस, राम प्रताप, बतावा ।

'अग्नी, मिलइ न, रातहिं,प्यारी!' ❋ कहिअस,आपन भुवन, सिधारी॥

सीताःविधिना!मोंहि,सबहिविधि,भूला!❋मिलत न अग्नि,मिटत ना,सूला !।

चमकत, कस ! अकास,अंगारा ! ❋ गिरत न, धरती, एकहु तारा !॥

अरे, न देत, चंद्र, चिनगारी ! ❋ जानि मोंहि, विरहा-की-मारी ! ।

तुम 'असोक' ही!दया बिचारहु! ❋ हरहु सोक,जस,नाम तुम्हारहु ॥

कोंपल - नई, लगत, अँगारा ! ❋ डारि सोइ, दुख, हरहु, हमारा! ।

कविः-देखि, बहुत-विरहाकुल, सीता ❋ इक पल, कपिहिं,कल्प-सा,बीता ॥

सो०ः—करि, कपि, हृदय, विचार, दीन्ह, अँगूठी, डारि, तब ।

१३. जाना, मिला अँगार, उठि, हर्षित, तेहि का. गहेउ ॥

देखी, तब, मुंद्रिका, मनोहर ❋ खुदाः 'राम' देखा, तेहि-ऊपर ।

देखत, चक्कर - मां, अकुलानी ❋ हर्ष, सोच, दोऊ, उर, जानी ॥

सीताः-सकत न जीति,कोउ, रघुराई ❋ माया ते, अस, रची न जाई ।

कवि -करत, विचार,सीय,अस,नाना ❋ मधुर-बचन, बोला, हनुमाना ॥

राम - चंद्र - गुन, बरनन लागा ❋ सुनतहिं, सीता कर दुख भागा ।

दीन्ह, कान, मन, दोउ, लगाई ❋ कपि, सब कथा, आदि ते,गाई ॥

सीताः-अमरित-सी,जेहि कथा सुनाई ❋ काहे न आवत आगे, भाई ! ।

कविः-तब, हनुमंत,सिय ढिग, गयेऊ ❋ फेरा मुख, मन, संका भयेऊ ॥

हनूमानः-राम-दूत, मैं,मात,जानकी ! ❋ सांचु!कसम-करुना-निधानकी ! ।

लावा, मैं, मुँदरी, महतारी ! * दीन्ह, राम, तुम-हेत, चिन्हारी ! ॥
सीताः—नर-बानर-का-सँग, भा, कैसे ? * कही कथा, कपि, सँग भा, जैसे ।
कविः—दोहाः— प्रेम-सहित, सुनि कपि-बचन, आवा, मन, बिस्वास ।
१४. जाना, मन - क्रम - वचन-ते, है, कपि, रामहिं - दास ॥
जानि राम-जन, नेह बढ़ावा * पुलकेउ तन, नैनन, जल छावा ।
सीताः—विरह-सिंधु-मां, डूबत, ताता ! * आवा, तू, नौका-सम, भ्राता ! ॥
मैं बलिहार ! कहउ कुसलाई * कुसल तौ हैं ? कपि ! दोऊ-भाई ।
कोमल-चित, कृपालु, रघुराई * कपि ! केहि हेत, धरी निठुराई ? ॥
राम, स्वभाउ-से-हि, सुख-दाता * करत, मोर सुधि, कबहूं, ताता ? ।
देखि स्याम-मुख, कबहूं, भाई ! * जैहहिं, मोरे नयन, जुड़ाई ? ॥
कविः—रुकी जीभ, नयनन, जल छायो * "अहा ! नाथ ! यकटक, बिसरायो" ! ।
देखा, अस व्याकुल, सीतहिं, जब * कोमल, विनय-वचन, बोला, तब ॥
हनुमानः मात ! कुसल अति, दोऊ-भाई * इक, तुम्हार-दुख-ही, दुख-दाई ।
मन महँ, करहु न, मात ! गलानी * राम - प्रेम, दूना, महरानी ! ॥
दोहाः—"रघुपति केर सँदेस, अब, सुनु, माता ! धरि धीर" ।
१५. कविः—बोला, कपि, हिलकी - भरे, लाये, लोचन, नीर ॥
हनुमानः—तुम्हरे-विरह, कहा, रघुराई * "सब जग, टेढ़ा, परत, दिखाई" ! ।
"कोंपल-नई, अग्नि-सी, लागत * रैन, काल-सी, चन्द्र, जरावत ! ॥
"खिला-कमल, कांटा, जनु, लागत * बादर, तात - तेल, बरसावत ! ।
"वृक्ष - छांह, बैठे, तन - पीरा * सर्प-सांस सी, बहत समीरा ! ॥
"कहे ते, दुख, कछु कम, तौ होई * केहि ते, कहौं, न जानत, कोई ! ।
"भेद, प्रेम - कर, मोरा - तोरा * जानत, प्रिय ! एक, मन, मोरा ! ॥
"सो - मन, मोरा, तुम्हरे पासा * एती प्रीति, करहु बिस्वासा !" ।
कविः—प्रेम - सँदेस, सुनत, वैदेही * भई मग्न, तन-सुधि-नहिं, तेही ॥
हनुमानकह, कपि हृदय, धीरधरु, माता ! * सुमिरु राम, सेवक-सुख-दाता ।
राखहु, मन, प्रभु की प्रभुता * सुनि मम-बचन, डरहु ना, माई ! ॥

दोहाः—निसिचर - सैन, पतंग - सी, अग्नी, रघुवर - बान ।
१६. माता ! अब, धीरज धरहु, जरे निसाचर, जानु ॥

पहिले, होत, नाथ, सुधि, पाई * करत न, एेस देर, रघुराई ।
राम - बान, जब, सूरज ऐहैं * राक्षस - अंधकार, सब, जैहैं ॥
अबहिं, जाउँ, मैं, तुमहिं लिवाई * पर, ऐसी - आज्ञा, नहिं, माई ।
थोरे दिन, माता ! धरु धीरा * अइहहिं,कपिन-सहित,रघुवीरा ॥
निसिचर-मारि, तुमहिं, लै, जैहहिं * तीन-लोक,सो जस,मुनि गैहहिं ।
सीताः-सब कपि,सुत!तुमहिं-समाना!* यहाँ, निसाचर,अति बलवाना ॥
कविः-संसय-करत,सियहिं,जब,जाना * देह, बढ़ाई, तब, हनुमाना ।
लागा, कनक - पहार, सरीरा * रूप, भयंकर, अति, रन-धीरा ॥
सीता-मन, भरोस, तब, आवा * कपि, फिर, छोटा-रूप, बनावा ।

दोहाः—चींटी-से, कपि, मात ! हम, नहिं, बल, बुद्धि दिखाय! ।
१७. प्रभु-प्रताप-ते, सर्प-लघु, लेत, गरुड़ कहँ, खाय !! ॥

कविः-भा सन्तोष, सुनत कपि-बानी * भक्ति - प्रताप - तेज-बल-सानी ।
दीन्ह असीस, राम-प्रिय, जाना *"होहु,तात!बल-सील-निधाना"! ॥
"अजर,अमर, होवहु सब-लायक * करहिं कृपा,तुमपर रघुनायक!"।
नीक, असीस, ऐस, सुनि काना * डूबा प्रेम, मग्न, हनुमाना ॥
हनुमानः-पाय असीस,तरेउँ,मैं,माता! * तुम्हरा-कहा, वृथा नहिं जाता ।
लागि भूख, अब, रहा न जाई * देखे फल, और, रूख सुहाई ॥
सीताः-रे, कपि!यह बन की रखवारी * करत निसाचर, जोधा-भारी ।
हनुमानः-मन ते, मात!जो,आज्ञा देहू * डर, मोरे मन, नाहीं केहू ॥

कविः- दोहाः—कपि कर बल, बुधि, जान कर, कहा, जानकी "जाहु" ।
१८. "रघुवर-चरन, हृदय, धरि, तात!मधुर-फल खाहु" !! ॥

सिर नवाय, कपि पैठा बागा * खा फल, वृक्षन, तोरन लागा ।
मारे कछु, कछु गे, रखवारे * राज-द्वार, अस, जाय, पुकारे ॥
"आवा, नाथ ! एक कपि,भारी! * तेहि,असोक-वाटिका,उजारी"! ।

"खाये फल, और, वृक्ष उखारे * मींजि, गिराये, सब रखवारे" ॥
पठये, सुनि, रावन, भट-नाना * तिनहिं देखि, गर्जा हनुमाना।
भिरि, कपि, सब निसिचर, सँहारे * कोउ, पुकारत, गे, अध-मारे ॥
पठवा, रावन, 'अक्ष - कुमारा' * कीन्हे, जोधा, संग, अपारा।
आवत देखि, वृक्ष लै, कूदा * मारि, गिरावा, पकहि-हूदा ॥
दोहाः—मारे कछु, कछु, मल दिये, कछुक, मिलाये, धूरि ! ।
१९. कछुक पुकारे, जाय, तब, "वानर, प्रभु ! अति-सूर !!" ॥
सुत-मृतु सुनि, लंकेस रिसाना * पठवा 'मेघनाद', बलवाना।
रावनः—मारेउ, कपि, ना, लाहु बँधाई * देखउँ, कहँ ते, वानर आई ॥
कविः—धावा, मेघनाद, तब, जोधा * भ्रात-मरन सुनि, बाढ़ा-क्रोधा।
देखा जोधा-विकट, जो, आवा * कटकटाय, कपि गर्जा, धावा ॥
लीन्ह, बड़ा, इक वृक्ष, उखारी * तोरे रथ, भुइँ, दीन्ह पछारी।
जोधा रहे, जो, तेहि कर संगा * पकरि तिनहिं, कपि, मींजा अंगा ॥
कीन्हा, मेघनाद पर, धावा * भिरे दोउ, मानहु, गज-राजा।
घूँसा - मारि, वृक्ष, चढ़ गयेऊ * मेघनाद, कछु - मुर्छित भयेऊ।
कीन्हीं, मेघनाद, उठि, माया * तहूँ, कपिहिं, तेहि, जीति, न, पाया ॥
दोहाः—बृह्म-बान, तब, लीन्हेउ, कपि, मन, कीन्ह विचार।
२०. "मानहुं ना, जो, बान, ये, महिमा, घटइ, अपार" ॥
वृह्म-बान, तब, कपि कहँ, मारा * गिरतहु, कपि, बहुतनहिं पछारा।
जानाः "अब, कपि, मुर्छित भयेऊ" * बांधा - नाग-फांस, लै, गयेऊ ॥
{ जासु नाम जपि, मुनि, और, ज्ञानी * तोरत जग-बंधन, चट-सानी।
तासु दूत, बंधन मां, आवा * राम-काज-हित, आपु, बँधावा ॥
"बांधा-कपि," सुनि, निसिचर धाये * जुरे, तमासा देखन, आये।
रावन-सभा, दीख, कपि, जाई * कहि न जात, तेहि कर प्रभुताई ! ॥
जोरे कर, दिगपाल, औ, देवा * करत, ठाढ़, रावन की सेवा।
लखि प्रताप, कपि कीन्ह, न, संका * ज्यों, सांपन-बिच, 'गरुड़' असंका ॥

दोहाः—बुरा बचन,कपि ते,कहा, देखि, हँसा, दस:सीस ।
२१. सुत कर,मरन की,सुधि करे, रहिगा, दांती पीस ॥

रावनः-कपि!तू,कौन?कहां-का-मारा?※ केहि के बल, तू, बाग उजारा? ।
नाम मोर, का? सुना, न, कबहूं ※ लागत निडर,मोहिं, तू,अबहूं ! ॥
मारा,केहि अपराध, निसाचर ? ※ प्रानहु-डर,नहिं,तो का, बानर ! ।
हनूमानः-सुनु,रावन! तेहि-बल,मैं आया※ जेहि बल,रचत बृह्माण्डहिं,माया ॥
जेहि बल, बृह्मा, बिष्णू, शंकर ※ जन्मत,पालत,मारत,निसिचर! ॥
धरे, जासु-बल, 'सेष', सीस पर ※ पूरन-पृथ्वी, बन, परबत, घर ! ।
देवन-हित, अवतार, जो, लेहीं ※ तुम-से-शठन, सिखावन देहीं ! ॥
तोरा कठिन-धनुष, सिव केरा ※ तुम्हरा, राजन-कर, मुहं, फेरा ।
'खर'-'दूषन',त्रिसिरा',और,'बाली'※ मारे,जिन्ह,तीनहुं बल-साली ! ॥

दोहाः—जेहि के, बल के, बूँद ते, जीता, तू, संसार ! ।
२२. रावन ! तिन्ह कर दूत, मैं, हरि लायो, जिन्ह नारि ॥

हौं जानत, तुम्हरी प्रभुताई ! ※ 'सहस्रबाहु' सन, लरे, लराई ! ।
लरि,'बाली'सन, तुम, जस पावा ※ मास चारि-दुइ,कांख,दबावा ! ॥
खाये फल, मोहिं, लागी भूखा ※ कपि-स्वभाउ - ते, तोरे रूखा ।
अपन-देह, तौ, सब कहँ प्यारी ※ का, बानर, का, नर, का, नारी ॥
जिन्ह,मोहिं,मारा,तिन्ह, मैं मारा ※ बाँधहु लाचा, पुत्र तुम्हारा ! ।
मोहिं, न, कछु, बांधे की लाजा ※ करन चहउं, स्वामी कर काजा !॥
करौं, जोरि कर, बिनती,रावन ! ※ सुनहु,मान तजि,मोर-सिखावन ।
भे, दादा, कह, बाप, तुम्हारे ! ※ भजहु राम, भगतन - रखवारे ॥
जेहिके बल ते, 'काल' डरावे ※ जो, सुर-असुर-चराचर, खावे ।
तेहि सन, बैर, कबहुं, ना कीजै ※ मोरे - कहे, जानकी, दीजै ॥

दोहाः—दया - सिंधु, रघुबंस-मनि, राक्षस - मारन - हार ।
२३. गये, सरन, पालहिं, प्रभू, छमहिं तोहि, सरकार ॥

चरन - कमल, हृदय मां, धरहू ※ अचल-राज-लंका, फिर, करहू ।

रिषिः 'पुलस्त्य'-जस,चंद्र-समाना * बनहु, कलंक,न,तुम,नादाना ! ॥
राम-नाम - बिनु, बानी, न सोहा * देखु,विचारि,त्यागि मद, मोहा ।
भूषन-सजी, न लागत प्यारी * बिना-वस्त्र-की, नारि, उघारी ॥
संपति, पाई, और, न - पाई * राम-ते-लरे, वृथा है, भाई ! ।
जल-दाता, जिन नदियन, नाहीं * गये बर्षा, सूखहिं, छुन माहीं ॥
रावन ! सुनहु, कहउं, प्रन-रोपा * रूठि राम, को राखइ,तो का ! ।
सौ-संकर, सौ-बृह्मा केरी * गति नहिं,राखइं,रघुबर-बैरी ! ॥
दोहाः—दुखदाई, और, मोह-जर, त्यागहु, सो, अभिमान ।
२४. भजु, रावन ! तू, राम, जो, कृपासिंधु, भगवान ॥
कविः-सुने, ज्ञान-और-हित-की-बानी * भक्ति, विराग, नीति की सानी ।
हँसि, बोला रावन-अभिमानी *"मिला गुरू,मोका,अति-ज्ञानी"!॥
रावनःघेरा, काल, लगत, आ. तो का * आवा, सवक सिखावन, मो का ।
हनुमानः-बिगरी मति, तोरी, मैं जाना * उलटा होइ, कहा, हनुमाना ॥
रावनः-सुनि कपि-वचन,रूहत,खिसिआना*लेहु,निकासिन,शठकरप्राना! ।
सुनत, निसाचर, मारन, धाये * मंत्रिन-सहित, 'बिभीषन'आये ॥
विभीषनः-विनती मोरि,भाइ!मन,धरिये* दूतहिं मारि, अनीति न करिये ।
और-सजा,कछु,यह कहँ, दीजइ ! *कहा.सभा,"हां!अस ही,कीजइ" ॥
रावनः-सुनत वचन, बोला दस-कंधर * अंग-भंग करि, पठवहु बंदर ! ।
दोहाः—प्यारी, कपि कहं. पूंछि,अति, कहा, सबहिं समुझाय ।
२५. बोरि, तेल, पट बांधि कर, अग्नी, देहु लगाय ॥
बिना-पूँछि. कपि, जब, घर जैहै * तब, शठ, आपन-नाथहिं, लैहै ।
एती, जिन्ह कर, कीन्ह बड़ाई * मइं देखउं,तिन्ह कर, प्रभुताई !॥
कविः-सुनि, मन,मुसुकावा हनुमाना * भइ प्रसन्न, देवी, कपि जाना ।
मूर्ख-निसाचर, सुनि अस-वचना * लागे करन, पूंछि की रचना ॥
पूंछि बढ़ाई, करि, कपि, खेला * रहा न बस्त्र, नगर, ना तेला ।
सुने तमासा, सब चलि आवैं * करहिं हंसी, कपि,लात लगावैं ॥

बाजत ढोल, देत, सब, तारी ❋ पुर, घुमाइ, दइ पूंछि पजारी।
अग्नि, जरत दीख, हनुमंता ❋ छोट-रूप, करि लीन्ह, तुरंता॥
कूदि, चढ़ेउ कपि, कनक-अटारी ❋ देखि, डरानी, निसिचर-नारी।

दोहाः—हरि के हुकुम ते, तेहि समय, चलीं, पवन - उनचास।
२६. मारि कहिकहा, गरजि,कपि, जाय, लगेउ. आकास॥

बढ़ी देह, गइ, अति हलकाई ❋ मन्दिर-ते - मन्दिर, चढ़, जाई।
जरत नगर, भे लोग बेहाला ❋ लपट भयंकर, छांड़त, ज्वाला॥
"तात ! मात ! हा!" परी पुकारा ❋ "अब,को,हमहिं,बचावन-हारा"!।
"हम,तौ,कहा,कि कपि नहिं होई ❋ वानर-रूप-धरे, सुर, कोई ! ॥
साधु-निरादर कर फल ऐसा ❋ जरा नगर, बिन-नाथ-क, जैसा।
भस्म, नगर भा, इक पल माहीं ❋ जरा, विभीषन कर घर,नाहीं !॥
तासु भक्त, जेहि, अग्नि, रचाई ❋ जरा न, सो घर,तासों,भाई ! ।
उलटि, पलटि, लंका, सब जारी ❋ कूदि परा,फिर, सिंधु-मँझारी॥

दोहाः—सुख ते, पूँछि बुझाय, तब, धरि लघु-रूप, बहोरि।
२७. खोइ थकन, सिय-सामने, ठाढ़ भयो, कर जोरि॥

हनूमानः-मात!कछू,मोहिं,दीजै चीन्हा ❋ जैस, अँगूठी, रघुवर दीन्हा।
कविः—कँगन,इक,उतारि, सिय दीन्हा ❋ अति आनन्द,पवन-सुत लीन्हा॥
सीताः—कहेउ,तात! अस,मोर प्रनामा ❋ सब-प्रकार, प्रभु, पूरन-कामा।
दीनदयालु, तुम्हरा नामा ❋ हरहु, वेग, आ संकट, रामा ! ॥
कथा-'जयंत' सुनायहु, जाई ❋ दीन्हेउ, बान-प्रताप, जताई।
एक-मास, जो, और न ऐहहिं ❋ सीतहिं,कहेउ,जिअत,नहिंपैहहिं॥
अब,कपि!राखउं, केहिविधि,प्राना ❋ तुमहु, लगाये "जाना-जाना"।
थी, तुम · देखे, सीतल छाती ❋ तुम-गये.फिर,बुहि दिन,बुहिराती॥

कविः-दोहाः—जनक-सुतहिं. समुझाय करि, बहु विधि, धीरज दीन्ह।
२८. चरन-कमल, सिर नाय, कपि, गवन, राम पंह, कीन्ह॥

गर्जत, चला, पवन - सुत, भारी ❋ गिरत गर्भ,सुनि,निसिचर-नारी।

लांघि सिंधु, एहि पारहिं, आवा ✻ कलकलाइ कर, शब्द सुनावा ॥
हर्षे, सब, बिलोकि हनुमाना ✻ नया-जन्म, सब, आपुन, जाना ।
मुख प्रसन्न, तन, तेज बिराजा ✻ कीन्हा राम - चंद्र-कर-काजा ॥
धाय, मिले, कपि, भये सुखारी ✻ जनु, जल पावा, मीन बिचारी ।
चले, हरषि, उठि, जहं रघुनाथा ✻ कहत, सुनत, लंका की बाता ॥
तब, 'मधुबन' मँह,सब कपि आये ✻ अंगद-सहित, मधुर फल,खाये ।
रखवारे, जब, हटकन लागे ✻ लागे - घूंसा, सब, डरि, भागे ॥

दोहाः—जाय, कहा, सुग्रीव ते, "नासा 'वन', युवराज" ।
२९. तिन जाना, हंपाइ, "कपि, करि आये, प्रभु - काज" ॥

सुग्रीवः—जो,न,होत, सीता-सुधि, पाई ✻ सकत, कौन,मधुवन-फल खाई!।
करत, विचार, रहे, कपि-राजा ✻ आ पहुँचा,सब कपिन-समाजा ॥
सुग्रीवहिं, सब, माथ, नवावा ✻ तेहि,सबकहँ, निज-कंठ, लगावा ।
पूँछी कुसल, कहाः "पद-पाये" ✻ सीता,सुधि?बोलेः "लइ आये"!॥
वानरः—कीन्हा काज,नाथ ! हनुमाना ✻ राखे सकल कपिन कर प्राना ! ।
कविःसुनि,'कपीस','हनुमत',फिरि,मिलेऊ✻कपिन-सहित,रघुवरपहँगयेऊ॥
राम, कपिन्ह, जब, आवत, देखा ✻ भयो काज, मन, हर्ष-विसेखा ।
फटिक - सिला, बैठे, दोउ-भाई ✻ परे,सकल कपि, चरनन, जाई ॥

दोहाः—प्रीति-सहित, सब कहँ,मिले, रघुवर, कृपा - निधान ! ।
३०. 'पूँछिकुसल,कहः"सब कुसल, देखि चरन भगवान" !! ॥

जामवंत { 'जामवंत' कह,सुनु,रघुराया! ✻ करत,नाथ ! जेहि पर,तुम,दाया ।
से नर, सदा,कुसल,प्रभु!रहई ✻सुर,नर,मुनि,नित,तिन कहँ चहई॥ }
सोई विजय - विनय-गुन-सागर ✻ तिनहिन-जस,तिहुं-लोक,उजागर ।
प्रभु की कृपा, भयो सब काजा ✻ जनम हमार,सफल भा आजा! ॥
नाथ ! पवन-सुत केरी करनी ✻ सौ-हजार-मुख, जात न बरनी ! ।
कविः—तब, हनुमत के चरित,सुहाये ✻ जामवंत; रघुपतिहिं, सुनाये ॥
सुनत,कृपा निधि,मन,अति भाये ✻ हरषि, पवन-सुत, कंठ, लगाये ।

रामःकहउ,तात! केहि भांति,जानकी? * करती रक्षा रहत प्रान की ? ॥
हनूमानः-दोहाः—लोचन, पद-महँ-लागि, भये, सांकर, ध्यान, किवाड़ ! ।
३१. नाम-की चौकी, रात-दिन, सकइ, प्रान, को, काढ़ि !! ॥
कंगन, चलत, चिन्हारी दीन्हीं * रघुपति,हृदय,लाय,सो, लीन्हीं ।
भरि, लोचन, आंसू, बिलखाता * कहा,सँदेस, सिय,अस,नाथा ! ॥
लछिमन-सहित,पकरि प्रभु-चरना * कहेउः"कि तुम,भगतन-दुख-हरना।
"वचन-कर्म-मन, चरनन-लागी * सो सीता, काहे, तुम त्यागी ? ॥
"दोस,एक जानत, मोहिं, लागा * 'बिछुरत,प्रान,न क्यों, मैं त्यागा!।
"रोकत प्रान,न निकसत,तन सन *' नयन-दोस यह,हठ-मुख-दरसन ॥
"विरह,अग्नि, तन, रुई-समाना * "सांस,पवन,चाही जरि-जाना ! ।
"पर, नयना, चरनन-अनुरागी * आंसू-छांडि, बुझावत आगी"! ॥
भारी विपति, सिया, बेहाला * बिना-कहे, भलि, दीन-दयाला ! ।
दोहाः—नाथ, सिय कहँ, एक पल, जात, कल्प - सम, बीति ।
३२. वेग, चलहु, प्रभु ! लाहु,चलि, सियकहँ,निसिचर जीति ॥
कविः-सुनिसीता-दुख,प्रभु,सुख-धामा * भरि आये, दोउ - लोचन-रामा ।
रामः-मन-क्रम वचन,मोरिगति,जेहिका*सपनेहु,बिपतिसताव न,ताहिका ॥
हनूमानः-कह,'हनुमंत':विपति,प्रभु!सोई*जब,प्रभु-सुमिरन-भजन न होई।
प्रभु!निसिचर, कतक बलवाना ! * लाइये,जीति,सियहि,भगवाना! ॥
रामः-रे,कपि, तुम-समान, उपकारी *नहिं,कोउ,सुर,नर,मुनि,तन-धारी।
का उपकार, करउं, मैं, तोरा ! * बदले-महँ,मुहँ, परत न, मोरा !॥
करि विचार, देखा, मन माहीं * तो ते उरिन, कबहुं, मैं नाहीं ! ।
कविःचितवतकपिकहँ,फिर-फिर,नाथा* लोचन,नीर, पुलकि,अति,गाता ॥
दोहाः—राम-वचन सुनि, देखि मुख, आनन्दित, 'हनुमंत' ।
३३. प्रेम-विकल, चरनन, गिराः 'रक्षहु, हे भगवंत' ॥
बार-बार, प्रभु, कपिहिं उठावत * मग्न-भये, कपि,उठा न चाहत ।
परा, सीस, चरनन - की-सेवा * मग्न, दसा - सुमिरे, 'महदेवा' ॥

मन कहँ, सावधान करि 'संकर' * कही, कथा, आगे की, सुन्दर।
प्रभु,उठाय कपि, हृदय, लगावा * पकरि बांह, चिपटाय, बिठावा।
राम:-रे,कपि !रावन कर,जहँ डंका ! * सो,जारी,केहि विधि,तू,लंका ? ॥
कवि:-नाथहिं,अति प्रसन्न,जब,जाना * तजि घमंड, बोला, हनुमाना।
हनुमान:-बानर-करनी, प्रतिहि भारी ! * कूदि जात, से, डारी-डारी ! ॥
{ लांघा सिंधु, कनक-पुर, जारा * मारे निसिचर, बाग उजारा ! ।
{ यह सब, तुम-प्रताप, रघुराई ! * नाहिं, बानर की, कछु, बड़ाई ! ॥
दोहा:—तेहि कहँ, कठिन न, काज कोउ, जेहि, राजी-भगवान।
३४. अग्नि-प्रताप ते, जरि सकत, रुइ-सम-खल, इक आन ॥
भक्ति-आपनी, जो, अति-पावन * देहु, जोइ,संकर - मन - भावनि।
कवि:-सुनि सीधी-सांची, कपि-बानी * कहा,राम:'अस होहि', भवानी!॥
प्रभु-स्वभाउ,जो, यह, पहिचानत * तज भजन,तेहि,कछु नाहिं भावत।
यह संवाद, जासु मन, आवे * रघुबर-चरन-भक्ति, सोइ पावे ॥
सुनि प्रभु-वचन,रही धुनि छाई * "जय,जय,जय,कृपालु.रघुराई"!।
तब. कपिं-राजहिं, राम बुलावा * कहा:"चलनि कर,साजहु साजा"॥
पार होनि, अब, देर न कीजै * कपिन बुलाये, आज्ञा दीजै।
देखि, फूल, देवन बरसाये * चले, भवन - अपने, हरषाये ॥
दोहा:—लीन्ह, तुरत, बुलवाय कपि, आये, झुंड-के-झुंड।
३५. वानर, भालू, अति - बली, नाना - रूप - प्रचंड ॥
चरन-कमल, सब, सीस नवायो * गरजि,भालु,कपि सोर मचायो।
जुरी, राम, जब, देखी सैना * चितय कृपा करि,कमल-से-नयना॥
भे, कपि, राम-कृपा - बल पाये * परवत, पच्छी - सहित, सुहाये।
हर्षि, राम, तब, भये रवाना * होहिं सगुन, सुन्दर,सुभ, नाना ॥
मंगल - भरी, कीर्ति - रघुराई * चलत,सगुन हों,अस चलि आई।
'चले - राम', जाना, वैदेही * फरकि बाएं-अँग,जनु,कहिदेही ॥
जो जो सगुन, जानकी, होई * असगुन भये, रावनहिं, सोई।

चला कटक, कछु गनती नाहीं * गरजत, कूदत, वानर जाहीं ॥
परवत, वृक्ष, किये हथियारा * चले, छुअत धरती, कोउ, तारा ।
सिंह समान, भालु, कपि गर्जहिं * दिग्गज चीखइं, बोझ ते, लर्जहिं ॥
छंदः—चिकरहिं दिग्गज, डोलि पृथ्वी, कँपे गिरि, सागर डरे ।
मे, चंद्र, सूरज, देव, मुनि, हर्षित, कि, अब, सब दुख टरे ॥
अनगिनित जोधा, रीछ - बानर, विकट, गर्जत, धावहीं ।
जयः "राम, प्रबल-प्रताप, कोसल-नाथ", कहि, गुन गावहीं ॥
छंदः—सहि सकत भार न, एते दल को, सेष, फिर-फिर, सँभरहीं ।
कछुआ-की-पीठ, कठोर, दांतन, बार-बार, सो, पकरहीं ॥
अस लगत, लंका चलन की, सुन्दर महूर्ति, बनाय-के ।
कछुआ-की-पीठ पै, सेप खोदे देत, दांत गड़ाय के ॥
दोहाः—उतरे, यह विधि, जाय के, रघुवर, सागर-तीर ।
३६. जहँ-तहँ लागे खान फल, भालू, कपि, बल-वीर ॥
उधर, करत, निसिचर, मन, संका * जब ते, जारि गयो, कपि, लंका ।
घर-घर, आपन, करत विचारा * निसिचर-कुल कर, नहीं उबारा!॥
जासु दूत कर, अस बल, भाई! * तेहि, पुर, आये, कवन भलाई ।
दूतिन-मुख, सुनि, लोगन-बानी * मन्दोदरी, हृदय, अकुलानी ॥
अलग, जोरि कर, चरनन लागी * बोली बचन, नीति-की-पागी ।
मंदोदरीः—कंता! हरि सौं, वैर न करिये! * हित के बचन, मोरि, हिय, धरिये! ॥
जासु-दूत-करनी, सुनि, नारी * देत, गर्भ, धरती महँ, डारी ।
तासु नारि, मंत्री बुलवाई * देहु भेजि, जो, चहौ भलाई! ॥
निसिचर-कुल-कमलन-फुलवारी * सीत-रात-सी, सिय, दुखकारी ।
सुनहु, नाथ! सीता, बिन दीन्हे * हित न तोर, बृह्महु, शिव कीन्हे!॥
दोहाः—राम - बान, प्रभु! सर्प-से, राक्षस, मेढ़क जानु ।
३७. जब लग, पकरत नहिं, जतन, करि ले, हट मत ठानु ॥
कविः—जग-जानत, रावन-अभिमाना * सुनि, शठ हँसा, दीन्ह नहिं काना ।

रावनः—नारिन-जी कचा, भय मानत * मंगल हू मं, अमंगल ठानत! ॥
एते बानर, लंका, अैहहिं * राक्षस जिआहिं,पेट-भरि,खैहहिं ।
लागत हँसी, नारि तू, केहि की! * कांपत लोक, त्रास ते, जेहिकी!॥
कविः-अस कहि,लीन्ह नारि चिपिटाई * चलेउ, सभा, ममता अधिकाई ।
मंदोदरी, हृदय, करि चिंता * रूठि विधाता, मोरे - कंता ॥
बैठेउ, सभा, खबरि, अस, पाई * "सिंधु-पार, सब सैना आई" ।
सब मंत्रिन ते, राय मिलाई * हँसे, कहाः "चुप मारहु, भाई"!॥
जितत असुर,सुर,भा,दुख, नाहीं * फिर, बानर, केहि लेखे माहीं! ।

दोहाः—धरम, गुरू, और, वैद, तन, मंत्री, राज, नसाय ।
३८. ठकुर - सुहाती, जो कहइ, करे - आस, डर-खाय ॥

जान-हार, भा, राज, जो, भाई! * मंत्री अस्तुति करहिं, डराई ! ।
अवसर जानि, विभीषन आवा * भ्रात-चरन महँ, सीस नवावा ॥
बैठा जा, जब, आसन पाई * आज्ञा मांगे, कह अस, भाई! ।
विभीषनः-जो,कृपालु!पूँछहु,मोहिं,बाता * मति-अनुसार,कहत हित,ताता!॥
{ सुजस,सुमतिसुभ गतिसुखसबहीं * होइ तोर कल्याना, तबही ।
{ जानि देखहु मुख - नारि - पराई * चौथ-चन्द्रमा-सम, तजि, भाई ॥
चौदह - भुवन - क-मालिक, जोई * तासों, वैर करि, पनपि न कोई ।
गुन अनेक, नर, पावा होई * एक, लोभ, दे, सब गुन, खोई ॥

दोहाः—काम, क्रोध, मद, लोभ, सब, डारहिं, नरक मँ, तात ! ।
३९. त्यागहु सब, रामहिं भजहु, भजत संत, दिन-रात!! ॥

राम, कोउ, नर - राजा नाहीं * जग-मालिक, कालहु, ले खाहीं ।
बृह्म, विकार - जन्म - ते - रहित * आदि-अंत बिन,व्यापक,अजित॥
गौ, बृह्मन, सुर के हितकारी * पृथ्वी-हित, प्रभु भे तन-धारी ।
भगतन-सुख, और, दुष्टन-काला * वेद - धर्म रक्षत, महिपाला ॥
तजहु बैर, चालि, नावहु माथा * हरत,सरन कर दुख, रघुनाथा ।
देहु, नाथ ! रामहिं, वैदेही * भजहु राम, बिन-क़ाज-सनेही ॥

गये सरन, प्रभु तजत न तेहू * जग-बैरी हो, पापी, जेहू।
तीन-पाप, जिन्ह नाम नसावा * भये प्रगट, सोइ प्रभु, जग, आवा॥

दोहाः—बार-बार, पद लागउं, विनय करउं, दस-सीस!।
मोह, मान, मद, सब तजहु, भजहु, कोसलाधीस!!॥

दोहाः—मुनि, 'पुलस्त्य', निजसिष्य सन, कहि पठई, यह बात!।
४०. तुरत, सो, मैं, तुम सन, कही, पाय समय, हे भ्रात!!॥

कविः—मंत्री, मालवंत, इक ज्ञानी * हर्षेउ, सुनत विभीषन-बानी।
मालवंतः-भाई-तोर, नीति-कर-भूषन!* करहु सोइ, जो, कहा, विभीषन॥
रावनः-रिपु-कर-पच्छ, करत, शठ, दोऊ * दूरि न करउ, यहाँ ते, कोऊ!।
कविः-मालवंत, सुनि, घर, चलि दीन्हा * तब, अस, विनय, विभीषन कीन्हा॥
सुमति, कुमति, सब के उर, रहई * वेद, पुरान, नाथ! अस कहई।
जहां सुमति, तहं, संपति-नाना * कुमति, अंत, तहं, विपतिहि जाना॥
बसी, कुमति, सब उलटा मानत * शत्रु, मित्र, हित, अनहित, जानत।
काल-रात, निसिचर-कुल केरी * तेहि, सीता पर प्रीति घनेरी॥

दोहाः—तात! चरन गहि, माँगहूँ, राखहु, मोर दुलार।
४१. दीन्हे सीता, राम कहं, अनहित नहीं तुम्हार॥

कविः—पंडित-वेद-पुरान-बताये * कहे, विभीषन, बचन, सुहाये।
रावनः—पर, रावन, सुनि, उठा, रिसाई * बोला "मृत्यु तोरी, नियराई"!॥
जिआ, सदा, तू, मोर-जियावा * अब, बैरी, तोरे-मन, भावा।
रे, शठ! बोलु, कौन जग माहीं * जीता, मोर-भुजा, जेहि नाहीं!॥
बसि लंका, तपसिन ते प्रीती * जाहु, सिखावहु, उनहिन, नीती!।
कविः—कहि अस, लात, उठाये, मारी * अनुज, गहे पद, बारंबारी॥
साधु, संत कर, यही बड़ाई! * करे बुराइहु, करत भलाई।
विभीषनःबाप-ठौर, तुम भलमोहिं मारा!* बिना राम, हित, नहीं, तुम्हारा!।
लै, सँग, मंत्री, उठि, सो गयेऊ * मार्ग-अकास, कहत, अस भयेऊ॥

दोहाः—राम, जो-ठानत, सोइ करत, सभा, काल-वस, तोर।
४२. राम-सरन, जा, लेत, हौं, दोस न, अब, कछु, मोर॥

कविः-कहिअस, चला, विभीषन, जबहीं ❊ खसी उमिर, असुरन की, तबहीं।
साधु-निरादर - करत, भवानी ! ❊ सम्पूरन-कल्यान-की - हानी !॥
रावन, जबहिं, विभीषन-त्यागा ❊ गई संपदा, भयो अभागा।
चलेउ, विभीषन, रघुवर पाहीं ❊ भरि अरमान, बहुत, मन माहीं॥

विभीषनः-चरन-कमल, देखउं, रघुनाथा! ❊ कोमल, लाल, भगत-सुख-दाता।
जिन, पद लगे, 'अहिल्या' तारी ❊ 'दंडक'-वन-महिमा भइ भारी॥
जे पद, सीता, हृदय लाये ❊ माया - हिरन के पाछे, धाये।
संकर-हृदय - कमल, पद जोई ❊ अहो भाग्य ! दिखिहौं, मैं सोई॥

दोहाः—लागि, खड़ाऊं, भरत-मन, जिन चरनन के. जाय।
४३. सोइ पद, देखउं, आज, मैं, भरि नयना, हर्षाय॥

कविः—करत, चला, अस, प्रेम-विचारा ❊ आवा, तुरत, सिंधु-पहि-पारा।
देखा, बानर, आवत, सोई ❊ संकाः रावन - दूत न होई !॥
रोकि ताहि, 'कपि-पति' ढिग, आये ❊ समाचार, सब, ताहि, सुनाये।

सुग्रीवः—कह सुग्रीवः सनहु, रघुराई ! ❊ आवा मिलन, दसानन-भाई !॥

रामः—पूँछत कहा ? कहा, रघुनाथा ❊ कह सुग्रीव, सुनहुः "नर-नाथा"!।

सुग्रीवः—जानिनजाय, निसाचर-माया! ❊ धरे रूप; केहि इच्छा, आया !॥
लागत, भेद लेन हित, आवा ❊ मोरि-समुझि राखिये, बँधावा।

रामः—सखा! बात, तुम, नीक, बिचारी ! ❊ देत सरन - भय, पर, मैं, टारी॥

कविः—सुनि प्रभु-वचन, हरष हनुमाना ❊ सरन - प्रेम, केता, भगवाना !।

दोहाः—राम-सरन कहँ, जे तजहिं, आपन अनहित ठानि।
४४. ते नर, पापी, नीच अति, तिनके देखेहु, हानि॥

रामः-कोटिन - बृह्मन, मारा, जेही ❊ आये सरन, तजहुं नहिं, तेही!।
आगे मोर, जीव, जब, आवत ❊ जनम-जनम-के पाप नसावत॥
सब पापिन कर, यही स्वभाऊ ❊ भजन मोर, भावै नहिं, काऊ।

दुष्ट-हृदय, पर, जेहि कर, होई * सनमुख,आय सकत नहिं,मोई ॥
उज्जल-मन, जो, सोइ, मोहिं, पावे * मोहिं,कपट, छल. सखा!न भावे ।
पठवा, भेद लेन, मैं मानी * तहूं,सखा ! का डर,का हानी? ॥
जग महँ, सखा ! निसाचर, जेते * लछिमन मारहिं, पल महँ, तेते ।
डरि, जो, आवा, सरन हमारी * प्रान-ठौर, तेहि रखउं, सुखारी ॥

कविः—दोहाः—"दुहू-भाँति,जा लाहु, तुम", हँसि कह,"सनमुख-मोर" ।
४५. हनुमत, अंगद, कपि, चले, "जय कृपालु" करि सोर ॥

आदर ते, करि आगू, वानर * चले, रहे जहँ कृपा-के-सागर ।
दूरिंह ते, देखे दोउ भ्राता * नैनन, सुख-अनन्द-कर-दाता ॥
परी, राम-छवि, जबहिं, दिखाई * रहि गयो, पलक रोकि,ठिठुकाई ।
लांबी भुजा, कमल-से नैना * स्याम-गात, सरनागत-भय-ना ॥
सिंह-कंधन-विच छाती सोहत * मुख,जनु,कोटि-काम-मन मोहत ।
पुलकि सरीर. नयन, जल आनी * धरि धीरज, कहि कोमल-बानी ॥
विभीषनःअहा ! नाथ ! मैं, रावन-भाई * देव-रक्ष ! राक्षस भा, आई ! ।
देही, पाप, स्वभाउ ते, प्यारा * जस,प्रिय,उल्लू कहँ,अँधियारा ॥

दोहाः—सुनि, कानन, जस, नाथ कर, आवा, सरन, मैं, तोर ।
४६. सरन-केर-सुख, दुख-हरत, रक्षहु, हरि - दुख - मोर ॥

कविःअस कहि,करत दंडवत देखा * उठे, तुरत, प्रभु, हरष बिसेखा ।
दीन-बचन सुनि,प्रभु, मन, भावा * पकरि बांह,तहि,हृदय, लगावा ॥
लषन-सहित,मिलि, ढिग, बैठावा * हरत-भक्त-भय, बचन, सुनावा ।
रामःकहउ कुसल आपनि परिवारा * कस कुठौर है, बास तुम्हारा ! ॥
दुष्टन-बीच, बसत, दिन राती * करम-धरम,निबहत, केहि भांती ।
जानत मैं, तुम्हार, सब रीती * नीति-चतुर,नहिं भाय अनीती! ॥
नरक केर बासहु भल, ताता ! * दुष्ट-संग, ना, देइ बिधाता ! ।
विभीषनःअब,पद देखि,कुसल,रघुराया! * जानि भक्त, जो, कीन्हीं दाया ! ॥

दोहाः—तब लगि कुसल न, जीव कहँ, नहिं, मन कहँ, बिस्राम !।
४७. सोक-धाम, जो कामना, सा तजि, भजहि न राम !!॥

{ दुष्टः मान, मद, लोभ, औ, मोहा * तब लगि, वसत, हृदय,नर-देहा ।
{ जबलगि, उर न, बसत रघुनाथा * तरकस, धनुष-बान-लिये-हाथा ॥
{ ममता - घोर - रैन - अँधिआरी * हर्ष-सोक, उल्लुन कहँ, प्यारी ।
{ तब लगि, बसत,जीव-मन माहीं * प्रभु-प्रताप रबि, जबलगि नाहीं ॥
देखि, राम ! पद - कमल तुम्हारे * दुख-भय, मब-सब मिटे हमारे ।
तेहि पर राजी,तुम, भगवाना ! * सो संसारी सूल न जाना ॥
मैं, कुकर्मि, राक्षस, मति-हीना ! * भला-कर्म, कबहूं, नहिं कीन्हा !।
जो स्वरूप,मुनि-ध्यान,नआवत ! * सोइ, आज,मोहिं, कंठ लगावत !॥

दोहाः—मैं बड़-भागी, दीख, जो, कृपा-औ-सुख-की-खानि ।
४८, सेवत, जिन के चरन, सिव, बृह्मा, कमल-समान ॥

रामः-कहौं, बिभीषन!अपन स्वभाऊ * सिव, भुसुंडि हूं, जानत, ताहू ।
{ होइ जगत - भरि-कर-हू-द्रोही ! * डर ते, सरन लेइ आ, मोरी !॥
{ तजि मद,मोह,कपट, छल, नाना * करउं, तुरत, मैं, साधु-समाना ।
{ मात, पिता, बंधू, सुत, नारी * तन, घर-बार, हितू, परिवारी ॥
{ मोह-के-तागन, करि, इक ठौरी * बांधइ मन, चरनन, तेहि डोरी ।
एक-भाव रहि, कछू न चाहै * सोक-हर्ष - भय, पास न आवै ॥
अस-सज्जन, मोरे उर रहई * जस, लोभी, आपन धन चहई ।
तुम-से-संत, सखा ! मोहिं प्यारे * प्रगटत, उनहिन-हित,तन-धारे ॥

दोहाः—रूप-उपासक, हित-करत, नीतिमान, दृढ़ नेम ।
४९. सो नर, प्रान-समान, मोहिं, बृह्मन-पद, जिन्ह, प्रेम ॥

बसत,सबहि गुन, हृदय तोरे ! * ता ते तुम,अति-अति-प्रिय मोरे।
कविःराम-वचन सुनि, बोले बानर * सदा, होय जय कृपा-सागर ! ॥
सुनत, बिभीषन, प्रभु की बानी * भरत,पेट, नहिं, अमरित-सानी ।
गहत चरन-प्रभु, बारंबारा * हृदय, समात न, प्रेम अपारा ॥

विभीषनःसुनहु,नाथ!सब जग कर स्वामी * सरन-पाल,और,अंतर-जामी!।
रही, मोर मन, कछु वासना * बही, (प्रीति-पद)-नदी, कामना ॥
भक्ति पवित्र,नाथ ! सोइ मिलई!* सदा,जो, सिव-मन, नीकी लगई।
कविःकह,प्रभु,"दीन्ही",और, तुरंता * मांगा जल, लावा, हनुमंता ॥
रामःकहाःसखा ! तोहि, इच्छा नाहीं * सफल दर्स, मोरा, जग माहीं ।
कविः-राज,तिलक करि,दीन्हा सारा * बरसत फूल, अकास, अपारा ॥

दोहाः—रावन-क्रोध, अग्नी, अपन सांस, पवन-प्रचंड ।
जरत-विभीषन, राखि लियो, दीन्हा राज अखंड ॥
दीन्हा, संकर, राज, जो, रावन, सीस चढ़ाइ ।
५०. दियो, सो,राम, विभीषनहिं, बिन-इच्छा, हठ-लाइ ॥

जे नर भजत न, अस भगवाना * सींग-पूँछ - बिन, पसू - समाना ।
जाने भक्त, ताहि अपनावा * राम-स्वभाव,कपिन,मन,भावा ॥
जानत - सब, सब - हृदय-बसत * जो-सब, गरज-न, सब-ते-रहित ।
कहत बचन, अस, नीती पालत * कारन, भे-नर, राछस-घालत ॥
रामः-कहु सुग्रीव ! विभीषन ! वानर! *केहिविधि,उतराह,गहिरा-सागर?।
मछरी, मगर, सर्प, जल माहीं * कठिन,अगम,और,उतरा चाहीं ॥
विभीषनः कहा,विभीषनःनाथ,हमारे ! * सागर सोखत, बान तुम्हारे ! ।
पर, पाहिले, नीती, रघुराई ! * करहु विनय,सागर सन, जाई! ॥

दोहाः—सागर, सूरज - वंस रु, कहहि उपाय, बिचारि ।
५१. उतरै सब सैना, सहज, बिन-श्रम, सागर-पार ॥

रामः-कहेउ, सखा!तुम, नीक उपाई * करब यही, जो, दैव सहाई ! ।
लछिमन कहँ,यह मत नहिं भाई * राम - बचन लागा दुख-दाई ॥
लषनः-दैव-भरोसा,प्रभु ! कछु नाहीं * करे क्रोध, सोखहु, छन माहीं ।
जो आलसी, औ, हिम्मत हारैं * बात - बात महँ, 'दैव' पुकारैं ॥
कविः-हँसे, वचन सुनि,कह,रघुवीरा * 'सोई, करब, धरहु, तुम, धीरा' ।
फिर,लषनहिं,बहु विधि,समुझाई * सिंधु - तीर, पहुँचे रघुराई ॥

प्रथम, प्रनाम, कीन्ह, सिर नाई * बैठे, फिर, तहँ, कुसा बिछाई ।
जबहिं, विभीषन, प्रभु पहँ, आये * पाछे, रावन, दूत, पठाये ॥
दोहाः—देखे, दूतन, सब चरित, कपट ते, धरि कपि-देह ।
५२. कहत "राम, कस करत हैं, सरनागत पर नेह" ॥
लागि, राम-गुन, प्रगट, बखानत * कपट-वेष, नहिं बना, छिपावत ।
रावन - दूत, कपिन पहिचाने * बांधे, 'कपि-पति' पहँ, दोउ आने ॥
सुग्रीवः–कह, सुग्रीवः सुनहु, सब बानर! * अंग-भंग-करि, पठवहु निसिचर!।
सुनत बचन, सब बानर धाये * बांधि, कटक-चहुँ-ओर, घुमाये ॥
बहु प्रकार, मारन, कपि लागे * कहत 'मरे, हा! ' तहूँ न, त्यागे ।
'नाक, कान, जो, काटहिं, आई * तेहिका, रामहिं-सौं, है, भाई !' ॥
सुनि लछिमन, तब, पास बुलाये * लागि दया, हँसि, दीन्ह छुड़ाये ।
लषनः–रावन-हाथन, दीन्हेउ पाती ! * लिखा-मोर, बांचइ, कुल-घाती ! ॥
दोहाः—कहेउ, जबानी, मूढ़ सन, हित - सनदेस, पुकारि ।
५३. मिला न, सीता लाय, जो, "आवा, काल तुम्हार' ॥
दूत, नाय, लछिमन-पद, माथा * चले, सराहत, गुन - रघुनाथा ।
कहत - राम - जस, लंका, आये * आ, रावन कहँ, सीस नवाये ॥
रावनः–हँसि, रावन, तब, पूछी बाता * कहत न क्यों, आपन-कुसलाता?।
बोलहु खबरि, विभीषन केरी * जेहि कर मृत्यु, निकट आ, घेरी ! ॥
करत - राज, लंका, जेहि त्यागी * जम-कीड़ा, मरि, होइ, अभागी ।
कस सैना - भालू - कपि आई ? * काल, खींचि, जिन कहँ, ले आई ॥
जिन्ह कर प्रान, बचावन - हारा * बीचहिं, सिंधु, दयालु, बिचारा ।
कहउ हाल, तपसिन कर, झट-पट * काल-समान, मोहिं, जो डरपत ॥
दोहाः—मिले तुमहिं, कै, फिरि गये, सुनि, कानन, जस मोर ? ।
५४. कहत न, रिपु कर तेज बल, चित, चिंता, क्यों घोर ? ॥
दूतः–नाथ ! कृपा करि, पूँछा, जैसे * मानहु कहा, क्रोध तजि, तैसे ! ।
जाय सरन, जब, राम की, लीन्हा * अनुजहिं, राम, तिलक, करिदीन्हा ! ॥

दूत तुम्हार, हमहिं, जब, जाना * कपिन, बांधि, दीन्हे दुख नाना।
नाक, कानहू, काटन लागे * राम-की-सौं दीन्हीं, तब भागे॥
पूँछा, जो, तुम, सैना, केती * मो,कड़ोर,मुख पढ़ न, नेती!।
नाना-रूप, भालु, कपि आगे * रूप विकट,जिन्ह, काल डराये॥
जारा पुर, मारा सुत, तोरा * तेहि बल, औरन-ते, कहुं-थोरा!।
नामी जोधा, कठिन, कराला * लाखन-गज-बल, बहुत-विसाला॥

दोहा:—'द्विविद','मयंदा','नील','नल', 'अंगद',और,'विकटासि'।
५५. 'दधिमुख','केहरि','निशठ','शठ', 'जामवंत', बल-रासि॥

येह सब कपि, सुग्रीव-समाना * ऐस करोड़न, गिनइ को नाना!।
राम-कृपा-बल है, सबहिन का * तीन-लोक,समुझत हैं तिनका!॥
अस, मैं, कान, सुना,दसकंधर! * पद्म-अठारह, हैं, सब, बंदर!।
सैना, एकहु कपि, अस नाहीं * जो,न,तुमहिं, जीतइ,रन माहीं!॥
भौं चढ़ाये, मींजत हैं हाथा * देत न आज्ञा, पर, रघुनाथा।
सोखहिं सिंधु, मगर,मछ, मारहिं * नाखूनन ते, परबत, फारहिं॥
गर्द, मिलावहिं, मलि दस-सीसा * कहत वचन, ऐसे, सब कीसा।
गर्जहिं, दपटहिं, मन, नहिं संका * खान चहत, मानहु, सब, लंका॥

दोहा:—जन्म-सूर, सब, भालु-कपि, तिनके सिर पर, राम।
५६. कोटि-काल कहँ, जीति लें, रावन! जो, संग्राम॥

राम-तेज-बल-बुधि-अधिकाई * सेष, हजार,सकत नहिं गाई!।
सकत, बान-इक, सागर सोखा * नीति-चतुर, तुम-भ्रातहिं, पूँछा॥
तासु वचन सुनि, सागर पाहीं * मांगत राह, कृपा, मन माहीं।
कवि:—सुनिअस-बचन,हँसादस-सीसा * अस-मति,तब,सहाय भे कीसा!॥
रावन:—डरपत,करतबचन-बिस्वासा! * मचले, करत,सिंधु ते, आसा!।
वृथा, दूत! तुम कीन्ह बढ़ाई * राम-बुद्धि-बल-थाह, मैं पाई!॥
कीन्ह, भ्रात, मंत्री, डर-पोका * विजय-लछमी,सुलभ न, जेहिका।
कवि:—सुनि खल-बचन,दूत,रिस बाढ़ी * जानि समय,चट, पाती, काढ़ी॥

दूतः—दीन्ह, लषन, महराज ! ये पाती * यह बँचवाय, जुड़ावहु छाती ! ।
हँसा, लीन्ह, बायं-कर, रावन * मंत्री ते, शठ, लागि बँचावन ॥

पातीः-दोहाः—"बातन, मन, समुझाय कर, मत करु, कुल-की-खीस" ।
"सिव, बृह्मा हू की सरन, उबरै ना, दस-सीस" ॥

दोहाः—"तजि अभिमानहिं.अनुज-सम,भजु, मन,पद-सुखकंद"! ।
५७. "राम-बान के लगत ही, नासइ कुल, मति-मंद"!! ॥

डरि, पाती-सुनि, पर, मुसुकाई * कहा, दसानन, सबहिं सुनाई ।
धरती-परे, छुअत आकासा * तनिक-से-तपस्वी.डींग, तमासा ॥
'शुक' दूतःकह,'शुक'ःनाथ!सत्यसबबानी*समुझहु, तजि स्वभाउ-अभिमानी
मानहु कहा, तजहु सब क्रोधा * नाथ ! राम सन, तजहु विरोधा ॥
अति कोमल, रघुवीर-स्वभाऊ * होत -भये - लोकन - के - राऊ ।
मिलत,कृपा,तुम्ह पर,प्रभु करिहैं * कोउ दोस, हृदय, ना धरिहैं ॥
जनक-सुता, रघुनाथहिं दीजै * एता कहा, मोर, प्रभु ! कीजै, ।
कविःकहा, दूत, जब,"सीतहिं देहू" * दीन्ह लात,उठि,कह, 'यह लेहू' ॥
नाय माथ, गे, सागर-तीरा * दूत, जहां कृपालु, रघुवीरा ।
करि प्रनाम, निज-कथा सुनाई * राम कृपा-ते, सुभ-गति पाई ॥
रिषिः'अगस्त्य'के स्राप,'भवानी'!* दूत भये, राक्षस, मुनि-ज्ञानी ।
बंदि राम-पद, बारंबारा * दोउ मुनि,आश्रम कहँ,पग धारा॥

दोहाः—कहा न मानत, सिंधु, जढ़, गये तीन दिन बीति ।
५८. राम, रिसाने, अस कहा, बिन डर, होत न प्रीति ॥

रामःलछिमन!लावहु धनु-और-बाना !* सोखउं सागर, अग्नि-समाना! ।
बिनय,दुष्ट से,कुटिल सों प्रीती * वृथा, बताये, सूमहिं, नीती ॥
ममता-फँसे-का, ज्ञान सिखावै * लोभी कहँ, वैराग बतावै ।
हरि-गुन,कामिहिं,क्रोधिहिं,समता* ऊसर बीज बये, कहुं जमता ! ॥
कहि अस,रघुपति, धनुष चढ़ावा * यह मत, लछिमन के मन, भावा ।

धनुष, चढ़ावा, बान-कराला * सागर-हृदय, उठी, तब, ज्वाला ॥
मगर, मच्छ, सब जंतु अकुलाने * जरत जीव, सागर, जब, जाने ।
कनक-थार, मोती धरि नाना * विप्र-रूप, आयो, तजि-माना ॥

दोहाः—केला, काटे ते बड़इ, फलइ न, सींचा - सींचि ।
५६. विनय, न मानत, लाख कहो, डांटेहि, मानत नीच ॥

सागरः-डरा सिंधु, गहि पद, प्रभु केरे * क्षमहु, नाथ ! सब अवगुन मेरे ।
अग्नि,अकाश,पवन, जल, धरनी * सुनहु,नाथ ! इन कर जड़ करनी ॥
माया, तुम्हरे हुकुम, बनाये * जगत हेत, सब ग्रंथन गाये ।
प्रभु-आज्ञा, जेहि का, जस होई * तेहि भांति, सुख मानत, सोई ॥
कीन्ह नीक, मोंहिं शिक्षा दीन्ही * मर्यादहु,प्रभु ! तुम्हरिहि-कीन्हीं! ।
ढ़ोल, गँवार, सूद्र, पसु, नारी * बिन मारे, नहिं जात सुधारी ॥
प्रभु-प्रताप ते, जाऊं सुखाई * उतरइ कटक, न मोर-बड़ाई ।
अटल हुकुम-प्रभु, वेद बतावे * करउं,वेग,जो, अब, मन,भावे ! ॥

कविः- दोहाः—सुनि विनती-के-वचन, अस, कह कृपालु, मुसुकाय ।
६० "जेहि विधि, उतरहिं भालु-कपि, सोई, कहउ, उपाय" ॥

नाथ ! 'नील','नल',कपि, दुइ भाई * आसिर्वाद, पायो, लरिकाई ।
तिन के छुये, पहारहु, भारी * तैरहिं, जल, आज्ञा-अनुसारी ॥
धरि हृदय, महुं, तुम-प्रभुताई * करिं हौं, बल-अनुसार, सहाई ।
यह विधि, सेतु करहु, रघुराई * तीनहु-लोक, रहै, जस, छाई ॥
यह बानहिं, मारहु, रघुराई ! * मारवाड़-खल, अति-दुखदाई ।
कविः-सुनि, कृपालु, सागर-मन-पीरा * हरी, एक बानहिं, रघुवीरा ॥
देखि राम-बल-पौरुख भारी * भयो, सिंधु, आनन्द, सुखारी ।
सकल चरित कहि,प्रभुहिं,सुनावा * नाय,चरन,सिर,सिंधु सिधावा ॥
छंदः—तब, सिंधु, आपन-घर, गयो, मति-नीक, प्रभुहिं, सुनाय के ।
यह चरित, मल-दुख-हरन, गायो, तुलसीदास बनाय के ॥

गुन-राम, संसय-हरन, सुख-कर-भवन, सब-सब-दुख-हरत ।
फल-चाह-तजि, गावहु, सुनहु, नित, दुष्ट-मन ! जस, मुनि करत ॥

दोहा:—जे नर गावत, राम-गुन, पावत सुख - भंडार ।
आदर-ते, सुनि, नाव-बिन, भव-सागर-के-पार ॥

* श्री *

लंका-काण्ड

मंगलाचरन

कविः—सो०ः—वंदउँ, सोई - राम, जिन्ह - कर, 'शिव', पूजन - करत ।
सकइँ, कालहू, थामि, सिंह-से, भव-के-दुख-हरत ॥
२. धारत, जोगी, ध्यान, तबहिं, मिलत हैं, आइ, जो ।
सकल-गुनन-की-खानि, निरगुन, अजय, औ, दोस-बिनु ॥
३. जे, माया - ते - दूरि, देवन - स्वामी, दुष्ट - रिपु ।
एक - तरह, भरि - पूर, विप्रन - के - हैं - देव, जे ॥
४. सुन्दर, मेघ - समान, कमल - से - नयना, मन - हरत ।
पृथ्वी - पति, भगवान, करहुँ वंदना, जानि - अस ॥
५. संख, औ, चन्द्र - समान, चमकत, सुन्दर - देह, जिन्ह ।
ऐसे, 'शिव', भगवान, सिंह - चर्म, ओढ़े - फिरत ॥

६. भूषन, सर्प - से, काल; गंग, चन्द्र ते, प्रेम - अति ।
हरत - पाप, जो, हाल, कल्प - वृक्ष, कल्यान - के ॥
७. गिरिजा-पति, गुन-खानि, जारत कामहिं, भष्म-करि ।
कासी - पति, भगवान, बंदउं, तिन्ह - के - चरन, मैं ॥
८. दुष्टन, मारत, आनि, सत - पुरुषन -कहँ, मोक्ष - दय ।
करहिं, मोर - कल्यान, सोई, 'शिव', भगवान, अय ॥
दोहाः—पल, छन, लीन्हे, हाथ-मैं, कल्प, वरस, जुग - बान ।
ऐस-राम, क्यों ना. भजउ, काल - धनुप - रहे-तानि ॥
सो०ः—सिंधु-बचन, सुनि, राम, मंत्री-ते, तब. अस-कहेउ ।
रामः—अब, विलंब, केहि काम, करहु-सेतु, सैना चलइ ॥
जामवंतः'जामवंत' कह राम ! सूरज-कुल-की-नाक, तुम !।
१. सेतु, आप-कर-नाम, चढ़ि,-नर, भव-सागर-तरत !!॥
हनुमानः-छोट-सिंधु,उतरत,कह देरी? ✻ सुनि अस,कहा,पवन-सुत,केरी।
प्रभु-प्रताप, बढ़वानल, भारी ✻ दीन्हा, पहिले, सागर-जारी ॥
शत्रू - नारिन - आंसू - धारा ✻ भरा सिंधु, फिर-ते, हुइ खारा ।
सुनि,अस-जुक्ति, पवन-सुत-केरी ✻ हर्षे कपि, रघुवर-तन, हेरी ॥
'नल',और,'नीलहिं',बोलि पठाई ✻ 'जामवंत', सब कथा, सुनाई ।
जामवंतः-राम-प्रताप,सुमिरि,मन-माहीं ✻ करहु सेतु, कछु दुर्लभ नाहीं ॥
फिर, सब कपि, कीन्हे-यकठौरी ✻ कहा, सुनहु,विनती,कछु,मोरी ।
चरन-कमल, प्रभु के, उर धरहू ✻ खेल, एक, भालू ! कपि! करहू ॥
मिलि, सब, धावहु, जोधा, भारी ✻ लावहु पेंड़, पहाड़, उखारी ।
कवि:-सुनि, कपि-भालु, चले,हू,हा,हू ✻ "जय रघुवीर-प्रताप,प्रभाऊ" ॥
दोहाः—ऊँचे - पेंड़, पहाड़, झट, खेलहिं, लेत, उठाय ।
२. आय, देहिं, 'नल', 'नीलहीं', रचइँ, ते, सेत-बनाय ॥
बड़े - पहार, आनि, कपि देहीं ✻ गेंद-समान, 'नील' 'नल' लेहीं ।
देखि सेतु - अति - सुन्दर - रचना ✻ हँसे,कृपानिधि,कहिअसबचना ॥

रामः-कस,मन-भावन,सुभ अस्थाना! ❋ महिमा,यह की, कोउ न जाना।
करहुँ यहाँ, मैं, शँभु - थापना ❋ मोरे मन, कपि! परम कलपना॥
कविः-सुनि, 'सुग्रीव', दूत पठवाये ❋ मुनियन कहँ, बुलाय, सो, लाये।
रामः-लिंग-स्थापन, करि, करि-पूजा ❋ कह,शिव-सम,कोउ,प्रिय.नदूजा॥
शिव - वैरी, मम - भगत, कहावे ❋ सो नर, सपनेहु, मोहिं न पावे।
तजि-शिव, भक्ति चहइ, जो, मोरी ❋ परइ नर्क महँ, शठ,मति-थोरी!॥

दोहाः—चाहत-'संकर', मोंहि-तजि, तजि-शिव, जो, मम-दास।
३. ते नर, करिहइं, कल्प भरि, घोर-नर्क-महँ, वास॥

जे, 'रामेस्वर' -दरसन - करहीं ❋ ते, तन-तजि, हरि-धाम, सिधरहीं।
जे, 'गंगा'-जल, आनि, चढ़इहैं ❋ सो, बृह्म मां, लय हुइ जइहैं॥
छल,इच्छा तजि,जो, 'शिव'सेइहहिं ❋ भगति,मनोरथ,तेहि,'शिव'देइहि।
मोर-रचेउ-पुल, दरसन करिहैं ❋ बिन-श्रम,सो,भवसागर तरिहैं॥
कविःराम-वचन, सब के मन, भाये ❋ मुनि,सब,आपन-आस्रम, आये।
शिवःपारवती! यह, राम की रीती ❋ करत,सदा, भगतन-पर, प्रीती॥
कविःबांधेउ सेतु,'नील','नल', चातुर ❋ राम-कृपा-जस, भयो उजागर।
आपहु, डूबहिं, और-डुबाहीं ❋ भये-नाव, पाथर उतराहीं॥
यह महिमा, कछु, सिंधु,न बरनी ❋ ना,पाथर-गुन, ना, कपि-करनी।

दोहाः—श्री-रघुवीर-प्रताप-ते, पाथर तैरत, सिंध।
४. छांड़ि-'राम', औरन्ह-भजत, ते-नर, आंखिन, अंध॥

बांधि-सिंधु, अति-पोढ़, बनावा ❋ देखि, कृपानिधि-के-मन भावा।
चली सैन, कछु, कहा न जाई ❋ गरजत, बानर झुंड - बँधाई॥
'सेतु-बंधु' ढिंग, चढ़ि, रघुराई ❋ देखा सिंधु, कहाँ-लगि-जाई।
दरसन - करन - हेतु, रघुराई ❋ जल ते, जीव, प्रगट भे, आई॥
मगर, मच्छ, घड़ियालहु, अजगर ❋ सौ-जोजन, तन लाँवा, जिनकर।
कछु ऐसे, जो, तिनहू, खाहीं ❋ कछु,जो,इक,इक देखि, डराहीं॥
देखत रामहिं, टरत न, टारे ❋ मन-हर्षित, सब, भये सुखारे।

छाये, अस, जल-कर,नहिं दरसन * हरि-कर-रूप,लखत,निजनयनन॥
चला कटक, कछु, कहा न जाई ! * एते-बानर, को गिनि पाई ! ।

दोहाः—'सेतु-बंधु',भइ, भीर-अति, चलि-अकास, कोउ जाहिं ।
५. कोउ, जल-जीवन-पर-चढ़े, सिंधु-पार, हुइ-जाहिं ॥

देखा, सब-कौतुक, रघुराई * हँसे, चले, फिर, दोऊ भाई ।
सैन-सहित, उतरे, रघुबीरा * सैना-पति, बानर, बहु-भीरा ॥
सिंधु-पार, प्रभु, डेरा कीन्हा * सकल बानरन, आज्ञा दीन्हा ।
रामः—खाहु जाय, फल-मूल, सुहाये *सुनत,भालु,कपि,जहँ-तहँ,धाये ॥
फरे पेंड़, रघुबर-हित-देखी * रितु और,कुरित,तजी सब-सेखी॥
खाहिं मधुर-फल, वृक्ष हलावहिं * लंका-ओरी, सिखर चलावहिं ।
जहँ,कहुं,फिरत,निसाचर पावहिं * घेरहिंम्सब, और,नाच-नचावहिं ॥
दांतन, काटि, नाक, और काना * कहइ-राम-जस, तब दें, जाना ।
जिन के काटे नाकहु-काना * जाइ, हाल, रावनहिं, बखाना ॥
बंधा-सिंधु, जब, 'रावन' जाना * तब,तौ, बोलि उठा, अकुलाना ।
व्याकुलता, फिर, अपन बिचारी * हंसा, गयो,उठि,जौ,भय-भारी ॥
'मंदोदरी' सुना, प्रभु-आये * खेलहिं-खेल, सिंधु-बँधवाये ।
पकरि-हाथ, मंदिर, लइ आई * बानी, कोमल, कही, सुहाई ॥
नावा सिर, आँचल फैलावा * 'सुनहु,बात,रिस-थूके, नाहा !' ।
मंदोदरीः—नाथ ! बैर कीजइ,ताही-सों *बुद्धि,बल,जीतिसकिय,जाही-सों॥
रघुबर-तुम महँ, अंतर-ऐसा * जुगनू, और,सूरज महँ, जैसा ।
उन, तौ 'मधु' और 'कैटभ' मारे * महाबीर, "दिति-सुत" सँहारे ॥
जेहि,'बलि'-बांधि,'सहस-भुज' मारा*लीन्हअवतार,हरन-जग-भारा ।
करहु बैर ना ! उन-सन, नाथा ! * काल, कर्म,जिउ,जिन-के-हाथा ॥

दोहाः—रामहिं, सौंपहु 'जानकी', नाय, कमल-पद, माथ ।
६. दीन्हे-सुत-कहँ-राज, बन, जाइ, भजहु - रघुनाथ ॥

अति-दयालु, नाथा ! रघुराई * सनमुख-जा, बाघहु नहिं खाई ।

रहा-उचित, सो, सब,करि लीन्हा ※फतेह,सबहि,सुर-असुरन,कीन्हा ॥
कहत, संत, राजा - की - नीती ※ चौथा-पन, बन महँ-रहि,बीती ।
करइ भजन,तेहि-कर, बन-महँ-रहि ※जो,ज्यावहि,पालहि,और,मारहि॥
सोइ, रघुबर, भगतन-अनुरागी ※ भजहु,नाथ,ममता-सब-त्यागी ।
करत जतन, मुनि,जेहि के काजा ※ लेत विराग, राज-तजि, राजा ॥
सोइ, कोसलाधीस, रघुराया ※ करन, आयो, घर-बैठे, दाया ! ।
जो, पिय ! मानहु,मोर सिखावन ※ तीन-लोक,जस छावहि, पावन ॥

दोहा:—अस-कहि,आंखिन नीर-भरि, गहि-पद, कांपत जात ।
७. नाथ ! भजहु रघुनाथ कहं, होइ अचल अहिवात ॥

कवि:–सुनि,अस,'रावन' लीन्ह उठाई ※ लागि कहन, अपनी प्रभुताई ।
रावन:–तू, तौ, प्रिय ! वृथा,भय माना ※ जोधा,जग,को, मोहि-समाना ! ॥
'वरुन','कुबेर','वायु','जम','काला'※ जीते, भुज-वल, सब दिगपाला ॥
देव, दैत्य, नर, सब, बस - मोरे ※ केहि कारन,फिर,भय,मन-तोरे? ।
कवि:–नाना - विधि, रानी - समुझाई ※ लौटि, सभा - महँ, बैठा, जाई ॥
'मंदोदरी', हृदय, अस - जाना ※ काल-के-बस,उपजा अभिमाना ।
रावन:–आय, सभा, मंत्रिन - ते पूछा ※ केहि विधि,चही,शत्रु-ते,जूझा? ॥
मंत्री:–मंत्री, कहा, अरे ! महराजा ! ※ बार-बार, बूझत, कह काजा ! ।
कहहु, कौन डर, कीन्ह विचारा ? ※ नर, भालु,कपि,अपन अहारा ॥

दोहा:—कानन, सब-के-बचन सुनि, कह 'प्रहस्त', कर - जोरि ।
८. नीति-निरादर, मत करहु, मंत्रिन-मति, अति-थोर ॥

प्रहस्त:–कहत, मंत्री, ठकुर - सुहाती ※ परहि न पूर, नाथ ! यह भांती ।
लांघि सिंधु, एकहि कपि आवा ※ तासु चरित मनमहँ,सब गावा ॥
रही न भूख, तुमहिं, तब, काहू ※ नगर - जरावत. लीन्ह न खाहू ।
सुनत, नीक, आगे, दुख-पावा ※ अस-मति,मंत्री,तुमहिं,सुनावा ॥
खेलहिं - खेल, समुद्र, बँधावा ※ सहित-सैन, घर,उतरि-के,आवा ।
सुनहु, तात ! आदर-ते, मोका ※ मन,समुझहु न,मोहिं डर-पोका!॥

मीठी - बानी, बोलि, सुनाहीं * ऐसे-नर, अनेक, जग माहीं।
वचन-हितू, पर, सुनत कठोरे * सुनहिं,कहहिं,अस-नर,जग,थोरे॥
भेजहु, दूत, प्रथम, यह नीती * 'सीता'-देहु, करहु, फिर, प्रीती।
दोहाः—पायनारि, फिरि जायँ, जो, तौ, न बढ़ाइये रार।
९. नाहिं तौ, सनमुख, आइ रन, करि-हठ, दीन्हेउ, मारि॥
कहा, पिता! मानहु, जो, मोरा * दोऊ-भांति, सुजस, जग, तोरा।
रावनः-प्रहस्तहिं,तब,बोला, रिसियाई * दुष्ट! ऐस-मति,कौन सिखाई?॥
अबहीं-ते, संसय, मन, दैया! * बाँस-की-जर,तू,लागि-मकुइआ!।
कविः-सुनि,कठोर,और,बचन,भयंकर * कहत कठोर-बचन, धायो घर॥
प्रहस्तः-नीक-सलाह, न तोहि, सुहाई * मरनहार, नहिं, जैस, दवाई।
कविः-भई-सांझ - जाना, 'दससीसा' * गयो, भवन, देखत-भुज-बीसा॥
कँगूरे - पर, इक, स्थाना * होत अखारा, जहाँ, सुहाना।
तेहि - अस्थान, बैठि जा,'रावन' * लागे, सेवक, गुन-गन-गावन॥
बाजत, ताल, मृदंग, सुहाना * बीना, निरत, अपछरा - गाना।
दोहाः—सौ-'इन्द्रन'-सम, 'रावना', नित-नित, करत बिलास!।
१०. ऐस-बली-रिपु, सीस-पर, तहूँ, न, मन, कछु त्रास!!॥
इधर, उतरि, परबत, रघुबीरा * लीन्हें - सैना, भारी - भीरा।
देखा, सुन्दर, सैल - कँगूरा * ऊँच, बराबर, रँग-मँह-भूरा॥
तहाँ, फूल, और, पात, सुहाये *'लछिमन' रचि-रचि, हाथ, बिछाये।
तेहि-पर, धरि, सुन्दर मृग छाला * बैठे, आसन - करे, कृपाला॥
'कपि-पति'-गोदी, सिर-भगवाना * दहिने, बाएँ, धनुष, औ, बाना।
दोउ-कर-कमल, सुधारत बाना * फूँकत राय, 'बिभीषन', काना॥
बड़-भागी, 'अंगद', 'हनुमाना' * दावत-चरन-कमल,विधि-नाना।
प्रभु-पाछे, 'लछिमन', बीरासन * तरकस,कमर,बान-धनु,हाथन॥
दोहाः—दया-सील, गुन - धाम, प्रभू, यह विधि, राजत भाइ।
धन्य, ध्यान, जो, रूप-यह, राखत, हृदय - लगाइ॥

दोहाः—पूरब, देखा, जब प्रभू, उदय - चन्द्रमा - जानि।
११. रामः—"देखहु चंदहिं, निडर, जनु, सिंह", कहा-भगवान॥
पूरब, गिरि-की-गुफा, रहत यह * तेज,प्रताप-की-खानि,लगत यह।
अंधकार - गज - मस्तक फोरत * बन-अकास,यह,चमकत,डोलत॥
गज - मुक्ता, लागत सब तारा * मनहु रैन - नारी - सिंघारा।
कह, प्रभु, यह महँ कैस-सियाही?* कहउ, कहा है, मतहिं-बुझाई॥
सुग्रीवः–कह,'सुग्रीव',सुनहु,रघुराई! * पृथ्वी - छाया - कीन्ह -सियाही।
कविः–मारा राहु, कहत अस कोई * परी स्यामता, उर महँ, सोई॥
{ ब्रह्मा, काम - की - नारि बनाई * सार-भाग-चंदा-लिये, भाई!।
सोइ - छेद, हृदय - परि, भाई * परत, पाछे, आकास, दिखाई॥
रामः–कह,प्रभु,सिंधु, भाइ, यह केरा * अति-प्रिय बिष,हिं,दीन्ह,उर,डेरा।
आपन,बिष-भरि,किरिनि पसारी * जारत, बिरहवंत, नर - नारी॥
हनूमानः-दोहाः—कहा, 'पवनसुत', सुनु, प्रभू! चंद्र, आप-कर दास।
मूरति - स्यामल, आप - की, हृदय करत - निवास॥
कविः–दोहाः—हनूमान के बचन, सुनि, रघुबर हँसे, सुजान।
१२. दक्षिन - दिसि - कहँ, देखि के, बोले कृपा - निधान॥
रामः–देखु,'बिभीषन'! दच्छिन-ओरा * बिजुली, दमक रही, घन घोरा।
मधुर - मधुर गरजत, घन-घोरा * चाहत-गिरन,लगत-मोहिं,ओरा॥
विभीषणःकहा,'बिभीषन'सुनहु,कृपाला!* ना, बिजुली, ना, बादर-कारा।
लंक - कँगूरा - पर, अस्थाना * तहां, अखारा - रावन जाना॥
नीला - छत्र, बैठि, सिर - धारे * लगत-घटा, सोइ, बादर - कारे।
'मंदोदरि'-कुण्डल, और, झुमका *बिजुली-सम,सोइ लागत,चमका॥
बाजहिं ताल, मृदंग, अनूपा * मधुर-शब्द, सोई, सुर-भूपा!।
कविःप्रभुमुसुकानि,समुझि-अभिमाना* बान,चढ़ाइ, धनुष कहँ, ताना॥
दोहाः—दसहु-मुकुट, कुण्डल-सहित, क्षत्र, हते, इक - बान।
सब के देखत, गिरि परे, मर्म, न, कोऊ, जानि॥

राम-बान, अस - खेल-करि, लौटे, तरकस, आनि ।
१३. देखि-महा-रस - भंग, सब, रही सभा सकुचानि ॥

पृथ्वी - हली, न, आंधी - आई * दीख न कोउ हतियार-चलाई ।
सोचत, सब, निज-हृदय, बिचारी * असगुन भयो, भयंकर, भारी ॥
दसमुख देखे - सभा - डराई * कहा, हँसे, अस - जुक्ति बनाई ।
रावनः–गये सिरहु, जेहि-कहँ, कल्याना * गिरे-मुकुट, क्यों, असगुन जाना? ॥
करहु सयन, अपने घर जाई * गये, उठे, सबही, सिर - नाई ।
कविः–मंदोदरी, सोच, उर, बसेऊ * जब ते, कानन - भूषन गिरेऊ ॥
मंदोदरीःकह, आंसू-भरि, दोउ-कर-जोरी * सुनहु, प्रान-पति ! बिनती मोरी ।
बैर, राम ते, कंता ! त्यागहु * जानि-मनुष, मन, हठ, ना ठानहु ॥

दोहाः—विस्व - रूप, रघुनाथ, हैं, करहु, वचन, विस्वास ।
१४. अंग-अंग, जिन्ह, लोक-इक, वेद, बतावत, बास ॥

बृह्म - लोक, सिर, पद, पाताला * और-लोक, अँग - अंग - कृपाला ।
चलहिं भवैं, सो, जानहु, काला * सूरज, नयन; केस, घन-माला ॥
'अस्वनीकुमार', नासिका, जिन-की * पलक, चाल, जनु, रैन-औ-दिन-की ।
कान, दिसा - दस, वेद - बखानी * वायू, स्वास, वेद, जिन्ह-वानी ॥
ओंठ, लोभ, दांती, जम - राजा * माया, हँसी; भुजा, दिगपाला ।
मुख अगिनी; और, जभि है सिंधू * जिअन, मरन, पालन, मन-धंधू ॥
बन्सपती हैं, रोम अठारह * नस, नदी; और, हाड़, पहारा ।
पेट, समुद्र, नरक, गुप्त - इन्द्री * जग, प्रभु-रूप; कहा 'मंदोदरि' ॥

दोहाः—चित्त, तत्त्व; मन, चंद्र है; बुधि, 'बृह्मा'; 'शिव', गर्व ।
जड़, चेतन, सब महँ, रमेउ, राम - रूप - है - सर्व ॥

दोहाः—अस; विचारि, प्रभु ! राम-सन, प्रान-पती ! तजु, बैर ।
१५. प्रीति करहु, पद-राम-महँ, तोर - मोरहू - खैर ॥

रावनःहँसि, सो, कहा, वचन-सुनि, काना * मोह-की-माहिमा, अतिबलवाना ।
नारि-स्वभाउ, सत्य, सब कहहीं * आठ दोस, नारी महँ, रहहीं ॥

जलदी-बहुत, झूँठ, और, माया ❋ कुमति,छूत,भय,चपल,न-दाया ।
शत्रु-रूप, तेहि ते, तू, गावा ❋ भारी-भय-दिखाइ, डरपावा ॥
तुम जो कहे, सो गुन,बस-मोरे ! ❋ समुझा, आज, कृपा-ते-तोरे ! ।
जानेउं, प्रिय ! तोरि चतुराई ❋ कीन्ह, बुमाये, मोर-बड़ाई ! ॥
बानी गूढ़, कही, मृग-लोचनि ! ❋समुझत,दुसुख,सुनि,भय-मोचन।
कवि:–तब, 'मंदोदरि', निश्चय, जाना ❋दीन्ह,'काल',मति-नाथ,भुलाना ॥

दोहा:—रहेउ-बकत, अस, रात-भरि, भोर - भये, 'दस-सीस' ।
मद-ते-अंधा, और, निडर, गयो, सभा, 'भुज-बीस' ॥

सो०:—फूलत, फरत, न, बेंत, बरसहि-अमरित, बादरन ।
१६. मूरख - हृदय, न चेत, 'ब्रह्मा','शिवहू', गुरु-भये ॥

इधर, भोर, जागे रघुराई ❋ सब मंत्रिन ते, राय-मिलाई ।
राम:–कहहु, बेग,का करिय उपाई ? ❋ 'जामवंत' तब, कह,सिर-नाई ॥
जामवंत:-जानत-सब,तुम,गुन-की-खाना❋ सत्य, हृदय-बासी, भगवाना ।
कहउं सलाह, बुद्धि - अनुसारा ❋ दूत पठाइये, 'बालि-कुमारा' ॥
कवि:–भली-राय, सब के मन भाई ❋ 'अंगद' सन, बोले रघुराई ।
राम:–'बाली'-सुत!बुधि-बल-गुन-धामा❋ 'लंका',जाहु,तात!मम-कामा! ॥
कहउं कहा, तुम ते, समुझाई ❋ परम-चतुर,जानउं,तोहि,भाई ! ।
काज-मोर, उहि कर हित, होई ❋ कीन्हेउ, बात-चीत, जा, सोई ॥

सो:०—प्रभु-आज्ञा, धरि, सीस, बंदि-चरन, 'अंगद' उठेउ ।
अंगद: — गुन-सागर, सोइ, ईस !, आपु, कृपा, जेहि पर,करइं ॥
कवि: — सो०:—सिद्ध, आपुही, काज, सौंपि मोहिं, आदर-कियो ।
१७. अस विचार, 'जुव-राज', तन-पुलकित, हर्षित-हिये ॥

कवि:–बंदि चरन, धरि, उर, प्रभुताई ❋ अंगद, चलेउ, सबहिं,सिर नाई ।
प्रभु-प्रताप, हृदय, नहिं-संका ❋ रन-धारी, 'बाली-सुत', बंका ॥
पैठत 'लंका', रावन-बेटा ❋ खेलत रहा, सो, हुइ गइ भेंटा ।
बातहि-बात, बात, बाढ़ि-आई ❋ दोउन, बल, और ज्वानी छाई ॥

तेहि, 'अंगद' कहँ, लात उठाई * गहि पद,पटकेउ, भूमि, घुमाई।
निसिचर, देखे जोधा भारी * जहँ-तहँ,छिपत,न सकत पुकारी॥
एक, एक-सन, मरम, न कहहीं * देखि, मरा-सुत, चुप हुइ,रहहीं।
भयो कोलाहल नगर-मँझारी * "आवा कपि,जेहि,लंकाजारी"!॥
"करहि कहा, देखहु, करतारा"! * सोचत, डरपत, करत विचारा।
बिनु-पूँछे, मग, देत, बताई * जेहि कहँ देखत, जात सुखाई॥

दोहाः—चरन-कमल-प्रभु, सुमिरि कर, गयो, सभा के द्वार।
१८. मनहु, सिंह, चितवत - भयो, धीरज-बल-भंडार॥

तुरत, निसाचर, एक, पठावा * खबरि, जाइ, 'रावनहिं, सुनावा।
रावनःसुनत, हँसा, बोला,'दसकंधर' * लावहु, देखउं, कहां-का-बंदर!॥
कविः—आज्ञा पाइ, दूत, बहु, धाये * कपि,गज-जनु भीतर, लइ आये।
'अंगद' देखा, रावन, ऐसा * पर-प्रान, काजल गिरि, जैसा॥
भुजा,वृक्ष, सिर, चोटी-गिरि-की * रोमावली, बेल रहीं, तिनकी।
मुख,और,नाक,नयन,और, काना * गिरिकीगुफा, औ,खोहसमाना॥
जात सभा, मन, तनिक न मैला * बांका, बली, 'बालि-सुत', छैला।
उठी, सभा, सब, कपि कहँ देखी * भा,'रावन'-मन,क्रोध, बिसेखी॥

दोहाः—मस्त-हथिन-के-बीच, जस, पहुँचि, सिंह,कोउ, जाय।
१९. राम-केर-बल, मन, सुमिरि, बैठि, सभा, सिर नाइ॥

रावनः-पूँछा, रावन, को तू बंदर? * कहा, दूत-रघुबर, दस-कंधर!।
अंगदः-'बालि'-तोरि-बिच,रही मिताई * आयों, तोरे हित ही, भाई॥
उत्तम-कुल, "पुलस्त्य"-कर नाती * 'बृह्मा', 'शिव', पूज, बहु भांती।
पावा बर, कीन्हे सब काजा * जीते लोकपालि, और राजा॥
राज-घमंड, कि, मोह ते, भ्राता! * हरि लायो,'सीता', जग-माता।
अब,सुभ,कहा, करउ, तुम, मोरा * सब अपराध,छमहिं,प्रभु, तोरा॥
दांतन, तिनका, कंठ, कुलहरी * संग, कुटुँभी, कुल-की-नारी!।
जनक-सुता, करि, सादर, आगे * यहविधि,चलहु,सकल-भय-त्यागे॥

दोहाः—"सरन पाल, रघुवंस-मनि," कहेउ 'कि राखहु मोहि'।
२०. दुःख-भरे, अस, वचन सुनि, करहिं निडर, प्रभु, तोहि॥

रावनःबोलत, सँभरि न, बंदर बच्चे ! * मो-ते, भये, देव हू, कच्चे !।
पिता-नाम, तौ, देहु, सुनाई * केहि नाते, मित्रता, बताई ?॥
अंगदः—'अंगद',नाम,'बालि'-कर-बेटा * ता सों, भई, कबहुँ,तोहिं-भेंटा?।
रावनः—अंगद-बचन-सुन सकुचाना * हां!हां!रहा'बालि',इक, जाना !॥
अंगद!तुही, 'बालि' कर-बालक ? * उपजा, बंस-जार, कुल-घालक!।
गिरा न गर्भ, वृथा, तुहिं ज्यावा * तपसिन-दूत, आइ कहिलावा॥
अब,कहु कुसल,तौ,'बाली'रहई ? * हँसि, बोला'अंगद',अस कहई।
अंगदःदस-दिन-बाद 'बालि' पहँ, जाई * आपुइ, पूँछेउ, हृदय-लगाई॥
राम-ते-बैर, कुसल, जस, होई * कुसल, तहां,कहि है,सुख, सोई।
फरक परत, शठ ! हृदय, ता के * श्री-रघुवीर, हृदय नहिं,जा के॥

दोहाः—हम कुल-घालक, और, तुम, कुल-पालक, 'दस-सीस'।
२१. कहत न, आँधर,बहिर, अस, कान, नैन, भुज, बीस !!॥

'शिव''बृह्मा',और,मुनि,सब,भाई! * चाहत, जासु-चरन, सेवकाई।
तासु, दूत हुइ, मैं, कुल-बोरा * यह मति!हृदय,फटतनहिं,तोरा॥
सुनि, कठोर-बानी, कपि-केरी * कहत 'दसानन', नयना-फेरी।
रावनःखल! सब बचन कठोर,मैं,सहऊं * नीति,धरम, मैं, जानत अहऊं॥
अंगदः—कह कपि, धर्म-सीलता, तोरी * सुनी, करत-नारिन-की-चोरी !।
आंखिन, दीख, दूत-रखवारी * बूड़ि,न मरत,धरम-वृत-धारी!॥
नाक-कान-बिनु, बहिन, निहारी * छमा कीन्ह,तुम,धरम-बिचारी!।
धरम-सीलता, अह, जग, जागी * महूं, दरस पा, भा, बड़-भागी!॥

रावनः—दोहाः— मूर्ख-जीव,कपि ! क्यों बकत, मोरि भुजा, तौ, देखु।
लोक-पाल-बल-चंद्र कहँ, 'राहू' बनी, बिसेख॥

दोहाः— फिर, मोरे-कर-कमल-पर, झील-रूप-आकास।
२२. सोहा, बीच-मा, हंस, लइ, शंभू-और-कैलास॥

कहु, तौ, अंगद ! तोरी सैना * मो ते भिरइ, आनि, कोउ,है ना ।
राम, तौ, नारि-बिरह, बल खोवा * राम-दुखित-कहँ, 'लछिमन' रोवा॥
पेंड़, नदी-तट, तुम, 'सुग्रीवा' * भाइ - मोर, डरपोका - जीवा ।
'जामवंत', अति - बूढ़ा - वाढ़ा * सकत न,रन महँ,अव,हुइ ठाढ़ा॥
'नल',और,'नील',तौराज-समाना* बली, एक कपि, हां! 'हनुमाना' ।
पहिले, आइ, नगर, जेहि, जारा *सुनि,हँसि,बोला,'बालि-कुमारा' ॥
अंगदः-सत्य कहउ,रावन ! बल-धारी * सांचु ! कोउ कपि, लंका जारी ? ।
रावन-नगर, छोट-कपि जारहि ! * झूँठा तू,कछु,समुझि न आवहि!॥
कहत, जौन-कपि, 'लंका'-जारा * सो, 'सुग्रीव' - छोट - हलकारा ।
चलइ बहुत, सो, बीर न होई * लेन खबरि, हम भेजा, सोई ॥

दोहाः—अब, जाना, जारा नगर, कपि, बिनु-आज्ञा-पाइ ।
फिरि न गयो, 'सुग्रीव'-पहँ, तेहि-डर, रहा लुकाइ ॥

दोहाः—सत्य कहेउ, दस-कंठ ! सब, क्रोध कछु, मन-माहिं ।
तुम ते लरि, कोऊ, नहीं, सैन, जो, सोभा पाहिं ॥

दोहाः—अपन-बराबर ते-करइ, बैर, प्रीति, अस-नीति ।
मारहि, सिंह, जो, मेंडकन्ह, कौन सी, भारी, जीति ॥

दोहाः—हलकापन है, दोसहू, प्रभु कहँ, मारे तोहि ।
तहूं, कठिन, दस-कंठ ! सुनु, छत्री-की-रिसि-होहि ॥

कविः—दोहाः—ठेढ़-जुक्ति के धनुष से, लागे, वचन के-बान ।
उत्तर-सडसिन्ह-ते, मनहु, अस खींचत, खिसिआन ॥

रावनः—दोहाः—हँसि, बोला, दस-मुखी, अस, कपि कर गुन, बढ़, एक ।
२३. पालन - हारे - हेतु, वह, करत - उपाय - अनेक ॥

सो कपि,धन्य,जो, प्रभु-के-काजा * नाचत, जहँ-तहँ, छोंड - लाजा ।
नाचि, कूदि कर, लोग-रिझाई * पाति-हित, दिखलावत चतुराई ॥
'अंगद' ! जाति-तुम्हारि, गुलामी * काहे न,अस, बरनउ,गुन-स्वामी ।
मैं, गुन-गाहक, परम-सुजाना * दोस-तुम्हार,धरहुं नहिं ध्याना ॥

अंगदः-कह 'अंगद',गुन-गाहक, कैसे! * 'हनूमान'-कह, जाना, तैसे !।
बाग - उजारा, पुत्रहु - मारा * तहूं न. तेहिकर,आपु, बिगारा ॥
सोइ-सुभाउ,तोरा, लखि, भाई ! * महूं, ढ़िठाई, कीन्ही, आई ।
कपि,जो, कहा, सो, आगे, आवा *लाज,न,क्रोध,न,तुम खिसिआवा॥
रावनःहोतन,असमति.पितहिं,खात,कस!*तब,'रावन',दीन्हाअसकहि,हँसि
अंगदः–पितहिं खाइ,खातेउं. मैं. तोही * पर. अस,मन महँ,संसय होई ॥
तुम्हरे-अंग, बसेउ बाली - जस *नीच!अभिमानी!हतउं,तोहि,कस।
हैं, रावन ! जग रावन, केते ? * मैं, जो-सुने, सो-रावन. एते ! ॥
जीतन 'बलि', इक, गा, पाताला * लरिकन,बांधि रखा,घुड़-साला ।
खेलहिं बालक, मारहिं जाई * दया लागि 'बलि'दीन्ह छुड़ाई ॥
सहस-भुजा, इक रावन, देखा * पकरि, दौरि, जनु जंत,बिसेषा ।
खेल-हेत, सो, घर, लइ, आवा * सो,'पुलस्त्य'मुनि,जाइ छुड़ावा ॥
दोहाः—दबा, 'बालि' की बगल महं, रहा, एक कहु - आन ।
२४. तिन्ह महँ, रावन, कौन तू. कहउ, बिना सकुचानि ॥
रावनः-सुनु,शठ!सोइ रावन,बलवाना * जेहि कर बल, कैलासहि जाना ।
कस मैं सूर, सो, शंकर जानत * जिन्ह पूजा,सिर-फूल-चढ़ावत ॥
सिर-कमलन-कहँ, हाथ, उतारी * बहुत-बार, पूजा 'त्रिपुरारी' ।
भुज - महिमा, जानत दिगपाला *छिदत,आज लग,जिन्ह-उर,भाला॥
जानत दिग्गज, उर - कठिनाई * जब-जब,हठ-करि,भिरा,मैं,जाई ।
जिन के दांत, कबहुं नहिं फूटे * लगे छाती, मूरी सम, टूटे ॥
जासु-चले, पृथ्वी अस हालत * लघु-नौका, गज-मस्त-चढ़ावत ।
जग, प्रताप-जानत, सोइ-रावन ! * बकवादी!का,सुना न कानन ? ॥
दोहाः—तेहि रावन कहँ, छोट-कहि, नर-गुन कीन्ह बखान ।
२५. बकवादी ! बढ़-खोंट, तू !, खुला, तोर, अब, ज्ञान ॥
अंगदः-सुनि,'अंगद',करि-रिसि,कहबानी*बोलु,सँभारि,नीच,अभिमानी!।
'सहस-बाहु'-भुज-बनहिं, अपारा * जारइ, अग्नी - जासु-कुठारा ॥

फरसा-सिंधु, तेज, जेहि धारा * बहुतक नृप, बूड़, बहु-बारा।
'परसुराम कर गरवहु भागा * जिन्ह,देखे,नर-कहत,अभागा! ॥
कहत, राम - नर, कैसे, नंगा! * 'काम',भील,कोउ,नदी,'गंगा'!।
'काम-धेनु',पसु, कल्प-वृक्ष, जड़! *अमरित,रस,कोउ,दान,अन्न-बाढ़ि!॥
पच्छी, 'गरुड़','शेष',कोउ,अजगर! * 'चिंतामनि', साधरन-पाथर!।
मूढ़! लोक, कोउ, कह, बैकुंठा! * राम-भक्ति-फल,कह इक,मुद्दा!॥

दोहा:—सैन-सहित, अभिमान-माथि, बन-उजारि, पुर-जारि।
२६. कस, 'हनुमानहिं',कहत कपि, गयो, तोर - सुत-मारि॥

सुनु, 'रावन'! तजि, सब-चतुराई * भजत, काहे, नाहीं, रघुराई।
जो, खल! भयो, राम-कर-द्रोही * 'बृह्मा''शिव'रखिसकहुँ,न,तोही॥
मूढ़! न वृथा, बजावहु गाला * राम-बैर-ते, हो, अस हाला।
तोरे सिर, बानरन - के - आगे * गिरइँ, राम - के - बानन-लागे॥
तिन्ह - मूड़न - ते, गेंद - समाना * खेलइँ, भालू, कपि, चौगाना।
कराहिंजो,रिसि,रन-महँ,रघुनायक * आवहिं बान-कठिन,नालायक!॥
तबहुँ, चलइ का, गाल, तुम्हारा! * अस विचारि,भजु,राम,उदारा!।
कविः—सुनि-अस,'रावन',गयो पजारा * ज्वाला, जरत, मनहु, घी-डारा॥

रावनः-दोहा:— 'कुंभकरन' - सम - भाइ, और, 'इन्द्र' - शत्रु - सम, पूत।
२७. जीति-चराचर, अपनि बल, सुना, मोहिं नहिं, छूत!!॥

शठ! बानर-सब-जोरि, सहाई * बाँधा - सिंधु, यही - प्रभुताई?।
पच्छी हू, समुद्र, तौ, लांघत * जड़-कपि!सो,नाहिं,सूर-कहावत॥
इन-भुज-सागर, बल-जल पूरा * बूड़, जेहि महँ, सुर, नर, सूरा।
बीस - समुद्र, अथाह, अपारा * को, अस वीर, जो, पइहै-पारा॥
दिगपालन ते, जल भरिवावा * राजन-जस, का, मोहिं, सुनावा।
जो, रन-वीर-होत, कपि-नाथा *जेहिकर-गुन,तुम,फिर-फिर,भाखा॥
तौ, दूतहिं, पठवा, केहि-काजा? * रिपु-सन,प्रीति करत,नाह लाजा।
देखु, भुजा! जिन-माथि-कैलासा *तव!चढ़ायो,प्रभु-अपन,अकासा!॥

दोहाः—सूर, कौन, दस - सीस - सम, हाथन, काटे - सीस ! ।
२८. दीन्ह आहुती, अग्नि महँ, 'शिव' साखी, जड़-कीस !! ॥
दीख, जरत, जब, अपन-कपाला * देखेउँ, करम-के-अच्छर, भाला ।
नर के हाथन, मरन, बाँचि-करि * समुझा, झूँठे, विधिना-अच्छर ॥
समुझि-सोउ ,रह, मैं, मन-फूले * 'बृह्मा', बूढ़, लिखा-अस, भूले ।
बीर, बली, को, मोरे - आगे ! * जाहि मरा हत, लाज, तु, त्यागे !॥
अंगदः–'रावन'!तो-सम, लज्जा-वारा! * परत दिखाइ, नहिं, संसारा ! ।
लाज, तोर तौ, सहज - स्वभाऊ *निज-मुख,निज-गुन,कहत न काऊ॥
सिर-कैलास-कथा, चित रही * बीस-बार, ता ते, तुम कही ! ।
छाती-चीरि,सो-बल,धरि लीन्हा *जेहिते,फतह,'बालि''बलि'कीन्हा॥
मूरख ! दे, अब, उत्तर, पूरा * काटे-सीस, भयो, कोउ, सूरा! ।
बाजीगर, नहिं बीर - कहावत * सब सरीर,जो,काटि,दिखावत ॥

दोहाः—जरत पतिंगा, मोह-बस, गदहा, बोझ उठाहिं ।
२६. मूरख ! मन महँ, सोचु, तौ, वे, नहिं, बीर, कहाहिं ॥
छांड़, दुष्ट ! अब, बात बनाना *मानि वचन,दे, तजि, अभिमाना ।
रावन ! मैं, बनि दूत न आवा * यह विचारि, रघुबीर पठावा ॥
श्री-मुख, राम, कहा, सौ बारा * सिंह,कौन जस, मारि सिआरा ।
मन महँ,समुझि बचन, प्रभु केर * बचन कठोर, सहे, मैं, तेरे ॥
तोरि, दुष्ट ! नहिं तौ, मुख तोरा * लइ जातेउं, सीता, बर-जोरा ।
रे, सुर-शत्रू, सब बल जानत * सूने, तू, पर-नारि, चुरावत ॥
तोहिं,राछस पतिकर,अभिमाना! * दूत-(राम-सेवक) मोहिं जाना ।
रघुपति, दीन्ह न आज्ञा, डरऊं * अस व्यवहार, नहीं तौ, करऊं ॥

दोहाः—मारि सैन, तो कहँ पटकि, करि चापट सब गाउं ।
३०. तोरे घर की, नारि सब, सिय हित, लइ जाउं ॥
करहुँ पेम, तौ, कहा बड़ाई * मरे, मारि कर, कह जस, भाई ! ।
कामि, सराबी कृपन, औ मूढ़ा * दारिद्री, हत्यारा, बूढ़ा ॥

सदा रोग-बस, जो-नित - क्रोधी * बिष्णु, संत, और बेद बिरोधी ।
पापी, चुगिल, देह-निज-पालत * चौदह जीव, मरे-सम, लागत ॥
अस विचारि, खल, हतउं न, तोहीं ! * अब, रिसि, मत बढ़ाइ, तू, मोही ।
कविः-कह, रिसि कीन्हें, राक्षस-नाथा * काटि ओंठ, और मींजे हाथा ॥
रावनः-बानर ! नीच, मरन, अब, चाहत * छोटे मुँह, बढ़ बात निकासत ।
करहि बात, रे कपि, बल, जाके * बल, प्रताप, बुधि, तेज, न, ता के ॥

दोहाः— गुन, न, मान, अस समुझि कर, दीन्ह, पिता, बन-बास ।
सो दुख, तेहि कहँ, नारि-दुख, मोरा डर, फिर, खास ॥

दोहाः— जिन्ह के बल का, गरब, तोहि, ऐसे पुरुष, अनेक ।
३१. खात, निसाचर, रात-दिन, मूरख ! दे तजि टेक ॥

कविः-रामहिं, बुरा कहा, जब, रावन * लागि, क्रोध, अंगद-तन, जारन ।
शिव-हरि-निंदा, सुनइ, जो, काना * गऊ - मारे के पाप समाना ॥
कटकटाइ, हाथी, जनु, उठि के * तमकि, दोउ भुज, धरती, पटके ।
पृथ्वी कांपि, लोग, गिर लागे * डर की पवन लगे, सोइ, भागे ॥
बचा, गिरत, सँभरा, दस-कंधर * धरती, गिरे, मुकुट, अति सुन्दर ।
कछु, रावन लइ, धरि सिर, देखे * कछु, अंगद लइ, प्रभु पहँ, फेंके ॥
आवत, बानर, मुकुट निहारे * भागे, जनु, दिन, टूटे तारे ।
कै, रावन फेंके, हुइ क्रोधित * बज्र चार, जनु, आवत, दौरत ॥
रामः-कहा, राम, मत, हृदय, डराहू * तारे, बज्र, न, केत, न राहू ।
रावन के, यह मुकुट, हैं, भाई * अंगद, दीन्हा, इनहिं, चलाई ॥

दोहाः— हनूमान, हाथन, गुपकि, लइ आये, प्रभु-पास ।
दीख तमासा, भालु, कपि, सूरज-कैस-प्रकास ॥

दोहाः— क्रोध किये, रावन, उधर, सब सन, कहत, रिसाय ।
३२. "देहु, मारि, कपि, पकरि के", अंगद, सुनि, मुसुकाय ॥

रावनः-यह बिधि, जोधौ! दौरहु, धावहु! * खाहु, भालु, कपि, जहँ-जहँ, पावहु ।
पकहु कपि, जग, ना, रहि जाई * जिअतहि, पकरहु, दोऊ भाई ॥

अंगदःफिर,रिसि लाय,कहा जुव-राजा* गाल बजावत, लगत, न लाजा ! ।
काटि गुदी,मरि जा,कुल-घाती ! * देखत बलहु, न फाटत छाती ॥
स्त्री-चोर, कुचाली, कामी ! * दुष्ट, मंद-मति, पापन-खानी ।
परे सन्ध, अस वचन, निकासत * मरदुम-खोर,मरन,अब, चाहत ॥
यह कर फल, तव, पइहौ, बेटा ! * लगइं, रीछ, बानरन-चपेटा ।
रामहु, नर, बोलत, अस बानी * गिरत न जीभ, तोर,अभिमानी ॥
दसहु जीभ, गिरहइं, सक नाहीं * सिरन सहित, मैदानहिं माहीं ।

सो०ः—सोऊ, नर, दसकंध ! एक तीर, 'बालिहिं', हतेउ ! ।
बीसहु आंखिन-अंध, थू ! अस जनम, कुजाति, जड़ !! ॥

सो०ः—तोर रकत की प्यास, राम-के-आनन कहँ लगी ।
३३. मारत नहिं, सोइ त्रास, बकवादी, राक्षस, अधम ॥

तोर दांत, मैं, तोरन-लायक * कही होत, जो, कहुं,रघुनायक ।
अस रिस आवत,दस मुख,तोरहुं!* धरि लँका, समुद्र महँ, बोरहुं ॥
गूलर सम, यह, तोरी लंका * कीड़ा सम, तुम रहत असंका ।
मैं, बानर, फल खात, न, देरी ! * कह करुं,नहिं आज्ञा,प्रभु केरी! ॥
रावनःकह रावन, कस, बात बनाई ! * मूढ़ ! सीख, कहँ ? पेस भुठाई ! ।
बालि',न कबहुं,गाल, अस, मारा * रहि,तपसिन महँ,भयो लबारा ! ॥
अंगदःमैं,लबार, सांची मति, पोरी * जीभ, न, दसहू, खींचहुं, तोरी ।
राम-प्रताप,सुमिरि,कपि,हुइ रिसि*सभा-बीच,पद, अपन, गड़ाइस ॥
दुष्ट ! सकइ जो यह पद टारी * लौटहिं राम, सिया, मैं, हारी ।
रावनः-जोधहु!सुनहु,कहा दस-सीसा * पकरि पाउं, धरि मारहु,कीसा ॥
कविः-इन्द्रजीति सम,बहु, बलवाना * हर्षि, उठे, जहँ, तहँ, भट नाना ।
झपटहिं, करि, बल, बहुत उपाई * टरइ न पद, बैठहिं, सरमाई ॥
झपटहिं,फिरि,उठि,देवन-दुसमन *कपि-पद,जाना नहिं,पर,खिसकन ।
पुरुष, कुजोगी, जस, बलिहारी * मोह-वृक्ष, नहिं सकइ उखारी ॥

दोहाः—मेघनाद सम, बहुत भट, देखि, उठे, हर्षाय ।
झपटहिं, टरइ न, कपि-चरन, बैठइं आ, सरमाय ॥
दोहाः—भूमि, न-छांडत, कपि-चरन, रिपु-घमंड, गा. भागि ।
३५. कोटि विघ्न के परत, जस, संत, नीति, नहिं त्याग ॥

कपि-बल देखि, सकल, हिय हारे * उठा आपु, अंगद - ललकारे ।
अंगदः-पकरत पद, कहा 'बालि-कुमारा' * इन चरनन, नहिं, तोर उबारा ॥
पकरि न, राम-चरन, शठ ! जाई * लौटा रावन, सुनि, सकुचाई ।
कविः–सोभा गई, गयो, अस सरमा * दुपहर भये, जैम, चंदरमा ॥
बैठा, सिंहासन, सिर नाई * मानहु, संपति, सकल, गंवाई ।
जगतातमा, प्रान - पति, रामा * करे बैर, कम, हो, बिश्रामा ॥
उमा ! राम के, भवें चलाये * पृथ्वी, उपजइ, और नसाये ।
पाथर, घास, घास, करे पाथर * तासु-दूत-प्रन, सकत कहुँ, टरि ॥
फिर, कपि, कही नीति, विधि नाना * मानइ कस, कि, काल नगिचाना ।
तोरि गरव, प्रभु-सुजस सुनावा * अस कहि, चलेउ, बालि-का-जावा ॥
अंगदः-रन, मारहुं न, खिलाइ, खिलाई * बात कहा ! नहिं करत बड़ाई ! ।
कविः–पहिले हि, रावन-सुत, रह मारा * सो सुनि, रावन, भयो दुखारा ॥
सब राक्षस, अंगद - प्रन देखी * भई हृदय, बे-कली, विसेखी ।
दोहाः—करे चूरि, रिपु केर बल, बालि - पुत्र, बलवान ।
तन पुलकित, जल, नयन भरि, पकरे पद - भगवान ॥
दोहाः—जानि सांझ, दस-सीस, तब, गयो, भवन, बिलखाय ।
३५. मंदोदरी, निसाचरहिं, बहुत कहा, समुझाय ॥

मंदोदरीः-तजहु कुमति, मन, समुझे, कंता * लरे, राम ते, अब, नहिं बंता ।
पंच-बटी, करी, लछिमन, रेखा * सोऊ, लांघि सका नहिं, देखा ! ॥
जीतन चहत, वाहि, सँग्रामा * जेहिकर दूत, कीन्ह, अस-कामा ।
लांघि सिंधु, इक, खेलहिं, जाना * लंका, घुसेउ, निडर, हनुमाना ।
हति - रखवारिन, बाग उजारा * देखत, मारा, 'अक्ष - कुमारा' ॥

कीन्ह राख, सब, नगरी, जारा * तब,यह बल,कहँ, रहा,तुम्हारा ! ।
क्यों, पिय ! झूंठे, गाल बजावहु * मैं, जो कहा,हृदय:सोइ,लावहु ॥
रामहिं, कोउ राजा, मत मानहु * बली, चराचर - स्वामी, जानहु ।
बान - तेज, 'मारीचा' जाना * तेहि कर,नीच!कहा, नहिं माना ॥
जनक - सभा, जुरे, राजा, सारे * तहां, रह, तुम हूँ, बल - वारे ! ।
तोरि धनुष, जानकी बियाही * जीतन चाहत,रन महँ, ताही ! ॥
जानत बल,'जयन्त', सोउ, थोरा * छांड़ा, जियत, नयन,इक, फोरा ।
सूपनखा की, गति, तुम देखी * तहूं, हृदय, नहिं लाज, बिसेखी ॥

दोहाः—बधि'विराध','खर','दूषन'हिं, खेलहि, हतेउ 'कवंध' ।
३६. एक बान, 'बाली' हतेउ, समुझहु, अस, दसकंध ॥

बँधवायो, सागर कर पुल, जो * लाये सैन, 'सुबेलाचल', जो ।
दयावान, सूरज - कुल - झंडी ! * भेजि दूत, हित तोर, घमंडी ! ॥
बीच-सभा, बल,चूरि कियो, अस * हाथिनमहँ,घुसि, सिंह,करइ,जस।
दूत 'पवन-सुत', 'अंगद', जा के * रन महँ, सूर, वीर अति, बांके ॥
फिरफिर,पिय!ताहि कहँ,नर,कहहू * वृथा, मान, ममता, मद करहू ।
कंत ! राम ते बैर बढ़ावत * काल-फँसे,कछु,समुझ न,आवत॥
लइ डंडा, केहु, काल, न मारा * हरत धर्म, बल, बुद्धि, बिचारा ।
आवहि, काल, निकट जेहि, साईं * ताहि,होत भ्रम, तुम्हरी नाईं ॥

दोहाः—दुइ सुत मारे, पुर जरेउ, अब तौ, उत्तर देहु ! ।
३७. कृपासिंधु, रघुनाथ, भजि, उज्जल - जस, पिय ! लेहु ॥

कविः—नारि-वचन,सुनि, बान समाना * भये भोर, गा, सभा, सयाना ।
जाय, बैठि, सिंहासन, फूले * अति घमंड ते, सब डर भूले ॥
इधर, राम, अंगदहिं, बुलावा * आये, चरन-कमल, सिर नावा ।
लइ, कृपालु, ढिग ही बैठारे * कह, हँसि, राक्षस-मारन - हारे ॥
रामः—अंगद ! लगत तमासा, मोही * सत्य कहउ, मैं, पूछत तोही ।
राक्षस - कर - सिरमौर कहावत * भुज-बल तौल न,सबजग जानत ॥

तासु मुकुट, तुम, चार, चलाये * कहउ,तात,सो,केहिं बिधि,पाये।
अंगदः-जानत-सब, भगतन-सुखकारी * मुकुट नहीं, राजा - गुन-चारी ॥
'साम','दाम',और,'दंड','विभेदा'* राजा - हृदय, बसत, कह वेदा।
नीति - धरम के चरन सुहाये * अस,जियजानि नाथ-ढिंग,आये॥

दोहाः—छूटि धर्म - प्रभु, चरन तजि, काल के बस दस-सीस।
ताहि छांड़ि, सब गुन चले, सरन - कौसलाधीस ॥

कविः-दोहाः— कपि - चतुराई, कान, सुनि, हँसे राम, भगवान।
३८. तब, लंका की खबर, सब, अंगद कही, बखानि ॥

समाचार रिपु के, अस, पाये * सब मंत्री, प्रभु, पास, बुलाये।
कविः-पोढ़े, लंका - चार - दुआरा * गलइ दाल,कस्म, करहु विचारा॥
रामः-जामवंत, सुग्रीव, विभीषन * सुमिरि, हृदय,सूरज-कुल-भूषन।
करि विचार, सब, राय मिलाई * कपि - दल, टोली, चार बनाई॥
लायक - सेनापति, चुनवाये * टोली - नायक, फिर, बुलवाये।
प्रभु-प्रताप कहि, सब समुझाये *सुनि,कपि,गरजि गरजि कं धाये॥
खुस-खुस,राम-चरन,सिर नावहिं * लइ, पहाड़-चोटी, सब, धावहिं।
गरजत, किलकत, भालु, कपीसा * 'जय रघुवीर, कौसलाधीसा'॥
पोढ़ किला, समुझे, मन, लंका * चले राम-बल, जी, नहिं संका।
चारहु दिसि ते, लंका घेरे * मुखन, बजा, बाजे, बहुतेरे॥

दोहाः—राम - लषन की जय, करत, सुग्रीवहु की जय।
३९. बल - खानी, गरजत कपी, भालू, मन, नहिं भय॥

लंका, भयो कोलाहल, भारी * सुनी दसानन, अति अहंकारी।
रावनः-देखहु, बनरन केर ढिठाई! * हंसि, कहि, आपुन-सैन बुलाई॥
आये कपि, जनु, काल के घेरे * राछस, सब, भूखे हैं, मेरे।
कहि अस, जोर से, ठट्टा मारा * घर बैठे, बिधि, दीन्ह अहारा।
सब जोधा, चारहु दिस, जावहु * पकरि,पकरि भालू,कपि,खावहु॥
कविः-उमा,!रावनहिं,असअभिमाना* सोय, टिटिहरी, चित्त उताना॥

आज्ञा पाये, चले निसाचर * 'भिंडिपाल', 'सांगी', लीन्हें, कर।
'परिघ', 'त्रिसूल', लिये 'तलवारा' * 'परसा', कोउ, पहाड़, उखारा॥
लाल - पाथरन - ढेर, निहारी * दौरे, खान का, मांस-अहारी।
टूटहि मुख, अस, हृदय, न जाना * दौरि परे, राक्षस, अंजाना॥

दोहाः—भांति, भांति, हथियार लइ, राक्षस, अति बल-बीर।
४०. किला - कंगूरन, चढ़ि गये, कोटि, कोटि, रन-धीर॥

किला - कँगूरन, सोहत कैसे * भे, सुमेरु पर, बादर, जैसे।
बाजत, ढोल, निसान, लराई * जोधन, चाउ, सुनत, अधिकाई॥
बजत नफ़ीर, नगार, अपारा * डरपोकन-मन, होत दरारा।
जात, दीख, नाहिं, टट्ट, कपिन के * बीर भालु, अजगर तन, जिनके॥
धावत, गिनत न, औघट-घाटा * परबत फोरि, बनावत बाटा।
कटकटाहिं, सब योधा, गरजाहिं * पीसदांत, उछलाहिं, औरं, कूदहिं॥
उत, रावन, इत, राम - दुहाई * 'जय' 'जय' कहि, भइ, सुरू लराई।
राक्षस, जो ही, सिखिर, उहावहिं * कपि, सो, पकरहिं, लौटि, चलावहिं॥

छंदः—लइ गिरिन-खंड, प्रचंड, भालू, कीस, गढ़ पर, डारहीं।
झपटहिं, गहहिं पद, पटकि धरती, उठत, फिर, ललकारहीं॥
कस, ज्वान, फुरतीले, तड़पि, जनु तेज, गढ़, पर, चढ़ि गये।
चढ़ि, भालु, कपि, घर, बरन, जहँ, तहँ, राम-जस, गावत भये॥

दोहाः—एक एक राक्षस, पकरि, नीचे - अपन पराय।
४१. जोधा, ऊपर, आपु, रहि, गिरत, भूमि महँ, आय॥

राम - प्रताप, प्रबल, ते, कपिचर * निसिचर-झुंडन, मींजत, धरि-धरि।
चढ़े, क़िला पर, जहँ, तहँ, बानर * सूर्य-प्रताप, कहत, 'जय रघुबर'॥
भाजत निसिचर, जान बचाई * पवन, मनहु, बादर, बिखराई।
हाहाकार, भयो, पुर, भारी * रोवत, बाल, अपाहिज, नारी॥
सब मिल, देत, रावनहिं, गारी * करत राज, मुख, मौत पुकारी।
बिचलत सुना, जबहिं, दल, काना * लौटाये, योधा, रिसिआना॥

रावनः-रन ते भाज, जो,मैं,सुनि पइहौं * यह तलवार के नीचे, लइहौं।
सरबसु खाइ, भोग, करि, नाना * देत प्रान, नाहिं, जा मैदाना ! ॥
क्रोध-बचन सुनि, सबहि डराने * लौटे, रिसि करि, बीर, लजाने।
सनमुख मरे, वीर की सोभा * तजा,जानि अस, प्रानन-लोभा ॥
दोहाः—जोधा लइ हथियार, बहु, भिरे आय, ललकारि।
४२. कीन्हें, व्याकुल, भालु कपि,'पराधि' त्रिसूलन मारि ॥
कोउ कह,कहँ ? अंगद हनुमाना ! *कहँ!'नल',नील,'दुविद',बलवाना।
बिचला दल, जाना हनुमाना * पच्छिम द्वार, रहा, बलवाना ॥
मेघनाद, तहँ, करत लराई * टूटि न द्वार, रही कठिनाई।
हनूमान-मन, भा, अति क्रोधा * गरजा,प्रबल काल सम, जोधा ॥
कूदि, लंक - गढ़ - ऊपर, आवा * लइ गिरि, मेघनाद पर धावा।
तोरा रथ, और, मारि सारथी * दीन्ह लात, निसिचर के छाती ॥
और-सारथी, बिकल, जो, पावा * रथ महँ, डारि, घरहि लै, आवा।
दोहाः—अंगद सुना, कि, पवन-सुत, गढ़ पर, चढ़ा, अकेल।
४३. बांका, रन-महँ, बालि-सुत, चढ़ि गा, खेलहि-खेल ॥
चतुर, जुद्ध महँ, बुद्धि, दोउ कपि * राम-प्रताप,हृदय महँ,जपि-जपि।
रावन - भवन, चढ़े, दोउ, धाई * देत, कौसला - धीस - दुहाई ॥
कलस-सहित, सो महल, ढहावा * रावन, तेहि का देखि, डरावा।
नारिन, पीटी, हाथन, छाती * "अब दुइ आये,कपि,उतपाती" ॥
करत खेल, कपि, उनहिं, डरावत * राम-चंद्र कर सुजस, सुनावत।
पकरि, फेरि, सोने के खंभा * होन चही, उतपात - अरंभा ॥
गरजि, कूदि परे, दल के भीतर * लगे,पछारन,हनि हनि, निसिचर।
मारत लात, केहु के थप्पर * "भजा न राम,लेहु फल,तेहि कर"॥
दोहाः - देत, भिड़ा, इक, एक सन, फेंकि, चलावत मुंड।
४४. फूटत, रावन - पास, जा, मानहु, दही - के - कुंड ॥
महा, महा मुखिया, जेहि पावहिं * पकरि के पद,प्रभु-पास,चलावहिं।

कहत विभीषन, तिनके नामा * देत, राम, तिन्ह, आपन धामा ॥
नर-बृह्मण - के - मांस - के-भोगी * पावत गति, जो-मांगत-जोगी ।
कोमल चित्त, दया - के - सागर * वैर-भाव सही,सुमिरहिं,निशिचर॥
देत मोक्ष,सो, अस. जिय. जानी * अस दयालु, को, कहउ भवानी! ।
अस प्रभु सुनि,न भजहिं भ्रमत्यागी!* ते नर, मूरख, परम-अभागी ॥
कहा, घुसे, अंगद, हनुमाना * गढ़-भीतर, तव, राम, सुजाना ।
गढ़-समुद्र, सोहत. दोउ, कैसे * मथहिं,दोउ, "मन्दराचल"जैसे ॥

दोहाः—भुज-बल, रिपु-दल, मींजि करि, जाने, भइ अव साम ।
४५. बिनु श्रम, कूदे. लंक ते, आय गये, जहँ राम ॥

प्रभु-पद-कमल, सीस, तिन्ह. नाये * जोधन देखि, राम, मन भाये ।
कृपा-दृष्टि करि, दोउ, निहारे * गई थकन, सब, भये, सुखारे ॥
जानि, फिरे अंगद हनुमाना * फिरे, भालु, कपि, जोधा, नाना ।
राक्षस, सांझ - केर - बल, पाई * धाये, कहि दस - सीस - दुहाई ॥
निसिचर-सैन, देखि, कपि फिरे * कटकटाइ, जोधा, तब, भिरे ।
दोऊ दल, करि - करि ललकारी * जोधा, फिरत, न मानत हारी ॥
वड़े वीर, निसिचर सब कारे * बानर, रंग - रंग - मुख - वारे ।
बल, समान, दोऊ - दल - जोधा * लरत खेल करि,और,करि क्रोधा॥
मानहु, वर्षा, सरद, के, बादर * पवन,लड़ावत,करि करि,आदर ।
हारि"अकंपन",और, 'अतिकाया'* सैना-पति, रचि राक्षस-माया ॥
छन महँ, भयो, घोर अंधियारा * बरसत रक्त, पथर - बौछारा ।

दोहाः—देखि अंधेरा, दसहु दिसि, कपि-दल, भयो दुखार ।
४६. एक, एक, नहिं, देखि सकि, जहँ, तहँ, मची पुकार ॥

सबहि मरम, तब, रघुबर जाना * लीन्ह, बुला, अंगद, हनुमाना ।
समाचार, सब कहँ, समुझाये * सुनत,क्रोध करि,गज सम,धाये॥
फिर, रघुबर, हँसि,धनुष,चढ़ावा * अग्नि-बान, जोइ, एक, चलावा ।
भयो उजेर, गयेउ अंधियारा *जस,भ्रम,भय,उर,ज्ञान,विचारा ॥

जोइ, उजेर, भालू, कपि पावा ❋ विन डर, बिनश्रम,बोला धावा ।
हनूमान, अंगद, आ, गरजे ❋ सुनत हांक,निसिचर,सब लरजे ॥
भजत निसाचर, धरती पटकत ❋ करत,भालु,कपि,करनी,अदभुत ।
गहि पद, डारहिं, सागर माहीं ❋ मगर, सर्प, मछ,पकरि के खाहीं ॥

दोहाः—कछु मारे, घायल कछू, गढ़ के ओर, सिधाये ।
४७. गरजत, बानर, भालु अस, दीन्ह दलहिं, बिचलाय ॥

जानि रात, चारहु दिसि, कीसा ❋ आये, जहाँ, रहे जगदीसा ।
राम कृपा करि, चितवा जबहीं ❋ गई पीर, सब, तन की, तबहीं ॥
रावनः—उत, रावन, मंत्री, बुलवाये ❋ जोधा - मारे - गये, सुनाये ।
आधा कटक, कन्हि सँहारा ❋ कहउ, बेग, कह करिये, विचारा ॥
कविः—'मालवंत', इक,बूढ़ निसाचर ❋ रावन - नाना, मंत्री, सुन्दर ।
मालवंतः—बोला बचन,नीति के,पावन ❋ सुनहु,तात,यह, मोर सिखावन ॥
जब ते, तुम, सीता हरि लाये ❋ कहे न जात,सो असगुन छाये ।
वेद, पुरान, जासु जस गावा ❋ राम ते लरि,सुख, काहु न पावा ॥

दोहाः—"हरण्यकशिप",भाई सहित, "मधुकैटभ", बलवान् ।
जिन्ह मारेउ, सोइ, अउतरेउ, कृपा - सिंधु - भगवान् ॥

दोहाः—गुन-निधान, जो, ज्ञान-घन, अग्नि जो,दे, खल, जारि ।
४८. बृह्मा, शिव, सेवा करत, तेहि ते बैर, बलिहार !! ॥

त्यागहु बैर, देहु बैदेही ❋ भजहु कृपा-निधि,सदा सनेही ।
रावनः—तेहि के बचन, बान सम लागे ❋ करिया,मुख,करि,निकरु,अभागे॥
भा बूढ़ा, नहिं, मरतेउं तोहीं ! ❋ अब,मत,आँख,दिखायेउ, मोहीं ।
कविः-तेहि;अपने मन महँ,अस जाना ❋ मरिहइं,यह कहँ, कृपानिधाना ॥
मालवंत, कहि बुरा, सिधारा ❋ बोला 'मेघनाद', रिसि-जारा ।
मेघनादः—भोर,खेल,प्रभु, देखहु,मोरा ❋ करिहउं,बहुत,कहउं कह,थोरा ॥
कविः—सुनि सुत-बचन,भरोसाआवा ❋ प्रीति समेत, गोद, बैठारा ।
करत विचार, भयो भिनसारा ❋ डटे आइ, कपि, चारहु द्वारा ॥

भारि रिसि,किला,कठिन,आ, घेरा * नगर, सोर, मचि गयो, घनेरा।
लइ हथियार, निसाचर धाये * गढ़ ते, परवत-सिखिर ढहाये॥
छंदः—ढाये, गिरिन के सिखिर, कोटिन, विविधि विधि, गोला चले।
वहरात गोला, बज्र सम, जनु, प्रलय के वादर, भले॥
अस जुटत, वानर, विकट, जोधन, कटत अँग, पर, नहिं मुरत।
लइ, सैल, तेहि, गढ़ पर चलावहिं, जँह-के-तहँ,राक्षस मरत॥
दोहाः—मेघनाद, अस, कान, सुनि, कपि - गढ़ - घेरा - आइ।
४९. उतरि, किला ते, वीर, तव, डंका, चलेउ, बजाइ॥
मेघनादः-कहाँ?राम,औरकहाँ?हैंलछिमन * कहे जात,धनु-धारी, लोकन!।
कहाँ?'द्विविद', सुग्रीव,नील, नल? * कहँअँगद,हनुमान,खानि-बल?॥
कहाँ, विभीषन, भाई - वैरी? * मारहुं, ऐसी - तैसी, तेरी!।
कविः—अस कहि,कठिन बान सँहाने * किये क्रोध, कानन लगि, ताने॥
बान पै वान, लगा, सो छांड़न * धावा कीन्ह उड़त-भे-सांपन।
परे, दिखाई, गिरतहिं, वानर * आगे,सकै न आ,तेहि अवसर॥
जहँ, तहँ,भागि चले,कपि,रिच्छा * भूली, सब कहँ, जुद्ध की इच्छा।
कोउ,कपि,भालु,न,रन,अस,रहेऊ*कीन्हा,नहिं, जेहिकहँ, अधमरेऊ॥
दोहाः—दस दस,सब कहँ,बान लगि, गिरे, भूमि, कपि, वीर।
५०. सिंह से, गरजन लागि, फिर, मेघनाद, बल - धीर॥
देखि, पवन-सुत, कटक, बिहाला * करे क्रोध, धायो, जनु, काला।
भारी परवत, एक, उखारा * करि रिसि, मेघनाद पर,डारा॥
गा, अकास, लखि, परवत, घोरा * छांड़ि रथी,रथ,और रथ-घोड़ा।
हनूमान, फिर फिर, ललकारा * पास, न आवत, समुझि हारा॥
गयो, निसाचर, फिर, प्रभु तीरा * खोंटे वचन, कहिस, रघुबीरा।
बहुत, बहुत, हथियार, चलाये * काटि,खेल करि, राम, नसाये॥
अस प्रताप, देखे; खिसियाना * लागि,करन,माया, विधि नाना।
करइ, गरुड़ ते कोउ, तमासा * डरपावइ, लइ, सर्प, जरा-सा॥

दोहाः—जेहि के माया-बस, फँसे, शिव, बृह्मा, बढ़, छोट।
५१. दिखलावत, माया, तिसइ, निसिचर की मति खोट॥
चढ़ि अकास, डारत अंगारा * बुझत ,उठत; धरती, जल-धारा।
नाना - भाँति, पिशाच, पिशाची * 'मारहु''काटहु'कहि,कहि,नाची॥
पीव, रकत, गू, वाल, औ हाड़ा * डारत, कबहूँ, पाथर छांड़ा।
डारि धूरि, कीन्हा अँधियारा * अस,कि,सूझ नहिं,हाथ-पसारा॥
माया ते, अकुला, कपि डरे * यह विधि,निश्चइ,"अब हम मरे"।
देखि खेल, रघुपति मुसुकाने * 'बानर डरत', ऐस, जिय, जाने॥
एक बान, दइ, माया फेरी * हरत, सूर्य, जस, घोर अँधेरी।
कृपा-दृष्टि, कपि, भालु, बिलोके * आवा बल, रन, रुकत, न,रोके॥
दोहाः—मांगी आज्ञा, राम ते, अंगद, कपिन, के साथ।
५२. करे क्रोध, लछिमन चले, धनुष, बान, लिये, हाथ॥
नयन-रक्त, उर, भुजा, बिसाला * तन गोरा, कछु-लाल, 'हिमाला'।
रावन, जोधा, इधर, पठाये * लइ हथियार, निसाचर, धाये॥
नष - परबत - और-वृक्ष-के-धारी * धाये, कपि, 'जय-राम', पुकारी।
मूठन, लातन, दांतन काटहिं * मारि,'राम-जयकहु'अस,डांटहिं॥
मारहु, मारहु, धरि धरि, मारहु * तोरहु सिर, गहि भुजा उखारहु।
सोर, अकास, पृथ्वी-नव-खंडा * दौरत, जहँ, तहँ, रुंड, प्रचंडा॥
बैठे, देखत, देव, तमासा * कबहूँ, आनँद, कबहूँ, त्रासा।
दोहाः—लोहू, गड्ढन महँ भरेउ, जमेउ, धूरि कहँ, पाइ।
५३. लगत, अँगारन - ढेर पर, रही, राख, है, छाइ॥
घायल बीर, बिराजत, कैसे * पेंड़, ढांक के, फूले, जैसे।
लछिमन, मेघनाद, दोउ जोधा * इकइक,भिरहिं,करे,दोउ,क्रोधा॥
एकन, एक, सकहिं नहिं, जीती * निसिचर,छल,बल,करत,अनीती।
भरे क्रोध महँ, फिर तौ, लछिमन * मारि रथी, कीन्हा रथ-भंजन॥
चोटहिं,कीन्ह,बहुतविधि लछिमन।* गयो, सत्त सब, मेघनाद-तन।

मेघनाद, तब, मन, अस जाना * संकट परा, चले अब प्राना ॥
छांड़ी सक्ति, जो बीरन-घातिनि * लागी, तेज-वान, उर, लछिमन ।
मुरछा भई, सक्ति के लागे * लछिमन तीर, गयो, भय त्यागे ॥

दोहाः—मेघनाद सम, कोटि-सौ, जोधा, रहे उठाय ।
५४. भला, जगत-आधार, कहुँ, उठत, फिरे, खिसियाय ॥

क्रोध-अग्नि, गिरिजा! सुनु, जासू * चौदह लोक, जारि, करइ नासू ।
रन महँ, जीति सकत, को, ताही * सब, चर, अचर, हैं, सेवत जाही॥
राम-खेल, यह, जानइ, सोई * जेहि पर, कृपा, राम की होई ।
दोऊ सैना, फिरीं, साँझ-खन * अपनी, अपनी, लागि, सँभारन ॥
लोकन-स्वामी, व्यापक, ईश्वर * लषन, कहाँ ? बूझा, करुनाकर ।
तब लगि, लइ, आयो, हनुमाना * देखि भाइ, प्रभु, अति दुख माना ॥
जामवंत कह, वैद, "सुषेना" * भेजन चही, कोउ कहँ, लेना ।
धरि, लघु-रूप, गयो हनुमंता * लाय, धरेउ, घर सहित, तुरंता ॥

दोहाः—चरन - कमल-प्रभु, आइ के, नायो माथ, सुषेन ।
५५. कहा दवाई, और गिरि, "जाहु, पवन-सुत, लेन" ॥

चरन-कमल, प्रभु के, हृदय, धरि * चलेउ, पवन-सुत, निज बल कहि कर।
उधर, दूत, इक, भेद बतावा * रावन, काल-नेमि-घर आवा ॥
दस-मुख, कहा हाल, समुझावा * काल-नेमि, सिर धुनि, पछितावा ।
कालनेमिः-तुम्हरे देखत, सब, पुर, जारा * तासु राह, को ? रोकन-हारा ॥
भजिये राम, करिये, हित, अपना * त्यागहु, मन ते वृथा कलपना ।
नील कमल सम, देही, नयना * राखहु, स्यामल मूरति, उर मा ॥
अहँकार, ममता, मद त्यागहु * अब, अज्ञान-नींद ते जागहु ।
काल-सर्प कहँ, खाये जोई * सपनेहु, रन, उहि, जीतइ, कोई ! ॥

कविः—दोहाः—सुनि, दस-कंध, रिसान, अति, तेहि, विचार, अस कीन्ह ।
५६. "राम - दूत - हाथन, मरउं, रावन, पाप मां लीन ॥"

अस कहि चला, रची, मग, माया * भवन, ताल, इक बाग, रचाया ।

देखा, हनूमान, सुभ आश्रम * पूँछा, पानी पी, मटउँ-श्रम ॥
कपट-वेष, धरि, मुनि, तहँ, सोहा * माया पति-दूतहिं, चहा, मोहा ।
जाय, पवन-सुत, नायो माथा * कहन लागि, मुख, गुन-रघुनाथा ॥
कालनेमिःहोत जुद्ध रावन, और, रामहिं * जीतहिं राम, न संसय, यह महिं ।
मैं, वैठे, सब, देखत, भाई * ज्ञान-दृष्टि, मोरी, अधिकाई ॥
मांगा मुनि, जल. दीन्ह, कमंडल * कह'कपि, नहिं अघाउँ, थोरे जल' ।
जा, तलाउ महँ, पी, झट, आवहु * दिच्छा देउँ, ज्ञान, तुम पावहु ॥

दोहाः—यक मगरी, कापि - पद गहा, हनूमान, अकुलाय ।
५७. मारेउ, सो, धरि दिव्तन, गइ, अकास, हर्षाय ॥

मगरीः-मिलादरस, कपि, मिटिसबपापा * मिटेउ, आज 'दुर्वासा'-स्रापा ।
तात, न मुनि, यह. निसिचर घोरा * मानहु, सत्य, वचन, कपि, मोरा ॥
कविः-अस, कहि गई, अपछरा. जबहीं * राछस तीर, गयो कपि, तवहीं ।
हनूमानःकहकपि, मुनि, गुरु-दछिनालेहू * पाछे, अपन मंत्र, तुम देहू ॥
पूँछ, लपेटा, और पछारा * मरती वेरा, निज तन, धारा ।
'राम', 'राम' कहि, छाँड़ प्राना * सुनि, मन, हर्षि, चलेउ हनुमाना ॥
औषधि, चीन्ह न. सैल निहारा * इकदम, जर ते, लीन्ह, उखारा ।
रैनहिं, गगन मां, दौरत भयेऊ * अवध-पुरी ऊपर, कपि गयेऊ ॥

दोहाः—देखा निसिचर, भरत, अस, भारी, जी महँ, जानि ।
५८. बिन-फर, मारा, वान इक, धनुष, कान लगि, तानि ॥

मुरछित परेउ, भूमि, लगि बाना * सुमिरन लागि, राम, भगवाना ।
सुनि प्रिय-वचन, भरत, उठि, धाये * भये दुखी, कपि के ढिग आये ॥
विकल देखि, कपि कहँ, उर, लावा * जागत नहिं, बहु भाँति, जगावा ।
मुख मलीन, मन, भये, दुखारी * भरि आंसू अस वचन उचारी ॥
भरतःजेहिविधि, राम-विमुख, मोहि कीन्हा * सोइ, फिर, यह, भारी दुखदीन्हा ।
काया, बचन, प्रीति सांची, मन * बिन-छल, प्रीति, राम-पद-कमलन ॥
हों प्रसन्न, मोते, भगवाना * उठु कपि! तौ, झट, थकन न जाना ।

कविः सुनत बचन, उठिबैठि कपीसा * कहत भये, 'जय कौसलधीसा' ॥
सो०:—लीन्ह, कपिहिं, उर लाय, पुलकित तन, आँसू भरे।
५९. प्रीति, न, हृदय समाय, सुमिरि राम, रघुकुल तिलक ॥
भरतः तात, कुसलकहु, सुख-निधानकी * सहित लषन, और, मात जानकी।
कविः-थोरे महँ, सब चरित बखाने * भये दुखी, मन महँ, पछिताने ॥
भरतः-अहा! दैव, क्यों, मोहिं, जग, ज्यावा * प्रभु के, एकहु, काम, न आवा।
कविः-बुरा समय जाने, धरि धीरा * कपि सन, अस, बोले बल-बीरा ॥
भरतः-तात, चले, तू, देरी करिहै * भये भोर, सब काज बिगरिहै।
बैठु, बान पर, धरे-पहारा * भेजहुँ, जहँ, रघुबीर, उदारा ॥
कविः सुनि, कपि-मन, उपजा अभिमाना * "चलिहै, मोरे बोझहु, बाना"!।
राम-प्रभाउ, बिचारि, बहोरी * बंदि-चरन, कह कपि, कर जोरी ॥
महावीरः-दोहाः—तुम-प्रताप, उर, राखि प्रभु, जैहौं, नाथ! तुरंत।
अस कहि आज्ञा पाय, पद, बंदि, चलेउ, हनुमंत ॥
दोहाः—भरत-भुजा-बल, सील-गुन, प्रभु-पद-प्रीति, अपार।
६०. करत बड़ाई, जात, मन, फिर फिर, पवन - कुमार ॥
उधर, राम, लछिमनहिं निहारी * बोले बचन, मनुज-अवतारी।
रामः आधि-रात भइ, कपि, नहिं आवा * राम, उठाय, लषन, उर, लावा ॥
सकेउ न लखि, कबहूं, दुख मोरा * अस कोमल सुभाउ, है, तोरा।
तजे, मोर हित, पितु, और माता * सही ठंड, बन, वायू-ताता ॥
सो अनुराग, कहां! अब, भाई! * उठहु, न सुनि, बचनन-बिकलाई।
जो बियोग, बन, तुम्हरा, जानत * पिता बचन, कबहूं, नहिं मानत ॥
सुत, धन, नारि, औ, घर, परिवारा * मिलत, फेरहू, जग, संसारा।
अस बिचारि, जिय, जागहु, ताता * मिलत न, सगे-ते-बढ़, अस भ्राता ॥
दुखित चिड़ी, बिनु-पंख-सँघाती * बिन मनि सर्प, सूंड बिन, हाथी।
अस जीवन, भाई, बिन तोही * जो, जड़ दैव, जिआवहि मोही ॥
जैहौं, अवध, कौन मुँह, लइके * नारि - हेत - प्रियभाई-दइ - के।

सहि लेतेउं, अपजस, जग माहीं * हरे नारिहू, हानी नाहीं ॥
सोक तोर, बेटा ! जग-निंदा * निठुर हृदय ! अब, सहिहइ, जिन्दा ।
अपन-मात के, सांचु-कुमारा * तेहिकर, तुम रहे, प्रान-अधारा ॥
सौंपा, मोंहि, सो, हाथ जोरि कर * जानि हितू, सुखदाता, रघुवर ।
उत्तर देहुं, कहा ! तेहि, जाई * उठहु, बतावहु, मोंहि तौ, भाई ॥
कवि:दुसरन-सोच-छुड़ावत, सोचत * जल, भरि, कमल-से-लोचन, पोंछत ।
'एक': 'अखंड', उमा ! रघुराई * भगत पै, नर-सम, कृपा, दिखाई ॥
सो०:—प्रभु-विलाप, सुनि, कान, विकल भये, सब सैन-कपि ।
६१. आइ गयो हनुमान, दुख-रस महँ, जस, वीर-रस ॥
हर्षि, राम, भेंटे हनुमाना * कपिकर भार, अपन सिर, जाना ।
तुरत, वैद, तब, कीन्ह उपाई * उठि बैठे, लछिमन, हर्षाई ॥
भेंटे लषन, लगाइ, हृदय ते * हर्षे कहि, भालू.., रहे जेते ।
फिर, कपि, वैद, तहाँ पहुँचावा * जेहि विधि, रहा, जहाँ ते लावा ॥
समाचार, जब, रावन, सुनेऊ * भयोदुखी, फिरफिर, सिरधुनेऊ ।
व्याकुल, कुँभ-करन पहँ, आवा * वहुत जतन करि, ताहि जगावा ॥
जागा, निसिचर, लागत कैसा * धरे - सरीर - काल हो, जसा ।
कुँभ-करन, पूँछा, सुनु, भाई ! * "तुम्हरा मुख, कस, रहा सुखाई" ॥
अभिमानी, सब हाल बतावा * जेहिविधि, जा, सीतहिं, हरिलावा ।
रावनः-तात! कपिन, सब, निसिचर मारे * बड़े बड़े, जोधा, सँघारे ॥
"दुर्मुख" सुर-रिपु, मनुष-अहारी * भट, 'अतिकाय', 'अकंपन', भारी ।
और 'महोदर' से बहु वीरा * मरे, लराई महँ, रन-धीरा ॥
दोहा:—रावन के अस बचन, सुनि, कुंभ - करन, बिलखान ।
६२. कुँभ-करनः-जग-माता, हरि लाय, सिय, अब, चाहत, कल्यान !! ॥
भलनकीन्ह, निसिचर-पति, हा, हा! * अब, काहे ! मोहिं, आय जगावा ।
अजहुं, तात ! तजहु, अभिमाना * भजहु, राम, हुइ है कल्याना ॥
हैं, रावन ! रघुनायक, नर, कस ! * भये दूत, जिन्ह, हनूमान-अस ।

अहा ! भाइ, तू, कीन्ह ढिठाई * कहा हाल, नाहिं, पहिले, आई ॥
कीन्ह बैर, उन्ह, राम, देव ते * बृह्मा, शिव, सुर,जिनहिं सेवते ।
नारद - दिया - ज्ञान, बतलावत *समय,निकसिगा,बनिनहिंआवत ॥
अब, भरि अंग, भेंटु,मोहिं, भाई * लोचन, सुफल, करउं, मैं, जाई ।
कमल-स्याम - से, नयनन - वारे * तीन्हु ताप, मिटावन - हारे ॥
कविः–दोहाः—राम-रूप-गुन, सुमिरि, तब, मगन भयो. छन एक ।
६३. आई मदिरा, घड़न, भरि, कोटिन, पसू, अनेक ॥
खाइ पसू, और, मदिरा पी, पी * गरजा, गिरी,मनहु,कहुँ,बिजुली ।
रन-स्थान, चलेउ, मदमाता * गढ़ छाँड़ि, कछु सैन, न साथा ॥
दीख, विभीषन, आगे आयो * परेउ चरन, निज नाम, बतायो ।
ताहि उठाइ, हृदय ते, लावा * रघुपति-भगत,जानि,मन,भावा ॥
विभीषनः-तात!लात,रावन,मोहिं,मारा * नीक - सलाह, बतावन - हारा ।
लागि बुरा,मोहिं, प्रभु पहँ,आयों * देखि गरीब, राम - मन, भायों ॥
कुंभ-करनः-बेटा!कालकेबस,हुइ,रावन * अब,कह,मानइ, नीक-सिखावन ।
धन्य धन्य, तू धन्य ! विभीषन ! * भयो,पाँचु-निसिचर-कुल-भूषन ॥
कीन्हा, रावन - बंस, उजागर ! * भजे राम, सोभा-सुख-सागर ! ।
दोहाः—वचन-कर्म-मन, कपट तजि, भजेउ राम, रन - धीर ।
६४. अपन-पराया, भूलि मैं, काल - के - बस, जा ! बीर ! ॥
कविः–भाइ-बचन सुनि,फिराविभीषन * आया,जहँ, तिहुँ-लोक-के-भूषन ।
विभीषनः-नाथ ! पहार-समान-सरीरा * आवत, कुँभ-करन, रन-धीरा ॥
कविः–इतना,कपिन,सुना, जब, काना * किलाकिलाय, धाये, बलवाना ।
पेड़, उखारे, और पहारा * कटकटाय, तेहि-ऊपर. डारा ॥
कोटि-कोटि,गिरि-सिखिर चलावत* एक-साथ, सब, फेंकि, डरावत ।
फिरा न, मन, तन, टरत न टारे * हाथी, जस, मदार-फल, मारे ॥
हनूमान, आ, घूँसा मारा * करि व्याकुल, धरती पर डारा ।
फिर, उठि, तेहि, मारा हनुमाना * चक्कर खाइ, गिरा बिलखाना ॥

फिर,'नल','नीलहिं',भूमि,पछारा * जहँ,तहँ,घूमि,पटकि, भट मारा ।
डर अति, व्याकुल, भागी सैना * बली सामने,सँभरि, बनय ना ॥
दोहाः—करि 'मुरछित' सुग्रीव कहँ, अंगद, कपि, बलवान ।
६५. बगल, दवा,'कपि-राज'कहँ, चला अधिक- बल-खानि ॥
उमा ! करत, नर - लीला, रघुबर * खेलत गरुड़,सर्प विच मिलिकर ।
पलक चलाये, काल, जो, खाई * सोहत, उहि कहँ,ऐस लराई ? ॥
करइ - पवित्र, सो, करनी करिहैं * गा जेहि,नर,भव-सिंधु, उतरिहैं ।
मुरछा गई, पवन - सुत जागा * सुग्रीवहिं, तब, ढूँढन लागा ॥
सुग्रीवहु, मुरछा, तव भागी * गिरा, बगल ते, मुरदा लागी ।
काटे दांत, नाक, और काना * गा अकास, तब राक्षस जाना ॥
धरती महँ, गहि चरन, पछारा * उठि,फुरती,तब, असुरहिं,मारा ।
फिर आयो, प्रभु पहं, बलवाना * कहि कहि जय जय!कृपा-निधाना॥
कटे-नाक - और - काना, जानी * लगेउ बुरा, लौटा, अभिमानी ।
नाक-कान - बिन, और - भयंकर * घबराये कपि, रूप, देखि कर ॥
दोहाः—धाये, जय-जय-राम कहि, करि करि हल्ला, कपि ।
६६. पेड़ पहाड़, इक-संग ही, डारत, आ, आ, सब ॥
कुँभ-करन, तब, छाँड़ि लराई * आगे, क्रोधित, काल सों, आई ।
लगा, बानरन, लइ, लइ, खाई * टीढ़ी, जनु,गिरि-गुफा, समाई ॥
बहुतक बानर, तनते, रगड़े * मींजि, मिलाये धूरहिं, तगड़े ।
नाक, कान,और मुख की सड़कन * लगे, भालु,कपि,निकसन,भागन॥
मतवारा, अस, लरा लराई * कारि जग-भच्छन-प्रन,जनु,आई ।
जोधा, मुरत, फिरत नाहिं फेरे * सूझ न नयन, सुनत नहिं, टेरे ॥
कुँभ-करन, सब फौज बिगारी * सुनि,दौरे,सब, निसिचर, भारी ।
विकल सैन, देखा, रघुराई * असुर-सैन, जाने, बहु-आई ॥
दोहाः—तुम सुग्रीव, विभीषनहु, सैन संभारहु, भाइ ।
६७. "कमल-नयन"कह, "दुष्ट बल-दल मैं,देखत जाय" ॥

'सारंग'-धनु,कर,कमरमांतरकस ❋ मारन चले, राम, दल - राच्छस ।
पहिले, कीन्हीं धनुष - टँकोरा ❋ भये, असुर, बहिरे,सुनि, सोरा ॥
'सत्य-प्रतिज्ञा', दिये, लख-वाना ❋ उड़े, काल - के - सर्प - समाना ।
बान असंख्य,छूटि,इत,उत,चलि ❋ लगा कटन,निसिचरन केर दल॥
कटत पाउं, उर, सिर, भुज-दंडा ❋ बहुतक योधा, भे, सौ खंडा ।
घूमि, घामि, घायल,धरती,परि ❋सँभरिउठहिं,आवहिं,औरफिरलरि॥
खाय बान, गरजत, जस, बादर ❋ भाजत, कठिन वान कोऊ, डरि ।
रुंड प्रचंड, मूँड़ - विन, दौरत ❋ 'पकरहु','मारहु'कहिकहि,बहुरत॥

दोहा:—छन महँ, प्रभु के बान सब, बिकट, राक्षसन, काटि ।
६८. घुले, लौटि, प्रभु - तरकसहिं, आ आ, अपने घाट ॥

कुंभकरन, मन, दीख, विचारी ❋ छन महँ, गये निसाचर, मारी ।
करि,फिर,क्रोधअधिक,बल-बीरा ❋ कीन्हीं, सिंह - गरज, गंभीरा ॥
भारी परबत, लेत, उखारी ❋ डारत, जहँ, कपि-जोधा भारी ।
फिर,धनु तानि,कोपि, रघुनाथा ❋ बान, भयंकर, छांड़े, हाथा ॥
तनमहँ,घुसहिं,निकरि,फिर,जांहीं ❋ जनु, दामिन, घन बीच, समाहीं ।
बहत रक्त, लागत, तन - कारे ❋ कज्जल - गिरि, जनु, गेरु-पनारे ॥
विकल देखि, भालु, कपि, धाये ❋ हँसा,जबहिं,कपि,बढ़ ढिग, आये।

दोहा:—गरजहिं, जैसे, सिंह, कोउ, कोटि कोटि, गहि कीस ।
६६. धरि, पटकत, गज-राज सम, खाइ कसम - दससीस ॥

भागे भालू, कपि, जे बढ़िया ❋ भेंडइं, मानहु, देखि भेंड़िया ।
चले, भागि, कपि, भालु, भवानी ❋ विकल,पुकारत, दुख-भरी-बानी ॥
सो-निसिचर, अकाल सम लागत ❋ बानर-देस, परन, जनु, चाहत ।
कृपा - रूप, जल - धर - भगवाना ❋ "रच्छहु ! सेवक-पीड़ा जाना" ॥
दुख-भरे - बचन, सुने, भगवाना ❋ चले, सुधारि धनुष, औ, वाना ।
राम, सैन, तौ, पाछे डारी ❋ क्रोधित, चले, महा-बल-साली ॥
दिये, बान सौ, धनु, अस, ताने ❋ छुटि, राच्छस के देह, समाने ।

जानि बान, धायो, अस-रिसि भरि * डोली पृथ्वी, डगमगाये गिरि ॥
कुंभकरन, जोइ, सैल उखारा * राम, बान, काटेउ, भुज-सारा ।
बाएँ हाथ, सैल, फिर, धारी * काटि, सोउ भुज, पृथ्वी, डारी ॥
भुजा - कटे, सोहत खल, कैसा * विना - पंख, 'मन्द्राचल' जैसा ।
रामहिं, आँख निकारि, बिलोका * खान चहत, मानहु, तिहुंलोका ॥

दोहाः—करि चिक्कार, भयंकरा, दौरा, मुखहिं पसारि ।
८०. डरे, अकासहिं, देवता, हा ! हा ! कीन्ह पुकार ॥

डरे देव, करुना - निधि, जाना * लीन्ह धनुष, कानन-लगि-ताना ।
बान-पे-बान, दिये, मुख, भरेऊ * तहूँ, महा-बलि भूमि, न गिरेऊ ॥
बान-भरा-मुख, सनमुख, धावा * मनहु, काल, लइ तरकस आवा ।
करि रिसि, बान, तेज, प्रभु, लीन्हा * धड़ ते, अलग, तासु सिर, कीन्हा ॥
जाय गिरा, सिर, रावन - आगे * विकल, सर्प, जस मनि के त्यागे ।
धरती-धसि, धड़, धायो, प्रचंडा * तब, प्रभु, काटि, कीन्ह, दुइ खंडा ॥
मनहु पहाड़, गिरे दोऊ धड़ * दबे भालु, कपि, नीचे, निसिचर ।
तासु तेज, प्रभु-मुखहिं, समाना * सुर, मुनि, सबहि, अचंभा माना ॥
बाजे बजइँ, देवगन, हर्षहिं * अस्तुति करइँ, फूलहु, वर्षहिं ।
करि बिंती, सुर सकल, सिधाये * तेहि अवसर, फिर, 'नारद' आये ॥
तिन्ह, अकास पर, हरि-गुन गाये * सुघर, वीर-रस, प्रभु-मन-भाये ।
"वेग, हतहु खल" कहि मुनि, गये * राम, समर महँ, सोहत भये ॥

छंदः—कस, अवध-पति, सोहत, समर महँ, तौल नहिं, जिन्ह सक्र की ।
मुख - कमल पर, सोहत पसीना, छींट, लाली, रक्त की ॥
भुज ते, फिरावत, बान-धनु, सब, भालु, कपि, चहुं दिस, खड़े ।
सो छवि, न कहि सकि, दास-तुलसी, सेषहु, जिन्ह, मुख बड़े ॥

दोहाः – नीच-निसाचर, मल-भरा, ताहि, दीन्ह निज-धाम ।
७१. गिरिजा ! ते नर, मंद-मति, जे, न भजहिं, श्री-राम ॥

लौटी सैना, दोउ, दिन-अथे * उत्तम - जोधा, रन - के - थके ॥
राम-कृपा, वल, भयो दुबाला * फून्म पाय, जस, बाढ़त ज्वाला ।
घटत निसाचर-बल,दिनदिनअस * अपने-मुख ते, कहे, पुण्य, जस ॥
बहु बिलाप, दसकंधर, करई * भाई - सिर लइ, छाती, धरई ।
रोवहिं नारि, पीट, कर, छाती * वल,और तेज, कहहिं,बहु भांती ॥
'मेघनाद', तेहि अवसर आवा * कहिकहिकथा,पितहिं,समुझावा।
मेघनादःकरतब,अपन,दिखैहहौं,काली * करउं बड़ाई, कह, मुख, खाली ॥
इष्ट-देव ते, बल, रथ, पायों * अब लगि, पिता ! न,तोहि,बतायों।
अस बक-बक करि,भयो बिहाना * चार-द्वार, आये कपि, नाना ॥
इत, कपि, भालु, काल-सम-बीरा * उत,निसिचर,अति ही रन-धीरा।
जोधा, लरहिं, अपन-जय - कारन * गरुड़!कठिन है,समर-बखानन ॥

दोहाः—मेघनाद, माया-रचे-रथ, चढ़ि, गयो, अकास ।
७२. दइ ठ्ठा, गरजा, बली, कपि-दल-मन महँ त्रास ॥

'सक्ति','सूल','बरछी', 'तरवारा' * भांति, भांति के,लइ, हथियारा ।
डारत 'परसा','परधि',औ,पाथर * बानन-वर्षा, होत, छुरा-छुर ॥
गये, बान, दस दिस, अस छाई * मानहु, मघा, मेघ-झरि, लाई ।
'पकरहु-मारहु'-धुनि, सुनि,काना * मारन - हार, नहीं पहिचाना ॥
गगन,वृक्ष गिरि,लइ,कपि,धावहिं *लखतनरिपु,दुखिया, फिरिआवहिं।
मारग, औघट घाट, पहारा * पिंजरा कीन्ह, बान दइ, सारा ॥
जांहिं, कहां! सब ब्याकुल, बंदर * फांसा,'मन्द्राचल', जनु,'इन्दर' ।
'हनूमान','अंगद', 'नल', 'नीला' *सब कहँ,विकल,कीन्ह बल-सीला॥
फिर,लछिमन, सुग्रीव, बिभीषन * दिये बान, करि दीन्ह सिथिल तन।
फिर,रघुपति सँग, जूझन लागा * लगत, बान, हुइ सर्प, अभागा ॥
नाग-फांस-बस, भये, राम, सो * 'रुक','अनंत','स्वतंत्र',सुद्ध, जो॥
नट-से,कपट-चरित, करि, नाना * सदा 'स्वतंत्र', 'एक', भगवाना ।
रन-सोभा कहँ, अपन बँधावा * देखि दसा, देवन, भय पावा ॥

दोहाः—जासु नाम, जपि, हे ! उमा, मुनि काटत भव-फांस।
७३. सो, कहुं, आवत, कैद महँ, जो जग-करत-निवास॥

सगुन चरित, करुना निधान के * तरकि-जोग, नहिं, बुद्धि-वान के।
समुझि, बिरागी, जानन - हारे * रामहिं, भजत, तरक ते न्यारे॥
मेघनाद, करी ब्याकुल सैना * वचन, कहे, सनमुख आ, पैना।
'जामवंत' कह, खल ! रहु,ठाढ़ा ! * राक्षस-क्रोध, सुने अस, बाढ़ा॥
मेघनादः–बूढ़ जानि,शठ,छांड़हुं, तोहीं * अरे, नीच ! ललकारत मोही !।
कविः-असकहि,कठिन त्रिसूल,चलावा* पकरि सो,जामवंत, फिर,धावा॥
मारा, मेघनाद के छाती * चक्कर खाइ, गिरा, सुर - घाती।
फिर, रिसाय,गहि पांउ, घुमावा * भुइं,पछारि,निज बल,दिखरावा॥
बर के बल, सो, मरा न, मारा * तब गहि पद, लंका - गढ़, डारा।
इत, नारद - मुनि, गरुड़ पठावा * राम तीर, सो, तुरतहि, आवा॥

दोहाः—सर्प - झुंड, माया - रचे, लीन्ह, गरुड़, सब खाय।
देखी माया जात जब, कपि - दल रह हर्षाइ।
नख - पहाड़, पाथर लिये, वृक्ष सहित, रिसिआइ।
७४. धाये कपि, ब्याकुल - असुर, चढ़े, किला पर जाइ॥

मेघनाद की मुरछा जागी * ताहि देखिकर, सरम सी,लागी।
जाय घुसा, इक गुफा, तुरंता * अजय जज्ञ की,मन, करि चिंता॥
इधर, विभीषन, कीन्ह विचारा * सुनहु, नाथ ! बल-अतुल, उदारा।
विभीषनः–मेघनाद,जग करत,अपावन * मायावी, खल, देव - सतावन॥
भये सिद्ध, जो चहिहइ, पइहहि * नाथ ! फेर,वह,जीति, न जइहै।
रामःसुनि,रघुपति,अतिहीसुख,माना* बोले,अंगद ! और, कपि, नाना॥
लछिमन - संग, जाहु, सब भाई * करहु बिध्वंस, जज्ञ कर, जाई।
तुम, लछिमन!मारेउ, रन, ओही * डरत देव, सो दुख, है, मोही॥
मारेउ, अस, बल - बुद्धि - उपाई * नष्ट, निसाचर, जेहि, हुइ जाई।
जामवंत, सुग्रीव, बिभीषन ! * सैन समेत, रहेउ, तीनहु जन॥

कविः-दीन्ही आज्ञा,जब, अस रघुबर * धनुष,सजावा, तरकस कसि कर।
प्रभु-प्रताप,उर धरि, रन - धीरा * मेघ-सी - बानी, कही, गँभीरा ॥
लषनः-जो तेहि,आज,बधे बिन आवहुं * तौ,रघुपति-सेवक, न कहावहुं ! ।
चहुं, सौ संकर, करहिं सहाई * तहुं, मारउं, रघुबीर - दुहाई ! ॥
दोहाः—नाइ, राम - पद, सिर, लषन, उठि तब, चले, तुरंत ।
७५. अंगद, नील, मयंद, नल, जोधा, सँग, हनुमंत ॥
देखा, कपिन, सो, आसन-बैठत * देत, रक्त, और भैंसन-आहुति ।
कीन्ह, कपिन,सब,जज्ञ-बिध्वनसा * जब, न उठइ, तब, करइं प्रसंसा ॥
उठा न,तहुं, तब,बाल खींचि कर * मारइं, भाजइं, लात, ईंचि कर ।
लइ त्रिसूल, धावा, कपि भागे * आये, भागि, लषन के आगे ॥
आवा, परम क्रोध कर मारा * गरजि, सोर करि, बारहिं बारा ।
करि रिसि, अंगद, हनुमति धाये * लगि त्रिसूल,सो, धरती, आये ॥
लषनहिं, छांड़ि त्रिसूल, प्रचंडा * कीन्ह, बान ते, चट, दुइ खंडा ।
हनूमान, अंगद, उठि, धाये * मारहिं, पर, कछु, चोट न आये ॥
फिरे बीर, रिपु मरइ न, मारा * मेघनाद धावा, चिक्कारा ।
जाने, मानहु, क्रोधित - काला * छांड़े, लछिमन, बान, कराला ॥
देखा, बानहिं, बज्र समाना * मेघनाद, भा, अंतरधाना ।
रूप, रूप धरि, करइ लराई * कबहूं, प्रगट, कबहुं, छिपि जाई ॥
'को जीतइ' कहि, डरपे बान्नर * लषन, क्रोध ते, भे, तन-बाहर ।
लषनः-यह पापी, मैं, बहुत खिलावा *अब,बध,उचित,कि,कापि,भइ,पावा॥
राम-प्रताप, सुमिरि, अपने मन * दिया बान,अभिमान ते, लछिमन ।
छूटि, बान, छाती-बिच लागा * मरती समय,कपट, सब,त्यागा ॥
दोहाः—"कहाँ लषन,कहँ,राम, कहँ", अस कहि, छांड़े प्रान ।
७६. धन्य, धन्य, माता, तुम्हर, कह अंगद, हनुमान ॥
बिन परिश्रम, हनुमान, उठाये * लंका-द्वार, राखि तेहि, आये ।
सुर, गंधर्ब, मरन तेहि सुनकर *आये,अकास,बिमानन्ह,चढ़िकर ॥

बरषहिं फूल, नगार बजावहिं * श्रीरघुबीर-बिमल-जस, गावहिं ।
जय अनंत, जय जग-आधारा * तुम, प्रभु, सब देवन, निसतारा ॥
अस्तुति करि, सुर, सिद्ध, सिधाये * लछिमन, कृपा-सिंधु पहँ, आये ।
रावन, सुना-मरा-सुत, जबहीं * धरती, गिरा, मूरछित, तबहीं ॥
फूटि, फूटि कर, माता रोवत * छाती पीटि, नाम लइ, टेरत ।
ब्याकुल भये, सोच ते, पुर-नर * नीच कहत, सब ही, दसकंधर ॥

दोहाः—तब, दसकंधर, बहुत विधि, समुझाईं, सब नारि ।
७७. रावनः-नासवान, यह - जगत-सब, देखहु, हृदय, विचारि ॥

कविः-तिनहिं, ज्ञान सिखलावा, रावन * बुरी बात, अपने मन-भावन ।
औरन्ह - सिखलावहिं, बहुतेरे * करइं-आप, अस नर, जग, थोरे ॥
गई रात, जब, भा, भिनुसारा * लगे, भालु, कपि, चारहु द्वारा ।
रावनः-जोधन टेरि, दसानन बोला * जा, रन महँ, जेहि कर मन, डोला ॥
जाइ, इहीं ते, प्रान बचाई * रन ते, लौटि, न होइ भलाई ।
निज भुज-बल, मैं, बैर बढ़ावा * उत्तर देहुँ, जो, रिपु, चढ़ि, आवा ॥
कविःअस कहि, पवन स, इक रथ, साजा * बाजे, सकल, जुझाऊ बाजा ।
चले, बीर, सब, अति बलवाना * दल इक, कारी - आंधी जाना ॥
असगुन, बहुत, होत, तेहि काला * भुज-बल, गिनत न, मद-मतवाला ।

छंदः—अस गरब, मानि न, सगुन, असगुन, गिरत सस्त्रहु, हाथ ते ।
भट गिरत, रथ ते, चीखि, घोड़ा, हाथि, भाजत, साथ ते ॥
गिध, स्यार, बोलइं, रोइं, कूकुर, घोर शब्द, सुनावहीं ।
जनु, काल-दूत, उलूक बोलहिं, सुनत, लोग डरावहीं ॥

दोहाः—मिलइ क, संपति, शुभ सगुन, और मन-कर-विस्राम ।
७८. तेहि, नर - बैरी, मोह - बस, कामी, बैरी - राम ॥

चली, निसाचर - सैन, अपारा * पाउँ, घोड़, गज-रथ-असवारा ।
भांति सवारी, और बिमाना * ध्वजा, पताका, फहरत, नाना ॥
मतवाले गज, चले, सोहाये * जनु, वर्षा - घन, पवन - उड़ाये ।

झुंड, दैत्य के, बरन, बरन के * माया · चातुर, सूरहु - रन-के ॥
अस विचित्र, सब सैन, विराजी * वीर 'बसंत' सैन, जनु, साजी ।
चलत सैन, हले दिग्गज, डगडग * सागर,खलबल, पृथ्वी, डगमग ॥
सूरज छिपा, धूरि, अस छाई * वायु थकी, पृथ्वी, अकुलाई ।
ढोल, नगारे, घोर, बजावत * प्रलय-काल, जनु, मेघ, डरावत ॥
ढोल, नफीरी, और सहनाई * जोधन, मारू - राग, सुनाई ।
सिंहनाद, सब जोधा करहीं * निज निज बल, पौरुष, उच्चरहीं ॥
रावनः-कहा दशानन, सुनु, जोधाओ! * कपि,भालू,सब, मींजि गिराओ ।
मैं, मरिहौं, राजा - दोउ भाई * कहि अस, आगू, फौज बढ़ाई ॥
जब, वानरन, खबर यह पाई * धाये, करि रघुबीर - दुहाई ।
छंदः—धाये, विशाल, कराल, वानर, भालु, काल समान से ।
जनु, उड़त, पंख लगाइ, परवत-झुंड, नाना, बान ते ॥
हथियार, दांत, औ पेड़, परबत, बलि, न संका मानहीं ।
मतवार रावन-गज-क, सिंह-से, राम-जस, सुख, गावहीं ॥
दोहाः—दोउ ओर, जय जय करे, जोरी अपनी जानि ।
७६. भिरे वीर, इत, रघुपतिहिं, उत, रावनहिं, बखानि ॥
रावन, रथ, बिन - रथ रघुबीरा * देखि, विभीषन, भयो अधीरा ।
अधिक-प्रीति, मन, संका-जानी * लागि चरन,कहि, नेह-की-बानी ॥
विभीषनः-नाथ!न रथ,ना,पद महँ जूता * केहिबिधि,जितिहौ,रावन,भूता? ।
रामः-सुनहु,सखा ! अस बोले,रघुवर * जेहि,जय मिलइ,सो रथ, है दूसर ॥
'धीरज' 'हिम्मत' क दुइ पहिया * 'सत्य', 'सील'की झंडी, भैया ! ।
'पर-उपकार','ज्ञान', 'बल' घोड़े * 'क्षमा' 'कृपा' की रसरी जोड़े ॥
'ईश्वर-भजन' हो हाँकन-हारा * ढाल, 'विराग', 'तोप', तरवारा ।
परसा,'दान',सक्ति, 'बुधि-चातुर'* 'श्रेष्ठ-ज्ञान' कर धनुष सजाकर ॥
सिथिर,औ,निर्मल'मन'कर तरकस* 'संजम-नियम', बान हो, चौकस ।
बखतर होइ 'बिप्र - गुरु - पूजा' * यह सम, रथ-उपाय,नहिं दूजा ॥

धरम-रूप, अस रथ है; जाके * जीतन कहँ, नहिं, कहुं, रिपु ताके ।

दोहाः—जीति न - सकि - संसार जो, सो, जीतइ, वह बीर ।
जो राखइ, अस, पोढ़, रथ, सुनहु सखा ! मति-धीर ॥

दोहाः—सुनत, बिभीषन, प्रभु-बचन, चरन-कमल, गहि, राम ।
विभीषनः—हरषि, कहा, रथ-ओट लइ, उपदेसा, सुख-धाम ॥

दोहाः—रावन ललकारा, उधर, इत, अंगद, हनुमान ।
८०. लरत निसाचर, भालु-कपि, स्वामिन की, करि, आन ॥

सुर, बृह्मादि, सिद्ध, मुनि, नाना * देखत रन, नभ, चढ़े-बिमाना ॥
शिवः-हमहूँ, उमा ! रहे, तिन्ह संगा * देखत, राम - चरित, रन - रंगा ।
जोधा, भये, दोउन, रन - माते * कपि, कछु, राम के बल, गरमाते ॥
एक, एक कहं, फिर, ललकारहिं * मींजइं कोउ, पृथ्वी पर, डारहिं ।
मारहिं, काटहिं, भूमि, पछारहिं * तोरे सिर, औरन्ह-सिर, मारहिं ॥
फारि पेट, फिर, भुजा, उखारहिं * पकरि पाउं, पृथ्वी पर डारहिं ।
लागत, जोधा, भिरे-जुद्ध, अस *'काल' असंख्य, आइ, जनु, करिरिस॥

छंदः—क्रोधित, मनहु जमराज, कपि, कस, सोहिं, खून-बहावते ।
रगरहिं निसाचर - सैन - जोधा, मेघ - शब्द सुनावते ॥
मारहिं थपेरन, डांटि, दाँतन काटि, लातन पीसिहीं ।
कपि, भालु, किलकत, छलत छल, बल करत, खल-बल सीखहीं ॥

छंदः—कपि, गाल, फारत, छाती चीरत, आंत, गर, पहिरावहीं ।
नर-सिंह, जनु, बहु-तन-धरे, मैदान-रन, जन, खेलहीं ॥
धरि-मारु काटु-पछारु-धुनि, पृथ्वी, अकासहिं, भरि रही ।
जय राम की ! जो, बज्र, तिनका, तिनका, बज्र, करत, सही ॥

दोहाः—निज दल, बिचलत, दीख, जब, बीस-भुजा, दस चाप ।
८१. 'फिरहु', 'फिरहु', कह रावना, रथ-चढ़ि, आवा, आप ॥

अति क्रोधित, धायो दसकंधर * हू, हू, करि, आगे भे, बंदर ।
लीन्हे पेड़, पहाड़, औ पाथर * इक-सँग, डारन लागे, ता पर ॥

लागत सैल, वज्र-तन माहीं ❋ टूटइं, खंड खंड हुइ जाहीं।
हटा न, रहा खड़ा, रथ-रूपी ❋ रन-मतवारा, रावन, कोपी ॥
इत,उत,झपटि,दपटि,कपि-जोधा ❋ रगरन लागि,बाढ़ि अति, क्रोधा।
चले भागि, भालू, कपि, नाना ❋ "आ!बचाहु,अंगद,हनुमाना"!॥
'रच्छहु ! हे रघुवीर, गोसाईं ! ❋ खात, दुष्ट यह, कालकी नाईं !।
भाजत - वानर - परे - दिखाई ❋ दसहु धनुष, खल, लीन्ह चढ़ाई ॥
छंदः—धनु-तानि, छांड़े वान, कोटिन, सर्प-से, आ, लागहीं।
आकास, धरती, भरि, रहे, दिसि विदिस, वानर, भागहीं॥
भयो अति कोलाहल,विकल, कपि,दल,भालु बोलहिं,मेउ-मेउ।
रघुवीर, करुना-सिंधु, दीनन-बंधु, रक्षा, देउ ! देउ !॥
दोहाः—देखि, लषन, निज-दल-विकल, कटि-तरकस, धनु-हाथ।
८२. करे क्रोध, लछिमन चले, नाय, राम-पद, माथ॥
लषनःदुष्ट ! कहा ! मारत कपि-भालू ❋ देखहु, मो तन, तोरा कालू।
रावनःढूंडत रहेउं, तोहि, सुत-घाती ❋ आ ! तुहि मारि,जुडावहुं छाती !॥
कविःअस कहि, छांड़े, वान-प्रचंडा ❋ किये,लषन, इक, इक, सौ-खंडा।
बहु हथियार, दसानन, डारे ❋ तिल समान, टुकरा किये, सारे ॥
फिर,लछिमन, निज-वानन-द्वारा ❋ तोर दीन्ह रथ, सारथि, मारा।
सौ, सौ बान, दिये, दसहू सिर ❋ घुसे,सर्प-से, जनु चोटिन-गिरि ॥
फिर, सौ बान, दिये, छाती महँ ❋ गिरा,अचेत, असुर, धरती महँ।
उठा वली, जब, मुरछा गई ❋ छांडी सक्ति, जो, बृह्मा दई ॥
छंदः—सो, बृह्म-दीन्ही, प्रवल सकती, लषन-उर, लागी, कड़ी।
गिरे लषन, व्याकुल, उठत, रावन ते, न, वल-महिमा बड़ी॥
बृह्मांड, चौदह लोक, जेहि, इक - सिर धरे, जनु, धूरि-कन।
तेहि, चह उठावन, मूढ़ - रावन, नाथ - लोकन - के, लषन॥
दोहाः—देखि पवन-सुत, दौरि, आ, कह कछु-वचन-कठोर।
८३. कपि कहँ, घूंसा, दीन्ह, इक,रावन, करि, अति जोर॥

जांघ टेकि, कपि, भूमि न गिरा * उठा, सँभारि, बहुत रिस-भरा ।
लौटि, रावनहिं, घूंमा, मारा * जनु बिजुली ते, गिरा, पहारा ॥
मुरछा गई, दसानन जागा * हनूमान - बल, बरनन लागा ।
हनूमानः-धिगपौरुष!मोरे,धिग मोही! * उठा,जिअति,जो,तू, सुर-द्रोही!॥
कविःअसकहि,लछिमनकहँ,कपिलायो * देखि, दसानन, अचरज आयो ।
रामः-कह रघुबीर,कि समझहु,भाई! * सुर रछहु, तुम, कालहिं खाई ॥
कविः-सुनत बचन,उठि बैठे,लछिमन * गई, अकास, 'सक्ति', छांड़े तन ।
लषन, बान-धनु,लइ, फिर, धाये * तुरत, शत्रु के आगे, आये ॥
छंदः—झट, फेरि, रथ कहँ तोरि, सारथि मारि, अस व्याकुल कियो ।
अति बिकल, दसकंधर, गिरा, तब, बान-सौं, बेधे, हियो ॥
सारथी, दूसर, डारि, रथ महँ, तुरत, लंका, लइ, गया ।
रघुबीर-बंधु, प्रताप - पुंज, तब, आय, चरनन, सिर नवा ॥
दोहाः—उधर, दसानन, जागि कर, जज्ञ, रचावन लागि ।
८४. चाहत जीतन, राम कहँ, करि हठ, मूर्ख, अभाग ॥
इधर, बिभीषन, सब सुधि पाई * तुरत, जाइ, रघुपतिहिं, सुनाई ।
बिभीषनः-रावन, जज्ञ, रचावन लागा * भये सिद्धि,नहिं मरइ, अभागा ॥
पठवहु, बेग, देव ! भट - बंदर * करइं बिधंस, चलइ दसकंधर ।
कविः-जोधा, भोर होत, पठवाये * हनूमान, अंगद, सब, धाये ॥
खेलहि, कूदि, चढ़, कपि, लंका * रावन-घर, घुसि परे, असंका ।
जज्ञ - करत, जब, रावन, देखा * भयो,कपिन कहँ,क्रोध, बिसेखा ॥
अंगदः-निलज!भाजि,रन ते,घर-आवा * आ, बगुला सम, ध्यान लगावा ।
अस कहि, अंगद, लात जमाई * मन-मतलबी, न, आंख उठाई ॥
छंदः—नहिं दीख, जब, कपि, कोपि, काटत दांत, लातन, मारहीं ।
गहि केस, नारि, घसीटि, बाहिर, दीन - सब्द पुकारहीं ॥
तब, उठेउ क्रोधित, काल-सम, गहि चरन, बानर, डारईं ।
यह बीच, जज्ञ - बिधंस कीन्हा, देखि, मन महँ, हारईं ॥

दोहाः—जज्ञ, नष्ट करि, कपि, सबहि, लौटे, प्रभु के पास।
८५. चला लंक-पति, क्रोध करि, तजे, जियन की आस॥

चलत प, असगुन, होत, भयंकर * उड़ि,उड़ि बैठत गीध, सिरन पर।
भयो काल-वस, काहु न माना * कहा,"बजावहु जुद्ध - निसाना"॥
चली निसाचर - सैन, अपारा * बहु गज, रथ, पैदल, असवारा।
प्रभु-सनमुख, धाये खल, कैसे * गिरत, पतिंगा, अगिनी, जैसे॥
देवताः—इहां,देवतन, अस्तुति कीन्ही * घोर विपति,यह,हम कहँ, दीन्ही।
अब, ना! राम, खिलावहु, एही * अति अति दुखित होत, बैदेही॥
कविः—देव-वचन,सुनि,प्रभु मुसुकाना * उठि, रघुबीर, सुधारे बाना।
जटा, सँभरि के, बांधे, माथे * सोहत फूल, बीच - महँ-गांथे॥
लाल, नयन, घन से, तन,जिनके * सुख - दाता, लोचन-लोकन-के।
तरकस कसा,कमर महँ, आपन * कठिनधनुष,लीन्हा,फिर, हाथन॥

छंदः—हाथन मां, सुन्दर धनुप, तरकस, बान-खानि, कमर-कसी।
भुज पुष्ट, छाती, सिंह-सी, भृगु-लात-चिन्ह, हृदय, लिखी॥
कह दास-तुलसी, जबहिं, प्रभु, धनु-बान, कर, फेरन लगे।
बृह्मांड, दिग्गज, सेष, पृथ्वी, सिंधु, परबत, डगमगे॥

दोहाः—हर्षे देव, विलोकि छवि, बरसत फूल, अपार।
८६. 'जय जय प्रभु', गुन-ज्ञान,-बल-धाम, हरन-महि-भार॥

इतने महँ, राक्षस कर सैना * आई घोर, पै, पाउं, उठइ ना।
गये, देखि, सनमुख, भट-बानर * प्रलय-काल, जनु, छाये-बादर॥
चमकत, अस, बरछी, तरवारा * दामिनि,दमकि,होत उजिआरा।
गज, रथ-घोरा - चीख कठोरा * गरजत, मानहु, बादर घोरा॥
कपि-लंगूर, अकासहिं, छाये * इन्द्र धनुष सम, लगत सुहाये।
उठत धूरि, मानहु, जल - धारा * वर्षा, बानन - बूँद, अपारा॥
दोउ दिसि, फेंकत, लाइ, पहारा * बिजुली, गिरत,मनहु, हर-बारा।
रघुवर, बानन - झरी लगाई * घायल निसिचर, चोटइं-खाई॥

लागत - बान, वीर चिक्करहीं * घूमि, घूमि, धरती पर, गिरहीं ।
तन-परबत ते, लोहू, जारी * नदियां, डरपोकन - भयकारी ॥
छंदः—डरपोकनहिं, डरपाइं नदियां, बहुत - मैले, रुधिर की ।
दल, दुइ, किनारे, रेत रथ, भई चाल, पहिया, भंवर की ॥
जल-जीव, खिच्चर, घोर, गज, पैदल, न जाहीं, मुख, गिने ।
लहरइं, धनुप, कछुआ-सी-ढालइं, सर्प, बान, सकति, बने ॥
दोहाः—वीर गिरत, तट - वृक्ष - से, चरबी, मानहु, फेन ।
८७. देखि, डरत, डर-पोक, अति, जोअन के मन, चैन ॥
भूत - आदि, यह नदी, नहावत * महा - भयंकर, खेल मचावत ।
चील, काग, भुज लइ लइ, भागत * खात, छीनि, इक, इक, जो पावत ॥
कहत एक, पा, अस बहुताई * रे शठ ! तोरी भूख न जाई ! ।
कोउ कराहत, तीरहि, गिरे * आधा - अंग, कोउ, जल - परे ॥
खींचत, गीध, आंत, तट, आये * जनु, बंसी खेलत, चित लाये ।
पत्ती - बैठि, बहे, कोउ, जाहीं * जनु केवट, जल, खेल, कराहीं ॥
जोगिनि, भरि भरि खप्पर लावहिं * भूतिन, और, पिसाचिन नाचहिं ।
खपरी, जनु करताल बजावहिं * चामुंडा, नाना विधि, गावहिं ॥
खात सियार, दांत ते, कट - कट * भरत पेट, हू हू करि झपटत ।
कोटिन रुंड, बिना-सिर, डोलहिं * धरती-परे, सीस, जय बोलहिं ॥
छंदः—बोलहिं जो जय जय मुंड, रुंड, प्रचंड, सिर-बिन, धावहीं ।
खप्परिन, खग्ग, उलझि, जुझहिं, सुभट, स्वर्गहि जावहीं ॥
निसिचरन-झुंडन, मारि, गरजहिं, भालु, कपि, अभिमान करि ।
मैदान - रन महँ, सोवहीं, जोधा, प्रभु के बान, मरि ॥
दोहाः—जाना रावन, तब, हृदय, भा निसचर - सँहार ।
८८. रावनः—मैं, अकेल, कपि, भालु, बहु, माया, रचउँ, अपार ॥
कविः—देवन, रामहिं, पैदल देखा * भा, हृदय महँ, दुःख, विसेखा ।
इन्द्र, अपन रथ, तुरत, पठावा * इन्द्र-सारथी, 'मातलि' लावा ॥

तेजवान, रथ, दिव्य, अनूपा * हरषि, चढ़े, कौसल-पुर-भूपा।
चंचल घोरा, सुन्दर, चारी * अमर,औ,मन मम,देत सवारी ॥
रथ पर चढ़े, राम कहँ, देखी * धाये कपि, बल पाइ, बिसेखी।
कपिन-मार, सहि सका न, मारी * तब, अस माया रची, सँभारी ॥
सो माया, इक रघुवर जानी * औरन सब, सो, सांची मानी।
सैन - निसाचर, वानर हेरे * अंगद, लषन, लखे, बहुतेरे ॥

छंदः—बहु बालि - सुत, सुग्रीव, लछिमन, देखि के, वानर डरे।
लछिमन सहित, सब, देखि के, तसवीर से. रहि गे, खड़े ॥
चकरात आपन-सैन लखि, हँसि, धनु, चढ़ायो, बान, ज्यों।
माया, हरी, रघुनाथ, पल महँ, हरपि सैना कपिन, त्यों ॥

दोहाः—बहुरि, राम, सब तन, चितइ, बोले वचन, गँभीर।
८९. रामः— रावन-मोरा जुद्ध, अब, देखु, थके तुम वीर ॥

कविः-अस कहि, रथ रघुनाथ चलावा * चरन-कमल-विप्रन, सिर नावा।
तब 'लंकेस' क्रोध, उर, छावा * गरजत,तरजत, सनमुख, धावा ॥
रावनःजीते जोधा, जो, रन माहीं * तिन सम, रे तपसी ! मैं, नाहीं।
'रावन' नाम, जगत सब जाना * लोक-पाल परे, कैदी - खाना ॥
'खर', 'दूषन ,'कबंध' तुम मारा * छिपि, कीन्हा, बाली - सँहारा।
निसिचर-जोधन कहँ संहारेउ * कुँभकरन, घन-नादहिं, मारेउ ॥
बैर, आज, सब, लेहुं, निवाही * भागि न रन ते, तुम, जो, जाई ॥
करउं, आज, खल ! काल-हवाले * परे,कठिन - रावन के, पाले !।
कविःदुष्ट बचन,सुनि कृपा-निधाना * हँसि कर, कहा,काल-बस जाना ॥
रामः-सांची, सब, तुम्हरी प्रभुताई * बके कहा, दिखरावहु, आई !।

छंदः—मत कर बकवाद, सुजस जाये, अब क्षमा करहु, और नीति सुनहु।
गुलआव, आग, कटहल, जग मां, हैं तीन तरह के नर जानहु ॥
"फूल"गुलाव, औ आम"फूल-फल", कटहल मां, "फल"ही लागत।
एक "कहत",इक,"कहत' "करत" नर,तीसर"करत",न कहि गावत ॥

दोहाः—राम-बचन, सुनि, हँसि, कहा, मोहिं, सिखावत ज्ञान।
६०. करत बैर, पहिले डरत ! अब लागे प्रिय, प्रान ! ॥

बचन बुरे, करि रिसि, दसकंधर * छांडे, बज्र से, बान, राम पर।
अनि-अनि-भाँति, बान, तब, धाये *दिसिऔर विदिस, गगन, महि, छाये॥
अग्नि-बान, मारा रघुबीरा * छन महँ, जरे निसाचर-तीरा।
तेज सक्ति, छांड़ी, खिसिआई * बान संग, प्रभु, फेरि, पठाई॥
कोटिन, चक्र, त्रिसूला, फेंकत * बिन-श्रम, प्रभु, इकइक कहं, काटत।
निष्फल जात, असुर के बाना * सकल-मनोरथ-दुष्ट-समाना॥
तब, सौ बान रथी के मारे * गिरा, भूमि, 'जय राम' पुकारे।
राम, कृपा करि, ताहि, उठावा * परम क्रोध, तब, रामहिं आवा॥

छंदः—भयो क्रोध, रामहिं, जुद्ध, जब, तरकस के बानहु, कलमसे।
टंकोर, धनुष-प्रचंड, सुनि, वायू के मुख, राक्षस फँसे॥
मंदोदरी-उर कंपि, कंपित सेष, पृथ्वी, गिरि डरे।
चिक्करहिं दिग्गज, थामि धरती, दांत ते, और, सुर हँसे॥

दोहाः—कान तलक, खींचा धनुष, छांड़े, बान, कराल।
६१. लहलहात, सायक चले, गगन मां, सर्प की चाल॥

उड़त-सर्प से, गे सब बाना * मारा, घोरन, और रथ-बाना।
तोरा रथ, और ध्वजा पताका * गरजा, पटहिं, होत सनाका॥
तुरत, और-रथ चढ़ि खिसियाना * छांड़े अस्त्र, सस्त्र, विधि नाना।
बहुत करम, पर सब बेकारा * दुसरन्ह-बैर-मनोरथ सारा॥
तब, रावन, दस सूल चलाये * चारहु घोरा, मारि, गिराये।
घोर उठाय, कोपि, रघुबीरा * खींचि धनुष, छांड़े, बहु तीरा॥
रावन-सिर, कमलन-बन, बिचरन * राम-बान-भँवरा, चले खुस-मन।
दस-दस-बान, भाल दस, मारे * गये पार, बहि रक्त-पनारे॥
चलत रुधिर, धायो, बलवाना * फिर, प्रभु, धनुष अपन, लइ ताना।
तीस तीर, फिर, रघुबर मारे * भुजन समेत, सीस, भुइं, डारे॥

जे सिर कटत, नये, फिर उपजत * उपजत, राम, नये हू, काटत।
कटत कटत, फिर, नये सब भंय * यह विधि,प्रभु,सिर,भुज,सब दहे॥
फिर फिर,प्रभु,काटत भुज-सीसा * बड़े खिलारी, कौसल - धीसा।
टँगि,अकास,रहि,सिर और बाहू * मानहु, कइक,'केत' और 'राहू'॥

छंदः—जनु 'राहु', 'केतु', अकास - मारग, रक्त छांड़त, धावहीं।
रघुबीर - तीर, प्रचंड, लागहिं, भूमि, गिरन न पावहीं॥
हर बान, बहुतक - सिरन - छेदे, उड़त सो, अस सोहहीं।
जनु, कोपि, सूरज, बीच - किरिनिन, अपन, 'राहू' पोहहीं॥

दोहाः—जस जस, प्रभु हति, तासु सिर, तस तस, होत अपार।
९२. विषय, किये, जस, नित, बढ़त, कामदेव, नर - नारि॥

दस-मुख, देखि, सिरन की बाढ़ी * भूला मरन, भई रिसि, गाढ़ी।
गरजा मूढ़, महा - अभिमानी * धावा, दसहु धनुष कहँ, तानी॥
समर - भूमि, दसकंधर, कोपेउ * दइ दइ बान, राम - रथ तोपेउ।
घरी एक, रथ, दीख न परा * जस कुहिरा महँ, सूरज दुरा॥
हाहाकार, सुरन, जब, कीन्हा *करि,प्रभु,क्रोध,धनुष, गहि लीन्हा।
काटि बान, रिपु के, सिर काटे * इत,उत,भुइं,अकास, दोउ, पाटे॥
काटे-सिर, अकास महँ धावहिं *जय-जय-धुनिकरि,भय,उपजावहिं।
"कहां लषन, हनुमान, कपीसा"!* "कहँ,रघुबीर, कौसलाधीसा"॥

छंदः—"कहँ राम" कहि,सिर, सबहि, धाये, देखि, बानर, भजि चले।
ताना धनुष, तब, राम, हँसि, सब सिरन कहँ, भेदा, भले॥
सिर-माल गहि, कर, कालका, तहँ, झुंड-झुंडन, आ मिलीं।
नदी, रुधिर की, जनु, नहा, रन-वृक्ष कहँ, पूजन चलीं॥

दोहाः—फिर, रावन, अति कोप करि, छांड़ी, सक्ति, प्रचंड।
९३. सनमुख आइ, विभीषनहिं, मनहु काल कर दंड॥

आवत देखि, सक्ति, खरी-धारा * सायक, जन-दुख-हरन, सँभारा।
कीन्ह विभीषन, पाछे - अपने * खाइ चोट, आ, आपु, सामने॥

लागि सक्ति, मुरछा, कछु, भई * प्रभुकर - खेल, सुरन - विकलई ।
दीख, विभीषन, प्रभु श्रम पावा * गहिकर,गदा, क्रोध करि,धावा ॥
विभीषनः–दुष्ट ! अभागा,मूर्ख,कुबुद्धी ! * तू, सुर-नर-मुनि-नाग-विरुद्धी ।
सादर, शिव, कहँ, सीस चढ़ाये * एक के बदले, कोटिन, पाये ॥
बचा रहा, यह ते, हत्यारा * अस कहि, गदा,हृदय मां मारा ।
छंदः—जब, लागि, हिरदय महँ गदा, अस-घोर, पृथ्वी महँ, गिरा ।
दस-मुख-ते, छाँड़त रक्त, फिर, उठि, सँभरि, धायो, रिस-भरा ॥
दोउ भिरे, अति बल, मल्ल जुद्ध विरुद्ध, इक, एकन हने ।
अभिमान, प्रभु-बल, भरि, विभीषन, मारि, नहिं रावन गने ॥
दोहाः—उमा ! विभीषन, रावनहिं, सनमुख देखत, कब ।
९४. श्री रघुबीर-प्रभाउ ते, भिरत, सो, कालहिं, अब ॥
थका विभीषन, बहुतहि जाना * लइ परवत, धायो हनुमाना ।
नासेउ रथ, घोड़ा, औ सारथी * दीन्ह, लात इक,हानि के छाती ॥
रहा ठाढ़, पर, काँपत गाता * गयो, विभीषन, जहँ रघुनाथा ।
फिर, रावन, कपि कहँ,ललकारा * उड़ा, गगन, कपि, पूँछ, पसारा ॥
पकरि पूँछ, रावनहु ओड़ाना * भिरे, तहाँ, रावन-हनुमाना ।
लरत, अकाश, बराबर-जोधा * मारत, एक, एक, करि क्रोधा ॥
अस सोहहिं, छल बल बहु करहीं * कज्जल गिरि, सुमेरु, जनु लरहीं ।
बुधि-बल,निसिचर,मिला न पारा * कपि,सुमिरा,तब,जग-रखवारा ॥
छंदः—फिरि, सुमिरि, श्रीरघुबीर, कपि, ललकारि, रावन कहँ, हनेउ ।
गिर परत, फिर, उठि लरत, देवन, दोउन की, जय-जय कहेउ ॥
हनुमंत-संकट, देखि, बानर, भालु, रिस करि, करि, चले ।
मतवार-रावन, सकल जोधन, भुज के बल, गहि गहि, मले ॥
दोहाः—हलकारे, रघुबीर, तब, धाये, कीस, प्रचंड ।
९५. देखि बली, कपि-केर-दल, करन लागि पाखंड ॥
अंतरधान भयो, छन एका * फिर, प्रगटे, खल, रूप, अनेका ।

रघुपति-कटक, भालु, कपि, जेते * जहँ, तहँ, प्रगट दसानन, तेते ॥
देखे, कपिन, बहुत - दस-सीसा * भागे, भालु, विकल, भट-कीसा ।
भागत वानर, धरत न धीरा * "रखहु ! दौरि, लषन ! रघुबीरा" ॥
दस-दिसि, दौरत, कोटिन-रावन * गरजत, घोर, कठोर, भयावन ।
देवताः—भागि देव, डरि, जान बचाई * जय की आस, तजे सब-भाई ॥
सब सुर जीते, इक दसकंधर * बहुत भये.चलु गुफा के अंदर ।
कविः—शिव, वृह्मा, औरहु मुनि, ज्ञानी * ठहरे, जिन्ह, प्रभु-महिमा जानी ॥

छंदः—जाना प्रताप, ते रहे निर्भय, वानरन, जाना नहीं ।
वहु, जानि, रावन, भागे, रक्षा मांगि, कपि, रघुवर जहीं ॥
हनुमंत, अंगद, नील, नल, अति-वल, लरत, रन-वीर जो ।
मारे, करोरन - रावना, छल - रूप - बाढ़े, तीर, जो ॥

दोहाः—सुर, वानर, देखे विकल, हँसे, कौसलाधीस ।
९६. एक बान, धरि, धनुप पर, मेटे सब-दस - सीस ॥

प्रभु, छन महँ, माया, सब, काटी * सूरज, देखि, अंधेरा फाटी ।
रावन-एक, देखि, सुर हरषे * फिरे, फूल, फिर, प्रभु पर बरषे ॥
भुज-उठाय, रघुपति, कपि फेरे * भिरे, एक, एकन, तव, टेरे ।
प्रभु-बल पाय, भालु कपि धाये * लपकि, लपकि, मैदानहिं, आये ॥
रावनः—अस्तुति करत, देव, तेहि देखे * भयौ, एक मैं, इनके-लेखे ।
सदा, पिटत, तुम, दुष्टहु ! आये * कीन्ह क्रोध, आकासहिं, जाये ॥
'हाहाकार - करत, सुर भागे * खलहु ! जाहु, कहँ, मोरे-आगे ।
कविः—विकल देखि सुर अंगद धावा * पकरि चरन, धरती पर लावा ॥

छंदः—गहि, भूमि डारे, लात मारे, बालि-सुत, प्रभु पहँ, गयो ।
फिर, सँभरि, उठि, दस-सीस, घोर, कठोर, शब्द, करत भयो ॥
अभिमान करि, दस धनु चढ़ाय के, बान, तानि के, बरपई ।
किये, सकल भट, घायल, भयाकुल, देखि, निज-बल हरपई ॥

दोहाः—काटे, प्रभु, तब, असुर के, बान, भुजा, सिर, चाप ।
९७. बाढ़े, फिर फिर, सबहि, जस, तीरथ - किये - के पाप ॥

सिर, भुज बाढ़ि,देखि, रिपु केरी * भालु-कपिन-रिस, भई, घनेरी ।
मरत न, मूढ़, कटेहु भुज, सीसा * धाये, कोपि, भालु,भट, कीसा ॥
हनूमान, अंगद, नल, नीला *'दुविद' 'कपीस' 'पनस' बल-सीला ।
मारत वृत्त, उठाय, पहारा * पकरि,उनहिं ते,लौटि के, मारा ॥
देही छीलत, नाखूनन ते * कहुं, मारत, बानर, लातन ते ।
तब, नल नील,सिरन्ह, चढ़ि गये * नाखूनन ते, फारत भये ॥
देखा रावन, लोहू आवत * कपि-पकरन कहं,भुजा पसारत ।
गहे न जाहिं, भुजन पर, फिरहीं * भंवरा, दुइ, कमलन-बन चरहीं ॥
कोपि, कूदि, दोउ-पकरि, बहोरी * पटकत हीं, भजे, भुजा - मरोरी ।
करि रिस,फिर,दसहू धनु लीन्हें * मारि बान, घायल, कपि कीन्हें ॥
कीन्हें मुरछित, यह - सब-बंदर * होत सांझ, हर्षा दसकंधर ।
मुरछित देखि- सकल, कपि-बीरा * जामवंत, धायो, रन - धीरा ॥
संग, भालु - लिये · पेड़-पहारा * मारन लागि, पुकारि, पुकारा ।
भा क्रोधित, रावन, बलवाना * गहि पद,पटकत,भुइं,भट नाना ॥
जामवंत देखे, कपि - हारी * रावन हृदय, लात, इक, मारी ।

छंदः—उर, लात-घात, प्रचंड. लागत, बिकल, रथ ते, गिर परेउ ।
पकरे,भुजन महँ-रीछ जनु, निस, भँवर,कमलन्ह, बसि रहेउ ॥
फिर,मारि,मुरछित,लात,इक-और, भालु पति,प्रभु पहँ, गयो ।
निसि जानि, रथ महँ, डारि,असुरहिं- सारथी, चलते भयो ॥

दोहाः—आये - होसहिं, भालु कपि, आये, प्रभु के पास ।
९८. उधर, निसाचर, रावनहिं, घेरे, जी-महँ-त्रास ॥

तेहि रैन, सीता पहँ, जाई * 'त्रिजटा' कहि, सब कथा, सुनाई ।
सिर-भुज-बाढ़ि,सुनत,रिपु केरी * सिय - हृदय, भइ, त्रास, घनेरी ॥
मुख उदास, बाढ़ी, मन, चिंता * त्रिजटा सन, सिय, कहा, तुरंता ।

सीताः—होनहार, कह? कहउ, न, माता ! * केहि विधि, मरइ, जगत-दुख-दाता ।
राम-बान-सिर-कटि, नहिं मरई * टेढ़ बिधाता, चरित, सो, करई ॥
मोर-अभाग, जिआवत रावन * चरन-कमल, बिछुरे, जेहि कारन ।
रचा, विधाता, जिन्ह, मृग झूँठा * सोइ, आज, तौ, मो ते, रूठा ॥
जेहि विधि, भारी दुःख महाये * लषनहिं, करुए बचन, कहाये ।
राम-बिरह-विष, भरि, भरि, बाना * मारे, मोहिं, जो, तकि, औरे, ताना ॥
राखत, अस-दुख, मोर, जो, प्राना * राखे रावन, सोइ भगवाना ।
कविः—बहुविधि, करत विलाप, जानकी * करि करि सुधि, कृपा-निधान की ॥
त्रिजटाः-कह त्रिजटा, सुनु, राज-कुमारी * मरइ, हृदय लागि, बान-खरारी ।
प्रभु, मारत नहिं, हृदय, तेही * रावन - हृदय, बसत बैदेही ॥
छंदः—"रावन के हृदय, जानकी, और. जानकी-उर, बसत मैं ।"
"सब-लोक-मोरे-पेट, लागत बान, सब ही, नासि हैं ॥"
सुनि-बचन-मन-महँ-हर्ष-दुख, लखि, फेरि, अस, त्रिजटा कहा ।
अब, मरइ रिपु, यह विधि, सुनहु, सुन्दरि, तजहु संसय, अहा !॥
दोहाः—काटत-सिर, हुइ है विकल, छुटि है तोरा ध्यान ।
६६. तब, हृदय मां, तीर दइ, मरि हैं, राम, सुजान ॥
कविः—अस कहि, वहुत भाँतिं, समुझाई * फिर, त्रिजटा, घर अपन, सिधाई ।
राम - स्वभाउ, सुमिरि, वैदेही * विरह-विथा, उपजी, उर तेही ॥
चंद्रहिं, बुरा कहा, वह-राती * जुग-सम भई, कटनि नहिं आती ।
करत विलाप, मनहिं-मन, भारी * राम-विरह, जानकी दुखारी ॥
विरह-जरन, जब, तन, भइ, भारी * बाएँ नयन, भुज, फरकहिं, सारी ।
सगुन विचारि, धरा, मनु, धीरा * "अब, मिलिहइं, कृपालु, रघुबीरा" ॥
आधि-रात, इत, रावन जागा * अपन सारथी, डाँटन लागा ।
रावनः—सठ ! रन-भूमि, छुड़ावा, मोही * अरे ! नीच, मूरख, थू ! तोही ॥
कविः—पकरि चरन, सारथि समुझावा * भये भोर, फिर, रथि-चढ़ि, आवा ।
सुनि आगमन, दसानन केरा * कपि-दल, खर-भर, भा वहुतेरा ॥

जहँ तहँ, पेड़, पहाड़, उखारी * धाये, कटकटाय, भट, भारी ।

छंदः—धाये जो बानर, विकट, भालु, कराल, कर, परवत धरा ।
अति क्रोध करि, सो, फेंकि, मारत, भाजि चले रजनीचरा ॥
बिचलाय दल, बलवान बँदरन, घेरि, फिर, रावन, लियो ।
चहुँ दिसि, चपेटहिं, मारि, नख ते फारि, तन, व्याकुल कियो ॥

दोहाः—देखि, महा बानर प्रबल, रावन कीन्ह विचार ।
पल महुँ, अंतरध्यान हुइ, माया, दीन्ह, पसार ॥

तोमर छंद

१. जब, कीन्ह, ते, पाखंड, भये प्रगट, जीव, प्रचंड ।
बैताल, भूत, पिसाच, लिये, हाथ महँ, धनु, चाप ॥
जोगिनि, लिये तरवार, इक हाथ, खपरी, धारि ।
लगी, रक्त ताजा, खान, नाचहिं, करइँ, बहु गान ॥

२. धरु, मारु, बोलहिं, घोर, रहि छाय, धुनि, चहुँ ओर ।
मुख बाइ, दौरत खान, कपि, भाजि, लइ लइ प्रान ॥
जहँ जांय, बानर भागि, तहँ, बरत, देखत, आगि ।
भये विकल, बानर, भालु, फिर, लागि, बरसन बालु ॥

३. जहँ तहँ, थकाये कीस, गरजत, बहुरि, दस-सीस ।
लछिमन, कपीस समेत, भये, सकल बीर, अचेत ॥
हा ! राम ! हा ! रघुनाथ, कहि, सुभट, मींजहिं, हाथ ।
यह विधि, सकल, बल, तोरि, कियो, फेरि, छल, अस घोर ॥

४. उपजे, बहुत हनुमान, पाथर लिये, बलवान ।
तिन्ह, राम घेरे जाय, चहुँ दिसि ते, झुंड बनाय ॥
मारहु, धरहु ना जाइ, कटकटहिं, पूँछ उठाय ।
दस दिसि, लँगूर विराज, तिन्ह बीच, कौसल-राज ॥

छंदः—तेहि बीच सोहत राम, श्यामल, जुक्ति कहुँ कस, चाल की ।
जनु, इन्द्र, धनुष अनेक, कीन्ही, बाढ़ि, बृक्ष-तमाल की ॥

भा, देखि प्रभु, दुख-हर्ष, देवन, मुख ते, जय जय जय करी।
रघुबीर, एकहि तीर, करि रिसि, छन मां, सब माया हरी॥
छंदः—माया गई, कपि भालु हर्षे, पेड़, परवत, लइ, फिरे।
फिर, बान छांड़े, राम, रावन-भुज-औ-सिर कटि, भुइं, गिरे॥
श्रीराम - रावन रन—चरित्र, अनेक कल्पहु, गावहीं।
सो, सेष, सारद, वेद, और कवि, पार, तहुँ, नहिं पावहीं॥
दोहाः—रन के थोरे गुन कहे, मूरख - तुलसीदास।
जेतो बल, तेतो उड़त, मच्छर, जैस, अकास॥
बहुत बार, सिर, भुज,कटे, मरत न, भट - लँकेस।
१००. खेलत प्रभु, मुनि-सिद्ध-सुर, व्याकुल, लखे - कलेस॥
काटत, बढ़त, सीस, अस, भाई * भये लाभ, जस लोभ अधिकाई।
मरत न रिपु, श्रम भयो बिसेखा * राम, विभीषन तन, तब देखा॥
मरत, कालहु, जेहि की इच्छा * भगत केर, सो, करत परीछा।
विभीषनःजानत-सब,तुम,जग-के-नायक!*सरन-पाल,सुर-मुनि-सुख-दायक॥
बसत ढुड़ी महँ, अमरित, यह के * नाथ!जिअत रावन, बल ता के।
सुनत, विभीषन - बचन, कृपाला * लीन्हा, हाथन, बान, कराला॥
लगे होन असगुन, इकबारा * रोवत, कूकुर, गधा, सिआरा।
बोलत पछी, जग - दुख - हेतू * पूँछ-लगे, निकसे, नभ, केतू॥
लागीं दसहू दिसि, तब, जरनि * सूरज - गहनहु, लागा, परनि।
मंदोदरि - उर, लागा कांपन * मूरति,लगीं,नयन,जल, छांड़न॥
छंदः—रोवहिं मुरति, बिजुली गिरत, आंधी चलत, धरती डुली।
घन, खून-खाक-औ-धूरि, बरसत, बिन-कहे-असगुन, भली॥
उतपात, बहुतक, देखि, नभ, सुर, विकल, बोलत जय जये।
सुर-डरे - जानि, कृपालु, रघुपति, बान, धनु, जोरत भये॥
दोहाः—कानन लगि, खींचा धनुष, दिये बान, इकतीस।
१०१. काल-सर्प-से,बान, इक उर, सिर दस, भुज बीस॥

नाभी कर अमारित, इक सोखा ❋ बाकी, सिर, भुज महँ, लागि, चोखा ।
लइ सिर, भुजा, चले सब बाना ❋ नाचत, रुंड रहा, खिलखाना ॥
धसकी धरती, दौर - प्रचंडा ❋ किये बान ते, झट, दुइ खंडा ।
घोर गरज करि, मरती बारा ❋ 'कहाँ! राम, मरिहौं, ललकारा' ! ॥
डोली भूमि, गिरा, जब, रावन ❋ दिग्गज, सिंधु, नदी, गिरि, हालन ।
गिरा, भूमि, दुइ खंड बढ़ाई ❋ वानर - भालू - बहुत - दबाई ॥
मंदोदरि - आगे, भुज, सीसा ❋ चले बान, धरि, जहँ जगदीसा ।
घुसे बान, तरकस महँ, जाई ❋ देखि, सुरन, दुंदुभी बजाई ॥
तेज-दसानन, प्रभु महँ, आयो ❋ देखा बृह्मा, शिव, सुख पायो ! ।
भरी धुनी -जय - जय, बृह्मंडा ❋ जय रघुबीर, प्रबल भुज-दंडा ।
बरसहिं फूल, देव - मुनि-झुंडन ❋ जय कृपालु, जय जय रघुनंदन ॥

छंदः—जय, कृपासिंधु, दुख-भ्रम, तुम, नासत, देत मोक्ष, सुख, भगतन कहँ ।
तुम, दुष्टन मारत, जग उपजावत, समरथ, दया-रखत-उर-महँ ॥
सुर, बरसावत, आनंद-भरे-मन, फूल, नगारे हू बाजहिं ।
रन के आँगन महँ, राम के अँग, जनु कामदेव बहुतक राजहिं ॥

छंदः—श्रीराम - जटा के मुकुट - बीच महँ, फूल मनोहर, कस चमकहिं ।
जनु, बिजुली, नील-के-परवतपर, औैर, तारागन, संगसंग, दमकहिं ॥
प्रभु, हाथ फिरावत, धनु बानन तन पर, छींटइं, लोहू की परीं ।
अस लगत, कि, मुनियां-लाल, बहुतसी, बैठि, तमालन, सुख-भरीं ॥

दोहाः—कृपा-द्रष्टि, बरसाइ, प्रभु, खोयो देवन - भय ।
१०२. कही भालु - कपि, हरषि, सुख-धाम, मकुंद की जय ॥

देखि पती - सिर, मंदोदरी ❋ मुराछित, धरती पर, गिर परी ।
और-नारि, रोवत, उठि, धाईं ❋ रावन-तीर, ताहि, लइ, आईं ॥
पति-गति देखे, करत पुकारा ❋ बिखरे-बार, न, देह- सँभारा ।
पीटत छाती, तें, विधि नाना ❋ रोवत, करइं प्रताप- बखाना ॥
मंदोदरीः-जेहिकेबल, प्रभु! धरतीकांपत! ❋ अग्नि, चंद, सूरज सरमावत ! ।

कच्छप,सेष,न सकि सहि,भारा ! * सो तन,धूरि-भरा,भुइं, डारा ! ॥
'बरुन', कुबेर','इन्द्र',और,'वायू'!* तुम-आगे, रन,धीर न लायू ! ।
भुज-बल,जीति काल,जम,साईं ! * डारे, आज, अनाथ की नाईं ! ॥
जानत, जग, तुम्हरी प्रभुताई ! * सुन,कुटुंभ,बल,बरनि न जाई ! ।
राम-बैर, अस हाल तुम्हारा * रहा न, कुल महँ,रोवन-हारा ! ॥
सब सृष्टी, तुम्हरे बस, नाथा ! * दिगपालहु,डरि,नावहिं,माथा ! ।
आज, भुजा-सिर,खात सिआरा * मिला ठीक फल,कर्म-अनुसारा!॥
काल-के-बस,पति! कहा न माना * जग-स्वामी, सो, मानुष जाना ।
छंदः—निसिचर-के-बन-कहँ-आग्नि, तिन, भगवान कहँ,तू, समुझि नर ।
नहिं, राम-करुणामय, भजा, जिन्ह, देव-शिव-से, नाइं सिर ॥
पापन-भरा - तनु, जन्म भरि, पर-द्रोह महँ, बांधे-कमर ।
तबहूं, दियो, बैकुंठ, ऐसे, सुद्ध, बृह्महिं, नवउं सिर ॥
दोहाः—अहा ! नाथ ! रघुनाथ-सम, कृपा-सिंधु, को, आन ! ।
१०३ जो गति,मुनियन कहँ कठिन, दीन्ही,सोइ, भगवान !! ॥
कवि:मंदोदरी-बचन, सुनि, काना * सुर,मुनि,सिद्ध,सबहिं,सुख माना।
बृह्मा, शिव, नारद, संकादिक * स्रेष्ट-मुनी, परमारथ-गाहक ॥
भरि लोचन, रघुपतिहिं, निहारी * प्रेम-मगन, सब, भये सुखारी ।
देखे, रोवत - कुल - की - नारी * भयो,विभीषन-मन, दुख,भारी ॥
भाई-दसा देखि, दुख कीन्हा * तब,प्रभु, लषनहिं, आज्ञा दीन्हा ।
लषन, विभीषन कहँ, समुझावा * फेरि,विभीषन,प्रभु पहँ, आवा ॥
कृपा-दृष्टि, प्रभु, ताहि, बिलोका * करहु भाई-क्रिया, तजि सोका ।
कीन्ह क्रिया, प्रभु-आज्ञा-मानी * विधि सों,जगत-रीति,जिय जानी॥
दोहाः—मंदोदरि, और, नारि सब, दिये तिलांजलि, ताहि ।
१०४. गईं, भवन, कहती भईं, प्रभु-के-गुन, मन, मांहि ॥
आय,विभीषन, फिर, सिर नायो * कृपा-सिंधु, तब, लषन बुलायो ।
राम:लइ सुग्रीव, अंगद, नल, नीला * जामवंत, हनुमत, नींतीला ॥

मिलि सब,जाहु, विभीषन-माथा * राज-तिलक,कीन्हेउ,निज हाथा!।
पिता-बचन, मैं, नगर न जाऊं * अपन-स-भाई, कपिन, पठाऊं॥
कवि:तुरत,चले,कपि,सुनि,प्रभु-वचना* कीन्हीं जाइ, तिलक की रचना।
सादर, सिंहासन, बैठारा * कीन्ह तिलक, असुतुति-उच्चारा॥
जोरि हाथ, सबहीं, सिर नाये * फेरि, विभीषन, प्रभु पहँ, आये।
तब, रघुबीर, टेरि कपि, लीन्हे * कहिप्रिय-बचन,सुखी सब,कीन्हे॥
रामः–छंदः —कपि ! बल-तुम्हारे, रिपु मरेउ, अस वचन, अमरित-सम, कहे।
पायो, विभीषन, राज, तीनहु-लोक, तुम्हरे-जस, नये॥
मोहिं-सहित, सुभ-कीरति,तुम्हारी, प्रीति करि, जो, गाइहैं।
सो, विन - परिश्रम, जगत-सिंधु - अपार - पारहिं पाइहैं॥
कविः—दोहाः—बारहिं बार, विलोकि मुख, नहिं अघात कपि-पुंज।
१०५. सुनत राम के वचन मृदु, गहत, सकल, पद-कंज॥
फिर, प्रभु, टेरि लीन्ह, हनुमाना * लंका जाहु, कहा भगवाना।
रामः–समाचार सब,सियहिं,सुनायो * तासु-कुसल,लइ,तुम,फिरिआयो॥
कवि:–तब,हनुमान, नगर महँ, आये * सुनि,निसिचरी, निसाचर धाये।
बहु प्रकार, तिन्ह, पूजा कीन्ही * कपिहिं, दिखाइ,जानकी,दीन्ही॥
दूरहिं ते, प्रनाम, कपि कीन्हा * रघुपति - दूत, जानकी, चीन्हा।
सीताः-कहहु,तात!प्रभु,कुसलतौ,हैं,ना * प्रिय-देवर,औ, कपिन-की सैना?॥
हनुमानः सबविध,कुसलकौसलाधीसा* माता ! लरि जीता दस-सीसा।
राज, जो अचल, विभीषन पावा * सुनि कपि-वचन हर्ष,उर छावा॥
छंदः–अति हर्ष, मन, तन पुलकि, लोचन, जल भरे, लछिमी कहा।
सीताः—कह देहुं, तीनहु लोक, वस्तु, बानी-सम, नाहीं, अहा॥
हनूमानः-जग-राज, निश्चय, आज, माता मोर! मो कहँ, मिलि गयो।
जो, जीति-रिपु-दल,आजु, भाइन, दोउ, कुसल, देखत भयो॥
सीताः—दोहाः—बेटा! सिगरे नीक - गुन, बसहिं, हृदय - हनुमान।
१०६. दया - दृष्टि, राखहिं सदा, लक्ष्मण, और भगवान॥

अब,सोइ जतन,करहु,तुम, ताता * देखहुं स्यामल, कोमल, गाता ।
कविः-तव,हनुमान, राम पहँ, जाई * हंसि हंसि, सीता-कुसल सुनाई ॥
सुनि संदेस, सूरज - कुल-भूषन * टेरे अंगद, और विभीषन ।
रामः-हनूमान के संग, सिधावहु * सादर, जाय, जानकी लावहु ॥
तुरत, गये, जहँ, सीता खड़ी * सेवत, झुकि झुकि, सब निसिचरी ।
वेग, विभीषन,तिनहिं, सिखावा * सादर,तिन्ह, सीतहिं,अन्हवावा ॥
बहु प्रकार, गहने पहिराये * साजि, एक, पालकी सो लाये ।
ता पर, हरषि, चढ़ी वैदेही * सुमिरि राम-सुख-धाम सनेही ॥
छड़ी, बेत की, रक्षक - हाथन * चले, लोग सब, अति प्रसन्न मन ।
भालू, कपि, सब, देखहिं, आई * रक्षक, रोकहिं, क्रोधित, धाई ॥
रामः-कहा राम,मोरी कही, मानहु * पाइन ही, सीता कहँ, लावहु ।
देखहिं कपि, जनु, अपनी-माता *कहा,लखन,हंसि, अस,रघुनाथा ॥
कविः-सुनिप्रभु-वचन,भालु-कपि हर्षे * फूल, अकास ते, देवन, बरषे ।
जो-सिय, अग्नी, सौंपी, स्वामी * चाहत प्रगट, सो, अंतरजामी ॥

दोहाः—तेहि कारन, श्री राम ने, कही, खोट, कछु बात ।
१०७. जीभ दबाई, निसिचरिनि, बात, न लागि, सुहात ॥

प्रभु के वचन, सीस धरि, सीता * बोलीं मन-क्रम-वचन-पुनीता ।
सीताः-लछिमन!होहु!धरम-के-साथी * करहु अग्नि, मैं, धरम दिखाती ॥
कविः-सुनि लछिमन,सीता की बानी * ज्ञान, जुक्ति, ब्रह्म, धर्म की सानी ।
भरि आँसू, जोरे कर, दोऊ * प्रभुसन, कछु,कहिसकतन,ओऊ॥
देखि राम-रुख, लछिमन धाये * अग्नि हेत, बहु लकरी, लाये ।
सुलगत अग्नि, दीख वैदेही * मन प्रसन्न,कछु, डर नहिं,तेही ॥
सीताः—वचन-कर्म-मन, जो,उर-माहीं! * राम-छोड़ि, दूसर-गति नाहीं ! ।
अग्नि-देव!सब की गति जानहु * चंदन-सम,मोहिं,सीतल,लागहु!॥
कविः—छंदः-चंदन-सी-अग्नी महँ, घुसी, रामहिं सुमिरि, तव, जानकी ।
जय राम ! जिह्न कर चरन-रज, शिव, पूजि, अपने ध्यान की ॥

जग-कर-कलंक, औ, रूप - छाया - जानकी, अग्निी जरे।
प्रभु-चरित, काहु न दीख, सुर, मुनि, सिद्ध. सब, देखत खड़े॥
छंदः—गहि, अग्नि-देवा, हाथ, लक्ष्मी, वेद - जग - जानी-भई।
जस, क्षीर-सागर, विष्णु कहँ, रामहिं, सौंपि, सीता-सोई।
सो, राम-बाएँ-अंग, राजत, सुघर अति, सोभा भली॥
जनु, कमल-नीले-तीर, खिलि करि, रहि गई सोने-कली॥
दोहाः—हरषहिं, बरषहिं, फूल, सुर, बाजत, गगन, निसान।
देवी, किन्नर, गाइं, सब, नाचहिं, चढ़े - विमान॥
श्री - जानकी - समेत - प्रभु, सोभा, अधिक, अपार।
१०८. देखत, हर्षे, भालु - कपि, "जय रघुपति, सुख - सार॥"
तब, रघुपति की आज्ञा पाई * 'मातलि'चलेउ,चरन.सिर नाई।
आये देव, सब, मतलब - वारे * जनु, विरागि, इच्छा-ते-न्यारे॥
देवः—दीन-बंधु, दयाल, रघुराया ! * कीन्ह, आप, देवन पर, दाया।
कामी, दुष्ट, जगत - कर-घाली * अपन-पाप-ते, मरा, कुचाली॥
एक-रूप, तुम, बृह्म अबिनासी * सदा एक-रस, जन्म-उदासी।
रोग, पाप, जन्म, इच्छा,गुन-बिन * दयावान, सकती, जाती-किन॥
'मच्छ''कच्छ','नरसिंह',अवतारा * 'बामन''भृगु','बराह'-तन धारा।
जब जब, नाथ ! सुरन,दुख पावा * धरि, नाना तन,आपु,नसावा !॥
पापन-जर, रावन, सुर-द्रोही * काम-लोभ-मद-रंगा,और क्रोधी।
सोउ, कृपालु ! बैकुंठ, पठावा * यह,हमरे मन, अचरजि,आवा॥
हम देवता, परम अधिकारी * मतलब कहँ,प्रभु-भक्ति बिसारी।
बहुत रहे, हम, भव महँ, परे * रक्षा करहु ! सरन, अब, डरे !॥
दोहाः—करि विनती, सुर, सिद्ध, सब, रहि, जहँ तहँ, कर जोरि।
आये बृह्मा, प्रेम ते, अस्तुति करत, बहोरि॥
ब्रह्माः-छंद-१. जय ! राम, नित्य, सुख - धाम, हरे ! रघु-कुल-नायक,धनु-बान धरे।
चीरत, गज-भव के, तुम, नाहर, जग-स्वामी, चातुर, गुन-सागर॥

छवि-कोटिन काम-से तन धारे, गुन-मग्न, कवी, मुनि, सिधि, सारे।
बल ते, बढ़-नाग, गहेउ रावन, जस, सर्प, गरुड़, भा जस पावन ॥
२. भगतन, सुख-दइ, भय-सोक-नसत, घर-ज्ञान-के, कोप ते दूर, बसत।
घन-ज्ञान ! बहुत अवतार धरे, सुभ कीन्ह चरित. जग-भार हरे ॥
'सब-महँ', 'इक', 'जन्म-न-आदि', 'सदा', प्रनाम, तुमहिं, हे राम! मुदा।
खल-"दूषन" कहँ, तुम, मारि दियो, अति-दीन-विभीषन, भूप कियो ॥
३. भण्डार. गुनन-और-ज्ञान के तुम, अस रामहिं, सुद्ध, नवत, सिर, हम।
बल-और-प्रताप-भुजन, अद्भुत, इत-दुष्ट-चला, तुम-मारा-उत ॥
आपहि, दीनन पर, दाया, हित, छवि-धाम, नवउँ मैं, सीय-सहित।
भव, तारन कहँ, अवतार धरे, सब काम-के-दोस, विकार, हरे ॥
४. कर, बान-धनुष, तरकस, धारे, राजा सुभ, नयन-कमल वारे।
सुख-खानि, रमा-मां-विहार-करत, ममता-मद-कामहिं, जारि, हरत ॥
नहिं इन्द्रिन-गम्य, लखइ, तुम, को, "सब-रूप" "अलग-सब-से" तुम, सो।
नहिं दंत-कथा, यह वेद-भनित, रवि ते, जस धूप, मिली-औ-रहित ॥
५. कृत-कृत्य भये, प्रभु ! बानर ये, आदर ते, श्री-मुख; देखत, जे।
धिग जीवन, देव-सरीर, हरे ! बिन भक्ति, रहे, भव, भूलि परे ॥
अब, दीन-दयालु, दया करिये, भटकी-मति, मोर, हरी ! हरिये।
जेहि कारन, अनुचित कर्म करउँ; दुख जाने-सुख, सुख-सुख विचरउँ ॥
६. मारा, दुष्टन्ह, जग, कीन्ह छमा, पद - कमलन्ह सेवत शंभु - उमा।
राजन-राजा ! बरदान मिलइ ! 'पद - प्रेम - सदा - कल्यान-करइ' ॥
दोहाः—बृह्मा, अस्तुति, अस, करी, प्रेम पुलकि, अति, गात।
१०६. देखत सोभा सिंधु की, लोचन, नहीं अघात ॥
कविः—तेहि अवसर, दसरथ, तहँ, आये * देखे-पुत्र, नयन, जल, छाये।
लषन सहित, प्रभु, बंदन कीन्हा * असिरबाद, पिता, तब, दीन्हा ॥
रामः—तात ! सकल, तुम-पुण्य-प्रभाऊ * जीति-न-जाय, सो, जीता, राऊ।
कविः-सुनिसुत-वचन, प्रेम, अति बाढ़ * आंसू, नयन, रोम सब, ठाढ़े ॥

प्रेम-थाह, दसरथ की लीन्ही * पोढ़-ज्ञान, तब, सिन्ना दीन्हीं ।
ता ते उमा ! मोन्न, नहिं पावा * चली-फिरी-भगती, मन, लावा ॥
भजत सगुन, सो, मोन्न न लेहीं * तिनहिं, राम, निज-भगती देहीं ।
बार बार, करि, प्रभुहिं, प्रनामा * दसरथ, हरषि, गये,सुर-धामा ॥

दोहाः--लषन, जानकी सहित, प्रभु, कुशल कौशला-धीस ।
छवि बिलोकि, मन, हर्ष, अति, 'इन्द्र' झुकायो सीस ॥

तोमर छंद

१. जय ! राम, सोभा - धाम, सेवक देति विश्राम ।
तरकस, धनुष, और बान, भुज - तेज, और बलवान ॥
तुम, "खर", औ. "दूषन" हते, निसिचरन - सैना, मथे ।
यह - दुष्ट, मारेउ, नाथ ! भये देव, सकल, सनाथ ॥

२. जय ! हरन पृथ्वी - भार, महिमा, उदार, अपार ।
जय ! शत्रु - रावन, जय ! करि, राछसन की छय ॥
लँकेस, रह, बल - गर्व, बस - कीन्ह - सुर - गंधर्व ।
मुनि, सिद्ध, जन, नर, नाग, हठि, सब के पाछे लागि ॥

३. औरन - बुरा, चहा, खल, मिला, उचित, पापी ! फल ।
अब, सुनहु, दीन - दयाल, लोचन - कमल - ते विसाल ॥
मोहिं, रह, अधिक अभिमान, 'नहिं - कोउ - मोहिं-समान' ।
अब, देखि, प्रभु - पद - कमल, अभिमान - दुख, गा, सहल ॥

४. कोउ बृह्म, निर्गुन ध्याइ, 'नहिं - लखत', वेद बताइ ।
मोहिं, भाय, कौसल - भूप, श्री - राम - सगुन - सरूप ॥
वैदेहि, लषन समेत ! उर, बसहु ! मैं, घर देत ।
मोहिं, जानिये, निज - दास, दे, भक्ति, लछिमी - निवास ॥

छंदः—लछिमी-पति,भक्ति मिलइ ! भगतन, सुख दइ के, त्रास-हरन-हारे ।
सुख-धाम ! नवत, रघुनायक, मैं, छबि कोटिन-काम-अधिक धारे ॥

परम-आनद, देव-प्रसन्न करत, नर-तन, नहिं-तौल, सो, बल-धारे ।
बृह्मा - शिव-से - देवन, पूजा, पूजत, महुं, कोमल - चित - वारे ॥
दोहाः—अब, करि कृपा, विलोकि, मोंहि, आज्ञा देहु, कृपालु ।
११०. कहा करउं, सुनि, अस बचन, बोले दीन - दयालु ॥
रामः-सुनहु, इन्द्र!कपि, भालु, हमारे * निसिचर - मारे, धरती - डारे ।
मोरे हित, तजि दीन्हे प्राना * इनहिं,जिआवहु,इन्द्र,सुजाना! ॥
सुनहु,गरुड़ ! प्रभु की यह बानी * गूढ़ बहुत, समुझत मुनि,ज्ञानी ।
सकहि मारि, तिहुँ-लोक,जिआई * कहत इन्द्र ते, देत बड़ाई ॥
अमरित छांड़ि,भालु कपि जिआये* हरषि, उठ,सब प्रभु पहँ, आये ।
वरषा अमरित, दोउ-दल - ऊपर *जियेभालु-कपि,पर,नहिंनिसिचर।
राम - रूप, हुइगे, राक्षस - मन * मिली मोक्ष,जा,तजि सरीर,रन ।
सुर के अंस रहे, कपि - रिच्छा * जिये,सकल, रघुपति की इच्छा ॥
राम-सो, को, दीनन - हितकारी * कीन्हे मुक्त, निसाचर, मारी ।
खल, मल-धाम,जो कामी, रावन *मुनि-न-पांहिं,सोगतिदइ,आनन ॥
दोहाः—बरषि फूल, सब सुर चले, चढ़ि चढ़ि, रुचिर विमान ।
देखि समय, फिर,राम पहँ, आये, शंभु, सुजान ॥
जोरि हाथ,अति प्रीति करि, स्याम नयन, भरि नीर ।
१११. विनय करत, बानी - हलत, पुलकित होत सरीर ॥
शिवः–करु रक्षा, हे ! रघुकुल-नायक * सुन्दर धनुष, हाथ महँ,सायक ।
पवन-ते, नासत, मोह-के - बादर * भ्रम-बन - अग्नि, देव-के-आदर ॥
निरगुन, सगुन, गुनन-अस्थाना * भ्रम - अँधियारी-सूर्य - समाना ।
सिंह-से, काम-क्रोध-मद-गज कहँ * बसत,सदा,भगतन के मन महँ ॥
विषय-कामना-कमलन - के - बन * पाला, जनु, ढूड़त, हारा, मन ।
परम-धाम,भव-सिंधु-के-"मंदर" * छुटे-कठिन-भव,जाउं,प्रभू,तरि ॥
स्याम - सरीर, कमल-से-लोचन * दीन-बंधु, भगतन-दुख - मोचन ।
लषन, जानकी सहित, निरंतर * राजा, राम ! बसहु, उर अंतर ॥

पृथ्वी - भूषन, मुनि हरषावत * तुलसी-प्रभु, भय, देखे, भाजत ।
दोहाः—नाथ ! जबहिं, कौसल-पुरी, हुइ है, तिलक, तुम्हार ।
११२. ऐहौं, मैं, देखन चरित, सुनहु, मोर सरकार ॥
करि विनती, जब, शंभु सिधाये * प्रभु के पास, विभीषन आये ।
विभीषनःमीठी-बानी, नाइ, चरन, सिर * सुनहु विनय, धनु-धारी, रघुबर!॥
रावन-कुल-सैना, प्रभु, मारा * तीन लोक, सुभ-जस विस्तारा ।
दीन, मलीन, नीच, मैं, जाती * मो पर, कृपा कीन्ह, बहु भांती ॥
चलि, पवित्र, घर-दास, कीजिये * करि स्नान, रन-श्रम, प्रभु, मेटिये ।
घर, संपति, और, देखि खजाना * हरषि, देहु, कपिनहिं, भगवाना ॥
सबविधि, नाथ, मोहिं, अपनावहु * फिरि, मोहिंसहित, अवध पुर, जावहु।
कविःसुनत, वचन-मिठ, दीन-दयाला * भरि आये, दोउ नयन, विसाला ॥
रामः—दोहाः—तोर खजाना, और घर, मोरा ही, सुनु, भ्रात ।
भरत - दसा की सुधि करे, यक पल, जुग सम, जात ॥
तपसी - जामा, तन - दिये, करत जाप, नित, मोर ।
देखउं, बेग, सो जतन करु, कहत, मैं, तोहि निहोरि ॥
बीति, कहूं, चौदह बरस, जिअत न, पइहौं, बीर ।
भरत - प्रीति की याद करि, पुलकित भयो, सरीर ॥
करेहु, कल्प भरि, राज, तुम, मोहिं, सुमिरेहु, मन माहिं ।
११३. मोर - धाम, फिर, पाइहौ, जहां, संत, सब, जाहिं ॥
कविःसुनत, विभीषन, बचन, राम के * हरषि, गहे पद, कृपा-धाम के ।
बानर, भालु, सकल, हर्षाने * गहि प्रभु-पद, गुनबिमल बखाने ॥
फेर, विभीषन, भवन, सिधावा * मनि, और, वस्त्र, विमान, भरावा ।
लइ विमान, प्रभु-आगे, राखा * हँसि करि, कृपा-सिंधु, तब, भाखा॥
रामःचढ़िविमान, सुनु, सखा, विभीषन!* जा, अकास, छोड़हु पट, भूषन ।
कविःजोइ जोइ मन-भावइ, सोइ, लेहीं * मुख, मनि-डारि, फेंकि, कपि, देहीं ॥
हँसत राम, सिय, लषन समेता * बड़े खिलारी, कृपा-निकेता ।

दोहाः—मुनि, जिन्ह ध्यान, न पावहीं, वेद न कहि सकि, पोलि ।
कृपा-सिंधु सोइ, कपिन-संग, करत, दया करि, खेल ॥
उमा ! जोग, जप, दान, तप, जज्ञ, व्रत, और, नेम ।
११४. राम, कृपा, नहिं करत तस, करत दया. जस, प्रेम ॥

भूषन, वस्त्र, भालु, कपि, पाये * फिरि, फिरि, सब, रघुपति पहँ आये ।
अद्‌भुत-भूषन, पहिरे कीसा * फिरि, फिरि, हँसत, कौसलाधीसा ॥
चितइ, सबहि पर, कीन्ही दाया * कोमल बानी, कह रघुराया ।
रामः—तुम्हरे बल, मैं, रावन मारा * दीन्हा राज, विभीषन - सारा ॥
घर. अपने, अपने. सब जाहू * सुमिरे मोहिं, न डरपेउ, काहू ।
कविः—विकल, प्रेम ते, भे, सब बानर * जोरि हाथ, बोले, सब, सादर ॥
बानरःप्रभु, जोकहत, तुमहिं, सब, सोहा * सुनत बचन, हमरे, भा मोहा ।
लखि गरीब, तुम, कीन्ह सनाथा * तीन लोक-स्वामी, रघुनाथा ! ॥
सुनि प्रभु-बचन, लाज, हम, मरहीं * मच्छर. कहूं, गरुड़ हित, करहीं ।
कविः—देखि राम-रुख, बानर, रीछा * प्रेम-मगन, नहिं लौटन-इच्छा ॥

दोहाः—प्रभु-के - आज्ञा, भालु कपि, राम - रूप, उर, राखि ।
लीन्हे सुख, दुख, घर चले, विनय, बहुत विधि, भाखि ॥
जामवंत, सुग्रीव, नल, नील, अंगद, हनुमान ।
सहित विभीपन, और जे, सैनापति बलवान ॥
कहि न सकइं, कछु, प्रेम-बस, भरि भरि, लोचन, नीर ।
११५. बांधि टकटकी, रहि गये, देखे - मुख - रघुवीर ॥

बहुत प्रीति, देखी, रघुराई * लीन्हे, सकल, विमान, चढ़ाई ।
मन-महँ, विप्र-चरन, सिर, नावा * उत्तर दिसहिं, विमान चलावा ॥
चलत विमान, सोर. अति. होई * 'जय रघुवीर' कहहिं, सब कोई ।
सिंहासन, इक, ऊंच, मनोहर * सिय सहित, प्रभु बैठे, तेहि पर ॥
सोहत राम, लिये सिय, भामिनि * जनु, सुमेरु, चमकत, घन, दामिनि ।
चला वेग, तब सुघर विमाना * बरषे फूल, देव हर्षाना ॥

ब्यार,सुगंधित, मंद औ सीतल * नदी-ताल-सागर - जल निर्मल ।
सगुन होत सुन्दर, चहुँ पासा * मन प्रसन्न, निर्मल आकासा ॥
रामः—कह रघुबीर देखु रन,मीता! * लषन, मेघनादहिं, यहँ, जीता ! ।
हनूमान - अंगद - के - मारे * परे निसाचर, भुइं मां, भारे ! ॥
कुंभकरन - रावन, दोउ भाई * हते, यहां ! सुर-मुनि-दुखदाई ! ।

दोहाः—यहां ! सेतु, बांधा,कपिन्ह, थापेउं 'शिव', सुख - धाम ।
कविः—सीता संग, फिर, राम,तब, शिवहीं, कीन्ह प्रनाम ॥
दोहाः—जहँ तहँ कृपासिंधु, बन, कीन्ह वास, बिश्राम ।
११६. सकल, दिखाये जानकिहिं, कहे - सबन्हि के नाम ॥

शीघ्र, विमान, तहां चलि आवा * दंडक-वन, जहँ, परम सुहावा ।
कुंभुजि रिषी, और मुनि, नाना * गये राम, सब के अस्थाना ॥
तहं, करि, मुनिन केर, संतोषा * चला विमान, तहां ते, चोखा ।
सीता कहँ, फिर, राम दिखाई * पाप-हरन, जो, "जमुन" सुहाई ॥
फिर, देखी, जब, गंग, पुनीता * राम कहा, "प्रनाम करु, सीता" ।
तरिथ - राजा, दीख 'प्रयागा' * जनम - पाप-देखत-जेहि-भागा ॥
रामःदेखु, परम पावन, त्रिबेनी * सोक-हरन, हरि-लोक-नसेनी ।
कविःदेखी अवध-पुरी, अति पावन * तीन-ताप-भव - रोग - नसावन ॥

दोहाः—तब, रघुनंदन, सिय सहित, अवधहिं, कीन्ह प्रनाम ।
नयनन, आंसू, पुलकि-तन, फिर फिर हर्षित राम ॥
आय त्रिबेनी, राम, फिर, हर्षित, कीन्ह स्नान ।
११७. कपिन-सहित,फिर,ब्रह्मनन्हि, दीन्हे, बहुतक दान ॥

रामःहनुमानहिं, प्रभु कह, समुझाई * विप्र-रूप, धरि, अवधहिं जाई ।
भरतहिं, कुशल, हमार, सुनायो * समाचार लइ,तुम, चलि आयो ॥
कविःतुरत,'पवन-सुत', भयो रवाना * भरद्वाज पहँ, आ, भगवाना ।
नाना विधि, मुनि, पूजा कीन्ही * करि अस्तुति,असीस बहु,दीन्ही॥
मुनि-पद बंदि, दोउ कर जोरी * चढ़ि विमान, प्रभु-चले, बहोरी ।

इधर, निषाद, सुना, प्रभु आये * "नाव-नाव-कहँ",लोग, बुलाये ॥
उतरि,विमान, गंग, जब, आवा * उतरा तट, प्रभु-आज्ञा - पावा ।
गंगा की, सिय, पूजा करी * बहु प्रकार, फिर, चरनन, परी ॥
हर्षित, गंग, असीस सुनाई * "तुम-अहिवात,कबहुँ नाहिं जाई"।
प्रेम-विकल हुइ, सुनि, गुह धावा * भये-मगन,प्रभु के ढिंग, आवा ॥
देखा राम, संग - वैदेही * धरती,गिरेउ, न तन-सुधि, तेही ।
अधिक प्रीति, देखे रघुराई * हरषि, उठाय, लियो, रघुराई ॥

छंदः—लियो, उर लगाय, कृपा-निधान, सुजान, गुहहिं, रमा - पती ।
बैठारि, आपने पास, बूझी, कुसल, सो, करि बीनती ॥
गुहः— अब, कुसल, पद-कमलन्ह का देखि विरंचि शिव,रहे सेइ, जे ।
सुख - धाम, पूरत - काम, मोरा, सीस - नवि, प्रनाम, ते ॥
कविः— सब भांति, नीच निषाद, सो, हरि, भरत-सम, हृदय लगा ।
मति-मंद तुलसीदास ! सो, प्रभु, मोह - वस, भूला, अहा ॥
यह, लंक - शत्रु - चरित्र पावन, राम - चरनन, प्रीति दे ।
भव-हरत-कामहिं, देत-ज्ञानहिं, गाइं-सुर - मुनि, प्रीति ते ॥

दोहाः—जुद्ध - चरित, रघुबीर के, सुनहिं, चतुर, दइ कान ।
ज्ञान, बड़ाई, और जय, तिनहिं, देहि भगवान ॥
यह कलिजुग है, पाप - घर, रे मन ! देखु, बिचारि ।
राम - नाम - आधार, तजि, होइ न तू, भव - पार ॥

श्री

उत्तर-काण्ड

मंगलाचरन

सो०:—मोर - कंठ - सी स्याम, देही, देवन्ह, श्रेष्ट, जे।
कवि:— सोभित हृदय - धाम, रेखा बृह्मण - चरन की॥
२. जे, सोभा की खानि, पीतांबर धारन किये।
लोचन, कमल समान, अति प्रसन्न - मन, जे, सदा॥
३. कर-कमलन, धनु-बान, राजत, कपिन के बीच, जे।
सेवहिं, बांधे ध्यान, लक्ष्मण - से, भाई, जिनहिं॥
४. जनक - सुता के प्रान, रघुकुल के, जे, श्रेष्ट - मनि।
बैठे, पुष्प - बिमान, नमसकार मोरा, तिनहिं॥
५. कौसल-पति, भगवान, बंदत, बृह्मा, शिव, चरन।
चरन, सो, कमल समान, कर - कमलन, सिय सेवती॥

६. मन - भौंरा - अस्थान, भगतन के, जो, ध्यान के।
सोइ चरन, धरि ध्यान, नमस्कार करुं, जोरि कर॥
सो०:—कुंद, चंद्र से, गौर, अधिक, बरन जिन्ह, उमा-पति।
देवन के सिर - मौर, करत मनोरथ, सिद्ध, सब॥
२. काम - छुड़ावन - हार, संकर, करुना - ते - भरे।
नमस्कार, सौ बार, नयन, कमल - से,सुघर, जिन्ह॥
दोहा:—इक दिन-कम - चौदह - बरस, दुखित - होत, सब लोग।
जहँ, तहँ, पूंछहिं नारि, नर, दिये-तन, राम - वियोग॥
२. सगुन होत, सुन्दर, सकल, मन प्रसन्न, सब केरि।
कहत नगर रमणीक हुइ, आये राम, जनु, फेरि॥
३. कौसल्या, और, मात सब, मन, अनन्द, अस होय।
'आये प्रभु,सिय-लपन-संग', कहन चहत, अस कोइ॥
४. भरत - नयन-भुज दाहिने, फरकत बारहिं बार।
१. जानि सगुन,मन हर्ष,अति, लागे, करन, विचार॥
कवि:-रहा एक दिन, और-अधारा * समुझत,मन,दुख भयो, अपारा।
भरत:-कारन कौन ! नाथ, नहिं आये *समुझि कुटिल,कह!मोहिं,बिसराये॥
अहह ! धन्य ! लछिमन, बड़-भागी * अब लगि, राम-चरन अनुरागी।
कपटी, कुटिल, मोंहिं, प्रभु चीन्हा * ता ते, नाथ, संग, नहिं लीन्हा॥
जो करतब, प्रभु, मोर, निहारा * तौ, कल्पन लगि,नहिं निस्तारा।
देखि न अवगुन, कबहुँ, भगत के * दीन-बंधु,अति कोमल-चित-के॥
यही भरोसा, मों का भारी *मिलिहहिं,मिलइँ,सगुन,सुखकारी।
चौदह - बरस - गये, रहे प्राना * नीच, कौन, जग मोहिं समाना॥
दोहा:—मगन, भरत, सागर - विरह, डूबत, उछरत, जाय।
बिप्र - रूप, धरि पवन-सुत, लिये - नाव, जनु आय॥
लकरी-तन, आसन - कुसा, जटा - मुकुट, सिर धारि।
२. जपत राम, आंसू - चलत, देखा पवन - कुमार॥

देखत, हनूमान, अति हरषे ❋ फूलि सरीर, नयन, जल बरषे।
बहुत भाँति, मन महँ, सुख मानी ❋ कान-अमरित-सम,बोला,बानी॥
हनूमानसोचत,जिन्हके विरह, रातदिन❋ रटत,निरंतर,जिन्ह के गुन,गिनि।
रघुकुल-तिलक, भगत-सुखदाता ❋ आवत, सुर-मुनि-रच्छक,नाथा!॥
रिपु, रन,जीति,सुजस,सुर,गावत ❋ सीता-लषन सहित,प्रभु आवत।
सुनत बचन सब दुःख नसावा ❋ जन, कोउ प्यासा,अमरित पावा॥
भरतः—को तुम ? तात! कहाँ ते आये! ❋ मोहिं, परम-प्रिय-बचन सुनाये।
हनूमानःपवन-पुत्र,मैं,कपि, 'हनुमाना' ❋ नाम, मोर, सुनु, कृपा-निधाना॥
सेवक, दीन - बंधु - रघुबर कर ❋ सुनत, भरत भेंटे, गोदी भरि।
कविःमिलन, प्रेम, नहिं ,हृदय, समावे ❋ बहत नयन, तन फूला जावे॥
भरतः—बीते दुख, कपि!दरस तुम्हारे ❋ मिले, आज, जो, रामहिं-प्यारे।
फिर फिर, पूँछि कुसल-रघुनाथा ❋ देहुँ, तोहि, कह! मोरे भ्राता!॥
यह-सँदेस-सम, कपि! जग माहीं ❋ करि विचार, देखा, कछु नाहीं।
नहीं उरिण मैं, कबहूँ, तो ते ❋ प्रभु-कर-चरित,कहउ,अब मो ते॥
कविः-तब हनुमत, नाये, पद, माथा ❋ लागि कहन गुन गुन,रघुनाथा।
भरतः-कहु,कपि!कबहुँ,कृपालु गोसाईं ❋ जानि दास,सुमिरत,कै, नाहीं ?॥
छंदः—रघुबंस - भूषन, दास जाने, कबहुँ, मम - सुमिरन कियो ?।
कविः—सुनि, दीन बानी, भरत की, कपि, फूलि, सिर, चरनन, दियो॥
हनूमानः-जेहि-गुन, कहत, रघुबीर, मुख ते, नाथ चर-और-अचर जो।
काहे न, होयँ, विनय-भरे, अस सुद्ध, सुभ गुन-सिंधु सो॥
दोहाः—प्रान पिआरे - राम, तुम, कहत सांचु, मैं, तात।
उठत, भरत, फिर-फिर, मिलत, हर्ष, न, हृदय, समात॥
कविः—सो०:—भरत-चरन, सिर नाय, गयो, तुरत, कपि, राम पहँ।
३. कही कुसल, सब, जाय, चढ़ि विमान, प्रभु चले, खुस॥
हरषि, भरत, कौसल-पुर, आये ❋ समाचार, सब, गुरुहिं, सुनाये।
महल, महल, फिर, कहा, जनाईं ❋ "आवत, नगर,कुसल,रघुराईं"॥

सुनि, रानी सब, दौरी, आईं * कहि,कहि कुसल,मातु,समुझाईं ।
समाचार, पुर - बासिन्ह, पाये * नर-नारी, खुस खुस,सब धाये ॥
दही, दूब, रोचन, फल, फूला * नये तुलसी-दल, मंगल-मूला ।
धरि थारन, गज-चाल दिखावत * चलीं, नारि, सब मंगल गावत ॥
जो, जैसी, तैसिहि, उठि, धावहिं * बूढ़, बालकन ;संग, न लावहिं ।
एक, एक ते, पूँछत, भाई ! * "देखा, तुम, दयालु-रघुराई"? ॥
अवध - पुरी, प्रभु - आवत-जानी * भई, सकल सोभा की खानी ।
भा, सरजू, निर्मल - जल - धारी * बहत, सुगंधित, सीतल ब्यारी ॥

दोहाः—गुरु, कुटुंभी, शत्रुहन, बृह्मण, लीन्हे साथ ।
चले भरत, अति प्रेम ते, भेंटन कँह, रघुनाथ ॥
दोहाः—चढ़ीं, अटारी, नारि, बहु, हेरत, गगन, बिमान ।
देखा आवत, मधुर - सुर, कीन्हा मंगल - गान ॥
दोहाः—पूरन - चंदा, राम, लखि, अवध - सिंधु, हर्षान ।
४. उमड़ि, उमड़ि, फेंकत लहर, सोर, छिति-कर-गान ॥

भानु, सूर्य-कुल-कमल के, ईश्वर * कपिन दिखावत, नगर मनोहर ।
रामः-सुनु ! अंगद, सुग्रीव, विभीषन * करत पवित्र,नगर सुभ-दरसन ॥
करत लोग, बैकुंठ - बड़ाई * जग, और, वेद, पुरानन गाई ।
अवधसमान,न प्रिय, मोहिं,सोऊ * क्यों भावत, जानइ कोउ कोऊ ॥
जनम - भूमि, यह पुरी, सुहावन * उत्तर, बाहि रही,सरजू , पावन ।
जाहि नहा, बिन कौरी - पैसा *पावहिं,नर मोहिं,फल कछु,पैसा॥
प्यारे मोहिं, रहत जो, पुरी * देत धाम, मोरा, सुख - भरी ।
हर्षे, सब कपि, सुनि प्रभु - बानी * धन्य अवध, जो, राम, बखानी ॥

दोहाः—आवत देखा, लोग, सब, कृपा - सिंधु - भगवान ।
नगर - तीर, प्रभु - हुकुम ते, उतरा पुष्प - बिमान ॥
कहा, बिमानहिं,उतरि प्रभु, "अब,"कुबेर"पहँ, जाहु" ।
५. जीता, रावन जहाँ ते, चला, विरह -- दुख, ताहु ॥

आये भरत, संग - सब - लोगू * दीन्हे - तन, रघुबीर - बियोगू ।
'बामदेव', 'गुरु', आवत जाना * धरती, फेंकि धनुष, और बाना ॥
दोउन, दौरि, धरे गुरु - चरना * कमल-से, रोम खड़े, तन-थिर-ना ।
मिले, कुसल बूझी, मुनि - राया * कहा, "कुसलसब, आपुकीदाया" ॥
मिलि सब बिप्रन, नायो माथा * धरम-धारि, रघुकुल-के-नाथा ।
चरन-कमल-प्रभु, गहे भरत, फिर * पूजत - सुर - मुनि-बृह्मा-संकर ॥
परे, भूमि, नहिं उठत, उठाये * ईंचि-खींचि, भरतहिं, उर लाये ।
भये, रोम - स्यामल - तन, ठाढ़े * नये-कमल-नयनन, जल बाढ़े ॥

छंदः—लोचन-कमल ते, जल बहत, तन सुघर, पुलकावलि बनी ।
अति प्रेम, हृदयं लगाइ, भरतहिं, मिले प्रभु, त्रिभुवन-धनी ॥
नहिं जात उपमा, सुख, कही, मिलि भाइ, सोहत अस, खड़े ।
जनु प्रेम, और सिंगार, धरि तन, मिलत, बहु-सोभा-धरे ॥

छंदः—पूँछत कृपानिधि, कुसल, भरतहिं, बेग, उतर, न आवही ।
गिरिजा ! सो सुख, मन और बचन ते, दूरि, जान, जो पावई ॥

भरतः—अब, कुसल, कौसल-नाथ! दासहिं, समुझि दुख, दरसन दियो ।
बूड़त, विरह-सागर, प्रभू, तुम, आय, हाथ, पकरि लियो ॥

कविः-दोहाः— फिर, प्रभु, हर्षित, शत्रुहन, भेंटे, हृदय लगाय ।
६. मिले भरत-और-लक्ष्मण, बड़े प्रेम, दोउ भाइ ॥

लषन, शत्रुहन, मिलि, फिर, भेंटे * बिरह-केर, भारी दुख, मेटे ।
सीता चरन, भरत सिर नावा * सत्रुहन-सहित, परम सुख पावा ॥
प्रभु-बिलोकि, हर्षे, पुर-बासी * बिरह-करी, सब, बिपता नासी ।
प्रेम-बिकल, सब लोग, निहारे * कीन्ह खेल, खल-मारन-हारे ! ॥
धरे रूप, बहुतक, तेहि काला * जथा-जोग, मिले, सबहिं, कृपाला ।
चितइ, दया की नजर, सुहाये * नर-नारिन कर सोच, मिटाये ॥
छिन महँ, सबहिं, मिले, भगवाना * उमा ! मरम यह, काहु न जाना ।
यह विधि, सबहिं, सुखी करि, रामा * आगे, चले, सील-गुन धामा ॥

सब माता, अस, दौरत, आईं * बछरहिं,जस,गउ, हाल बिआई।
छंदः—जनु, हंकि गऊ, घर, छ डि बछरा, चरन, बन, छोटा, गईं।
दिन बीति, पुर कहँ, चुअत-थन, बां बां करत दौरत भईं॥
अति प्रेम, प्रभु, सब मात, भेंटीं, वचन मीठे, मुख कहे।
गईं, विषम-त्रिपति,विरह-करी तिन्ह हरषि सुख, बहुतक, लहे॥
दोहाः—मिलीं सुमित्रा, लषन कहँ, प्रीति-राम-पद, जानि।
रामहिं, मिलत, कैकई, हृदय, बहुत सकुचानि॥
लछिमन, सब मातन, मिले, खुसी, असीसहिं पाइ।
७. केकई कहँ, फिर फिर मिले, मन कर दुःख न जाइ॥
सासुहिं, सबहिं मिली, वैदेही * चरनन लागि, हर्ष, अति, देही।
देत असीस, बूझि कुसलाता * "होइ अचल,तुम्हरा अहिवाता"॥
सब रघुबर-मुख-कमल,बिलोकहिं * मंगल समुझि,नयन-जल रोकहिं।
कनक-थार, आरती, उतारहिं * बार बार, प्रभु-अंग निहारहिं॥
नाना भांति, निछावर करहीं * परमानन्द, हर्ष, उर, भरहीं।
कौसल्या,फिरि फिरि, रघुबीरहिं * चितवत कृपा-सिंधु,रन-धीरहिं॥
कौसल्याःहृदय,विचारत,बारहिं बारा * कवन भांति, इन, रावन मारा।
अति कोमल, दोउ, मोर बारे * निसिचर-जोधा, अति बल-वारे॥
कविः—दोहाः—लछिमन, और सीता सहित, रामहिं, देखत मात।
८. परमानंद, मगन मन, फिर फिर, पुलकित गात॥
नल,नील और सुग्रीव विभीषन * जामवंत, अंगद, सुभ-जी-सन।
हनूमान, सब बानर बीरा * धरे मनोहर, मनुज-सरीरा॥
भरत-सनेह सील-बृत-नेमा * करत बडाई, अति अति प्रेमा।
देखि नगर-बासिन की रीती * सबहि, प्रसंसत प्रभु-पद-प्रीती॥
रामःफिर रघुपति, सब सखा बोलाये * लागहु, मुनि-पद,कहा, सिखाये।
गुरु-बसिष्ठि, कुल पूज्य हमारे * जिनकी कृपा, दैत्य सब मारे॥
मुनि! यह,मित्र सुनहु! सब,मेरे * बेड़ा, रन-के-सागर केरे।

अपन-जनम, मोरे हित, हारे * भरतहु ते,मोहिं, अधिक पिआरे ॥
कविःसुनि प्रभु-वचन,मगन,सब भये * पल पल, उपजत, मन, सुख नये।

दोहाः—कौसल्या के चरन, सब बानर, नायो माथ।
दीन्ह असीस, अस कहि "प्रिय,तुम सब, जस रघुनाथ"॥
बरसि फूल, आकास ते, चले, घरहिं, सुख कंद।
९. सुन्दर, चढ़े अटारि पर, लखत नारि-नर-झुंड ॥

कंचन-कलस, विचित्र, सँवारे * सबहिं,धरे, सजि, अपन दुआरे।
ध्वजा, पताका, बंदन - बारी * सबहिं, लगाये, मंगल-कारी ॥
गलीं, गुलावन, गई सिंचाई * गज - मोतिन ते, चौक पुराई।
नाना भांति, सुमंगल साजे * सुन्दर बाजे, बाजन लागे ॥
जहँ, तहँ, नारि, निछावर करहीं * देहिं असीस, हर्ष, उर, भरहीं।
कंचन-थार, आरती, नाना * नारी, सजे, करहिं, सब, गाना ॥
करत आरती, दुःख-हरन के * सूरज, रघुकुल-कमल-के-बन के।
पुर-सोभा, संपति, कल्याना * सेष, सारदा, वेद बखाना ॥
कहत, कहत, सोऊ, थाकि रहईं * उमा ! कौन मुख,सो, नर कहईं !।

दोहाः—नारि-कुमुदिनी, ताल-अवध, सूर्य-(राम बन-वास)।
भये अस्त, सब खिलि रहीं, राम के चंद्र-प्रकास ॥
होहिं सगुन, सुभ, बहुत बिधि, बाजहिं, गगन,निसान।
१०. लोटि-पोटि, नर-नारि करि, भवन, चले भगवान ॥

जानि केकई - मात - लजानी * पहिले,गे, तेहि घरहिं, भवानी !।
समुझावा,और,बहु सिख दीन्हा * फिर,निज भवन,गवन,हरि कीन्हा॥
कृपा-सिंधु, जब, घर मां गये * पुर-नर-नारि, सुखी, सब भये।
गुरूः-लीन्हा गुरू. विप्रन, बुलवाई * आज घरी, दिन, नीका, भाई ॥
आज्ञा देहु. विप्र ! हंसि के, मन * राम-चंद्र, बैठहिं, सिंहासन !।
कविः-मुनि-बसिष्ठ के बचन,सुहाये * सुनत, सबहि विप्रन कहँ, भाये ॥
विप्रः-देत विप्र, अति कोमल उत्तर * तिलक. पियारा,जग कहँ, रघुबर।

हे,मुनि! अब, बिलंब, न कीजिये * महाराज कहँ, तिलक दीजिये !॥
कविः-दोहाः—तब मुनि कहेउ,सुमंत्र सन, सुनत, चला, हर्षाइ।
हाथी, घोड़ा, और रथ बहुत, सँवारे, जाइ॥
दोहाः—तेहि, दूतन, दौराय के, मंगल - वस्तु मँगाइ।
११. हर्ष समेत, बसिष्टि - पद, फिर, सिर नायो, आइ॥
सुन्दर, नगरी, गई, सजाई * देवन, फूलन - झरी लगाई।
रामः-कहा राम, सेवकन बुलाई * लावहु, मित्रन कहँ, अन्हवाई॥
कविः-सुनत,बचन,तेहि,जहँ-तहँ,धाये * लाये, सब - बानर - अन्हवाये।
राम-चंद्र, फिर, भरतहिं टेरे * हाथन, मेटि, जटा, सिर-केरे॥
अन्हवाये, प्रभु, तीनहु भाई * भगतन - पर - कृपालु - रघुराई।
भाग्य - भरत, प्रभु - कोमलताई * सेष, कोट-सौ, सकत न गाई॥
जटा अपन, फिर, अलग-कराये * गुरु-आज्ञा लइ, जाय, नहाये।
जब, नहाय, प्रभु, भूषन साजे * कोटि काम,लखिअंग-छवि,लाजे॥
दोहाः—सासुन्ह, सादर, जानकी, फिर, अस्नान कराइ।
भूषन, बढ़िया, बस्त्र, अँग, दीन्हें, सब, पहिराइ॥
दोहाः—राम के बाएँ, लक्ष्मी, जनु सोहत गुन - खानि।
भइं प्रसन्न, माता, निरखि, सुफल, जनम निज, जानि॥
दोहाः—जानि समय सुनु,हे,गरुड़ ! सिव, बृह्मा, मुनि - झुंड।
१२. चढ़ि विमान, आये,सबहि, सुर, देखन सुख - कंद॥
देखि राम, गुरु - मन अनुरागा * बढ़िया, एक, सिंहासन मांगा।
चमकि,सूर्ज-सम, कहा न जाई * बैठि, राम, विप्रन-सिर-नाई॥
सिया संग, देखे रघुराई * रिषि मुनि,सब, प्रसन्न भे, भाई।
विप्रन, वेद - मंत्र, उच्चारे *'जय जय',सुर,अकास,मुनि,स्मारे॥
पहिले, तिलक, गुरूजी - कीन्हां * फिर, सब-विप्रन आज्ञा दीन्हां।
देखे सुत, हर्षहिं महतारी * बार बार, आरती उतारी॥
बहुत दान, विप्रन कहँ, दीन्हें * मांगन - हारे, दाता कीन्हें।

"तीन-लोक - साँई,सिंहासन" ! ✻ दई चोट, सुर, देखि, नगारन ! ॥

छंदः—बाजत नगारे, गगन महँ, गंधर्व, किन्नर गावहीं ।
नाचत अपछरा - झुंड, परमानंद, सुर, मुनि पावहीं ॥
कपि, भालु, भाई छोट, अंगद, और, विभीषन, सोहहीं ।
तरवार, बरछी, ढाल, लीन्हे, धनु, चँवर, पंखा करहिं ॥

छंदः—(सिय-संग) (रघुकुल-बंस-भूषन), काम-बहु छबि सोहई ।
(नये मेघ-सघन-से) गात, पिअरे-वस्त्र, मुनि-मन मोहई ॥
सिर, मुकुट, बाजूबन्द, भूषन, औरहू अंग - अंग सजे ।
उर, भुज, बिसाल, कमल-से नयना, धन्य, प्रभु कहँ, दीख,जे ॥

दोहाः—सोभा, गरुड़ ! समाज की, बरनइ, कोऊ, कस ! ।
वेद, सेष, सारद, थकित, "कि, जानहिं संकर,रस"!!॥

दोहाः—अलग, अलग,अस्तुति करे, गे, सुर, आपन - धाम ।
भाट-रूप, तब, वेद, धरि, आये, जहँ श्रीराम ॥
'जानत-सब',आदर कियो, जाने, कृपा - निधान ।
भेद, न जाना, काहु, ये, लागि करन गुन - गान ॥

वेदः-छंदः—जय, सगुन, निर्गुन, ब्रह्म ! तुम्हरो, भूप-रूप, सिरोमने ।
रावन-से, आपु, प्रचंड राक्षस, प्रबल-खल, भुज-बल हने ॥
संसार-भार मिटायो, नर - तन, घोर-दुःख, जरा-दिये ।
जय ! सरन-पाल, दयालु, प्रभु,सिय-सहित,हम विनवत, हिये ॥

छंदः—नर नाग, असुर,सुर,चल-अचल सब, विष सी-माया-बस परे ।
भव-राह, भटकत, रात-दिन-बहु, काल-कर्म-औ-गुन-भरे ॥
जेहि, आपु देखा, करि दया, तेहि तीन-हू-दुख, छुटि गये ।
भव-दुख-मिटावन-हार ! रक्षा करहु ! हम, विनवत भये ॥

छंदः—जे, ज्ञान-मान-मं डूबि, भगती-(भव-हरन), नहिं, उर, धरहिं ।
ते, पाइ पद, ऊंचा, (कठिन-देवन का) फिर, नीचे, गिरहिं ॥

बिस्वास-करि, सब-आस-छांडे, दास-बनि, जो, परि रहे।
जपि नाम, सहल, सो, भव-तरत, सोइ नाम, हम-हुं, सुमिरि रहे॥

छंदः—जे चरन, (बृह्मा-सिव-नवत) सुभ-रज छुअत, नारी तरी।
मुनि-पूज्य, तीनहु-लोक-पावनि, नख ते, गंग, निकरि परी॥
ध्वज-वज्र-अंकुस-कमल चिन्ह-लिखे, वनहिं, भीलन्ह, मिले।
सेइ, मोक्ष-दाता, लच्छिमी-पति ! दोउ कमल, हम, भजि रहे॥

छंदः—संसार वृक्ष-(अनादि)-की जर-प्रकृति, बक्कल, चार हैं।
गुदा छः, और पचीस डालीं, फूल-पात हजार हैं॥
फल, मीठ-करुआ, बेल-अविद्या, वृक्ष-केहि-बल, छाइ, जेहि।
(नित फूल-पाती-लगत)-वृक्ष-स्वरूप-बृह्मा, प्रनाम, तेहि॥

(२५ डाली का बरनन)

दोहा:—सूँघत[1], चाखत[2], और छुअत[3], देखत[4], सुनत[5], ये पांच।
पृथ्वी[1], वायू[2], तेज[3], जल[4], और अकास[5], ये पांच॥
ज्ञान की इन्द्री पांच[5], हैं, करम की इन्द्री पांच[5]।
चारहु गति अतःकरन[4], जीव[1], पचीसहु, सांच॥

(४, बक्कल का बरनन)

दोहा:—बक्कल चारि के मत बहुत, धरम[1] अर्थ[2] और, काम[3]।
लिखे भागवत चारि रस, मोक्ष[4] सहित, "त्वच"-नाम॥
चित्त[1], बुद्धि[2], मन[3], कोउ कहत, चौथ नाम हंकार[4]।
कहत कोउ, जो "चार जुग", सोइ बक्कल हैं चार॥
'जाग्रत'[1], 'स्वप्न'[2], 'सुषुप्ति'[3] कोउ, तुरीया[4], कहत बिचारि।
कोउ कहत 'नहिं ! जीव, जो, जग महँ, चारि-प्रकार॥
सत[1], रज[2], तम[3], गुन, कहत कोउ, कहे चौथ ओंकार[4]।
वेद, बतावत, चारि, कोउ, तुलसी-जाननहार॥

(६ः गुद्दा-वरनन)

दोहाः—जनम, बढ़न, जीवन, घटन, मरन, होन-विप्रीति ।
वृच्छ के गुद्द छः कहे, जो संसारी-रीति ॥

(फूल-पात वरनन)

दोहा.—"जो-पावत", नर, पात जनु, "जो-चाहत" सो फूल ।
"मिलत-न" सो पति-झारे मनहु, "मिला", बसंत अनुकूल ॥

(बेल, फल, वरनन)

दोहाः—पुण्य-मीठ, और पाप-कडु, दुइ फल लागत वृच्छ ।
वेल-'अविद्या', जर-बिना, वृच्छ अकेलि, जेहि रच्छ ॥

छंदः—बिनु-जन्म, ब्रह्म, जो-मिलत-ध्यान-ते, मन-ते-दूरि,जे,ध्यावहीं ।
ते, कहहिं, जानहिं, हम तौ, आपुको, सगुन-रूपहि, गावहीं ॥
हे ! खानि-गुन-के, घन-दया के, देव ! यह बर मांगहीं ।
मन बचन-कर्म-ते, दोस तजि, नित, चरन, हम, अनुरागहीं ॥

दोहाः—सब के देखत, वेद सब, करि विंती भगवान ।
ब्रह्म लोक कहँ, चलि दिये, हुइ के अंतरधान ॥

दोहाः—सुनहु, 'गरुड़ ! महादेव, फिर, आये, जहँ रघुबीर ।
विनय करत, हिलकी-भरे, फूले जात-सरीर ॥

तोमर छंद

शिवः-१. जय ! राम ! रमे-जो-लछिमी-महँ, भव-ताप-बुझावत हौ, रक्षउ ! ।
जय ! देव-अवध-लछिमी नाथा, मांगत सरनागत, अब, बकसउ ! ॥
२. काटे दस-सीस, औ बीस-भुजा, जग-भारी-रोगहिं दूरि करे ! ।
रजनीचर झुंड, पतंग रहे, तेहि, बान की अग्नि, प्रचंड, जरे ! ॥
३. पृथ्वी-मंडल के भूषन हौ, धनु-बान-लिये, तरकसहु कसे ! ।
ममता-मद-मोह-अंधेरी, तुम, बनि सूरज, किरिनन-तेज, नसे ! ॥

४. जे, 'काम'-सिकारी, नास किये मृग-लोग, कुभोग-के बान, हियें ! ।
मारहु ! कामहिं रक्षहु ! दुखिअन, जिन्ह,पाउं, विषय-बन,भूलि दिये !॥
५. कछु, रोग-वियोग-के-दुःख मरहिं, तजि नाथ-चरन, से, फल पावहिं ! ।
भव-सिंधु-अथाह-परे, कछु नर, जे. प्रेम, न, पद-कमलन्ह, लावहिं ! ॥
६. भैले, नित, दीन, दुखी, तेही ! जिन कहँ, नहिं प्रीति-चरन,मन महँ ! ।
जिन्ह, राम-सहारा, इक भारी, प्रिय संत असंत, सबहि, तिन कहँ ! ॥
७. नहिं प्रेम, न-लोभ, न मान,न-मद, तिन कहँ,सुख-दुःख, बराबर ही ! ।
बनि जात, खुसी, यह ते, सेवक, मुनि, जोग-भरोसा, नहिं करही । ॥
८. करि प्रेम, निरंतर, नेम-सहित, मन-सुद्ध-ते, पद कमलन्ह, सेवहिं ! ।
लखि, एक-सी. मान-बुराई,दोउ, सो,संत, सुखी, जग महँ, डोलहिं ! ॥
९. भँवरा, मुनि-के-मन-कमलन, तुम. रन-धीर, कड़े, को - जीतहि-तुम ! ।
(भव रोग)-(महा मद मान-के रिपु,तुम्हरो सुभ-नाम,जपति,सो,हम ! ॥
१०. गुन.सील - दया - के - अस्थाना ! लछिमी - पति, मैं, प्रनाम करउं ! ।
महिपाल ! दया - की-नजरि करउ ! दुख-सुःख-अंधेरी, ना विचरउं ! ॥
दोहाः—बार बार, बर मांगहूँ, हरषि, देहु, श्रीरंग ! ।
अटल भगति, पद-चरन मां, और सदा, सतसंग !! ॥
कविः—कहि कर, संकर, राम - गुन, हरषि, गये, कैलास ।
१३. तब, प्रभु, कपिन, दिवाय के सब विधि, सुन्दर बास ॥
कागभुसुंडिः-गरुड़!कथा-रघुबीर,पावनी॰ तीन-ताप, भव-भय - मिटावनी ।
सुनि, महराज-केर, सुभ - टीका ॰ पाइ, विराग, ज्ञान, नर, नीका ॥
करि इच्छा,जे, सुनहिं जे गावहिं ॰ सुख,संपति,नाना विधि, पावहिं ।
करहिंसो-सुख,जो,सुर,नहिं पावहिं ॰ आखिर,राम-धाम कहँ,जावहिं ॥
जीवन - मुक्त, विरागी, बिषई ॰ पइहैं, भगति, मोक्ष, संपति-नई ।
कथा-राम, हे ! गरुड़, मैं बरनी ॰ बुद्धी-बल-भीर भय-दुख-हरनी ॥
भक्ति, ज्ञान, बैराग, पुढ़ावत ॰ नाव ! मोह-नदि-पार लगावत ।
कविः-नित-नये मंगल,छाये, पुर महँ ॰ रहत प्रसन्न, लोग,सब,उर महँ ॥

नित-नइ-प्रीति, राम-पद-कमलन * धारे,शिव-ब्रह्मा, जिन कहँ,मन ।
मँगतन्ह, बस्त्र, बहुत, पहिराये * विप्रन, दान, बहुत विधि,पाये ॥

दोहाः—मगन, ब्रह्म - आनन्द महँ, सब कपि, प्रभु-पद-प्रीति ।
१४. जात न जाने, दिन, कपिन, गये मास छः बीति ॥

भूले घर, सपनेहु, सुधि, नाहीं * जिमि, पर-बुरा, संत-मन माहीं ।
तब रघुपति, सब सखा,बोलाये * आइ,सबन्हि, सादर,सिर नाये ॥
बड़ी प्रीति ते, ढिग, बैठारे * सुख - दाता, मिठ-बचन उचारे ।
रामः-तुम, अति कीन्ह,मोर सेवकाई * केहि विधि,मुख पर करउं बड़ाई ॥
ता ते,तुम,मोहिं, अति प्रिय लागे * मोरे हित, घर के सुख त्यागे ।
भाइ, नारि, धन, राज हमारा * घर,तन,मित्र, सकल परिवारा ॥
नहिं प्यारे, मोहिं. तुमहिं समाना * झूठ न कहउं, मोर यह बाना ।
सब कहँ सेवक, प्रिय,अस नीती * अधिक, दास पर, मोरी प्रीती ॥

दोहाः—मित्रहु ! अब.घर जाहु, सब, भजेउ, मोहिं, दृढ़, नेम ।
१५. व्यापक, हितकारी, समुझि, करेहु, सदा, अति प्रेम ॥

कविः-सुनि प्रभु-वचन. मगन सब भये * 'को,हम,कहां', भूलि, सब, गये ।
इकटक, रहे जोरि कर, आगे *सकहिं,न,कछु कहि, अति अनुरागे ॥
अधिक प्रेम,जब,कपिन महँ,पावा * बहुत भांति,प्रभु, ज्ञान सिखावा ।
प्रभुसनमुख,कछु,कहि,नहिं,सकहीं *कमल-चरन,प्रभु,फिरफिर,तकहीं ।
तब, प्रभु, भूषन, बस्त्र, मँगाये * नाना रंग, अनूप, सुहाये ।
सुग्रीवहिं, पहिले, पहिराये * हाथन, भरत, सुधारि, सजाये ॥
प्रभु - के - कहे, लखन, पहिराये * लंका - पति, प्रभु-के-मन-भाये ।
अंगद, चुप, नाहिं कान हिलावा * देखि प्रीति, प्रभु, नहीं बुलावा ॥

दोहाः—जामवंत, नल, नील, सब, पहिराये, रघुनाथ ।
राम - रूप, हृदय - धरे, चले, नाइ, पद, माथ ॥

दोहाः—तब, अंगद, उठि, नाय सिर, भरि आंसू, कर जोरि ।
१६. अति कोमल,अस वचन कहि, मनहु, प्रेम - रस - बोरि ॥

अंगदः-जानन-हार!कृपा-सुख-सिंधू! * करत दया, दीनन के बंधू!।
मरती बार,नाथ!मोहि, "बाली" * गयो, तुम्हारीहि, गोदी, डाली॥
जेहि-रत्नक-कोउ-नाहिं,तुम पालहु * भगतन-हितकारी ! ना ! टालहु ।
बड़े, मात, पितु, तुमहीं. मोरे * जाउं कहां! पद— कमलन छोड़े ॥
कहउ,सुरन-स्वामी! बिचारि कर * प्रभुताजि, कौन काम,बढ़.घरपर !।
बालक, ज्ञान - बुद्धि - बल-नाहीं * राखहु सरन,गरीब, गोसाईं ! ॥
टहल,नीच, घर की सब करिहउं * चरन-कमल देखे, भव तरिहउं ।
अस कहि, परेउ चरन, प्रभु केरे * घरहि जान, कहु, नाथ,न, मेरे ॥

कविः—दोहाः— विनय - वचन - अंगद - सुने, 'दया कृपा - अस्थान' ।
कमल - नयन - आँसू - भरे, उर लगायो, भगवान ॥

दोहाः—अपनी माला, वस्त्र, मनि, "बालि-सुतहिं" पहिराइ ।
१७. बिदा कीन्ह, भगवान, तब, बहु प्रकार, समुझाइ ॥

भाइन-सँग, गे, पठवन, रघुबर * लागि-चित्त-भगतन-महँ-जिन्हकर।
अंगद-हृदय, प्रेम, नहिं थोरा *चितवत,फिर फिर,राम की ओरा॥
बार बार, करि दंड, प्रनामा * मन, अस रहन कहइ,कहुं,रामा! ।
सोचत,"बोल-चाल,कम सुन्दर"!*'हँसन,मिलनि,इकइक,हा!रघुबर'!॥
देखि राम-रुख, विनती करि के * चलेउ, कमल-पद, हृदय, धरि के ।
अति आदर, सब कपि,पहुँचाये * भाइन सहित, राम, घर, आये ॥
तब, सुग्रीव-चरन, गहि नाना * भांति, विनय, कीन्ही, हनुमाना ।
हनूमानः-दस दिन, और सेइ रघुराईं * चरन, आप के, देखब आई ॥
सुग्रीवः-सेवहु,जा तुम,पवन कुमारा! * कृपा-धाम, तुम, पुन भंडारा ।
कविःअस कहि,सब कपि चले,तुरंता* अंगद, कहा सुनहु ! हनुमंता ॥

अंगदः-दोहाः—मोर दंडवत, राम सन, कहेउ, कहत कर जोरि ।
बार बार, रघुनाथ कहँ, याद दिवायहु, मोरि ॥

कविः-दोहाः—अस कहि, गा, तब, "बालि सुत",लौटि, आय, हनुमंत ।
तासु - प्रीति, प्रभु सन कही, मगन भये भगवंत ॥

दोहा:—कठिन, बज्र हू ते, अधिक, कोमल, फूलन - ते -
१८. चित्त, राम कर, हे ! गरुड़ ! समुझि परइ, कहु, के ? ॥

फेर, राम, बुलवाइ 'निसादा' * दीन्हा, भूषन - बस्त्र - प्रसादा ।
जाहु, भवन, सुमिरन मोरा, करि *मन, क्रम, बचन, रहेउ, धरमहिंपर! ॥
मोर मित्र, तुम, भरत-से, भ्राता * रहेउ, अवध, आवत, और, जाता ।
सुनत वचन, उपजा, सुख-भारी * भरि आंसू, चरनन, रहा डारी ॥
धरि, उर, चरन-कमल, घर, आवा * प्रभु-स्वभाउ, सब कुटुँम, सुनावा।
रघुपति-चरित, देखि, पुर-वासी *फिरफिर, कहत धन्य! सुख-रासी॥
बैठत गद्दी, तीनहु लोका * हर्षित भये, गये सब सोका ।
करइ न बैर, काहु सन, कोई * 'बड़ा-छोट', गा, भेदहि, खोई ॥

दोहा:—वेद - राह, और धरम - पर, जाति जाति, सब लोग ।
१९. चलि चलि, पावहिं सुःख, नित, सोक-न, भय, ना, रोग ॥

तन-अकाल - धरती की तापा * राम-राज, नहिं, काहू, ब्यापा ।
इक-सन-एक, करत सब प्रीती * चलत, बेद-और-धरम-की-रीती ॥
'ज्ञान', 'तपिस्या', 'दया', औ, 'दाना' * भरि गये, पाप-न-कोऊ-जाना ।
राम-भक्ति - डूबे, नर - नारी * भये, परम गति के अधिकारी ॥
कुसमय-मृत्यु, न, कोऊ पीरा * सब, सुन्दर, निर-रोग-सरीरा ।
नहिं दरिद्र, कोउ दुखी, न, दीना * ना मूरख, ना लच्छन - हीना ॥
नहिं - पखंड, धरमी और पुनी * नर, और नारि, चतुर, सब गुनी ।
गुन-जानत, पंडित, और ज्ञानी * बिन-छल, करनी-समुझि सयानी॥

दोहा:—राम-राज महँ, सुनु, गरुड़ ! धरती, सब जग, माहिं ।
२०. गुन - स्वभाव-(रितु-कुरितु)-दुख, ब्यापत, केहू, नाहिं ॥

सब पृथ्वी पर, सातहु दीपा * राजा, एक ! कौसला - धीसा ।
रोम-रोम-जेहि, लोक-अनेका * एतक राज, बहुत नहिं, तेका ॥
सो-महिमा, समुझे, प्रभु केरी * बड़ा लगत, कहे बहुतेरी ।
गरुड़ ! सो-महिमाहू, जिन जानी * सगुन चरित पर, मोहत ज्ञानी ॥

सो-महिमा जानेहु कर, फल * राम-की-लीला, कहत मुनी भल ।
राम-राज कर सुख, संपदा * बरनि न सकइं, सेष, सारदा ॥
दुमरन - देत - सुखी, उपकारी * विप्र - चरन - सेवक नर, नारी ।
एकहि नारि, एक नर, राखत * सो-नारी,तन मन,पति, चाहत ॥
दोहाः—इक संन्यासीहि, 'दंड' दें, 'भेद', तालही - स्वर ।
२१. मन ही 'जीता', सुनि परत, राम - राज, अस नर ॥
सदा, वृत्त, बन, फूलहिं, फरहीं *सँग,सँग,गज-और-सिंह,बिचरिहीं।
पसु, पच्छी, निज - बैर भुलाई * आपुस-महँ, बहु प्रीति बढ़ाई ॥
बोलत पसु, पच्छी, मिलि, झुंडा * निडर, चरत,बन, करत अनंदा ।
डोलत सीतल ब्यारी, भीने * गूंजत-(रस-भरे-भँवरा)-लीन्हे ॥
बेल, वृत्त, दें, मांगे - फल - रस * गायें, दूध, कि लोग कहइं,बस ! ।
धाम, नाज, धरती पर,सब दिन * लौटा सत-जुग,कहत,दीख जिन ॥
धरीं, खोलि, परबत, मनि-खानी * अंतर - जामी, राजा, जानी ।
बहनि लागि सुन्दर, नदियन,जल * ठंड, मीठ, सुख - कारी, निर्मल ॥
सागर, निज - मर्यादा - वारे * मोती, मिलत, किनारे - डारे ।
तालावन्ह मां, भरे कमल, ठुसि * दसहु दिसा,औरकोने,सबखुस ॥
दोहाः—चंद्र, किरिनि ते, भुइं, भरत, सूर्य तपत, जस - काज ।
२२. बादर, माँगे, देत जल, राम - चंद्र के राज ॥
"अस्व-मेध-जग" बहुतक, कीन्हे * राम, दान, विप्रन कहँ, दीन्हे ।
पालत वेदहिं, धरम उठावत * भोगी-इन्द्र - समानहिं राजत ॥
सिय चलत, पति - आज्ञा मानी * झूकि,सुसील, सोभा-की-खानी ।
समुझत राम - चंद्र - प्रभुताई * सेवत चरन-कमल, चित-लाई ॥
रहीं, दास - दासी, बहुतेरी * जानहिं,सब - विधि - सेवा-करी ।
घर - कारज, सिय, हाथन, करई * राम-चंद्र - आज्ञा, सिर धरई ॥
जेहि विधि,कृपा-सिंधु सुख पावइ * सोई विधि, सीता कहँ आवइ ।
अपन - सासु, औरहु, घर माहीं * सेवइ, सबहिं, मान-मद - नाहीं ॥

ब्रह्मा - से - सुर, जिन्ह कहँ पूजत * जगत-मात कहि, जिनहिं प्रसंसत।

दोहाः—कृपा - दृष्टि, जिन्ह, सीय की, चाहत देउता, सोइ।

२३. करत प्रीति, पद - राम महँ, चंचलता कहँ खोइ॥

सेवत, जस - इच्छा, सब भाई * चरनन महँ, नित, प्रीति बढ़ाई।
राम - कमल - मुख, देखत रहई *'राम, हमहिं, कछु, करन का कहई'!॥
करत राम, भाइन पर प्रीती * भांति, भांति, सिखलावत नीती।
पुर-बासी, दिन, खुसी, बितावहिं * करत सुःख, जो, सुर, नाहिं पावहिं॥
विधि, दिन - रात, मनावत रहईं * प्रीति, राम-चरनन महँ, चहहीं।
दुइ सुत, सुन्दर, सीता ज्यायं * 'लव' 'कुस', वेद-पुरानन - गायं॥
गुनन - भरे, अति सीध, बहादुर * सकल विष्णु की, अति ही सुन्दर।
दुइ दुइ सुत, सब भाइन केरे * रूप, सील, गुन, सब, बहुतेरे॥

दोहाः—बानी - ज्ञान - इन्द्री - परे, माया - मन - गुन - पार।

२४. सोइ, सत्, चित्, आनन्द - घन, लीला करत अपार॥

भोर होत, करि सरजू - मज्जन * करत सभा, लइ विप्रन, सज्जन।
वेद पुरान, बसिष्ठ बखानहिं *जानत-सब, फिरिहू, सुनि, कानहिं॥
मिलि भाइन-संग, भोजन करहीं * देखे, सब माता, सुख भरहीं।
भरत, शत्रुहन, दोऊ भाई * लइ - हनुमान, बगीचन जाई॥
बूझहिं, बैठि, कथा, प्रभु केरी * हनुमत, कहत, सुमति-बहुतेरी।
निर्मल-गुन सुनि, अति सुख पावहिं *सुनि, हठ करि, फिराफिर कहिलावहिं॥
घर-घर, सब के बँचन पुराना * लीला-राम, कहत, विधि नाना।
नर और नारि, राम-गुन गावहिं * बीतत दिन, और रात, न जानहिं॥

दोहाः—पुर - बासिन्ह कर सुःख, और, संपति, और, समाज।

२५. सकत, न, लाखन - सेष कहि, जहाँ, राम कर राज॥

नारद रिषि, और बड़ मुनीसा * दरसन करन, कौसलाधीसा।
रोज, रोज, सब, अवधहिं, आवहिं * देखे - पुर, वैराग भुलावहिं॥
सोने की, मनि - जड़ी, अटारी * रंग - बिरंगी छतें, ढारी।

लगी, नगर महँ चार - दिवारी * रंगे-कँगूरन-छबि, तहँ न्यारी ॥
लागत नौ - गृह, सैन - सजाई * इन्द्र - पुरी, सब, घेरी आई ।
रंग - बिरंगी, सीसा - फरसइं * जिनहिं देखि, मुनि-के-मन-हरषहिं॥
घर- ऊँचे, अकास कहँ चूमत * सूरज-चंद्र, कलस ते, लज्जित ।
बने भरोखा, मनि-ते, जड़ि, जड़ि * बरत, जड़ाऊ-दीपक, घर-घर ॥

छंदः—दीपक जड़ाऊ जरत, सोहत देहरी, मूँगन - रची ।
मनि खँभ, दीवारन्ह, मनहु, 'पुखराज', विधि 'नीलम' पची ॥
घर - जोग, लांबे-चौड़ आंगन, सुघर, और, मनि - ते - जड़े ।
सोने - किवाड़, दुआर, लगि लगि, जड़ि - नगीनन, भे खड़े ॥

दोहाः—बने, घरन, तसवीर-घर, लिखि - लिखि, हाथ रचाइ ।
२६. अदभुत लीला राम की, मुनि - मन लेत चुराइ ॥

सब लोगन, फुलवारि, लगाई * विविधि-भांति, करि जतन, बनाई ।
सुन्दर बेलीं, तहँ, पौढ़ाई * फूलत सदा-बसंत - की - नाई ॥
भँवर-गूँजि. तहँ, मधुर, मनोहर * सीतल पवन, सुगंधित सुन्दर ।
पाले लरिकन, बहुतक पच्छी * सोभित, उड़ाति, औ बोली अच्छी ॥
सारस, हंसा, मोर, कबूतर * सोभा पावत, घरन के ऊपर ।
लखि, सीसन, अपनी - परिछाईं * बहु बिधि, बोलहिं, नृत्य कराहीं ॥
बाल पढ़ावत, तोता, मयना * 'कहउ!'राम', बिन कहे बनइ ना'.
राज - द्वार, अति नीक बनावा * गली. बजार, सुघर, चौराहा ॥

छंदः—सुन्दर बजार, न बनत बरनत, दाम-बिन, सब पाइये ।
राजा, जहाँ, लछिमी-के-पति, तहँ, संपदा, कस गाइये !!॥
बैठे बजाज, सराफ, व्योपारी, अनेक, 'कुबेर' - से ।
घूमत, सुखी, नर-नारि, बालक वृद्ध, चलि, चलि, रेर से ॥

दोहाः—उत्तर दिसि, सरजू बहत, निर्मल - जल - गंभीर ।
२७. बँधे घाट, उज्जल, नहीं, कीच - किनारिन - तीर ॥

दूरि, खुले-महँ, घाट, अति सुन्दर * गज-घोड़ा, जहँ, जल पी, मन-भरि ।

पनघट, परम मनोहर, नाना * नारी-जल, नहिं नर-असनाना ॥
राजघाट, तहँ, स्रेष्ट अति, सुन्दर * चारहु-जाति, नहात, जहाँ, नर ।
तीर, तीर, देवन - के - मन्दिर * तिन्ह-चहुँ-ओर, बगीचा, सुन्दर ॥
कहूँ, नदी के तीर, उदासी * ठहरे ज्ञानी, मुनि, संन्यासी ।
तीर, तीर, तुलसिका, सुहाई * झुंड, झुंड, बहु, मुनिन लगाई ॥
पुर-सोभा, कछु, बरनि न जाई * बाहिरहू, सुन्दरता छाई ।
देखि पुरी, नहिं पाप नगीचा * ताल, बावली, बाग - बगीचा ॥

छंदः—तालाब, कुइं, और, बावली, सुन्दर, मनोहर, सोहहीं ।
जल-भरे-निर्मल, सीढ़ी - सुन्दर, देखि सुर, मुनि मोहहीं ॥
बहु-रंग कमल, अनेक पक्षी, बोलि, भँवरा गूँजिहीं ।
मानहु, बगीचन, डोलि पक्षी, राह - गीरन्ह, टेरिहीं ॥

दोहाः—लछिमी - पति, राजा जहां, कैसे कहिये, सो पुर ।
२८. आठ सिद्धि, सुख, सँपदा, रही, अवध, सब भरि ॥

जहँ, तहँ, नर, रघुपति-गुन गावहिं * आपुस, बैठि, यही सिखलावहिं ।
पुर-बासीः-भजहु! भक्त-रक्षक, सबरामहिं * सोभा-सील, रूप-गुन-धामहिं ॥
कमल-नयन, घनस्याम-सरीरहिं * पलक-नैन-सम, दासहिं रक्षहिं ।
लिये-तरकस-सुंदर - धनु-तीरहिं * मुनि-मन-कमल-सूर्य, रन-धीरहिं ॥
(काल-सर्प-कहँ-गरुड़)-समानहिं * बिन-इच्छा, सब-ममता-त्यागहिं ।
लोभ-मोह-मृग, राम-सिकारीहिं * सिंह-(काम-गज), जन-सुखकारीहिं ॥
सूरज संसय - सोक - अँधेरी) * अग्नी, राक्षस-घन - बन - केरी ।
क्यों न भजत सिय, और रघुबीरहिं * जेहि संसारी-भय, सब, चीरहिं ॥
बरफ, कि, इच्छा-मच्छर-गत-ना * बिना-जनम, इक-रस, जो-नसत-ना ।
मुनि-खुस-करत, हरत-जग-भारा * प्रभु-तुलसी, जेहि, तुलसी प्यारा ॥

दोहाः—यह विधि, नारी, नर, सबहिं, करत राम-गुन-गान ।
२९. सदा, सहायक, तब, रहत, सब के, कृपा-निधान ॥

जब ते, राम-प्रताप, गरुड़! सुनु! * उदय भयो, अति प्रबल, सूर्ज, जनु ।

छाय, प्रकास, रहा, तिहुं-लोका * बहुतन,सुख भा,बहुतन,सोका ॥
जिनहिं सोक, ते, कहउं, बखानी * प्रथम, अविद्या - रैन नसानी ।
पाप के घुग्घू, देखि, लोकाने * काम-क्रोध - कुमुदहु मुरझाने ॥
काल, कर्म, गुन, और स्वभाऊ * थे चकोर, सुख मिला, न, काऊ ।
काम - अभिमान-मोह-मद चोरा * गलत, दाल, नहिं, केहू ओरा ॥
धरम - ताल महँ, ज्ञान-समाना * खिले कमल, दिन-निकसे, नाना ।
सुख-संतोष - विराग - विचारा * चकवा-सम, सब,भये सुखारा ॥

दोहाः—यह प्रताप - सूरज, हृदय, जेहि के, करइ प्रकास ।
३०. पाछे - कहे, सो गुन बढ़त, पहिल, दोसन - नास ॥

भ्रातन सहित, राम, इक - बारा * गये, संग प्रिय पवन - कुमारा ।
सुन्दर बाग, अवध कर, देखन * दीख फूल, पाती, सब वृत्तन ॥
सनकादिक रिषि,तब, तहँ, आये * तेज - वान, गुन-सील, सुहाये ।
बृह्म के आनँद, रहत लीन, जो * देखत-बालक, अति-पुरान सो ॥
चारहु - वेद - रूप, जनु, धारे * मुनि-समदरसी-(एक-ते) सारे ।
नंगे, यही बासना, तिनहीं * रघुपति-चरित,होइ,तहँ सुनहीं ॥
रहत रहे सनकादि, भवानी ! * जहँ'अगस्त्य'-मुनि, अतिही ज्ञानी ।
बहु-विधि,कही,कथा,मुनि,रघुवर* जम-अग्नी-कहँ-काठ, ज्ञान-जर ॥

दोहाः—'सनकादिक', आवत लखे, हर्षि, दंडवत कीन्ह ।
३१. कुसल पूँछि, पीतांबरहिं, बैठन कहँ, प्रभु दीन्ह ॥

कीन्ह दंडवत, तीनहु - भाई * हनूमान सँग, सुख अधिकाई ।
सनकादिक, रघुबर-छवि, देखी * रुकत न मन,अस मग्न विसेखी ॥
स्याम-सरीर, कमल-से-लोचन * सुन्दरता-के-घर, भव-मोचन ।
रहिगे, देखि, पलक, नहिं मारहिं * कर जोरे, सब, सीस नवावहिं ॥
तिन्ह की दसा, देखि, रघुवीरा * बहत-नयन-जल, पुलकि-सरीरा ।
पकरि हाथ, प्रभु,. ढिंग, बैठारे * परम मनोहर, बचन, उचारे ॥
रामःधन्य ! आज, हम, दरसन पाये * जात, पाप, जेहि दरस, नसाये ।

सतसँग मिलत, भाग ते, हे! मुनि! * बिन-श्रम, तोरत, जग-के - बंधन ॥
दोहाः—संत - संग दे मोक्ष, और कामी, नरक का पंथ।
३२. कहत संत, पंडित, कवी, वेद, औ, उत्तम ग्रंथ ॥
कविः सुनि प्रभु-बचन, हरषि मुनि, चारी * पुलकित-तन, अस्तुति उच्चारी।

(सनकादिक—अस्तुति)

चार सनकादिरिषी:
जय! अनेक-और-एकहि, भगवन! * पाप-न, दोष-न, अंत-नहीं, जिन्ह ! ।
जय! निर्गुन, जय! जय! गुन-सागर * सुख-के-धाम, सुघर, अति चातुर! ॥
रमा-रमन, जग-धर, सोभा-घर * आदि-जन्म-नहिं, ना-अस-दूसर! ।
ज्ञान-खानि, तुम, मान बढ़ावत * बिन-अभिमान, वेद-जस गावत! ॥
जानत - तत्त्व, अविद्या - भंजन * नाम-रहित, कृतज्ञ, निरंजन ! ।
सबहि-आप, सब-महँ-व्यापक हौ * हम कहँ, अंतर-जामी ! रच्छहु! ॥
सुख-दुख-दुबिधा, भव-फँद, तोरिये! * बासि, हृदय, मद-कामहिं बोरिये! ।
दोहाः—देत, कामना, पूरि, सब, परमानँद, दया-धाम ! ।
३३. परम भक्ति, अपनी, अटल, देहु, हमहिं, श्रीराम !! ॥
देहु भक्ति, रघुबर ! अति-पावन * तीन-ताप, अभिमान - नसावन ।
हे, प्रभु ! काम-धेनु, भगतन-के * कल्प-वृक्ष ! दीजइ बर, मन ते ॥
जनु, 'अगस्त्य'-भव-सिंधु-सुखावत * सेवक-सुख, जो-सहलहिं-पावत ।
मन-भय-दुःख, दूरि कर दीज्ये * बैर-भेद, सब ही, हरि लीज्ये ॥
आसा, भय, सब-चाह, मिटावत * विनय, विचार, विराग बढ़ावत ।
राजन्ह - राजा, पृथ्वी - भूषन * देहु भक्ति, नौका-भव-तारन ! ॥
हे ! मुनि - मन-झीलन-के-हंसा * चरन-कमल, शिव, विधिहु प्रसंसा ।
रघुकुल - नाक, वेद-के-रच्छक ! * (काल-करम-आदत)-गुनभच्छक! ॥
दुख-हरना, तारन के तारन ! * तुलसी-प्रभु, लोकन-के-कारन ! ।
कविः—दोहाः—बार, बार, अस्तुति करि, प्रेम - सहित, सिर नाइ ।
३४. ब्रह्म - लोक, सनकादि गे, मन - चाहा - बर पाइ ॥

कविः-वृह्म-लोक, जब, मुनी सिधाये * भाइन, राम-चरन, सिर नाये।
पूँछत रामहिं, सब सकुचाहीं * चितवत,सब, हनुमानहिं धाईं॥
सुना चहत, प्रभु-मुख की बानी * भ्रम,संसय, सब, जाइ सिरानी।
अंतर-जामी-प्रभु सब जाना * कहा, 'कहा!बूझत ! हनुमाना'!॥
हनूमानः-जोरि हाथ,तब,कह हनुमंता * दीन - दयालु, सुनहु ! भगवंता।
नाथ ! भरत, कछु बूझा चाहीं * पर, पूँछत,मन महँ, सकुचाहीं॥
रामः-तुम जानत,कपि!मोर-स्वभाऊ * भरत-मोहिं, कछु अंतर, काऊ !।
भरतः-सुनि प्रभु-वचन,भरत,गहेचरना* सुनिये ! दास-व्यथा-के-हरना॥
दोहाः—नाथ ! न, मोहिं, संदेह कछु, संसय, सोक, न, मोह।
३५. यह सब, आपुहि - की - कृपा ! कृपा-अनन्द-के-कोह॥
करत, कृपा-निधि, एक ढिठाई * यह - सेवक, भगतन-सुखदाई !।
संतन की महिमा, रघुराई * बहु विधि, वेद-पुरानन गाई॥
आपहु, श्री-मुख, कीन्ह बड़ाई * करत प्रीति,तिन्ह पर, अधिकाई।
सुना चहउँ, कछु, संतन के गुन * कृपा-सिंधु! गुन-ज्ञानहिं-निपुन!॥
संत, असंतन, के गुन, गाई * अलग-अलग, दीन्हेउ, समुझाई।
रामः-संतन के लच्छन, सुनु, भाई * वेद, पुरानहु, नहिं गिनि पाई॥
संत - असंतन - करनी, न्यारी * इक, चंदन-सी, एक, कुलहरी।
कटे - कुलहरी, चंदन, भाई * देत, कुलहरीहि महक - सुहाई॥
दोहाः—ता ते, देवन-सिर चढ़त, चंदन, जग-कह-प्यार।
३६. जरे - आग, घन - ते - पिटत, बदले, मुख - कुलहार॥
विषय-ते-दूरि, सील - गुन-खाना *पर-दुख-सुख,निज-दुखसुखमाना।
बिनु-मद, सब कहँ,एक-स,चाहत * लोभ, क्रोध, भय,हर्षहु त्यागत॥
चित-कोमल, दीनन-पर - दाया * (करम-बचन-मन)-भक्ति,न-माया।
मान बढ़ावत, अपन मान ना * प्रान-प्रिय-मोहिं,भरत ! जानना॥
मोर-नाम, बिन - इच्छा, औठन *सांति,बिराग,क्षुभे-नित,खुस-मन।
सीतल, सीधे, सब कहँ चाहत * चाहि विप्र-पद, धर्म उपजावत॥

बसहिं, हृदय, लछन सब, जेही * सांचु-संत, जानहु, तुम, तेही ! ।
भीतर-बाहिर, नेम, डिगत-ना * पोढ़-नीति, कडु बात कहत ना ॥
दोहाः—अस्तुति, गारी, एक - सी, मोर - चरन, जिन्ह, प्यार ।
३७. प्रान - प्रिय, ते संत, मोहिं, गुन - घर, सुख - भंडार ॥

सुनहु ! असंतन केर, स्वभाऊ * भूलेहु, संगत, करइ न, काऊ ।
उन कर संग, सदा, दुख - दाई * चंचल-गऊ,जस,'कपिल'नसाई ॥
जरत, हृदय - खल, ताप विसेषी * जरत, सदा, पर - संपति देखी ।
जहँ कहुं, सुनहिं, पराइ-बुराई * हरषहिं, जनु, गिरी-संपति, पाई ॥
काम क्रोध, मद, लोभ मां तत्पर * चुगली, कपटी, टेढ़, पाप-घर ।
वैर - बिना - कारन, सब ही ते * करइ-जो-हित,अनहित,ताहू ते ॥
झूँठइ लेना, झूँठइ देना * झूँठइ भोजन, झूँठ चबेना ।
बोलहिं, मधुर बचन, जग्म-मोरा * खात सांप-बढ़, हृदय कठोरा ॥
दोहाः—पर - द्रोही, चुगिली, तकत - औरन कर - धन - नारि ।
३८. पाप - रूप, तन, नीच, धरि, लीन्ह मनुज - अवतार ॥

लोभहि, ओढत, लोभ, बिछावत * हाय-पेट, नरकहु, डर मानत ।
जो, काहू - की - सुनत - बड़ाई * भरत सांस, जनु, जूड़ी आई ॥
देखत विपता, जब, वे, केही * सुखी, मनहु, जग-राजा, वेही ।
मतलब-चौकस, कुल - के-द्रोधी * बकी, कामी, लोभी, क्रोधी ॥
मात.पिता, गुरु, विप्र, न मानहिं * आप बिगारि,औरनहिं,बिगारहिं ।
करत, मोह-बस, बैर-परावा * सतसँग,हरि-की-कथा,न भावा ॥
अवगुन-सिंधु, मूर्ख, और कामी * दोसत वेदहिं, पर-धन-स्वामी ।
खफा, देवतन, और. बिप्रन पर * मन,छल-कपट, पै, ऊपर-सुन्दर ॥
दोहाः—ऐस नीच, और, दुष्ट नर, 'सत-जुग', 'त्रेता', नाहिं ।
३९. 'द्वापर', कछु; झुंडन - बढ़े, आये, 'कलिजुग' मांहिं ॥

दूसर-हित-सम, धरम न, भाई * दुसरन-दुख-सम, नहीं निचाई ।
सार, यही, वेदहु. पुरान कर * बतलायो. समुझहिं चातुर नर ॥

नर-तन-धरि,औरनहिं, सतावहिं * भारी, संसारी - भय, पावहिं ।
करइ पाप, नर, मोह - समाना * मतलब-लगि, परलोक नसाना ॥
काल-रूप, तिन्ह कहँ, मैं, भ्राता * नीक-बुरा, करमन - फल-दाता ।
अस बिचारि, जे परम - सयाने * भजत मोहिं, भव-के-दुख, जाने ॥
तजत कर्म, जो - पाप - पुण्य - दे * भजत मोहिं, सुर-नर-स्वामी, से ।
संत - असंतन - के - गुन, भाखे * परइं न भव,जे, उर, लिखि,राखे ॥

दोहाः—माया - से - उपजे - भये, हैं, गुन - दोस, हजार ।
४०. गुन, यहि, लखइ न दोस-गुन, लखइ, सो, खोंट-विचार ॥

कविः–श्री-मुख,वचन,सुनत,सब-भाई * हर्षें, प्रेम न, हृदय, समाई ।
करत बिनय,अति,बारहि - वारा * हनूमान - हिय, हर्ष, अपारा ॥
फिर, रघुपति, आपन-घर, गये * यह विधि, चरित करत,नित,नये ।
वार बार, नारद-मुनि, आवहिं * चरित पवित्र राम के गावहिं ॥
नये चरित, इहां, देखहिं, आई * बृह्म - लोक, सो, जाइ, सुनाई ।
सुनि, बृह्मा, अतिही सुख, मानहिं *आदरकरिकरि,फिर-कहिलावहिं॥
सनकादिक, नारदहिं प्रसंसत * सदा, बृह्म-के - सुख-महँ, डूबत ।
बृह्म-ध्यान, छांड़े, सुने हरि-गुन * अधिकारी, जो, वड़े रिषी, मुनि ॥

दोहाः—जिम्रत-मुक्त, लइ-बृह्म-मां, सुनत चरित, तजि-ध्यान ।
४१. ऐस-चरित महँ, प्रेम नहिं, तिन्ह-हिय, बज्र-समान ॥

एक बार, रघुनाथ बुलाये * गुरु, बृह्मन, पुर - बासी, आये ।
बैठे, सभा, भाइ, मुनि, सज्जन * बोले बचन, भक्त - भय-भंजन ॥
सुनु, पुर - वासी ! मोरी बानी * कहत,न कछुअभिमान-ते-सानी ।
ना अनीति, ना, कछु प्रभुताई * सुनहु,करेउ, जो, तुमहिं-सुहाई ॥
रामः-सेवक सोइ,प्यारा मोहिं,सोई * मोरी आज्ञा, मानइ, जोई ।
कहउं अनीति, कछु, जो, भाई * हटकेउ, मोहिं,सब भय,बिसराई॥
बड़े-भाग्य, मानुष - तन पावा * मिलत न, देवन, बेद - सराहा ।
देत मोक्ष, साधन - के - द्वारा * पाइ, न, तन, परलोक संवारा ॥

दोहाः—सो, प्रलोक, दुख पावई, सिर धुनि धुनि, पछिताइ ।
४२. काल, कर्म, और, ईश्वरहिं, नाहक, दोस लगाइ ॥

बिषय-भोग कहँ, नहिं, तन, भाई * बैकुंठहु, आखिर, दुख - दाई ।
नर-तन - पाइ, बिषय, मन देहीं * सो, अमिरत-बदले-विष लेहीं ॥
ताहि, कबहुं,भल,कहइ न, कोई * पारस छांड़ि, जो घुँघची लेहीं ! ।
भटकत, जोनि-लाख - चौरासी * चार-तरह-के, जीव-अविनासी ॥
निज-बल, माया, जीव घुमावत * लिपटे-(काल-कर्म-गुन-आदत) ।
कबहुं, कृपा-करि, दे, नर-जामा * बिनु-कारन - कृपालु-भगवाना ॥
सो तन, भवसागर - कहँ - बेड़ा * कृपा-पवन, नहिं लगइ थपेड़ा ।
पोढ़ - नाव - के,गरू, खिवइआ *यहविधि,कठिन,सहलभा,भइआ ॥

दोहाः—उतरइ ना, भव - सिंधु, जो, अस - सामानहु, पाय ।
४३. करत बुरा, है मूर्ख, सो, मारत, जीवहिं, जाइ ॥

{ इहां, उहां, दोऊ, सुख चाहत * पकरहु पोढ़े, तुमहिं बतावत ।
{ सहज, और सुख - दाता, भाई * 'भक्ति'-मोरि,जो बेद बताई ! ॥
'ज्ञान',कठिन,बिघनहु,तेहिमां,फिर * जोग-कठिन,मन,रहत नहीं, थिर ।
किये - कष्ट, पावइ कोइ कोई * बिना-भक्ति,सोउ, प्रिय न होई ॥
{ भक्ति-ऊपर-नहिं-कछु,सुख-खानी * बिनु सतसंग, न पावत, प्रानी ।
{ प्रबल-पुण्य-बिनु, मिलइं न, संता * सत-सँग ही संसार-क-अंता ॥
पुण्य, एक, जग महँ, नहिं-दूजा * मन-क्रम - बचन, विप्र-पद-पूजा ।
होत सहायक, मुनि और देवा * बिन-छल,करत, बिप्र, जो, सेवा ॥

दोहाः—एक, और - है, गुप्त - मत, कहत, सबहिं, कर जोरि ।
४४. बिना-शंभु-के-भजन - के, भक्ति, मिलत, नहिं, मोरि ॥

भगती - मारग, नहीं कलेसा * जप, तप,जोग, न जज्ञ,उपासा ।
सीध - स्वभाउ, बिना कुटिलाई * होइ तृप्ति,जो कुछु मिलि जाई ॥
राम - दास हुइ, नर की, आसा * करइ,तौ,कह ? मो मां बिस्वासा ।
कहउं, बहुत-कह, भक्ति ते, भाई * मैं तौ, बसीभूत, हुइ, जाई ॥

बैर, लराई, आस, न, जिन्ह,डर * तिन्हकहँ,सबहि दिसाएं,सुख-घर।
कार्य - ठान, ना धर, अभिमाना * पाप, क्रोध, नहिं, चतुर-सुजाना॥
सज्जन-सँग,नित, प्यारा जिनका * समुझत स्वर्ग,मोक्ष,सुख,तिनका।
भक्ति - ओर ले, बिन - कुटिलाई * संसय-दुष्ट, न, जेहि-मन, आई॥

दोहाः—मद, ममता, और मोह तजि, रटत मोर गुन, नाम।
४५. सोई जानत भजन - सुख, परम - अनन्द को धाम॥

अमरित सम,सुनि वचन-रामके * पकर पद, सब, कृपा - धाम-के।
लोगः-मात,पिता,गुरु,मित्र, हमारे। * कृपा-निधान, प्रान ते प्यारे!॥
आप, देह - घर-धन-हितकारी! * भगत-केर-प्रभु, तुम, दुख-हारी।
अस सिख,तुम-बिन,देइ न कोऊ * मात, पिता, गरजीले, ओऊ॥
बिना - गरज, दुइ ही, उपकारी * तुम, तुम्हार-सेवक, बलिहारी!।
नकली - गरज-मीत, जग माहीं! * परलोकी-असली, कोउ नाहीं!॥
कविः-सब के वचन, प्रेम-रस-साने * सुनि, रघुनाथ, हृदय हर्षाने।
गये लोग, प्रभु - आज्ञा पाई * जात, बतकही - राम, सराही॥

दोहाः—उमा! अवध - नर, सबहि विधि, पूरन पूरन - काम।
४६. बृह्म, सच्चिदानन्द - घन, जहँ, राजा श्रीराम॥

एक बार, बसिष्ठ मुनि आये * जहां, राम-(सुख-धाम-सुहाये)।
अति आदर, रघुनायक कीन्हा * धोय चरन, चरनामृत लीन्हा॥
बसिष्ठः-सुनहु,राम!मुनि कह,करजोरी* कृपा-सिंधु, बिनती, कछु, मोरी।
देखि देखि कर, चलनि तुम्हारा * होत मोह, मम हृदय, अपारा॥
महिमा, थाह - न, वेद न जाना * मैं,केहि भांति, कहउं,भगवाना!।
करम-पुरोहित - कर, अति भद्दा * खींचा वेद, पुरानन, गद्दा॥
"करिहउं ना", मैं कह, प्रोहताई * कह बृह्मा, "आगू, सुख-दाई"।
"परमातमा, मनुष-तन साजा" * "हुइ है, रघुकुल-भूषन-राजा"॥

दोहाः—हृदय मां, तब, जानि, मैं, जोग, जज्ञ, ब्रत, दान।
४७. जेहि-कां, करत, सो, पाइहौं, धरम, न यह सम, आन॥

जप, तप, नेम, जोग, निज-धरमा * वेद-कहे, बहुतक, सुभ - करमा ।
ज्ञान, दया, तीरथ - अस्नाना * इन्द्री-जीति, जो, वेद बखाना ॥
वेद, पुराना, शास्त्र, अनेकहि * इन-सब-कर-फल, है, प्रभु! एकहि ।
चरन-कमल-महँ - प्रीति-निरंतर * सब साधन ते, यह फल, सुन्दर ॥
मल ते धोय, कहूँ, मल छूटत * फेरे पानी, कहुँ, घी निकसत ! ।
प्रेम - भक्ति - जल-बिनु-रघुराई * मल हृदय - कर, कबहुं न जाई ॥
सोइ जानत-सब-तत्व, औ, पंडित * गुन-घर, तेहि-कर-ज्ञान-अखंडित ।
चतुर सोइ, सुभ-लच्छन-सोहत * प्रभु-पद-कमलन्ह-भक्त, जो, होवत ॥

दोहाः—नाथ ! एक बर, मांगऊं, राम ! कृपा करि, देहु ।
४८. जनम, जनम, प्रभु-पद-कमल, घटइ न, कबहूं, नेहु ॥

कविः अस कहि, मुनि बसिष्ठि, घर, आये * कृपा-सिंधु के मन अति भाये ।
हनूमान, और भरत, औ भ्राता * संग लिये, सेवक, सुख-दाता ॥
फिर कृपालु, पुर - बाहिर गये * गज, घोड़ा, रथ, मांगत - भये ।
देखि, कृपा करि, सबहिं सराहा * दीन्ह सवारी, जो, जेहि चाहा ॥
नासत - थकनि, सोउ, थकि रहे * सीतल, आम - बगीचा, गये ।
दीन्ह, वस्त्र-निज, भरत, बिछाई * बैठे प्रभु, सेवहिं, सब - भाई ॥
ठाढ़े, पवन, पवन - सुत, करई * फूलि फूलि, लोचन, जल भरई ।
हनूमान - सा, कोउ बड़ - भागी * नहीं, राम-चरनन - अनुरागी ॥
गिरिजा ! जासु प्रीति, सेवकाई * बार बार, प्रभु, निज-मुख, गाई ।

दोहाः—तेहि अवसर, नारद - मुनी, आये, बीना - हाथ ।
४९. गावन लागे, नित - नई, कीरति जो रघुनाथ ॥

नारदः-करहु, नाथ! हे, कमल-से-लोचन * कृपा-दृष्टि, जो सोक-विमोचन ! ।
नील-कमल - सम, स्याम - सरीरा * सिव-उर कमल-के-रस-के भँवरा ॥
मारत राक्षस - झुंडन, छन महँ * देत अनन्द, मुनी, सज्जन कहँ ।
बिप्र - हरी - खेती कहँ, बादर * नाथ-अनाथ, दीनन-कर-आदर ॥
भुज-बल, जग कर भार उतारत * ज्ञानी, जो-'खर' - 'दूषन' - मारत ।

रावन - शत्रू, राजा - सुन्दर * जय!दसरथ-कुल-कुमुद-के-चंदर ॥
वेद, पुराना, सुजस, सराहत * सुर,मुनि,संत,सबहि,जसगावत।
वृथा - गरूर, दया करि, खंडन * सब विधि,चतुर,अयोध्या-भूषन॥
नामहिं ! कलिजुग-पाप मिटावत * हे ! तुलसी-प्रभु, रच्छा मांगत ।
दोहाः—प्रेम - सहित, नारद - मुनी, करे - राम - गुन - गान ।
५०· सोभा - सिंधू उर - धरे, गे बृह्मा - अस्थान ॥
शिवः—गिरिजा ! सुनहु,मनोहर-कथा * भाखी, मैं, जेती रहिं तथा ।
राम - चरित, सौ-कोटि, अपारा * वेद, सारदा, पाइं न पारा ॥
राम - अंत - नहिं, गुनहु, अनेका * जनम,करम और,नाम, विसेषा ।
धूरि - कनी, जल - बूँदहु, गनती * राम-चरित,पर,गिनत न बनती ॥
कथा-विमल, जेहि ते हरि मिलत * सुने, होत भक्ती, नाहिं - टरत ।
कहेउं, उमा ! सब कथा, सुहाई *'गरुड़हिं',जो,'भुसुंडि',मुख,गाई॥
कछुक, राम-गुन, कहेउं, बखानी * अब,का कहउं,सो,कहउ,भवानी।
कविः—सुनि सुभ-कथा, उमा हर्षानी * बोली, झुकि-के, कोमल-बानी ॥
गिरिजाः—धन्य धन्य, हे!शिव,मैं,नारी * सुनेउं, राम-गुन, भव-भय-हारी ।
दोहाः—दया - धाम के कृपा ते, छूटि मोह, गइ तरि ।
जाना, राम - प्रताप, मैं, चेतन, सुख - के - घर !! ॥
(राम-कथा)-अमरित-भरत, (चंद-से-मुख)-से, नाथ ! ।
५१. कानन - बरतन, पियत सो, मै, शिव ! नहीं अघात ॥
राम - चरित, जे, सुने, अघाहीं * स्वाद कछू, तिन्ह, जाना नाहीं ।
जिअति-मुक्त हैं, रिषि, मुनि जेऊ * सुनत, सदा, हैं, हरि-गुन, तेऊ ॥
भव - सागर के जे उतरइया * राम-कथा, तिन्ह, पोढ़ - नवैआ ।
विषई, सुनइ, जो हरि - गुन-गाये * कान,सुखी,मन, खुस हुइ जाये ॥
ऐस कौन, जग, कानन - वारा * रघुपति-चरित,जाहि,नाहिं प्यारा ।
आपुन - गरदन, आपहि काटत *जिनहिंनरघुपति-चरित,सुहावत ॥
'राम-चरित-मानस', तुम गावा * सुनि, हे!नाथ, बहुत सुख पावा ।

तुम जो कहीं, यह कथा सुहाई ❋ कागभुसुंडि, गरुड़ - ते, गाई ॥
दोहाः—पोढ़ - ज्ञान, बैराग, हुइ, राम - चरन, हुइ, नेह ! ।
५२. राम-भक्त, भा काग, क्यों ? मोहिं, परम संदेह ॥
हे ! शिव, नर, कहुं, होइं हजारी ❋ तिन्ह मां, एक, धरम-वृत-धारी ।
कोटि - धरमधारिन्ह महँ, कोई ❋ विषय-ते - दूरि, विरागी होई ॥
कोटि - विरागिन्ह, वेद बतावत ❋ सुन्दर - ज्ञान, एक, कोउ, पावत ।
कोटिक ज्ञानीहुन महँ, कोऊ ❋ जिआति-मुक्त, जग, एकहि, सोऊ ॥
तिन-हजार - महँ, सब-सुख-खानी ❋ वृह्म-लीन, मुसिकिल-ते, ज्ञानी ।
{ धरमी, वैरागी, और ज्ञानी ❋ जीवन - मुक्त, वृह्म - लय, प्रानी ॥
{ इन सब कहँ, दुर्लभ, पावन सो ❋ पावत, भक्त, तजे - माया, जो ।
सो हरि - भक्ति, काग, कस ? पाई ❋ नाथ ! बतावहु, मोहिं, समुझाई ॥
दोहाः—लीन, जीव, जो राम-महँ, गुनी, ज्ञानि, मति - धीर ।
५३. केहि कारन, हे ! नाथ, कहु, पायो काग - सरीर ?? ॥
यह प्रभु-चरित, पवित्र, सुहावा ❋ कहउ, कृपालु! काग, कहँ पावा ? ।
और, केहि भांति, आप, सुनि पावा? ❋ कहउ, लगत मोहिं, सबहि, तमासा ॥
गरुड़, महा-ज्ञानी, गुन-धारे ❋ हरि-सेवक, ढिग - बैठन-हारे ।
तेहिं, केहि हेत, काग-ढिग, जा करि ❋ सुनी कथा, रिषि, मुनी, छांड़ि करि ॥
कहउ, कौन विधि, भा संवादा ❋ दोउ हरि-भगत, गरुड़-और-कागा ।
कविःउमा की बानी, सीध, सुहाई ❋ सुनि, बोले शिव, अति-सुख-पाई ॥
शिवःसती! पवित्र ! धन्य ! मति-तोरी ❋ रघुपति-चरन, प्रीति, नहिं थोरी ।
परम-पवित्र ! सुनहु, इतहासहिं ❋ जो, सुनि, सकल-सोक-भय-नासहिं ॥
सुनि, उपजइ, चरनन-विस्वासा ❋ तरइं लोग, भव-सागर, खासा ।
दोहाः—ऐस प्रस्न, तौ, गरुड़ हू, कीन्ह, काग सन, जाइ ।
५४. सो, सब, सादर, मैं कहत, सुनहु, उमा ! मन-लाइ ॥
सुनी कथा, मैं, तारन - हारी ❋ सुनु, अवसर, मृग-नयनी, प्यारी ! ।
पहिल, 'दच्छ'-घर, भा, अवतारा ❋ 'सती'-नाम, तब, रहा, तुम्हारा ॥

पिता, जज्ञ, जब, नहिं सनमाना * तुम,अति-क्रोध,तजे, निज-प्राना ।
मोर-सेवकन, जज्ञ बिगारा * सो अवसर, तुम,जानत, सारा ॥
तब,अति सोच, भयो, मन मोरे * दुखी भयेउं, छूटे, प्रिय ! तोरे ।
नदी, ताल, गिरि, देखन लागा * अचरज-ते, मैं, भरा-विरागा ॥
गिरि - सुमेरु के गंगा - ओरी * नील - सैल, सुन्दर, कछु-दूरी ।
सोने - से, तेहि सिखिरि सुहाये * सुन्दर, चारि, मोर मन भाये ॥
बड़े पेंड, तहँ, सब चोटिन पर * बरगद,आम,औ, पाकर, पीपर ।
ऊपर, एक तलाउ, सुहावा * मनि-सीढी, देखे, मन, भावा ॥

दोहाः—निर्मल, सुन्दर, मीठ जल, कमलहु, अन-अन-भांति ।
५५. भँवर-गूंजि, तहँ, हंसहू, बोलत, अधिक सुहात ॥

तेहि गिरि,बसत,काग,रहा सोई * जेहि कर, कलपन, नास, न होई ।
माया के गुन - दोस अनेका * मोह, काम, अज्ञान, अलेखा ॥
रहे छाय, सारे जग माहीं *तेहि-गिरि-पास,कबहु,नहिं जाहीं।
हरि कहँ,भजत,तहां,जस, कागा * सो,सुनु, उमा!सहित-अनुरागा ॥
पीपर-पाछे, ध्यान, सो, धरई * जाप, जज्ञ, पाकर-तर, करही ।
करे, आम-तर, मानासिक पूजा * इक हरि-भजन,काज नहिं दूजा ॥
बर-तर, हरि की कथा सुनावत * सुनिबे कहँ, पच्छी, तहँ, आवत ।
राम-चरित,वह, विधि-विधान-ते * गावत,प्रेम-और-अधिक-मान-ते॥
सुनत, विमल - बुद्धी - के - हंसा * बसे-ताल, जेहि, कीन्ह प्रसंसा ।
अचरज - भरा, तमासा देखा * मोरे उर, आनन्द बिसेषा ॥

दोहाः —धरे हंस-तन, काल-कछु, तहँ, मैं, कीन्ह निवास ।
५६. आदर-ते, प्रभु-गुन सुने, आयों, फिर, कैलास ॥

उमा ! कहेउ, मैं, सब इतहासा * गा, जेहि समय, काग-के-पासा ।
सुनहु,सो-कारन,गये जो,चलिके * गरुड़, नाक-पत्तिन-के-कुल-के ॥
जुद्ध - खेल, जब, रचा, राम ने * लज्जा आवत, चरित - सामने ।
मेघनाद ते, आपु बँधावा * तब, नारद-मुनि, गरुड़ पठावा ॥

नाग - फांस, तेहि, काटे, बंधन * भा विषाद,अति,गरुड़हु के मन।
अस-प्रभु कर, बंधन मां आना * करत बिचार,गरुड़, अनुमाना ॥
व्यापक वृह्म, सुद्ध, बानीस्वर * माया - मोह - रहित परमेश्वर।
सो अवतार, सुना, जग माहीं * देखा, पर, प्रभाउ, कछु नाहीं ॥

दोहा—भव-बंधन ते, छुटत, नर, जपि, जपि, जेहि कर नाम।
५७. छोट-निसाचर बांधेऊ, नाग-फांस, सोइ राम ॥

नाना भांति, मनहिं, समुझावा * भयो न ज्ञान, हृदय, भ्रम छावा।
दुख-ते-दुखि, तेहि, तर्क बढ़ावा * भयो मोह,जस, तुमहिं सतावा ॥
गा, व्याकुल हुइ, नारद पाहीं * कही,जो संसय, रहि, मन माहीं।
सुनि, नारद कहँ, लागी दाया * कहा,"प्रबल अति;राम की माया"॥
नारदः"चित ज्ञानीहु कर,देत चलाई * मोह बढ़ावत, हठ करि, आई"।
जेहि, बहु बार, नचावा, मोही * गरुड़ ! सोइ, व्यापी है, तोही ॥
महा - मोह, उपजा, उर - तोरे * गरुड़ ! मिटइ नहिं,कहे-ते-मोरे।
अब, तुम जावहु, वृह्मा - तीरा * कहइ,सो करउ,होइ मति धीरा॥

कविः—दोहाः—कहि अस, नारद चलि दिये, करत - राम - गुन - गान।
५८. हरि-माया-बल-कहत-भे, फिर फिर, परम, सुजान ॥

फेरि, गरुड, वृह्मा पहँ, गयेऊ * निज - संदेह, सुनावत - भयेऊ।
सुनि, वृह्मा, रामहिं, सिर नावा * समुझि प्रताप, प्रेम, उर छावा ॥
वृह्मा, मन महँ, तब, अस जानी * "माया-बस,पंडित,कवि,ज्ञानी"।
वृह्माः-हरि-माया कर, बहुत प्रभावा * कई बार, सो, महूँ, नचावा ॥
मैं तौ, चर और अचर बनावा * कह अचरज,गरुड़हिं,भ्रम आवा।
वृह्मा बोले बचन, सुहाई * शिव जानत, रघुबर-प्रभुताई ॥
उठउ, गरुड़ ! संकर पहँ, जाहू * तात, अन्त, पूँछहु ना, काहू।
तहँ, संसय सब, जाइ सिरानी * चले गरुड़, सुनि वृह्मा-बानी ॥

शिवः—दोहाः—अति व्याकुल हुइ, गरुड़, तब, आवा, मोरे पास।
५९. मैं, कुबेर-घर, जात रहेउँ, तुम बैठी कैलास ॥

सादर, आइ, मोर - पद, नावा * फिर, आपन - संदेह सुनावा ।
विनय-भरी, सुनि, मीठी-बानी * प्रेम-सहित, मैं, कहा, बखानी ॥
"मिला, गरुड़ ! मारग मां, मोही * कौन भांति, समुझावहुँ तोही ।
"संसय जाय, ज्ञान हो चंगा * करउ, काल-बहुतक, सतसंगा ॥
"सुनहु, तहाँ, हरि-कथा-सुहाई * नाना-भाँति, मुनिन - जो-गाई ।
"जेहि के आदि,बीच, और अंता * जहँ जहँ सुनहु, तहाँ, भगवंता ॥
"नित, हरि-कथा, होत जहँ,भाई * पठवउँ, तहाँ, सुनहु तुम, जाई ।
"संसय, मिटइ, सकल, संदेहा * हुइहै, राम-चरन, अति नेहा ॥

दोहाः—बिनु सतसंग, न हरि-कथा, तेहि - बिनु, मोह न भागि ।
६०. मोह-गये बिनु, राम - पद, पोढ़, न हो अनुराग ॥

मिलहिं न,रघुपति,बिनु अनुरागा * किये जोग, जप, ज्ञान, विरागा ।
उत्तर-दिस, सुन्दर गिरि, नीला * तहँ, रह काग-भुसुंडि, सुसीला ॥
राम - भक्ति महँ, चातुर होई * ज्ञानी, गुनी, पुरनिया, सोई ।
कथा, राम की, कहत निरंतर * सुनत, आइ, आ, पक्षी सुंदर ॥
जाइ, कथा, सुनु, हरि की, पूरी * मोह - भये-दुख, करि है दूरी ।
ज्यों ही कहा, मैं, सब समुझाई * चलेउ हर्षि, मम-पद, सिर नाई ॥
ता ते, उमा ! न, मैं, समुझावा * राम - दया सब भेद जनावा ।
कीन्ह रहा, कबहूँ, अभिमाना * सो, खोवा चाहा भगवाना ॥
कछु, या हू ते, मैं, नहिं राखा * समुझत पक्षीहि, पक्षी-भाखा ।
प्रभु - माया बलवंत, भवानी ! * मोहा नहिं,अस,को,जग, ज्ञानी ॥

दोहाः—बड़ा - भगत, ज्ञानी, गरुड़, असवारी - भगवान ।
माया, मोहा तेहु, नर, नीचहु, करहिं गुमान ॥

दोहाः—शिव, ब्रह्मा लगि, मोहिगे, कहा बिचारे और ! ।
६१. भजत, मुनी, माया-पती, भगवानहिं, करि गौर ॥

गयो गरुड़, जहँ बसत भुसुंडी * बुद्धि पैन, और भक्ति अखंडी ।
देखि पहार, खुसी, मन, भयेऊ * माया, मोह, सोच, सब, गयेऊ ॥

ताल नहाय, कीन्ह जलपाना * बट तर गयो, हृदय - हर्षाना ।
बूढ़ बूढ़ पच्छी, तहँ, आये * सुनत, राम के चरित, सुहाये ॥
कागा, कथा, कहन जब, चाही * पहुँचे गरुड़, निकट, झट, जाई ।
काग, गरुड़ - आवत, जब देखा * भा, समाज-सँग, हर्ष, विसेषा ॥
गरुड़ केर, अति आदर कीन्हा * पूँछि कुसल, सुभ आसन, दीन्हा ।
करि पूजा, समेत - अनुरागा * मधुर-बचन, तब, बोला, कागा ॥

दोहाः—नाथ ! कृतारथ, मैं भयों, तुम्हरे - दरसन, आज ! ।
आज्ञा हो, सो, करउँ मैं, आये प्रभु, केहि काज ?? ॥

गरुड़ः—दोहाः—सदा, कृतारथ-रूप, तुम, कहा गरुड़, बलिहार ! ।
६२. आप - बड़ाई, सादरहि, निज मुख, कीन्ह, पुरार !! ॥

सुनहु, नाथ ! जेहि कारन, आयों * तुम्ह-दरसन-से, सो, मैं पायों ।
देखि पवित्र, आपकर आस्रम * गयो मोह, संसय, सब ही भ्रम ॥
अब, श्री-राम-कथा, अति पावन * सुख-कारी, सब दुःख-नसावन ।
सादर, तात ! सुनावहु, मोही * बार, बार, बिनवहुँ, प्रभु, तोही ॥
कविः—विनय-भरी, सुनि, गरुड़कीबानी * सीधी, सुद्ध, औ सुख-की-सानी ।
अति उत्साह, काग-मन, जागा * कथा-राम-गुन, भाखन लागा ॥
भाखी, पहिले, काग, प्रेम-करि * राम - चरित - कर-मानसरोवर ।
फिर, नारद का, मोह, अपारा * फेरि, कहा रावन - अवतारा ॥
प्रभु-अवतार कहा, फिरि, गाई * बाल-चरित, फिर, कह, मन लाई ।

दोहाः—बाल-चरित कहा, बहुत बिधि, मन महँ, परम उछाह ।
६३. आवनि विस्वामित्र की, श्री - रघुवीर - विवाह ॥

राम-तिलक की कथा, सुनाई * दसरथ - बचन, राज-रस-ढाई ।
पुर-वासिन्ह कर, विरह-विषादा * कहा राम - लछिमन-संवादा ॥
गवन- बनहिं, केवट - अनुरागा * गंगा- उतरि, निवास-प्रयागा ।
बालमीकि - प्रभु-मिलन बखाना * चित्र-कूट, जस, रहे, भगवाना ॥

फिरनि-सुमंत्र, भूप - कर-मरना * आवनि-भरत, प्रेम,सब बरना ।
भूप-क्रिया करि, सँग - पुरबासी * गये भरत,जहँ,प्रभु-सुख-रासी ॥
फिर,रघुपति,बहु-विधि, समुझाये * लिये खड़ाऊँ, अवधहिं, आये ।
भरत-रहनि, जयंत की करनी * भेंट अत्रि-और-प्रभु की,बरनी ॥

दोहा:—कहि बिराध-बध,जेहि विधि, देह तजी "सरभंग" ।
६४. कही 'सुतीछन'-प्रीति, फिर, प्रभु - 'अगस्त्य'-सतसंग ॥

दंडक - वन - पवित्रता गाई * प्रीति 'जटायू' की, हरषाई ।
फिर, प्रभु, पंच-वटी कर, बासा * जेहि विधि,मुनिन केर डरनासा ॥
फिर लछिमन - उपदेस, अनूपा * 'सूपनखा', जस, भई कुरूपा ।
'खर', 'दूषन' कर मरन, बखाना * जस सब भेद, दसानन जाना ॥
'दस - कंधर'-'मारीच'-बतकही * जेहिविधि,भई,सोसब,तेहि,कही ।
माया - रूपी - सीता - हरना * श्रीरघुवीर-विरह, कछु, बरना ॥
गीध-क्रिया,जेहिविधि,प्रभु,कीन्ही * बधि'कवंध', 'सवरी'गतिदीन्ही ।
फेरि, विरह, बरना, रघुवीरा * जेहि बिधि, गे,'पंपा-सर'तीरा ॥

दोहा:—प्रभु - नारद - संबाद कहि, हनूमान - कर - संग ।
फिर, मिताइ - सुग्रीव-की, 'बालि'-प्रान कर भंग ॥
कीन्ह तिलक सुग्रीव कहँ, सैल - प्रबरषन' - वास ।
६५. बरनत वर्षा, सरद कर, राम-क्रोध, 'कपि'-त्रास ॥

जेहि विधि,कपि-पति, कपी पठाये * सीता-खोजन, सबहि सिधाये ।
घुसे गुफा महँ, कपि, जेहिभाँती * मिला,कपिनकहँ,जस"संपाती" ॥
सुने-हाल - सब, पवन - कुमारा * लांघि गयो, जस, सिंधु-अपारा ।
लंका, कपि, प्रबेस, जस कीन्हा * फिर,सीतहिं,धीरज,जस,दीन्हा॥
बाग उजारि, रावनहिं-सिखावा * जारि-नगर,सागर लंघि, आवा ।
जस, आये कपि, जहँ रघुराई * जस सीता की, कुसल सुनाई ॥
लिये सैन, जैसे, रघुवीरा * उतरे जाय, सिंधु के तीरा ।
मिला 'विभीषन' जेहि विधि आई* बस-कीन्हा, सागर, रघुराई ॥

दोहा:—बांधि सेतु, कपि-सैन, जस, उतरी सागर पार ।
दूत, बीर, जेहि विधि, गयो, 'अंगद', बालि-कुमार ॥
कपि-राक्षस कर जुद्ध, फिर, बरना, बहुत प्रकार ।
६६. 'कुंभ-करन', 'घन-नाद' कर, बल, पौरुष, सँहार ॥

निसिचर,झुंड-मरन, विधि नाना * रघुपति - रावन - जुद्ध बखाना ।
रावन - मरन, मँदोदरि - सोका * राज, विभीषन -देन, असोका ॥
सीता -रघुपति- मिलनि, बहोरी * करन-सुरन-अस्तुति, कर-जोरी ।
लंका ते, चढ़ि पुष्प - विमाना * अवध-पुरी, रघुवर कर आना ॥
जेहि विधि,राम,अवध महँ आये * काग, चरित-पवित्र, सब, गाये ।
राम-तिलक-कर - सुःख - अनेका * पुर-बरननि, नृप-नीति,अलेखा ॥
शिवःपूरी कथा, भुसुंडि बखानी * जो,मैं, तुम सन, कही, भवानी!॥
गरुड़, कथा रघुवर की, सुनि-कर * बोला,मन,अति प्रेम उमड़ि कर।

गरुड़:सो०: —गयो, मोर - संदेह, सुने - सबहि - रघुपति - चरित ।
भयो, राम-पद, नेह, काग - सिरोमनि ! दया ते ॥
मोहिं, भयो, अति - मोह, राम - बँधे - रन - महँ - लखत ।
६७. चेतन, आनँद - कोह, राम, विकल, कारन कहा !! ॥

देखि चरित, अति - नर-की-नाईं * संसय, उर महँ, भई, गोसाईं ।
सोइ भ्रम, हितकारी, मैं, जाना * कीन्ह कृपा,मो पर, भगवाना ॥
कड़ी - धूप, जो, ब्याकुल होई * पेड़ - तरे - सुख, जानइ, सोई ।
जो, न होत, अति - मोहा, मोही * मिलितेउँ,तात,कवन विधि,तोही॥
कस सुनतेउं, हरि-कथा, सुहाई * अति विचित्र,बहुविधि,तुम,गाई।
मत यहि, वेद, पुरानन, सब का * कहत सिद्ध,मुनि,नहिंकछु संका॥
संत, शुद्ध-अति, मिलहइं, तेही * चितवइं राम, कृपा करि, जेही ।
राम-कृपा, तुम्ह-दरसन, भयेऊ * मिला प्रसाद,कि संसय गयेऊ ॥

कवि:—दोहा:—सुने गरुड़ के वचन अस, भरे - विनय - अनुराग ।
फूला तन, आंसू बहे, अति, मन, हर्षा काग ॥

शिवः–दोहाः—(सीध,सुद्ध, ज्ञानी, रसिक)-भगत, सुनइ, चित लाइ ।
६८. उमा ! छिपावन - जागहू, सज्जन, देहिं बताइ ॥
कविः – बोला, कागभुसुंडि, बहोरी * रही गरुड़ पर, प्रीति-न - थोरी ।
कागः–सब बिधि,नाथ,पूज्य,तुम,मेरे * तुम पर, रघुवर - कृपा घनेरे ॥
तुमहिं, न संसय, मोह, न माया * मो पर नाथ, कीन्ह तुम, दाया ।
मोह - बहानें, भेजा, तोही * रघुपति दीन्ह बड़ाई, मोही ॥
तुम, जो मोह, कहा है, साँई *तेहिं मां,सुनु,कछु अचरजि नाहीं।।
नारद, शिव, बृह्मा, सनकादिक * आतम-ज्ञानी, जे मुनि - नायक ॥
'मोह', न अंधरोया,केहि,केही ! * को,जग,'काम' नचाव न,जेही ! ।
'तृष्णा',केहि कहँ,नहिं बौरायो ! * 'क्रोध';हृदय-केहि,नहीं जरायो! ॥
दोहाः—ज्ञानी, तपसी, सूर, कवि, पंडित, गुन - भंडार ।
काहि न फांसा, 'लोभ' मां आये, यह संसार ॥
'लछिमी', टेढ़ न कीन्ह,केहिं;बहिर न कीन्ह,'अधिकार'! ।
६९. नयन - बान - मृगलोचनी, कौन हृदय, नहिं पार ॥
'गुन-कर-सन्यपात,नहिं केहि का *नहिंकोउ,'मान',औ'मद'नहिंजेहिका
'ज्वानी'-ज्वर, केहि, नहिं बरांवा * 'ममता';केहि कर जस,न नसावा॥
'डाह', न केहि का,दोस लगावा * 'सोच'-पवन,केहि, नहीं हिलावा ।
'चिंता'-सांपिन, को, नहिं खाया * को,जग,जाहि न ब्यापी 'माया' ॥
को अस धीरा, काठ - सरीरा * लगा 'मनोरथ'-घुन, नहिं,कीरा ।
जग मां 'इच्छा' सुत-धन-नारी * कौन-बुद्धि,नहिं, तीन, बिगारी ॥
ये सब, माया - केर - कुटुंमी ! * प्रबल,अपार, कि मारइ दम, भी! ।
जेहि ते, शिव, बृह्माहु, डराहीं * और जीव, केहि लेखे, माहीं ! ॥
दोहाः—रहा घूमि, माया - कटक, जग महँ, अति प्रचंड ।
'काम' आदि, सैनापती, जोधा, कपट - पखंड ॥
दोहाः – 'माया'; दासी राम की, समुझें, लागत झूँठ ।
७. रोपि-पांउं,कहुं, नाथ ! नहिं, राम - कृपा - बिनु छूटि ॥

जो माया, सब जगहिं, नचावा * जासु चरित,लखि,काहु न पावा ।
सोइ, राम की भ्रकुटी चालत * लइ-समाज, नटनी-सम,नाचत ॥
राम.'सदा', 'चैतन्य', सुख-वारे' * 'जन्म-न','ज्ञान रूप','बल-धारे' ।
'रमे', 'रमावत'; 'जेहि-मां-रमे' * 'पूरं','न-छोर-खंड', 'बल-घने' ॥
'गुन-नहिं','पूरन','इन्द्रिन-ऊपर*'अजय','दोस-विनु ,द्रष्टि-सबहिं-पर।
'मोह-न-मल','अकार,ना'-रघुवर*'सुख-दाता', 'नित्य', और—घर'॥
'कुदरत पार','स्वामि','उर-वासी'*'ब्रह्म''इच्छा-विनु' सुद्ध'अबिनासी
यहां ते, 'मोह', उठावत डेरा * सूर्य-आगु, कहुँ, रहत अँधेरा ॥

दोहा: – भक्त-हेत, भगवान, प्रभु, धारेउ भूप - सरीर ।
अति पावन, कीन्हे चरित, जग, नर - सम, रघुबीर ॥
धरि धरि रूप अनेक जस, नाचत नर - वट - कोइ ।
७१. भाव दिखावत, रूप-सम, आपु, सो - रूप, न होइ ॥

गरुड़ ! राम की लीला प्यारी * मोहत असुर, भक्त-सुखकारी ।
बुद्धी-नष्ट, विषय - बस्स, कामी * देत दोस, मोहित-भये, स्वामी ॥
'कमल-रोग', जाहि नयन सतावइ * सो, चंदरमा, पिअर बतावइ ।
दिसा-ज्ञान,जेहि कर, जब बिगरा*पच्छिम,कहत सो,सूरज निकरा ॥
चढ़ - नाव, जग डोलत हालत * "मैं,ठौरहिं" अस,मोह ते लागत ।
घूमत बालक, घर, नहिं घूमत * "घर-घूमत"झूठहि, बतियावत ॥
ऐसेहि, हरि कहँ,होत मोह, कहिं * छुइ, अज्ञान,सकत,सपनेहु,नहिं ।
माया - बस, मति-हरि गई मारी * हृदय-सनमुख - परदा - डारी ॥
सोइ दुष्ट, हठि, संसय करहीं * निज-अज्ञान, राम पर, धरहीं ।

दोहा: — काम-क्रोध - मद - लोभ-फँसि, परि दुख - घर, मजबूर ।
अंध - कुआं, रहि, केहि तरह, लखइं राम, भरिपूर ॥
दोहा:—'निर्गुन'-रूप, तौ, सहल है, 'सगुन', न समुझत, कोइ ।
७२. चरित, सीध-और - अगमहू, मुनि - मनहू, भ्रम होइ ॥

सुनहु, 'गरुड़'! रघुबर - प्रभुताई * कहउं, जैस मति, कथा सुहाई ॥

जेहि विधि, मोह, भयो, भ्रम, मोही ! * सो, सब कथा, सुनावहुं, तोही ।
राम-कृपा-वासन, तुम, ताता * तुमहिं, प्रीति हरि, मोहिं-सुखदाता।
ता ते, तुम ते, नहीं छिपाऊँ * रहस्य मनोहर, तुमहिं, सुनाऊँ ॥
सुनहु, राम-कर जन्म-स्वभाऊ * भक्त-अभिमान, न राखत, काऊ ।
आवागवन, दुःख हू नाना * देत सोक, नर कहँ, 'अभिमाना' ॥
ता ते करत, कृपा-निधि, दूरी * रामहिं, ममता, दास पै, पूरी ।
ज्यों, बालक-तन, फोरा निकसे * मात, चिरावत, करें-मन-से ॥

दोहाः—होत पीर, चीरत समय, रोवत बालक धाइ ।
जात रोग, माता समुझि, पीर, हृदय, नहिं लाइ ॥

दोहाः – तस, रघुपति, निज-दास-कर, देत चीरि अभिमान ।
७१. भजइ न क्यों ! ऐसे हितू ! तुलसी ! ताजि अज्ञान !! ॥

राम-कृपा, अपनी-नादानी * कहउं, गरुड़! सुनु, मन दे, ज्ञानी ।
जब, जब, राम, मनुज-तन धरहीं * भक्त-हेतु, लीला, बहु, करहीं ॥
तब, तब, अवध-पुरी, मैं, जाऊँ * बालक-चरित, देखि, हरषाऊँ ।
जन्म-उत्सव, मैं, देखत, जाई * बरस पांच, तहँ, रहे, लोभाई ॥
इष्ट-देव-सम, बालक-रामा * तन, सोभा-सौ-कोटिन-'कामा' ।
श्री-मुख, स्वामी-केर, निहारी * लोचन, सुफल करउँ, बलिहारी !॥
बनि, छोटा कौआ, हरि-संगा * देखउँ, बाल-चरित, बहु-रंगा ।

दोहाः—छोट-राम, जहँ-जहँ, फिरहिं, तहँ-तहँ, संग, उड़ाउँ ।
जूठनि, जो, आंगन-गिरइ, झपटि, उठा, सोइ, खाउँ ॥

दोहाः—एक वार, बहुतक चरित, बाल-से, किये रघुवीर ।
७२. करे-याद, लीला-सोई, पुलकित, मोर-सरीर ॥

कह भुसुंडि, सुनु, 'पत्नी-नायक'! * राम-चरित, सेवक-सुख-दायक ।
राज-महल, सुन्दर, सब भांती * सोने जड़ीं मनी, बहु-जाती ॥
कहउँ-कैस, सुन्दर अँगनाई * जहँ, खेलत, नित, चारहु भाई ।
करत बाल-लीला, रघुराई * आंगन, फिरत, मात-सुख-दाई ॥

तन 'नीलम'-सम, सुन्दर, स्यामा * अँग,अँग,राजत,छवि-बहु-'कामा'।
लाल, नये - कमलन - से, चरना * अँगुरिन-नख, निंदत चंद्रमा ॥
वज्र - आदि - रेखा, पद, चारी * घुंघुरू, झांझ केर, धुनि प्यारी।
सोने, मनि-जड़ि, कमर, करधनी * धुनि सुहावनी, बजत झुन-झुनी ॥
दोहाः—तीन रेख, पेटहिं, सुघर, नाभी, नीक - गँभीर।
७५. छाती चौड़ी, बहुत से, गहने, वस्त्र, सरीर ॥
लाल हाथ, नख, अँगुरी, सुन्दर * बड़ी भुजा, भूषनहु मनोहर।
कंठ - संख, केहर - सम कांधे * सुभ ठोढ़ी,मुख,जनु-छवि-बांधे ॥
ओंठ - गुलाब, बोल तुतरावत * दुइ, दुइ, नये, दांत चमकावत।
नाक नीक, गालहु, मन - भावत * चन्द्र-किरिनि-सम हँसत,हँसावत॥
नील-कमल-नयना, भव-मोचन * सोहत भाल-तिलक, गोरोचन।
टेढ़ी भौं, दोउ कान, एक - से * कारे, घूंघर, बार, सेष - से ॥
पियर, महीन, झंगुलिया सोहत * किलकत,चितवत,हा! कस! मोहत।
रूप-खानि, दसरथ - के - आंगन * छाया, अपन देखि, लगे नाचन ॥
करत खेल, मो संग, रघुनाथा * लज्जा आवत, बरनत, भ्राता!।
किलकि,मोंहि,जब,पकरानि,आवहिं*भाजउं मैं,मोंहि,पुआ दिखावहिं ॥
दोहाः—पास-गये, लागहिं हँसनि, भागत, रोवहिं, धान।
बढ़उं, पाउं - पकरनि, भजइं, चितइ चितइ, भगवान ॥
दोहाः – लीला, जग - के बालकन - सी, देखे, भा मोह।
७६. कैस चरित यह करि रहे! सत्, चित्, आनँद-कोह ॥
इतना संसय, जब, मन आया * व्यापी, रघुबर - केरी - माया।
भई न माया, पर, दुख - कारी * परा न भोगन, दुख - संसारी ॥
यह कर, रहा, सो, कारन, औरी * सावधान, सुनु, कथा सो,मोरी।
ज्ञान-अखंड, एक, सीता - बर * माया-के-बस, जीव - चराचर ॥
औरन-ज्ञान, रहत नहिं, इक-रस * ईश्वर,जीवहिं, भेद, यही, बस!।
माया-बस है, जीव - अभिमानी * ईश्वर-बस, माया-(गुन-खानी) ॥

जीव अनेक,और,सब पराए-बस * ईश्वर, 'एक', न-केहु-आये-बस ।
मिथ्या ! भेद ! भयो - माया - ते * छुटइ न सो, बिनु-राम-कृपा-के ॥

दोहाः—राम-चंद्र के भजन बिनु, चहइ मोक्ष, जो नर ।
ज्ञानी - भयेहु, जनु, पसू, पूंछ - न, सींग - न, सिर ॥

दोहाः—चंदा, सोरहु कला ते, निकसइ, तारन लइ ।
७७. जाइ, रात, नहिं, सूर्य बिनु, गिरिन मां आगी दइ ॥

ऐसेहि,बिनु-हरि-भजन, खगेसा ! * जीव केर, नहिं, मिटइ, कलेसा ।
हरि-सेवकन्ह, न ब्याप 'अविद्या * ब्यापत, पर, 'माया-जो-विद्या' ॥
भगत-तास नहिं,भेद, अस-जानी * "जीव-दास,और ईश्वर-स्वामी",
भयो अचँभा, भ्रम - ते, देखा * हँसे प्रभु, मोहिं देखि, बिसेषा ॥
भेद - हँसी - कर, जानि न काहू * जाना, अनुज, न, मात, पिताहू ।
हाथन - घुटनन, पकरनि, धाये * लाल चरन,कर,स्याम, सुहाये ॥
गरुड़!सोइ, मैं, भागा, चलि कर * पकरनि, भुजा, पसारी रघुवर ।
ज्यों, ज्यों, दौरि, उड़ा, आकासा * राम - भुजा, देखी, मैं, पासा ॥

दोहाः—ब्रह्म-लोक लगि, गयों, मैं, उड़ाति, औ, चितवति, जात ।
दुइ अंगुल कां बीच रह, मो मां, भुज-मां, तात !! ॥

दोहाः—सातहु परदा, छेदि कर, जहँ-लागि, जीव-की-गति ।
७८. गयों, तहूं, प्रभु-भुज, निरखि, ब्याकुल भयों, मैं, अति ॥

भये - विकल, मूँदे नैना, फिर * खोलत, पहुँचा-फिर-कौसलपुर ।
देखत मोहिं, राम मुसुकाहीं * हँसत,गयों,मैं,घुसि,मुख माहीं ॥
पहुँचा, पेट, तहां, मैं देखे * हे!खग-पति ! बृह्मांड, अलेखे ।
अति-विचित्र, तहँ, लोक अनेका * रचना, अधिक, एक-ते-एका ॥
कोटिन बृह्मा, शंभु, निहारे * रवि,ससि,कोटिन, कोटिन तारे ।
लोक-पाल, जम, काल, असंखन * परबत, पृथ्वी, तहां, अलेखन ॥
सागर, बाग, नदी, और, ताला * बहुत प्रकार, सृष्टि - फैलावा ।
सुर,मुनि,सिद्ध, नाग, नर, किन्नर * चार-प्रकार-जीव, सब-जग-कर ॥

दोहाः—जो, नहिं-देखा, नहिं सुना, जो, मनहू, न-समाय।
देखा अदभुत, सोइ, मैं, कहा, कवन विधि, जाय॥
दोहाः—एक-एक-वृह्मांड महँ, रहेउं, बरस, सौ-एक।
७६. यह विधि, वृह्मांडन, फिरेउं, देखत-भये-अनेक॥
विधि-हरि-हर, और मुनि, दिगपाला * लोक-लोक, मैं, दीखि, निराला।
नर, गंधर्व, भूत, बेताला * किन्नर, निसिचर, पसु, खग, ब्याला॥
देव, दैत्य, सब, नाना-जाती * जीव, तहां, सब, औरहि-भांती।
नदी, समुद्र, ताल, और परबत * सब संसार, तहां-कर, अदभुत!॥
दीखि, वृह्मांडन, अपने-रूपा * देखीं वस्तु, अनेक, अनूपा।
अवध-पुरी, सब-भुवन निहारी * 'सरजूहु', नर-नारी-न्यारी॥
दसरथ, कौसल्या, सब-माता * विविधि-रूप के, भरत, औ, भ्राता।
सब वृह्मांडन, राम-अवतारा * बालक-लीला दीखि, अपारा॥
दोहाः—अलग, अलग, मैं, दीखि सब, अति विचित्र, हैरान!।
गरुड़! न दूसर, दीखि मैं, कहूं, रूप-भगवान!!॥
दोहाः—सोइ सोभा, लरिकाइपन, सोइ कृपालु, रघुबीर।
८०. लोक-लोक, देखत, फिरा, मोरा-मोह-सरीर॥
भटकत, मोहिं, वृह्मांड अनेका * बीते, जनु, कलपहु, सौ-एका।
फिरत, फिरत, निज-आश्रम, आयों * तहँ, रहि, फिर, कछु काल, गंवायों॥
निज-प्रभु-जन्म, अवध, सुधि पायों * भरे-प्रेम, हर्षित, उठि, धायों।
देखा जन्म-उत्सव, मैं, जाई * जेहि विधि, पहिले, तुमहिं सुनाई॥
राम-के-पेट, दीखि, जग-नाना * देखत-बनइ, न जात बखाना।
तहं, फिर, देखेउं, राम, सुजाना * माया-पति, कृपालु, भगवाना॥
करत विचार, बहोरि-बहोरी * मोह-मैल, भरिगा, मति-मोरी।
दुइ ही घरी महँ, मैं, सब देखा * थका, भयों, मत, मोह विसेषा॥
दोहाः—देखि कृपालू, विकल, मोहिं, हँसि-दीन्हे रघुबीर।
बाहिर आयों, हँसत ही, मुख ते, हे! मति-धीर!॥

दोहा—बाल-खेल, सोइ, फिर, लगे, करन, दास सन, राम।
८१. कोटि भांति, समुझायों, मैं, आवा नहिं विस्राम॥

देखि चरित-यह, अस-प्रभुताई * मैं,तन की, सब दसा, भुलाई।
धरती गिरि,मुख, आइ न बाता * कहा,"करहु रच्छा ! रघुनाथा"!॥
प्रेम-विकल,प्रभु, मोहिं, बिलोकी * माया कों प्रभुता, प्रभु रोकी।
कमल-से - कर, मोरे सिर, फेर * दीन - दयालु, हरे, दुख मेरे॥
कीन्ह, राम, मोहिं,मोह-ते-न्यारा * सुख-और-दया-के-जो - भंडारा।
(पहिली-प्रभुता)-नाथ, विचारी * भयो हर्ष, मन-महँ,मोहिं,भारी॥
'भगतन - रच्छहिं', देखी रीती * उपजी, मोरे-मन, अति प्रीती।
भरे-नयन, पुलकित, कर जोरी * विनती कीन्ही, बहुत, बहोरी॥

दोहाः—प्रेम - सनी, बानी, सुने, पहिचाने - निजदास।
कोमल. और गंभीर, अस, बोले 'रमा - निवास'॥

रामः—दोहाः—काग - भुसुंडी ! मांगु बर, अति प्रसन्न, मोहिं, जानि।
८२. सिद्धी आठहु, रिद्धि नौ, मोक्ष-(सकल-सुख-खानि)॥

चहौ, विचार, विराग, कि ज्ञाना * जो, जग, देवन्ह, दुर्लभ जाना।
देहुं, तोहि, अब, संसय नाहीं * मांगु,जो,तोहि, भाय,मन माहीं॥
कागः-सुनिप्रभु-बचन,अधिकअनुरागेउं* मन,अस तर्क.करन, मैं,लागेउं।
सकल सुःख, प्रभु, देन कहे, तौ * कही देनि, नहिं भगती,मों कौ॥
भगति न होइ, तौ,गुन,सुख ऐसे * बिना - नोन - के, भोजन, जैसे।
भजन बिना, सुख कौन-काम-कर * अस विचारि, मैं,बोला,रघुबर !॥
जो, प्रभु, हुइ प्रसन्न, बर देहू * करत कृपा, मो पर, और, नेहू।
मन-भावत-बर, मांगत, स्वामी ! * सब-कुछ-देत, औ, अंतरजामी॥

दोहाः—भक्ति, अखंड, औ सुख-भरी, गाईं - वेद - पुरान।
खोजत जोगी, मुनि, मिलत, जाहि, देत भगवान॥

दोहाः—कल्प - वृक्ष, हितकारिहू, कृपा - सिंधु. भगवान।
८३. मो का, अपनी भक्ति, सो, देहु, दया - करि, राम॥

"ऐसा ही हो", कह रघुनायक * बोले बचन, परम सुख-दायक ॥
रामः—कह प्रभु, कागा ! जन्म-सयाना * काहे न मँगतेउ, अस बरदाना ॥
जहि-सुख-खानि, भक्ति, तू माँगी * नहिं, कोउ, जग, तो सम, बड़-भागी।
जेहि, मुनि, कोटि जतन, नहिं पावहिं * जे, जप-योग-अग्नि, तन, जारहिं ॥
रीझेउँ, देखि, तोर चतुराई * माँगी भक्ति, मोहिं-अति-भाई ।
सुनु, कागा ! अब, कृपा ते, मोरे * सब सुभ-गुन, बसिहइं, उर तोरे॥
भक्ति, ज्ञान, विज्ञान, विरागा * जोग, औ, गुप्त-चरित-कर-भागा ।
सब कर भेद, बसहि, मन, सुख से * कृपा ते, बिनु साधन-के-दुख-के ॥

दोहा:—माया - उपजा, कोउ भ्रम, अब, न सतावहि तोहि ।
जानेउ ब्रह्म, न-आदि-गुन, जन्म-न, गुन-घर, मोहि ॥

दोहा:—सदा, भगत हैं, मोहिं-प्रिय, अस विचारि, सुनु, काग !।
८४. मन, तन, बचन ते मोर पद, करेउ, अचल अनुराग ॥

अब, सुनु, अति-पवित्र, मम-बानी * सत्य, सहज, जो सास्त्र बखानी ।
सब सिद्धांत, बनावहुं, तोहीं * सुनि, मन धरु, 'तजि-सब भजु मोहीं'॥
सब, माया - उपजा - परिवारा * जीव जगत के, सबहिं प्रकारा ।
सब प्यारे, मोहिं, मैं ही बनाये * प्यारे-अधिक, मनुष्य, सुहाये ॥
फिर ब्रह्मन, फिर 'वेद-जो-जानत' * फिर, 'पद-वेद-मार्ग-जो-धारत' ।
वैरागी, फिर, 'उन-महँ-ज्ञानी' * ज्ञानिन महँ, 'जे-ब्रह्म-के-ज्ञानी ॥
सब ते प्रिय, मोहिं, 'आपन-दासा' * छाँड़ि मोहिं 'नहिं-दूसर-आसा' ।
फिर फिर, सत्य कहउँ, तोहि पाहीं * सेवक-मम, मोहिं, प्रिय, का उनाहीं॥
बिना-भक्ति, ब्रह्मा, कि न होई * और जीव जस, तस प्रिय, मोही ।
होइ भक्त, चहुँ, नीचहु प्रानी * प्रान-प्रिय, मोरा, सो, जानी ॥

दोहा:—सुद्ध-सीध-और-नीक-मति, सेवक, काहि न, प्यार !।
८५. काग ! नीति, ऐसी कही, वेद, पुरान विचारि ॥

एक पिता के, सुत बहुतेरे * गुन, और सील, अलग, सब केरे ।
कोउ पंडित, तपसी, कोउ ज्ञानी * धनी, सूर, दाता, कोउ आनी ॥

कोउ'सब-जानत','धरम-धरे-सिर'* एक-सी प्रीति,पिता की,सब पर।
मन-क्रम-बचन,पिता-भगती जेहि * दूसर-धरम, न,सपने, चह तेहि॥
सो सुत, प्रान-सा, पितु-का-प्यारा * होइ मूर्ख, चहुँ, सबहिं-प्रकारा।
यह विधि, जीव, चराचर, जेते * नर,सुर,असुर, लोक तिहुँ, तेते॥
समपूरन जग, मोर - बनाया * सब पर, मोहिं, बराबर-दाया।
तिन्ह महँ; अलग-भये-माया-से * मोहिं मन-बचन भजइ,काया से॥

दोहाः—पुरुष, निपुंसक, नारि, नर, जग-जविहिं, हो कोइ।
भजइ, भक्ति - ते, छल-तजे, मोहिं, प्रम-प्रिय, सोइ॥

सो०ः—सत्य कहउं; मैं, तोहि, सुभ-सेवक, मोंहिं, प्रान-प्रिय।
८६. अस विचारि, भजु मोंहिं, आस - भरोसा - सब-तजे॥

कबहुं; काल; न व्यापइ, तोहीं * ध्यान,स्वरूप, सदा, रखि, मोहीं।
काग-अमरित-बानी,सुनि,न अघायों* तन पुलकित,मन,अति हर्षायों॥
सो सुख, जानत मन और काना * सकइ,जीभ,नाहिं,ताहि, बखाना।
प्रभु-सोभा - सुख, जानत नयना * नयनन,जीभ न,कहत बनइ ना॥
मोंहिं सिखाइ,सुखन ते,भरि कर * बालक-लीला,लागि करन, फिर।
भरि जल, नयना,करि मुख रूखा * देखा, मातहिं, जनु, लागि भूखा॥
देखि, मातु, व्याकुल, उठि धाई * पुछकारा ! लिय, हृदय, लगाई।
दूध पिआवत, गोदी - डारे * गावत जात, लाल-गुन, प्यारे॥

सो०ः—जेहि सुख कहँ, बलिहार ! शिव, कुबेष-ताजि, रूप धरि।
अवध - पुरी - नर - नारि, रहत, सदा, तेहि-सुख-मगन॥
बाल - चरित, इक-बूँद, पावा, सपनेहु, सुःख, जेहि।
८७. चातुर, आँखी मूंदि, ब्रह्महु - सुख, नहिं कछु, गिना॥

कछुक, काल, मैं, अवधहि, रहेउं * चरित रमीले, देखत भयेउं।
राम - कृपा, भगती - बर पायों * प्रभु-पद बंदि, निजाश्रम,आयों॥
तब ते, मोंहि, न व्यापी माया * जब ते,प्रभु,मोहिं,अपन बनाया।
यह सब, गुप्त चरित,मैं, गावा * हरि-माया, जस मोहिं नचावा॥

मोरे- मन कर, सुनहु, खुलासा ❋'बिनु हरि-भजन,न जाइ कलेसा'।
राम - कृपा बिनु, सुनु, हे ! भाई ❋ जानि न जाइ, राम - प्रभुताई ॥
महिमा - जाने - ही, 'प्रतीती' ❋ बिनु-विस्वास,न हो,कहुँ,'प्रीती'।
प्रीति - बिना, नहिं 'भक्ति' पुढ़ाई ❋ उतरावइ, जस,जल, चिकनाई ॥

सो०:—बिन-'गुरु'होत न 'ज्ञान', ज्ञान न होत,'विराग' बिनु।
गावत वेद, पुरान, 'भक्ति बिना', नहिं मिलत सुख ॥
भा, विस्राम, न काउ, बिनु 'संतोष'-स्वभाउ भये।
८८. चलइ न, जल बिनु, नाउ, कोटि जतन, करि करि मरइ ॥

बिनु संतोष न जात 'कामना' ❋ रहे - कामना, दुःख - सामना।
नामत,भजन,कामना,गिनि,गिनि ❋ जामत पेड़, न कहुँ,पृथ्वी-बिन ॥
'एक-से-सब',न,ज्ञान बिनु, लागत ❋ पोल,अकास-बिनु,कोऊ पावत!।
बिनु विस्वास, धरम नहिं होई ❋ बिनुधरती,जस,महकि न कोई ॥
तप के बिना, तेज नहिं, बाढ़त ❋ जल बिनु,जैसे, रस नहिं आवत।
नहीं 'सील', बुधिवान - न-सेवइ ❋ बिना तेज, जस, रूप न होवइ ॥
'मन-सुख'बिना,होतनहिं,मन,थिर❋बिना'बायु',छुइ सकइ,कोउ,फिर?।
बिन बिस्वास, न सिद्धी पावत ❋बिना भजन,भव-भय,नहिं नासत॥

दोहा:—बिन विस्वास के, भक्ति नहिं, जेहि-बिनु, रीझि न,राम।
राम - कृपा बिनु, सपनेहू, जीव, न पा विस्राम ॥
सो०:—अस विचारि, मति-धीर ! तजु कुतर्क, संसय, सबहि।
८६. भजहु राम रघुबीर, सुखदाई, घर - दया - के॥

गरुड़!कहा मैं,अपनि-बुद्धि - भरि ❋ महिमा, आर,प्रताप-श्री-रघुबर।
कही न मैं, कछु, बात, बनाई ❋ सोइ देखी, जो, आगू आई ॥
नाम, रूप, गुन, महिमा - रघुबर ❋ नपत-न, अंत-न,छोर-न,जेहिकर।
मति-अनुसार, मुनी, गुन गावत ❋ वेद, सेष, शिव, पार न पावत ॥
लइ - तुम ते, मच्छर - लागि, भाई ❋ उड़ि,अकास,कोउ पार न पाई।
तस,रघुपति-महिमा मां,घुसि के ❋मिलत थाह नहिं,रहे सब,फँसिके॥

कोटिन-काम-केर-छबि, रघुबर ! ❋ कोटिन-दुर्गा, शत्रु - नास - कर ।
कोटि-इन्द्र-सम,सुख,प्रभुभोगत ❋ कोटि-अकास-मे-,बढ़ि कैफैलत ॥

दोहाः—कोटिन - वायू - ऐस - बल, कोटिन - सूर्य, प्रकास ।
सीतल कोटिन - चंद्र-से, हरत जगत - भव - त्रास ॥
कठिन, काल-सौ कोटि-से जेहि कर, नहिं, कहुं, अंत ।
९०. सही-न-जाइ, सो - कोटि-सम, अग्नी हैं, भगवंत ॥

गहिरे, कोटि - पताल - घोर - से ❋ कोटिन-जमराजा - कठोर - से ।
कोटिन - बढ़ - तीरथ - से - पावन ❋ नाम सकल-जगपाप-नसावन ॥
अचल, हिमाला - से - रघुवीरा ❋ कोटि-सिंधु-से, अति गँभीरा ।
काम - धेनु - सौ - कोटि - समाना ❋ सकल-फलन-दाता, भगवाना ॥
कोटि - सारदा - सम, चतुराई ❋ कोटिन-विधि-सम,जगत-रचाई ।
कोटि - कुबेरन - सम, धनवाना ❋ कोटिन-माया - खेल - अस्थाना ॥
कोटि - शेष-सम, भार उठावत ❋ उपमा, अंत, पार, नहिं पावत ।

छंदः—उपमा, न, बेदहु, शास्त्र, राम-समान, कोऊ, दइ सके ।
जस, सूर्य कहँ, सौ-कोटि जुगनू,लगत छोट-उपमा , कहे ॥
यह भांति,आपन मति के बल भरि,साधु राम, बखानहीं ।
प्रभु,अति दयालू, भाव-चाहन-हार, सुनि, सुख मानहीं ॥

दोहाः—अगम समुद्र, हैं राम-गुन, थाह न पावइ कोइ ।
संतन ते, जस मैं सुना, तुमहिं, सुनावा, सोइ ॥

सो०ः—भाव के बस भगवान, सुख - भंडार, और दया - घर ।
९१. तजि मरुता, अभिमान, सीता - के - रामहिं भजहु ॥

कविः-सुनि,भुसुंडि के बचन,सुहाये ❋ हर्षि गरुड़, फिरि, पंख फुलाये ।
नीर नयन, मन, अति हर्षाना ❋ लावा, उर, प्रताप भगवाना ॥
पाछिल मोह, समुझि, पछिताना ❋ बृह्म,आदि-बिनु, सो, नर जाना ।
फिर,फिर,काग चरन,सिर नावा ❋ जानि राम-सम, प्रेम बढ़ावा ॥
गुरु बिनु, भव-सागर कहँ, कोई ❋ तरइ न, हो, शिव-बृह्महु-सोई ।

गरुड़:- { संसय-सर्प गहेउ मोहिं, ताता * लहर - कुतर्क, चढ़ीं, सब गाता ॥
{ भये, राम, विष - झारन-हारे * तुम महँ-प्रगट, मार - रखवारे ।
कृपा-तोरि, सब मोह नसाना * गुप्त चरित-महिमा. मैं जाना ॥

कवि:—दोहा:—करे बड़ाई, बहुत बिधि, नाइ सीस, कर जोरि ।
बिनय - भरे कोमल बचन, बोला, प्रेम - न - थोर ॥

गरुड़:—दोहा:—अपुनी - नासमुझी, प्रभू, पूँछा चहुं. कछु, तोहि ।
६२. कृपा-सिंधु ! सादर कहऊ, जानि दास - निज, मोहि ॥

सब-की-गति तत्वहु,तुम, जानत * सीधी-चाल, मोह, नहिं ब्यापत ।
ज्ञान, विराग के, तुम, स्थाना * राम - प्रिय - सेवक, भगवाना ॥
कारन कौन, देह, यह, पाई * कहउ, तात ! मो ते, समुझाई ।
'राम-चरित मानस',अस अच्छी * पाई कहां ? कहउ,हे ! पच्छी ! ॥
नाथ!सुना मैं, अस, शिव पाहीं * नास तोर, प्रलय हू, नाहीं ! ।
बचन, शंभु के, झूठे नाहीं * उपजत,यह संसय, मन माहीं ॥
जग,चर अचर, नाग, नर. देवा * करत. काल, सब कर कलेवा ।
बृह्मांडन कहँ, काल नसावत * कालहिं,कोउ,दबाइ नहिं पावत ॥

सो०:—खात, तुमहिं नहिं, काल - अति - कठोर, कारन कौन ।
मो ते, कहउ, कृपालु ! ज्ञान-पभाव, कि, जोग - बल ॥

दोहा:—प्रभु ! आवत ही, आस्रम, गयो, मोह, सब भाग ।
६३. कारन कौन. सो, नाथ, अब, कहउ, भरे - अनुराग ॥

कवि:-गरुड़-वचन,सुनि हर्षा कागा * भरे - प्रेम, अस भाखन लागा ।
काग:-धन्य,गरुड़!यहमति!बलिहारी * पूंछनि तोरि,लगै, मोहिं, प्यारी ॥
अस पूँछनि, सुनि, तुम्हरी, भाई * जनमन की सुधि,मोहि,हुइ आई ।
अपन कथा, सब कहत मैं गाई * सुनहु,तात ! सादर,चित लाई ॥
{ जप, तप, जज्ञ, जोग, ब्रत, दाना * ज्ञान, विराग, और विज्ञाना ।
{ 'प्रेम-राम-चरनन', सब कर फल * बिना प्रेम के, सुख,ना, कुसल ॥
काग के तन, सो, भगती, पाई * ताते प्रिय, यह तन, मोहिं,भाई ।

जेहि ते आपन बंता बनइ * उहि कहँ जग महँ, सबकोउ चहइ॥

सो०:—गरुड़! कही, अस नीति, बेद पुरानन, सज्जनहु।
महा - नीच सन प्रीति, करइ, होइ, जो, परम-हितु॥

सो०:—रेसम, कीड़ा देत, बनत बस्त्र, तब, रेसमी।
९४. प्रान ठौर, रखि लेत, पाले, कीड़ा, छूत, सब॥

जीव केर, यहि गरुड़! परम-हित * मन-क्रम-बचन, नेह-चरनन, नित।
सोइ पवित्र, सोइ नीक, सरीरा * जेहि तन महँ, भजिये रघुबीरा॥
फिरे - राम - से, वृह्मा - देही * कबि, पंडित, कही नीक न, तेही।
जामा राम - भक्ति, उर, अँकुर * यह देही, ता ते, प्रिय, सुन्दर॥
तजउँ न तन, हाथन-रखि-मरना * बिनु तन, भजन, बेद, नहिं बरना।
प्रथम, मोह, मोहिं, बहुत स्तावा * फिरे राम ते, सुःख, न पावा॥
जनम, करम, लीन्हें, किये नाना * जग्य, जोग, जप, तप, और दाना।
कौन जोनि जनमेउँ, जेहि, नाहीं! * भटकि, भटकि, मैं, सब जगमाहीं॥
देखेउँ, करि, सब, करम, गोसाईं! * पावा, नहिं, सुख, अबकी नाईं।
सुधि, मोहिं, नाथ! जनम, बहुकेरी * कृपा, शंभु! माति, मोह, न घेरी॥

दोहा:—पहिल जनम कर, चरित, सब, कहत मैं, सुनहु, खगेस।
होइ प्रीति, पद राम महँ, जेहिं तें, मिटइ कलेस॥

दोहा:—पाछिल कल्पन, एक जुग, 'कलिजुग' पापन-जर।
९५. रूठि - वेद - और - धर्म - ते, नीच अस, नारी - नर॥

तेहि जुग, गरुड़! अवध-पुर जाई * शूद्र - जन्म, लीन्हा मैं भाई!।
सिव-सेवक, मन-क्रम-और-बानी * और - देव - भूला अभिमानी॥
बकवादी, धन - मद - मतवाला * टेढ़ बुद्धि, पाखंड निराला।
बसत रहा, रघुपति - रजधानी * महिमा-राम, तहूँ, नहिं जानी॥
अब जाना, मैं, अवध - प्रभावा * वेद-पुरानन-मां - अस - गावा।
बसइ, अवध, इक जन्महु, कोई * अंत, लीन सो, राम मां होई॥
यह प्रभाउ, नर, तबहिं, निहारी * जब, उर, बसहिं राम-धनु-धारी।

बसहिं राम, उर, कलिजुग माहीं * पाप-सने-नर सहलहु नाहीं ॥

दोहाः—खाये, कलिजुग, धरम सब, छिपिगे, अच्छे-ग्रन्थ ।
कपटिन, अपनी बुद्धि भरि, फैलाये बहु पंथ ॥
भये लोग, सब मोह - बस, लोभ, भखे सुभ - कर्म ।
९६. ज्ञान-सिंधु, हे ! गरुड़ ! सुनु, कहुं कलिजुग के धर्म ॥

जाति - धर्म, ना, आश्रम चारी * उलटे - वेद, चलत नर, नारी ।
वेद - बिचइआ, प्रजा - खवइआ * विप्र भूप,सब,सास्त्र-भुलइआ ॥
मारग सोइ, जेहि का, जो भावा * पंडित सोइ, जो गाल बजावा ।
बोलहिं झूँठ, बने पाखंडी * घर घर पुजत, संत-की-झंडी ॥
चतुर सोइ, जो पर - धन लूटत * सोइ गुरु, जो पखंड फैलावत ।
झूँठ मसखरी, करत - औ - जानत * कलिजुग,सोइ,गुनवान कहावत ॥
कोउ - अचार - नहिं, तजे-वेद जो * ज्ञानी, वैरागी, कलिजुग, सो ।
जटा बड़ी, नाखून - बढ़ाये * कलिजुग, तपसी - बड़े कहाये ॥

दोहाः—बुरा - वेष, भूषन - पहिर, खान - जोग नहिं, खांहि ।
सोइ जोगी, सोइ सिद्ध, नर, कलिजुग, पूजे जांहि ॥
सो०ः—चुगिल, जि-करत-बिगार, मानत तिनहिं, सराहि, सब ।
९७. करम, न बोल-अनुसार, सोइ वक्ता, कलिजुग, बने ॥

नारिन-नट-बस,फाँसि,कलि माहीं * नाचत नर, बंदर की नाईं ।
शूद्र सिखावत, विप्रन्ह, ज्ञाना * लेत, जनेऊ पहिरि, कुदाना ॥
सब नर, कामी - लोभी - क्रोधी * बेद - संत-बृह्मण - सुर - व्रोधी ।
सुन्दर पती, गुनन - घर, त्यागी * सेइ नारि, पर-पुरुष, अभागी ॥
बिन भूषन के, फिरइं सुहागिल ! * विधवा, बेंदी - सेंधुर-छागिल ।
आंधर गुरू, बहिर भे चेला * सुनइ को !गुरु,बिन देखे,ठेला! ॥
हरत न दुख, चाहत धन - चेला * परत नर्क, सो, गुरु - अलबेला ।
मात, पिता, बालकन्ह, बुलावहिं * भरइ-पेट,सोइ धर्म, सिखावहिं ॥

दोहाः—बृह्म - ज्ञान, हर - बात - महँ, अस कपटी नर-नारि ।
इक कौड़ी के लोभ ते, विप्र, गुरु, दें मारि ॥
शूद्र, सरीखत-बृह्मणन, 'हम, तुम ते नहिं कम' ।
९८. डांटत, 'जानत बृह्म, हम, अब, ना मारेउ दम' ॥

नारि - पराई, भोगत, कपटी * ममता-मोह - बैर, मति, लिपटी ।
सोइ नर कहत कि,'महीं बृह्म हूँ' * कलिजुग मां,कहुँ,रहे धर्म,हूँ ! ॥
नसे आप, और, ताहि नसावहिं * चलत-नीक-मारग,जेहि,पावहिं ।
दोसहिं बेद, देहिं, नर्कहिं भरि * मन- गढ़ि, खोटी सँकापं करि ॥
नीच लोग, जस, तेलि, कुम्हारा * भँगी, कोल, भील, बलवारा ।
मरी - नारि, कै, भँपति - नासी * मूड़ मुड़ाय, भये संन्यासी ॥
ते, विप्रन ते, पाउं, पुजावहिं * दोउ लोक,निज-हाथ, नसावहिं ।
विप्र, मूर्ख - लोभी - भये, सारे * दुष्ट, अधर्मी, दासी - डारे ॥
शूद्र करहिं, जप, तप, व्रत,दाना * ऊँच-आसन-पर, पढ़त पुराना ।
मन - ते - गढ़ा - धर्म,जग, सारा * बनत न कहत,अनीति अपारा ॥

दोहाः—भये दोगला, सब, अलग - अलग - राह - के - लोग ।
करहिं पाप, और मिलहि दुख, सोक, रोग, भय, ब्योग ॥
वेद, भक्ति, बैराग की, ज्ञान की राह, न, एक ।
मोह-के-बस, कोउ नर चलत, गढि, लें, पंथ अनेक ॥

छंदः—१. धन, धाम क चाहत लोग-जती, लीन्ही हरि, भोग,विराग-गती ।
हैं गृहस्त, फकीर, धनी तपसी, कलिजुग, कौतुक, आवत है हँसी॥
घर ते काढ़त, कुलवंति-सती, डारहिं दासी, मर्याद घटी ।
बहु,आइ,सुतहिं, नमदा-कसती, कहा मात पिता की,फिर हसती ॥
२. जब ते, ससुरारि, भई प्यारी, लागइं दुसमुन, सब परिवारी ।
पापी राजा, अधरम - धारी, दइ दंड नये, परजा मारी ॥
नीचहु, धन-होत, कुलीन कही, द्विज-चिह्न जनेउ, उघार तपी।
नहिं मानत वेद-पुरान-कही, कलिजुग, सांचे-हरि-भक्त वही ॥

३. नहिं ज्ञान, सुधारन-हार, जगत, गुन, दोस-निकासन-हार, बहुत।
कालियुग मां, रोज, अकाल परत, बिन अन्न, दुखी, सब लोग मरत॥

दोहाः—छल, हठ, दिखलावा, तरफ़-दारी, और पखंड।
काम, मोह, अभिमान, मद, व्याप रहे, बृह्मंड।
जप-तप-जज्ञ, तमोगुनी, करत लोग वृत, दान।
पृथ्वी, इन्द्र, न देत जल, बये, न उपजत धान॥

छंदः—फ़ैस, इस्त्री-भूषन, भूष वढ़ी, ममता तौ बहुत बिन धन के, दुखी।
मूरख, सुख चाहत, धर्म-तजे, मति-थोर, कठोर, न-आँख-झुके॥
नित, रोग खड़ा, नहिं सुःख कहीं, अभिमानि, लरत, बिन कारनहीं।
जीवन थोरा, पंचास बरस, जुग भरि, मरिहैं न, गुमानहु अस॥
कीन्ही, कलिजुग, नर-मति खोंटी, कैसी बहिनी, कैसी बेटी।
संतोष, विचार, न, सीतलता, सब, जाति-कुजाति, भये मँगता॥
बोली करुई, उर, डाह भरा, भरि-पूर, नहीं कोउ मित्र रहा।
सब लोग, विरह-और सोच, जरत, बर्नास्रम-धर्म-विचार तजत॥
इंद्री-जीतब, दया, दान, नहीं, दुसरन्ह लूटहिं, कछु ज्ञान नहीं।
नारी-नर, तन-देखन-हारे, दुसरन्ह, निंदहिं, ते, जग, सारे॥

दोहाः—'कलिजुग', गरुड़! भयंकर अति, पाप-दोस-कर-घर।
गुनहू, 'कलिजुग' महँ, बहुत, तरत, बिना-श्रम, नर॥
सतजुग, त्रेता, द्वापरहिं, पूजा, जज्ञ, औ जोग।
९९. मिलत, जो गति, सो, कलिजुगहिं, नाम जपे ते, लोग॥

'सतजुग', सब, जोगी, विज्ञानी * करि हरि-ध्यान, तरहिं भव, प्रानी।
'त्रेता', बहुत, जज्ञ, नर करहीं * प्रभु-अर्पण करि, भव ते तरहीं॥
'द्वापर' करत, राम-पद-पूजा * नर, भव तरत, उपाइ न दूजा।
'कलिजुग', जोग, न जज्ञ, न ज्ञाना * सब कुछ, एक, 'राम-गुन-गाना'॥
सब भरोसतजि, भजहिंजो, रामहिं * प्रेम सहित, प्रभु के गुन, गावहिं।
तरइं सो भव, कछु संसय नाहीं * नाम-प्रताप, भरा, जग माहीं॥

एक,और गुन,अधिक, सबहि ते * 'पुण्य',तौ,चहेहु, 'पाप', करेहि ते।

दोहाः—कलिजुग-सम, कोइ जुग नहीं, करइ जो नर, विश्वास।
गाय राम-गुन-बिमल, भव, तरइ, न-आदत-खास॥

दोहाः—(सत्य),(सोच,)(तप),(दान),यह, चरण, धरम-के,चारि।
१००. कलियुग, एकहि 'दान' ही, केहु विधि-दिये, भव-पार॥

'जुग'-अनुसार, हृदय, सब केरे * माया. डारत, धरम - के - डेरे।
सुद्ध, सत्य,'सब एक',अस ज्ञाना * सतजुग मां, सब-हृदय-समाना॥
सत्य बहुत, करमन, रजु - थोरी * सब सुख, त्रेता, धर्म, बहोरी।
सत्य,छींटि-भरि,अधिक रजोगुन * द्वापर, मन सुख, थोर तमोगुन॥
बहुत तमोगुन, रजुगुन थोरा * बैर छायो, कलिजुग,चहुँ ओरा।
जुग के धरम, जानि, विद्वाना * तजत अधर्म, धर्म-सनमाना॥
समय-कर्म. नहिं तिनहिं,सतावत * राम-चरन, जो, प्रीति. लगावत।
चेला, जानि, कपट-सब, नट-के * नट-माया ते. मति, नहिं भटके॥

दोहाः—माया-कीन्हे दोस गुन, बिन हरि-भजन, न जाहिं।
भजहु राम, सब काज तजि, अस विचारि, मन माहिं॥
कलिजुग महँ, कइ बरस, फिर. रहेउं अवध के देस।
१०१. जब, अकाल परि. भइ विपति, गयेउं मैं, तब. परदेस॥

गरुड़ ! गयो 'उज्जैन'. भिखारी * दीन, मलीन, दरिद्र, दुखारी।
कछु दिन बीते, संपति पाई * कीन्ह, तहाँ, शंभू - सेवकाई॥
वेद-रीति-ते, शिव की पूजा * करत विप्र इक, काज न दूजा।
साधु. परमारथ - कहँ - जानत * शंभु-उपासक,हरि कहँ मानत॥
विप्रहि सेवा, मैं, कपटी - मन * नीति-अस्थान, दयालू, द्विजन।
बाहिर की, लखि, मोरि भलाई * पुत्र समुझि,मोहिं, लगा पढ़ाई॥
शिव कर मंत्र, मोहिं. तेहि दीन्हा * भल उपदेस,बहुत विधि, कीन्हा।
जपउं मंत्र, शिव-मन्दिर जाई * गर्व दिखावा, मन महँ, लाई॥

दोहा:—मैल - भरी - मति, दुष्ट मैं, नीच जाति, बस-मोह।
विप्र, भक्त, देखे जरउं, करउं, विष्णु - कर-द्रोह ॥
सो०: – मोहिं, सिखावत, नित, देखि आचरन,दुखित,मोहिं।
१०२. होत क्रोध, मोहिं, अति, कपटी,नीति,सुहात कहुं !!॥

एक बार, गुरु, लीन्ह, बुलाई * मोहिं,नीति,बहु भांति, सिखाई।
कहा कि, "शिव-सेवा-फल सांई * पूरन-भक्ति, राम-पद, होई" ॥
"शिव, बृह्मा हू, रामहिं, पूजत * नीचपुरुषकहँ,फिर,को बूझत"।
"जेहि के शिव, बृह्मा, अनुरागी * बैर करे, सुख चहत अभागी" ॥
विष्णू - सेवक, शिवहिं बतायो * मोर करेज खगेस ! जरायो।
नीच-जाति, मैं, विद्या पाये * भयों, सांप, जस, दूध पिआये ॥
टेढ़, अभिमानी, दुष्ट, कुजाती * गुरु ते विमुख,रहउं, दिन-राती।
अति दयालु,गुरु, तनिक-न-क्रोधा * फिर फिर,मो कां,गुरू, प्रबोधा ॥
जेहि ते, नीच, बड़ाई पावत * उहिपर, पहिलेहिं, हाथ चलावत।
धुआं, अग्नि ते, जनमहिं पावत * बनि बादर,फिर,अग्नि बुझावत ॥
धूरि, परी, रस्ता मां, रहई * सब कर ठोकर,नित,नित, सहई।
पवन ते,उड़ि,फिर,उहि कहं,लागत * राज-मुकुट,फिर,नयनन,धावत ॥
गरुड़ ! जानि अस, चातुर, चंगा * पंडित करइ न, नीच को संगा।
कवि, पंडित बतलावत नीती * भली, दुष्ट ते, बैर, न, प्रीती ॥
बैर, प्रेम ते अलग, गोसाईं * त्यागइ खल, कूकुर की नाईं।
मैं, खल, हृदय, कपट, कुटलाई * नीक-बात-गुरु,माहिं,न सुहाई ॥

दोहा:—एक बार, हर-मन्दिर, जपत रहेउं, शिव-नाम।
आयो गुरु, अभिमान ते, दीन्ह न, मैं, प्रनाम ॥
गुरु, दयालु,नहिं कछु कहा, तनिकहु क्रोध न, मन।
१०३. गुरु निरादर, सहि सके, शंभु, न, तेही खन ॥

भइ, मन्दिर, अकास ते बानी * मूर्ख,अभागी,हा ! अभिमानी!।
आकास बानी:-माना,गुरु कहँ,नहिं कछु क्रोधा*अति कृपालु,उर उत्तम बोधा॥

तहूं, स्राप, सठ ! देहूं, तोही * नीति-विरोध भाइ नहिं, मोही ।
देहुँ न दंड, आज, खल ! तोका * वेद-मार्ग बिगरे, दुख मोका ॥
जो शठ, गुरु सन करइ बुराई * घोर नर्क मां, रहि सो जाई ।
तीन लोक, फिर, धरइ सरीरा * दस-हजार जनमन, सह पीरा ॥
बैठि रहा, अजगर-सम, पापी * हुइहै सर्प, जो,अस मति व्यापी ।
बड़े - पेड़ - खोखल - महँ, जाई * रहि है नीच ! नीच गति पाई ॥

कागः—दोहाः—हाहाकार कीन्ह गुरु, भयकारी, शिव-स्राप ।
कांपत देखा मोहिं, जब, भा हृदय संताप ॥
प्रेम सहित, करि दंडवत, गुरू, हाथ, दोउ, जोरि ।
लगे करन विनती, हिलत, समुझि नष्ट गति मोर ॥

गुरूः—छंदः—१. नमस्कार ! शंभू ! मनहु, मोक्ष-धारे
रमे, वेद - से, बृह्म, सामर्थ वारे } ।
'जो-ठानत-करत', आप निर्गुन, 'न-चाहत'
'अकासहिं-रह', 'आकास-से' ! सिर नवावत } ॥

२. 'जर-ओंकार' 'कितनेहु-न' 'तुरीया'-मां-व्यापत
परे-ज्ञान - इन्द्रिन - ते, कैलास - के - पति } ।
महाकाल - के - काल, कृपालु, स्वामी
गुन-अस्थान, भव-ते-परे, शिव ! नमामी } ॥

३. बरन, गोर, (परबत-बरफ)-सम, गँभीरा
औ, कोटिन - कामदेव - सोभा, सरीरा } ।
मुकुट-सिर-ते, 'किलकिल' करे, गंग निकसत
गरे, सर्प, माथे पै, दोयज-चंद्र चमकत } ॥

४. चलत नेत्र, कुण्डल-से, सुन्दर, बिसाला
हँसत-मुख, नील-कंठ, दीनन-दयाला } ।
तन, ओढ़े चरम-सिंह, गर, मुंड - माला
प्रिय-सब-के, स्वामी, भजत, देव - बाला ! } ॥

५. प्रचंड, और उत्तम, प्रबल, स्वामि-स्वामिन
अनादि, एक रस, तेज, सूरज-सा, लाखन } ।
त्र - पीरा - नसावन, लिये सूल, हाथन
मिलत-भाव-ते, गौरि-पति, लेउं माथन } ॥

६. कला ते परे, आप कल्यान - कारी
सदा, सत, चित, आनंद, दाता, पुरारी } ।
घर - आनंद, चैतन्य, ममता - सिकारी
खुसी हो ! खुसी ! काम - कहँ, तीर - कारी } ॥

७. उमा-पति-चरन, जब तलक, नर, न पूजइ
भटकि, लोक, ओर, जाइ, पर - लोक खोजइ } ।
न, सुख, शांति, पावत, न दुख ही नसावत
बसत - सब - के - हृदय, खुसी हो ! मनावत } ॥

८. मैं, जप जोग, पूजा, न कछु, नाथ ! जानत
परंतु, आप - के - पद, सदा, माथ नावत } ।
जरत, दुख - बुढ़ापा - जनम की, अगिन, मैं
करहु, नाथ ! रक्षा, परा जो सरन मैं } ॥

कविः— सो०ः—आठ - स्लोकन - छंद, शिव प्रसन्न कहं, विप्र गाढ़ि ।
पढ़इ जो, नर मति मंद, प्रेम ते, रीझइं शिव, तुरत ॥

दोहाः—सुनि बिनती, सर्वज्ञ-शिव, देखि विप्र - अनुराग ।
मन्दिर, फिर, बानी भई, 'चहइ, विप्र ! सो, मांगु' ॥

गुरूः— जो प्रसन्न, प्रभु ! आप हैं, करत दीन पर नेहु ।
पहिले, चरनन-भक्ति अचल, फिर, दूसर बर देहु ॥
तुम्हरी - माया - बस - परे, भटकत जीव, भुलान ।
तेहि पर, क्रोध न कीजिये, कृपा - सिंधु, भगवान ॥
संकर ! दीन - दयालु, अब, एहि पर, होहु, कृपालु ।
१०४. छूटि जाइ जो स्राप यह, नाथ ! थोरेहि काल ॥

जेहि ते होइ, परम कल्याना * सोइ करहु, अब, कृपा-निधाना।
सुनि विनती दुसरन-हित-मानी * "हुइहै अस", फिरि ते, भइ बानी॥
बानीः-कीन्ह कठोर; दुष्ट यह, पापा * करे क्रोध, दीन्हा, मैं, स्रापा।
तहूं, तुम्हार साधुपन देखी * करिहउं, यह पर, कृपा विसेषी॥
छमा-स्वभाउ, औ पर-उपकारी * शिव-सम प्रीती, हम कहँ, भारी।
मोर स्राप, अब, झूँठ न जइहै * एक हजार, जन्म, यह पइहै॥
जनमे, मरे, बहुत दुख होई * सो दुख, याहि, न ब्याइइ कोई।
कबहुं न होइ, ज्ञान यह कर कम * सुनहु, शूद्र! सतवचन, कहत हम!॥
राम-पुरी महँ, जनम, तु, लीन्हा * फिर, मोरी-सेवा, मन दीन्हा।
अवध-प्रभाउ, कृपा ते, मोर * राम-भक्ति, उपजइ, उर तोरे॥
सुनु, मम-वचन, सत्य अस, भाई * मैं रीझत, विप्रन-सेवकाई।
करेउ न विप्र-निरादर, जाना * नवेउ संत, भगवंत समाना॥
इन्द्र-वज्र, मोरे-त्रसूलन * काल-दंड, और चक्र सुदरसन।
जो, इनहू ते, मरइ न मार * विप्र-क्रोध-अगिनी, तेहि जारइ॥
अस विचार, राखहु, मन माहीं * जगमहँ, कछु, फिर, मुस्किल नाहीं।
आसिरबाद, और इक मोरा * "सकेउ जाइ, जहँ, जी हो तोरा॥

कागः-दोहाः-सुनि शिव-वचन, औ, हर्षि गुरु, 'ऐसहि हो, सुख, भाखि।
मोहिं सिखा, घर अपन, गा, शंभु-चरन, उर राखि॥
'विंध्याचल' मैं, काल-बस, भयों सर्प जा, हाल।
दीन्हीं तजि, फिर देह, विन श्रम, बीते कछु काल॥
जो तन धरेउं, सो, मैं तजेउं, विन-श्रम, एकहि आन।
नयो वस्त्र, जस, नर पहिरि, तजि कर वस्त्र पुरान॥
रखी वेद-मर्याद, शिव, भयो न, मोहिं कलेस।
१०५. धारे, मैं तौ, तन, बहुत, ज्ञान न गयो, खगेस॥

तीन लोक, जो तन, मैं धरेउं * तहँ, तहँ, राम भजन, मैं करेउं।
एक दुःख, भूला नाहिं, कबहूँ * गुरु कर सील-स्वभाउ, मैं अबहूँ॥

धरम-देह, बृह्मण की पाई * देवन-दुर्लभ, बेदन-गाई ।
खेलन रहा, बालकन मिलि मिलि * लीला-राम, कीन्ह, मैं तिल-तिल ॥
भये बड़े, मोहिं, पिता पढ़ावा * पढ़ा, गुना, पर, मोहिं न भावा ।
मन ते, सकल बासना भागी * एक, राम-चरनन, लौ लागी ॥
कहु, खगेस ! अस कौन अभागी * सेवइ गधी, काम-गउ त्यागी ।
प्रेम-मगन, मोहिं, कछु न सुहाई * हारा पिता, पढ़ाइ पढ़ाई ॥
पिता-मात, बैकुंठ-जात-खन * भगतन-रच्छक-भजन गयो, बन ।
जहँ, जहँ, बनन, मुनीस्वर पाऊँ * जाइ, कुटिन, सबके सिर नाऊँ ।
राम-चरित, तिन ते, मैं बूझत * हुइ प्रसन्न, सो, मोहिं उपदेसत ॥
सुनत फिरा, हरि-गुन, मैं, जा, जा * शिव-की-कृपा, जहां मन भाजा ।
प्रेम-पुत्र-धन-इच्छा गाढ़ी * छांड़ी, पर इक इच्छा बाढ़ी ॥
सबते पूँछि, कहा, सब कोई * ईश्वर, सब महँ, ब्यापत होई ।
यह-निर्गुन-मति, मोहिं न भाई * सगुन बृह्म मां, प्रीति बढ़ाई ॥

दोहाः—गुरु के बचनहिं सुधि करे, राम-चरन, मन लागि ।
रघुपति-जस, गावत फिरा, नित्य, नयो-अनुराग ॥
गिरि 'सुमेरु' पर, दीख मैं, 'लोमस', पेड़ के तीर ।
नायों सिर, मैं, देखि मुनि, बोला, अति गँभीर ॥
विनय-भरे, कोमल बचन, सुनि, मुनि, हे, खगराज ! ।
सादर पूँछा, मोहिं, तेहि, "विप्र ! आयो, केहि काज" ?
तब, मैं कहा, कृपा-निधि, तुम सर्वज्ञ, सुजान ।
१०६. सगुन-बृह्म-उपासना, कहउ, मोहिं, भगवान ॥

तब, मुनीस, कछु, गुन रघुनाथा * सादर, बतलाये, खगनाथा ! ।
बृह्म-ज्ञान-डूबा, बिज्ञानी * मो का, अति-अधिकारी, जानी ॥
बृह्म, बतावा, लगत तमासा * 'जन्म-न', 'एक', अगुन, 'उर-बासा' ।
कला-नाम-इच्छा-नहिं-रूपा * ज्ञानहि लखत, अखंड, अनूपा ॥
'मन-इन्द्री-बाहर', अविनासी * नास-न, मल-न-दोस, सुख-रासी ।

"सोइ-वृह्म तू", नहिं कछु भेदा * जल, और लहर,'एक',कह वेदा ॥
बहुत भांति,मुनि,मोहिं.समुझावा * निर्गुन वृह्म, न, मोहिं, सुहावा ।
फिर.मैं कहेऊं, नाथ, पद, सीसा * सगुन-उपासन,कहहु,मुनीसा ! ॥
मन,मछरी,और,राम-भक्ति जल * अलग रही,हे!मुनि.कहि के बल! ।
सो उपदेस, करहु, करि दाया * आंखिन ते, देखउं रघुराया ॥
देखि, नयन-भरि, मैं, अवधेसा * फिर सुनि हौं निर्गुन - उपदेसा ।
फिर.मुनि,कहि हरि-कथा,अनूपा * कीन्हा, खंडन, सगुन सरूपा ॥
तब.मैं, निरगुन-मत कहँ, काटा * सगुन-स्वरूप, बड़ा कहि, डांटा ।
उत्तर - पर - उत्तर, मैं दीन्हा * मुनि तब,कछुक क्रोध,करि लीन्हा॥
सुनु, प्रभु, बहुत निरादर किये * ज्ञानीहु के, रिस उपजत, हिये ।
अति,अति,रगाडि,करइ जो कोई * प्रगट, अग्नि, चंदन ते, होई ॥

दोहाः— 'लोमस', करि करि क्रोध, बारंबार, जमावा ज्ञान ।
अस विचार,मन महँ बँधा.मोरे, तब, भगवान !! ॥
दुइ समुझे बिन,क्रोध नहिं, दुइ समझे, अज्ञान ।
१०७. परा, जीव, अज्ञान महँ, कस, फिर, वृह्म समान !!॥

दुखित न होइ, कवहुं, हितकारी * 'पारस'पा,कोउ.रहत भिखारी! ॥
कर बैर, बाढ़त, मन, संका * कामी,तजि नाहिं सकत, कलंका ।
नसत बंस, करि विप्र - बुराई * स्वरूप - ज्ञान भय, कर्म नसाई ॥
दुष्ट-संग, तौ, कुमतिहि आवत * पर-नारी रखि, नर्कहि पावत ।
कस भव परइ,जो.ईश्वर, जानत * दुखी, परायो - मान-घटावत ॥
बिना पुण्य कहुं होत,सुद्ध-जस ! * विना पाप,कोउ पाव न अजस ।
लाभ न कोउ,हरि-भक्ति समाना * जाहि, सराहत वेद, पुराना ॥
यह ते अधिक-हानि, नहिं, भाई * भजइ न राम,औ, नर-तन पाई ! ।
'तम', चुगली-सम. पाप न कोई * धरम, दया-सम, कोउ न होई ॥
गढ़ि गढ़ि,अस बातैं, मन, रचेउँ * मुनि-उपदेस, न, कानन, सुनेउं ।
बार बार, मैं, 'सगुन', सराहा * बोला मुनी.क्रोध करि, हा! हा! ॥

लोमसःमूढ़!सिखावन-नीक,न मानत * दइ दइ उत्तर, रार बढ़ावत।
सत्य बचन, बिस्वास न करई * कौआ-सम, सब ही ते, डरई॥
अपन-पच्छ, जो हृदय-बिसाला * हो कौआ! अबहीं, चंडाला!।
कागः-लीन्ह स्राप, मैं, शीश, चढ़ाई * डर, ना, कछू गरीबी आई॥

दोहाः—तुरत, भयौं, मैं, काग, तब, 'लोमस'-पद, सिर नाय।
सुमिरि राम, रघुबंस मनि, हर्षित, चलेउं, उड़ाय॥

शिवः— लगे, राम-चरनन, रहत, छाँड़ि काम, मद, क्रोध।
१०८. 'राम-भरा' - देखत-जगत, केहि ते, करइं बिरोध॥

कागः-लोमस - दोस, नहीं कछु, भाई * सब - हृदय, हांकत, रघुराई।
मुनि की मति, प्रभु दीन्ह, भुलाई * मोर प्रीति, यह विधि, अजमाई॥
मन-क्रम-बचन,भक्त,मोहिं,जाना * मुनि-मत, फिर, फेरी, भगवाना।
पाय - स्राप - हर्षित, अस देखी * राम - चरन, परतीति बिसेषी॥
अचरज कीन्ह, बहुत पछितावा * आदर ते, फिर मोहिं, बुलावा।
बहुत भांति, सनतोष दिवावा * राम-मंत्र, फिर, मोहिं, सुनावा॥
"बालक-राम केर, करु ध्याना" * कहा मुनी, अस, कृपानिधाना।
सुखदाई, सुन्दर, मोहिं, भावा * तुम कहँ जन्म, पहिलेहि सुनावा॥
कछुक,काल,मुनि,मोहिं,तहँ,राखा* 'राम-चरित-मानस',फिर,भाखा।
सादर, मोहि, 'यह कथा', सुनाई * कहे बचन, फिर, मुनी, सुहाई॥
(गुप्त-ताल)-(प्रभु-चरित),सुहावा* शिव-की-कृपा! तात! मैं पावा।
राम-भक्त-सांचा, तोहि जानी * ताते, मैं, सब, कहेउं, बखानी॥
राम-भक्ति, जिन्ह हृदय, नाहीं * कबहुं न,तात,कहेउ तिन पाहीं!।
मुनि,मोहिं,बहुत भांति,समुझावा* प्रेम-सहित, मुनि-पद, सिर नावा॥
कमल-से-कर, अपने, धरि,सीसा * हरषि, असीसा, मोहिं, मुनीसा।
"अचल, राम-भगती, उर तोरे * बसिहै, सदा, दया ते, मोरे॥

दोहाः—"सदा, राम-प्रिय, होहु तुम, गुनन - खानि, बिन मान।
"रूप, मरन, बस महँ, रहइं, ज्ञान - बिराग - अस्थान॥

"जेहि आस्रम, तुम बसहु, फिर, राम-चरन, अनुराग।
१०६. "व्यापइ, माया, नहिं, तहाँ, चार कोस लगि, काग !!॥
"काल-कर्म-गुन-दोस-स्वभाऊ * कछु दुख, तुमहिं, न व्यापइ काऊ।
"एकांतिक-लीला-भगवाना * खुली-छिपी, इतहास, पुराना ॥
"बिन श्रम के, तुम, जानहु साऊ * प्रेम, राम पर, नित-नव, होऊ।
"जो इच्छा, करिहौ, मन माहीं * हरि की कृपा ते, दुर्लभ नाहीं" ॥
सुनि असीस, मुनि की, मति धीरा! * भइ अकास-बानी, गँभीरा।
"सत्य होइ, मुनि, बचन, तुम्हारा * सबहि तरह, यह, भक्त-हमारा" ॥
सुनि बानी, प्रसन्न, मन भयेऊ * प्रेम-मगन, सब संसय गयेऊ।
करि बिनती, मुनि-आज्ञा पाई * पद-कमलन, फिर फिर, सिर-नाई ॥
खुसी-खुसी, यह आश्रम, आयौं * राम-कृपा! 'नहिं-मिलत' सो, पायौं!।
गरुड़! रहत इहां, मोंहि, सत्ताइस * बीते कल्प, पांच-और-बाइस ॥
करउं, सदा, रघुपति-गुन-गाना * प्रेमी पक्षी, सुनत, सुजाना।
जब, जब, अवध-पुरी, रघुबीरा * धरत, भक्त-हित, पुरुष-सरीरा ॥
तब, तब, अवधपुरी, मैं, जाऊं * देख, बाल-चरित, सुख पाऊँ।
फिर, धरि हृदय, सो बाल-स्वरूपा * निज आश्रम, लौटूँ, खग भूपा! ॥
कथा सकल, मैं, तुमहिं, सुनाई * काग-देह, जेहि कारन, पाई।
जो, तुम पूछा, कहा सो, ताता ! * राम-भक्ति-महिमा, सुख-दाता ॥

दोहा:—यह ते, यह तन, मोंहिं, प्रिय, भयो, राम-पद, नेह।
पायौं, दरसन, राम कर, मिटि गा, सब संदेह ॥
भक्ति-पच्छ, हठि करि, कियो दीन्ह मुनी, मोंहिं स्राप।
११०. सुनियन कहँ, जो नहिं मिलत, पायौं, भक्ति-प्रताप ॥

जानि-बूझि, जे, भगती, त्यागहिं * खाली, एक ज्ञान महँ, लागइं।
घर पर, काम-धेनु, सो त्यागत * दूध, मदार, लेन कहँ, भागत ॥
सुनहु, गरुड़! जो, भक्ति, छांड़िकर * और तरह ते, चाहत सुख, नर।
पैरन, अगम समुद्रहिं, चाहत * बिना-नाव, सो, जनम गंवावत ॥

शिवः-सुनि, भुसुंडि के बचन, भवानी * बोला गरुड़ हरषि, मिठ-बानी ।
गरुड़ः तुम्हरी कृपा, मोर उर माहीं * संसय, सोक, मोह, भ्रम नाहीं ॥
गुन-पवित्र-प्रभु, मोहिं, सुनावा * कृपा कीन्ह. यह हृदय जुड़ावा ।
एक बात, प्रभु ! पूँछउँ, तोहीं * कहु, समुझाइ, कृपा करि. मोहीं ॥
कहत, सुनत, मुनि, वेद, पुराना * नहीं कठिन, कछु, ज्ञान समाना ।
सोइ ज्ञान, 'लामस' समुझावा * भक्ति समान, न, तुम कहँ. भावा ॥
ज्ञान, भक्ति महँ, अंतर केता ? * कृपा-निधान ! कहहु, हो जेता ।
बचन-गरुड़ सुनि, नहि.सुख माना * सादर, बोला, 'काग' सयाना ॥
काग-भुसुंडि—ज्ञान-भक्ति, कछु अंतर नाहीं * संसारी - दुख, दोउ नसाहीं ।
कहत मुनी-जन, थोरा अंतर * सावधान, सो, सुनहु ! चित्त धरि ।
ज्ञान. विराग, जोग, विज्ञाना * यह सब, पुरुष-वर्ग, जग जाना ।
पुरुष-प्रताप प्रबल, सब भाँती * नारि, जनम-निर्बल, जड़ जाती ॥

दोहाः—धरि, विरागी पुरुष, तौ. सकत नारि कहँ त्यागि ।
सकत न. कामी-नर, जिनहिं, नहीं राम - अनुराग ॥

सो०ः—मुनि, जो ज्ञान - स्थान, चंद्र - मुखी, नारी, लखे ।
१११. होत विकल, भगवान् ! विय-माया, जग महँ, प्रबल!! ॥

विना - ओर - लिये केहू केरी * कहउँ, वेद - साधू - मत, मेरी ।
मोहत 'नारी' को, न 'नारि' खग! * देखहु ! कस-सुन्दर. रीती, जग ॥
'माया', 'भक्ति', गरुड़ सुनु, दोऊ * 'नारी' हैं, जानत सब कोऊ ।
'भक्ति', सदा, रघुवर-की प्यारी * 'माया', दासी, नाचन - हारी ॥
'भक्ति' ते राजी, जो, रघुराया * 'भगती'-डर, मानत है, 'माया' ।
बिना-दोस, और सुन्दर 'भगती' * नित, अखंड, जेहि के मन, बसती ॥
ताहि देखि, 'माया' सकुचावत * करि न सकत, कछु, बनि नहिं आवत ।
अस बचारि, जो, बृह्म-के-ज्ञानी * मांगत, सदा, 'भक्ति सुख-खानी ॥

दोहाः—रघुबर - लीला, गुप्त यह, बेग, न जानइ कोइ ।
राम - कृपा ते, जानि जो, सपनेहु, मोह न होइ ॥

दोहाः—ज्ञान, भक्ति कर, भेद कछु, और बताऊँ, अस।
११२. सुने जाहि, हो, राम - पद, सदा, प्रीति इक - रस॥

सुनहु, तात! यह, अकथ - कहानी * समुझहु, याहि! न जात बखानी।
'जीव', अंस ईश्वर, 'नहिं-नासत' * चेतन, निर्मल, भरि-सुख-आवत॥
परत, आइ सो, 'माया'-के-वस * सुआ-जाल, बंदर-घट-महँ, जस।
परत गांठ, 'चेतन'-'जड़' माहीं * झूठी, सहल, पै, सुरझत नाहीं॥
फँसा, जीव जब, भा संसारी * छुटत-न-गांठ, न होत सुखारी।
वेद, पुरानन, कहा उपाई * छुटत न, औरहु उरझत जाई॥
जीव - हृदय मां, 'मोह' - अँधेरी * छुटइ गांठ कस! सकत, न, हेरी।
अस संजोग, जो, राम बनावइ * तौ, साइद! गांठी, खुलि पावइ॥

(ज्ञान—दीपक)

सत - गुन - 'श्रद्धा' - गऊ, ब्याई * बसइ, कृपा - ते, 'हृदय' आई।
'जप-तप-वृत-जम-नियम- अपारा' * '(वेद-कहे) शुभ-धर्म-विचारा॥
हरी - घास, इन - सब-की, खाई * 'प्रेम'-के-बछुरहि, छांड़ि, पलाही।
'कर्म-छूटि', 'विस्वास' - दुधांडी * सुभ, स्वतंत्र 'मन' दुहइ, सँभारी॥
'धरम'-दूध कहँ, दुहि के, भाई * ("बिना-कामना")-अग्नि, उटाई।
करइ पवन - 'संतोष', जुड़ावइ * छमा-ठंड, दइ 'धीर' जमावइ॥
करइ मथानी, 'बुद्धी' - अच्छी * 'इन्द्री-जीति'-खंभ, 'सत'-रस्सी।
काढ़इ, फिर, 'विराग' कर माखन * अतिपवित्र निर्मल, निज-हाथन॥

दोहाः—'जोग'-अग्नि, सुलगाइ, फिर, कर्म, असुभ शुभ, बारि।
औटि मखन, 'ममता' जरइ, बुद्धि, 'ज्ञान'-घी काढ़ि॥
बृह्म-ज्ञानि-नारी, सो घी, 'चित' - दीपक महँ भरि।
'शांति, एक - रस' - दियट. करि, गाड़इ, पोढ़ी, उर॥
'जाग्रत्', 'स्वप्न', 'सुषुति' कहँ 'सत'-'रज'-'तम'- कहँ ओटि।
रुई - 'तुरीय', निकारि के, बाती, करि ले, मोटि॥

सो०:– यह विधि, दीपक जारि, बृह्म-ज्ञान के तेज ते।
११३. देइ पतंगन्ह वारि, 'मद'-ऐसे, जो, गिरत, आ॥

"वही हुँ मैं", "मैं वही अखंडा" * जब, अस लौ, निकसइ, प्रचंडा।
(रूप-ज्ञान)-सुख, होइ उजेरा * चलि दें 'भेद'औ'भ्रम'लइ डेरा॥
'माया'-कुटुंभ-केर-अंध्यारा * मोह-आदि का, नासइ, सारा।
पा, सोइ बुद्धि, हृदय, उजिआरा * गांठी खोलि, लहइ सुख सारा॥
जब यह गांठ, छोरि सक कोई * तबही, जीव कृतारथ होई।
गांठी छोरत पर, खग-राया! * विघ्न अनेक, करत है, माया॥
रिद्धि, सिद्धि कहँ, भेजत जाई * सो, लालच, दिखरावत, आई।
दाउँ, पेंच, बहुतक, छल, करिके * 'दिया'बुझावत, खूँट पकरि के॥
हैं जो, ज्ञानी, परम सयाने * चितवत नहिं,तेहि, दुस्मन जाने।
रिद्धि, सिद्धि ते, बचा, जो, भाई * देव सतावहिं, फिर, तेहि, आई॥
इन्द्रिन के बहुतक दरवाजे * बैठि देव, आ, तहाँ, विराजे।
'विषय'-पवन, जब, देखत, आवत * खोल देत, फाटक, नहिं मानत॥
विषय-पवन, जब, हृदय जाई * 'ज्ञान-दिया', सो, देत बुझाई।
छूटि न गांठ, गयो उजिआरा * रहा, बुद्धि,व्याकुल हुइ, डारा॥
इन्द्री-देवन, 'ज्ञान' न भावत * विषय-भोग, वे,नित ही, चाहत।
विषय-पवन ते, बुद्धि भुलानी * "ऐस दिया",बारइ को ज्ञानी !॥

दोहा:—जीव-आतमा, पाइ, तब, भव के बहुत कलेस।
हरि-माया अति कठिन है, तरइ, तौ बहुत अंदेस॥

दोहा:—'ज्ञान', कहत-समुझत-करत, सब विधि,कठिन है, तात।
११४. पावइ, लाखन-मां-कोऊ, विघ्न बिगारत बात॥

'ज्ञान'-मार्ग, तलवार-की-धारा * परे, धार, कछु, सहल न पारा।
बिना बिघ्न, जो, यह निभ जाई * साधन-हार, परम-पद पाई॥
'मोक्ष', परम-पद,कठिन है, भाई * संत, पुरान, वेद, अस गाई।
मिलत 'मुक्ति' सोइ, राम-भजेते * आवत, हठ करि, बिन-चाहे ते॥

बिन धरती, जल, कस ! ठहराई * कोटि भांति, कोउ, करइ, उपाई ।
तैसेहि, मोक्ष - कर-सुख, भाई * बिना भक्त,कहुं, रहि नाहिं पाई ॥
अस बिचारि, हरि-भगत, सयाने * मुक्ति छांड़ि, भगती - ललचाने ।
करें भक्ति,बिन जतन,औ, आढ़न * 'माया', जा-जग-की-जर, नासत ॥
भोजन करत, भूख हित, भाई * पेट - अग्नि, जस देत पचाई ।
अस हरि-भक्ति, सहल-सुखदाई * को अस मूढ़, न, जाहि, सुहाई ॥

दोहाः—"राम-स्वामि, मैं दास हूं" बिनु, अस किये विचार ।
भव न तरत कोउ.अस समुझि, भजहु राम,यहि सार ॥

दोहाः—जो चेतन कहँ जड़ करइ, जड़हिं, करइ चेतन्य ।
११५. अस समरथ, रघुवीर कहँ, भजत जि नर, ते धन्य!! ॥

ज्ञान - मार्ग दीन्हा समुझाई * भक्ति-रत्न की, सुनु, प्रभुताई ।
राम-भक्ति, "चिंता-मनि" पाथर * बसत गरुड़ ! जहि के उरभीतर ॥
रहत उजेरा, दिन - और - राती * ना, घी चहिये, दिया, न, बाती ।
मोह-दारिद्र, तीर, नहिं आवत * लोभ-पवन, नाहिं,ताहि,बुझावत ॥
माया - रैन, सकल, नसि जाई * मद - इत्यादि - पतंग नसाई ।
'काम'-स-शठ, तीरहि, नहिं आई * रहइ भक्ति जेहि के उर छाई ॥
शत्रु, मित्र हो, विष,अमिरित हो * पाइ सकत,सुख,बिन भगती,को ।
'मन' के रोग, न ब्यापत, भारी * जिन्ह ते, जग के जीव, दुखारी ॥
भक्ति-रत्न, हृदय, बसि जाके * दुख, तन्किहु नहिं, सपने, ताके ।
चतुरन महँ,सोइ चतुर,जगत महँ * करइ जतन, खोजइ 'पाथर' कहँ ॥
धरा खुला, चिंता मनि, जग मां * राम-कृपा बिन, पावत, खग ना ।
भक्ति मिलन कर एक उपाई * पर, अभागि नर देत भुलाई ॥
सुन्दर - परबत, वेद - पुराना * 'राम-कथा,' तहँ, सुन्दर खाना ।
'सुमति' कुदारि, हो खोदनहारा * ज्ञान-विराग-के - नयन - निहारा ॥
प्रेम सहित, खोदइ, जो, चातुर * पावइ सुभ - 'चिंता मनि-पाथर' ।
मोरे मन, प्रभु, अस विस्वासा * राम-ते-अधिक, राम-के-दासा ॥

राम, सिंधु-से, पेंड़-चँदन-से * संत, मेघ-से, और पवन-से।
'जल,' और'महक' है भक्ति-सुहाई * बिना मेघ, और पवन,को!लाई!।
अस विचारि,जोइ कर सत-संगा * पावइ राम-भक्ति, सो, चंगा।

दोहा:—'बृह्म'-सिंधु कहं, 'ज्ञान' ते, 'संत'-देव, मथि देत।
जेहि मिठास, हरि भक्ति है, सोइ अमरित, मथि लेत॥

दोहा:—लिये ढाल, 'वैराग' की, 'ज्ञान', किये तलवार।
११६. राम भक्त ही, मोह-मद-लोभ-के-मारन-हार॥

गरुड़: फेर,प्रेम ते, कह खग-राऊ * जो, तुम्हार, मो पर, अस भाऊ।
नाथ! मोहिं, निज सेवक,जानी * सात प्रस्न, मोहि,कहउ बखानी॥
पहिल, कहउ,नाथ! मति-धीरा * सब ते, दुर्लभ, कौन सरीरा?।
बढ़ दुख,कौन, कौन सुख भारी? * कहउ, खुलासा, मोहि, विचारी॥
संत-असंत-मरम, तुम जानहु * तिन कर जनम-सुभाउ बखानहु।
कौन पुण्य, वेदन महँ, आला * बड़ा पाप है, कौन, कृपाला?॥
मन-कर-रोग, कहउ समुझाई * जानत तत्व, कृपा अधिकाई।
काग:-आदर, और, प्रीति ते, ताता * सुनहु, कहत मैं, तुमहिं बताता॥
नर-तन-सम, नहिं, कोऊ देही * जगत-जीव, सब, मांगत एही।
सीढ़ी-(मुक्ती-स्वर्ग-नरक)-की * ज्ञान,विराग, और भक्ति, हर्ष की॥
सो तन,धरि,हरि,भजत न,जे नर * विषय फँसे, भे नीच, नीच-तर।
कांच कर टुकरा, जनु, लेहीं * पारस, हाथन, फेंके देहीं॥
नहिं, दरिद्र सम,दुख, जग माहीं * संत-मिलनि-सम,सुख,कहुँ नाहीं।
मन-क्रम-वचन ते, पर-उपकारी * जनम-स्वभाउ, संत, हितकारी॥
संत, सहत दुख,पर-हित चीन्ह * दुख, असंत माहि, दुसरन्ह दीन्ह।
वृक्ष-धूरि-सम संत, कृपाला * पर-हितकहँ,दुख सहत बिसाला॥
खल,'सन'-सम,जो,दुसरन्ह बाँधत* खाल खिचाइ, आपहू, नासत।
बिना अर्थ,खल, दुख पहुँचावत * सर्प, और चूहा, जस, काटत॥
पर संपति नासइँ, नसि जाहीं *ओरे, खती खाय, बिलाहीं।

उपजत दुष्ट, जगत-दुख हेतू * पाप-गिरह,जस,जानत,"केतू" ॥
चंद्र-सी, संगत, संतन केरी * देहि,जगत, सुख, न भइ अँधेरी ।
"ना सताउ, केहु",धरम है भारी * निंदा, पाप, वेद - मति-सारी ॥
मेंडक होत, गुरू - हरि - निंदक * जनम हजार, रहत, सो, मेंडक ।
बृह्मण-निंदक, नरक भोगि कर *जग,जनमत,फिर,कागा-तन धरि॥
देव - वेद - निंदक, अभिमानी * घोर नर्क, सो, परत है, प्रानी ।
उल्लू होत, जो निंदहिं संतहिं * मोह-रैन, प्रिय,ज्ञान-सूर्य, नाहिं ॥
जे, सब जग की, निंदा करहीं * चिमगादर हुइ, सो, अवतरहीं ।
सुनहु, तात ! अब, मन-के-रोगा * जिन्ह ते,दुख पावत,सब लोगा ॥
'मोह', सकल रोगन की ही, जर *उपजत दुःख,बहुत,जेहिकहँ,करि।
'काम'-'बात','कफ'-लोभ(अपारा)* 'क्रोध'-'पित्त',नित छाती जारा॥
काम-क्रोध-और-लोभ,जो,मिलहीं * सन्निपात, सो, पैदा करहीं ।
'विषय-की-इच्छा',कठिन,जो,नाना* सो, अनेक-रोगन-सम, जाना ॥
'ममता'-'दाद','डाह'-है-'खारिस' * 'हर्ष-सोक',जनु'गठिया'मारिसि।
'दुम्मरन-देखि-जरइ', जीरन-ज्वर * 'कोढ़'-समान,'दुष्ट-उर', पाथर ॥
'अहंकार', जनु, रोग 'डँवरुआ' * 'दंभ'-कपट-मद-मान', 'नहरुआ'।
'तृष्णा', मनहु 'जलंधर', भारी * 'पुत्र-नारि-धन-चाह', 'तिजारी'॥
'दुसरन-भला-देखि- के-जरना' * और'कु-विचार',सो,दुइ ज्वर,बरना।

दोहाः—एक रोग ते, नर मरत, मनहिं, कठिन - बहु-रोग ।
देहिं दुःख, जो, जीव, नित, हो,कस ? फिर,सुख-भोग ॥
नेम, धर्म, आचार, तप, ज्ञान, जज्ञ, जप, दान ।
११७. हैं तो, बहुत सी औषधी, होत रोग, नहिं, हानि ॥

यह विधि, मूढ़-जीव, सब रोगी * सोक,हर्ष, भय, विरह के भोगी।
मन-के-रोग, थोर, मैं गाये * ब्यापत सबहिं,कोउ लखि पाये ॥
जाने, रोग घटत, तौ, भाई * पर, इनकी जर, कबहुँ न जाई ।
करे "विषय की बद-परहेजी" * जग-नर कहाँ!जमत,मुनियन-जी॥

राम-कृपा, नास्मत, सब रोगा * जो यहि भाँति, बनइ सनजोगा।
श्रेष्ठ - गुरू, वेदन, विस्वासा * तेहिपर, मन, न-विषय-की-आसा॥
रघुपति - भक्ति, सजीवन मूरी * 'श्रद्धा' संग, खाइ, मति-पूरी।
यह विधि, भले, सो रोग नसावहि * और जतन, कोटिन, नहिं जावहि॥
बिना-रोग, मन, तब है, भाई * बल-विराग, जब, उर, बढ़ि आई।
'सुमति' की भूख, लगन, जब, लागइ * (विषय-आस)-कमजोरी, भागइ॥
विमल-ज्ञान-जल, रोगि नहाई * तब, रहे, राम-भक्ति, उर, छाई।
सिव, बृह्मा, सनकादिक, मुनी * बृह्म-विचार के हैं जे, गुनी॥
गरुड़! सबहिं कर, मति है, एही * राम-चरन-भगती, सिर देई।
ग्रंथ, पुरान, औ वेद बताहीं * रघुपति-भक्ति बिना, सुख नाहीं॥
कछुआ-पीठ, बार, चहुँ, जामइ * बाँझ-पुत्र, केहु, मारि के आवइ।
चहुँ, अकास माँ, फूलहिं फूला * जीव, न सुख पावइ, हरि-भूला॥
कींचि-जलहु, चहुँ, प्यास, बुझावइ * सिर-खरगोस, सींग जमि आवइ।
अंधकार, चहुँ, चंद्र नसावइ * राम-विरोधी, सुख, नाहिं, पावइ॥
बरफ ते अग्नि, प्रगट, चहैं, होई * राम-विमुख, सुख पाइ, न कोई।

दोहाः—जल मथि, घी, निकरइ, चहूँ, बारू ते, चहुँ, तेल।
बिन हरि-भजन, न भव तरइ, सबहि कही, मति, पेल॥
मच्छर कहँ, बृह्मा, करइ, बृह्मा, ओहु - ते, छोट।
राम, भजहिं, चातुर, समुझि, तजि संसय, मति-खोंट॥

(नगस्य-रूपिणी)

जो निस्चय, और भली, कहत * न झूंठ, या मैं, कछु रहत।
जो नर, हरी, हरी, भजत * ते, भव के सिंधु ते, तरत॥
सुन्दर चरित-राम, मैं भाखा * मति-भरि, फैलाये-औ-खुलासा।
सार, यही, वेदन-कर, भारी * "भजहु राम, सब काज बिसारी"!॥
प्रभु, रघुपति तजि, सेवइ काही * दया है, मोंसे, शठ पर, जाही।

बृह्म-ज्ञानि तुम, मोह न छाया * कीन्ह, नाथ ! मो पर,तुम दाया ॥
पूँछी राम-कथा, अति पावन * 'सुक''सनकादि',शंभु,मन-भावन ।
सत-संगत, दुर्लभ, संसारा * पल भरि, घरी भरि,एकहु बारा ॥
देखु,गरुड़ ! निज हृदय,विचारी* कह, मैं, राम-भजन-अधिकारी! ।
पच्छिन महँ, मैं, नीच, अपावन * कीन्ह प्रसिद्ध,मोहिं,जग-पावन! ॥

दोहाः—आज, धन्य मैं ! धन्य मैं ! हौं, सब विधि ते हीन! ।
राम, दास-अपना, समुझि, तुम्हरी - संगति दीन्ह !! ॥
बल-भरि, अपने, कहा मैं, लीन्ह न, कछू, छिपाइ ।
११६. राम-चरित, इक सिंधु है, नहीं, थाह, कोउ पाइ ॥

सुमिरि राम के गुन सब नाना * फिर, फिर,हरष भुसुंडि सुजाना ।
मानि-हार, वेदन कही महिमा * अस,बल,प्रभुताई,जग,केहि मां?॥
सिव, बृह्मा ते, चरन पुजावत * करे दया, सोई, मोहिं राखत ।
अस स्वभाउ,कहुँ,दीख, न,सुना * लाउं, कहाँ ते ? राम-सो बना! ॥
जिअत-मुक्त,सिद्धि,साधु,उदासी* चातुर, बड़े बड़े संन्यासी ।
जोगी, सूरहु, तपसी, ज्ञानी * धरमी, पंडित, और विज्ञानी ॥
तरत न बिन सेए मम-स्वामी * राम ! नमामि, नमामि, नमामी! ।
मोसे, सरन, पाप - के - रासी * सुधरे, हैं प्रनाम ! अबिनासी ॥

दोहाः—जासु नाम, इक औषधी, हरत जगत के सूल ! ।
सो कृपालु, मोहिं और तोहिं, सदा रहइं अनुकूल!! ॥
सुनि, भुसुंडि के वचन सुभ, देखि राम-पद-नेह ।
१२०. प्रेम सहित बोले गरुड़, बिना कछू संदेह ॥

गरुड़ः-मैं, कृत-कृत्य भयों,सुनि बानी * रघुपति-भक्ति-के-रस-की-सानी ।
राम - चरन, प्रीती, नइ भई * माया-करी-विपति, सब गई ॥
मोह, सिंधु, तुम नौका भयेऊ * मोका, नाथ ! बहुत सुख, दयेऊ ।
करत सुकर,नहिं बनत तुम्हारा * बार, बार, प्रनाम, हमारा! ॥
पूरन-काम, राम अनुरागी * तुम सम,तात,न कोउ बड़-भागी ।

संत, वृक्ष, नदी, गिरि, धरती * ये सब, दुमरन कर, हित करती ॥
संत-हृदय, जनु, माखन, माना * कहा, कविन, पर, कहि नहिं जाना।
माखन, आंच लगे ही पिघलत * दुमरन्ह-दुख लखि, संता, टिघलत ॥
जीवन, जनम, सुफल, मम, भयेऊ * आपु-कृपा ! संसय, सब, गयेऊ।
सिवः-"जानेउ दास, मोहिं, तुम, मदा"! * बारंबार, गरुड़, अस, कहा ॥

दोहाः—तासु चरन, सिर नाइ करि, प्रेम सहित, मति-धीर।
गयो गरुड़, बैकुंठ, तव, धरे, हृदय, रघुवीर ॥
गिरिजा ! संतन-संग सम, लाभ, न, जग, कछु आन।
१२१. बिन हरि-कृपा, न मिलइ, सो, गावत वेद, पुरान ॥

(रामायण-महिमा)

कहेउं, परम पुनीत इतिहासा * सुनत छुटत, भव-फांसी, खासा!।
कल्प-वृक्ष, भगतन के रामा * तिन्ह-पद-प्रेम, पहि ते, जामा ॥
(मन-क्रम-वचन)-पाप, सब जाईं * सुनइ, जो, कथा, कान, मन लाई।
तीरथ - करना, और साधना * जोग; विराग, ज्ञान जानना ॥
नाना करम, धरम, व्रत, नाना * सम, जम, जप, तप, जज्ञ, बखाना।
दया, विप्र - गुरु की सेवकाई * विद्या, विनय, विचार, बड़ाई ॥
जहँ लगि, साधन, वेद, बखानी * सब कर फल, "हरि-भक्ति", भवानी!॥
राम-भक्ति, जो वेदन गाई * राम-कृपा ते, कोउ, कहुँ, पाई ॥

दोहाः—हरि-भगती, मुनि-कहँ-कठिन, बिन श्रम, पावत नर।
१२२. सदा, सुनत, जे, यह कथा, उर, विस्वासा धरि ॥

'सब-कछु-जानत', सोइ गुन-ज्ञाता * पृथ्वी - भूषन, पंडित, दाता।
धरम - लीन, परिवार - सहायक * प्रीति-चाह, चरनन-रघुनायक ॥
नीति-चतुर, सोइ परम सुजाना * वेदन-सार, सोइ, भल जाना।
सोइ कवि, पंडित, सोइ रन-धीरा * जो, छल-छांड़ि, भजइ रघुवीरा ॥
धन्य देस ! जहँ, गंगा बहत * धन्य नारि ! जो, पतिव्रत रहत।

धन्य, सो भूप, नीति, जो, करइ * धन्य, विप्र!जेहि धरम न टरइ ॥
सो-धन,धन्य,जो,दान मां लागत * धन्य सुमति!जो,पुण्यहिं चाहत ।
धन्य, घरी ! सत संगत मिलत * बृह्मण-जन्म,धन्य, हरि-भगत!! ॥

दोहाः—सो कुल, धन्य ! उमा ! सुनहु, सुभ, जग-पूजन-जोग ।
१२३. राम - भक्ति महँ लीन, जहँ, लेत, जन्म, हैं, लोग ॥

मति-अनुसार, कथा, मैं, भाखी * पहिले, याहि, गुप्त करि, राखी ।
देखि प्रेम, तुम महँ, अधिकाई * तब, मैं, रघुपति-कथा सुनाई ॥
कहेउ न दुष्टन ते, हठ-सीलन्ह * सुनहिं न लीला-राम, लाय मन ।
कहेउ न, लोभी, क्रोधी, कामी * जे न भजइं, पृथ्वी-के-स्वामी ॥
कहेउ न, विप्रन - वैरी, कबहूं * होइ, इन्द्र-सा, राजा, तबहूं ! ।
राम-कथा के, सोइ, अधिकारी * जिन्ह कहँ,सत-संगत है प्यारी ॥
नीति चहत, गुरु-प्रीती, जेई * विप्र-दास, अधिकारी, तेई ।
है, विसेष, तेहि कहँ, सुख-दाई * जाहि, प्रान-प्रिय हैं, रघुराई ॥

दोहाः—प्रेम, राम-चरनन चहइ, चहइ मोक्ष: जे, नर ।
१२४. सुनइ, भाव ते, यह कथा, कानन - द्वारा, भरि ॥

राम-कथा, गिरिजा ! मैं बरनी * कलियुग-मन-पापन की हरनी ।
जग-रोगन कहँ, कथा, सजीवन * कहा वेद के जानन-हारन ॥
सात काण्ड. जो, याहि ग्रंथ के * भगती-मारग, सात - पंथ-के ।
जेहि पर, राम-कृपा अधिकाई * भगती-मारग, सोई आई ॥
मन-कामना, सिद्धि, नर पावत * जो,यह कथा,कपट तजि,गावत ।
कहहिं,सुनहिं,और,करहिं विचारा* गौ-खुर सम,नर, भवके पारा ॥
कविः-सुनि,सब कथा,हृदय,अतिभाई * बोली, गिरिजा, अस, हर्षाई ।
गिरिजाः—नाथ-कृपा!सब,गा,संदेहा * नयो भयो, प्रभु-चरनन, नेहा ॥

दोहाः—विश्व - नाथ ! मैं, तरि गई, सब तुम्हरा प्रसाद ।
१२५. भई, चरन, पोढ़ी भगति, भागा सबहि विषाद ॥

यह, सुभ, शंभु - उमा - संबादा * सुख-कारी, और हरत विषादा।
हरि बाधा, संदेह मिटावत * सज्जन प्रिय, भगतन, हरषावत॥
राम - उपासक, जे, जग - माहीं * यह ते अधिक, प्रिय, कछु नाहीं।
रघुपति-कथा, जैस - मति, गावा * मैं, यह, पावन, चरित, सुहावा॥
कलिजुग मां, नहिं, साधन, दूजा * जोग, जज्ञ, जप, तप, व्रत, पूजा।
सुमिरहु, रामहिं! गावहु, रामहिं! *रामहिं-गुन, सुनिये, धरि, कानहिं॥
करत, सरन आये, जो, पावन * वेद, संत कह, लिखा, पुरानन।
भजहु ताहि, तजि मन-कुटिलाई * राम-भजे, को? मुक्ति, न पाई॥

छंदः—जे, करत पावन, सरन आये, को? तरा नहिं, भजिके, मन!।
'गनिका', 'अजामिल' 'व्याध' 'गीध' औ दुष्ट 'गज'-से, करि भजन॥
'आमिर'-अहिर, 'सदना'-कसाई, 'भील', पाप-के-रूप, जे।
तरे, एक बारहि, नाम लइ, है, राम, मोर प्रनाम, ते!!॥

छंदः—रघुबंस-मनि के चरित, यह, नर, कहहिं, सुनहिं, जे, गावहीं।
मल धोइ, कलि-और-मन-के, बिन-श्रम, राम-धाम, सिधारहीं॥
दस-पांच चौपाई, मनोहर, समुझि, जे, नर, उर, धरहिं।
अज्ञान-घोर, औ दोस-माया - के - करे, रघुपति हरहिं॥

छंदः—सुन्दर, सुजान, कृपानिधान, अनाथ पर, करे प्रीति, जो।
है मोक्ष-दाता, बिरु-गरज-हितकारी, रामहिं छांडि, को!!॥
तिल सी कृपा ते, जेहि के, हा! मति मंद, तुलसीदास हूं।
पायो, परम विस्राम, राम - समान, प्रभु, नाहीं कहूं॥

दोहाः—मो सम दीन, न, हित करत, तुम समान, कोउ, वीर।
अस विचारि, रघुवर! हरहु, आवागवन की पीर॥
कामी कहं, नारी, प्रिय, लोभी कहं, प्रिय, दाम।
रघुकुल-नाथा! तस, सदा, प्रिय लागहु, मोहिं, राम!!॥

दोहाः—पुण्य रूप, पापहिं हरत, करि मलीनता दूरि।
निर्मल, (प्रेम-के-जल)-भरी, हरि माया, भरिपूर॥
'राम-चरित-मानस', विमल, ताल, करइ अस्नान।
सूर्य-रूप, संसार, तेहि, जारि न सक, भगवान॥

सुद्धि-पत्र

(बाल-काण्ड)

नं० सफ़ह	नं० सतर	असुद्ध	सुद्ध
२	१०	है	मैं
२	२३	सकर	संकर
३	१६	समुझहिं	समुझहि
४	१५	प्रीति-राम पद	प्रीति-राम-पद
४	१८	हँसहिं बसे	हँसहिं, बसे
५	३	की जरति	की, जरति
५	१०	सग	संग
५	१२	कम	कर्म
५	२०	उपजाय	उपजायें
५	२२	असंता	असंता,
६	२	हत्यारा	हत्यारा
६	५	भाइ	, भाइ
७	६	उपाउन	उपाउ न
७	६	और	औ
७	१२	जल	जग
९	९	सेवक	सेवक
९	१२	थीर	थोर
१०	१०	करहु	करहुँ
१०	१६	कीरति	कीरति,

नं० सफ़ह	नं० सतर	असुद्ध	सुद्ध
११	६	सांच	सांचे
११	२१	पठाय	पठाये
१२	१	बंदउ	बंदउं
१२	२३	फिर-मन	फिर, मन-
१२	२५	अर्थ वचन	अर्थ वचन
१३	१५	बृहम	बृह्म
१४	३	सुख नहिं, जात,	सुख, नहिं जात
१४	८	नहि	नहिं
१४	२६	कहउ	कहउं
१५	८	राम	राम.
१५	१२	रराहा	सराहा
१६	१२	नरसिह	नरसिंह
२२	१३	सा	सों
२५	३	बैठार	बैठारे
२७	१	कहि	कहि,
२७	५	परनामा	प्रनामा
२८	१६	(शिव पहँ जिय सोच)	शिव पहँ. जिय सोच
२८	२३	देख	देखे
३१	१८	संकोच-प्रेम	संकोच. प्रेम-
३२	६	चित्त	चित
३२	१८	भूंदि	मूंदि
३७	४	हरि हिय	हरि, हिय
३८	२६	उजरइ नहिं, डरऊं	उजरइ, नहिं डरऊं
४१	६	कौ तुकरचा	कौतुक रचा
४३	१०	का	को

नं० सफ़ह	नं० सतर	असुद्ध	सुद्ध
४७	१४	जोग अग्नी	जोग-अगनी,
४७	२२	रसोई	रसोइ
४८	१६	जस	जस,
४६	३	नाव	नवि
४६	१६	घर, कहँ	घर कहँ,
५३	११	ते	ते,
५३	१७	हार	हारे
५४	२	मूड़	मूड़,
५५	७	माशा	मासा
५५	१८	जाई	जोइ
५६	३	सूघत	सूँघत
५६	१३	तक	तर्के
५६	२०	दसिा	दासी
५६	१२	हारी	-हारी
६१	१५	कहि	केहि
६२	४	मैं	मैं
६५	११	ज	ज़े
६५	२३	भक्त	भक्ति
६७	५	मा	मो
६७	१६	धनुष-त	धनुप-ते
६७	२१	पीतबर	पीतांबर
६८	३	मलेड	मेलेड
७०	५	मत्रा	मंत्री
७१	१४	मूप	भूप
७४	५	बनावन	बतावन

नं० सफ़ह	नं० सतर	असुद्ध	सुद्ध
७४	२४	भूलेहु	भूलेहु,
७५	२	केर	करे
७६	१८	दखि	देखि
७६	१६	त	ते
७७	१८	भाजन	भोजन
८१	२६	कह	कहँ
८३	२२	सिद्धि	सिद्ध
८४	११	दव	देव
८६	५	सःख	सुःख
८८	१६	तारी	तोरी
८९	४	वि ।	विप्र
९०	६	लागि	लगि
९२	१६	माहिं	मोहिं
९३	१४	त	ते
९३	२०	नाक	नोक
९४	४	नारी	नारी,
९४	४	स्राप,	स्राप
९४	८	अति, प्रेम न-धीरा	अति प्रम, न-धीरा
९४	१८	पद, ते,	पद ते,
९५	७	चिडिया ठौर	चिडिया-ठौर
९७	११	दखा चा त	देखा चाहत
९७	६	च्छा	इच्छा
९७	१५	नार	नगर
९८	१	दखन	देखन
९८	११	मोहिं	मोहि

नं० सफ़ह	नं० सतर	असुद्ध	सुद्ध
१००	६	भय	भये
१००	११	साये	सोये
१००	१५	प्रम	प्रेम
१०६	१०	गार	गौर
१०७	८	ानरादर	निरादर
१०७	२५	रामाह	रामहिं
१०६	४	रग	रंग
१०६	६	सोहत	,सोहत
१०६	१०	कह	कहँ
१०६	१४	पूछ	पूछे
१०६	१७	आय	आये
१०६	२१	राऊ	राहू
१११	१	रघुकल	रघुकुल
११२	१५	ायो	गयो
११२	१७	महस	महेस
११२	२०	बिनाी	विन्ती
११२	२५	समुझाई	समुझाइ
११३	१६	जानन	जानिन
११४	२१	रही	रहि
११४	२२	तोरउ	तोरेउ
११४	२६	तह	तहँ
११५	१७	दोहा	सोरठा
११७	२३	कैसे	कैस
११८	१	हुई	हुइ
११८	१३	बिन कारन	बिन-कारन

नं० सफ़ह	नं० सतर	असुद्ध	सुद्ध
११६	२	बान कुलहरा	बान, कुलहरा
११६	६	जस मुनी	जस, मुनी
११६	१२	धरि	धीर
१२१	१६	बोलत बलिहारी	बोलत, बलिहारी
१२१	१७	ईश्वरहिं	ईश्वरहि
१२४	१७	बँधन	बंधन
१२४	२१	सेंधुर, ते	सेंधुर ते,
१२५	१४	खलत	खेलत
१२५	१४	संग, लिये	संग लिये,
१२५	१६	सर्वहिं	सवहि
१२७	१२	कहि द्वारे,	कहि, द्वारे
१३१	२३	दव	देव
१३२	२	देखा	देखी
१३२	२४	, दिन अस	दिन, अस
१३३	६	मैके बारंबार	मैके, बारंबार
१३३	१२	–म	हम
१३३	१७	चाटी	चोटी
१३३	१६	के बाप	के-बाप
१३४	२२	लाग	लागे
१३५	१२	प्रम	प्रेम
१३५	१४	नीके	नीके
१३७	४	भय	भये
१३७	२०	बरंषि	बरषि
१३६	१	नारिय	नारियां
१३६	२१	प्रम	प्रेम

नं० सफ़ह	नं० सतर	असुद्ध	सुद्ध
१४०	५	सा	सो
१४०	२६	थारी	थोरी
१४२	७	मगतन	मँगतन
१४३	४	मनाहर	मनोहर
१४३	५	दंई	देई
१४३	२१	कहुँ, कस	कहुँ कस,
१४६	२	संध्या मुरझाने	संध्या मुरझाने
१४६	६	चाटी	चोटी
१४६	१५	दाखि	देखि
१४७	५	प्रम	प्रेम
१४७	१५	कहँ पुर	कहँ, पुर
१४८	१४	जो सिय,	जो, सिय
१४६	६	न हृदय,	न, हृदय,
१४६	१५	पायो	पायों
१५०	७	बड़	बड़े
१५०	२२	संपति सुःख	संपति, सुःख
१५१	२	हाई	होई
१५१	५	ढलि	ढील
१५२	१२	जग लेखत	जग, लेखत
१५२	१३	सखी	सखि
१५३	२	विवाहि घर,	विवाहि, घर
१५३	८	लान्हे	लीन्हे
१५३	१०	खिलत फिर	खिलत, फिर
१५३	२६	अपने	अपन
१५४	४	दहीं	देहीं

नं सफ़ह	नं० सतर	असुद्ध	सुद्ध
१५४	११	भयो	भा
१५६	४	द्वारे	द्वार
१५६	११	सुनहिं सुनत	सुनहिं, सुनत
१५७	१२	पार पा का	, पार पा, को

अयोध्या-कारण्ड

३	५	सबहिं	सबहि
४	२०	भरत, समान	भरत-समान
६	७	चोर नहिं	चोर, नहिं
६	१६	केकई	केकइ
६	२४	ताकत	ताकतः
७	७	कासल्या	कोसल्या
११	३	इक	इक,
११	८	नाच	नीच
११	२०	नागिन	नागिन,
१५	२३	राज नहिं, चाहत	राज, नहिं चाहत,
१७	२०	सकहु तौ,	सकहु, तौ,
१८	७	औ	और
१८	२०	तिनाह	तिनहिं
१६	८	औ	और
२६	२६	पतियावहु	पतियाहू
३५	८	थर	रथ
३६	२	सुद्धि	सुद्ध
३७	४	सुंदंर	सुन्दर

नं० सतर	नं० सफ़ह	असुद्ध	सुद्ध
३७	६	भाग	भोग
४१	५	प्रम	प्रेम
४२	८	ताहि	तोहि
४४	११	कहि	केहि
४४	१८	दुखित मन,	दुखित, मन,
४५	१६	ताहि	तेहि
५०	६	सुहाय	सुहाये
५२	२२	सत्तय	सत्य
५५	१	नाथ	नाथ !
५५	८	हम परिवार	हम, परिवार
५६	२	रामहि	रामहिं
५६	२०	दाखि	दीख
५६	२२	जजाती''	''जजाती''
६०	७	दीन	दीन्ह
६०	२३	चढ़	चढ़े
६०	२५,२६	संदरा	सँदेसा
६५	१	ताही	तोही
६७	६	बोल	बोले
७७	१५	राती	रीती
७८	२०	टंकत	टेकत
७६	२४	दुलार	दुलारे
८१	२४	मह	महँ
८२	२१	जेहि सो	जेहि, सो
८६	५	राजहि	राजहिं
८६	१०	गुह, ते	गुह ते,

नं० सफ़ह	नं० सतर	असुद्ध	सुद्ध
८६	१६	क्या	क्यों
८६	१६	भंगल	मंगल
८७	१८	–सुर-बाल	सुर-पाल
६०	५	दीन	दीन
६५	८	दखि	दीख
६५	११	डार	डारे
१०१	२६	सर्बहिं	सबहि
१०८	२१	हाइ	होइ
११४	२१	सूख	सूखे
११६	८	करी	करौं
१२५	२०	मार	मरि
१२६	१४	आया	आयो
१२७	११	मख, सौं-	-मुख-सौं
१२८	१०	मह	महँ

आरण्य-काण्ड

नं० सफ़ह	नं० सतर	असुद्ध	सुद्ध
१०	२२	नहि	नहिं
११	२६	झट-प्रसन	झट-प्रसन्न
१८	२	रहति	रहित
२३	१७	मय	भय
२५	८	पाति	पांति
२८	७	गूज	गूँज
२८	२५	बोल	बोले
२६	१५	ताज	तजि

नं० सफ़ह	नं० सतर	असुद्ध	सुद्ध
२९	१७	आ	औ
३०	१६	बहुत	बहुत.

किष्किंधा-काण्ड

नं० सफ़ह	नं० सतर	असुद्ध	सुद्ध
२	१९	सँग	संग
३	२३	निलाय	मिलाय
४	२	दखि	देखि
४	११	पाछ	पाछे
४	१५	लौटउं	लौटेउं
४	१६	दान्ह	दीन्ह
१४	१७	डरप	डरपे
१६	३	मनहु	मनहु

सुन्दर-काण्ड

नं० सफ़ह	नं० सतर	असुद्ध	सुद्ध
६	११	दसकन्धर	दसकंधर
६	१२	कठ	कंठ
१३	१५	सामन	सामने
१३	१९	दनिदयालू	दीनदयालू
१३	१९	आ	आ,
१९	२	तीन-पाप	तीन ताप
२२	२	सा तजि	सो तजि
२२	९	भैं	मैं
२३	१५	उतराह	उतरहिं
२३	१९	रू	गुरु
२३	२५	हँस	हँसे

लंका-काण्ड

नं० सफह	नं० सतर	असुद्ध	सुद्ध
८	२५	हसि	हँसि
१०	११	भीतर	, भीतर
१२	१३	क्रोध कछु	क्रोध न कछु
१४	५	साधरन	साधारन
१४	६	इक, मुट्टा	इक-मुट्टा
१५	२३	चापट	चौपट
१६	५	रह	रहे
२३	६	घुस	घुसे
२४	५	सिधाये	सिधाय
२८	६	अघाउ	अघाउं
३१	१६	आया	आवा
३५	२४	'रुक'	'एक'
३७	२	प्रंताप	प्रताप
४७	२	भय	भये
५२	७	महुँ	मँह
५५	७	ठाक	ठीक
५८	१३	दयाल	दयालु
५८	१६	जाती	जीती
६५	७	रघुराई	उर लाई

उत्तर-काण्ड

६	२	छोड	छांडि
१०	१०	ब्रह्मा	ब्रह्म

नं० सफह	नं० सतर	असुद्ध	सुद्ध
१०	१६	चाथ	चौथ
१०	२२	कात	कहत
११	३	राति	रीति
११	२६	तुप	तुम
१४	२३	भोर	मोर
१५	४	कम	क्रम
१५	१६	पखड	पखंड
१७	२४	बड	बडे
१७	२५	राज	रोज
१८	६	भूँगन	मूँगन
२२	२५	भुक्के	झुके
३५	१७	चराति	चरित
३६	२	जागहू	जोगहू
३७	६	और-घर	और सुःख-घर
३७	६	धूप	भूप
३७	११	बट	नट
४५	२१	आर	और
४६	२	कै	के
५०	६	बलवारा	कलवारा
५१	८	भुके	झुके
५१	१५	ज्ञा	ज्ञान
५३	२०	माहिं	मोहिं
५४	८	कपत	कांपत
५५	१८	रझइं	रीझइं
५५	२०	मगु	मंगु

नं० सफ़ह	नं० सतर	असुद्ध	सुद्ध
५७	६	त	तें
५८	२	निगुन	निर्गुन
५८	३	मुरीसा	मुनीसा
५८	५	दखउं	देखउं
५८	८	डां	डांटा
५८	६	क्राध	क्रोध
५८	१०	क	के
५८	११	त	तें
५८	१८	विप	विप्र
५८	१८	भय	भये
५८	१६	नकहि	नर्कहि
५८	२५	उपदस	उपदेस
५८	२६	बाला	बोला
५६	७	को त्र	क्रोत्र
५६	८	हा त	हं.कत
५६	१६	माहिं	मोहिं
५६	१७	कह	कहे
५६	१६	कहउं	कहेउं
५६	२०	कहउ	कहेउ
६०	५	साऊ	सोऊ
६०	१५	देख	देखे
६१	६	लामस	लोमस
६१	१३	धरि	धीर
६१	५	माया-क-बस	माया-के-बस
६२	१८	जीति	जीति

नं० सफ़ह	नं० सतर	असुद्ध	सुद्ध
६३	१२	त	ते
६४	४	जा-जग	जो-जग
६४	१२	जहि	जेहि
६४	१५	पतग	पतंग
६४	१६	ताक	ता के
६५	६	माहिं	मोहिं
६५	१६	दही	देही
६५	२६	औरे, खती	ओरे, खेती
६६	४	राग	रोग

मुद्रकः—
पं० राजराजेश्वरप्रसाद भार्गव
अध्यक्षः—अवध-प्रिंटिंग-वर्क्स,
चारबाग, लखनऊ.